उ० ऊर्ध्व ए० ऐसे अ० अधो ॥ १ ॥ क० कितनी भं० भगवन् दि० दिशा प० प्ररूपी गो० गौतम द० दश दिशा प० प्ररूपी तं० वह जं० जैसे पु० पूर्व पु० आग्नि दा० दक्षिण दा० नैऋत्य प० पश्चिम प० वायव्य उ० उत्तर उ० ईशान उ० ऊर्ध्व अ० अधो ॥ २ ॥ ए० इन भं० भगवन् द० दश दिशा के क० कितने ना० नाम प० प्ररूपे गो० गौतम द० दश नाम प० प्ररूपे इ० इन्द्रा अ० अग्नेयी

एवं चेव ॥ एवंच दाहिणा ॥ एवंच उदीणा ॥ एवं उड्ढा ॥ एवं अहोवि ॥ १ ॥ कइणं भंते ! दिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, तंजहा पुरच्छिमा, पुरच्छिम दाहिणा, दाहिणा, दाहिण पच्चच्छिमा, पच्चच्छिमा, पच्चच्छिमुत्तरा, उत्तरा उत्तर पुरच्छिमा, उड्ढा, अहो ॥ २ ॥ एयंसिणं भंते ! दसण्हं दिसाणं कइ नामधेज्जा पण्णत्ता? गोयमा ! दस नाम धेज्जा पण्णत्ता, तंजहा (गाथा) इंदा अग्गेयीय जमा य नेरई

का जानना. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! दिशाओं कितनी कही ? अहो गौतम ! दिशाओं दश कही उन के नाम पूर्व, पूर्व दक्षिण, [अग्नि] दक्षिण, दक्षिण पश्चिम (नैऋत्य) पश्चिम, पश्चिम उत्तर (वायव्य) उत्तर, उत्तर पूर्व (ईशान) ऊर्ध्व व अधो ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! इन दश दिशाओंके कितने नाम कहे हैं ? अहो गौतम! इन दश दिशाओंके दश नाम कहे हैं. १ इन्द्रा २ अग्नेयी ३ यमा ४ नैऋती ५ वारुणी ६ वायव्या ७ सोमा ८ ऐशानीक ९ विमला और १० तमा इन में से चार पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ऊर्ध्व व अधो

ज० यमा ने० नैऋती वा० वारुणी वा० वायव्या सो० सोमा ई० ईशानिका वि० विमला त० तमा ॥ ३ ॥ सरल शब्दार्थ

वारुणीय वायव्वा ॥ सोमा ईसाणीया, विमलाय तमाय बोधव्वा ॥ १ ॥ ३ ॥ इंदाणं भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवप्पएसा; अजीवा, अजीवदेसा, अजीवप्पएसा ? गोयमा ! जीवावि तं चेव जाव अजीवप्पएसावि ॥ जे जीवा ते नियमं एगिंदिया, बेइंदिया, जाव पंचिंदिया, अणिंदिया ॥ जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ॥ जे जीवप्पएसा ते णियमं एगिंदियप्पएसा जाव अणिंदियप्पएसा ॥ जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा रूवी अजीवा, अरूवी अजीवाय । जे रूवी

दिशा गाडा के ऊंध के आकारवाली हैं चार विदिशाओं मोतियों की लड के आकारवाली हैं और ऊंची नीची रुचक के आकारवाली हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रादिशा में क्या जीव हैं, जीव देश हैं जीव प्रदेश हैं ? अथवा अजीव हैं. अजीव देश हैं व अजीव प्रदेश हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रादिशा में जीव हैं यावत् अजीव प्रदेश हैं. क्योंकि दिशाओं में जीव व अजीव का आस्तिपना रहता है जिस से जीव यावत् अजीव के प्रदेश होते हैं. अब जो जीव होते हैं वे निश्चय ही एकेन्द्रिय बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय व अनेन्द्रिय होते हैं जो जीव देश हैं. वे निश्चय ही एकेन्द्रिय यावत् अनेन्द्रिय के जीव देश हैं और जो प्रदेश हैं वे निश्चय ही एकेन्द्रिय यावत् अनेन्द्रिय के प्रदेश हैं. और जो अजीव होते हैं उस के दो भेद, रूपी

अजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा खंधा खंधदेसा, खंधप्पएसा, परमाणुपोग्गला॥ जे अरूवी अजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तंजहा नो धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पएसा नो अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पएसा॥ नो आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पएसा, अद्धासमए॥ ४॥ अग्गेयीणं भंते! दिसा किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा पुच्छा? गोयमा! णो जीवा, जीवदेसावि, जीवप्पएसावि, अजीवावि, अजीवदेसावि, अजीवप्पएसावि॥ जे जीवदेसा ते णियमा एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसाय बेइंदियस्स

अजीव व अरूपी अजीव. उस में रूपी अजीव के चार भेद स्कंध, स्कंध देश, स्कंध प्रदेश व परमाणु पुद्गल. और अरूपी अजीव काय के सात भेद. संपूर्ण धर्मास्तिकाया का स्कंध पूर्व दिशा में नहीं है क्योंकि यह सर्व लोक व्यापी है इस से यह पूर्व दिशा में नहीं है परंतु धर्मास्तिकाय का देश विभाग व प्रदेश विभाग यह दोनों ही पूर्व दिशा में हैं. ऐसे ही अधर्मास्तिकाय का स्कंध नहीं है परंतु देश व प्रदेश है, ऐसे ही आकाशास्तिकाय का स्कंध नहीं है परंतु देश व प्रदेश है और काल यों सात बोल हैं॥ ४॥ अहो भगवन्! क्या अग्नेयी दिशा में जीव, जीव देश यावत् अजीव प्रदेश हैं? अहो गौतम! अग्नेयी एक प्रदेशी होने से इसमें संपूर्ण जीव का समावेश नहीं होता है इस से वहां जीव नहीं है परंतु जीव देश व

देसे ॥ अहवा एगिंदिय देसाय बेइंदियस्स देसा ॥ अहवा एगिंदिय देसाय, बेइंदि-
याणयदेसा ॥ अहवा एगिंदियदेसा, तेइंदियस्स देसे एवं चेव तिय भंगो भाणियव्वो॥
एवं जाव अणिंदियाणं, तियभंगो ॥ जे जीवप्पएसा ते नियमा एगिंदियप्पएसा,
अहवा एगिंदियप्पएसाय, बेइंदियस्स पएसा ॥ अहवा एगिंदियप्पएसाय, बेइंदियाणय
पएसा, एवं आदिल्ल विरहिओ जाव अणिंदियाणं ॥ जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता,

जीव प्रदेश हैं और अजीव, अजीव देश व अजीव प्रदेश है. उन में जो जीव देश है वे निश्चय एकेन्द्रिय जीव देश है क्यों कि एकेन्द्रिय सर्व लोक व्यापी होने से अग्नेयी दिशा में इन के देश रहते हैं यह असं-योगी एक भांगा, द्विसंयोगी तीन भांग एकेन्द्रिय सब लोक व्यापी होने से एकेन्द्रिय देश में बहुवचन होता है और बेइन्द्रिय देश व्यापी होने से अल्पपना से किसी स्थान एक देश का भी संभव होता है इन में एकेन्द्रिय के बहुत देश व बेइन्द्रिय का एक देश. २ एकेन्द्रिय के बहुत देश व बेइन्द्रिय के वहुत देश, यह भांगा जब द्वयादिक देश से स्पर्शे तब पावे, ३ अथवा बहुत एकेन्द्रिय के बहुत देश व बहुत बेइन्द्रिय के बहुत देश. यों द्विसंयोगी तीन भांगे हुवे. ऐसे ही एकेन्द्रिय तेइन्द्रिय से तीन भांगे कहना. ऐसे ही एके-न्द्रिय चतुरेन्द्रिय, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय व एकेन्द्रिय अनेन्द्रिय के द्विसंयोगी तीन २ भांग जानना. यह देश के ९ भांगे कहे. ऐसे ही प्रदेश के भांगे कहना. परंतु बेइन्द्रियादिक में प्रदेशपना में बहुवचन ही

तंजहा-रूवी अजीवाय अरूवी अजीवाय। जे रूवी अजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा खंधा, खंधदेसा, खंधप्पएसा, परमाणुपोग्गला॥ जे अरूवी अजीवा ते सत्त विहा पण्णत्ता, तंजहा नोधम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पएसा। एवं अधम्मत्थिकायस्सवि, जाव आगासत्थिकायस्स पएसा॥ अद्धासमए, विदिसासु नत्थि, जीवा देसे भंगो होइ सव्वत्थ॥५॥ जमाणं भंते! दिसा किं जीवा? जहा

कहना. क्यों कि लोककी व्यापकावस्था वैसी है, और अनेन्द्रिय छोडकर जीवका जहां देश वहां असंख्यात प्रदेश होते हैं और समुद्घात के समय अनेन्द्रिय के भी एक क्षेत्र प्रदेश में एक वचन ही कहना. और अग्नेयी में असंख्यात अवगाहन प्रदेश रहे हुवे हैं इस से प्रथम भांगा छोडकर शेष दो २ भांगे पाते हैं. बहुत एकेन्द्रिय के प्रदेश व एक बेइन्द्रिय का प्रदेश अथवा बहुत एकेन्द्रिय के प्रदेश बहुत बेइन्द्रिय के प्रदेश. ऐसे ही एकेन्द्रिय तेइन्द्रिय, एकेन्द्रिय चतुरेन्द्रिय, एकेन्द्रिय पंचेन्द्रिय, व एकेन्द्रिय अनेन्द्रिय ऐसे दश भांगे होते हैं यों जीव के २५ भांगे होते हैं. अब अजीव के दो भेद रूपी अजीव व अरूपी अजीव उनमें रूपी अजीव के चार भेद स्कंध, स्कंध देश, स्कंध प्रदेश व परमाणु पुद्गल. और अरूपी अजीवके सात भेद उन में धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय व आकाशास्तिकाय का स्कंध नहीं पाता है परंतु इन तीनों के देश, प्रदेश ऐसे छ पाते हैं. और सातवा काल विदिशा में नहीं है और जीव के देशमें भांगा सर्वत्र होता हैं.

इंदा तहेव णिरवसेसं ॥ णेरइया जहा अग्गेयी, वारुणी जहा इंदा, वायव्वा जहा अग्गेयी, सोमा जहा इंदा, ईसाणी जहा अग्गेयी, विमलाए जीवा जहा अग्गेयी, अजीवा जहा इंदा, एवं तमाएवि णवर अरूवी छव्विहा अद्धा समओ न भण्णइ ॥ ६ ॥ कइणं भंते सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचसरीरा पण्णत्ता तंजहा-ओरालिए

॥५॥ जमा, वारुणी, व सोमा, इन्द्रा जैसे कहना और नैऋती, वायव्या, व ईशानिका, अग्नेयी जैसे कहना. विमला में जीव अग्नेयी जैसे और अजीव इन्द्रा जैसे. ऐसे ही तमा का जानना. परंतु काल नहीं ग्रहण करना ÷ ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! शरीर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! शरीर के पांच भेद कहे हैं. १ उदारिक २ वैक्रेय ३ आहारक ४ तेजस व ५ कार्माण. उदारिक शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट हजार योजन की, वैक्रेय की जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक लक्ष योजन की. आहारक की जघन्य मुंडा हाथ उत्कृष्ट एक हाथ तेजस कार्माण की जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट भव लोक प्रमाण, उदारिक में ६ संस्थान वैक्रेय में समचैारस व

÷ विमला दिशा मे सिद्ध आश्री अनेन्द्रिय के प्रदेश है और तमा दिशा में केवली समुद्घात से अनेन्द्रिय के प्रदेश लिये हैं. तमा दिशा मे सूर्य का प्रकाश नहीं होने से काल नहीं लिया गया है परंतु विमला दिशा में सूर्य का प्रकाश नहीं होने पर भी सूर्य के किरणो का मेरु पर्वत के स्फटिक काण्ड मे संक्रमण होता है इस से काल लिया गया है.

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले सं० संवृत भं० भगवन् अ० अनगार वी० संयोग में

जाव कम्मए ॥ ७ ॥ ओरालिय सरीरेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? एवं ओगाहण संठाणं णिरवसेसं भाणियव्वं जाव अप्पाबहुगंति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ दसम सयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥ १ ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी संवुडस्सणं भंते! अणगारस्स वीइपंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं

हुंडक ऐसे दो संस्थान आहारक में समचतुस्र संस्थान, और तेजस कार्माण में छ संस्थान. उदारिक में वैक्रेय आहारक की भजना, तेजस कार्माण की नियमा, वैक्रेय में उदारिक की भजना आहारक नहीं है व तेजस कार्माण की नियमा. आहारक में वैक्रेय नहीं उदारिक तेजस व कार्माण की नियमा. तेजस में कार्माण की नियमा शेष तीनों की भजना. कार्माण में तेजस की नियमा और तीनों की भजना. सब से थोडे आहारक शरीरी इस से वैक्रेय शरीरी असंख्यातगुने उस से उदारिक शरीरी अनंतगुने उस से तेजस कार्माण परस्पर तुल्य विशेषाधिक, अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह दशवा शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ १ ॥

प्रथम उद्देशे के अंत में शरीर का अधिकार कहा. शरीर के योग से क्रिया होती है इसलिये क्रिया का

में ठि० रहकर पु० पहिले के रू० रूप नि० ध्याते म० पीछे के रू०रूप अ०देखते पा० बाजु के रू० रूप अ० अवलोकते उ० ऊर्ध्व रू० रूप उ० विलोकन करते अ० अधो रू० रूप आ० आलोचते त० उस को भं० भगवन् किं० क्या इ० ईर्यापथिक क्रिया क० करे सं० सांपरायिक क्रिया क० करे गो० गौतम सं० संवृत अ० अनगार वी० संयोग रस्ते में ठि० रहकर त० उसको णो० नहीं इ०ईर्यापथिक क्रिया क० करे सं० सांपरायिक क्रिया क० करे से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है सं०

निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइं अवलोए माणस्स, उड्ढं रूवाइं उलोएमाणस्स, अहे रूवाइं आलोएमाणस्सण तस्सणं भंते ! किं इरिया वहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! संवुडस्स अणगारस्स वीइपंथे ठिच्चा जाव तस्सणं णो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ

प्रश्न पूछते हैं. राजगृह नगरके गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करके गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! आश्रवद्वार को संवरनेवाला व कषायवन्त अनगार कषाय के उदय से मार्ग में रहा हुवा आगे के रूप का ध्यानकरता है, पीछे के रूप की वांछा करता है, दोनों बाजु व उपर के रूपोंका अवलोकन करता है, उन को क्या कर्म बंध नहीं होनेवाली ईर्यापथिक क्रिया लगती है अथवा कर्म बंध होनेवाली सांपरायिक क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! कषायवन्त

संवृत जा० यावत् सं० सांपरायिक क्रिया क० करे गो० गौतम ज० जिस के को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ ज० जैसे स० सातवा शतक में प० पहिला उद्देशा में जा० यावत् उ० उत्सूत्र से री० जावे से० वह ते० इसलिये जा० यावत् सं० सांपरायिक क्रिया क० करे ॥ १ ॥ सं० संवृत अ० अनगार अ० संयोग रहित में ठि० रहकर पु० आगे के रू० रूप नि० देखते जा० यावत् त० उस को

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ संवुडस्स जाव संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जस्सणं कोह माण माया लोभा एवं जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव सेणं उस्सुत्तमेव रीयइ से तेणट्ठेणं जाव संपराइया किरिया कज्जइ ॥ १ ॥ संवुडस्सणं भंते ! अणगारस्स अवीइपंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स जाव तस्सणं भंते ! किं

अनगार कषाय के उदय से मार्ग में रहे हुवे रूपको अवलोकता सांपरायिक क्रिया करता है परंतु ईर्यापथिक क्रिया नहीं करता है. अहो भगवन्! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जिस को क्रोध, मान, माया व लोभ होते हैं उन को सांपरायिक क्रिया लगती है और जिस को क्रोधादि नहीं है उन को ईर्यापथिक क्रिया लगती है यावत् उत्सूत्र से चलता है इसलिये सांपरायिक क्रिया लगती है इस का विस्तार पूर्वक कथन सातवे शतक के प्रथम उद्देशे में कहा है ॥१॥ अहो भगवन् ! कषाय रहित आगेके रूप देखनेवाले यावत् ऊंचे के रूप देखनेवाले संवृत अनगार को क्या ईर्यापथिक क्रिया लगती है या सांपरायिक क्रिया लगती

भं० भगवन् कि० क्या इ० ईर्यापथिक कि० क्रिया क० करे पु० पृच्छा गो० गौतम सं० संवृत अ० अनगार जा० यावत् इ० ईर्यापथिक कि० क्रिया क० करे णो० नहीं सां० सांपरायिक कि० क्रिया से० वह के० कैसे भं० भगवन् ज० जैसे स० सातवा उद्देशा में जा० यावत् अ० यथासूत्र री० चाले से० वह ते० इस लिये णो० नहीं सां० सांपरायिक कि० क्रिया करे ॥ २ ॥ क० कितने प्रकार की भं० भगवन् जो० योनि

इरियावहिया किरिया कज्जइ पुच्छा ? गोयमा! संवुड जाव तस्सणं इरियावहिया किरिया कज्जइ; णो संपराइया किरिया कज्जइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए जाव सेणं अहासुत्तमेव रीयइ से तेणट्ठेणं जाव णो संपराइया किरिया कज्जइ

है ? अहो गौतम ! उन को ईर्यापथिक क्रिया लगती है परंतु सांपरायिक क्रिया नहीं लगती है, अहो भगवन् ! किस कारन से ईर्यापथिक क्रिया लगती है परंतु सांपरायिक क्रिया नहीं लगती है ? अहो गौतम ! इस का विस्तार पूर्वक विवेचन सातवे शतक के सातवे उद्देशे में कहा है यावत् कषाय रहित संवृत अनगार सूत्रानुसार विचरते हैं इसलिये सांपरायिक क्रिया नहीं लगती है ॥२॥ अहो भगवन् ! योनि के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! योनि के तीन भेद कहे हैं. शीत, ऊष्ण, व शीतोष्ण. पहिली नरक से तीसरी नरक तक शीत योनि, चौथी पांचवी में शीत व ऊष्ण छठी सातवी में ऊष्ण, चार स्थावर तीन विकलेन्द्रिय, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय व असंज्ञी मनुष्य में तीनों प्रकारकी तेउकायमें ऊष्ण

प० प्ररूपी गौ०गौतम ति० तीन प्रकार की जो० योनि प०प्ररूपी सी० शीत उ०ऊष्ण सी० शीतोष्ण ए० ऐसे जो० योनिपद नि० निरविशेष भा०कहना॥२॥ क० कितने प्रकार की भं०भगवन् वे०वेदना प० प्ररूपी गो० गौतम ति० तीन प्रकार की सी०शीत उ०ऊष्ण सी० शीतोष्ण ए०ऐसे वे०वेदना पद भा०कहना ते०

॥ २ ॥ कइविहाणं भंते ! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा सीया उसिणा, सीओसिणा, एवं जोणीपदं णिरवसेसं भाणियव्वं ॥ ३ ॥ कइ विहाणं भंते वेयणा पण्णत्ता ?गोयमा! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तंजहा सीया उसिणा

योनि और संज्ञी मनुष्य, संज्ञी तिर्यंच व देव में शीतोष्ण योनि कही. और भी तीन प्रकार की सचित्त, अचित्त व मीश्र, नारकी देवता में अचित्त, पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी मनुष्य व असंज्ञी तिर्यंच में तीनों प्रकार की संज्ञी तिर्यंच व संज्ञी मनुष्य में मीश्र योनि. और भी तीन प्रकार की योनि कही. संवृता, विवृता, व संवृतविवृता, नरक, देव पांच स्थावर में संवृता, तीन विकलेन्द्रिय, असंज्ञी मनुष्य व तिर्यंच में विवृता और संज्ञी मनुष्य व तिर्यंच में संवृतविवृता. और भी तीन प्रकार की कुमुदा, शंखा व वंसीपत्ता. कुमुदा तीर्थंकरों आदि उत्तम पुरुषों की माता को, शंखा श्री देवी को और वंशीपत्ता गर्भज को. इत्यादि योनियों का कथन सब पन्नवणा के नववेपद में विस्तार से कहा है॥३॥ योनिवाले जीव वेदना पाते हैं इसलिये वेदना का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन्! वेदना कितने प्रकार की कही?

नारकी भं० भगवन् दु० दुःख वे० वेदना वे० वेदे सु० सुख वे० वेदना वेदे अ० अदुःख अ० असुख वे० वेदना वे० वेदे गो० गौतम दु० दुःख वे० वेदना वे० वेदे सु० सुख वे० वेदना वे० वेदे अ० अदुःख अ० असुख वे० वेदना वे० वेदे ॥ ४ ॥ मा० मास की भ० प्रतिमा प० युक्त अ० अनगार नि० नित्य

सीओसिणा॥ एव वेयणा पदं भाणियव्वं जाव णेरइयाण भंते ! किं दुक्खं वेयणं वेदेंति, सुहं वेयणं वेदेंति अदुक्खमसुहं वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! दुक्खंपि वेयणं वेदेंति सुहंपि वेयणं वेदेंति अदुक्खमसुहंपि वेयणं वेदेंति ॥४॥ मासियंणं भंते ! भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स

अहो गौतम ! वेदना तीन प्रकार की कही. शीत, ऊष्ण व शीतोष्ण. शीत योनिवाले नेरिये के ऊष्ण की वेदना है और ऊष्ण योनिवाले को शीत की वेदना है . ऐसे ही चौवीस दंडक में जानना. और भी चार प्रकार की वेदना कही द्रव्य से पुद्गल संबंधी, क्षेत्र से नरकादि क्षेत्र संबंधी, कालसे शीतोष्णादि काल संबंधी और भाव से क्रोध शोकादि संबंधी यों चारों प्रकार की वेदना होती हैं. और भी तीन प्रकारकी वेदना कही शारीरिक, मानसिक, शारीरिक व मानसिक. और भी तीन प्रकार की वेदना साता असाता व दोनों के मध्य की. और भी दो प्रकार की वेदना कही. १ अभ्युगम की सो स्वयं उदिर कर वेदे और औपक्रामिक सो उदय आई हुइ वेदे. और भी दो प्रकार की वेदना निन्दा सो चित्त से विपरीत और अनिन्दा, संज्ञावन्त, संज्ञी को दोनों, असंज्ञी को अनिन्दा. इस का कथन पन्नवणाजी के ३५ वे पद में विस्तार पूर्वक कहा है. यावत् अहो भगवन् ! नरक के जीव सुख की वेदना वेदते हैं या दुःखकी

वो० वोसराइ काया वाला चि० त्यजादेह ए० ऐसे मा० मास की भि० भिक्षुप्रतिमा णि० निर्विशेष भा० कहना ज० जैसे द० दशा श्रुतस्कंध में जा० यावत् अ० आराधिक भ० होवे ॥ ५ ॥ भि० भिक्षु अ० अन्यतर अ० अकृत्य ठा० स्थान प० सेवनकर त० उस ठा० स्थान को अ० विना आलोचकर प० प्रतिक्रमण कर का० काल क० करे ण० नहीं त० उस को आ० आराधना से० वह त० उस ठा० स्थान को आ० आलोचकर प० प्रतिक्रमण कर का० काल क० करे अ० है त० उस को आ० आराधना भि०

अणगारस्स निच्चं वोसटकाए चियत्तदेहे एवं मासिया भिक्खुपडिमा णिरवसेसा भाणियव्वा जहा दसा जाव आराहिया भवइ ॥ ५ ॥ भिक्खूय अण्णयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता सेणं तस्स ठाणस्स अणालोइय पडिकंते कालं करेइ णत्थि तस्स आराहणा, सेणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडिकंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥ भिक्खू अण्णयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्सणं एवं भवइ पच्छावि णं अहं चरिम काल

वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! सुखरूप वेदना वेदते हैं और दुःखरूप वेदना वेदते हैं ॥ ४ ॥ तप से वेदना का क्षय होता है इसलिये तप का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! स्नानादि परिक्रम से वोसराई हुइ कायावाले व देश ममत्वके त्यागी साधु को क्या एक मास की भिक्षु प्रतिमा होती है ? अहो गौतम ! इन बारह भिक्षु प्रतिमा का अधिकार दशाश्रुत स्कंध में कहा वैसे कहना यावत् आज्ञा का आरा-

भिक्षु अ० अन्यतर अ० अकृत्य स्थान प० सेवन कर त० उस को ए० ऐसा भ० होवे प० पीछे अ० मैं च० चरिम का० काल समय में ए० इस ठा० स्थान को आ० आलोचना करूंगा जा० यावत् प० प्रतिक्रमण करूंगा त० उस ठा० स्थान अ० अनालोचकर प० प्रतिक्रमण कर जा० यावत् ण० नहीं है त० उस को आ० आराधना त० उस ठा० स्थान को आ० आलोचकर प० प्रतिक्रमण कर का० काल क० करे अ० है त० उन को आ० आराधना ॥ ६ ॥ भि० भिक्षु अ० अन्यतर अ० अकृत्य

समयंसि एयस्स ठाणस्स आलोइस्सामि जाव पडिक्कमिस्सामि, सेणं तस्स ठाणस्स अणालोइय पडिक्कंते जाव णत्थि तस्स आराहणा ॥ सेणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥ ६ ॥ भिक्खूय अण्णतरं अकिच्चट्ठाणं

धक होवे वहां तक कहना ॥ ५ ॥ साधु की प्रतिमा के कथन से साधु के प्रायश्चित्त का प्रश्न पूछते हैं. यदि कोई साधु आचरने योग्य नहीं ऐसा स्थान का सेवन करे और उस की आलोचना निंदा किये विना काल कर जावे तो उस को उस स्थान की आराधना नहीं होती है. और आलोचना प्रतिक्रमण कर काल कर जावे तो उस को उस स्थान की आराधना होती है अर्थात् वह आराधक होता है. किसी साधु को अकृत्य स्थान का सेवन करके ऐसा होवे कि अंत समय में मैं आलोचना करूंगा. परंतु आलोचना किये विना काल कर जावे तो वह आराधक नहीं होता है और आलोचना प्रतिक्रमण करके काल करे

स्थान प० सेवकर त० उस को ए० ऐसा भ० होवे स० श्रमणोपासक का० काल के अवसर में का० काल करके अ० अन्यतर दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न भ० होवे किं० क्या अ० आणपन्निक दे० देवको णो० नहीं ल० प्राप्त करूंगा त्ति० ऐसा करके उ० उस ठा० स्थान को अ० विना आलोचकर प० प्रतिक्रमण कर का० काल करे न० नहीं है त० उस को आ० अराधना त० उस ठा० स्थान को आ० आलोचकर प० प्रतिक्रमण कर का० काल करे अ० है त० उस को आ० आराधना से० वह ए० ऐसे

पडिसेवित्ता तस्सणं एवं भवइ जइ ताव समणोवासयावि कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, किंमंगपुण अणवण्णिय देवत्तणंपि णो लभिस्सामित्ति कट्टु, सेणं तस्स ठाणस्स अणालोइय पडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा ॥ सेणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कंते कालं करेइ, अत्थि तस्स

तो आराधक होता है. किसी साधु को अकृत्य स्थान का सेवन किये पीछे ऐसा होवे कि श्रावक भी आयुष्य पूर्ण कर देवता होते हैं तो क्या मैं इन पापों का छिपाने से आणपान्निक देवता भी नहीं होऊंगा. अपितु अवश्यमेव होवूंगा. इस तरह आलोचना प्रतिक्रमण किये विना काल कर जावे तो जिनाज्ञा का आराधक नहीं होता है और आलोचना प्रतिक्रमण करके काल करे तो जिनाज्ञा का आराधक होता है. अहो भगवन् !

भं० भगवन् ॥ १० ॥ २ ॥

रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले आ० आत्मऋद्धिवाला भं० भगवन् दे० देव च० चार पं० पांच दे० देव वा० वासान्तर को वी० व्यतिक्रमता प० पर ऋद्धि से हं० हां गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से त० तैसे जा० यावत् अ० असुर कुमार ण० विशेष अ० असुर कुमार वा० वासांतर से० शेष तं० तैसे ए० ऐसे ए० इस क० क्रमसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार ए० ऐसे वा० वाणव्यन्तर जो०

आराहणा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ दसम सयस्स बिईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥ २ ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी। आइड्ढीएण भंते ! देवे जाव चत्तारि पंच देवावासंतराइं वीइक्कंते तेणपरं परिड्ढीए ? हंता गोयमा ! आइड्ढीएणं तंचेव जाव एवं असुरकुमारेवि, णवरं असुरकुमारावासंतराइं, सेसं तंचेव ॥ एवं एएणं कमेणं जाव थणिय

आप के वचन सत्य हैं. यह दशवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १० ॥ २ ॥

दूसरे उद्देशे के अंत में देवपना कहा. आगे देव स्वरूप कहते हैं. राजगृह नगरी के गुण शील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! आत्म ऋद्धि से देवता चार पांच देवों के आवास उल्लंघकर आगे अन्य की ऋद्धि से क्या जावे ? हां गौतम ! आत्म ऋद्धि से देव चार पांच देवताके आवास उल्लंघ सके पीछे अन्य की ऋद्धि से जावे ऐसे ही

ज्योतिषी वे० वैमानिक जा० यावत् प० पर ऋद्धि ॥ १ ॥ अ० अल्प ऋद्धिवाला भं० भगवन् दे० देव म० महर्द्धिक दे०देव की म०मध्य से वी०व्यतिक्रमे गो०गौतम णा०नहीं इ०यह अर्थ स०योग्य स०समर्द्धिक

कुमारेवि, एवं वाणमंतर जोइसिए वेमाणिए जाव परंपरिड्ढीए ॥ १ ॥ अप्पिड्ढीएणं भंते ! देवे से महिड्ढियस्स देवस्स मज्झं मज्झेणं वीईवएज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सामिड्ढीएणं भंते ! देवे सामिड्ढियस्स देवस्स मज्झं मज्झेणं वीईवएज्जा ? णोइणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीईवएज्जा॥ सेणं भंते ! किं विमोहित्ता पभू अविमोहित्ता पभू ? गोयमा ! विमोहित्ता पभू, णो अविमोहित्ता पभू ॥ सेतं भंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीईवएज्जा, पुव्विं वीईवएत्ता पच्छा विमोहिज्जा ? गोयमा ! पुव्विं

असुर कुमार यावत् स्थनित कुमार वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का जानना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अल्प ऋद्धिवाला देव महर्द्धिक देव की मध्य में होकर क्या जा सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् नहीं जा सकता है. अहो भगवन् ! समऋद्धिवाला देव क्या समऋद्धिवाले देव की बीच में होकर जा सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् नहीं जा सकता है परंतु प्रमत्त अवस्था में जा सकता है. अहो भगवन् ! क्या वह अंधकार आदि से विमोह विभ्रम उपजाकर जा सकता है या विमोह उपजावे विना जा सकता है ? अहो **गौतम** ! विमोह उपजाकर जा सकता है

भं० भगवन् दे० देव स० समर्द्धिक दे० देव की म० मध्य से वी० व्यतीक्रमे णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ प० प्रमादसे वी० व्यतिक्रमे भं० भगवन् किं० क्या वि० मोह मे प० समर्थ अ० विना मोह से

विमोहित्ता पच्छा वीईवएज्जा, णो पुव्विं वीईवयित्ता पच्छा विमोहिज्जा ॥ २ ॥ महिड्डीएणं भंते ! देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्झं मज्झेणं वीईवएज्जा ? हंता वीईवएज्जा ॥ से भंते ! किं विमोहित्ता अविमोहित्ता पभू ? गोयमा ! विमोहित्ता पभू अविमोहित्ता पभू ॥ से भंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीईवएज्जा, पुव्विं वीईवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ? गोयमा ! पुव्विंवा विमोहित्ता पच्छा वीईवएज्जा, पुव्विंवा वीईवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ॥ ३ ॥ अप्पिड्ढीएणं भंते ! असुरकुमारे महिड्ढियस्स

परंतु विमोह उपजाये विना नहीं जा सकता है. अहो भगवन् ! देवता पहिले विमोह उपजाकर क्या जाता है या जाकर विमोह उपजाता है ? अहो गौतम ! पहिले विमोह उत्पन्न करता है और पीछे जाता है परंतु जाकर विमोह नहीं उपजा सकता है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक देव अल्प ऋद्धिवाले देव की बीच में होकर क्या जा सकता है ? हां गौतम ! जा सकता है. अहो भगवन् ! क्या वह विभ्रम उत्पन्न कर जा सकता है या विभ्रम उत्पन्न किये विना जा सकता है? अहो गौतम! विभ्रम उत्पन्न किये विना भी जा सकता है. यदि विभ्रम उत्पन्न कर जा सकता है तो क्या पहिले विभ्रम उत्पन्न कर पीछे जा सकता है

प० समर्थ गो० गौतम वि० मोह से प० समर्थ भं० भगवन् किं० क्या पु० पहिले वि० मोह प्राप्तकर प० पीछे वी० व्यतिक्रमे प० पहिले वी० व्यतिक्रमे प० पीछे वि० मोह प्राप्तकर गो० गौतम पु० पहिले वि० मोहपामे

अमुरकुमारस्स मज्झं मज्झेणं वीईवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे, एवं असुरकुमारेणवि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा, जहा ओहिएणं देवेणं भाणिया, एवं जाव थणिय कुमारेणं, वाणमंतरजोइसिवेमाणिएणं एवंचेव ॥ ४ ॥ अप्पिड्ढीएणं भंते ! देवे महिड्ढियाए देवीए मज्झं मज्झेणं वीईवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ समिड्ढिएणं भंते ! देवे समिड्ढियाए देवी मज्झंए मज्झेणं एवं तहेव देवेणय देवीएय. दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणिए अप्पिड्ढियाणं भंते ! देवी महिड्ढियस्स देवस्स मज्झं मज्झेणं एवं एसोवि तइओ दंडओ भाणियव्वो, जाव महिड्ढिया वेमाणिणी, अप्पिड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झं मज्झेणं

या पहिले जाकर पीछे विभ्रम उत्पन्न करता है ? अहो गौतम ! पहिले विभ्रम उत्पन्न कर जा सकता है और गये पीछे भी विभ्रम उत्पन्न कर सकता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या अल्प ऋद्धिवाला असुर कुमार महर्द्धिक असुर कुमार की बीच में जा सकता है ? अहो गौतम ! जैसे समुच्चय देव के तीन आलापक कहे वैसे ही असुर कुमार का जानना वैसे ही स्थनित कुमार, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का जानना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! अल्प ऋद्धिवाला देव महर्द्धिक देवी की बीच में होकर जा सकता है ? अहो गौतम ! नहीं जा सकता है. अहो भगवन् ! समऋद्धिवाला देव समऋद्धिवाली देवी बीच में होकर

प० पीछे वी० व्यतिक्रमे णो० नहीं पु० पहिले वी० व्यतिक्रमे प० पीछे वि० मोहपामे ॥ २-७ ॥ आ०

वीईवएज्जा? हंता वीईवएज्जा ॥५॥ अप्पिड्ढियाएणं भंते! देवीमहिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवं समिड्ढिया देवी समिड्ढियाए देवीए तहेव, महिड्ढिया देवी अप्पिड्ढियाए देवीए तहेव ॥ एवं एक्केकेतिण्णि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा, जाव महिड्ढियाणं भंते ! वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए मज्झं मज्झेणं वीईवएज्जा ? हंता वीईवएज्जा ॥ तं भंते ! किं विमोहेत्ता पभू ? तहेव पुव्विंवा वीईवएत्ता पच्छा विमोहेज्जा, एए चत्तारि दंडगा ॥ ६ ॥ आससस्सणं भंते ! धावमा-

जा सकता है ? अहो गौतम ! जैसे देव के तीन दंडक कहे वैसे ही देव का व देवी की बीच में जाने का तीन दंडक कहना. ऐसे ही असुर कुमार यावत् स्थनित कुमार, वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! अल्प ऋद्धिवाली देवी क्या महर्द्धिक देवी की बीच में होकर जा सकती है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ऐसे ही समऋद्धिवाली देवी का समऋद्धिवाली देवी की साथ जानना. महर्द्धिक देवी का अल्प ऋद्धिवाली देवी का ऐसे एक में तीन २ आलापक कहना यावत् महर्द्धिक वैमानिक देवी क्या अल्प ऋद्धिवाली वैमानिक देवी की बीच में होकर जा सकती है ? हां गौतम ! जा सके. अहो भगवन् ! क्या विभ्रम उपजाकर जा सकती है या विभ्रम उपजाये विना जा सकती है

अश्व भं० भगवन् धा० दौडता किं० कैसे खु० खुखु क० करे गो० गौतम आ० अश्व धा० दौडता हि० हृदय ज० उदर की अं० अंतर में क० कर्कट वा० वायु स० उत्पन्न होवे जे० जिस से आ० अश्व धा० दौडता खु० खुखु क० करे ॥ ७ ॥ अ० अथ भं० भगवन् आ० आश्रय लेंगे स० सोवेंगे चि० खडे रहेंगे नि० बैठेंगे तु० आराम करेंगे आ० आमंत्रणा आ० आज्ञापनी जा० याचनी पु० पुछनी प० प्रज्ञापनी

णस्स किं खुक्खुत्ति करेइ ? गोयमा ! आसस्सणं धावमाणस्स हियस्सय जगयस्सय अंतरा एत्थणं कक्कडए नाम वाए समुच्छिए जेणं आसस्स धावमाणस्स खुखुत्ति करेइ ॥ ७ ॥ अह भंते ! आसइस्सामो, सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो निसीइस्सामो तुयट्टिस्सामो, " आमंतिणि आणवणी, जायणी तह पुच्छणीय, पण्णवणी पच्चक्खाणीभासा

ऐसे चार दंडक कहना ॥ ६ ॥ गति के प्रसंग से अश्व की गति का कथन करते हैं. अहो भगवन्! शीघ्र दौडते हुवे अश्व के पेट में 'खुखु' ऐसा शब्द क्यों होता है ? अहो गौतम ! जब अश्व दौडता है तब उस के हृदय व वाम कुक्षि इन दोनों की बीच में कर्कट नामक वायु उत्पन्न होता है जिस से खु खु शब्द होता है ॥ ८ ॥ शब्दके अनुसार से भाषा का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! कोई कहे कि आश्रय ग्रहण योग्य वस्तु का हम आश्रय ग्रहण करेंगे, शयन करेंगे, खडे करेंगे, बैठेंगे व रहेंगे और भी १ आमंत्रण करने की भाषा जैसे भो देवदत्त ! २ किसी कार्य में अन्य को प्रेरणा करना कि यह कार्य करो सो आज्ञापनी

भा० भाषा इ० इच्छानुकूल अ० अनभिगृहित भा० भाषा अ० अभिगृहित वो० जानना सं० संशयकारी वो० संस्कारी अ० असंस्कारी प० प्रज्ञापिनी ए० यह भा० भाषा न० नहीं ए० यह भा० भाषा मो० मृषा हं० हां गो० गौतम आ० आश्रय लेंगे तं० तैसे जा० यावत् न० नहीं ए० यह भा० भाषा मो० मृषा से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १० ॥ ३ ॥

भासा इच्छाणुलोमाय ॥ १ ॥ अणभिग्गहियाभासा, भासाय अभिग्गहंमि बोधव्वा ॥ संसयकरणी भासा वोयडमव्वोयडाचेव ॥ २ ॥ " पण्णवणीणं एसा भासा न एसा-मोसा ? हंता गोयमा ! आसइस्सामो तं चेव जाव न एसा भासा मोसा ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ दसम सयस्स तईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥ ३ ॥ *

३ याचना करने की भाषा सो याचनी ४ किसी को पूछना सो पृछनी ५ किसी वस्तु का समझाना सो प्रज्ञापिनी ६ प्रत्याख्यान करवाना सो प्रत्याख्यायिनी ७ बोलनेवाले की इच्छानुसार बोलना ८ जिस का अर्थ समझ में नहीं आवे वैसा बोलना डित्थडवित्थवत् ९. समझ में आवे वैसा बोलना घटादिवत् १० जो शब्द बोलने से अनेक अर्थ होवे वैसी भाषा बोलना ११ प्रगट भाषा लोक प्रसिद्ध १२ गंभीर भाषा वगैरह १.८ प्रकारकी भाषा भाषा नहीं होती है ? अहो गौतम ! उक्त अठारह प्रकारकी भाषा मृषा भाषा हीं होती है अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह दशवा शतक का तीसरा उद्देशा पूर्ण हुआ॥१०।३॥

ते० उस काल ते० उस समय में वा० वाणिज्य न० नगर हो० था व० वर्णन युक्त दू० दूतिपलाश चे० चैत्य सा० स्वामी स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पीछी गइ ते० उस काल ते० उस समयमें भं० भगवंत म० महावीर का जे० ज्येष्ठ अं० अंतेवासी इं० इन्द्रभूति अ० अनगार जा० यावत् उ० ऊर्ध्व जा० जानु वि० विचरते हैं ॥ १ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महा-

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे णामं णयेर होत्था, वण्णओ॥ दूइपलासए चेइए सामी समोसड्ढे, जाव परिसा पडिगया ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी, इंदभूई णामं अणगारे जाव उड्ढं जाणू जाव विहरइ ॥१॥ तेणं कालेणं तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी-

तीसरे उद्देशे में देवता की वक्तव्यता कही. इस चौथे उद्देशे में भी इस का स्वरूप कहते हैं. उस काल उस समय में वाणिज्य नामक नगर था उस की ईशान कौन में दूतिपलाश नामक उद्यान था. वह भी वर्णन योग्य था. वहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदने को आइ. धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का ज्येष्ठ अंतेवासी इन्द्र-भूति नामक अनगार यावत् ऊर्ध्व जानू व अधोशिर से धर्मध्यान करते हुवे विचरते थे ॥ १ ॥ उस काल

वीर का अं० अंतेवासी सा० श्यामहस्ती अ० अनगार प० प्रकृति भ० भद्रिक ज० जैसे रो० रोहा जा०
यावत् उ० ऊर्ध्व जा० जानु वि० विचरता है ॥ २ ॥ त० तब से० वह सा० श्याम हस्ती अ० अनगार
जा० जात स० श्रद्धा जा० यावत् उ० उत्थानसे उ० उठकर जे० जहां भ० भगवन्त गो० गौतम ते०
तहां उ० आकर भ० भगवन्त गो० गौतम को ति० तीन वक्त जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसा व० बोले
अ० है भं० भगवन् च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरकुमार ता० त्रायस्त्रिंशक देव ए० ऐसे सा० श्याम

णामं अणगारे पगइभद्दए जहा रोहे जाव उड्ढं जाणू जाव विहरइ ॥ २ ॥ तएणं
से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव उट्ठाए उट्ठेइत्ता जेणेव भगवं गोयमे
तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, भगवं गोयमं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासमाणे
एवं वयासी अत्थिणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुर कुमाररण्णो ताय-
त्तीसगा देवा ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिं-

उस समय में महावीर स्वामीके अंतेवासी प्रकृति भद्रिक प्रकृति विनीत यावत् रोहा जैसे सब अधिकार
अनुसार श्यामहस्ती नामक अनगार ऊर्ध्व जानु व अधो शिरसे धर्म ध्यान करते हुवे विचरते थे ॥ २ ॥ उस
समय में श्यामहस्ती अनगार को प्रश्न पुछने की श्रद्धा उत्पन्न हुई यावत् अपने स्थानसे उपस्थित हुए और
गौतम स्वामीकी पास आये. आकर भगवान् गौतमको तीन आदान प्रदक्षिणा देकर ऐसा प्रश्न कियाकि अहो

हस्ती ते० उस काल ते० उस समय इ० इस जं० जंबूद्वीप भा० भरत क्षेत्र में का० काकन्दी ण० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त त० तहां का० काकन्दी न० नगरी ता० तेत्तीस स० सहायक गा० गाथापति स० श्रमणोपासक प० रहते हैं अ० ऋद्धिवन्त जा० यावत् अ० अपरिभूत अ० जाने जी० जीवाजीव उ० उपलब्ध पु० पुन्यपाप व० वर्णन युक्त जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥२॥ त० तब ते० वे ता० तेत्तीस स०

दस्स असुररण्णो तायत्तीसगादेवा? ॥ एवं खलु सामहत्थी तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे कायंदी णामं णयरी होत्था वण्णओ तत्थणंकायंदीए नयरीए तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा वण्णओ जाव विहरंति ॥२॥ तएणं ते तयात्तीसं

भगवन्! चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा को क्या त्रायत्रिंशक देव हैं! हां त्रायत्रिंशक देव हैं. अहो भगवन्! किस कारनसे ऐसा कहागया है? अहो श्यामहस्तिन्! उस काल उस समयमें इस जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्र में काकंदी नामक नगरी थी. उस काकंदी नामक नगरीमें तेतीस सहायके करने वाले कुटुम्बके नायक श्रमणोपासक रहते थे. वे महाऋद्धिवंत यावत् अपरिभूत थे. जीवाजीवादि नवतत्वके जानकार थे, और पुण्यपापका स्वरूपको पहिचानने वाले यावत् विचरतेथे ॥ २ ॥ अब वे तेतीस त्रायत्रिंशक सहायकारी गाथापति

सहायक गा० गाथापति सं० श्रमणोपासक पु० पहिले उ० उग्र उ० उग्रविहारी सं० संविग्न सं० संविग्न विहारी भ० होकर त० पीछे पा० पार्श्वस्थ पा० पार्श्वस्थ विहारी ओ० शिथिल ओ० शिथिलाचारी कु० कुशील कु० कुशीलाचारी अ० स्वच्छंदी अ० स्वच्छंदाचारी ब० बहुत वा० वर्ष स० श्रमणोपासक प० पर्याय पा० पालकर त० उस ठा० स्थानको अ० विनाआलोचकर प० प्रतिक्रमणकर का० कालकेअवसर में का० कालकरके च०

सहाया गाहावई समणोवासगा पुव्विं उग्गा उग्गविहारी, संविग्गा संविग्गविहारी भवित्ता, तओ पच्छा पासत्था पासत्थविहारी, ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला. कुसील विहारी, अहाच्छंदा अहाच्छंदविहारी, बहूइं वासाइं समणोवासग परियागं पाउणंति २ त्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसंति २ त्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति २ त्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय पडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो

श्रावक पहिले उग्र, उग्र विहारी, संविग्न, संविग्न विहारी होकर पीछे पार्श्वस्थ, पार्श्वस्थ विहारी, प्रमादी प्रमाद विहारी, कुशील, कुशील विहारी स्वच्छंदी स्वच्छंदाचारी बने और बहुत वर्ष श्रमणोपासक पर्याय पालकर पन्नरह दिनकी संलेखनासे आत्माको झूसकर तीस भक्त अनशनका छेदन किया. इतना अनशन किये पीछे उस स्थानकी आलोचना निंदा किये विना कालके अवसरमें कालकर के चमर नामक असुरेन्द्रके त्राय-

चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के ता० त्रायस्त्रिंशक दे० देवपने उ० उत्पन्न हुवे ॥ ३ ॥ भं० भगवन् का० काकंदक ता० तेत्तीस स० सहायक स० श्रमणोपासक च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजाके ता० त्रायस्त्रिंशकपने उ० उत्पन्न हुवे त० तहां भ० भगवन् गो० गौतम सा० श्यामहस्ती अ० अनगारने ए० ऐसा वु० बोलते स० शंकित कं० कांक्षित वि० वितिगिच्छावाला उ० स्थानसे उ० उठकर सा० श्यामहस्ती अ० अनगार स० साथ जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां उ०

तायत्तीसगा देवत्ताए उववण्णा ॥ ३ ॥ जप्पभिइंचणं भंते ! कायंदगा तायत्तीसं सहाया समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तायत्तीसगदेवत्ताए उववण्णा; तप्पभिइंचणं भंते ! एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा-देवा २ ? तत्थणं भगवं गोयमे सामहत्थिणा अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिंच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेइत्ता सामहत्थिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे

त्रिंशक देवतापने उत्पन्न हुए ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जबसे वे तेत्तीस श्रावकों चमर नामक असुरेन्द्र के त्रायत्रिंशक पने उत्पन्न हुए उसदिनसे वे चमरेन्द्र के त्रायास्त्रिंशक कहाते है. फीर श्याम हस्तीने पूछा कि क्या पहिले त्रायत्रिंशक नहीं थे? ऐसा पुछने पर गौतम स्वामी को शंका कांक्षा व विचिकित्सा उत्पन्न हुई और अपने स्थानके उठकर श्यामहस्ती आचार्य की साथ श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पासगये और महावीर

आकर स० श्रमण भं० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन ण० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले अ० है भं० भगवन् च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजाके ता० त्रायस्त्रिंशक देव हं० हां अ० है से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहाजाता है ए० ऐसेही स० सर्व भा० कहना जा० यावत् ए० ऐसा वु० कहाता है च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजाके ता० त्रायस्त्रिंशक दे० देव णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरकुमारराजाके ता० त्रायस्त्रिंशक देव

भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ २ त्ता, एवं वयासी अत्थिणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तायत्तिसगा देवा ? हंता अत्थि; से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ एवं तंचेव सव्व भाणियव्वं जाव तप्पभिइंचणं एवं वुच्चइ ॥ चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तायत्तीसगा देवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, एवं खलु गोयमा ! चमरस्सणं असुरिंदस्स असुर कुमाररण्णो तायत्तीसगाणं

स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन्! चमर नामक असुरेन्द्र को क्या त्रायस्त्रिंशक हैं? हां गौतम! वगैरह सब पूर्वोक्त यावत् उसदिन से त्रायस्त्रिंशक कराते हैं! अहो भगवन्! चमरेन्द्र को क्या पहिले त्रायस्त्रिंशक देव नहीं थे? अहो गौतम! यह अर्थयोग्य नहीं है क्योंकी चमरेन्द्रके नाम शाश्वत कहे

के सा० शाश्वतनाम प० मरूपे न० नहीं क० कदापि ना० नहीं थे न० नहीं कदापि न० नहीं है जा० यावत् णि० नित्य अ० अविछिन्न अ० अन्य च० चवते हैं अ० अन्य उ० उपजते हैं ॥ ४ ॥ सरल शब्दार्थ

देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते, जं नकदायि नासी, नकदायि न भवइ जाव णिच्चे अव्वोच्छित्ति णयट्टयाए अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति ॥ ४ ॥ अत्थिणं भंते ! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो तायत्तीसगा देवा ? हंता अत्थि से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ बलिस्स वइरोयणिंदस्स जाव तायत्तीसगा देवा ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे विभेलेणामे सण्णिवेसे होत्था वण्णओ तत्थणं विभेले साण्णिवेसे जहा चमरस्स जाव उववण्णा ॥ तप्पभिइंचणं भंते ! ते विभेलगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा बलिस्स वइरोयाणिंदस्स सेसं

हुवे हैं. जो पहिले कदापि नहीं थे वैसा नहीं, नहीं है वैसा नहीं, वैसेही नहीं होगा वैसा नहीं यावत् नित्य अविच्छिन्न हैं प्रथम के चवते हैं व दूसरे उत्पन्न होते हैं? ॥ ४ ॥ अहो भगवन्! बलिनामक वैरोचनेन्द्र को क्या त्रायत्रिंशक हैं? अहो गौतम! उस काल उस समयमें इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्रमें विभेल नामक सन्निवेश था. बहुत वर्णन योग्य था जैसे चमरेन्द्रके त्रायत्रिंशक का अधिकार कहा वैसेही उस विभेलमें अधिकार कहना. उस विभेल सन्निवेश के तेतीस त्रायत्रिंशक गाथापाति श्रमणोपासक बलिनामक वैरोचनेन्द्रके त्रायत्रिंशकपने उत्पन्न हुवे यावत् नित्य व पहिले के चवते हैं तब उनके स्थान दूसरे उत्पन्न होते हैं वहां तक

तंचेव, जाव णिच्चे अव्वोच्छिण्णिणयट्ठयाए अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति ॥ ५ ॥ अत्थिणं भंते ! धरणस्स णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं जाव तायत्तीसगा देवा ? गोयमा ! धरणस्स णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो तायत्तीसगाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते, जं नकदायि नासी जाव अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति ॥ एवं भूयाणंदस्सवि, एवं जाव महाघोसस्सवि ॥ ६ ॥ अत्थिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो पुच्छा ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जाव तायत्तीसगा देवा ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं

सब कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या धरणेन्द्रको त्रायत्रिंशक हैं? हां गौतम! धरणेन्द्रको त्रायत्रिंशक देव रहते हैं. अहो भगवन्! यह किस कारनसे कहते हो? अहो गौतम! धरणेन्द्र के त्रायत्रिंशक के नाम शाश्वत हैं. पहिले नहीं थे वैसा नहीं, नहीं है वैसा नहीं, नहीं होगा वैसा नहीं यावत् पहिले के चवते हैं और नये उत्पन्न होते हैं. ऐसेही भूतानेन्द्र यावत् महाघोष के जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! शक्रेन्द्रको क्या त्रायत्रिंशक हैं? हां गौतम! है. अहो भगवन्! किस कारनसे ऐसा कहा गया है? अहो गौतम! उस काल उस समयमें इस जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें वालाक नामक सन्निवेश था. उसमें तेत्तीस गाथापति श्रमणोपा-

समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवें भारहे वासे वालाए णामं सण्णिवेसे होत्था वण्णओ ॥ तत्थणं वालाए सण्णिवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा जहा चमरस्स जाव विहरंति ॥ तएणं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा पुव्विपि पच्छावि उग्गा उग्गविहारी, संविग्गा, संविग्गविहारी, बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति २त्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति २ त्ता, आलोइय पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा जाव उववण्णा ॥ ७ ॥ जप्पभिइंचणं भंते! ते वालाए तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा सेसं जहा चमरस्स जाव अण्णे उववज्जंति ॥ ८ ॥ अत्थिणं भंते ! ईसाणस्स ३ एवं जहा

सक चमरेन्द्र के समान अधिकार वाले विचरते थे. वे तेत्तीस गाथपति श्रमणोपासक पहिले उग्र, उग्र विहारी संविग्न, संविग्न विहारी बनकर बहुत वर्ष पर्यंत श्रमणोपासकपना पाले बाद एक मास संलेषणा से आत्मा को झोंस कर साठ भक्त अनशन छेद कर आलोचन प्रतिक्रमण करके काल के अवसर में काल करके शक्रेन्द्र देव के त्रायत्रिंशकपने उत्पन्न हुवे ॥ ७ ॥ जिस दिन से उस वालाक सन्निवेश के गाथापति श्रमणोपासक यावत् पहिले के चवते हैं अन्य उत्पन्न होते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र के त्राय-

ते० उसकाल ते० उससमयमें रा० राजगृह ण० नगरमें गु० गुणशील चे० उद्यान में जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगई ते० उसकाल ते० उससमय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के ब० बहुत

सक्कस्स णवरं चंपाए णयरीए जाव उववण्णा जप्पभिइं चणं भंते ! ते चंपिच्चा ताय-त्तीसं सहाया सेसं तंचेव जाव अण्णे उववज्जंति ॥ ९ ॥ अत्थिणं भंते ! सणंकु-मारस्स देविंदस्स देवरण्णो पुच्छा? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं जहा धरणस्स तहेव ॥ एवं जाव पाणयस्स ॥ एवं अच्चुयस्स जाव अण्णे उववज्जंति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ दसमसयस्स चउत्थओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥ ४ ॥ * *

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं णयरे गुणासिलए चेइए जाव परिसापडिगया

त्रिशक क्या हैं ? अहो गौतम ! जैसे शक्रेन्द्र का कहा वैसे ही ईशानेन्द्र का जानना. मात्र इस में चंपा नगरी का अधिकार लेना. यावत् पहिले चवते हैं और अन्य उत्पन्न होते हैं ॥ ९ ॥ सनत्कुमार देवेन्द्र की पृच्छा. इस का अधिकार धरणेन्द्र जैसे कहना. ऐसे ही यावत् प्राणत व अच्युत तक कहना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह दशवा शतक का चतुर्थ उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १० ॥ ४ ॥

चौथे उद्देशे में देव की वक्तव्यता कही अब पांचवे उद्देशे में देवियों का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन करने को

अं० अंतेवासी थे० स्थविर भ० भगवन्त जा० जाति सं० संपन्न ज० जैसे अ० आठवा शतक में स० सातवा उ० उद्देशे में जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥१॥ त० तब से० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त जा० उत्पन्न हुइ स० श्रद्धा जा० उत्पन्न हुवा संशय ज० जैसे गो० गौतमस्वामी जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसे व० बोले च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अं० असुरराजाको क० कितनी अ० अग्रमहिषी प० प्ररूपी अ० आर्य पं० पांच अ० अग्रमहिषी प० प्ररूपी का० काली रा० रात्रि र० रजनी वि० विद्युत्

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइ संपण्णा जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए जाव विहरंति ॥ १ ॥ तएणं से थेरा भगवंतो जाय सड्ढा जाय संसया जहा गोयमसामी जाव पज्जुवा समाणा एवं वयासी-चमरस्सणं भंते! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-काली, रायी,

आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस काल उस समय में श्रमण भगवंत की पास रहनेवाले बहुत स्थविर भगवंत जाति संपन्न कुल संपन्न वगैरह आठवे शतक के सातवे उद्देशे में स्थविरों के गुणों का कथन कहा वैसे गुणों के धारक यावत् तप संयम से आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ १ ॥ उन स्थविर भगवंतों को श्रद्धा यावत् संशय उत्पन्न हुवा. इस से श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार

मे० मेधा त० तहां ए०एकेक दे० देवीको अ० आठ आठ दे० देवीमहस्र प० परीवार प० प्ररूपा प० समर्थ ता० उन ए० एकेक दे० देवीकी अ० अन्य अ० आठ दे० देवीमहस्र प० परिवार को वि० विकुर्वणाकर नको ए० ऐसेही स० पूर्वापरसे च० चालीप स० सहस्र तु० त्रुटित ॥ २ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा च० चमरचंचा रा० राजधानी स० सभा सु० सुधर्मा च० चमर सि० सिंहासनपे तु० त्रुटित स० साथ दि० दीव्य भो० भोगोपभोग भो० भोगता वि० विचरने को

रयणी, विज्जू मेहा ॥ तत्थणं एग मेगाए देवीए अट्ठट्ठा देवि सहस्स परिवारो पण्णत्तो ॥ पभू णं ताओ एगमेगाए देवीए अण्णाइं अट्ठट्ठ देवी सहस्साइं परियारं विउव्वित्तए एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तालीसं देवी सहस्सा, सेत्तं तुडिए ॥ २ ॥ पभूणं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि तुडिएणं सार्द्धि दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ?

कर पर्युपासना करते हुवे ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र असुरराजा को कितनी अग्रमहिषीयों कहीं ? अहो आर्यों ! चमरेन्द्र को पांच अग्रमहिषियों कहीं. १ काली २ रात्रि ३ रजनी ४ विद्युत् व ५ मेघा. उन में एक २ अग्रमहिषियों को आठ २ हजार देवियों का परिवार है और एक २ देवी आठ २ हजार रूप भोग भोगने के लिये वैक्रेय करने को समर्थ हैं. इसी तरह चालीस हजार

णो० नहीं इ० यहअर्थ स० योग्य से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहाजाता है णो० नहीं प० समर्थ चं० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा च० चमरचंचा रा० राजधानी जा० यावत् वि० विचरनेको अ० आर्य च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा च० चमरचंचा रा० राजधानी स० सभा सु०सुधर्मा में मा०माणवक चे० चैत्य खं०स्तंभ व०वज्रमय गो० गोला व० वर्तुलाकार व० बहुत जि०

णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णो पभू चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए ? अज्जो चमरस्सणं असुरिंदस्स असुर कुमाररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए माणवए चेइए खंभे वइरामए नु गोलवट्ट समुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ सण्णिक्खित्ताओ चिट्ठंति ॥ ॥ जाओणं

परिवारवाली देवियों आठ २ हजार रूप वैक्रेय कर सकते हैं. इन सब की एक त्रुटित नामक संख्या होती है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! चमर असुरेन्द्र चमर चंचा राज्यधानी की सुधर्मा सभा में चमर सिंहासनपे त्रुटित वर्गवाली देवियों की साथ दीव्य भोग भोगता हुवा विचरने को क्या समर्थ है ? अहो आर्यों ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो आर्यों ! चमरेन्द्र की चमर चंचा राज्यधानी की सुधर्मा सभा में माणवक चैत्यमें वज्ररत्नमय मणिस्थंभ में गोल वर्तुलाकार डब्वे में जिन दाढों प्रमुख रखी हैं. वे असुरकुमार राजा को व उस के अन्य बहुत देवी देवताओं को अर्चनीय

जिनके अस्थि सं० निक्षिप्त चि० हैं जा० जो च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा के अ० अन्य के ब० बहुत अ० असुरकुमार दे० देव के दे० देवी के अ० अर्चनेयोग्य वं० वांदने योग्य ण० नमस्कार करने योग्य पू० पूजने योग्य स० सत्कार करने योग्य स० सन्मान करने योग्य क० कल्याणकारी मं० मंगलकारी चे० ज्ञानवंत प० पूजने योग्य भ० हैं ते० उनके प० प्रणिधान में णो० नहीं प० समर्थ से० वह ते० इसलिये अ० आर्य ए० ऐसा वु० कहा जाता है णो० नहीं प० समर्थ च० चमर अ० असुरेन्द्र अ०

चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेसिंच बहूणं असुरकुमाराणं देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ णमंसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ भवंति ॥ तेसिं पणिहाणे णो पभू से तेणट्ठेणं अज्जो ! एवं वुच्चइ णो पभू चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए ॥ पभूणं अज्जो चमरे असुरिंदे असुरराया

वंदनीय, पूजनीय, नमस्कार योग्य, सत्कर्म योग्य, सन्मान योग्य, कल्याणकारी मंगलकारी देव समान आत्मा समान व पर्युपासनीय होते हैं. उनको मनमें श्रेष्ठ जानने से अहो आर्यो! चमरेन्द्र चमरचंचा राज्यधानी में सुधर्मा सभा में चमर नामक सिंहासन पर त्रुटित संख्यावाली देवियों की साथ भोग भोगने को समर्थ नहीं है परंतु चमरेन्द्र चमरचंचा राज्यधानी की सुधर्मा सभामें चमर सिंहासन पर आरूढ होकर

असुर राजा चं० चमर चंचा रा० राजधानीकी स० सभा सु० सुधर्मा च० चमर सी० सिंहासन में च० चौसठ सा० सामानिक सा० सहस्र ता० त्रायस्त्रिंशक अ० अन्य ब० बहुत अ० असुरकुमार दे० देव दे० देवी से सं० घेराये हुवे जा० यावत् भुं० भोगवते वि० विचरने को के० केवल प० परिचारणा करने को णो० नहीं मे० मैथुन सेवनेको ॥ ३ ॥ सरल शब्दार्थ ॥

चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठी सामाणिय साहस्सीहिं तायत्तीसाए जाव अण्णेहिंच बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय सद्धिं संपरिवुडे महयाहय जाव भुंजमाणे विहरित्तए ॥ केवलं परियारिद्धीए णो चेवणं मेहुणवत्तियं ॥ ३ ॥ चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुर कुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ? अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

चौसठ हजार सामानिक देव, तेतीस त्रायत्रिंशक, यावत् अन्य बहुत असुर कुमार के देव व देवियों की साथ परवराहुवा उस अनेक प्रकार के वादिंत्रों के महा नाद से अनेक प्रकार के नाटक देखता हुवा विचरने को समर्थ है. मात्र स्त्री के स्पर्श व शब्द रूप परिचारणा में समर्थ है परंतु मैथुन सेवन में समर्थ नहीं है ॥३॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र के सोम महाराजा को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो आर्यो ! चार अग्र-महिषियों कहीं. १ कनका, २ कनकलता, ३ चित्रगुप्ता व ४ वसुंधरा. उन में एक२ देवी को एक२ हजार

तंजहा - कणया, कणगलया, चित्तगुत्ता, वसुंधरा, तत्थणं एगमेगाए देवीए एगमेगं देविसहस्सं परिवारो पण्णत्तो ॥ पभूणं ताओ एगमेगादेवी अण्णं एगमेगं देवि सहस्स परियारं विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तारि देविसहस्सा, सेतं तुडिए ॥ पभूणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुर कुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए सोमंसि सीहासणंसि तुडिएणं अवसेसं जहा चमरस्स, णवरं परियारो जहा सूरियाभस्स ; सेसं तंचेव जाव णो चेवणं मेहुणवत्तियं चमरस्सणं भंते ! जाव रण्णो यमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ एवं चेव ॥ णवरं जमाए रायहाणीए सेसं जहा सोमस्स, एवं वरुणस्सवि, णवरं वरुणाए रायहाणीए

का परिवार है और एक २ देवी एक हजार रूप वैक्रेय कर सकती है इस तरह सब की गिन्ती करते त्रुटित संख्या होती है. अहो भगवन् ! सोम महाराजा सोमा राज्यधानी में सुधर्मा सभा में सोम सिंहासन पर त्रूटित रूप भोग भोगवने के लिये क्या करने को समर्थ है? अहो आर्यो! जैसे चमरेन्द्र का कहा वैसे ही यहां जानना. विशेष में परिवार रायप्रसेणी सूत्र में सूर्याभ देवता का जैसा अधिकार है वैसा जानना. यावत् मैथुन सेवन करने को समर्थ नहीं है. ऐसे ही यम, वरुण व वैश्रमण का जानना. परंतु

एवं वेसमणस्सवि, णवरं वेसमणाए रायहाणीए सेसं तंचेव जाव मेहुणवत्तियं॥ ४॥ बलिस्सणं भंते ! वइरोयणिंदस्स पुच्छा, अज्जो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तंजहा-सुभा, णिसुंभा, रंभा, निरंभा, मदणा ॥ तत्थणं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ सेसं जहा चमरस्स ; णवरं बलिचंचाए रायहाणीए परिवारो जहा मोयोद्देसए, सेसं तंचेव जाव मेहुणवत्तियं॥ ५॥ बलिस्सणं भंते ! वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तंजहा-मीणगा, सुभद्दा, विज्जुया,

इन में यम, वरुण व वैश्रमण राज्यधानी कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! बली नामक वैरोचनेन्द्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो आर्यों ! बली नामक वैरोचनेन्द्र को पांच अग्रमहिषियों कही जिन के नाम. शुभा, निशुंभा, रंभा, निरंभा व मदना. इन में एक २ को आठ २ हजार देवियों का परिवार, आठ २ हजार वैक्रेय करे वगैरह चमरेन्द्र जैसे कहना. यहां बलि चंचा राज्यधानी की सुधर्मा सभा में बलि चंचा सिंहासन कहना. परिवार जैसे तीसरे शतक में मोया उद्देशे में कहा वैसे कहना. यावत् भोग भोगवने को समर्थ नहीं है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! बलि नामक वैरोचनेन्द्र के सोम महाराजा को कितनी अग्रमहिषियों कही ? अहो आर्यों ! बली नामक वैरोचनेन्द्र के सोम महाराजा को चार अग्रमहिषियों कहीं. जिन के नाम. मेनका, सुभद्रा, विद्युत् और असनी. इन का सब अधिकार चमरेन्द्र के लोकपाल जैसे कहना और

असणी ॥ तत्थणं एगमेगाए देवीए सेसं जहा चमरस्स ॥ एवं जाव वेस-मणस्स ॥ ६ ॥ धरणस्सणं भंते ! णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कइ अग्गम-हिसीओ प० अज्जो ! छ प० तंजहा-अला, सक्का, सतेरा, सोदामिणी, इंदा, घणवि-ज्जुया ॥ तत्थणं एगमेगाए देवीए छ छ देविसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ॥ पभूणं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं छछ देविसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए एवामेव सपुव्वा वरेणं छत्तीसं देविसहस्साइं से तं तुडिए ॥ पभूणं भंते ! धरणे सेसं तंचेव ॥ णवरं धरणाए रायहाणीए धरणंसि सीहासणंसि सओ परिवारो सेसं तंचेव ॥ ७ ॥ धरण-

जैसे सोमका कहा वैसे ही शेष तीन लोकपालों का कहना ॥६॥ अहो भगवन् ! धरण नामक नाग कुमारे-न्द्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो आर्यों ! छ अग्रमहिषियों कही हैं. १ अला, २ शक्रा, ३ शतेरा, ४ सौदामिनी, ५ इन्द्रा, और ६ घन विद्युता. उन में से एक २ देवी को छ २ हजार का परिवार है. और एक देवी छ २ हजार वैक्रेय करती है. इस तरह सब संख्या एक त्रुटित होती है. अहो भगवन् ! धरणेन्द्र धरणा राज्यधानी की सुधर्मा सभा में धरण सिंहासन पर बैठे हुवे क्या त्रुटित संख्यावाली देवियों साथ वैक्रेय रूप करने को समर्थ हैं ? अहो आर्यों ! जैसे चमरेन्द्र कहा वैसे ही यहां जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! धरणेन्द्र के कालवाल लोकपाल को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ?

स्सणं भंते! णागकुमारिंदस्स कालवालस्स लोगवालस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदंसणा, ॥ तत्थणं एगमेगाए देवीए अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं, सेसाणं तिण्हिवि ॥ ९ ॥ भूयाणंदस्सणं भंते ! पुच्छा ? अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-रूया, रूअंसा सुरूवा, रूयगावई, रूपकांता, रूयप्पभा ॥ तत्थणं एगमेगाए देवीए अवसेसं जहा धरणस्स ॥१०॥ भूयाणंदस्सणं भंते ! णागकुमारस्स चित्तस्स पुच्छा ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा- सुनंदा,

अहो आर्यो ! चार अग्रमहिषियों कहीं. जिन के नाम अशोका, विमला, सुप्रभा, व सुदर्शना. उस का सब वर्णन चमरेन्द्र के सोम लोकपाल जैसे कहना और ऐसे ही शेष तीन का जानना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! भूतानेन्द्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो आर्यो ! छ अग्रमहिषियों कहीं. जिन के नाम. १ रूपा २ रूपांशा ३ सुरूपा ४ रूपकावती ५ रूपकान्ता ६ और रूपप्रभा. इन का सब अधिकार धरणेन्द्र जैसे कहना ॥ १० ॥ भूतानेन्द्र के चित्र नामक लोकपाल को चार अग्रमहिषियों कहीं. सुनंदा, सुभद्रा, सुजाता व सुमना. इन का सब अधिकार चमरेन्द्र के लोकपाल जैसे कहना, और शेष तीन लोक-

सुभद्दा, सुजाया, सुमणा ॥ तत्थणं एगमेगाए देवीए अवसेसं जहा चमर लोगपालाणं, एवं सेसाणवि, तिण्हिवि लोगपालाणं, तहा दाहिणिल्ला इंदा, तेसिं जहा धरणस्स ॥ लोगपलाणवि तेसिं जहा धरणलोगपालाणं ॥ उत्तरिंदाणं जहा भूयाणंदस्स, लोगपालाणवि, तेसिं जहा भूयाणंदस्स लोगपालाणं णवरं इंदाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणिय सरिसणामगाणि, परिवारो जहा मोओद्देसए ॥ लोगपालाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणिय, सरिसणामगाणि, परिवारो जहा चमरलोगपालाणं ॥ ११ ॥ कालस्सणं भंते ! पिसायइंदस्स पिसायरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो!

पाल का भी वैसे ही कहना. जितने दक्षिण दिशा के इन्द्र हैं उन का अधिकार धरणेन्द्र जैसे कहना, और दक्षिण दिशा के लोकपाल का अधिकार धरणेन्द्र के लोकपाल के अधिकार जैसे कहना. उत्तर दिशा के इन्द्र का अधिकार भूतानेन्द्र जैसे कहना. और उन के लोकपालों का अधिकार भूतानेन्द्र के लोकपालों जैसे कहना विशेष इतना कि राज्यधानीयों व सिंहासनों के नाम इन्द्र जैसे कहना और परिवार तीसरे शतक में जैसे मोया उद्देशे में कहा वैसे कहना. लोकपाल की राज्यधानीयों व सिंहासनों के नाम लोकपाल जैसे जानना. और परिवार चमरेन्द्र के लोकपाल जैसे जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! काल नामक पिशाचेन्द्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो आर्यो ! चार अग्रमहिषियों कहीं.

चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा- कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदंसा ॥ तत्थणं एगमेगाए देवीए एगमेगं देविसहस्सं सेसं जहा चमर लोगपालाणं परिवारो तहेव, णवरं कालाए रायहाणीए, कालंसि सीहासणंसि सेसं तंचेव॥ एवं महाकालस्सवि ॥ १२ ॥ सुरूवस्सणं भंते! भूतिंदस्स भूयरण्णो पुच्छा, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ, प० तंजहा रूयवई, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा॥ तत्थणं एगमेगा सेसं जहा कालस्स ॥ एवं पडिरूवस्सवि ॥ १३ ॥ पुण्णभद्दस्सणं भंते ! जाक्खिंदस्स पुच्छा ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा पुण्णा, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारया ॥ तत्थणं एगमेगाए सेसं जहा कालस्स ॥ एवं माणिभद्दस्सवि ॥ १४ ॥ भीमस्सणं

कमला, कमलप्रभा, उत्पला व सुदर्शना. एक २ देवी का एक२हजार का परिवार है वगैरह चमरेन्द्र के लोकपाल जैसे कहना. विशेषता में काल राज्यधानी व काल सिंहासन जानना. जैसे कालका कहा वैसे ही महा काल का जानना ॥ १२ ॥ सुरूप नामक भूतानेन्द्र को चार अग्रमहिषियों कहीं जिन के नाम. रूपवती, बहुरूपा, सुरूपा व सुभगा. उन का अधिकार काल जैसे कहना. जैसे सुरूप का कहा वैसे ही प्रतिरूप का जानना ॥ १३ ॥ पूर्ण भद्र नामक यक्षेन्द्र का चार अग्रमहिषियों कहीं. जिन के नाम. पूर्णा,

भंते ! रक्खसिंदस्स पुच्छा ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमाहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा पउमा, पउमावई, कणगा, रयणप्पभा, तत्थणं एगमेगा देवी सेसं जहा कालस्स ॥ एवं महाभीमस्सवि ॥ १५ ॥ किण्णरस्सणं भंते ! पुच्छा ? अज्जो ! चत्तारि अग्ग महिसीओ, प० तंजहा वडिंसा, केतुमई, रइसेणा, रइप्पिया ॥ तत्थणं सेसं तंचेव ॥ एवं किंपुरिसस्सवि ॥ १६ ॥ सुप्पुरिसस्सणं पुच्छा ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहि-सीओ पण्णत्ताओ, तंजहा रोहिणी. णवमिया, हिरी, पुप्फवई ॥ तत्थणं एगमेगा देवी सेसं तंचेव ॥ एवं महापुरिसस्सवि ॥ १७ ॥ अइकायस्सणं पुच्छा ? अज्जो !

बहुपुत्रिका, उत्तमा व तारका. इन का सब अधिकार कालेन्द्र जैसे कहना. ऐसे ही मणिभद्र का जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! भीम नामक राक्षसेन्द्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो आर्यों ! चार अग्रमहिषियों कहीं. १ पद्मा २ पद्मावती ३ कनका व ४ रत्नप्रभा. इन का अधिकार काल जैसे कहना ऐसे ही महाभीम का जानना ॥ १५ ॥ किन्नर को चार अग्रमहिषियों कहीं जिन के नाम. अवतंसा, केतुमती, रतिसेना और रतिप्रिया. शेष सब अधिकार पूर्वोक्त जैसे कहना ऐसे ही किंपुरुष का जानना ॥ १६ ॥ सत्पुरुष को चार अग्रमहिषियों कहीं रोहिणी, नवमिका ह्री व पुष्पवती शेष अधिकार पूर्वोक्त जैसे

चत्तारि अग्गमहिसीओ प०तं० भुयगा, भुयगवई, महाकच्छा, फुडा तत्थणं सेसं तंचेव ॥ एवं महाकालस्सवि ॥ १८ ॥ गीयरइस्सणं भंते ! पुच्छा ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० सुघोसा, विमला, सुस्सुरा, सरिस्सई, ॥ तत्थणं सेसं तंचेव ॥ एवं गीयजसस्सवि सव्वेसिं एएसिं जहा कालस्स णवरं सरिसनामगाओ, रायहाणीओ, सीहासणाणिय सेसं तचेव ॥ १९ ॥ चंदस्सणं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसियरण्णो पुच्छा? अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ प०तं०चंदप्पभा, जोइसिणाभा, अच्चिमाली पभंकरा ॥ एवं जहा जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए, तहेव सूरस्सवि सूरप्पभा,

कहना. ऐसे ही महा पुरुष का जानना ॥ १७ ॥ अतिकाय को चार अग्रमहिषियों कहीं. भुजगा, भुजगावती, महा कच्छा व स्फुटा शेष सब अधिकार पूर्वोक्त जैसे ऐसे ही महा काय का जानना ॥ १८ ॥ गीतरति को चार अग्रमहिषियों सुघोषा, विमला, सुस्वरा व सरस्वती शेष सब पूर्वोक्त जैसे कहना. ऐसे ही गीतयशका कहना. सब का अधिकार काल जैसे कहना. मात्र इन्द्र के नाम जैसे राज्यधानी व सिंहासन कहना ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र नामक ज्योतिषीन्द्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो आर्यो ! चार अग्रमहिषियों कही जिन के नाम-चंद्रप्रभा, ज्योतिषीप्रभा, अर्चिमाली व प्रभंकरा. ऐसे जैसे जीवाभिगम में ज्योतिषी उद्देशा कहा वैसे कहना. वैसे ही सूर्य का कहना परंतु इन की अग्रमहिषियों के नाम-

आइच्चा, अच्चिमाली, पभंकरा ॥ सेसं तहेव जाव णो चेवणं मेहुणवत्तियं ॥ २० ॥ इंगालस्सणं भंते ! महागहस्स कति अग्गमहिसीओ पुच्छा ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० विजया, वेजयंती, जयंती, अपराजिता ॥ तत्थणं एगमेगाए देवीए सेसं तंचेव ॥ जहा चंदस्स णवरं इंगालवडिंसए विमाणे, इंगालगंसि सिंहासणंसि सेसं तंचेव ॥ एवं वियालस्सवि ॥ अट्ठासीएवि ॥ महागहाणं वत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा जाव भावकेउस्स, णवरं वडिंसगा सीहासणाणिय सरिसणा-मगाणि ॥ सेसं तंचेव ॥ २१ ॥ सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो

सूरप्रभा, आदित्या, अर्चिमाली व प्रभंकरा जानना. शेष सब अधिकार पूर्वोक्त जैसे कहना यावत् मैथुन सेवन करने को वैक्रेय नहीं कर सकते हैं ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! इंगाल नामक महा ग्रह को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो आर्यो ! चार अग्रमहिषियों कहीं जिन के नाम विजया, वैजयंती, जयंती व अपराजिता शेष सब अधिकार चंद्र जैसे कहना. मात्र इस में इंगाल वडिंसग विमान व इंगाल सिंहासन का कहना. ऐसे ही अठासी ग्रह का कहना. मात्र अवतंसक व सिंहासन जिन के जो नाम है वैसा कहना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र को कितनी अग्रमहिषियों कही ? अहो आर्यो ! शक्रेन्द्र को

पुच्छा ? अज्जो अट्ठ अग्गमहिमीओ पण्णत्ताओ तं० पउमा, सिवा सेवा, अंजू, अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणी ॥ तत्थणं एगमेगाए देवीए सोलस २ देवी सहस्सपरिवारो पण्णत्तो ॥ पभूणं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं सोलस २ देविसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठावीसुत्तरं देवि सयसहस्सं परिवारो विउव्वित्तए, सेतंतुडिए ॥ पभूणं भंते ? सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवाडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि तुडिएणं सर्द्धि सेसं जहा चमरस्स णवरं परिवारो जहा मोओद्देसए ॥ सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पुच्छा ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहि-

आठ अग्रमहिषियों कही. १ पद्मा, २ सिवा, ३ सेवा, ४ अंजू, ५ अमला, ६ अप्सरा ७ नवमिका ८ व रोहिणी. एक देवी को सोलह २ हजार देवियों का परिवार रहा हुवा है और एक देवी सोलह हजार वैक्रेय रूप कर सकती है इससे १२८ हजार देवियों परिवारवाली होती है, इससे त्रुटित संज्ञा होती है. अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र देवराजा सौधर्म देवलोक के सौधर्मावतंसक विमान की सुधर्मा सभा में शक्र सिंहासन पर से त्रुटित संख्यावाली देवियों की साथ भोग भोगने के लिये क्या इतने रूप कर सकते हैं ? अहो

सीओ पण्णत्ताओ तं० रोहिणी, मदणा, चित्ता, सोमा, ॥ तत्थणं एगं सेसं जहा चमरलोगपालाणं, णवरं सयंप्पभे विमाणे, सभाए सुहम्माए सोमंसि सीहासणंसि सेसं तंचेव ॥ एवं जाव वेसमणस्स, णवरं विमाणाइं जहा तइयसए ॥ २२ ॥ ईसाणस्सणं भंते! पुच्छा ? अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा कण्हा, कण्हराती, रामा, रामरक्खिया, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुंधरा ॥ तत्थणं एगमेगाए सेसं जहा सक्कस्स ॥ ईसाणस्सणं भंते! देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पुच्छा ? अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

आर्यो! जैसे चमरका कहा वैसे ही जानना. अहो भगवन्! शक्रेन्द्र के सोम महाराजा को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो आर्यो! चार अग्रमहिषियों कहीं. जिन के नाम रोहिणी, मदना, चित्रा, व सोमा शेष सब अधिकार चमरेन्द्र के लोकपाल जैसे कहना. मात्र यहां स्वयंप्रभ विमान में सोम सिंहासन कहना वैसेही यम वरूण व वैश्रमण का जानना परिवारादिक का अधिकार तीसरा शतक जैसे कहना ॥२२॥ अहो भगवन्! ईशानेन्द्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं? अहो आर्यो! आठ अग्र महिषियों कहीं. १ कृष्णा २ कृष्णराती ३ रामा ४ रामरक्षिता ५ वसु ६ वसुगुप्ता ७ वसुमित्रा और ८ वसुंधरा इस के

क० कहां भ० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र की स० सभा सु० सुधर्मा प० प्ररूपी गो० गौतम जं० जंबूद्वीप में मं० मेरु प० पर्वत की दा० दक्षिण में इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीकी ए० ऐसे ज० जैसे रा०

तं० पुढवी, राई, रयणी, विज्जू, ॥ तत्थणं सेसं जहा सक्कस्स लोगपालाणं ॥ एवं जाव वरुणस्स णवरं विमाणा जहा चउत्थसए सेसं तंचेव जाव णोचेवणं मेहुणवत्तियं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ दसम सयस्स पंचमओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥ ५ ॥ * * *

कहिण्णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता? गोयमा! जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एवं जहा

परिवार आदिका सब अधिकार शक्रेन्द्र जैसे कहना. ईशानेन्द्र के सोम महाराजाको कितनी अग्र महिषियों कहीं? अहो आर्यों! चार अग्रमहिषियों कहीं पृथ्वी, रति, रजनी, व विद्युत् शेष सब शक्रेन्द्र के लोक पाल जैसे कहना. ऐसेही वरुण तक चारों लोकपालों का कहना. और विमान चौथा शतक जैसे कहना. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं यह दशवा शतक का पांचवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १० ॥ ५ ॥

पांचवे उद्देशे में देवियों की वक्तव्यता कही आगे देव संबंधी सुधर्मा सभा का कथन करते हैं. अहो भगवन्! शक्र देवेन्द्र की सुधर्मा सभा कहां है? अहो गौतम! इस जंम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण

रायप्रश्नेनीय में जा० यावत् पं० पांच व० वडिंशक प० प्ररूपे अ० अशोक वडिंशक जा० यावत् म० मध्ये सो० सौधर्म वडिंशक म० महाविमान अ० अर्ध ते० तेरह स० शतसहस्र आ० लंबे वि० चौडे ए० ऐसे ज० जैसे सू० सूर्याभ त० तैसे उ० उपपात स० शक्रका अ० अभिशेक त० तैसे ज० जैसे सू० सूर्याभ

रायप्पसेइणिज्झे जाव पंच वडिंसगा पण्णत्ता, तंजहा-असोय वडिंसए जाव मज्झे सोहम्मवडिंसए महाविमाणे अद्धतेरस जोअणसय सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं एवं जहा सूरियाभे तहेव उववाओ, सक्कस्सय अभिसेओ तहेव जहा सूरियाभस्स;

में इस रत्नप्रभा पृथ्वी के उपर सूर्य चंद्र, ग्रह नक्षत्र व तारे को उल्लंघकर आगे जावे वहां सौधर्म देवलोक कहा है. वहां पांच विमान कहे हैं उनके नाम १ अशोकावतंसक २ सप्तवर्णावतंसक ३ चंपकावतंसक ४ चूतावतंसक ५ और ५ बीचमें सौधर्मावतंसक है. यह साढे बारह लक्ष योजन का लम्बा चौडा है. उसमें उत्पात सभा है. उत्पात सभा में उत्पात शैय्या है. उस काल उस समय में शक्र देवेन्द्र देवराजा उत्पन्न होकर आहार पर्याय, शरीर पर्याय, इन्द्रिय पर्याय श्वासोश्वास पर्याय व भाषामन पर्याय इन पांच पर्यायों बांधकर बैठेहुए फीर वहां से अभिषेक सभा में गये. वहां पूर्वाभिमुखहो सिंहासन पर बैठे और त्रायत्रिंशक, सामानिक व आभियोगिक देवताओं को बोलाकर कहने लगे कि शक्र देवेन्द्रका अभिषेक करो इत्यादि सब वर्णन रायप्रसेणी सूत्रमें सूर्याभ देव जैसे कहना वैसे ही अलंकार सभामें आकर अनेक उत्तम

का अ० अलंकार अ० अर्चनिक त० तैसे जा० यावत् आ० आत्मरक्षक देव दो० दोसागरोपम ठि० स्थिति स० शक्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देव राजा के० कितना म० महर्द्धिक ज० यावत् के० कितना म० महा सुखी गो० गौतम म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महासुखी त० तहां ब० बत्तीस वि० विमान

अलंकार अच्चणिया तहेव ॥ जाव आयरक्खदेवात्ति. दोसागरोवमाइं ठिई ॥ सक्केणं भंते? देविंदे देवराया के महिड्ढीए जाव के महेसक्खे? गोयमा! महिड्ढीए जाव महेसक्खे सेणं तत्थ बत्तीसाए विमाणावास सयसहस्साणं जाव विहरइ ॥ महिड्ढीए.

मुल्य वाले व कम वजन वाले वस्त्राभूषणों से शरीर अलंकृत किया. वहांतक सब अधिकार कहना जिन प्रतिमा की अर्चना की फीर सौधर्म सभा में आये शक्र सिंहासन पर पूर्वाभिमुखने बैठे ईशान कौन में चौरासी हजार सामानिक देव बैठे पूर्व में अग्र महिषियों अग्नि कौन में आभ्यंतर परिषदा के बारह हजार देव दक्षिण में मध्यम परिषदा के चौदह हजार देव, नैऋत्य कौन में बाहिर की परिषदा के सोलह हजार देव पश्चिम में सात अनिक के अधिपति और शक्रेन्द्र की चारों दिशा में चौरासी हजार सामानिक देव व चौरासी हजार २ आत्म रक्षक देव बैठे, शक्रेन्द्र की दो सागरोपम की स्थिति कही है अहो भगवन्! शक्रेन्द्र कैसी ऋद्धिवाले होते है? अहो गौतम! शक्र देवेन्द्र बहुत ऋद्धिवंत, बहुत द्युतिवंत, महा भाग्यवंत महा यशवंत, महा बलवंत, महा एश्वर्यवंत, है. बत्तीस लाख विमान के मालक है. चौरासी हजार सामा-

आ० आवास स० शत सहस्र जा० यावत् वि० विचरते हैं म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महा सुखी स० शक्र दे० देवेन्द्र से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १० ॥ ६ ॥ + +

क० कहां भं० भगवन् उ० उत्तर के ए० एकरूक म० मनुष्य के ए० एकरूकद्वीप प० प्ररूपा ए० ऐसे

जाव महेसक्खे, सक्के देविंदे देवराया ॥ सेवं भंते, भंतेत्ति ॥ दसम सयस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥ ६ ॥ × × ×

कहिण्णं भंते ! उत्तरिल्लाणं एगूरुय मणुस्साणं एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ? एवं

निक देव हैं, तेतीस त्रायास्त्रिंशक देव हैं आठ अग्र महिषियों यावत् बहुत देव देवियों का पालन करते हुवे विचरते हैं, इस प्रकार महा ऋद्धिवंत यावत् महा ऐश्वर्यवंत शक्र देवेन्द्र देव राजा रहा हुवा है. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह दशवा शतक का छट्ठा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ १० ॥ ६ ॥

छठे उद्देशे में देव सभा का कथन किया. जुगलिये देवलोक में उत्पन्न होते हैं इसलिये युगलियों का वर्णन करते हैं. अहो भगवन् ! उत्तर दिशा के एक रूक मनुष्यों का एक रूक द्वीप कहां है ? अहो गौतम ! इन अठाइस अंतर द्वीप का वर्णन जीवाभिगम सूत्र से जानना. यावत् अठावीसवा शुद्धदंत द्वीप तक का अधिकार पाहिले चुल्लहिमवंत पर्वत के अठावीस उद्देशे कहे वैसे ही यहां शिखरी पर्वत के

ज० जैसे जी० जीवाभिगम में त० तैसे नि० निर्विशेष जा० यावत् सु० शुद्धदंतद्वीप ए० ये अ० अट्ठा-वीस उ० उद्देशा भा० कहना से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् विं० विचरते हैं ॥ १०॥७-३४॥

जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव सुद्धदंत दीवोत्ति ॥ एए अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ दसम सयस्सय चउत्तीसइमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥ ३४ ॥ दसमं सयं सम्मत्तं ॥ १० ॥

कह देना. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर तप संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री गौतम स्वामी विचरने लगे. यह दशवा शतक का सातवा उद्देशा से चौतीसवा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १० ॥ ७-३४ ॥ यह दशवा शतक समाप्त हुवा ॥ १० ॥

:०:

॥ एकादश शतकम् ॥

उ० उत्पल सा० सालूक प० पलास कुं० कुंभी ना० नाडीक प० पद्म क० कर्णिका न० नलीन शि० शिव लो० लोक का० काल अ० आलभिका द० दश दो० दो ए० अग्यारवे में ते० उस काल ते० उस समय में रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले उ० उत्पल भं० भगवन् ए० एक प० पत्र में किं०

उप्पल सालु पलासे, कुंभी नालीय; पउम कण्णीय, नलिण सिवलोग काला-
लभीय दसदोय एक्कारे तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी

दशवे शतक के अंत में अंतरद्वीपों का वर्णन कहा. उन अंतरद्वीपों में वनस्पति की अधिकता है इस लिये इस अग्यारवे शतक में वनस्पति आश्री प्रश्नोत्तर कहते हैं. इस शतक में बारह उद्देशे कहे हैं. उन के नाम १ पहिले उद्देशे में उत्पल की व्याख्या २ दूसरे में उत्पल के कंद का निरूपन, ३ पलासका ४ कुंभी वनस्पति का ;५ नाली के आकार की वनस्पतिका, ६ पद्म कमलका ७ कर्णिका का ८ नलिनी का ९ शिवराजर्षि का १० लोक अधिकार ११ काल अधिकार १२ आलभिका का यह अग्यारवे शतक के बारह उद्देशे कहे हैं प्रथम उत्पल कमल नामक उद्देशे के ३२ द्वार कहे हैं. १ उत्पन्न द्वार २ परिमाण ३ अवाहिरीया ४ ऊंचता ५ बंध ६ वेदना ७ उदय ८ उदीरणा ९ लेश्या १० दृष्टि ११ ज्ञान १२ योग १३ उपयोग १४ वर्णादि १५ उश्वास नीश्वास १६ आहार १७ व्रती १८ क्रिया १९ बंध

क्या ए० एक जीव अ० अनेक जी० जीव गो० गौतम ए० एक जी० जीव णो० नहीं अ० अनेक जी० जीव ते० उस सिवा जे० जो अ० अन्य जी० जीव उ० उत्पन्न होते हैं ते० वे णो० नहीं ए० एक जी० जीव अ० अनेक जीव ॥ १ ॥ सरल शब्दार्थ ॥

उप्पलेणं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे! गोयमा ? एगजीवे णो अणे-गजीवे; तेणपरं जे अण्णे जीवा उववज्जंति, तेणं णो एगजीवा अणेगजीवा ॥ १ ॥ तेणं भंते जीवा कओहिंतो उववज्जंति, किं णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खमणुदेवेहिंतो

२० संज्ञा २१ कषाय २२ वेद २३ वेद बंध २४ संज्ञी असंज्ञी २५ इन्द्रिय २६ अनुबंध २७ संवेग २८ आहार २९ स्थिति द्वार ३० समुद्घात ३१ वेदना और ३२ उत्पात. उस काल उस समय में राज-गृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि, अहो भगवन् ! उत्पल कमल के एक पत्र में एक जीव है या अनेक जीव हैं ? अहो गौतम ! उत्पल कमल के एक पत्र में मूल एक ही जीव है परंतु अनेक जीव नहीं हैं और उस उपरांत उस जीव के अवयव रूप अन्य अनेक जीव उत्पन्न होते हैं उस आश्री अनेक जीव हैं परंतु एक जीव नहीं हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! उत्पल कमल में नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव इन चारों गति-वाले में से कौनसी गतिवाले जीव आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नरक के जीव उत्पल कमल में

उववज्जंति? गोयमा! णो णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उव-
वज्जंति, मणुस्सदेवेहिंतो वि उववज्जंति, एवं उववाओ भाणियव्वो, जहा वक्कंतीए वण-
स्सइकाइयाणं जाव ईसाणोत्ति ॥ २ ॥ तेणं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उव-
वज्जंति? गोयमा! जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं संखेज्जावा, असंखे
ज्जावा उववज्जंति ॥ ३ ॥ तेणं भंते! जीवा समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा
केवइयकाले अवहीरंति? गोयमा! तेणं असंखेज्जा समए २ अवहीरमाणा असंखे-
ज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति णो चेवणं अवहिरिया सिया ॥ ४ ॥

नहीं उत्पन्न होते हैं बाकी तीनों गतिवाले उत्पन्न होते हैं. इस का विशेष खुलासा पन्नवणा सूत्र के छठे पद में वनस्पतिकाय में उत्पन्न होने का जो कथन कहा है वैसे ही यहां भी कहना यावत् दूसरे ईशान देवलोक मे चवकर देवता उत्पल कमल में उत्पन्न होते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! एक समय में कितने जीव उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! एक समय में जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्यात, असंख्यात उत्पन्न होते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! वे जीवों नीकलते हुवे कितने समय में सब जीवों नीकल सके ? अहो गौतम ! एक २ समय में असंख्यात २ जीवों नीकलते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत

तेणं भंते ! जीवा के महालया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगु-लस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं साइरेगं जोअणसहस्सं ॥ ५ ॥ तेणं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा अबंधगा ? गोयमा ! णो अबंधगा बंधएवा बंधगावा एवं जाव अंतराइयस्स, णवरं आउयस्स पुच्छा ? गोयमा ! बंधएवा, अबंध-एवा, बंधगावा. अबंधगावा. अहवा बंधएय अबंधएय, अहवा बंधएय अबंधगाय,

हो जावे तो भी सब जीव नहीं नीकल सकते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! उक्त जीवों कितनी अवगाहना-वाले होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन अधिक ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! वे जीवों ज्ञानावरणीय कर्म के बंधक हैं या नहीं ? अहो गौतम ! अबंधक नहीं है परंतु बंधक हैं, एक जीव आश्री एक वचन और बहुत जीव आश्री बहुवचन ऐसे दो भांगे पाते हैं इसी प्रकार आयुष्य कर्म छोडकर आठवे अंतराय कर्म तक कहना. आयुष्य कर्म को एक भव में एक ही वक्त बांधते हैं इसलिये अबंध अवस्था भी पाती है इसलिये आयुष्य में बंध काल में बंधक और अबंध काल में अबंधक भी है बहुत जीव आश्री आयुष्य काल में बहुत जीव बंधक है और अबंधक काल में बहुत जीव अबंधक भी हैं. यों चार भांगे हुवे. ५ एक जीव बंधक एक जीव अबंधक एक जीव बंधक बहुत जीव अबंधक, बहुत जीव बंधक एक जीव अबंधक अथवा बहुत जीव बंधक बहुत जीव अबंधक,

अहवा बंधगाय अबंधगेय, अहवा बंधगाय अबंधगाय एए अट्ठ भंगा ॥ ६॥ तेणं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा अवेदगा? गोयमा ! णो अवेदगा वेदएवा वेदगावा, एवं जाव अंतराइयस्स॥ ७॥तेणं भंते! जीवा किं सायावेदगा असायावेदगा ? गोयमा! सायावेदएवा असातावेदएवा अट्ठ भंगा॥ ८ ॥ तेणं भंते! जीवा णाणावर-णिज्जस्स कम्मस्स किं उदई अणुदई? गोयमा! णो अणुदई उदईवा उदइणोवा एवं जाव अंतराइयस्स ॥ ९ ॥ तेणं भंते जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदी

ऐसे आठ भांगे जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे ज्ञानावरणीय कर्म के वेदक हैं या अवेदक हैं ? अहो गौतम ! एक जीव आश्री वेदक है और बहुत जीव आश्री वेदक हैं ऐसे दो भांगे जानना. ऐसे ही अंतराय तक का जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे जीव सुख वेदनेवाले हैं या दुःख वेदनेवाले हैं ? अहो गौतम ! साता वेदनेवाले व असाता वेदनेवाले वगैरह आयुष्य बंध के आठ भांगे जैसे यहां आठ भांग कहना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या उन जीवों को ज्ञानावरणीय कर्म का उदय होता है या उदय नहीं होता है ? अहो गौतम ! उन को अनुदय नहीं है परंतु उदय आश्री एक वचन व द्विवचन ऐसे दो भांगे होते हैं. ऐसे ही अंतराय कर्म तक जानना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! उन जीवों को क्या उदीरणा होती है या उदीरणा नहीं होती है ? अहो गौतम ! उदी-

रगा अणुदीरगा ? गोयमा ! णो अणुदीरगा उदीरएवा, उदीरगावा एवं जाव अंतराइ-यस्स॥ णवरं वेयणिज्जाउएसु अट्ठभंगा॥ १०॥ तेणं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा, नील-लेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा ? गोयमा ! कण्हलेस्सेवा, नीललेस्सेवा, काउले-स्सेवा, तेउलेस्सेवा; कण्हलेस्सावा, नीललेस्सावा, काउलेस्सावा, तेउलेस्सावा, अहवा कण्हलेस्सेय, नीललेस्सेय एवं एएदुया संयोग तियासंजोग चउक्क संजोगेणय; असीति भंगा भवंति ॥ ११ ॥ तेणं भंते ! जीवा किं सम्मादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्ममिच्छा दिट्ठी ? गोयमा! णो सम्मादिट्ठी णो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठीवा मिच्छादिट्ठिणोवा

रणा होती है. ५२। अनुदीरणा नहीं होती है. और उदीरणा आश्री एक वचन व द्विवचन के दो भांगे कहना. ऐसे ही अंतराय कर्म का कहना. और वेदनीय में आठ भांगे कहना. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! क्या वे जीव कृष्ण लेश्यावाले, नील लेश्यावाले, कापोत लेश्या वाले व तेजो लेश्यावाले हैं ? अहो गौतम ! कृष्ण लेश्यावाला, नील लेश्यावाला, कापोत लेश्यावाला, व तेजो लेश्यावाला अथवा कृष्णलेश्यावाले, नील लेश्यावाले, कापोत लेश्यावाले, व तेजो लेश्यावाले यों एक वचन, अनेक वचन के असंयोगी आठ भांगे हुवे. ऐसे ही एक कृष्ण लेश्यावाला एक नील लेश्यावाला ऐसे द्विसंयोगी २४ भांगे, तीन संयोगी ३२ भांगे चतुष्क संयोगी १६ यों सब मीलकर ८० भांगे होते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव सम-दृष्टी हैं, मिथ्या दृष्टी हैं या सम मिथ्या दृष्टि हैं ? अहो गौतम ! सम दृष्टि नहीं है, मिथ्यादृष्टी हैं व

॥ १२ ॥ तेणं भंते ! जीवा किं नाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णो णाणी अण्णाणी, अण्णाणिणोवा ॥ १३ ॥ तेणं भंते जीवा किं मणजोगी, वइजोगी, काय जोगी? गोयमा! णो मणजोगी, णो वइजोगी, कायजोगीवा, कायजोगिणोवा ॥ १४ ॥ तेणं भंते! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता? गोयमा! सागारोव-उत्तेवा अणगारोवउत्तेवा अट्ठ भंगा ॥ १५ ॥ तेणं भंते! जीवाणं सरिरगा कइ-वण्णा कइगंधा कइरसा, कइफासा पण्णत्ता? गोयमा! पंचवण्णा दुगंधा पंचरसा

सम मिथ्या दृष्टि नहीं है उस में भी मिथ्या दृष्टि के एक वचन बहुवचन आश्री दो भांगे जानना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे जीवों ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं ? अहो गौतम ! ज्ञानी नहीं हैं परंतु अज्ञानी हैं उन में एक वचन द्विवचन आश्री अज्ञानी के दो भेद होते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे मनयोगी वचन योगी व काय योगी हैं ? अहो गौतम ! मन योगी व वचन योगी नहीं हैं परंतु काय योगी है. उस के एक वचन द्विवचन ऐसे दो भांगे होते हैं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे जीव साकारोपयुक्त है या अनाकारोपयुक्त है ? अहो गौतम ! साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त है ऐसे ही उस के आठ भांगे जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! उन जीवों के शरीर कितने वर्णवाले, कितनी गंधवाले, कितने रसवाले व कितने स्पर्शवाले परूपे हैं ? अहो गौतम ! पांच वर्ण, दो गंध पांच रस व आठ स्पर्शवाले हैं

अट्ठफासा पण्णत्ता, तेपुण अप्पणा अवण्णा अगंधा अरसा अफासा पण्णत्ता ॥ १६॥ तेणं भंते ! जीवा किं उस्सासा निस्सासा णो उस्सासणिस्सासा ? गोयमा ! उस्सासएवा णिस्सासएवा णो उस्सास णिस्सासएवा, उस्सासगावा णिस्सासगावा णो उस्सास णिस्सासगावा अहवा उस्सासएय णिस्सासएय ४ ॥ अहवा उस्सासएय णो उस्सास णिस्सासएय ४ । अहवा णिस्सासएय णो उस्सास णिस्सासएय ४॥ अहवा उस्सासएय णिस्सासएय णो उस्सास णिस्सासएय अट्ठ भंगा ॥ एए छव्वीसं भंगा भवंति ॥ १७ ॥ तेणं भंते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! णो अणाहारगा आहारएवा, अणाहारएवा अट्ठ भंगा ॥ १८ ॥ तेणं भंते जीवा किं विरया

परंतु आत्म स्वरूप से वर्ण रहित, गंध रहित, रस रहित व स्पर्श रहित प्ररूपे हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे उश्वास, नीश्वासवाले हैं या उश्वास नीश्वास वाले नहीं है ? अहो गौतम ! एक श्वासवाला, एक उश्वासवाला, और एक उश्वास नीश्वासवाला नहीं यह तीन एक वचन और तीन अनेक वचन यों एक संयोगी छ भांगे द्विसंयोगी १२ भांगे और तीन संयोगी आठ भांगे यों सब मीलकर २६ भांगे होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे जीवों आहारक हैं या अनाहारक हैं ? अहो गौतम ! अनाहारक नहीं

अविरया विरयाविरया? गोयमा ! णो विरया णो विरयाविरया, अविरएवा, अविरयावा ॥ १९ ॥ तेणं भंते ! जीवा किं सकिरिया अकिरिया? गोयमा ! णो अकिरिया सकिरिएवा सकिरियावा ॥ २० ॥ तेणं भंते ! जीवा, किं सत्तविहबंधगावा अट्ठविह बंधगावा? गोयमा ! सत्तविह बंधएवा; अट्ठविह बंधएवा, अट्ठ भंगा ॥ २१ ॥ तेणं भंते! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता, भयसण्णोवउत्ता, मेहुणसण्णोवउत्ता, परिग्गहसण्णोवउत्ता? गोयमा ! आहारसण्णोवउत्तेवा असीति भंगा ॥२२॥

है परंतु आहारक है उन में आठ भांगे पाते हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे जीव विरती, अविरती या विरताविरती है ? अहो गौतम ! विरती नहीं है विरताविरती नहीं है परंतु अविरती हैं इस में दो भांगे पाते हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे जीव सक्रिय हैं या अक्रिय हैं ? अहो गौतम ! वे जीवों अक्रिय नहीं है परंतु सक्रिय में एक वचन द्विवचन के दो भांगे होते हैं ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! क्या वे जीव सात प्रकार के बंधवाले हैं या आठ प्रकार के बंधवाले हैं ? अहो गौतम ! सात प्रकार के बंधवाले व आठ प्रकार के बंधवाले यों आठ भांगे जानना. ॥२१॥ अहो भगवन् ! क्या वे जीवों आहार संज्ञा वाले हैं, भय संज्ञा वाले हैं, मैथुन संज्ञावाले हैं व परिग्रह संज्ञावाले हैं? अहो गौतम ! उन जीवों में चारों संज्ञा

तेणं भंते! जीवा किं कोहकसाई, माणकसाई, मायाकसाई, लोभकसाई? गोयमा! कोह कसाईवा असीतिभंगा ॥ २३ ॥ तेणं भंते! जीवा किं इत्थीवेदगा, पुरिसवेदगा, णपुंसगवेदगा? गोयमा! णो इत्थीवेदगा, णो पुरिसवेदगा; णपुंसगवेदगेवा णपुंसगवेदगावा ॥ २४ ॥ तेणं भंते जीवा किं इत्थीवेद बंधगा, पुरिसवेद बंधगा, णपुंसगवेद बंधगा? गोयमा! इत्थीवेद बंधएवा, पुरिसवेद बंधएवा, णपुंसगवेद बंधएवा छव्वीसं भंगा ॥ २५ ॥ तेणं भंते! जीवा किं सण्णी असण्णी? गोयमा!

के ८० भांगे पाते हैं. ॥ २२ ॥ अहो भगवन्! क्या वे जीवों क्रोध कषायी, मान कषायी, माया कषायी व लोभ कषायी हैं.? अहो गौतम! इन चारों कषायों के ८० भांगे होते हैं. ॥ २३ ॥ अहो भगवन्! क्या वे स्त्री वेदी, पुरुष वेदी व नपुंसक वेदी हैं? अहो गौतम! पुरुष वेदी नहीं है, स्त्री वेदी नहीं हैं परंतु नपुंसक वेदी हैं. उन के एक वचन व द्विवचन ऐसे दो भांगे होते हैं ॥ २४ ॥ अहो भगवन्! क्या वे स्त्री वेद बंधवाले हैं; पुरुष वेद बंधवाले हैं या नपुंसक वेद बंधवाले हैं.? अहो गौतम! पुरुष वेद बंध वाले, स्त्री वेद बंधवाले व नपुंसक वेद बंधवाले हैं. उन के ऐसे २६ भांगे होते हैं. ॥ २५ ॥ अहो भगवन् क्या वे संज्ञी हैं या असंज्ञी हैं? अहो गौतम! वे संज्ञी नहीं हैं परन्तु असंज्ञी हैं. इनके एक वचन बहु

णो सण्णी असण्णीवा असण्णिण्णोवा ॥ २६ ॥ तेणं भंते! जीवा किं सइंदिया अणिंदिया? गोयमा! णो अणिंदिया, सइंदिएवा सइंदियावा ॥२७॥ तेणं भंते! उप्पल जीवे तिकालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥ २८ ॥ सेणं भंते ! उप्पल जीवे पुढवी जीवे पुणरवि उप्पल जीवे तिकालओ केवतियं कालं सेवेज्जा केवइयं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा एवतियं

वचन के दो भांगे होते हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे सइन्द्रिय हैं या अनिंद्रिय है ? अहो गौतम ! अनिन्द्रिय नहीं है परंतु सइन्द्रिय आश्री एक वचन व बहुवचन के दो भांगे होते हैं ॥ २७ ॥ अहो भगवन्! उत्पल के जीव कितने काल तक रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल तक रहे ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! वे जीवों पृथ्वी कायपने उत्पन्न होकर पुनः उत्पल जीवपने कितने काल में उत्पन्न होवे और कितने काल तक गति आगति करे ? अहो गौतम ! भव ग्रहण आश्री जघन्य दो भव (एक पृथ्वी काया का दूसरा उत्पल का) उत्कृष्ट असंख्यात भव तक गमनागमन करे. काला-

कालं गइरागतिं करेज्जा ॥२९॥ सेणं भंते! उप्पल जीवे आउजीवे एवंचेव एवं जहा पुढवी जीवे भणिते तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे॥सेणं भंते उप्पलजीवे ते वणस्सइ जीवे ते पुणरवि उप्पलजीवेति केवइयं कालं सेवेज्जा केवइयं कालं गइरागतिं करेज्जा? गोयमा! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं तरुकालो एवतियं कालं सेवेज्जा एवइयं कालं गइरागतिं करेज्जा ॥ ३० ॥ सेणं भंते ! उप्पलजीवे बेइंदिय-जीवे बेइंदियजीवे पुणरवि उप्पलजीवेति केवइयं कालं सेवेज्जा, केवइयं कालं गइरा-

देश से जघन्य दो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल तक गमनागमन करे ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! उत्पल के जीव अप्काय में जाकर पुनः उत्पल में उत्पन्न होवे तो कितने काल में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे पृथ्वीकाय जीव का कहा वैसे ही कहना वैसेही तेउ वायु काय का भी कहना अहो भगवन् ! उत्पलके जीव वनस्पति में उत्पन्न होकर पुनः उत्पल में कितने काल से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! भवादेश से जघन्य दो भव उत्कृष्ट अनंत भव कालादेश से जघन्य दो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ठ अनंत काल तक सेवे और अनंत काल तक गमनागमन करे ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! उत्पल के जीव बेइन्द्रिय में उत्पन्न होकर पुनः

गातिं करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं; कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं संखेज्जं कालं एवइयं कालं सेवेज्जा एवइयं कालं गइरागतिं करेज्जा ॥ एवं तेइंदिय जीवेवि एवं चउरिंदियजीवेवि ॥ ३ १ ॥ सेणं भंते ! उप्पलजीवे पंचिंदिय तिरिक्खि जोणिय जीवेति पुच्छा ? गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं एवइयं कालं सेवेज्जा एवइयं कालं गइरागतिं करेज्जा ॥ एवं मणुस्सेणवि समं जाव एवइयं कालं गइरागतिं करेज्जा ॥ ३ २ ॥

बेइन्द्रिय में उत्पन्न होवे तो कितना काल तक में उत्पन्न होवे और उन में गमनागमन करे ? अहो गौतम ! भवादेश से जघन्य दो भव ग्रहण उत्कृष्ट संख्यात भव ग्रहण, कालादेश से जघन्य दो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात काल ऐसे ही तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! उत्पल का जीव पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होकर पीछे उत्पल में कितने काल में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! भवादेश से जघन्य दो भव उत्कृष्ट आठ भव. कालादेश से जघन्य दो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड. ऐसे ही मनुष्य का जानना. इतना काल तक सेवन कर इतना काल तक गमनागमन करे ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! वे

तेणं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंत पएसियाइं दव्वाइं एवं जहा आहारुद्देसए वणस्सइकाइयाणं आहारे तहेव जाव सव्वप्पणयाए आहार माहारेंति, णवरं णियमं छद्दिसिं सेसं तंचेव ॥ ३३ ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवास सहस्साइं ॥ ३४ ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कइसमुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए ॥ ३५ ॥ तेणं भंते ! जीवा मारणंतिय समुग्घाएणं किं संमोहया मरंति असंमोहया मरंति ? गोयमा !

जीवों किस का आहार करते हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य से अनंत प्रदेशात्मक द्रव्य का ऐसे ही आहार उद्देशा कहना. यावत् सर्व आत्म प्रदेश से आहार के पुद्गल ग्रहण करे विशेष में नियमा छ दिशी के पुद्गलों का आहार करे ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! वे जीवों की स्थिति कितनी कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की ॥ ३४ ॥ अहो भगवन् ! उन जीवों को कितनी समुद्घातों कहीं ? अहो गौतम ! वेदना, कषाय व मारणांतिक ऐसी तीन समुद्घात कहीं हैं ॥ ३५ ॥ अहो भगवन् ! मारणांतिक समुद्घात से क्या वे समोहया मरते हैं अथवा असमोहया मरते हैं ? अहो गौतम ! समोहया

संमोहयावि मरंति असंमोहयावि मरंति ॥ ३६॥ तेणं भंते! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं णेरइएसु उववज्जंति, तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जंति, एवं जहा वक्कंतीए उव्वट्टणाए वणस्सइ काइयाणं तहा भाणियव्वा ॥३७॥ अह भंते? सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता उप्पल मूलत्ताए, उप्पल कंदत्ताए उप्पल णालत्ताए उप्पल पत्तत्ताए उप्पल केसरत्ताए उप्पल कण्णियत्ताए उप्पल थिभगत्ताए उववण्णपुव्वा? हंता गोयमा! असतिं अदुवा अणंत खुत्तो सेवं भंते भंतेत्ति ॥ उप्पल उद्देसओ ॥ एगारससयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥११॥१॥

मरते हैं और असमोहया भी मरते हैं ॥ ३६ ॥ अहो भगवन्! वे जीवों वहां से मरकर कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं? क्या नरक में जाते हैं, तिर्यंच में जाते हैं, मनुष्य में जाते हैं, व देव में जाते हैं? अहो गौतम! वे जीवों नरक में नहीं जाते है परंतु तिर्यंच, मनुष्य व देवलोक में ईशान देवलोक तक जाते हैं. विशेष खुलासा पन्नवणा के छठे पद में से जानना ॥ ३७ ॥ अहो भगवन्! सब प्राण, भूत, जीव व सत्व क्या उत्पल के मूलपने, नालपने, पत्रपने, केसरपने, कर्णिकापने, फलपने व बीजपने क्या पहिले उत्पन्न हुए? हां गौतम! वे जीवों एकवार नहीं परंतु अनंतवार उत्पन्न हुवे. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यह अग्यारवा शतक का पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ११ ॥ १ ॥

सा० शालुक भं० भगवन् ए० एक पत्र में किं० क्या ए० एक जीव अ० अनेक जीव गो० गौतम ए० एक जीव ए० ऐसे उ० उत्पल उ० उद्देशा की व० वक्तव्यता भा० कहना जा० यावत् अ० अनंत वक्त ण० विशेष स० शरीर ओ० अवगाहना ज० जघन्य अ० अंगुल का अ० असंख्यातवा भाग उ० उत्कृष्ट ध० धनुष्य पु० पृथक् से० शेष तं० तैसे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ ११ ॥ २ ॥

सालुएणं भंते ! एगपत्तए किं एग जीवे अणेग जीवे ? गोयमा ! एग जीवे, एवं उप्पल उद्देसग वत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अणंत खुत्तो, णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं, उक्कोसेण धणुपुहुत्तं, सेसं तंचेव सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगारस सयस्सय बितिओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ २ ॥

प्रथम उद्देशे में उत्पल कमल का वर्णन किया. अब दूसरे उद्देशे में सालु नामक कमल का वर्णन कहते हैं. अहो भगवन् ! सालु के एक पत्र में एक जीव या अनेक जीव हैं ? अहो गौतम ! जैसे प्रथम उद्देशे में कहा वैसे ही यहां पर अनंत वार उत्पन्न होते हैं वहां तक कहना परंतु शरीर अवगाहना जघन्य अंत मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य की जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह अग्यारवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ११ ॥ २ ॥ :०: :०:

प० पलास भं० भगवन् ए० एक पत्र में किं० क्या ए० एक जीव ए० ऐसे उ० उत्पल उ० उद्देशा की व० वक्तव्यता अ० अवशेष भा० कहना ण० विशेष स० शरीर ओ० अवगाहना ज० जघन्य अ० अंगुल का अ० असंख्यातवा भाग उ० उत्कृष्ट गा० गाऊ पु० पृथक् दे० देव ए० इस में न० नहीं उ० उपजते हैं ले० लेश्या में भं० भगवन् जी० जीव किं० क्या क० कृष्ण लेश्यी नी० नील लेश्यी का० कापोत लेश्यी गो० गौतम क० कृष्ण लेश्यी नी० नील लेश्यी का० कापोत लेश्यी छ० छवीस भं० भांगा

पलासेणं भंते ! एगपत्तए किं एग जीवे, एवं उप्पल उद्देसग वत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा, णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं गाउय पुहुत्तं, देवा एएसु न उववज्जंति, लेसासु-तेणं भंते ! जीवा किं कण्ह लेस्सा, नील लेस्सा, काउलेस्सा ? गोयमा ! कण्ह लेस्सेवा, नील लेस्सेवा, काउ लेस्सेवा

अब तीसरे उद्देशे में पलास पत्र का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! पलास पत्र में एक जीव उत्पन्न होता है या अनेक जीव उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! उत्पल जैसे कहना परंतु शरीर अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यात वा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक गाउ. इस में देव उत्पन्न नहीं होते हैं. और कृष्ण, नील व कापोत ऐसी तीन लेश्या के २६ भांगे कहना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह अग्यारवा

से० शेष तं० तैसे ॥ ११ ॥ ३ ॥

कुं० कुंभी भं० भगवन् ए० एक पत्र में किं० क्या ए० एक जीव अ० अनेक जीव ज० जैसे प० पलास उ० उद्देशा त० तैसे भा० कहना ण० विशेष ठि० स्थिति ज० जघन्य अं० अंत मुहूर्त उ० उत्कृष्ट वा० वर्ष पृथक् से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ ११ ॥ ४ ॥

ना० नाडीक भं० भगवन् ए० एक पत्र में किं० क्या ए० एक जीव अ० अनेक जीव ए० ऐसे कुं०

छव्वीसं भंगा, सेसं तंचेव॥ सेवं भंते २त्ति॥ एगारस सयस्सयं तइओ उद्देसो ॥ ११ ॥ ३॥

कुंभिएणं भंते ! एगपत्तए किं एग जीवे अणेग जीवे एवं जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, णवरं ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहुत्तं सेसं तंचेव ॥ सेवं भंते २ त्ति ॥ एगारस सयस्सय चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ ४ ॥

नालिएणं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे, एवं कुंभिउद्देसग वत्तव्वया णिर

शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ११ ॥ ३ ॥ ❋ ❋

अहो भगवन् ! क्या कुंभिके एक में एक जीव उत्पन्न होता है या अनेक जीव उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पलास जैसे कहना परंतु स्थिति जघन्य अंत मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक वर्ष. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह अग्यारवा शतक का चौथा उद्देशा समाप्त हुआ ॥ ११ ॥ ४ ॥ ❋

अहो भगवन् ! क्या नाडी के एक पत्र में एक जीव है या अनेक जीव हैं ? अहो गौतम ! कुंभि

कुंभी उ० उद्देशा की व० वक्तव्यता णि० निर्विशेष भा० कहना से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥११॥५॥

प० पद्म भं० भगवन् ए० एक पत्र में किं० क्या ए० एक जीव अ० अनेक जीव ए० ऐसे उ० उत्पल उ० उद्देशा की व० वक्तव्यता णि० निर्विशेष भा० कहना से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥११॥६॥

क० कर्णिका भं० भगवन् ए० एक पत्र में किं० क्या ए० एक जीव अ० अनेक जीव ए० ऐसे उ० उत्पल उ० उद्देशा की व० वक्तव्यता णि० निर्विशेष भा० कहना ॥ ११ ॥ ७ ॥ ×

वसेसा भाणियव्वा ॥ सेवं भंते २ त्ति ॥ ॥ एगारस सयस्सय पंचमो उद्देसो ॥११॥५॥

पउमेणं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा ॥ सेवं भंते २ त्ति ॥ एगारस सयस्सय छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ ६ ॥ ० ० ० ०

कण्णिएणं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे एवं चेव णिरवसेसं भाणियव्वं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगारस सयस्सय सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ ७ ॥

जैसे सब कहना ॥ ११ ॥ ५ ॥ -:- -:-

अहो भगवन्! क्या पद्म कमल के पत्र में एक जीव है या अनेक जीव हैं? अहो गौतम! उत्पल जैसे सब कथन कहना ॥ ११ ॥ ६ ॥ (०) (०)

अहो भगवन्! कर्णिका में एक जीव है या अनेक जीव हैं? अहो गौतम! ऐसेही सब कहना॥११॥७॥

न० नलीन भं० भगवन् ए० एक पत्र में किं० क्या ए० एक जीव अ० अनेक जीव ए० ऐसे णि० निर्विशेष जा० यावत् अ० अनंत वक्त सा० शालुक में ध० धनुष्य पु० पृथक् हो० होवे प० पलास में गा० गाऊ पु० पृथक् जो० योजन स० सहस्राधिक अ० अवशेष छ० छकी कुं० कुंभी नी० नाडीक में वा० वर्ष पु० पृथक् ठि० स्थिति बो० जानना द० दशवर्ष स० सहस्र अ० अवशेष छ० छकी कुं० कुंभी ना०

नलिएणं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे एवंचेव णिरवसेसं जाव अणंत खुत्तो ॥ (गाथा) सालुंमि धणु पुहुत्तं होइ पलासेय गाउय पुहुत्तं ॥ जोअण सहस्स-महियं अवसेसाणं तु छण्हंपि ॥ १ ॥ कुंभिए नालीए वासपुहुत्तं ठिईओ बोधव्वा ॥ दसवास सहस्साइं, अवसेसाणं तु छण्हंवि ॥ २ ॥ कुंभिए नालियाए, होंति पलासेय तिण्णिलेसाओ, चत्तारिउ लेस्साओ, अवसेसाणं तु पंचण्हं ॥ २ ॥ सेवं भंते भंते त्ति॥

अहो भगवन्! नलिनी के एक पत्र में क्या एक जीव है या अनेक जीव हैं? अहो गौतम! जैसे पहिले का कहा वैसे ही जानना. अब गाथा से विशेपता बतलाते हैं सालु में प्रत्येक धनुष्य और पलास में प्रत्येक गाउ और शेप छ की साधिक योजन सहस्र अवगाहना कही. कुंभी और नाली में प्रत्येक वर्प की स्थिति और शेप की दश हजार वर्प की स्थिति. कुंभि, नाली व पलास में तीन लेश्याओं शेप पांच में चार लेश्याओं कही. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य है यह अग्यारवा शतक का आठवा उद्देशा समाप्त

नाडीक हो० होती है प०पलास में ति०तीन ले० लेश्या च०चार ले० लेश्या अ०अवशेष पं०पांचमें॥११॥८

ते० उस काल ते० उस समय में ह० हस्तिनापुर ण० नगर हो० था व० वर्णन युक्त ॥ १ ॥ त० उस ह० हस्तिनापुर न० नगर की ब० बाहिर उ० उत्तर पु० पूर्व दि० दिशा में स० सहस्राम्रवन उ० उद्यान हो० था स० सर्व उ० ऋतु के पु०पुष्प फ० फल स०समृद्धिवाला र० रम्य णं० नंदनवन स०जैसा सु० सुख दायक सी० शीतल छा० छायावाला म० मनोरम स० स्वादिष्ट फल अ० कंटक रहित पा०

एगारस सयस्स अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ ८ ॥ + +

तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे णामं णयरे होत्था वण्णओ, तस्सणं हत्थिणा-पुरस्स णयरस्स बहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसीभागे एत्थणं सहस्संबवणे नामं उज्जाणे होत्था. सव्वोउयपुप्फफल समिद्धे रम्मे णंदणवण सण्णिगासे सुहसीयलच्छाये मणोरमे सादु-

हुआ ॥ ११ ॥ ८ ॥ :o; :o; :o;

आठवे उद्देशे तक में उत्पलादि वनस्पति का अधिकार कहा. इसे सर्वज्ञ जानते हैं अन्य नहीं जानते हैं इससे शिव राजर्षि का अधिकार कहते हैं. उस काल उस समय में हस्तिनापुर नामक नगर था. उस हस्तिनापुर नगर की बाहिर ईशान कौन में सहस्राम्रवन नामक उद्यान था. वह उद्यान सब ऋतु के पुष्प, फलादि से समृद्धिवंत व चित्तको रमणीय था. नंदनवन समान सुखदायी व शीतल छाया वाला था

देखने योग्य जा० यावत् प० प्रतिरूप ॥ २ ॥ त० तहां ह० हस्तिनापुर न० नगर में सि० शिव रा० राजा हो० था म० महा हि० हिमवंत व० वर्णन युक्त ॥ ३ ॥ उ० उन सि० शिव रा० राजा को धा० धारणी दे० देवी हो० थी सु० सुकुमार व० वर्णन युक्त ॥ ४ ॥ उ० उन सि० शिव रा० राजा का पु० पुत्र धा० धारणीका अ० आत्मज सि० शिव भद्र कु० कुमार हो० था सु० सुकुमार ज० जैसे सू० सूर्यकान्त जा० यावत् प० अनुभवते वि० विचरता है ॥ ५ ॥ त० तब त० उन सि० शिव रा० राजा को अ०

फले अकंटए पासादीए जाव पडिरूवे ॥ २ ॥ तत्थणं हत्थिणापुरे णयरे सिवे-णामं राया होत्था; महयाहिमवंत वण्णओ ॥ ३ ॥ तस्सणं सिवस्स रण्णो धारणी णामं देवी होत्था, सुकुमाल वण्णओ ॥ ४ ॥ तस्सणं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारणीए अत्तए सिवभद्दे णामं कुमारे होत्था, सुकुमाल जहा सूरियकंते जाव पच्चुवेक्खमाणे २ विहरइ ॥ ५ ॥ तएणं तस्स सिवस्स रण्णो अण्णयाकयाइं पुव्वरत्तावरत्त काल

उसमें मिठे फल वाले वृक्षों थे. और कंटकादि दुःखदायी वस्तुओं से रहित यावत् प्रतिरूप था ॥ २ ॥ उस हस्तिनापुर में शिव नामक राजा था वह महा हिमवंत पर्वत की तरह बहा यावत् वर्णन योग्य था. ॥ ३ ॥ उस शिव राजा को सुकुमार व वर्णन योग्य धारणी नामक देवी थी ॥ ४ ॥ उस शिव कुमार को धारणी राणी से उत्पन्न हुआ शिवभद्र नामक कुमार था. उस का वर्णन राय प्रसेणी में जैसे सूर्यकांत

एकदा पु० पूर्व र० रात्रि का० काल में र० राज्यधुरा चिं० चिंतवते अ० इसरूप अ० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा अ० है मे० मेरे पु० पहिले के पो० पुराणे ज० जैसे ता० तामली तापस जा० यावत् पु० पुत्र से प० पशु से र० राज्य से र० रथ से व० बल से वा० वाहन से को० कोश को० कोठार से पु० पुरसे अं० अंतःपुर से व० वृद्धिपाता हूं वि० विपुल ध० धन क० कनक र० रत्न जा० यावत् सं० सत् सा० वस्तु से अ० अतीव अ० वृद्धिपाता हूं अ० मैं पु० पहिले के पो० पुराने जा० यावत् ए० एकान्त

समयंसि रज्जधुरंचिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पाजित्था, अत्थि तामे पुरा पोराणाणं जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वद्धामि, रज्जेणं वद्धामि, एवं-रहेणं-बलेणं-वाहणेणं-कोसेणं-कोट्ठागारेणं-पुरेणं-अंतेउरेणं वड्ढामि ॥ विपुलधण कणग रयण जाव संतसारसावदेज्जेणं अतीव २ अभिवद्धामि, तं किंणं अहं पुरा पोराणाणं जाव एगंतसोक्खं उव्वेहमाणे विहरामि तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं

कुमार का कहा वैसेही जानना यावत् सुख भोगता हुवा विचर रहा है ॥ ५ ॥ एकदा शिव राजा को पूर्व रात्रि में राज्य धूराकी चिंता करते हुवे ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुआ कि मेरे पूर्वकृत दान, पुण्य व तप के प्रभावसे यह ऋद्धि प्राप्त हुई है. जिस प्रकार तामली तापस का अधिकार कहा ऐसेही इसका कहना यावत् मैं पुत्र, पशु, राज्य ऋद्धि रथादि वाहनों, सेना, धनभंडार, कोष्टागार, ग्राम, नगर व अंतःपुर से

सो० सुख उ० भोगवता वि० विचरताहूं तं० इसलिये जा० यावत् अ० मैं हि० हिरण्य से व० वृद्धिपाताहूं जा० यावत् अ० बहुत वृद्धिपाताहूं मे० मेरे सा० सामन्त रा० राजा वि० वश व० हैं ता० तावत् मे० मुझे से० श्रेय क० काल पा० प्रभात में जा० यावत् ज० सूर्य सु० बहुत लो० लोहेके पात्र क० कडाह क० कडुछी ता० तापस के भं० भांडे घ० बनवाकर सि० शिवभद्र कु० कुमार को र० राज्य पर ठा० स्थापकर तं० उस सु० बहुत लो० लोहे के पात्र क० कडाह क० कडुछी ता० तापस के भं० भांडे

वड्ढामि ॥ तं चेव जाव अभिवड्ढामि ॥ जाव चमे सामंत रायाणो विवसे वट्टंति ताव तामे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंतं सुबहुं लोहीलोहकडाह कडुच्छुयं तंपिय तावसभंडगं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठावेत्ता तं सुबहुं लोहीलोहकडाह कडुच्छुयं तंपिय तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूल वाणपत्था तावसा भवंति तंजहा

वृद्धि पाता हूं बहुत धन, धान्य, कनक रत्न यावत् प्रधान द्रव्य से बहुत वृद्धि पाता हूं. इसका क्या कारन है? मैंने जो पुर्व भवमें जो कुछ दान तप किया था उसका सुखरूप फल भोगता हुवा विचर रहा हूं. इसलिये जहां लग मेरे धन धान्य वृद्धि पाते हैं यावत् सामंत राजा वगैरह मेरे वश में वर्तते हैं वहांलग प्रभात होते यावत् ज्वलंत सूर्य उदित होते तापस योग्य उपकरण, लोहेका तवा, कुडछी वगैरह उपकरणों बनवाकर शिवभद्र कुमार को राज्यासन पर बैठाकर उस उपकरणों, लोही व कुडछी ग्रहण कर गंगा नदी के किनारे

थे

ग० ग्रहणकर जे० जो इ० ये गं० गंगाकूल के वा० वानप्रस्थ ता० तापस भ० होते हैं तं० वह ज० जैसे हो० अग्नि होत्री पो० वस्त्रधारी ज० जैसे उ० उववाइ में को० भूमिपे सोने वाले ज० यज्ञ करने वाले स० श्राद्ध करने वाले था० कमण्डलधारी हुं० कुंडिक आश्रम वाले दं० फल भोगी उ० एक वक्त स्नान करने वाले सं० निमज्जन करने वाले णि० स्नान करने वाले सं० मिट्टिका लेपकर स्नान करने वाले उ० नाभिके उपर खाज खनने वाले अ० नाभी के नीचे खाज खनने वाले द० दक्षिण तटपे बैठने वाले उ० उत्तर तटपे बैठने

होत्तिया, पोत्तिया, जहा उववाइए कोत्तिया, जण्णई, सण्णई, थालई, हुंवउट्ठा दंतुक्कलिया, उम्मज्जगा, संमज्जगा, णिम्मज्जगा, संपक्खाला, उड्ढकंडूयगा अहोकंडूयगा दक्खिण कूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा, मिगलुद्धया, हत्थितावसा, जलाभिसेय, कढिणगत्ता, अंबुवासिणो, वाउवासिणो, जलवासिणो, वेलवासिणो, अंबुभक्खिणो, वाउभक्खिणो,

थे

पर रहने वाले तापसों में जाना मुझे श्रेय है. वे तापस कैसे हैं १ अग्निहोत्र करने वाले, २ वस्त्र रखने वाले ३ भूमि शयन करने वाले, ४ यज्ञ करने वाले, ५ श्रद्धावंत, ६ अपने उपकरण सदैव साथ रखने वाले ७ कमंडलधारी ८ फलाहारी ९ एकवार पानी में प्रवेशकर तत्काल नीकलने वाले १० वारंवार पानी में प्रवेश करने वाले ११ मृत्तिका का लेपकर पानी में प्रवेश करनेवाले १२ नाभी के उपर के अंग में खुजाले नहीं १३ नाभी के नीचे का भाग खुजाले नहीं १४ गंगा के दक्षिण भाग में रहनेवाले १५ गंगा की उत्तर

वाले सं० शंख बजाने कू० नदी तटपे शंख बजाने वाले मि० मृगका मांस खानेवाले ह० हस्ति तापस ज० जल अ० अभिषेक से क० कठीन गात्र वाले अं० जलवासी वा० वायु वासी अं० जलभक्षी वा० वायुभक्षी से० सेवालभक्षी मू० मूलाहारी प० पत्राहारी त० त्वचाहारी पु० पुष्पाहारी फ० फलाहारी बी० बीजाहारी प० समस्त कं० कंद मू० मूल त० त्वचा प० पत्र पं० पकेहुवे

सेवालभक्खिणो, मूलाहारा, कंदाहारा, पत्ताहारा, तयाहारा, पुप्फाहारा, फलाहारा, बीयाहारा पडिसाडिय कंदमूलतयपत्त पंडुत्त पुप्फफलाहारा उद्दंडगा रुक्खमूलिया मंडविया, बिलवासिणो, वक्कवासिणो दिसापोक्खिणो, आतावणेहिं, पंचग्गितावेहिं, इंगालसोल्लि

दिशा में रहनेवाले १६ शंख बजाकर भोजन करनेवाले, १८ मृग का ही मांस खानेवाले १९ एक हस्ती मारकर बहुत दिन तक खानेवाले २० पानी के स्नान से शरीर को कठिन करनेवाले २१ पानी में सदैव रहनेवाले २२ वायु में सदैव रहनेवाले. २३ पानी की अंदर डूबकर सदैव रहनेवाले २४ पानी के प्रवाह की साथ चलनेवाले (पाठांतर में वस्त्र के मकान सो तंबू आदि में रहनेवाले) २५ मात्र पानी के आधारसे रहनेवाले २६ वायु का भक्षण करनेवाले २७ पानी की सेवाल खाकर सदैव रहनेवाले २८ वनस्पति का मूल खाकर रहनेवाले २९ वनस्पति का कंद खाकर रहनेवाले ३० पत्र खाकर रहनेवाले ३१ वृक्ष की त्वचा खाकर रहनेवाले ३२ पुष्प खाकर रहनेवाले ३३ फल खाकर रहनेवाले ३४ बीज खाकर रहनेवाले

पु० पुष्प फ० फलाहारी उ० ऊर्ध्व दंडी रु० वृक्षके मूल में बैठने वाले मं० मंडली वाले वि० बिलवासी व० वल्कल पहिननेवाले दि० दिशा में जल सींचकर आहार ग्रहण करनेवाले आ० आतापना से पं० पंचअग्नि ताप से इं० अग्नि सरिखा कं० कंदुसरिखा क० काष्ट सरिखा जा० यावत् अ० आत्मा को क० करते वि० विचरते हैं त० तहां जे० जो दि० दिशोको जल सिंचकर ग्रहन करने वाले ता० तापस ते० उन की अं० पास मुं० मुंड भ० होकर दि० दिशा प्रोक्ष्यक ता० तापसपने प० प्रव्रर्ज्या अंगीकार करने को प० प्रव्रर्ज्या

यंपिव, कंदुसोल्लियंपिव, कट्ठसोल्लियंपिव, जाव अप्पाणं करेमाणा विहरंति ॥ तत्थणं जे ते दिसापोक्खिय तावसा तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए पव्वइएवियणं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेस्सामि ॥ कप्पइ मे जाव

३५ किसीने डाल दिया अथवा बिगडगया हुवा कंद मूलादि खानेवाले, ३६ ऊंचा दंड रखकर सदैव रहनेवाले ३७ वृक्ष की नीचे सदैव रहनेवाले ३८ मर्यादा बांधकर सदैव रहनेवाले ३९ बिलों में निवास करनेवाले ४० वल्कल पहिननेवाले ४१ चारों दिशा को पोषनेवाले ४२ सूर्य व अग्नि का ताप सहन करनेवाले ४३ पंचाग्नि तपनेवाले ४४ अग्नि के ताप से तपकर कोयला जैसा शरीर करनेवाले ४५ अग्नि से इंडे समान शरीर पचाने वाले, ४६ तपश्चर्या से शरीर शुष्क करके काष्ट भूत करने वाले वगैरह अनेक प्रकार के कष्टों सहन करने वाले तापस विचरते हैं ! इन में से दिशापोषी तापस की पास मुंडित बनकर तापस पना

लेकर ए० इसरूप अ० अभिग्रह अ० ग्रहण करूंगा क० कल्पता है मे० मुझे जा० जीवन पर्यंत छ० छठ छठ से अ० अंतर रहित दि० दिशा चक्र वाल त० तप कर्म मे उ० ऊर्ध्व बाहु प० रखकर जा० यावत् वि० विचरने को त्ति० ऐसा करके सं० विचार करे ॥ ६ ॥ क० काल जा० यावत् ज० सूर्य सु० बहुत लो० लोहे के पात्र जा० यावत् व० बनवाकर को० कौटुम्बिक पु० पुरुष को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय ह० हस्तिनापुर ण० नगर को स० आभ्यंतर वा० बाह्य आ० सिंचकर जा०

जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालएणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगि-ज्झिय २ जाव विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता ॥ ६ ॥ कल्लं जाव जलंते सुबहुं लोहीलोह जाव घडावेत्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरं णयरं सब्भिंतर बाहिरियं आसिय जाव तमाणत्तियं

अंगीकार करना मुझे श्रेय है. और भी प्रवर्ज्या लिये पीछे ऐसा अभिग्रह करना कि मुझे जीवन पर्यंत छठ भक्त निरंतर तप करना श्रेय है और पारने के दिन पूर्वादि दिशाओं की पूजा करके पारना करना और जहां लग पारणा का काल प्राप्त नहोवे वहां लग आतापना के स्थान दोनों हाथ ऊंचा रखकर आतापना लेता हुआ विचरना ॥ ६ ॥ ऐसा विचार करते जब प्रातःकाल हुवा तब लोहे का तवा कुडच्छा वगैरह बनाकर कौटुम्बिक पुरुषों को बोलाये और कहा कि अहो देवानुप्रिय ! तुम नगर को

यावत् त० उनकी आ० आज्ञा प० पीछीदेते हैं त० तब से० वह सि० शिव रा० राजा दो० दूसरी वक्त को० कौटुम्बिक पुरुष को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय सि० शिव भद्र कुमार का म० बडा वि० विपुल रा० राज्याभिषेक उ० करो त० तब ते० वे को० कौटुम्बिक पुरुष त० तैसे जा० यावत् उ० करते हैं ॥ ७ ॥ त० तब से० वह सि० शिव रा० राजा अ० अनेक ग० गण ना० नायक दं० दंडनायक जा० यावत् सं० सन्धिपाल स० साथ सं० घेरायाहुवा सि० शिवभद्र कुमार को

पच्चुप्पिणंति तएणं से सिवराया दोच्चंपि कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता, एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थं २ विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेंति ॥ ७ ॥ तएणं से सिवे-राया अणेग गणनायग, दंडनायग, जाव संधिवाल सद्धिं संपरिवुडे सिवभद्दकुमारं

अंदर व बाहिर स्वच्छ करके शणगारो और ऐसी सब प्रकार की सामग्री करके मुझ मेरी आज्ञा पीछी दो. फीर दुसरी वक्त कोटुम्बिक पुरुषों को बोलाकर कहा कि शिवभद्र कुमार केलिये बहुत द्रव्य का खर्चा करके बडा राज्याभिषेक करो. ऐसा वचन सुनकर वे कौटुम्बिक पुरुषोंने आज्ञानुसार सब तैयारी करदी ॥ ७ ॥ तब अनेक गण नायक दंड नायक यावत् संधिपाल से परवरा हुवा शिवराजाने शिवभद्र कुमार को सिंहासनपर पूर्वाभिमुख से बैठाया और १०८ सुवर्ण यावत् १०८ मृत्तिका के कलश इत्यादि

सी० सिंहासनपे पु० पूर्वाभिमूख से णि० बैठाकर अ० आठ स० शत सो० सुवर्ण के क० कलश जा० यावत् अ० आठ स० शत भो० मिट्टिके क० कलश से स० सर्वऋद्धि से जा० यावत् र० शब्द से म० बडा रा० राज्याभिषेक अ० सिंचनकर प० पशम सु० सुकोमल सु० सुरभि गंध वाला का० वस्त्रसे गा० गात्र लू० पूंछकर स० सरस गो० चंदनसे ज० जैसे ज० जमाली का अलंकार जा० यावत् क० कल्पवृक्ष जैसे अ० अलंकृत वि० विभूषित क० करके क० करतल जा० यावत् क० करके सि० शिवभद्र

सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं णिसीयावेंति २ त्ता, अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति २ त्ता, पम्हलसुकुमालाए सुरभिगंधकासाईए गायाइं लूहेइ २ त्ता, सरसेणं गोसीसेणं जहेव जमालिस्स अलंकारो जाव कप्परुक्खगंपिव अलंकियविभूसियं करेंति २ त्ता,

सब प्रकार की ऋद्धि से यावत् वादित्रो व बंदीजनों का विजय ध्वनि से बहुत बडा राज्याभिषेक से अभिसिंचन किया. अभिसिंचन करके पक्ष्मल [पशम] जैसे सुकोमल सुगंधित कषाय वाला वस्त्र से गात्रों को पूंछे फीर अच्छे गोशीर्ष चंदन से गात्रों को लेपन किया. जैसे जमाली का राज्याभिषेकका अधिकार है वैसे ही यहां कहना यावत् सब वस्त्रालंकार से अलंकृत कर कल्पवृक्ष समान सुशोभित किया. और सब हाथ जोडकर शिवभद्र कुमार को जय विजय शब्द से वधाये, बहुत इष्टकारी प्रियकारी शब्दों से संतुष्ट किया

कुमार को ज० जय वि० विजय मे व० वधावे ता० उन इ० इष्ट कं० कांत पि० प्रिय ए० ऐसे ज० जैसे उ० उववाइ में कू० कूणिक का जा० यावत् प० उत्कृष्ट आयुष्य पा० पालो इ० इष्ट जन सं० परवरे हुवे ह० हस्तिनापुर न० नगर अ० अन्य ब० बहुत गा० ग्राम आ० आगार जा० यावत् वि० विचरो त्ति० ऐसा करके ज० जयजय स० शब्द प० प्रयुंजे ॥ ८ ॥ त० तब से० वह सि० शिवभद्र कुमार रा० राजा जा० हुवा म० महा हि० हिमवन्त व० वर्णन युक्त जा० यावत् वि० विचरता है ॥ ९ ॥

करयल जाव कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता, ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं एवं जहा उववाइए कूणियस्स जाव परमाउयं पालयाहिं इट्ठ जण संपरिवुडे,हत्थिणापुरस्स णयरस्स अण्णेसिंच बहूणं गामागर जाव विहराहि त्तिकट्टु जय-जयसद्दं पउंजंति ॥ ८ ॥ तएणं से सिवभद्दे कुमारे राया जाए महयाहिमवंत वण्णओ जाव विहरइ ॥ ९ ॥ तएणं से सिवे राया अण्णयाकयाइं सोहणंसि तिहिकरण दिव-

यों जैसे उववाइ सूत्र में कूणिक राजा का कथन है उस प्रकार ही यहां सब कहना. यावत् परम उत्कृष्ट पालना. इष्टजनों की साथ परवरे हुए हस्तनापुर नगर का व अन्य अनेक ग्राम व नगरों का राज्य करते हुवे यावत् विचरना ॥ ८ ॥ फीर वह शिवभद्र कुमार राजा यावत् महाहिमवंत पर्वत समान यावत् विचरने लगा ॥ ९ ॥ फीर शिव राजाने उत्तम तिथि, करण, दिन, नक्षत्र व मुहूर्त में विपुल अशन, पान, खादिम

त० तब से० वह शि० शिवराजा अ० एकदा सो० शुभ ति० तिथि क० करन दि० दिवस
ण० नक्षत्र मु० मुहूर्त में वि० विपुल अ० असन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम उ० बनवाकर मि०
मित्र णा० ज्ञाति णि० संबंधी जा० यावत् प० परिवार को रा० राजाओं को ख० क्षत्रियों को आं०
आमंत्रणकर त० पीछे ण्हा० स्नान किया जा० यावत् भो० भोजन मं० मंडप में सु० शुभासनपे व० बैठे
हुवे तं० उन मि० मित्र णा० ज्ञाति णि० संबंधी जा० यावत् प० परिजन रा० राजाओं ख० क्षत्रियों स०
साथ वि० विपुल अ० असन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम ए० ऐसे ज० जैसे ता० तामली

उवक्खडावेंति उवक्खडावें-
सणक्खत्त मुहुत्तंसि विपुलं असणं पाणं खाइम साइमं उवक्खडावेंति उवक्खडावें-
त्ता मित्तणाइणियग जाव परियणं रायाणो खत्तिएय आमंतेइ २ त्ता तओ पच्छा
ण्हाए जाव सरीरे भोअणमंडवंसि सुहासण वरगए तं मित्तणाइ णियग सयण जाव
परिजणेणं राईहिं खत्तिएहिय सद्धिं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं एवं जहा
तामली जाव सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता तं मित्तणाइ णियग जाव परिजणं रायाणो

व स्वादिम बनवाया विपुल अशनादि बनवाकर मित्रज्ञाति स्वजन यावत् परिजन, राजा व क्षत्रियों को
आमंत्रण देकरके बोलाये. फीर स्नान किया यावत् वस्त्रालंकार से विभूषित बनकर भोजनगृह के मंडप में
शुभासन पर बैठे. वहां मित्र ज्ञाति स्वजन यावत् परिजन से राजा व क्षत्रियों की साथ बहुत अशन,
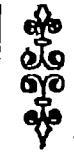
जा० यावत् स० सत्कार कर स० सन्मानकर तं० उन मि० मित्र णा० ज्ञाति णि० संबंधी जा० यावत् प० परिजन रा० राजाओं ख० क्षत्रियों सि० शिवभद्र रा० राजा को आ० पूछकर सु० बहुत लो० लोह के पात्र क० कडाइ क० कडुछी जा० यावत् भं० भांडे ग० ग्रहणकर जे० जो गं० गंगाकूल वा० वान प्रस्थ ता० तापस भ० होते हैं जा० यावत् ते० उन की अं० पास मुं० मुंडहोकर दि० दिशा पोषक ता० तापसपने प० प्रवर्जीत हुवा प० प्रवर्जीत होकर ए० इसरूप अ० अभिग्रह गि० ग्रहणकरे क० कल्पता है मे० मुझे जा० जीवन पर्यंत छ० छठ जा० यावत् अ० अभिग्रह अ० ग्रहणकर प० प्रथम छ० छठक्षमण

खत्तिएय सिवभदंच रायाणं आपुच्छइ २ त्ता सुबहुं लोही लोहकडाहकडुच्छुयं जाव भंडगं गहाय जे इमे गंगाकूल वाणप्पत्था तावसा भवंति, तं चेव जाव तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खिय तावसत्ताए पव्वइए, पव्वइए वियणं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं गिण्हइ कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं तंचेव जाव अभिग्गहं अभिगिण्हइ २ त्ता

पान, खादिम व स्वादिम यों चारों प्रकार का आहार वगैरह जैसे तामली तापस का अधिकार है वैसे कहना यावत् सत्कार सन्मान करके मित्र ज्ञाति स्वजन यावत् परिजन राजा, क्षत्रियों व शिवभद्र कुमार को पुछकर लोहे की कडाइ व कुडछी आदि भंडोपकरण लेकर जो गंगा नदी के किनारे तापस रहते थे उन में से दीक्षा पोषक तापस की पास दीक्षा अंगीकार की. फीर ऐसा अभिग्रह किया और प्रथमही बेले२ का

उ० अंगीकार कर वि० विचरता है ॥ १० ॥ त० तब से० वह सि० शिवराजर्षि प० प्रथम छ० छठक्षमण पा० पारणे में आ० आतापन भू० भूमि से प० उतरकर वा० वल्कल व० वस्त्र नि० पहीनकर जे० जहां म० अपना उ० आश्रम ते० तहां उ० आकर कि० कावड गि० ग्रहणकर पु० पूर्वदिशा में पो० जलसिंचे पु० पूर्वदिशा में सो० सोम म० महाराजा प० मोक्षमार्ग में प० प्रवृत्त के अ० अभिरक्षक सि० शिवराजर्षि का अ० रक्षण करो जा० जो त० तहां कं० कंद मू० मूल त० त्वचा प० पत्र पु० पुष्प फ० फल बी० बीज

पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ १७ ॥ तएणं से सिवे रायरिसी पढम छट्ठक्खमण पारणगंसि आयावण भूमीए पच्चोरुहइ २ त्ता वागलवत्थ नियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता किढिणसंकाइयं गिण्हइ २त्ता पुरच्छिमं दिसिं पोक्खेइ पुरच्छिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खओ सिवं-रायरिसिं अभि २ जाणिय, तत्थ कंदाणिय मूलाणिय तयाणिय, पत्ताणिय पुप्फाणिय

तप अंगीकार कर विचरने लगे ॥ १० ॥ जब प्रथम बेले का पारणा आया तब आतापना भूमि से नीकल कर वल्कल धारण किये. और अपनी पर्णकूटि में आये. और काष्ट का वंशमय तापस का अन्य भाजन (कावड) लेकर पूर्व दिशा में पानी के छांटे डाले. फीर पूर्व दिशा के सोम महाराजा परलोक साधने के मार्ग में प्रव्रजित बना हुवा शिवराजर्षि को उन के फल फुल लेते हुवे विघ्न दूर करो, और कंद, मूल,

ह० हरीत ता० उन की अ० आज्ञा दो त्ति० ऐसा करके पु० पूर्व दिशा में प० जाकर जा० जो त० तहां कं० कंद जा० यावत् ह० हरित ता० उन को गे० ग्रहणकरे कि० कावड में भ० भरकर द० दर्भ कु० कुश स० समिध प० तोडे हुवे पत्र गे० ग्रहणकरे जे० जहां स० अपना उ० आश्रम ते० तहां उ० आकर किं० कावड ठ० स्थापन कर वे० वेदिका को व० पूंजकर उ० लेपन सं० संमार्जन क० करके द० दर्भ क० कलश हे० हस्त में लेकर जे० जहां गं० गंगा म० महानदी ते० तहां उ० आकर गं० गंगा

फलाणिय बीयाणिय हरियाणिय ताणि अणुजाणउ त्तिकट्टु, पुरच्छिमं दिसिं पसरइ २ त्ता जाणिय तत्थ कंदाणिय जाव हरियाणिय ताइं गेण्हइ किढिणसंकाइयं भरेइ, किढि २ त्ता दब्भेय कुसेय समिहाउय पत्तामोडंच गिण्हेइ, जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, किढिणसंकाइयं ठवेइ, किढि २ त्ता, वेदिं वड्ढेइ २ त्ता, उवलेवणसंमज्जणं करेइ २ त्ता, दब्भकलसहत्थगए जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उवा-

छाल, पत्र, फूल, फल, बीज व हरित वगैरह वस्तु ग्रहण करने की आज्ञा दो. ऐसा कहकर पूर्व दिशा की तरफ चले और कंद मूल आदि ग्रहण करके कावड में डाले. फीर दर्भ कुश, समिध व तरुण शाखा के पत्र ग्रहण किये पीछे अपनी पर्णकूटि में आये. वहां कावड नीचे रखी और रेती की बनायी हुइ वेदिका को साफ की गोबरादि से उस में विलेपन किया. फीर वहां से दर्भ व कलश हस्त में रखकर
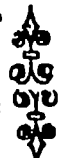
नदी में उ० उतरकर ज० जल स्नानकरे की० क्रीडा क० करे ज० जलाभिषेक क० करे अ० अत्यंत चो० शुद्ध प० परम सु० शुचीभूत दे० दैव पि० पितृक क० कृतकार्य द० दर्भ क० कलश ह० हस्त में व० रहा हुवा गं० गंगा म० महानदी से प० नीकलकर जे० जहां स० अपना उ० आश्रम ते० तहां उ० आकर द० दर्भ कु० कुश वा० वालु से वे० वेदिका र० रचकर स० काष्ट से अ० अरणि म० मन्थनकरे अ० अग्नि पा० पाडे अ० अग्नि को सं० धुम्रवान् करे स० समिध क० काष्ट प०

गच्छइ २ त्ता, गंगा महाणदिं उग्गाहेइ २ त्ता जल मज्जणं करेइ २ त्ता कीडं करेइ २ त्ता जलाभिसेयं करेइ २ त्ता, आयंते चोक्खे परमसुइ भूते देवय पित्तिय कयकज्जे दब्भ सगब्भ कलस हत्थगए गंगाओ महाणदीओ पच्चुत्तरइ गंगाओ महाणदीओ पच्चुत्तरइत्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता दब्भेहिय कुसेहिय वालुया एय वेइं रयेइ २ त्ता, सरएणं अरणिं महेइ २ त्ता अग्गिं पाडेइ २ त्ता, अग्गिं संधुक्केइ

गंगा महा नदी की तरफ गये वहां उस में जाकर स्नान किया जलक्रीडा की और जलका अभिषेक किया. फीर अपनेको स्वच्छ व परम शुचिभूत मानते हुवे देवोंको व पितृओं को पानी की अंजलीरूप दान देते हुवे कलश में दर्भ युक्त पानी हस्त में ग्रहण करके गंगा नदी से नीकल कर अपनी पर्णकुटि में आये. वहां दर्भ से, कुश से व वालु से वेदिका वनाकर काष्ट की साथ अरणी घसकर अग्नि तैयार की. संधूक से धमकर

डाले अ० अग्नि उ० उज्वलीतकर अ० अग्नि की दा० दक्षिण बाजु स० सात अंग स० स्थापे तं० वह ज० जैसे स० सकथा व० वल्कल ठा० स्थान से० शय्या भांड क० कमण्डल द० दन्तदारु त० तथा अ० आपको म० मधु से घ० घृत से तं० तंदुल से अ० अग्नि को हु० हवनकर च० चोखा सा० पका कर ब० बली व० अग्निको क० देकर अ० अतिथि पू० पूजा क० करके त० पीछे आ० आप आ० आहारकरे त० तब से० वह सि० शिवराजर्षि दो० दूसरी वक्त छ० छठक्षमण उ० अंगीकारकर वि०

२ त्ता समिहाय कट्ठाइं पक्खिवेइ २ त्ता अग्गिं उज्जालेइ २ त्ता अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तंगाइं समादहे तंजहा सकहं वक्कलं ठाणं सेज्जाभंडं कमंडलुं, दंडदारुं तह-प्पाणं आहेताइं समादहे ॥ १ ॥ महुणाय घएणय, तंदुलेहिय अग्गिं हुणइ; हुणइ २ त्ता चरुं साहेइ साहेइत्ता, बलिं वइसदेवं करेइ २ त्ता, अतिहिपूयं करेइ २ त्ता, तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ तएणं से सिवे रायरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणं उवसं

धूंआ किया और अग्नि में काष्ट डालकर प्रज्वलित की. अग्नि की दक्षिण की तरफ सात रकम की स्थापना की १ कंथा [गोदडी] २ वल्कल के वस्त्र ३ पात्र ४ शैय्या ५ पानी का पात्र ६ काष्टमय दंड और ७ आप स्वयं फीर मधु, घृत व तंदुल अग्नि में डाले क्षीरादिक बलि के लिये बनाये. अग्नि का पूजन किया, आये हुवे अतिथी माहूणे की पूजा करके फीर शिवराजर्षिने पारणा किया. पारणा करके पुनः

विचरे ॥ ११ ॥ त० तब से० वह सि० शिव रा० राजर्षि दो० दूसरी वक्त छ० छठक्षमण में आ० आतापन भू० भूमिसे प० उतरकर वा० वल्कल वस्त्र ए० ऐसे ज० जैसे प० प्रथम पा० पारणा में ण० विशेष दा० दक्षिण दिशा में पो० प्रवृत होवे दा० दक्षिण दिशा में ज० यम म० महाराजा प० प्रस्तार से० शेष तं० तैसे जा० यावत् आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ त० तब सि० शिवराजर्षि त० तीसरा छ० छठक्षमण उ० अंगीकारकर वि० विचरे ण० विशेष प० पश्चिम दिशा में पो० प्रवृत्त होवे प० पश्चिम दिशा

पजित्ताणं विहरइ ॥ ११ ॥ तएणं से सिवे रायरिसी दोच्चं छट्ठक्खमण पारणगंसि आयावण भूमीओ पच्चोरुहइ २ त्ता वागल एवं जहा पढमपारणगं, णवरं दाहिण- दिसिं पोक्खेइ २ त्ता दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणं सेसं तंचेव जाव आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ तएणं से सिवे रायरिसी तच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपजित्ताणं विहरइ ॥ तएणं से सिवे सेसं तंचेव, णवरं पच्चत्थिमं दिसिं पोक्खेइ पच्चत्थिमाए

दूसरा बेला कर दिया ॥ ११ ॥ फीर दूसरे बेले के पारणे में आतापना भूमि में से आकर जिस विधि से पहिला बेला का पारणा किया उसी विधि से दूसरे बेले का पारणा किया, परंतु इस में दक्षिण दिशा लेना और दक्षिण दिशा का यम महाराजा ग्रहण करना ॥ १२ ॥ फीर तीसरा बेला किया उस में पूर्वोक्त

में व० वरुण म० महाराजा प० मोक्षमार्ग में प० प्रवृत से० शेष तं० तैसे जा०. यावत् आ० आहारकरे ॥ १३ ॥ त० तब से० वह सि० शिवराजर्षि च० चौथा छ० छठक्षमण उ० अंगीकारकर वि० विचरे त० तब से० वह सि० शिवराजर्षि च० चौथा छ० छठक्षमण ण० विशेष उ० उत्तर दि० दिशाको पो० प्रवृत होवे उ० उत्तर दिशा के वे० वैश्रमण म० महाराज प० मोक्षमार्ग में प० प्रवृत के अ० रक्षक से० शेष जा० यावत् त० पीछे आ० आप आ० आहारकरे ॥ १४ ॥ त० तब उ० उन सि० शिवराजर्षि को छ०

दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं सेसं तंचेव जाव आहारमाहारेइ ॥ १३ ॥ तएणं से सिवे रायरिसी चउत्थ छट्ठ क्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ॥ तएणं से सिवे रायरिसी चउत्थ छट्ठ क्खमण एवंचेव, णवरं उत्तरं दिसिं पोक्खेइ, उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खओ सेसं तंचेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥१४॥ तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं

विधि जानना. इस में पश्चिम दिशा व पश्चिम दिशा का वरुण महाराजा जानना ॥ १३ ॥ फीर चौथा बेला किया उस में भी पारणा पूर्वोक्त विधि से किया परंतु उत्तर दिशा व उत्तर दिशा के अधिपति वैश्रमण महाराजा ग्रहण करना ॥१४॥ इस तरह शिव राजर्षि को निरंतर छठ छठ का तप करते यावत् आ-

छठ छठ के अ० अंतर रहित दि० दिशा च० चक्रवाल जा० यावत् आ० आतापना लेते प० प्रकृति भद्रक जा० यावत् वि० विनीत अ० एकदा त० तपावरणीय क० कर्म के ख० क्षयोपशमसे ई० ईहापोह म० मार्ग गवेषण क० करते वि० विभंग अ० अज्ञान स० उत्पन्न हुवा ते० उस वि० विभंग अज्ञान से स० उत्पन्न हुवा पा० देखे अ० इसलोक में स० सातद्वीप म० सात समुद्र ते० उससिवा न० नहीं जा० जाने न० नहीं पा० देखे त० तब न० उस सि० शिवराजर्षि ए० इसरूप अ० चिंतवना जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा अ० है म० मुझे अ० अतिशेष णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न हुवा अ० इस लोक में स० सात

दिसाचक्कवालेणं जाव आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए जाव विणीययाए अण्णयाकयाई तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोह मग्गणगवेसणं करेमाणस्स विभंगे णामं अण्णाणे समुप्पण्णे ॥ सेणं तेणं विभंग अण्णाणेणं समुप्पण्णेणं पासइ, अस्सिं लोए सत्तद्दीवा सत्तसमुद्दा तेणं परं न जाणइ न पासइ॥तएणं तस्स सिवस्सरायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, अत्थिणं ममं अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे,

तापना लेते हुवे प्रकृति भद्रिक यावत् विनितपना से अज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से ईहा पोह करते हुवे विभंग नामक अज्ञान उत्पन्न हुवा. इस से वह राजर्षि सात द्वीप व सात समुद्र देखने लगा. उस से आगे कुछ जानने व देखने लगा नहीं. फीर उस शिव राजर्षि को ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुवा कि मुझे

द्वीप स० सात समुद्र ते० उससिवा वो० विच्छेदगये दी० द्वीप स० समुद्र ए० ऐसा सं० विचारकर आ० आतापन भूमिसे प० उत्तरकर वा० वल्कल व० वस्त्र नि० पहीने हुवे जे० जहां स० अपना उ० आश्रम ते० तहां उ० आकर स० बहुत लो० लोहके पात्र क० कडाइ क० कडुछी जा० यावत् भं० भांडे कि० कावड गे० ग्रहणकर जे० जहां ह० हस्तिनापुर न० नगर जे० जहां ता० तापस का आश्रम ते० तहां उ० आकर भं० भांडे नि० निक्षेप क० करके ह० हस्तिनापुर ण० नगर सिं० सिंघाडग जा० यावत् प० रस्ते में ब० बहुत मनुष्य को ए० ऐसा आ० कहे जा० यावत् प० प्ररूपे अ० है दे० देवानुप्रिय म०

एवं खलु अस्सिं लोए सत्तदीवा सत्तसमुद्दा, तेणं परं वोच्छिण्णा दीवाय समुदाय एवं संपेहेइ २ त्ता, आयावण भूमीओ पच्चोरुहइ २ त्ता वागलवत्थनियत्थे, जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सुबहुं लोहा लोहकडाहकडुच्छुयं जाव भंडगं किढिण संकाइयं गेण्हइ २ त्ता जगेव हत्थिणापुरे णयरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, भंडगणिक्खेवं करेइ करेइत्ता, हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडगतिग जाव पहेसु

अतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुवा है इस से मैं जान सकता हूं कि इस लोक में सात द्वीप व सात समुद्र हैं. आगे कोई द्वीप व समुद्र नहीं है. ऐसा विचार करके आतपना भूमि में से वल्कल के वस्त्र पहिन कर स्वतः की पर्णकूटी में आया. वहां से लोहे की कडाइ कुडछी यावत् भंडोपकरण व कावड वगैरह लेकर

मुझे अ० अतिशेष णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे अ० इस लोक में जा० यावत् दी० द्वीप स० समुद्र ॥ ॥ १८ ॥ सरल शब्दार्थ

बहुजणस्स एव माक्खइ जाव एवं परूवेइ, अत्थिणं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे
णाण दंसणे समुप्पण्णे एवं खलु अस्सिं लोए जाव दीवाय समुद्दाय ॥ १५ ॥ तएणं
तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडग
तिग जाव पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एव माइक्खइ जाव परूवेइ एवं खलु देवा-
णुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ, अत्थिणं देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे

हस्तिनापुर नगर में तापसों के आवास में आया. वहां अपने भंडोपकरण रखकर हस्तिनापुर नगर में
शृंगाटक यावत् बहुत मार्गवाले स्थान में बहुत मनुष्यों को ऐसा कहा यावत् प्ररूपा अहो देवानुप्रिय ! मुझे
अतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्न हूवा है इस से मैं कहता हूं कि इस लोक में सात द्वीप व सात समुद्र हैं ॥१८॥
उस शिवराजर्षि की पास से ऐसा सुनकर हस्तिनापुर नगर के शृंगाटक आकारवाले मार्ग में यावत् पथ में
बहुत लोक परस्पर ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! शिवराजर्षि ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं
अहो देवानुप्रिय ! मुझे अतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुवा है उस से सात द्वीप समुद्र में देख सकता हूं.
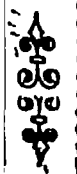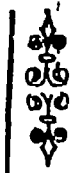
णाणदंसणे समुप्पण्णे जाव तेणपरं वोच्छिण्णा दीवाय समुदाय॥ से कहमेयं मन्ने एवं ॥ १६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे परिसा जाव पडिगया ॥ १७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जहा बिइय-सए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे बहुजणसद्दं णिसामेइ, बहुजणे अण्णमण्णस्स एव माइक्खइ जाव एवं परूवेइ, एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ अत्थिणं देवाणुप्पिया! तंचेव जाव वोच्छिण्णा दीवाय समुदाय ॥ से कहमेयं मण्णे एवं ? ॥ तएणं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म

इस से आगे द्वीप समुद्र नहीं है तो यह किस तरह है ॥ १६ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदना करने को आई यावत् धर्मोपदेश सुनकर पीछी गइ ॥ १७ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर का ज्येष्ट शिष्य जैसे द्वितीय शतक में कहा वैसे भिक्षा के लिये फीरते हुवे बहुत मनुष्यों की पास से ऐसा सुना की बहुत मनुष्य परस्पर ऐसा कहते हैं कि शिव-राजर्षि कहते है कि मुझे उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है इस से मैं सात द्वीप व सात समुद्र है ऐसा कहता हूं तो यह किस तरह है ऐसा बहुत मनुष्यों की पास से सुनकर दूसरे शतक में निर्ग्रंथ

जायसड्ढे जहाणियंठुद्देसए जाव तेण परं वोच्छिण्णा दीवाय समुद्दाय ॥ सेकहमेयं भंते एवं ? ॥ गोयमादि! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी जण्णं गोयमा! ते बहुजणा अण्णमण्णस्स एवमाइक्खंति, तंचेव जाव सव्वं भाणियव्वं जाव भंडगणिक्खेवं करेइ, हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडग तंचेव जाव वोच्छिण्णा दीवाय समुद्दाय तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तंचेव तेणपरं वोच्छिण्णा दीवाय समुद्दाय तंणं मिच्छा, ॥ अहं पुण गोयमा! एव माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु जंबूदीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा संठाणओ एगविहिविहाणा

उद्देशे में जैसे भिक्षा का अधिकार कहा वैसे ही करते हुवे श्री श्रमण भगवंत की पास आकर वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन्! जो शिवराजर्षि कहते हैं. यह किस तरह है? श्रमण भगवंत महावीरने गौतम को ऐसा कहा कि अहो गौतम! जो बहुत लोक परस्पर ऐसा कहते हैं कि शिवराजर्षि कहता है कि, मुझे अतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्नहुवा है इससे मैं जान सकताहूं कि सात द्वीप व सात समुद्रसे आगे कुच्छ नहीं है वगैरह जो कथन है वह मिथ्या है. अहो गौतम! मैं इस प्रकार कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि जम्बूद्वीप आदि द्वीप, और लवण समुद्र आदि समुद्र संस्थान से सब एक सरिखे वर्तुला-

वित्थारओ अणेग विहिविहाणा, एवं जहा जीवाभिगमे जाव सयंभूरमण समुद्द पज्ज-
वसाणा, अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ १८ ॥ अत्थिणं
भंते ! जंबूदीवे दीवे दव्वाइं सवण्णाइंपि; अवणाइंपि सगंधाइंपि अगंधाइंपि, सरसाइंपि
अरसाइंपि, सफासाइंपि अफासाइंपि; अण्णमण्ण बद्धाइं अण्णमण्ण पुट्ठाइं
जाव घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ॥ अत्थिणं भंते ! लवणसमुद्दे दव्वाइं सवण्णाइंपि
एवंचेव, एवं धायई खंडेदीवे एवंचेव ॥ एवं जाव सयंभूरमणे समुद्दे जाव हंता
अत्थि ॥ तएणं सा महइ महालिया महव्व परिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स

कार हैं और विस्तार में एक २ से दुगुने हैं इस का विशेष कथन जीवाभिगम सूत्र से जानना यावत्
अंतिम स्वयंभूरमण समुद्र है इस प्रकार तिर्च्छे लोक में असंख्यात द्वीप समुद्र हैं ॥ १८ ॥ विभंग अज्ञान से
रूपी पदार्थ दीखते हैं इसलिये गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में क्या
द्रव्य सवर्ण हैं या अवर्ण हैं गंधवाले हैं या गंध रहित हैं, रसवाले हैं या रस रहित हैं स्पर्शवाले हैं या
स्पर्श रहित हैं, परस्पर बंधे हुए या परस्पर स्पर्शे हुवे यावत् परस्पर घटपना से रहे हुवे हैं ? हां गौतम !
वैसे ही सब रहे हुवे हैं. अहो भगवन् ! लवण समुद्र में क्या द्रव्य सवर्णवाले या वर्ण रहित वगैरह पूर्वोक्त
जैसे कहना. ऐसे ही धातकी खंड यावत् स्वयंभूरमण समुद्र तक कहना. फीर वहां जो बडी परिषदा

अंतिए एयमट्ठं सोच्चाणिसम्म हट्ठतुट्ठा ॥ तएणं समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया ॥ १९ ॥ तएणं हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एव माइक्खइ जाव परूवेइ जण्णं देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ अत्थिणं देवाणुप्पिया! समं अतिसेसे णाण दंसणे जाव समुद्दाय, तं णो इणट्ठे समट्ठे. समणे भगवं महावीरे एव माइक्खइ जाव परूवेइ एवं खलु एयस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं

धर्मोपदेश सुनने को आई थी वह महावीर स्वामी की पास से ऐसा अर्थ सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुइ और महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर वह जहां से आयी थी वहां पीछी गई ॥ १९ ॥ फीर हस्तिापुर नगर के शृंगारक का आकारवाले यावत् बहु रस्ते मीले वैसे स्थान में बहुत लोकों परस्पर ऐसा वार्तालाप करते लगे कि जो शिवराजर्षि कहता है कि मुझे संपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुवा है इस से मैं जान सकता हूं कि सात द्वीप व सात समुद्र हैं आगे कुच्छ भी नहीं है ऐसा जो उन का कथन है यह योग्य नहीं है क्यों कि श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं शिवराजर्षि को बेले २ पारणा करते हुवे विभंग अज्ञान प्राप्त हुवा है जिस से उसने सात द्वीप व सात समुद्र देखे हैं और इससे हस्तिनापुर नगर में आकर ऐसा कहा कि सात द्वीप व सात समुद्र हैं आगे कुच्छ भी नहीं है और उस की पास से

तंचेव जाव भंडणिक्खेवं करेइ २ त्ता, हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडग जाव समुदाय ॥ तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म जाव समुदाय, तंणं मिच्छा, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ एवं खलु जंबूदीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा तंचेव जाव असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २० ॥ तएणं से सिवे रायरिसी बहु जणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म संकिए कंखिए वितिगिंछिए भेद समावण्णे कलुस समावण्णे जाएयावि होत्था तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स जाव कलुससमावण्णस्स विभंगे अण्णाणे खिप्पामेव परिवडिए २१ ॥ तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवंखलु समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं

श्रवण कर जो ऐसा कहते हैं उन का भी कथन मिथ्या है. श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि जम्बूद्वीप आदि द्वीप और लवण समुद्र आदि समुद्र वलयाकार एक एक से वेष्टित रहे हुवे हैं और विस्तार में दुगुने हैं ॥ २० ॥ उस समय में लोगों की पास से ऐसा श्रवण कर शिवराजर्षि को शंका कांक्षा व कालुष्यता उत्पन्न हुई इस से वह विभंग अज्ञान से पतित हुवा ॥ २१ ॥ फीर शिवराजर्षि को ऐसा अध्यवसाय हुवा कि धर्म की आदि के करनेवाले यावत् सर्वज्ञ सर्वदर्शी तीर्थंकर

जाव सहसंबवणे उज्जाणे अहपडिरूवं जाव विहरइ, तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स जहा उववाइए जाव गहणयाए, तं गच्छामिणं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव पज्जुवासामि. एय णे इहभवेय परभवेय जाव भविस्सइ तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता, जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तावसावसहे अणुप्पविसइ २ त्ता सुबहुं लोही लोहकडाह जाव किढिण संकाइगंच गेण्हइ २ त्ता तावसावसहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता पडियविभंगे हत्थिणापुरं णयरं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाने जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ

श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी सहस्राम्रवन में आकाशगत चक्र से यथा प्रतिरूप अवग्रह याचकर विचर रहे हैं इस से तथारूप अरिहंत भगवंत के दर्शन का महा फल होता है वगैरह सब अधिकार उववाइ जैसे कहना यावत् उन की पास से ग्रहण करने का तो कहना ही क्या. इस से श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास जाऊं और उन को वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करूं इस भव व पर भव में यही होगा. ऐसा विचार करके तापस के आवास में गया और वहां से लोहे की कडाइ, कुडच्छी व कावड वगैरह लेकर हस्तिनापुर की बीच में होता हुवा सहस्राम्रवन उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामीकी पास गया

२ त्ता, समणं भगवं महावीरं तिक्खत्तो वंदइ णमंसइ णच्चासणे णाइदूरे जाव पंज-लिउडे पज्जुवासइ ॥ २२ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसेय महति महालियाए जाव आणाए आराहए भवइ ॥ २२ ॥ तएणं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म जहा खंदओ जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ त्ता, सुबहुं लोही लोह जाव किढिण संकाइगं च एगंते एडेइ २ त्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं एवं जहेव उसभदत्तो तहेव पव्वइओ तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, तहेव सव्वं जाव सव्व दुक्खप्पहीणे ॥ २३ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ

और हस्त जोड कर पर्युपासना करता हुवा खडा रहा ॥ २२ ॥ फीर श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उस महती परिषदा में शिवराजार्षि को आज्ञा का आराधक होता है वहां तक धर्म कथा सुनाइ ॥ २२ ॥ शिवराजार्षि भी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास धर्म श्रवण कर स्कंदक अनगार जैसे ईशान कौन में गया. वहां लोहे की कडाइ कावड वगैरह एकान्त में डालकर स्वयमेव पंच मुष्टि लोच किया और ऋषभ दत्त जैसे श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास प्रव्रज्या अंगीकार की. और अग्यारह अंग का अध्य-यन करके यावत् सब दुःख से रहित हुवा ॥ २३ ॥ अहो पूज्य ! ऐसा कहकर श्री श्रमण भगवंत महावीर

रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितना प्रकार का भं० भगवन् लो० लोक प०

णमंसइ णमंसइत्ता एवं वयासी जीवाणं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झंति? गोयमा ! वइरोसभणारायणे संघयणे सिज्झंति ॥ एवं जहेव उववाइ तहेव संघयणं संठाणं उच्चत्तं आउयंच परिवसणा ॥ एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव अव्वाबाहं सोक्खं अणुहुंती सासयं सिद्धा ॥ सेवं भंते भंते त्ति ॥ सिवो सम्मत्तो ॥ एगारस सयस्सय नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ ९ ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-कइविहेणं भंते ! लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे

स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी बोले कि अहो भगवन् ! सिद्ध होनेवाले जीवों को कितने संघयण कहे हैं ? अहो गौतम ! जीव वज्रऋषभनाराच संघयण में सीझते हैं जैसे उववाइ में कहा वैसे ही संघयन संठान, उच्चत्व, आयुष्य व परिवसन वगैरह कहना. सिद्ध भगवन्त जन्म जरा मृत्यु व बंधन मुक्त हैं अव्याबाध शाश्वत सुख का अनुभव लेते हैं वगैरह सब कथन उववाइ जैसे कहना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह अग्यारवा शतक का नववा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ११ ॥ ९ ॥

नववे उद्देशे के अंत में सिद्ध लोकान्त में रहते हैं ऐसा कथन किया. वह लोक किस संस्थान वाला है उस का स्वरूप बताते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी

प्ररूपा गो० गौतम च० चार प्रकार का लो० लोक प० प्ररूपा तं० वह ज० जैसे द० द्रव्यलोक खे० क्षेत्रलोक का० काल लोक भा० भावलोक ॥ १ ॥ खे० क्षेत्र लोक भं० भगवन् क० कितने प्रकार का गो० गौतम ति० तीन प्रकार का तं० वह ज० जैसे अ० अधोलोक ति० तिर्यक् लोक उ० ऊर्ध्व लोक ॥ २ ॥ सरल शब्दार्थ

लोए पण्णत्ते, तंजहा-दव्वलोए, खेत्तलोए, काल लोए, भावलोए, ॥१॥ खेत्तलोएणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा-अहे लोय खेत्तलोए, तिरियलोय खेत्तलोए, उड्ढलोय, खेत्तलोए, ॥ २ ॥ अहो लोय खेत्तलोएणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, तंजहा-रयणप्पभा पुढवी अहे लोय खेत्तलोए जाव अहे सत्तमा पुढवी अहे लोय खेत्तलोए ॥ ३ ॥ तिरिए लोय

को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! कितने प्रकार का लोक कहा है ? अहो गौतम ! लोक चार प्रकार का कहा है. १ द्रव्य लोक २ क्षेत्र लोक ३ काल लोक व ४ भाव लोक ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्षेत्र लोक के कितने भेद हैं ? अहो गौतम ! क्षेत्र लोक के तीन भेद कहे हैं. १ अधो लोक २ तिर्यक् लोक व ३ ऊर्ध्व लोक. अहो भगवन् ! अधो लोक के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अधो लोक के सात भेद कहे हैं. रत्नप्रभा पृथ्वी अधो लोक यावत् सातवी

खेत्तलोएणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जविहे पण्णत्ते, तंजहा-जंबूद्दी वेदीवे तिरियलोय खेत्तलोए जाव सयंभूरमण समुद्दे तिरिय लोय खेत्तलोए ॥ ४ ॥ उड्ढलोय खेत्तलोएणं भंते ! कइविहे ? गोयमा ! पण्णरसविहे पण्णत्ते, तंजहा-सोहम्म कप्प उड्ढलोय खेत्तलोए जाव अच्चुय कप्प उड्ढलोय खेत्तलोए, गेविज्ज विमाण उड्ढलोय खेत्तलोए, अणुत्तर विमाण उड्ढलोय खेत्तलोए, ईसिप्पब्भार पुढवी उड्ढलोय खेत्तलोए ॥ ५ ॥ अहे लोय खेत्तलोएणं भंते ! किं संठिए पण्णत्ते? गोयमा! तप्पागार संठिए पण्णत्ते ॥ ६ ॥ तिरिय लोय खेत्तलोएणं भंते ! किं संठिए पण्णत्ते?

तम तमा पृथ्वी अधो लोक ॥३॥ अहो भगवन् ! तिर्च्छा लोक कितने प्रकार का कहा ? अहो गौतम ! तीर्च्छे लोक के असंख्यात भेद कहे हैं जम्बूद्वीप तिर्यक् लोक क्षेत्र यावत् स्वयंभूरमण समुद्र ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! ऊर्ध्व लोक के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! ऊर्ध्व लोक के पन्नरह भेद कहे हैं. सौधर्म देवलोक यावत् अच्युत देवलोक यह बारह हुवे १३ ग्रैवेयक १४ अनुत्तर विमान और १५ ईषत्प्रागभार पृथ्वी ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! अधो लोक कौनसा आकार वाला है ! अहो गौतम ! अधो लोक त्रिपाइ के आकार वाला है. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! तीर्च्छा लोक का संस्थान कैसा है ? अहो गौतम ! तीर्च्छा

गोयमा ! झल्लरिसंठिए पण्णत्ते ॥ ७ ॥ उड्ढलोग खेत्तलोग पुच्छा ? गोयमा ! उड्ढमुइंगाकार संठिए पण्णत्ते ॥ ८ ॥ लोएणं भंते ! किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! सुप्पइट्ठग संठिए लोए पण्णत्ते तंजहा-हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते जहा सत्तमसए पढमोद्देसए जाव अंतंकरेंति ॥ ९ ॥ अलोएणं भंते ! किं संठिए पण्णत्ते झुसिर-गोल संठिए पण्णत्ते ॥ १० ॥ अहेलोय खेत्तलोएणं भंते ! किं जीवा जीव देसा जीवप्पएसा, एवं जहा इंदा दिसा तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए ॥ ११ ॥

लोक का संस्थान झालर जैसा गोल है. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ऊर्ध्व लोक का संस्थान कैसा है ? अहो गौतम ! ऊर्ध्व मृदंगाकार संस्थान है. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! ऊर्ध्व लोक का संस्थान कैसा है ? अहो गौतम ! सुप्रतिष्ठक संस्थान से लोक कहा है नीचे विस्तीर्ण मध्य में संकुचित ऊपर विस्तीर्ण वगैरह सातवा शतक में पहिले उद्देशे में कहा वैसा जानना. ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! अलोक का कैसा संस्थान है ? अहो गौतम ! झुसिर खाली गोलों में रही हुइ पोल्लार जैसा अलोक का आकार है. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! क्या अधो लोक क्षेत्र में क्या जीव, जीव देश व जीव प्रदेश है ? अहो गौतम ! इस का सब अधिकार ईन्द्रा नामक दिशा जैसे अद्धा समय तक कहना ॥ १ ॥ अहो गौतम ! तीर्च्छे

तिरियलोय खेत्तलोएणं भंते! किं जीवा एवंचेव एवं उड्ढलोय खेत्तलोएवि, णवरं अरूवी छव्विहा अद्धा समओ नत्थि॥ १२॥ लोएणं भंते! किं जीवा जहा बीयसए अत्थि उद्देसए लोगागासे, णवरं अरूवी सत्तविहा जाव अहम्मत्थिकायस्स पएसा, णो आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्सदेसे, आगासत्थिकायस्स पएसा, अद्धासमए, सेसं तंचेव ॥ १३ ॥ अलोएणं भंते ! किं जीवा एवं जहा अत्थिकाय उद्देसए अलोगागासे तहेव णिरवसेसं जाव अणंत भागूणे ॥ १४ ॥ अहे लोय खेत्तलोयस्सणं भंते !

लोक में भी जीव, जीवदेश व जीव प्रदेश का वैसे ही जानना. और ऊर्ध्व लोक में भी वैसे ही कहना. परंतु इस में अरूपी अजीव छ कहना क्यों कि काल नहीं हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! लोक में क्या जीव है वगैरह जैसे दूसरे शतक में आस्तित्व उद्देशे में कहा वैसे ही यहां कहना इस में विशेषता इतनी कि यहां पर अरूपी के सात भेद ग्रहण करना. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय के देश व प्रदेश आकाशास्तिकाय के देश व प्रदेश और काल यों सात भेद हुवे ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! अलोकाकाश में क्या जीव है, जीव देश है जीव प्रदेश है अथवा अजीव है, अजीव देश हैं. अजीव प्रदेश है ? अहो गौतम ! जीव नहीं है यावत् अजीव प्रदेश भी नहीं है. परंतु एक अरूपी अगुरु लघु पर्यायवाला अनंत अगुरु लघु गुन सर्व आकाश रहा हुवा है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! अधो लोक में एक आकाश प्रदेश पर

एगम्मि आगास पदेसे किं जीवा जीवदेसा जीवप्पदेसा; अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पदेसा? गोयमा! णो जीवा जीवदेसावि जीवप्पएसावि, अजीवावि अजीवदेसावि अजीवप्पदेसावि; ॥ जे जीवदेसा ते णियमं एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसाय बेइंदियस्सदेसे, अहवा एगिंदियस्स देसाय बेइंदियाणयदेसा, एवं मज्झिल्ल विरहिओ जाव अणिंदिएसु जाव अहवा एगिंदियदेसाय, अणिंदियाणयदेसा ॥ जे जीवप्पएसा

पर क्या जीव है जीव देश हैं या जीव प्रदेश हैं अथवा अजीव, अजीव देश व अजीव प्रदेश हैं? अहो गौतम! असंख्यात प्रदेशावग्राही जीव होने से एक आकाश प्रदेश पर जीव नहीं हैं परंतु जीव देश व जीव प्रदेश के दो बोल पाते हैं. और अजीव भी है. अजीव देशभी हैं व अजीव प्रदेश भी है. यद्यपि धर्मास्तिकायादिक अजीव द्रव्य एक प्रदेशापेक्षा पूर्ण नहीं है तथापि द्व्यणुकादि द्रव्य तथा काल के अवग्रहण से अजीव भी है अजीव देश हैं और अजीव प्रदेश हैं. अब जो जीव देश हैं वे निश्चय ही एकेन्द्रिय जीव देश है क्यों कि एकेन्द्रिय सर्व लोक व्यापी है यह असंयोगी एक भांगा हुवा अथवा एकेन्द्रिय के बहुत देश बेइन्द्रिय का एक देश, एकेन्द्रिय के बहुत देश बेइन्द्रिय के बहुत देश जिस प्रकार दशवे शतक में तीन भांगे बतलाये इस में बहुत एकेन्द्रिय के बहुत देश व बेइन्द्रिय के बहुत देश यह बीच का भांगा नहीं पाता है. शेष दो भांगे पाते हैं यावत् बहुत एकेन्द्रिय के बहुत देश, बहुत अनेन्द्रिय के बहुत

ते णियमं एगिंदियप्पदेसा, अहवा एगिंदियप्पएसाय, बेइंदियस्सप्पदेसा; अहवा एगिं-दियप्पदेसाय बेइंदियाणयप्पएसा एवं आदिल्ल विरहिओ जाव पंचिंदिएसुय, अणिंदि-एसुय, तियभंगो जे अजीवा तें दुविहा प०तं० रूवी अजीवाय, अरूवी अजीवाय ॥

रूवी तहेव, जे अरूवी अजीवा ते पंचाविहा पण्णत्ता, तंजहा णोधम्मत्थिकाए, धम्म-

देश यहां तक कहना. अब जो जीव के प्रदेश हैं वे नियमा से एकेन्द्रिय के प्रदेश हैं यह असंयोगी एक भांगा हुवा अथवा बहुत एकेन्द्रिय प्रदेश एक बेइन्द्रिय बहुत प्रदेश यों दशवे शतक के प्रथम उद्देशे जैसे तीन भांगे में से प्रथम भांगा बहुत एकेन्द्रिय के बहुत प्रदेश एक बेइन्द्रिय का एक प्रदेश यह भांगा छोड-कर सब कहना यावत् अनेन्द्रिय को पहिले कहे हुवे तीनों भांगे कहना. यह जीव संबंधी व्याख्या कही. अब अजीव संबंधी व्याख्या कहते हैं. जो अधो लोक के आकाश पर अजीव है उस के दो भेद १ रूपी अजीव और दूसरा अरूपी अजीव. रूपी अजीव के चार भेद १ स्कंध, २ देश ३ प्रदेश व ४ परमाणु. और अरूपी अजीव के पांच भेद हैं एक आकाश प्रदेश होने से धर्मास्तिकाय संपूर्ण नहीं है क्यों कि धर्मास्तिकाय संपूर्ण लोक व्यापी है एक आकाश प्रदेश में धर्मास्तिकाय का प्रदेश होता है परंतु देश शब्द से धर्मास्तिकाया का अवग्रहण करना. यह अवयव मात्र का विवक्षितपना होने से अपेक्षित वचन से धर्मास्तिकाया का देश कहा है. और धर्मास्तिकाया का प्रदेश तो निरूपचारित है इस से धर्मास्तिकाय के

स्थिकायस्स देसे, धम्मात्थिकायस्स पएसा एवं अधम्मत्थि कायस्सवि अद्धासमए ॥१५॥ तिरिय लोय खेत्तलोयस्सणं भंते! एगम्मि आगासप्पदेसे किं जीवा एवं जहा अहे लोगखेत्तलोगस्स तहेव, एवं उड्ढलोय खेत्तलोगस्सवि, णवरं अद्धासमओ नत्थि ॥ अरूवी चउव्विहा लोगस्स जहा अहेलोग खेत्तलोगस्स एगम्मि आगासप्पएसे ॥ १६ ॥ अलोगस्सणं भंते! एगम्मि आगासप्पएसे पुच्छा? गोयमा? णो जीवा णो जीवदेसा तंचेव जाव अणंतेहिं अगुरुलहुय गुणेहिं संजुत्ते,सव्वागासस्स अणंतभा-

देश व प्रदेश ऐसे दो बोल पाते हैं. ऐसे ही अधर्मास्तिकाय के दो भेद और काल यों पांच अरूपी अजीव अधोलोक के एक आकाश प्रदेश पर पाते हैं॥१५॥ अहो भगवन्! तीर्च्छा लोक में एक आकाश प्रदेश में क्या जीव है, जीव देश है जीव प्रदेश है यावत् अजीव प्रदेश है? अहो गौतम! जैसे अधो लोक का कहा वैसे ही यहां कहना. ऐसे ही ऊर्ध्व लोक का जानना. परंतु उस में काल नहीं है इस से अरूपी अजीव के चार भेद होते हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन्! अलोक के एक आकाश प्रदेश पर क्या जीव है यावत् प्रदेश हैं? अहो गौतम! जीव नहीं है यावत् अजीव प्रदेश नहीं हैं. परंतु अनंत अगुरु लघुगुण संयुक्त सब आकाश के अनंतवे भाग कम हैं. यह क्षेत्र लोक का कथन हुवा ॥ १७ ॥ द्रव्य से अधो लोक में

गूणे ॥ १७ ॥ दव्वओणं अहेलोय खेत्तलोए अणंता जीवदव्वा, अणंता अजीवदव्वा अणंता जीवाजीवदव्वा, एवं तिरियलोय खेत्तलोएवि; एवं उड्ढलोय खेत्तलोएवि ॥ दव्वओणं अलोए णेवत्थि जीवदव्वा. णेवत्थि अजीवदव्वा, णेवत्थि जीवा जीवदव्वा, एगे अजीव दव्वदेसे जाव सव्वागासस्स अणंतभागूणे ॥ कालओणं अहेलोय खेत्त-लोए जाव णकयायि णासि जाव णिच्चे, एवं जाव अलोए ॥ भावओणं अहेलोग खेत्तलोगे अणंता, वण्णपज्जवा, जहा खंदए जाव अणंता अगुरुय लहुय पज्जवा, एवं जाव लोए ॥ भावओणं अलोए णेवत्थि वण्णपज्जवा जाव णेवत्थि अगुरुलहुय पज्जवा,

अनंत जीव द्रव्य, अनंत अजीव द्रव्य, अनंत जीवाजीव द्रव्य. ऐसे ही तीर्च्छालोक में व ऊर्ध्व लोक में जानना. अलोक में द्रव्य से जीव द्रव्य नहीं है अजीव द्रव्य नहीं है व जीवाजीव द्रव्य नहीं हैं मात्र एक अजीव द्रव्य देश यावत् सर्वाकाशका अनंत भाग कम है. काल से अधोलोक पहिले कदापि नहीं था वैसे नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं व अनागत में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु नित्य शाश्वत यावत् ध्रुव है. ऐसे ही तीर्च्छा लोक ऊर्ध्व लोक व अलोक का जानना. भाव से अधोलोक में अनंत वर्ण पर्यव यावत् अनंत अगुरु लघु पर्यव वगैरह जैसे स्कंधक का कहा वैसे ही जानना. ऐसे ही तीर्च्छा लोक व

एगे अजीव दव्वदेसे जाव अणंतभागूणे ॥ १८ ॥ लोएणं भंते के महालए पण्णत्ते? गोयमा! अयण्णं जंबूद्दीवे दीवे सव्वदीव जाव परिक्खेवेणं ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं छदेवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा, जंबूदीवे दीवे मंदरे पव्वए चूलिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठिज्जा, अहेणं चत्तारि दिसा कुमारिओ महत्तरियाओ चत्तारि बलिपिंडं गहाय जंबूदीवस्स दीवस्स चउसुवि दिसासु बहियाओ अभिमुहीओ ठिच्चा ते चत्तारि बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुह पक्खिविज्जा; पभूणं गोयमा! तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणि तलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्ताए

ऊर्ध्व लोक का जानना. भाव से लोक में अलोक में अनंत वर्ण पर्यव नहीं है यावत् अनंत अगुरु लघु पर्यव नहीं है मात्र एक अजीव द्रव्य यावत् अनंत भाग कम है ॥ १८ ॥ अहो भगवन्! लोक कितना बडा कहा? अहो गौतम! सब द्वीपों की बीच में जम्बूद्वीप नामक द्वीप रहा हुवा है एक लक्ष योजन का यह लम्बा चौडा है और ३१६२२८ योजन में कुछ कम की परिधि है. उस काल उस समय में बडे व महा ऋद्धिवंत छ देव जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की चूलिका को चारों तरफ घेर कर खडे रहे अब जम्बूद्वीप की बाहिर रही हुई चार दिशाकुमारियों सन्मुख खडी रह कर बलि- पिण्ड को एक साथ नीचे डाले.

सेणं गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगइए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाए एवं दाहिणाभिमुहे, एवं पच्चत्थाभिमुहे, एवं उत्तराभिमुहे, एवं उड्ढाभिमुहे एगे देवे अहे पयाए ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससहस्साउए दारए पयाए, तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, णोचेवणं ते देवा लोगंतं संपाउणंति; तएणं तस्स दारगस्स आउपहीणे भवइ, णोचेव जाव संपाउणंति, तएणं तस्स दारगस्स अट्ठीमिंजा पहीणा भवंति णोचेवणं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तहेवणं तस्स दारगस्स आसत्तमे कुलवंसे पहीणे भवइ णोचेवणं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तएणं तस्स

अहो गौतम! उक्त एक २ देव चारों पिण्ड धरणि तल में गिरने के पहिले उठाने को शीघ्र समर्थ होते हैं. इतनी शीघ्र दीव्य देवगति से छ देवों में एक पूर्व में एक दक्षिण में, एक पश्चिम में, एक उत्तर में, एक ऊर्ध्व में व एक अधो में ऐसी दिशा में जावे. उस काल उस समय में किस को सो वर्षका अयुष्यवाला बालक होवे. उस बालक के मात पिता काल करजावे इतने समयमें वे लोक के अंत में नहीं जासके उस बालकका आयुष्य भी पूर्ण होजावे तो भी वे लोक के अंत में नहीं जासके और उस बालक के अस्थी अस्थि मिंजी वगैरह नष्ट होजावे तो भी वे लोक के अंतमें नहीं पहुंच सके ऐसे ही उस बालक के सात वंश

दारगस्स नामगोएवि पहीणे भवइ णोचेवणं ते देवा लोगंतं संपाउणांति ॥ तेसिणं भंते! देवाणं किं गए बहुए, अगए बहुए? गोयमा! गए बहुए णोअगए बहुए गयाओ से अगए असंखेज्जइभागे, आगयाओसेगए असंखेज्जगुणे ॥ लोएणं गोयमा! ए महालए पण्णत्ते ॥ १९ ॥ अलोएणं भंते के महालए पण्णत्ते? गोयमा! एएणं समयक्खेत्ते पणयालीसं जोअणसय सहस्साइं आयामविक्खंभेणं जहा खंदए जाव परिक्खेवेणं ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं दसदेवा महिड्डिया तहेव जाव संपरिक्खित्ताणं चिट्ठेज्जा ॥ अहेणं अट्ठदिसा कुमारी महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिंडे गहाय माणुसु

होजावे वहां तक भी वे देवों लोक का अंत प्राप्त करसके नहीं तब श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन्! क्या वे देवों बहुत क्षेत्र उल्लंघगये या बहुत क्षेत्र बाकी रहे? अहो गौतम! बहुत क्षेत्र उलंघगये परन्तु बहुत क्षेत्र बाकी नहीं रहे. गत क्षेत्र से अगत क्षेत्र असंख्यात भाग वाला है और अगत क्षेत्र से गत क्षेत्र असंख्यात गुना. अहो गौतम! लोक इतना बडा कहा है. ॥ १९ ॥ अहो भगवन्! अलोक कितना बडा कहा? अहो गौतम! यह अढाइ द्वीप पेंतालीस लाख योजन का लम्बा चौडा कहा है वगैरह स्कंदक के अधिकार में कहा वैसे ही यावत् परिधि तक कहना. उस समय में दश महर्द्धिक यावत् चारों तरफ रहे हुवे हैं आठ दिशा कुमारियों आठ बलिपिंड लेकर मानुषोत्तर पर्वत की

त्तरस्स पव्वयस्स चउसुवि दिसासु विदिसासुय बहियाभिमुही ठिच्चा अट्ठबलिपिंडं जम-
गसमगं बहियाभिमुहीओ पक्खिवेज्जा, पभूणं गोयमा! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ
बलिपिंडं धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए, तेणं गोयमा! देवा ताए
उक्किट्ठाए जाव देवगईए लोगंते ठिच्चा असब्भाव पट्ठवणाए, एगेदेवे पुरत्थाभिमुहे
पयाए, एगेदेवे दाहिण पुरत्थाभिमुहे पयाए एवं जाव उत्तर पुरत्थाभिमुहे पयाए,
एगेदेवे उड्ढाभिमुहे, एगेदेवे अहेभिमुहे पयाए, ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससय

चारों दिशा विदिशा की तरफ मुख करके खडी रहे. और वे बाहिर मुख करके खडी रही हुई देवियों एक साथ उन आठ पिंड को फेंके तब उक्त देवों उन आठों बलिपिंड को पृथ्वीपर गिरते पहिले पकडने को समर्थ होते हैं अब अहो गौतम! ऐसी दीव्य उत्कृष्ट गति से लोकांत में खडेरह कर असद्भाव स्थापना से एक पूर्व में, एक अग्नि में, यावत् एक ईशान में एक अधो में व एक ऊर्ध्व में चलना शरुकरे. उस समय मे एक सोवर्ष के आयुष्य वाला बालक का जन्म होवे अब बालक के मात पिता मरजावे वहां तक भी उक्त देवों अलोक का अंत नहीं कर सकते हैं. स्वतः सोवर्ष का अयुष्य पूर्ण कर जावे तो भी वे अलोक के अंत में जासके नहीं, यावत् अहो भगवन्! क्या वे गत बहुत हैं या अगत बहुत हैं?

१ अलोक मे किसी जीव या पुद्गल का गमन नही होता है परन्तु प्रमाण केलिये असद्भाव की स्थापना की है.

सहस्साउए दारए पयाए, ॥ तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, णो-चेवणं तेदेवा अलोयंतं संपाउणंति, तंचेव जाव ॥ तेसिणं भंते ! देवाणं किं गए बहुए अगए बहुए? गोयमा ! णोगए बहुए अगए बहुए; गयाओ से अगए अणंत-गुणे, अगयाओ से गए अणंतभागे ॥ अलोएणं गोयमा ! ए महालए पण्णत्ते॥२०॥ लोगस्सणं भंते! एगम्मि अगासपदेसे जे एगिंदियपएसा जाव पंचिंदियप्पदेसा. अणिं-दियप्पदेसा अण्णमण्णस्स बद्धा, अण्णमण्णस्स पुट्ठा, जाव अण्णमण्णस्स घडत्ताए चिट्ठंति अत्थिणं भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आवाहंवा, वावाहंवा, उप्पायंति, छवि-

अर्थात् वे बहुत क्षेत्र उल्लंघ गये हैं या उन को बहुत क्षेत्र उल्लंघना बाकी है ? अहो गौतम ! उन को गत क्षेत्र बहुत नहीं है परंतु अगत क्षेत्र बहुत है, गत क्षेत्र से अगत क्षेत्र अनंत गुना है व अगत क्षेत्र से गत क्षेत्र अनंत भाग वाला है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! लोक के एक आकाश प्रदेश में एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय चतुरेन्द्रिय, व पंचेन्द्रिय, व अनेन्द्रिय के आत्म प्रदेश परस्पर स्पर्शे यावत् संघटित होकर रहे तो, या उन प्रदेशों को किंचिन्मात्र बाधा, विबाधा अथवा चर्मच्छेद क्या होता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् उन प्रदेशों को किसी प्रकार की बाधा पीडा नहीं होती है. अहो

च्छेदं करेंति? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ लोगस्सणं एगम्मि आगासप्पदेसे जे एगिंदियप्पदेसा जाव चिट्ठंति णात्थिणं अण्णमण्णस्स किंचि आवाहंवा जाव करेंति? गोयमा! से जहा णामए नट्टिया सिया, सिंगारागार चारुवेसा जाव कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलंसि जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसइ विहस्स नट्टस्स अण्णयरं नट्टविहिं उवदंसिज्जा, सेणूणं गोयमा! ते पेच्छागा तं नट्टियं अणमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएत्ति? हंता भंते! समभिलोए ॥ ताओणं गोयमा! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता सण्णिघडियाओ हंता सण्णिघडियाओ

भगवन्! किस कारन से उन जीव प्रदेशों को बाधा, विबाधा व विच्छेद नहीं होता है? अहो गौतम! नृत्य करनेवाली शृंगार का गृह रूप मनोहर रूप धारन करनेवाली यावत् राग के स्थानों के भाव भेद जाननेवाली होवे. वह लाखों मनुष्यों के समूह में बत्तीस प्रकार के नाटकों में से किसी प्रकार का नाटक कर लोकों को बतलावे तो क्या गौतम! वे देखनेवाले हजारों लाखों मनुष्यों उस नृत्य करनेवाली की तरफ मेषोन्मेष क्या देखते हैं.? गौतम स्वामी बोले कि हां देखते हैं. अहो गौतम! सब मनुष्यों की दृष्टि से उस को क्या किसी प्रकार की बाधा विबाधा होती है? अहो भगवन्! वैसे बाधा

अत्थिणं गोयमा! ताओ दिट्टिओ तीसे नट्टीयाए किंचि आवाहंवा, वावाहंवा उप्पायेंति छविच्छेदंवा करेंति? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अहवा सा नट्टिया तासिं दिट्ठीणं किंचि आवाहंवा वावाहंवा उप्पाएइ छविच्छेदंवा करेति? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अहवा ताओ दिट्ठीओ अण्णमण्णाए दिट्ठीए किंचि आवाहंवा वावाहंवा उप्पाएइ छविच्छेदंवा करेति? णोइ-णट्ठे समट्ठे ॥ से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ तंचेव जाव छविच्छेदंवा करेइ २१ ॥ लोगस्सणं भंते! एगम्मि आगासप्पदेसे जहण्णप्पए जीवप्पदेसाणं उक्कोसपदे जीवप्पए-साणं सव्व जीवाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा लोगस्स एगम्मि आगासप्पदेसे जहण्णपदे जीवप्पदेसा सव्वजीवा असंखेज्जगुणा, उक्कोसपदे

विबाधा नहीं होती है. अहो गौतम! जैसे उस नृत्य करनेवाली की तरफ चारों तरफ मनुष्य देखते हुवे किन्चिन्मात्र बाधा विबाधा नहीं होती है वैसे ही लोक के एक आकाश प्रदेश पर एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय अनेन्द्रिय के प्रदेशों होने पर उन को किंचिन्मात्र बाधा विबाधा नहीं होती है ॥ २१ ॥ अहो भगवन्! एक आकाश प्रदेश में जघन्य जीव प्रदेश, उत्कृष्ट जीव प्रदेश व सर्व प्रदेश में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडे लोक के एक आकाश प्रदेश में जघन्य पद से जीव

जीवप्पदेसा विसेसाहिया ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगारस सयस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ १० ॥ * * *

प्रदेश हैं इस से सब जीव असंख्यातगुने इस से उत्कृष्ट पद से जीव प्रदेश विशेषाधिक है. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य है. यह अग्यारवा शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ ११ ॥ १० ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे णामं णयरे होत्था, वण्णओ दूइ पलासे चेइए वण्णओ, जाव पुढवी सिलापट्टए तत्थणं वाणियगामे णयरे सुदंसणे णामं सेट्ठी परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए समणोवासए अभिगय जीवाजीवे जाव विहरइ,

तें० उस काल तें० उस समय में वा० वाणिज्यग्राम न० नगर हो० था व० वर्णन युक्त दू० दूति पलास चे० चैत्य व० वर्णन जा० यावत् पु० पृथ्वी शिलापट्टक त० तहां वा० वाणिज्यग्राम न० नगर में सु० सुदर्शन से० श्रेष्ठी प० रहता है अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत स० श्रमणोपासक अ० जाने जी० जीव अजीव जा० यावत् वि० विचरता है सा० स्वामी स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा

दशवे उद्देशे में लोक का स्वरूप कहा अब लोक द्रव्य वर्ती काल का स्वरूप कहते हैं. उस काल उस समय में वाणिज्य नामक नगर बहुत वर्णन योग्य था. उस की ईशान कौन में दूतिपलाश नामक उद्यान था यावत् पृथ्वी शिला पट्ट था. उस वाणिज्य नगर में सुदर्शन नाम का श्रेष्ठि रहता था. वह ऋद्धिवंत

प० पर्युपासना करे ॥ १ ॥ त० तत्र से० वह सु० सुदर्शन से० श्रेष्ठी इ० इस क० कथा को ल० प्राप्त होते ण्हा० स्नान किया क० क्रिया जा० यावत् पा० तिलमसादि किये स० सर्व अ० अलंकार वि० विभूषित सा० अपना गि० गृह से प० नीकलकर स० कोरंटक की म० पुष्पमाला छ० छत्र ध० धरते पा० पादविहार से म० बडे पु० पुरुष व० चाकरसे प० घेराये हुवे वा० वाणिज्यग्राम ण० नगर की म० मध्य से णि० नीकलकर जे० जहां दू० दूतिपलास चे० चैत्य स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां उ०

सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ॥ १ ॥ तएणं से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ तुट्ठे ण्हाए कय जाव पायच्छित्ते सव्वालंकार विभूसिए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता सकोरंटमल्ल दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं पाद विहार चारेणं महया पुरिसवग्गुरा परिक्खित्ते वाणियगामं णयरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ २

यावत् अपराभूत श्रमणोपासक था. जीवाजीवादि नव तत्त्व को जानता हुवा यावत् विचरता था. उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदने को आई ॥ १ ॥ उस काल उस समय में सुदर्शन शेठ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी दूतिपलाश उद्यान में पधारे हैं ऐसी कथा सुनकर बहुत हर्षित हुवे फीर स्नान किया यावत् तीलमसादिक करके सर्वालंकार से विभूषित बने. फीर स्वतः के गृह से नीकलकर कोरंटक वृक्ष के पुष्पों की मालावाला छत्र धारण कर पाद विहार से (पग से चलते हुवे)

आकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को पं० पांच प्रकार का अ० अभिगम से अ० जावे तं० वह ज० जैसे स० सचित्त द० द्रव्य ज० जैसे उ० ऋषभदत्त जा० यावत् तिं० तीन प्रकार की प० पर्युपासना से प० पूजे ॥२॥ त० तब से० वह स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर सु० सुदर्शन से० श्रेष्ठीको ती० उस म० बडी जा० यावत् आ० आराधिक भ० होवे ॥ ३ ॥ त० तब से० वह सु० सुदर्शन से० श्रेष्ठी स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० पास ध० धर्म सो० सूनकर णि० अवधारकर ह०

त्ता जेणेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ तंजहा सचित्ताणं दव्वाणं जहा उसभदत्तो जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥ २ ॥ तएणं से समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसेय महइ जाव आराहए भवइ ॥ ३ ॥ तएणं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ

बहुत पुरुषों की साथ वाणिज्य नगर की बीच में होकर दूतिपलाश उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास जाते सचित्त द्रव्यों का त्याग करना ऐसे पांच अभिगम से श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पास गये और मन वचन व काया के योग से पर्युपासना की ॥ २ ॥ फीर श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीने उस महती परिषदा में सुदर्शन शेठ को धर्मकथा सुनाइ ॥ ३ ॥ सुदर्शन शेठ भी महावीर स्वामी से धर्म

हृष्ट तु० तुष्ट उ० स्थान से उ० उठकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ति० तीनवक्त आ० यावत् ण० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले क० कितना प्रकार का भं० भगवन् का० काल प० प्ररूपा सु० सुदर्शन च० चार प्रकार का प० प्ररूपा प० प्रमाण काल आ० आयुर्निर्वर्तिक काल म० मरण काल

उट्ठाए २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एवं वयासी कइविहेणं भंते! काले पण्णत्ते सुदंसणा! चउव्विहे काले प० तं० पमाण काले, अहाउणिव्वत्ति काले, मरण काले, अद्धाकाले ॥ ४॥ से किंतं पमाण काले २ दुविहे पण्णत्ते तंजहा दिवसप्पमाण कालेय, रत्तिप्पमाणकालेय, चउपोरिसीए दिवसे चउपोरिसीए राई भवइ॥ उक्कोसिया अद्ध पंचम मुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईएवा पोरिसी भवइ ॥ जयाणं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचम

सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवा और श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को तीन आदान व नमस्कार करके ऐसा बोले कि अहो भगवन्! काल के कितने भेद कहे हैं? अहो सुदर्शन! काल के चार भेद कहे हैं १ प्रमाण काल २ यथायुःकाल ३ मरण काल और ४ अद्धा समय काल ॥४॥ अहो भगवन्! प्रमाण काल किसे कहते हैं? अहो सुदर्शन! प्रमाण काल के दो भेद कहे हैं? दिन का प्रमाण काल व रात्रि का प्रमाण काल. दिन का प्रमाण काल चार पौरुषी का होता है और रात्रि का प्रमाण काल भी

मुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ तयाणं कइ भाग मुहुत्त भागेणं परिहाय-
माणी २ जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स राईएवा पोरिसी भवइ ॥ जयाणं जहण्णिया
तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ तदाणं कइ भाग मुहुत्त भागेणं
परिवड्डमाणी २ उक्कोसिया अद्धपंचम मुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ?
सुदंसणा! जदाणं उक्कोसिया अद्धपंचम मुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ,
तदाणं बावीससय भाग मुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स-
वा राईएवा पोरिसी भवइ, जयाणं जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा
पोरिसी भवइ तदाणं बावीससय भागमुहुत्त भागेणं परिवड्डमाणी २

चार पौरुषी का होता है. जघन्य तीन मुहूर्त व उत्कृष्ट साढे चार मुहूर्त की एक पौरुषी होती है. अहो
भगवन्! जब साढे चार मुहूर्त की दिन की अथवा रात्रि की पौरुषी होती है तब कितने भाग कमी
करते जघन्य तीन मुहूर्त की पौरुषी होवे और जब जघन्य तीन मुहूर्त की दिन की व रात्रि की पौरुषी
होती है तब कितने भाग बढाते उत्कृष्ट साढे चार मुहूर्त की पौरुषी होती है? अहो सुदर्शन! साढे चार
मुहूर्त से तीन मुहूर्त तक में देढ मुहूर्त की वधघट १८३ दिन में होती है इस से जब साढे चार मुहूर्त का
दिन होता है तब एक मुहूर्त के १२२ भाग में का एक भाग प्रतिदिन कम करते हुवे जघन्य तीन मुहूर्त

उक्कोसिया अद्धपंचम मुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ ॥ ५ ॥ कयाणं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ कदाणं भंते! जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ ? सुदंसणा! जयाणं उक्कोसिए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवइ तयाणं उक्कोसिया अद्धपंचम मुहुत्ता दिवसस्सवा पोरिसी भवइ. जहण्णिया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जयावा उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तयाणं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ,

अर्थ

की पौरुषी होती है और जब जघन्य तीन मुहूर्त की पौरुपीवाला रात्रि अथवा दिन है तब प्रतिदिन एक मुहूर्त के १२२ भाग में का एक २ भाग वढाते हुवे साढे चार मुहूर्त की दिन की अथवा रात्रि की पौरुषी होती है ॥५॥ अहो भगवन्! साढे चार मुहूर्त की दिन की अथवा रात्रि की पौरुपी कब होती है और तीन मुहूर्त की दिन की अथवा रात्रि की पौरुषी कब होती है ? अहो सुदर्शन! जब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य वारह मुहूर्तकी रात्रि होती है तब साढे चार मुहूर्तकी दिन की व तीन मुहूर्तकी रात्रिकी पौरुषी होतीहै और जब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्तकी रात्रि होतीहै और जघन्य वारह मुहूर्तका दिन होता है तब उत्कृष्ट

जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ ॥ ६ ॥ कयाणं भंते ! उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, कयावा उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवइ; जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ? सुदंसणा! आसाढ पुण्णिमाएणं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ; पोस पुण्णिमाएणं उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ ७ ॥ अत्थिणं भंते! दिवसाय राईओय समाचेव भवंति? हंता अत्थि। कयाणं भंते! दिवसाय राईओय समाचेव भवंति? सुदंसणा!

साढे चार मुहूर्त की रात्रि की पौरुषी व तीन मुहूर्त की दिन की पौरुषी होती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि कब होती है और बारह मुहूर्त का दिन व अठारह मुहूर्त की रात्रि कब होती है ? अहो सुदर्शन ! आषाढ पूर्णिमा को उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है और पोष पूर्णिमा को उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि व बारह मुहूर्त का दिन होता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या दिन रात्रि सम होते हैं ? हां सुदर्शन ! दिन रात्रि सरिखे होते हैं. अहो भगवन् ! दिन रात्रि कब सरिखे होते हैं ? अहो सुदर्शन ! चैत्य व आशो पूर्णिमा को

चित्तासोय पुण्णिमासुणं दिवसाय राईओय समाचेव भवंति; पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, चउभागमुहुत्त भागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ सेत्तंप्पमाणकाले ॥ ८ ॥ सेकिंतं अहाउणिव्वत्तिकाले ? अहाउनिव्वत्तिकाले जण्णं णेरइएणवा तिरिक्खजोणिएणवा मणुस्सेणवा देवेणवा अहाउणिव्वत्तियं सेत्तं ॥ पालेमाणे अहाउणिव्वत्तिकाले ॥ ९ ॥ सेकिंतं मरणकाले ? मरणकाले जीवोवा सरीराओ सरीरंवा जीवाओ सेत्तं मरणकाले ॥ १० ॥ सेकिंतं अद्धा काले ?, अद्धाकाले अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा समयट्ठयाए, आवलियट्ठयाए, जाव

अर्थ

दिन रात्रि सरिखे होते हैं. उस समय पन्नरह मुहूर्त की रात्रि व पन्नरह मुहूर्त का दिन होता है. और एक मुहूर्त के १२२ भागवाले चार भाग कम चार मुहूर्त की दिन की अथवा रात्रि की पौरुषी होती है ? यह प्रमाण काल हुवा ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! यथायुष्य निवृत्ति काल किसे कहते हैं ? अहो सुदर्शन ! नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव में जिस आयुष्य का बंध किया है उसे पालना सो यथायुष्य निवृत्ति काल ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! मरण काल किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! नरक, तिर्यंच मनुष्य व देवगतिवाले जीवों एक शरीर का त्याग करके अन्य शरीर में जाते हैं सो मरण काल कहा जाता है ॥ १० ॥ अहो

उस्सप्पिणीट्टयाए, एसणं सुदंसणा ! अद्धा दोहारच्छेयणेणं छिज्जमाणा जाहे विभागं णो हव्वमागच्छइ सेत्तं समए ॥ समयट्टयाए असंखेज्जाणं समयाणं समुदय समिति समागमेणं एगा आवलियत्ति पवुच्चइ, संखेज्जाओ आवलियाओ जहा सालिउद्देसए जाव तं सागरोवमस्स एगस्स भवे परीमाणं ॥ एएहिणं भंते ! पलिओवम सागरोवमेहिं किं पओयणं? सुदंसणा! एएहिं पलिओवम सागरोवमेहिं णेरइय तिरिक्खजोणिय मणुस्स देवाणं आउयाइं माविज्जंति ॥ ११ ॥ णेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? एवं ठिईपदं णिरवसेसं भाणियव्वं जाव अज-

भगवन् ! अद्धा काल किसे कहते हैं ? अहो सुदर्शन ! अद्धा काल के अनेक भेद कहे हैं जैसे समय, आवलिका, श्वासोश्वास, थोव, लव, मुहूर्त, अहोरात्रि, पक्ष, मास, वर्ष यावत् उत्सर्पिणी अवसर्पिणी. अहो सुदर्शन ! छेदने से जिस के दो विभाग होवे नहीं उसे समय कहते हैं. संख्याते समय की एक आवलिका होती है, यों जैसे छठे शतक के सातवे उद्देशे में कहा वैसे ही जानना. यावत् दश क्रोडाक्रोड सागरोपम की एक उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी होती हैं. अहो भगवन्! इन पल्योपम सागरोपम का क्या प्रयोजन है? अहो सुदर्शन ! इन पल्योपम, सागरोपम से नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव का आयुष्य जाना जाता है ॥ ११ ॥

अ० अद्धाकाल ॥ ४-१२ ॥ अ० है भं० भगवन् प० पल्योपम सा० सागरोपम ख० क्षय अ० अपचय हं० हां अ० है से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० ए० इन प० पल्योपम सा० सागरोपम का जा० यावत् अ० अपचय सु० सुदर्शन ते० उस काल ते० उस समय में ह० हस्तिनापुर न० नगर व० बल रा० राजा हो० था० व० वर्णन युक्त त० उस व० बल र० राजा

हण्णमणुक्कोसं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ १२ ॥ अत्थिणं भंते ! एए किं पलिओवम सागरोवमाणं खएइवा अवचएइवा ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, अत्थिणं एएसिं पलिओवम सागरोवमाणं जाव अवचएइवा एवं खलु सुदंसणा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे णयरे होत्था. वण्णओ सहसंबवणे णामं उज्जाणे वण्णओ॥तत्थणं हत्थिणापुरे णामं णयरे, बले णामं राया होत्था वण्णओ

अहो भगवन् ! नारकी की कितनी स्थिति कही ? अहो सुदर्शन ! स्थिति पद से जानना यावत् सर्वार्थ सिद्ध की अजघन्य अनुत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! क्या इन पल्योपम व सागरोपम की स्थिति का क्षय व अपचय होता है ? हां ऐसी पल्योपम की स्थिति का क्षय होता है. अहो भगवन् ! ऐसा किस कारन से कहा है ? अहो सुदर्शन ! उस काल उस समय में हस्तिनापुर नामक नगर था. उसकी बाहिर सहस्राम्रवन नामक उद्यान था. उस हस्तिनापुर नगर में बल नामक राजा

ो प० प्रभावती दे० देवी हो० थी सु० सुकुमार व० वर्णन युक्त जा० यावत् वि० विचरता है ॥ १३ ॥ त० तत्र से० वह प० प्रभावती दे० देवी अ० एकदा तं० उस वा० वासगृह में अ० आभ्यंतर स० सचित्र काम बा० बाह्य दू० सफेद घ० घीसा म० अच्छाकिया वि० विचित्र उ० उपलाभाग देदिप्यमान त० तला म० मणि र० रत्न प० नाशकिया अं० अंधकार ब० बहुसम सु० विभक्त दे० देशभाग पं० पांचवर्ण के स० सरस सु० सुरभि मु० युक्त पु० पुष्प पुं० पुंज उ० उपचार क० युक्त का० कृष्णागरु प० प्रवर कुं० कुंद उ० उरुक धू० धूप म० मघमघायमान गं० गंध उ० उद्धूत अ० रम्य सु० सुगंध प० प्रधान गं०

तस्सणं बलस्स रण्णो पभावई णामं देवी होत्था सुकुमाल वण्णओ जाव विहरइ ॥ १३ ॥ तएणं से पभावई देवी अण्णयाकयाइं तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमिय घट्ठमट्ठे विचित्त उल्लोगचिल्लियतले, मणिरयण पणासियं धकारे बहु समसुविभत्तदेसभाए, पंच वण्णसरस सुरभि मुक्कपुप्फ पुंजोवयार कलिए कालागरुपवर कुंदरुक्क तुरुक्कधूव मघमघंत, गंधुद्धुयाभिरामे, सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए

राज्य करता था. उस बल राजा को प्रभावती नामक राणी थी. वह सुकुमाल यावत् मनोहर थी ॥१३॥ एकदा समय में प्रभावती राणी अंदर से चित्रामणयुक्त व बाहिर से कोमल प्रमाणादिक से घीसने मृदु स्पर्शवाला, विचित्र प्रकार के चित्रोंयुक्त उपर का भागवाला, देदीप्यमान अधो भागवाला, चंद्रकान्तादि

गंधवाला गं० गंधगुटिका सरिखी तं० उस ता० तादृश स० शय्या में सा० शरीर प्रमाण शय्या में उ० दोनों बाजु वि० ओसी से दु० दोनों उ० उन्नत म० मध्य में गं० गंभीर गं० गंगातट की वा० बालु उ० सुकोमल शरीर ओ० अच्छा खो० सफेद दु० वस्त्र पट प० अच्छादन सु० सुरचित र० वस्त्र स० रक्त वस्त्र सं० संवृत सु० सुरम्य आ० चर्म का वस्त्र रू० रूत बू० बूर ण० नवनीत तु० तूल फा० स्पर्श सु० सुगंध व० प्रधान कु० कुसुम चु० चूर्ण म० शयन उ० उपचार क० कलित अ० अर्ध र० रात्रि का०

तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टीए उभओ विव्वोयणे दुहओ उण्णए मज्झे-णयलुगंभीरे गंगापुलिण वालुय उद्दाल सालिसए, ओयविय खोमिय दुगुल्लपट्ट पडिच्छ-यणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंबुडे सुरम्मे आईणगरूय बूरणवणीय तुलफासे सुगंध वरकुसुम चुण्णसयणोवयारकलिए अद्धरत्ताकाल समयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी

मणियों व कर्केतनकादि रत्नों से उज्वल, बहुत सम भूमि भागवाला, पांच वर्ण व सरस सुगंध युक्त पुष्प पुंज की पूजासे सहित, काला अगर व श्रेष्ठ चौड, सील्हं वगैरह धूप मे मघमघायमान. श्रेष्ठ सुगंध से सुवा-सित, और गंध द्रव्य गुटिका समान ऐसे गृह में शिर व पांव दोनों पास ओसीसावाला, दोनों तरफ ऊंचा व बीच में नीचा गंभीर, गंगा नदी के तट की उपर की बालु समान मृदु, अच्छी तरह से पकाया हुवा कपासमय वस्त्र अथवा अतसीमय वस्त्र सो युगल की अपेक्षा से एक पटोपट आच्छादनवाला, भोग अवस्था

काल में सु० सूती जा० जागती ओं० चलायमान होती ए० इसरूप उ० उदार क० कल्याणकारी सि० सूख रूप ध० धन्य मं० मंगलकारी स० श्री वाला म० महास्वप्न पा० देखकर प० जागृत हुइ हा० हार र० रजत खी० क्षीरसागर स० चंद्र कि० किरण द० उदक र० रजत म० महाशैल पं० पांडुर र० रमणिय पि० देखने योग्य थि० स्थिर ल० लष्टु प० प्रकोष्ट व० वृत्त पी० पीवर सु० सुश्लिष्ठ वि० विशिष्ठ ति० तीक्ष्ण दा० दांत वि० विवृत मुख प० परिकर्मित क० कमल को० कोमल मा० प्रमाण सो० शोभते ल०

ओहीरमाणी अयमेयारूवं उरालं कल्लाणं सिवं धण्णं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुविणं पासि-त्ताणं पडिबुद्धा तं० हाररययखीरसागर ससंककिरण दगरयय महासेल पंडुरतरोरु रमणिज्ज पिच्छणिज्जं, थिरलट्ठपउट्ठ वट्ट पीवरसुसिलिट्ठ विसिट्ठ तिक्खदाढा विडंवि-यमुहं परिकम्मिय जच्चकमल, कोमल माइय सोभंत लट्ठउट्ठं रत्तुप्पल पत्तमउय

के समय में अच्छाअच्छा दनवाला, रक्तवस्त्र से ढका हुवा, सुरम्य, व शरीर प्रमाण पर्यंक पर बुलगार, रूय, बूर, माखण, व तूल के स्पर्श समान कोमल स्पर्शवाली व सुगंधित पुष्पों के चूर्णोवाली शैय्या में अर्धरात्रि में अतिशय नहीं सोते व अतिशय नहीं जागते एक बडा प्रधान कल्याणकारी महा स्वप्न देखकर जागृत हुइ. अब स्वप्न का वर्णन करते हैं मोती का हार, चांदी, क्षीर समुद्र, चंद्रमा के किरण, पानी के कण व चांदी का वैताढ्य पर्वत समान अतिशय उज्वल, मनोहर व प्रेक्षणीय, स्थिर व मनोज्ञ कलाई तथा वर्तुला-

लष्ठ र० रक्त उ० उत्पल प० पत्र म० मृदु सु० सुकुमार ता० तालु जी० जीव्हा मू० मूषाभाजन में ग० रहा हुवा प० प्रधान क० सुवर्ण ता० तपायाहुवा आ० आवर्त करता व० वृत्त त० तडित जैसे वि० विमल सहिस न० नयन वि० विशाल पी० स्थूल उ० उरु प० प्रतिपूर्ण वि० विपुल खं० स्कन्ध मि० मृदु वि० सफेद सु० सूक्ष्म ल० लक्षण प० प्रशस्त वि० विस्तीर्ण के० केशवली सो शोभित ऊ० उछ्रित सु० सुनिर्मीत सु० सुजात अ० आस्फोटित लां० लांगूल सो० सौम्य सो० सौम्याकार ली०

सुकुमालतालुजीहं मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायंतवट्टतडियविमलसरिसनयणं विसा-लपीवरोरुपडिपुण्णविउलखंधं मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्थविच्छिण्णकेसराडोव सोभियं ऊसियसुनिम्मियसुजायअप्फोडियलांगूलं सोमं सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं नहय

कार, स्थूल, श्रेष्ठ व तीक्ष्ण दाढों युक्त मुखवाला, संस्कारित जात्य कमल समान कोमल व प्रमाणोपेत शोभ-निक व मनोज्ञ ओष्टवाला, रक्त कमल के पतन समान सुकुमार तालु व जीव्हा वाला, सूवर्ण को मूपा में रखकर तप्त क्रिया फीर वह चक्रखावे उस के जैसे वृत्त, तडित समान विमल लोचनवाला विस्तीर्ण स्थूल जंघा वाला, परिपूर्ण स्कंधवाला, कोमल, श्वेत, प्रशस्त व विस्तीर्ण केसरा वाला, ऊंचाकियाहुआ, अच्छी तरह नीचा मुख करके रहा हुवा शोभनिक, व भूमिको आस्फालता हुआ लांगूलवाला, सौम्य व सौम्या कार सिंह लीला व क्रीडा करता हुवा आकाश तल में से नीचे उतरकर अपने मुख में प्रवेश करता हुवा

क्रीला करता जं० बडाइ करता न० नभतल से उ० उतरता नि० अपना व० वदन में प० प्रवेश करता तं० उस सी० सिंहको सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जागृत हुई ॥ १४ ॥ त० तब सा० वह प० प्रभावती दे० देवी ए० इसरूप उ० उदार जा० यावत् स० श्रीरूप म० महास्वप्न सु० स्वप्न में पा० देखकर प० प० जागृत होती ह० हृष्ट जा० यावत् हि० खुशहुइ धा० धारासे हणाया क० कलंब पुष्प जैसे स० विकसित रो० रोमकूप तं० उस सु० स्वप्न को उ० ग्रहणकर स० शय्या से अ० उठकर अ० त्वरा रहित अ० चपलता रहित अ० असंभ्रम अ० विलम्ब रहित रा० राजहंस स० सरिखी ग० गति से ज० जहां ब०

लाओ उवयमाणं निययवयणं पतिकंतं तं सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा ॥१४॥ तएणं सा पभावई देवी अयमेयारूवं उरालं जाव सस्सिरीयं महासुविणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धासमाणी हट्ठ जाव हियया धाराहयकलंबपुप्फगंपिव समूससियरोमकूवा तं सुविणं उगिण्हइ उगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता अतुरियमचवलमसं भंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव बलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवा-

उस प्रभावती राणीने स्वप्न में देखा और इस तरह स्वप्न देखकर शीघ्र जागृत हुई. ॥ १४ ॥ तब वह प्रभावती देवी इस प्रकार का उदार, प्रधान, व कल्याणकारी महास्वप्न देखकर जागृत होते ही हृदय में अत्यंत हर्षित हुई मेघ की धारासे हणाया हुवा कदम्ब वृक्ष का पुष्प जैसे विकसित होता है वैसे विकसाय

व० वल रा० राजाकी स० शय्या ते० तहां उ० आकर व० बलराजा को इ० इष्ट कं० कांत पि० प्रिय म० मनोज्ञ म० मनाम उ० उदार क० कल्याण सि० सुखरूप ध० धन्य मं० मांगलिक स० अच्छे मि० मृदु म० मधुर मं० मंजुल गि० वाणी से सं० बोलती प० जागृतकर व० वल र० राजा से अ० आज्ञा पाइहुई णा० विविध म० मणि र० रत्न भ० रचे हुवे सी० सिंहासनपे णि० बैठकर आ० आश्वासलेती वि० विश्राम करती सु० सुखासनपर व० बैठी हुइ व० बलराजा को इ० इष्ट कं० कांत जा० यावत् सं० बोलती ए० ऐसा व० बोली ए० ऐसा ख० निश्चय अ० मैं दे० देवानुप्रिय अ० आज तं० उस ता० तैसी स०

गच्छइ २त्ता, बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मिउमहुरमंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी २ पडिबोहेइ २ त्ता, बलेणं रण्णो अब्भणुण्णायासमाणी णाणामणि-रयणभत्तिचित्तंसि सीहासणंसि णिसीयइ २ त्ता, आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया

मान उसका हृदय हुआ और स्वप्न को धारन कर शैय्या में से खडी हुई. शारीरिक व मानसिक चपलता रहित असंभ्रांत बनकर राजहंस समान गति से चलती हुइ बलराजा के शयनगृह में आई और बलराजा को इष्ट, मनोहर, प्रीतिकारी, मनोज्ञ, अभिराम, उदार, कल्याणकारी, उपद्रव रहित, मंगलिक, मृदु, मधुर, व मंजुलवाणी से बोलाकर जागृत किया. बल राजाने जागृत होकर अनेक प्रकार के रत्नों से

शै० शय्या में सा० अंग सहित तं० तैसे जा० यावत् णि० अपना व० वदन में अं० प्रवेश करता सी० सिंहको सु० स्वप्नमें पा० देखकर प० जागृत हुई दे० देवानुप्रिय ए० इस उ० उदार जा० यावत् म० महास्वप्न का के० क्या म० मानाजावे क० कल्याण फ० फलवृत्ति वि० विशेष भ० होगा त० तब से० वह ब० बलराजा प० प्रभावती दे० देवीकी अं० पास ए० इस अर्थ को सो० सुनकर णि० अवधार कर ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् हि० खुशहुवा धा० धाराहत णी० कदम्ब वृक्ष के सु० सुगंधित कु० कुसुम चुं० पुलकित त०

बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कताहिं जाव संलवमाणी २ एव वयासी एवं खलु अहं देवाणुप्पिया अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगण तंचेव जाव णियगवयणमतिवयंतं सीहं सुविणं पासित्ताणं पडिबुद्धा ॥ तंणं देवाणुप्पिया! एयस्स उरालस्स जाव महासुमिणस्स केमण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भाविस्सइ ? तएणं से बले राया पभावईए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा जाव हियए धाराहयणीव-

जडित व अनेक चित्रों से चित्रित ऐसे सिंहासन पर बैठने की राणी को आज्ञा दी. राजा की आज्ञानुसार राणी सिंहासन पर बैठी और मार्ग गमन से प्राप्त परिश्रम का निवारन किया. फीर अक्षुब्ध हृदय से हस्तद्वय जोडकर इष्टकारी यावत् मंजुल भाषा से वार्तालाप करती हुई ऐसा बोली कि अहो देवानुप्रिय! आज मैं पुण्यवन्त जीव को योग्य शैय्या में सोती हुई थी यावत् मेरे मुख में प्रवेश करता हुवा एक सिंह को

शरीर ऊ० रोमांचित तं० उस सु० स्वप्न को उ० ग्रहणकर ई० बुद्धिमें से प० प्रवेशकर अ० अपनी मा० स्वाभाविक म० मतिपूर्वक बु० बुद्धिविज्ञान से त० उस सु० स्वप्न का अ० अर्थ अ० ग्रहण क० कर के प० प्रभावती दे० देवी को इ० इष्ट जा० यावत् मं० मंगल मि० मृदु म० मधुर स० श्रीरूप मं० बोलते ए० ऐसा व० बोले उ० उदार तु० तुमने दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा क० कल्याणकारी तु० तुमने दे०

सुरभिकुसुमचुंचुमालइयतणुयऊसवियरोमकूवे त सुमिणं उगिण्हइ २ त्ता ईहं पविसइ २ त्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ २ त्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव मंगल्लाहिं, मिउमहुरस-स्सिरीयाहिं संलवमाणे २ एवं वयासी उरालेणं तुम्मे देवी? सुविणे दिट्ठे, कल्लाणेणं

स्वप्न में देखकर मैं जागृत हुई आप की पास आई हूं. अब अहो देवानुप्रिय! ऐसा उदार यावत् महा स्वप्न का मुझे कैसा कल्याणकारी फल प्राप्त होगा? बल राजा प्रभावती राणी से ऐसा अर्थ सुन-कर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुआ. मेघ की धारा से हणाया हुवा कदम्ब वृक्ष जैसे विकसित होता है वैसे ही इन के रोमांकूर विकसित हुवे. राणीने कहे हुवे स्वप्न को ग्रहण किया, उस का हृदय में विचार किया, और आभिनिबोधिक ज्ञान व उत्पातादि बुद्धि से उस स्वप्न के फल को निश्चित किया. इस तरह स्वप्न का अर्थ ग्रहण कर प्रभावती राणी को इष्ट, कांत, प्रिय व मनोज्ञ वचन से कहने लगे कि अहो

देवी सु० स्वप्न दि० देखा जा० यावत् सि० श्रीरूप तु० तुमने दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा आ० आरोग्य तु० तुष्ट दी० दीर्घायुः क० कल्याण मं० मंगल कारी तु० तुमने दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा अ० अर्थ लाभ भो० भोग लाभ पु० पुत्र लाभ र० राज्यलाभ तु० तुमको दे० देवानुप्रिये ण० नव मा० मास ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण अ० अर्ध अ० आठ रा० रात्रिदिवस वी० व्यतीत होते अ० हमारा कु० कुल केतु कु० कुलपर्वत कु० कुल अवतंसक कु० कुलतिलक कु० कुलकी कीर्ति करने वाला कु०कुल की

तुम्मे देवी सुविणे दिट्ठे जाव सस्सिरीएणं तुम्हे देवी सुविणे दिट्ठे, आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाण मंगलकारएणं तुम्हेदेवी ! सुविणे दिट्ठे; अत्थलाभो देवाणुप्पिए भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो देवाणुप्पिए, एवं खलु तुम्हे देवाणुप्पिए ! णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठराइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडिंसयं, कुलतिलयं, कुलकित्तिकरं, कुलनंदिकरं

देवी ! तुमने उदार स्वप्न देखा है, तुमने कल्याणकारी स्वप्न देखा है, यावत लक्ष्मीवंत स्वप्न तुमने देखा है, तुमने आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुष्य, कल्याण व मंगल का करनेवाला स्वप्न देखा है, इस से अहो देवानुप्रिये ! तुम को अर्थ लाभ, भोगलाभ, पुत्र लाभ, राज्य लाभ होगा. इस तरह अहो देवानुप्रिय ! सवानवमास पूर्ण हुए पीछे हमारे कुल में केतु [ध्वजा] समान, कुल दीपक, कुल पर्वत, कुल

समृद्धि करने वाला कु० कुलकायश करने वाला कु० कुलाधार कु० कुलपादप कु० कुल वृद्धि करने वाला सु० सुकुमार पा० हस्तपाद अ० अक्षीण प० प्रतिपूर्ण पं० पंचेन्द्रिय स०शरीर जा० यावत् स० चंद्र सो० सौम्याकार कं० कान्त पि० प्रियदर्शन वाला सु० सुरूप दे० देवकुमार स० सरिखी प्रभावाला दा० पुत्र को प० जन्मदोगे से० वह दा० पुत्र उ० मुक्त वा० बाल भावसे वि० विज्ञान प० परिणमते जो० यौवन अ० प्राप्त सू० शूरवीर वि० विक्रान्त वि० विस्तीर्ण विपुल व० बल वा० वाहन र० राज्यपति का

कुलज़सकरं, कुलाधारं, कुलपायवं, कुलविवद्धणकरं, सुकुमालपाणिपायं अहीण पडिपुण्णपंचिंदियसरीरं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं, सुरूवदेवकुमार समप्पभं दारगं पयाहिसि सेवियणं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णाय परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते, सूरे वीरे विक्कंते विच्छिण्णविपुलबलवाहणे रज्जवई राया भविस्सई तं उरालेणं तुम्हे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग तुट्ठि जाव मंगलकारएणं

अवतंसक, कुल तिलक, कुल की कीर्ति करनेवाला, कुल में समृद्धि करनेवाला, कुल में यश करनेवाला, कुल को आधारभूत, कुल में वृक्ष समान, कुल की वृद्धि करनेवाला, सुकुमार हस्तपांववाला, अक्षीण इन्द्रियोंवाला व पूर्ण पांचों इन्द्रियों युक्त शरीरवाला यावत् शशि समान शांत, सौम्याकार, कांत, प्रिय, दर्शनीय, सुरूप और देव कुमार समान कान्तिवाला ऐसा पुत्र रत्न तुम को उत्पन्न होगा. और जब

रा० राजा भ० होगा तं० इससे उ० उदार तु० तुमने दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा आ० आरोग्य तु० तुष्ट जा० यावत् मं० मंगलकारी तु० तुमने दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा त्ति० ऐसा करके प० प्रभावती दे० देवीको इ० इष्ट जा० यावत् व० वाणी से दो० दूसरी वक्त त० तीसरी वक्त अ० समजाइ ॥ १८ ॥ त० तब सा० वह प० प्रभावती दे० देवी व० बल र० राजा की अं० पास से ए० इस अर्थ को सो० सुनकर नि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट क० करतल जा० यावत् ए० ऐसा व० बोली ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय त० तैसे दे० देवानुप्रिय अ० यथातथ्य अ० असंदिग्ध इ० इच्छित प० विशेष इच्छित मे० वह ज० जैसे

तुम्हे देवी ! सुविणे दिट्ठे त्तिकट्टु, पभावतीं देवीं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं जाव दोच्चंपि तच्चंपि अणुबूहइ॥१५॥तएणं सा पभावई देवी बलस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ करयल जाव एवं वयासी एवमेयं देवाणुप्पिया ! तहमेयं देवाणुप्पिया ! अवितहमेयं देवाणुप्पिया ! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छियमेयं पडिच्छियमेयं, इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! सेजहेयं तुम्हे वदह त्तिकट्टु तंसुमिणं

बाल्यावस्था में से यौवनावस्था में आवेगा तब शूरवीर, पराक्रमवंत, और बहुत सेना वाहनादिवाले राजाओंका भी राजा होगा. इससे अहो देवी! तुमने कल्याणकारी मंगलकारी स्वप्न देखा है. यों कहकर इष्टकारी यावत् वल्गु शब्दों से दो वार तीन वार प्रभावती देवी को बोलाई ॥ १८ ॥ बल राजा की पास से ऐसा

तु० तुम व० कहते हो त्ति० ऐसा करके तं० उस सु० स्वप्न को स० सम्यक् प० अंगीकार करके बं० वल र० राजा से अ० आज्ञामीली हुई णा० विविध म० मणि र० रत्न भ० भरे हुवे भ० भद्र आसन से अ० उठी अ० त्वरा रहित जा० यावत् ग० गतिसे जे० जहां स० अपनी स० शय्या ते० तहां उ० आकर स० शय्या में णि० बैठी ए० ऐसा व० बोली मा० मत ए० यह उ० उत्तम प० प्रधान मं० मांगलीक सु० स्वप्न अ० अन्य पा० पापस्वप्न से प० हणावेगा गु० गुरुजन सं० संबद्ध प० प्रशस्थ मं० मांगलीक ध०

सम्मं पडिच्छइ २ त्ता, बलेणं रण्णा अब्भणुण्णायासमाणी णाणामणिरयणभत्ति-चित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता अतुरिय मचवल जाव गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, सयणिज्जंसि णिसीयति २ त्ता एवं वयासी मामेसे उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुमिणे अण्णेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिस्सइत्तिकट्टु, देवगुरुजण

वचन श्रवण कर प्रभावती देवी हर्षित हुई, आनंदित हुई और दोनों हाथ जोडकर ऐसा बोली कि अहो देवानुप्रिय ! जो आप कहते हो यह ऐसे ही है, यह तथ्य है, यह विशेष तथ्य है, यह शंकारहित है, यह इच्छित है, यह प्रतिच्छित है. इस तरह स्वप्न को इच्छकर बल राजा की आज्ञा से विविध प्रकार के मणि रत्नोंवाला भद्रासन से उठकर शीघ्रता व चपलता रहित अपने शयनासन की पास आई. शयनासन में सोती हुई ऐसा बोली कि अन्य खराब पाप स्वप्न से ऐसा प्रधान मंगलिक व उत्तम स्वप्न हणावे नहीं इस से

धार्मिक क० कथा से सु० स्वप्न जागरणा प० जागती वि० विचरती है ॥ १६ ॥ त० तब से० वह व० बलराजा को० कौटुम्बिक पुरुष को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय अ० आज स० सविशेष वा० बाहिर की उ० उपस्थान शाला गं० गंधोदक सि० सिक्त स० समार्जित गो० उपलिप्त सु० सुगंध प० प्रवर पं० पंचवर्ण पु० पुष्प उ० उपचार क० कलित का० कृष्णागरु प० प्रधान कुं० कुंदरुक्ष जा० यावत् गं० गंधवाला क० करो का० करावो क० करके सी० सिंहासन र० रचो त०

संबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुविण जागरियं पडिजागरमाणी२ विहरइ ॥ १६ ॥ तएणं से बलेराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अज्ज सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं गंधोदयसित्त सुइयसंमजिओवलित्तं, सुगंधपवरपंचवण्णपुप्फोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं करेह कारवेह करित्ता कारवित्ताय सीहासणं रयावेह २ त्ता तमेतं

गुरुजन संबंधी मांगलिक प्रशस्थ धार्मिक कथा से स्वप्न जागरणा जागती हुई मैं विचरूं ॥ १६ ॥ फीर आज्ञाकारी पुरुषों को बोलाकर बलराजा कहने लगे कि अहो देवानुप्रिय! आज बाहिर की उपस्थानशाला सुगंधित पानी के छिटकाव से स्वच्छकरो, गोबर से लिपो, सुगंधि पंच वर्ण के पुष्पों का ढग करो, और कृष्णागुरु कुंदरुक यावत् सुगंधित द्रव्य से मघमघायमान करो और दूसरे की पास करावो. फीर वहां २

तैसे जा० यावत् प० पीछी दो त० तब ते० वे को० कौटुम्बिक पुरुष जा० यावत् प० सुनकर खि० शी-
स० विशेष बा० बाह्य उ० उपस्थान शाला जा० यावत् प० पीछीदेवे ॥ १७ ॥ त० तब से० वह ब०
बलराजा प० प्रातःकाल स० समय में स० शय्या से अ० उठकर पा० सिंहासनसे प० उतरकर जे० जहां
अ० व्यायाम शाला ते० तहां उ० आकर अ० व्यायामशाला में अ० प्रवेश करे ज० जैसे उ० उववाई में
त० तैसे अ० व्यायाम शाला त० तैसे म० स्नानगृह जा० यावत् स० चंद्र जैसे पि० प्रियदर्शन वाला न०

जाव पच्चप्पिणह तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेसं बाहि-
रियं उवट्ठाणसालं जाव पच्चप्पिणंति ॥ १७ ॥ तएणं से बलेराया पच्चूसकाल सम-
यंसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता, पायपीढाओ पच्चोरुहइ २ त्ता, जेणेव अट्टण
साला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, अट्टणसालं अणुप्पविसइ जहा उववाइए, तहेव
अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव ससिव्वपियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिणि-

सिंहासन बनाकर मुझे मेरी आज्ञा पीछी दे दो. उसी समय कौटुम्बिक पुरुषोंने बल राजा से ऐसा वचन
सुनकर जैसी बल राजा की आज्ञा थी उस अनुसार सब कार्य किया ॥ १७ ॥ अब बल राजा प्रातःकाल
होते शैय्या से उठे और पाद पीठिका से नीचे उतरे. और जहां व्यायामशाला थी वहां आये. व्याया शाला
में आकार जैसे उववाई में कोणिक राजा का अधिकार कहा वैसे ही यहां बल राजा का अधिकार जानना. यावत्

नरपति म० स्नानगृह से प० नीकलकर जे० जहां बा० बाहिर की उ० उपस्थान शाला उ० आकर सी० सिंहासनपे पु० पूर्वाभि मुख से णि० बैठे अ० अपनी उ० ईशान कौन में अ० आठ भ० भद्रासन से० श्वेत व० वस्त्र प० बीछाये हुवे सि० सिद्धार्थ क० कृत मं० मंगल उ० उपचार र० रचाकर अ० अपनी अ० नजदीक णा० विविध म० मणि र० रत्न मं० मंडित अ० अधिक पे० देखने योग्य म० मोंघे व० प्रधान प० वस्त्र भ० भांक्तिशत चि० चित्रित ई० ईहा मृग उ० वृषभ भ० भांति चि० चित्रित अ०

क्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, सीहासण वरंसि पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ २ त्ता, अप्पणो उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए अट्ठभद्दासणाइं सेयवत्थपच्चुत्थयाइं सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ रयावेइत्ता अप्पणो अदूरसामंते णाणामणिरयण मंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घवर पट्टणुग्गयं सण्हपट्टभत्तिसयचित्तत्ताणं इहामियउसभभत्तिचित्तं, अब्भितरियं जवणियं अंछावेइ २ त्ता

शशि समान प्रियदर्शनीय नरपति मज्जनगृह से नीकलकर बाहिर उपस्थानशाला में आये. वहां सिंहासन पर पूर्वाभिमुख बैठकर अपनी ईशान कौनमें श्वेत वस्त्रसे ढकेहुवे और अर्थसिद्धि केलिये मांगलिक उपचारवाले ऐसे आठ सिंहासन बनाये. और अपनी पास अनेक मणि रत्नों से जडा हुवा बहुत देखने योग्य सूत का वस्त्र, शार्दमृग, मृग, वृषभ वगैरह अनेक चित्रों विचित्रों से चित्रित ऐसा पडदा आभ्यंतर आस्थान मंडप के

आभ्यंतर ज० पड़दा अं० आच्छादित करके णा० विविध म० मणि र० रत्न भ० समान चि० चित्रित अ० निर्मल मि० मृदु म० मसूर गो० आच्छादित से० श्वेत वस्त्र प० बीछाकर अ० अंगको सु० सुख फा० स्पर्श सु० मृदु प० प्रभावती दे० देवी केलिये भ० भद्रासन र० रचवाकर को० कौटुम्बिक पुरुष को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय अ० आठ अंग म० महानिमित्त सु० सूत्र अ० अर्थ के धा० धारक वि० विविध स० शास्त्र कु० कुशल सु० स्वप्न ल० लक्षण पा० पाठक स० बोलावो त० तब ते० वे को० कौटुम्बिक पुरुष जा० यावत् प० सुनकर ब० बलराजा की

णाणामणिरयण भत्ति चित्तं अत्थरयमिउमसूरगोच्छगं सेयवत्थपच्चुत्थं अंगसुह फासियं सुमउय पभावईए देवीए भद्दासणं रयावेइ २ त्ता; कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता, एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंग महानिमित्त सुत्तत्थधारए विविहसत्थकुसले सुविणलक्खण पाढए सद्दावेह॥ तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाणो पडिणिक्खमंति २ त्ता, सिग्घं तुरियं चवलं चंडं

मध्य भाग में खींचाया. फीर वहां पर विविध प्रकार के मणि रत्नों से चित्रित, निर्मल मसुर समान कोमल, श्वेत वस्त्र से ढका हुवा एक सिंहासन प्रभावती राणी को बैठने के लिये बनाया. फीर कौटुम्बिक पुरुष को बोलाकर ऐसा कहा अहो देवानुप्रिय ! अष्टांग महा निमित्त रूप सूत्र अर्थ को धारन

अं० पास से प० नीकलकर सि० शीघ्र तु० त्वरित च० चपलता से चं० चंडगति से वे० वेगसे ह०
हस्तिनापुर न० नगर की म० मध्य से णि० जाकर जे० जहां ते० उन सु० स्वप्न ल० लक्षण पा० पाठक
के गि० गृह ते० तहां उ० जाकर ते० उन सु० स्वप्न लक्षक पा० पाठक के स० बोलावे ॥१८॥ त० तब
ते० वे सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक ब० बलराजा के को० कौटुम्बिक पु० पुरुष से स० बोलाये हुवे ह०
हृष्ट तु० तुष्ट ण्हा० स्नान किया जा० यावत् स० शरीर सि० सिद्धार्थक ह० हरताल से क० किये

वेइयं हत्थिणापुरं णयरं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छंति २ त्ता जेणेव तेसिं सुविण लक्खण पाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता, ते सुविण लक्खण पाढए सद्दावेंति ॥ १८ ॥ तएणं ते सुविण लक्खण पाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठ तुट्ठा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा, सिद्धत्थगहरियालिया, कयमंगलमुद्धाणा सएहिं २ गेहेहिंतो णिग्गच्छंति २ त्ता, हत्थिणापुरं णयरं मज्झं

करनेवाले व विविध प्रकार के शास्त्र में कुशल ऐसे स्वप्न पाठक को बोलावो. वे कौटुम्बिक पुरुषों बल राजा की पास ऐसा सुनकर वहां से नीकलकर शीघ्रता, चपलता सहित हस्तिनापुर नगर की मध्य में होकर स्वप्न पाठक की पास गये और उन को राजसभा में आने का कहा ॥ १८ ॥ स्वप्न लक्षण पाठक बल राजा के कौटुम्बिक पुरुषों से राजसभा में आने का सुनकर बहुत हर्षित हुवे. स्नान किया यावत् अपने

मं० मंगल मु० शिर स० अपने गे० गृह से णि० नीकलकर ह० हस्तिनापुर ण० नगर की म० मध्य से जे० जहां ब० बलराजा का भ० भुवन अवतंसक के प० प्रतिद्वारपर ए० इकठे मे० मीलकर जे० जहां बा० बाहिर की उ० उपस्थान शाला जे० जहां ब० बलराजा ते० तहां उ० आकर क० करतल ब० बलराजा को ज० जय वि० विजय से व० वधाये ॥ १९ ॥ त० तब ते० वे सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक ब० बलराजा से वं० वंदन कराये पू० पूजन कराए स० सत्कार कराए स० सन्मान कराए हुवे प० प्रत्येक पु० पूर्वाभि

मज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडिंसए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भवणवर वडिंसए पडिदुवारंसि एगओ मेलंति २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण साला जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति ॥ १९ ॥ तएणं ते सुविण लक्खण पाढगा बलेणं रण्णा वंदियपूइयसक्कारिय

शरीर को वस्त्रालंकार से विभूषित किया. अर्थसिद्धि के लिये सर्षव हरिताल रूप लक्षणवाले मंगल मस्तक में धारन किये और अपने २ गृह से नीकलकर हस्तिनापुर नगर की बीच में होकर बल राजा के भवन की तरफ जाने लगे और उन के प्रतिद्वार पर एकत्रित होने लगे. फीर वहां से सब उपस्थान-शाला में बल राजा की समीप जाकर बल राजा को 'जय हो विजय हो' ऐसे शब्दों से वधाये ॥ १९ ॥ बल राजाने उन सब स्वप्न लक्षण पाठक को वंदना, पूजा, सत्कार सन्मानादि किये. और वे सब पहिले के

मुख भ० भद्रासनपे नि० बैठे त० तब से वह ब० बलराजा प० प्रभावती दे० देवीको ज० पडदा में ठा०
बैठाकर पु० पुष्प फ० फल से. प० पूर्ण ह० हाथ प० बहुत वि० विनय से ते० उन सु० स्वप्न लक्षण
पा० पाठक को ए० ऐसा ब० बोला ए० ऐसे दे०देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवी अ० आज तं० उस
ता० तादृश वा० गृह में जा० यावत् सी० सिंह सु० स्वप्न सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जागृत हुइ दे०
देवानुप्रिय ए० इस उ० उदार जा० यावत् के० क्या म० जाना क० कल्याणफल वि० वृत्ति वि० विशेष

सम्माणिया समाणा पत्तेयं २ पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति॥ तएणं से बलेराया
पभावइं देविं जवणिंतरियं ठावेइ २ त्ता, पुप्फफल पडिपुण्णहत्थे, परेणं विणएणं ते
सुविण लक्खण पाढए एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावई देवी अज्ज तंसि
तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुविणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा; तंणं देवाणुप्पिया!
एयस्स उरालस्स जाव के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? ॥ २० ॥

ढके हुवे सिंहासनपे बैठे. प्रभावती देवी को भी उस पडदे के अंदर बैठने को कहा. फीर पुष्प फल से
परिपूर्ण हस्त सहित अतिशय विनय पूर्वक उन स्वप्न लक्षण पाठक को ऐसा कहा अहो देवानुप्रिय ! आज
प्रभावती देवीने पुण्यवंत को योग्य ऐसे आवास में यावत् सिंह को अपने मुख में प्रवेश करता हुवा स्वप्न में
देखा. इस स्वप्न का हम को क्या कल्याणकारी फल होगा ? ॥ २० ॥ स्वप्न लक्षण पाठकने बल राजा

भ० होगा ॥ २० ॥ त० तब सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक ब० बलराजाकी अं० पास ए० इस अर्थ को
सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट तं० उस सु० स्वप्न को ओ० ग्रहणकरे तं० उस में ई०
बुद्धिमें प० प्रवेशकरे तं० उस सु० स्वप्न का अ० अर्थावग्रह क० करे ते० वे अ० अन्योन्य स० साथ सं०
संचालनकर त० उस सु० स्वप्न का ल० प्राप्त कीया अर्थ ग० ग्रहण किया अर्थ पु० पूछा अर्थ वि०
निश्चय किया अर्थ अ० जाना अर्थ ब० बलराजा की पु० आगे सु० स्वप्न का अर्थ उ० करते ए० ऐसा
व० बोले दे० देवानुप्रिय अ० हमने सु० स्वप्न शास्त्र बा० बीयालीस सु० स्वप्न ती० तीस म० महास्वप्न

तएणं ते सुविण लक्खण पाढगा बलस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा तं सुविणं ओगिण्हंति, तं ईहं पविसंति २ त्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेंति २ त्ता, ते अण्णमण्णेणं सद्धिं संचालेंति २ त्ता, तस्स सुविणस्स लध्दट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा, विणिच्छियट्ठा,अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणे २ एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा

की पास ऐसा सुनकर हर्षित हुए, और उन स्वप्न को अच्छी तरह समझ लिया, उस पर विचार किया, अर्थ ग्रहण किया, और परस्पर संचालन (पृच्छा) किया. फीर उस स्वप्न का अर्थ की प्राप्ति करनेवाले, पृच्छा करनेवाले, निश्चितार्थवाले, विनिश्चितार्थवाले ऐसे स्वप्न पाठक बल राजा की आगे स्वप्न का अर्थ

वा० वहोत्तर स० सर्व सु० स्वप्न दि० देखे त० तहां दे० देवानुप्रिय ति० तीर्थंकर की मा० माता च० चक्रवर्ती की मा० माता ति० तीर्थंकर च० चक्रवर्ती ग० गर्भ में व० व्यतीक्रम ते ए० इन ती० तीस म० महास्वप्नमें से च० चौदह म० महास्वप्न पा० देखकर प० जागती हैं ग० गज उ० वृषभ सी० सिंह अ० लक्ष्मी दा० माला स० चंद्र दि० सूर्य झ० ध्वजा कुं० कुंभ प० पद्म स० सरोवर सा० सागर वि० विमान भ० भवन र० रत्नोच्चय सि० अग्निशिखा वा० वासुदेवकी माता वा० वासुदेव ग० गर्भ में व०

तीसं महासुविणा बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा. तत्थणं देवाणुप्पिया ! तित्थगरमायरोवा चक्कवट्टिमायरोवा, तित्थगरंसिवा चक्कवट्टिंसिवा गब्भंवक्कममाणंसि एतेसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चउद्दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति तं० गयउसभसीह अभिसेय दामससी दिणयरं झयकुंभं, पउमसरसागर विमाण (भवण) रयणच्चुयसिहिंच ॥ १ ॥ वासुदेवमायरोवा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं

करने लगे. अहो देवानुप्रिय ! हमारे स्वप्न शास्त्र में बीयालीस सामान्य स्वप्न व तीस महास्वप्न ऐसे सब मीलकर वहोत्तर स्वप्न कहे हैं. जब तीर्थंकर व चक्रवर्ती अपनी माता के गर्भ में आतेहैं तब उन की माता उन तीस महास्वप्न में से चौदह स्वप्न देखकर जागृत होती है. उन के नाम. १ हस्ती २ वृषभ ३ सिंह ४ अभिषेक (लक्ष्मी का) ५ दो पुष्पमाला ६ चंद्र ७ सूर्य ८ ध्वजा ९ कुंभ १० पद्म सरोवर

व्यतीक्रमते ए० इन च० चौदह म० महास्वप्न में से अ० अन्यतर स० सात म० महास्वप्न पा० देखकर प० जागती हैं ब० बलदेव की माता ब० बलदेव ग० गर्भ में व० व्यतीक्रमते ए० इन च० चौदह म० महास्वप्न के अ० अन्यतर च० चार म० महास्वप्न पा० देखकर प० जागती हैं मं० मंडलीक की मा० माता मं० मंडलीक ग० गर्भ में व० व्यतीक्रमते ए० इन च० चौदह म० महास्वप्न में से अ० अन्यतर ए० एक म० महास्वप्न पा० देखकर प० जागती हैं दे० देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवीने ए० एक

अण्णयरे सत्तमहासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ॥ बलदेवमायरोवा बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडि-बुज्झंति मंडलियमायरोवा मंडलियंसि गब्भंवक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति ॥ इमंचणं देवाणुप्पिया ! पभावईए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे तं उरालेणं देवाणुप्पिया ! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव

११ समुद्र १२ देव विमान १३ रत्नों की राशि और १४ धूम्र रहित अग्नि शिखा. जब वासुदेव गर्भ में आते हैं तब वासुदेव की माता इन चौदह महास्वप्न में से किसी सात स्वप्न देखती हैं, बलदेव जब गर्भ में आते हैं तब बलदेव की माता चार स्वप्न देखती हैं और मंडलिक की माता इन में से किसी एक महा

१ जब तीर्थकर, चक्रवर्ती वैमानिक में से चवते है तब विमान देखती है और नारकी में से आते है तब भवन देखती हैं.

म० मह.स्वप्न दि० देखा तं० उस उ० उदार दे० देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा जा० यावत् आ० आरोग्य तु० तुष्टि क० कल्याणकारी मं० मंगलकारी दे० देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवीने सु० स्वप्न दि० देखा अ० अर्थ लाभ भो० भोग पु० पुत्र र० राज्य लाभ दे० देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवी ण० नवमास ब० बहुत प० पूर्ण होते जा० यावत् वी० व्यतीक्रमते तु० तुमारा कु० कुलकेतु जा० यावत् दा० पुत्र का प० जन्मदेगी से० वह दा० पुत्र उ० मुक्त बा० बालभाव जा० यावत् र० राज्यपति रा० राजा भ० होगा अ० अनगार भा० भावितात्मा तं० उस उ० उदार दे०

आरोग्गतुट्ठि दीहाउकल्लाण मंगलकारएणं देवाणुप्पिया! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिया! भोगपुत्तरज्जलाभो देवाणुप्पिया! एवं खलु देवाणुप्पिया पभावई देवी णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव वीइक्कंताणं तुब्भं कुलकेउं जाव दारगं पयाहिसि. सेवियणं दारए उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवई राया भविस्सइ; अणगारे वा भावियप्पा ॥ तं उरालेणं देवाणुप्पिया! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे

स्वप्न देखकर जागृत होती है. ऐसे ही यह एक महास्वप्न प्रभावती देवीने देखा है. अहो देवानुप्रिय! प्रभावती देवीने आरोग्य, उदार, तुष्टि व दीर्घायुष्य करनेवाला स्वप्न देखा है इस से अर्थ लाभ, भोग लाभ, पुत्र लाभ, व राज्यलाभ होगा. और सवानवमास पूर्ण हुवे पीछे तुम को कुल में केतु समान यावत्

देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा जा० यावत् आ० आरोग्य तु० तुष्टि दी० दीर्घायुष्यवाला क० कल्याणकारी जा० यावत् दि० देखा ॥२१॥ त० तब भे० वह व० बलराजा सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक की अं० पास ए० इस अर्थ को सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट क० करतल जा० यावत् क० करके ते० उन स० स्वप्न लक्षण के पा० पाठक को ए० ऐसा व० बोला ए० ऐसे ही दे० देवानुप्रिय जा० यावत् ज० जैसे तु० तुम क० कहते हो त्ति० ऐसा करके तं० उन सु० स्वप्न को

जाव आरोग्ग तुट्ठि दीहाउ कल्लाण जाव दिट्ठे ॥ २१ ॥ तएणं से बले राया सुविण लक्खण पाढगाणं अतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ करयल जाव कट्टु ते सुविण लक्खण पाढगे एवं वयासी एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव सेजहेयं तुज्झे वदहत्तिकट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ २ त्ता, सुविण लक्खणपाढए विउलेणं असणपाण खाइम

पुत्र होगा. पुत्र की बाल्यावस्था व्यतीत हुए पीछे सब राजाओं का राजा होगा अथवा भावितात्मा अनगार होगा. इस से प्रभावतीने कल्याणकारी आरोग्य तुष्ट यावत् दीर्घायुष्यवाला स्वप्न देखा है ॥२१॥ फीर बलराजा स्वप्न लक्षण पाठक की पास से ऐसा अर्थ सुनकर हृष्ट तुष्ट हुवे और हस्त जोडकर बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! तुमने जो कहा वह वैसे ही है. इस तरह स्वप्न इच्छकर स्वप्न लक्षण

स० सम्यक् प० अंगीकार करके सु० स्वप्न ल० लक्षण पा० पाठक को वि० विपुल अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम पु० पुष्प व० वस्त्र गं० गंध अ० अलंकार से स० सत्कारदेवे स० सन्मानदेवे वि० विपुल जी० आजीविका पी० प्रीतिदान द० देकर प० विसर्जन किये सी० सिंहासन से अ० उठकर जे० जहां प० प्रभावती देवी ते० तहां उ० जाकर प० प्रभावती दे० देवी को ता० उस इ० इष्ट जा० यावत् सं० बोलते ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय ति० तीर्थंकर की मा० माता च० चक्रवती की मा०

साइम पुप्फवत्थ गंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ २ त्ता पडिविसज्जेइ २ त्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता जेणेव पभावई देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव संलवमाणे २ एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिए! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा तीसं महासुविणा

पाठकों को अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्प, वस्त्र, गंध, माला व अलंकार से सत्कार सन्मानादि करके बहुत आजीविका योग्य प्रीतिकारी दान देकर विसर्जित किये और स्वयं प्रभावती देवी की पास आये. प्रभावती देवी को इष्टकारी, कांतकारी शब्दों से बोलाते हुवे ऐसा कहने लगे कि स्वप्न शास्त्र में बीयालीस सामान्य स्वप्न और तीस महास्वप्न ऐसे बहोत्तर स्वप्न कहे हैं. उन में से तीर्थंकर व चक्रवर्ती

महास्वप्न पा० देखकर प० जागती हैं तु० तुमने दे० देवानुप्रिय माता जा० यावत् अ० अन्यतर ए० महास्वप्न पा० देखकर प० जागती हैं तु० तुमने दे० देवानुप्रिय ए० एक म० महास्वप्न दि० देखा जा० यावत् र० राज्यपति रा० राजा भ० होगा अ० अनगार भा० भावितात्मा तं० उस उ० उदार तु० तुमने दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा त्ति० ऐसा करके प० प्रभावती देवी को ता० उस इ० इष्ट दो० दूसरी वक्त त० तीसरी वक्त अ० कहा ॥ २२ ॥ त० तब सा० वह प० प्रभावती दे० देवी ब० बलराजा की अं० पास ए० यह अर्थ सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तु०

बावत्तरिं सव्वसुविणा ॥ तत्थणं देवाणुप्पिए! तित्थयरमायरोवा चक्कवट्टिमायरोवा तंचेव जाव अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति ॥ इमेणं तुम्हे देवाणुप्पिए! एगे महासुविणे दिट्ठे जाव रज्जवईराया भविस्सइ, अणगारेवा भावियप्पा तं उरालेणं तुम्हे देवी! सुविणे दिट्ठेत्तिकट्टु, पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं दोच्चंपि तच्चंपि अणुबूहइ ॥ २२ ॥ तएणं सा पभावईदेवी बलस्सरण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चाणिसम्म

की माता तीर्थंकर व चक्रवर्ती गर्भ में आते समय चौदह स्वप्न देखती हैं यावत् तुमने इन में से एक स्वप्न देखा है इस से तुम को सवानव मास पूर्ण हुवे पीछे एक पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी. उन की बाल्यावस्था जब पूर्ण होगी तब वह अनेक राजाओं का राजा होगा अथवा भावितात्मा अनगार होगा. अहो देवी! इस सें तुमने अच्छा स्वप्न देखा है ऐसा कहकर प्रभावती देवी को दो तीनवार मिष्ट वचन से बोलाइ

तुष्ट क० करतल जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय जा० यावत् तं० उस सु० स्वप्न को स० सम्यक् प० ग्रहणकरे ब० बल र० राजा से अ० आज्ञापाइ हुइ णा० विविध म० मणि र० रत्न भ० खचित जा० यावत् अ० उठकर अ० त्वरा रहित अ० चपलता रहित जा० यावत् ग० गति से जे० जहां स० अपना भ० भुवन ते० तहां उ० जाकर स० अपना भ० भुवन में अ० प्रवेश कीया २३ ॥ त० तब सा० वह प० प्रभावती दे० देवी ण्हा० स्नान कीया क० कीया व० बलीकर्म जा० यावत्

हट्ठतुट्ठकरयल जाव एवं वयासी एवमेयं देवाणुप्पिया! जाव तं सुविणंसम्मं पडिच्छइ २ त्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी णाणामणिरयणभत्ति जाव अब्भुट्ठेइ, अतुरिय मचवल जाव गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, सयं भवणं अणुप्पविट्ठा ॥ २३ ॥ तएणं सा पभावई देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकार विभूसिया

॥ २२ ॥ प्रभावती देवी भी बलराजा से ऐसा सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुई और बोली कि जो आपने कहा वह वैसे ही है यावत् इस तरह स्वप्न का अर्थ इच्छकर बल राजा की आज्ञा से नाना प्रकार के मणि रत्नोंवाला सिंहासन से उपस्थित हुइ और शीघ्रता व मंदता रहित अपने भवन में गई ॥ २३ ॥ वहां प्रभावती देवीने स्नान किया, कोगले किये, तीलक मसादिक किये यावत् सर्वालंकार से विभूषित बनी

स० सर्वालंकारसे वि० विभूपित तं० उस ग० गर्भ को ण० नहीं अ० अतिशीत से अ० अतिऊष्ण स अ० अति तिक्त से अ० अतिकटुक से अ० अतिकपाय से अ० अति अंबट से अ० अति मधुर से उ० ऋतु में भोग्य सु० सुख से भो० भोजन आ० आच्छादन गं० गंध म० माला से त० उस ग०गर्भ का हि०हित मि० परिमित प० पथ्य ग० गर्भ पोषण दे० देश का० काल आ० आहार करती वि० विविक्त म० मृदु स० शयन आ० आराम से प० विरक्त सु० सुख म० मनोनुकूलता से वि० विहारभूमि में प० प्रशस्त दो० दोहला सं०संपूर्ण दोहला स० सन्मानित दो० दोहला अ० अवमानित दो०दोहला वि०विच्छिन्न दो० दोहला वि०

तं गब्भं णाइसीतेहिं, णाइउण्हेहिं, णाइतित्तेहिं, णाइकडुएहिं, णाइकसाएहिं, णाइअं-बिलेहिं, णाइमहुरेहिं उउभयमाणसुहेहिं भोअणच्छादणगंधमल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हितं मितं पत्थं गब्भपोसणं तं देसेय कालेय आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएहिं सयणासणेहिं पतिरिक्कसुहाए मणाणुकुलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला, संपुण्णदोहला, सम्माणिय

हुइ अतिशीत, ऊष्ण, तिक्त, कटुक, कपाय, अम्बट व मधुर पदार्थ नहीं सेवने लगी. इस प्रकार ऋतु के प्रमाण से भोजन, वस्त्र, गंध, माला, अलंकार कि जो गर्भ को हित करनेवाले पथ्यकर हैं ऐसे भोजन से गर्भ को पोपती हुई देश काल उचित आहार पानी करती हुई, विविध प्रकार के सुकोमल शैय्या-सन भोगवती हुई, जैसे गर्भ को सुख होवे वैसे करती हुई, मनोज्ञ विहार भूमि में विचरती हुई,

विनीत दो० दोहला व० रहित रो० रोग सो० शोक मो० मोह भ० भय प० परित्रास तं० उस ग०
गर्भ को सु० सुख से प० वृद्धि करे ॥ २४ ॥ त० तब सा० वह प० प्रभावती दे० देवी ण० नवमास ब०
बहुत प० पूर्ण अ० अर्ध अ० आठ रा० रात्रि दिवस वी० व्यतीक्रांत सु० सुकुमार पा० हस्तपांव
अ० अहीन प० प्रतिपूर्ण पं० पंचेन्द्रिय स० शरीर ल० लक्षण वं० व्यंजन गु० गुणयुक्त जा० यावत्
स० चंद्र सो० सौम्याकार कं० कांत पि० प्रियदर्शन सु० सुरूप दा० पुत्र का प० जन्म दिया ॥ २५ ॥

दोहला, अवमाणियदोहला, विच्छिण्णदोहला, विणीयदोहला, ववगयरोगसोगमोह
भयपरित्तासा तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ॥ २४ ॥ तएणं सा पभावई देवी णवण्हं
मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीण
पडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणगुणोववेयं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं
सुरूवं दारगं पयाता ॥ २५ ॥ तएणं तीसेय पभावईए देवीए अंगपडियारियाओ

उत्पन्न हुए अच्छे दोहले पूर्ण करती हुई, वांच्छित दोहले करती हुइ और रोग, शोक, भय व त्रास दूर
करती हुई सुख पूर्वक गर्भ की वृद्धि करने लगी ॥ २४ ॥ अब प्रभावती देवी को सवानव मास पूर्ण हुए
पीछे सुकोमल हस्तपांववाला, प्रतिपूर्ण पांचों इन्द्रियों व शरीरवाला, सब लक्षण व्यंजनादि गुणोंवाला
यावत् शशी समान सौम्याकारवाला, कांत, प्रिय, दर्शनीय और सुरूप ऐसा पुत्र रत्न का जन्म हुवा

त० तब प० प्रभावती दे० देवी की अं० अंग परिचारिका प० प्रभावती दे० देवी को प० प्रसूता जा० जानकर जे० जहां ब० बल रा० राजा ते० तहां उ० जाकर क० करतल ब० बल रा० राजा को ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसा व० बोली ए० ऐसे ख० खलु दे० देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवीने ण० नव मा० मास ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण जा० यावत् दा० पुत्र प० जन्मदीया दे० देवानुप्रिय को पि० प्रिय के लिये णि० निवेदन करतीहूं पि० प्रिय भे० तुमको भ० होवे ॥२८॥ त० तब से० वह ब०

पभावतीं देवीं पसूयं जाणित्ता जेणेव बलेराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, करयल बलं रायं जएणं विजएणं बद्धावेंति २ त्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! पभावई देवी णवण्हं मासाणं बहु पडिपुण्णाणं जाव दारगं पयाता तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियंणिवेदेमो पियं भे भवउ ॥ २६ ॥ तएणं से बलेराया अंगपडियारियाणं

॥ २९ ॥ उस समय में प्रभावती देवी की पास रहनेवाली दासी प्रभावती देवी को पुत्र का जन्म हुवा जानकर बल राजा की पास आइ. और दोनों हाथ जोडकर जयविजय शब्द से बल राजा को वधाकर कहने लगी। अहो देवानुप्रिय! प्रभावती देवी को सवानव मास पूर्ण होने से सर्व गुण लक्षण संपन्न पुत्र का जन्म हुवा है. आप को प्रीति उत्पन्न करने के लिये ऐसे समाचार की मैं वधाई देती हूं. आपकी प्रीति की वृद्धि होवो. और आप का कल्याण होवो ॥ २३ ॥ बल राजा अंगरक्षक दासी से ऐसा सुनकर

बलराजा अं० अंग परिचारिका की अं० पास से ए० यह अर्थ सो० सुनकर णि० अवधारकर ह०हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् धा० धारा से ह० हणाया जा० यावत् कू० कूप ते० उन अं० अंगपरिचारिका को म०मुकुट व०वर्जकर ज०जैसे मा०पहिने हुवे उ०आभरण द०देवे से० श्वेत र० रजतमय वि०विमल स० सलिल पु० पूर्ण भि०भृंगार प० ग्रहणकर म० मस्तक धो० धोकर वि० विपुल जी० आजीविका पी० प्रीति दान द० देकर स० सत्कारकर स० सन्मान कर प० विसर्जन की॥२७॥ त०तब से० वह ब०बल रा० राजा

अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयणीव जाव कूवे, तेसिं अंगपडि-यारियाणं मउडवज्जं जहा मालियउमोयं दलयइ २ त्ता, सेतं रययामयं विमलसलिल पुण्णभिंगारं पडिगिण्हइ २ त्ता मत्थएधोवइ २ त्ता, विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ २ त्ता, सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ ॥ २७ ॥ तएणं से बले-

बहुत हर्षित हुए संतुष्ट हुए यावत् रोमांचित हुवे, और अपना मुकुट सिवाय अन्य सब आभूषणों जैसे पहिने हुवे थे वैसेही दे दिये, जलसे भरीहुई झारी अपने हस्तमें लेकर उसदासी के मस्तक का प्रक्षालन किया और उसका दासीपना दूरकिया बहुत कालतक उपभोग में लेवे ऐसी आजीविका कर दी इस तरह सत्कार सन्मान देकर उसको विसर्जितकी॥२७॥फीर बलराजाने आज्ञाकारी पुरुषों को बोलाये और कहा कि अहो

को० कौटुम्बिक पु० पुरुष को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय ह० हस्तिना पुर. ण० नगर चा० वंदीवान को मुक्त क० करो, मा० मान उ० उन्मान प० प्रमाण व० वृद्धि क० करो ह० हस्तिनापुर ण० नगर को स० आभ्यंतर वा० बाह्य आ० सिंचन स० संमार्जित ओ० उपलिप्त क० करो जू० यूप स० सहस्र च० चक्र स० सहस्र पु० पूजा म० महामहिमा स० सत्कार उ० उत्सव करो म० मुझे आ० आज्ञा प० पीछीदो त० तब से० वे को० कौटुम्बिक पुरुष व० बलराजा से ए० ऐसा

राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे णयरे चारगसोहणं करेह चारगसोहणं करेइत्ता माणुम्माणप्पमाणवड्ढणं करेह माणुमाणप्पमाणवड्ढणं करेइत्ता, हत्थिणाउरं नयरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसम्मज्जिओवलित्तं जाव करेहिय कारवेहिय करेत्ताय कारवेत्ताय, जूवसहस्संवा चक्कसहस्संवा, पूयामहामहिमसक्कारंवा ऊसवेह २ त्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥ तएणं

भावार्थ

देवानुप्रिय ! तुम हस्तीनापुर नगर के कारागृह शीघ्र शुद्ध करो उन में रहेहुवे वंदी जनों को मुक्त करो. मान उन्मान प्रमाण की वृद्धि करो. हस्तिनापुर नगर की अंदर व बाहिर सुगंधि जल का सिंचन करो, कचवर दूर करो, गोबर प्रमुख से लींपों ऐसे सब कार्य करके मुझे मेरी आज्ञा पीछी दे दो. कौटुम्बिक पुरुषों ने

बु० बोलाये हुवे जा० यावत् प० पीछादेते हैं ॥२८॥ त० तब त० बलराजा जे० जहां उ० दिवान खाना ते० तहां उ० जाकर जा० यावत् प० स्नानगृह से प० नीकलकर उ० उन्मुक्त उ० उतकर उ० उत्कृष्ट अ०देना नहीं अ० प्रमाण रहित अ०भट प्रवेश करे नहीं अ०विना अपराध कु०कुदंड अ०धरणा रहित ग० गणिका व० प्रधान ना० नाटक क० कालत अ० अनेक ता० प्रेक्षाकारीसे च० सेवाया अ० बजाने वाले मु० मृदंग अ० विनाकमलाई म० पुष्पमाला प० आनंदित प० क्रीडा सहित स० नगर के मनुष्यों ज०

से कोडुंबियपुरिसा बलेणं रण्णा एवं वुत्तसमाणा जाव पच्चप्पिणंति ॥ २८ ॥ तएणं से बलेराया जेणेव उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, तंचेव जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ त्ता उम्मुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरनाडइज्ज कलियं, अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धुयमुयंगं अमि-

भी उस अनुसार सब करके उन को उन की आज्ञा पीछी दे दी ॥ २८ ॥ वहां से बल राजा दिवान खाना में गये वैसे ही यावत् मज्जन गृह से नीकलकर बाहिर से आती हुई वस्तुओं का कर, गवादिक का कर, गृहादिक का कर, व अन्य क ऋण वगैरह लेने का प्रतिषेध किया. सुभटों को अन्य के गृह में प्रवेश करने का प्रतिषेध किया, नगर में स्थान २ में गणिका के नाटकों व मादल के आवाजों शुरू होने लगे. विकसित पुष्पों की मालाओं स्थान २ पर लटकाई, नगर के सब लोक प्रमुदित हुए. अनेक प्रकार की

देशके मनुष्यों सहित द० दश दिवस ठि० जन्मोत्सव क० करे॥ २९॥ त० तव से० वह व० बलराजा द० दश दिवस ठि० जन्मोत्सव होते स० शत स० सहस्र स० लक्ष जा० योग वा० व्रत दा० दान भा० भाग द० देते द० दिलवाते रा० शत स० सहस्र स० लक्ष ल० लेते प० ग्रहण करते वि० विचरता है ॥ ३० ॥ त० तब त० उस दा० पुत्रके अ० माता पिता प० पहिले दि० दिवस में ठि० उत्सव क० करे त० तीसरे

लायमल्लदामं पमुदियपक्कीलियं सपुरजणजाणवयं दसदिवसे ठिइवडियं करेंति ॥ २९ ॥ तएणं से बलेराया दसदिसाए ठिइवडियाए सतएय साहस्सिएय सय साहस्सिएय जाएय वाएय दाएय भावेय दलमाणेय दवावेमाणेय सतिएय साहस्सिएय सयसाहस्सिएय लंभे पडिच्छमाणेय पडिच्छावेमाणेय एवं विहरइ ॥ ३० ॥ तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेंति. तइए दिवसे चंदसूर-

क्रीडा सहित जनपद देश के लोको ने दश दिन पर्यंत कुल की मर्यादा अनुसार जन्म महोत्सव किया. ॥ २९ ॥ बल राजा दश दिन तक पुत्र जन्म महोत्सव करते हुवे सैंकडो हजारो व लाखों रुपयों का खर्च कर योग पूजा वगैरह दान में देता हुवा व अन्य को देनेकी इच्छा कराता हुवा विचरता था ॥ ३० ॥ जन्म के पहिले दिन बालक का जन्म महोत्सव किया, तीसरे दिन चंद्रसूर्य का दर्शन कराया, छठे दिन रात्रि जागरणा की, अग्यारहवा दिन पूर्ण हुए

दिवस में चं० चंद्र सू० सूर्य दं० दर्शन क० करे छ० छट्ठे दि० दिवस में जा० जागरणा क० करे अ० अग्यारहवा दि० दिवस वी० व्यतीक्रान्त णि० निवृत्ति अ० अशुचि जा० जातिकर्म करन सं० संप्राप्त बा० बारहवे दि० दिवस अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम उ० तैयारकर ज० जैसे सि० शिवराजर्षि जा० यावत् ख० क्षत्रिय को आ० आमंत्रण कर त० पीछे ण्हा० स्नान कीया तं० तैसे जा०यावत् स० सत्कारकर स० सन्मान देकर मि० मित्र णा० ज्ञाति जा०यावत् ख० क्षत्रियों की पु०आगे अ०दादा प०पडदादा पि०पिताका पडदादा व०बहुत पुरुष प०परंपरा प०रूढीसे कु०कुलरूप कु०कुलसरिखा

दंसावणियं करेंति, छट्ठेदिवसे जागरियं करेंति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते णिव्वत्ते, असुइजाइकम्मकरणे संपत्ते, बारसाहदिवसे विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडा-वेंति२त्ता जहा सिवो जाव खत्तिए आमंतेइ२त्ता तओ पच्छा ण्हाया कय तंचेव जाव सक्कारेंति सम्माणेंति २ त्ता, तस्सेव मित्तणाइ जाव खत्तियाणय पुरओ अज्जय पज्जय पिउपज्जयागयं, बहुपुरिसपरंपरप्परूढं कुलाणुरूवं कुलसरिसं कुलसंताणतंतुविवद्धणकरं,

पीछे अशूचि कर्म दूर किया और बारह वे दिनमें अशन, पान, खादिम व स्वादिम बना कर जैसे सिव राजर्षि के अध्ययन में अपने ज्ञाति जनों को किया था वगैरह जो अधिकार है वह सब यहां जानना. यावत् क्षत्रियों को आमंत्रणा करके सब की साथ भोजन कर सब का सत्कार सन्मान वैसे ही सब के

कु० कुलसंतान त० तंतु वि० वृद्धि करने वाला ए० इसरूप गो० गौण गु० गुणनिष्पन्न ना० नाम क० करे ज० जैसे अ० इम इ० यह दा० बालक ब० बलराजा का पु० पुत्र प० प्रभावती दे० देवी का अ० आत्मज अ० इम इ० इस दा० पुत्रका ना० नाम म० महाबल त० तब त० उस दा० पुत्रके अ० माता पिता ना० नाम क० कहते हैं म० महाबल ॥ ३१ ॥ त० तब से० वह म० महाबल पं० पंचधात्री प० रहा हुआ खी० क्षीरधात्री ए० ऐसे ज० जैसे द० दृढप्रतिज्ञी जा० यावत् णि० निपात

अयमेयारूवं गोणं गुणनिप्पणं नामधेज्जं करेंति, जम्हाणं अम्हं इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए तं होउणं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं महब्बले तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति 'महब्बल' इति ॥ ३१ ॥ तएणं से महब्बले दारए पंचधाई परिग्गहिए तं० खीरधाई एवं जहा दढप्पइण्णे जाव

सन्मुख दादा, पडदादा, पिताके दादा, से चला आता, बहुत पुरुषों की परंपरा से आता हुआ कुल को योग्य, कुल संतान तंतु की वृद्धि करनेवाला ऐसा गुण निष्पन्न नाम दिया. यह बालक बल राजा का पुत्र व प्रभावती देवी का आत्मज है इस से इस पुत्रका नाम महाबल होवो ऐसी नामकी स्थापना की और मातपिताने भी महाबल नाम रखा ॥ ३१ ॥ अब महाबल कुमार क्षीरधाई, मंजन धाई, मंडन धाई, खिलाने-वाली धाई व अंक धाई यों पांच प्रकार की धाईयों से वृद्धि पाने लगा वगैरह सब कथन जैसे उववाइ

नि० निव्याघात सु० सुख से प० वृद्धिपाता है ॥ ३२ ॥ त० तत्र त० उस म० महाबल दा० पुत्र के
अ० माता पिता अ० अनुक्रम से ठि० उत्सव चं० चंद्र सू० सूर्य दं० दर्शन जा० जागरणा ना० नामकरण
प० भूमि में चलन प० पांवसे चलना जे० भोजनकर्म पिं० पिंडवृद्धि प० बोलना क० कर्णछेद सं० वर्षगांठ चो० मुंडित
करना उ० कलाभ्यास अ० अन्य ब० बहुत ग० गर्भादान ज० जन्म आ० आदि को० कौतुक क० करे

णिवायणिव्वाघायंति, सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ॥ ३२ ॥ तएणं तस्स महाबलस्स दारगस्स
अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइपइयंच चंदसूरदंसणावणियंवा, जागरियंवा, नामकरणं
वा, परगामणंवा, पयचंकमणंवा जेमावणंवा पिंडवद्धणंवा पजंपावणवा कण्णवेहणंवा
संवच्छरपडिलेहणंवा चोलोवणगंवा उवणयणवा अण्णाणि बहूणि गब्भादाणजम्मण
मादियाइं कोउयाइं करेंति ॥ ३३ ॥ तएणं तं महाव्वलं कुमारं अम्मापियरो साइरे-

सूत्र में दृढप्रतीज्ञी कुमार का कहा वैसे ही यहां कहना यावत् जैसे पर्वत की गुफा में चंपक वृक्ष
सुख से वृद्धि पाता है ऐसे ही महाबल कुमार वृद्धि पाने लगा ॥ ३२ ॥ अब मातापिताने जन्म दिन से
अनुक्रम से १ स्थिति कल्प २ चंद्र सूर्य दर्शन ३ जागरणा ४ नाम की स्थापना करना ५ भूमि पर खडा
रहना ६ पांव से चलने का ७ जिमाने का ८ कवल वृद्धि का ९ बोलने का १० कर्ण छेद का ११ वर्ष
गांठ का १२ चोटी रखने का १३ कला शिक्षण का वगैरह और अन्य भी ऐसे अनेक गर्भ धारन, जन्मादि

॥ ३३ ॥ त० तब तं० उन म० महाबल कुमार के अ० माता पिता सा० अधिक अ० आठवर्ष का जा० जानकर सो० शुभ ति० तिथि क० करण मु० मुहूर्त में ए० ऐसे ज० जैसे द० दृढ प्रतिज्ञी ज० यावत् अ० योग्य भो० भोग समर्थ जा० जागृत हो० हुवा त० तब तं० उस म० महाबल कु० कुमार को उ० उन्मुक्त बा० बाल भाव अ० योग्य भो० भोग समर्थ जा० जानकर अ० आठ पा० प्रासाद अ० अवतंसक का० करावे अ० गयेहुवे ऊ० ऊंचे प० हसते हुवे व० वर्णन युक्त ज० जैसे रा० रायपश्रेणी जा० यावत् प० प्रतिरूप तं० उन पा० प्रासाद अ० अवतंसक व० वहुत म० मध्य में म०

गट्ठवासगं जाणित्ता, सोभणंसि तिहिकरणमुहुत्तंसि एवं जहा दढपइण्णे जाव अलंभोगसमत्थे जागरेयावि होत्था ॥ तएणं तं महब्बलं कुमारं उम्मुक्कबालभावं अलंभोगसमत्थंवि जाणित्ता अम्मापियरो अट्ठपासायवडिंसए कारेंति, अब्भुग्गय मूसिय पहसिएइव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव पडिरूवे; तेसिणं पासायवडिं-

रत्नाभिरणादि उत्पन्न किये ॥ ३३ ॥ जब महाबल कुमार आठ वर्ष से अधिक के हुवे तब शोभनिक (अच्छी) तीथि व मुहूर्त में दृढ प्रतिज्ञी कुमारवत् विद्याभ्यास कराया यावत् भोग पर्याप्त अवस्था अंगो से जानकर महाबल के मातपिताने सब प्रासादों में मुकुट समान ऐसे आठ प्रासाद बनाये. इस का सब

एकवडा भ० भुवन का० करवाया अ० अनेक खं० स्तंभ स० शत स० सहित व० वर्णन युक्त ज० जैसे रा० राय प्रसेणीय में पे० प्रेक्षागृह मं० मंडप में जा० यावत् प० प्रतिरूप ॥ ३४ ॥ त० तब म० महाबल कुमार के अ० माता पिता अ० अन्यदा कदापि सो० शुभ ति० तिथि क० करण दि० दिवस ण० नक्षत्र मु० मुहूर्त में ण्हा० स्नान किया क० बलीकर्म कीया क० कौगले किये मं० तीलमसादि स० सर्व अ० अलंकार वि० विभूषित प० मर्दन ण्हा० स्नान गी० गीत वा० वादित्र प० मण्डन अ० आठ अंग में ति० तिलक कं० कंकण अ० सौभाग्यवंती व० वधू उ० क्रिया मं० मंगल सु० अच्छे वचन से व० प्रधान

सयाणं बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महेगं भवणं कारेंति, अणेगखंभसय सण्णिविट्ठं वण्णओ जहारायप्पसेणइज्जे, पेच्छाघरमंडवंसि जाव पडिरूवे ॥ ३४ ॥ तएणं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो अण्णयाकयाइं सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हाय कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पमक्खणगं ण्हाणं गीयवाइयंपसोहणट्ठमं तिलगकंकणअविहयवहुउवणीयं मंगलंसुजंपि

वर्णन रायप्रसेणी सूत्र से जानना. उक्त आठ प्रासादावतंसक की मध्य में अनेक स्तंभवाला एक बडा भवन बनवाया. उस का भी वर्णन रायप्रसेणी सूत्र में से जानना ॥ ३४ ॥ अब एकदा किसी शुभ तीथि व मुहूर्त में महाबल कुमार के मातापिताने उन को स्नान कराया, बलिकर्म किया, तीलमसादिक किये सब

को० कौतुक मं० मंगल उ०उपचार सं० शांतिकर्म स० सहस्र स०सरिखी स०सरिखी त्वचावाली स० सरिखी वयवाली स० सरिखा ला० लावण्य रू० रूप जो० यौवन गु० गुणयुक्त वि०विनीत क०किया को० कोगले पा० तीलमसादि स०सरिखे रा० राजकुल से आ० लाइ हुइ अ० आठ रा० राजा में व० श्रेष्ठ क० कन्या का ए० एकादिवस में पा०हस्त गि० ग्रहण कराया ॥३८॥ त० तव त० उस म० महाबल कु० कुमार के अ० माता पिता ए० इसरूप पी० प्रीतिदान द० देवे अ० आठ हि० हिरण्य कोडी अ० आठ

एहिय वरकोउयमंगलोवयारकयसंतिकम्मं सरिसियाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सारिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाणं विणीयाणं कयकोउयमंगलपायच्छित्ताणं सरिसएहि रायकुलेहिं अणिल्लियाणं अट्ठण्हं रायवरकण्णाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु ॥ ३५ ॥ तएणं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं पीति-

अलंकारों से शरीर विभूषित किया, मर्दन, उगटणा, गीत, वादिंत्र, मंडन विशेप, तीलक, और सौभाग्यवती स्त्री से कुसुम्बी रंग के दोरे का बंधना इतने कार्य किये. फीर प्रधान मंगलिक वचन बोले प्रधान कौतुक मंगलरूप उपचारकिया. और शांतिकर्म वगैरह करके महाबल कुमारके एक सरीखी रूपवाली वयवाली वर्णवाली व लावण्यशाली ऐसी आठ राजकुमारियों को भी मांगलिक क्रियाओं कराके एक ही दिन उन सब का महाबल कुमार से पाणि ग्रहण कराया ॥ ३५ ॥ फीर महाबल कुमार के मातपिताने आठ क्रोड चांदी

सु० सुवर्ण कोडी अ० आठ म० मुकुट म० मुकुट में प्रधान अ० आठ कुंडल जोड कुं० कुंडल जोड में प्रधान अ० आठ हार हा० हार में प्रधान अ० आठ अर्धहार अ० अर्धहार में प्रधान अ० आठ ए० एकावली ए० एकावली में प० प्रधान, ए० ऐसे मु० मुक्तावली क० कनकावली र० रत्नावली अ० आठ क० कडेकी जोड तु० बाजु बंध की जोड खो० कपास के वस्त्र जु० युगल प० प्रधान व० टसरिये वस्त्र प० पटवस्त्र

दाणं दलयति, तंजहा अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ कुंडलजोए कुंडलजोयप्पवरे, अट्ठहारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे. अट्ठएगावलीओ, एगावालिप्पवराओ, एवं मुत्तावलीओ, एवं कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ अट्ठकडगजोए कडगजोयप्पवरे, एवं तुडियजोए, अट्ठ खोमजुवलाइं, खोमजुवलप्पवराइं, एवं वडगजुवलाइं, एवं पट्टजुवलाइं, एवं दुगुल्लजुवलाइं, अट्ठ

के सिक्के आठ क्रोड सौनये, आठ श्रेष्ठ मुकुट, आठ कुंडल के जोडे, आठ श्रेष्ठ हार, आठ अर्ध हार, आठ एकावली हार, आठ मुक्तावली, आठ कनकावली, आठ रत्नावली, आठ कडों की जोडी, आठ बाजुबंध, आठश्रेष्ठ क्षोमयुगल [कपास के] वस्त्र, आठ श्रेष्ठ टसरीये वस्त्र, आठ पटसूत्रमय युगल, आठ श्रेष्ठ श्रीदेवी प्रतिमा, आठ ह्री देवी प्रतिमा, आठ धृतिदेवी प्रतिमा, आठ कीर्ति देवी प्रतिमा, आठ बुद्धि देवी प्रतिमा, आठ लक्ष्मी देवी प्रतिमा, आठ नंदासन, आठ भद्रासन, आठ रत्नों के बनाये हुवे ताल वृक्ष, आठ ध्वजा,

भ० भद्रासन त०
दु० दुकुलवस्त्र सि० श्री हि० ह्री धि० धृति कि० कीर्ति बु० बुद्धि ल० लक्ष्मी नं० नंदादि भ० भद्रासन त०
तल त० तालमें श्रेष्ठ स० सर्व र० रत्नामय नि० निजक व० प्रधान भ० भवन केतु अ० आठ ध्वजा अ० आठ व० व्रज
ना० नाटक अ० अश्व स० सर्व र० रत्नमय सि० श्रीगृह प० जैसे अ० आठ ह० हस्ती अ० आठ यान अ० आठयुग
ए० ऐसे सि० शिविका सं० संदामिनी गि० अंबाडी थि० थिल्ली वि० विकटयान र० रथ प० क्रीडा केलिये

सिरीओ, अट्ठहिरीओ, एवंधिईओ, कित्तीओ, बुद्धीओ. लच्छीओ, अट्ठनंदाइं, अट्ठ भद्दाइं, अट्ठतले तलप्पवरे, सव्वरयणामए, णियगवर भवणकेउं, अट्ठज्झए ज्झयप्पवरे, अट्ठवए, वयप्पवरे, (दसगोसाहस्सिएणं वएणं) अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवरे, बत्तीसं वद्धेणं नाडएणं, अट्ठआसे आसप्पवरे, सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठहत्थी हत्थिप्पवरे, सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठजाणाइं जाणप्पवराइं,

आठ गोकुल, आठ बत्तीस प्रकार के नाटक करनेवाले, सर्व रत्नमय श्रीगृह को शोभानिक ऐसे आठ श्रेष्ठ अश्व आठ श्रेष्ठ हस्ती, आठ यान, आठ श्रेष्ठ युग, आठ शिविका, आठ संदामनी, आठ हस्ती की अंबाडी, आठ ऊंट की थिल्ली, आठ विकटयान, आठ क्रीडा करने के रथ, आठ संग्राम के रथ, आठ घोडे, आठ हाथी, आठ श्रेष्ठ ग्राम (दश हजार कुल का ग्राम) आठ दास, आठ दासियों, आठ किंकर, आठ कंचुकी आठ वर्षधार भंडारी, आठ हिसाबी, आठ वणिक, आठ पोलिया, आठ सोने की सांकलवाले दीपक,

र०रथ सं०संग्राम केलिये अ०अश्व ह०हस्ती गा०ग्राम दश कुं०कलसहस्त्र से गा०ग्राम दा०दास किं०किंकर कं०कंचुकिनी व० वर्षधर म० महत्तर सो० सोनेकी सांकल रु० चांदी की सु०सोना चांदी की सो० सोना के ओ० ऊंचे दीवे ए० ऐसे ति० तीन सो० सोना के पं० पिंजर वाले दीवे सो० सोना के था० थाल रु० रुपा के था० थाल सो० सोना रुपाके था० थाल प० पगार थो० आयना म० मल्लक भाजन

अट्ठजुग्गाइं. जुग्गप्पवराइं, एवं सिवियाओ संदमाणीओ, एवं गिल्लीओ, थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं, अट्ठरहे पारिजाणीए; अट्ठरहे संगामिए अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, अट्ठगामे गामप्पवरे (दस कुलसाहस्सि-एणं गामेणं) अट्ठदासे दासप्पवरे, एवं दासीओ, एवं किंकरे, एवं कंचुइज्जे, एवं

आठ रूपे की सांकलवाले दीपक, आठ सोने रूपे की मीली सांकलवाले दीपक, आठ २ सोने, रूपे व सोने रूपे के ऊंचे दण्डवाले दीपक, सोने के, रूपे के, व सोने रूपे के आठ २ पिंजरवाले दीपक. आठ सुवर्ण के थाल, आठ रूपे के थाल, आठ सुवर्ण रूपे के थाल, आठ सुवर्ण पात्र, आठ रूपे के पात्र, आठ सुवर्ण रूपे के पात्र आठसुवर्ण, की आरसी के आकारवाले पात्र, आठ रूपेकी आरसी के आकारवाले पात्र, और आठ सुवर्ण रूपे की आरसी के आकारवाले पात्र, आठ सोने के मल्लक [भाजन] आठ रूपे के मल्लक, आठ सोने,

त० रकावी क० चमचे अ० भाजन विशेष अ० तवा विशेष पा० पादपीठिका भि० आसन विशेष क० लोटा प० पल्यंक प० प्रतिशय्या हं० हंसासन कों० क्रौंचासन ग० गरुडासन उ० उन्नतासन प० अवनतासन दी० दीर्घासन भ० भद्रासन प० पक्षासन म० मकरासन प० पद्मासन दि० दिशा स्वस्तिकासन ते० तेलके दावडे ज० जैसे रा० रायप्रश्नेनी म० सर्षव के दावडे खु० खोजे ज० जैसे उ० उववाइ में

वरिसहरे, एवं महत्तरए. अट्ठसोवण्णिए ओलंबणदीवे, अट्ठरुप्पमए, ओवलंबणदीवे, अट्ठसुवण्णरुप्पमए, ओवलंबणदीवे, अट्ठसोवण्णए ओकंचणदीवे, एवं चेव तिण्णिवि. अट्ठसोवण्णिए पंजरदीवे एवंचेव तिण्णिवि, अट्ठसोवण्णए थाले, अट्ठरुप्पमए थाले, अट्ठ सोवण्णरुप्पमए थाले, अट्ठसोवण्णियाओ पत्तीओ ३, अट्ठसोवण्णियाइं घोसयाइं, अट्ठ सोवण्णियाइं मल्लगाइं ३, अट्ठसोवण्णियाओ तलियाओ ३, अट्ठ

रूपे के मल्लका, सोने की, रूपे की व सोने रूपकी आठ २ रकेबी, सोने के, रूपे के व सोने रूपेके आठ २ चमचे, सोने के, रूपे के व सोने रूपे के आठ तवे, सोने, रूपे व सोने रूपे की आठ २ कढाइ, सोने, रूपे व सोने रूपे की आठ २ पादपीठिका, सोने, रूपे व सोने रूपे के आठ आसन, सोने, रूपे व सोने रूपे के आठ कलश, सोने के, रूपे के व सोने रूपे के आठ पलंग, सोने, रूपे व सोने रूपे के आठ छोटे पलंग, आठ हंस के आकारवाले आसन, आठ क्रौंच के आकारवाले आसन, आठ गरुडासन, आठ उन्नत आसन,

जा० यावत पा० पारिसी छ० छत्र छ० छत्रधारक चे० दासी चा० चामर चा० चामरधरनेवाली चे० दासा ता० वीझणा ता० वीझणा धरने वाली चे० दासी क० तांबूल भरने वाली अ० आठ खी० क्षीरधात्री जा० यावत् अ० आठ अं० अंकधात्रा म० मर्दन करने वाली उ० बहुत मर्दन करने वाली ण्हा० स्नान

सोवण्णियाओ कवाचियाओ ३, अट्ठसोवण्णमए अपवडए, अट्ठसोवण्णियाओ अव-वक्काओ ३, अट्ठसोवण्णियाए पायपीढए ३, अट्ठसोवण्णियाओ भिसियाओ ३, अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पल्लंके ३, अट्ठ सोवण्णियाओ पडि-सेज्जाओ ३, अट्ठ हंसासणाइं, कौंचासणाइं, एवं गरुडासणाइं, उण्णतासणाइं, पणया-सणाइं, दीहासणाइं, भद्दासणाइं, अट्ठपक्खासणाइं, मकरासणाइं, अट्ठपउमासणाइं, अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइं, अट्ठ तेलसमुग्ग जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठ सरिसवसमुग्गे, अट्ठ

आठ अवनत आसन, आठ दीर्घासन, आठ भद्रासन, आठ पक्षासन, आठ मकरासन, आठ पद्मासन, आठ दिशा स्वास्तिकासन, आठ सुगंधि तेल के भाजन वगैरह रायप्रसेणीमें कहे मुजब (पात्रिवाहक, एलिपके पात्र, हरताल के पात्र, हिंगूल के पात्र, मनःशिला के पात्र, अंजन के पात्र) यावत् सरसव के पात्र, आठ खोजे, आठ २ अठारह देश की दासियों, आठ छत्र, आठ छत्र धारन करनेवाली दासियों, आठ पंखे, आठ पंखे धारन करनेवाली दासियों, आठ पानदान, पानदान धारक आठ दासियों, पांच प्रकार

करानेवाली प० मंडन करानेवाली चं० चंदन पीसनेवाली चु० चूर्णपीसनेवाली की० क्रीडा करानेवाली द० हास्य करानेवाली उ० आसनपे बैठानेवाली ना० नृत्य करनेवाली को० कौटुम्बिक की स्त्रीयों म० रसोई बनानेवाली भं० भंडार रखनेवाली अ० बालक रखनेवाली पु० पुष्पधारक पा० पान

खुज्जाओ जहा उववाइए,जाव अट्ठपारिसीओ,अट्ठछत्ते,अट्ठछत्तधारीओ चेडीओ,अट्ठचामराओ,अट्ठचामरधारीओ चेडीओ, अट्ठतालियंट अट्ठतालियंटधारीओ चेडीओ अट्ठकरोडियधारीओ चेडीओ, अट्ठखीरधाइओ, जाव अट्ठ अंकधाईओ, अट्ठ अंगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ, अट्ठण्हावियाओ, अट्ठ पसाहियाओ, अट्ठ चंदणपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ, अट्ठ कीडाकारीओ,अट्ठ दवकारीओ, अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ, अट्ठ कोडुंबिणीओ, अट्ठ महाणिसिणीओ, अट्ठ भंडागारिणीओ, अट्ठ

की आठ २ धायमाताओं, आठ अंग मर्दन करनेवाली दासियों, आठ उन्मर्दिका दासियों, आठ स्नान करानेवाली दासियों, आठ शृंगार करानेवाली दासियों, आठ गंध चूर्ण पीसनेवाली दासियों, आठ क्रीडा करानेवाली दासियों, हसानेवाली आठ दासियों, आसन नजदिक रहनेवाली आठ दासियों, नृत्य करनेवाली आठ दासियों, आठ आज्ञानुसार करनेवाली दासियों, आठ रसोइ बनानेवाली, आठ भंडार रक्षक, बालक को रखनेवाली आठ दासियों, पुष्पों धारन करानेवाली आठ दासियों, पानी का रक्षण करनेवाली

भरने वाल ब० बलीकर्म करने वाली से० शय्या करने वाली अ० आभ्यंतर प० परिचारिका वा० बाहिर की प० परिचारिका मा० माला करने वाली प० प्रेषण करने वाली अ० अन्य सु० बहुत हि० हिरण्य सु० सुवर्ण कं० कांस्य दू० वस्त्र वि० विपुल ध० धन कनक जा० यावत् सं० प्रधान सा० धन अ० देवे जा० यावत् आ० सातवा कु० कुलवंश प० प्रकाम दा० देने को प० भोगने को प० विभाग करने को

अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फाधारिणीओ अट्ठ पाणधारिणीओ, अठ बलिकारियाओ, अट्ठ सेज्जाकारिओ, अट्ठ अब्भितरियाओ, पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अण्णेच सुबहु हिरण्णंवा सुवण्णंवा, कंसंवा, दूसंवा, विउलधणकणग जाव संत सावदेज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं परिभोत्तुं परिभाएउं ॥ २६ ॥ तएणं से महब्बले

अर्थ

आठ दासियों, बलपराक्रम करनेवाली आठ दासियों, शैय्या बिछानेवाली आठ दासियों, गुप्त कार्य करने-वाली आठ दासियों, बाह्य कार्य करनेवाली आठ दासियों, माला बनानेवाली आठ दासियों, आठ प्रेषण करनेवाली वगैरह और इस सिवाय अन्य बहुत हिरण्य सुवर्ण, कांस्य, वस्त्र, और विपुल धन. कनक, यावत् प्रधान द्रव्य वगैरह का प्रीति दान दीया कि जो सात वंश तक अन्य को देते व स्वयं भोगते खूटे नहीं॥२६॥

॥ ३६ ॥ त० तब से० वह म० महाबल कु० कुमारने ए० एक २ भ० भार्या को ए० एक २ हि० हिरण्य क्रोड सु० सुवर्ण क्रोड द० दिया ए० एक २ म० मुकुट प० श्रेष्ठ द० दिया ए० ऐसे ही तं० तैसे ही जा० यावत् ए० एक २ पे० प्रेषण करने वाली द० दी अ० अन्य सु० बहुत हि० हिरण्य सु० सुवर्ण जा० यावत् प० विभाग करने को त० तब से० वह म० महाबल कुमार उ० उपर पा० प्रासाद में रहा हुवा ज० जैसे ज० जमाली वि० विचरता है ॥ ३७ ॥ ते० उस का० काल ते० उस म० समय में वि० विमल अ० अरिहंत के प० प्रशिष्य ध० धर्मघोष अ० अनगार जा० जाति संपन्न व० वर्णन युक्त ज० जैसे के० केशिस्वामी

कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ ॥ एवं तं चेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयइ ॥ अण्णंच सुबहुं हिरण्णंवा सुवण्णंवा जाव परिभाएउं ॥ तएणं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली विहरइ ॥ ३७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे णामं अणगारे जाइसंपण्णे वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव

उन में से महाबल कुमारने उन आठों भार्याओं को एक २ हिरण्य क्रोड, एक २ सुवर्ण क्रोड, एक २ श्रेष्ठ मुकुट यावत् एक २ प्रेषणकारी दीया. और सात पीढी तक अन्य को देते व भोगते भी खूटे नहीं इतना हिरण्य वगैरह दिया. इस तरह महाबल कुमार जमाली जैसे प्रासाद पर भोग भोगता हुवा विचरता था ॥ ३७ ॥ उस काल उस समय में जाति संपन्न कुल संपन्न वगैरह केशीस्वामी जैसे गुणोंवाले धर्मघोष नामक अनगार

जा० यावत् पं० पांच अ० अनगार स० सो की स० साथ सं० परवरेहुवे पु० पूर्वानुपूर्वी च० चलते हुए गा० ग्रामानुग्राम दु० विचरते हुवे जे० जहां ह० हस्तिनापुर न० नगर जे० जहां स० सहस्रवन उ० उद्यान ते० वहां उ० आकर अ० यथा प्रतिरूप उ० अवग्रह उ० याचकर सं० संयम त० तप से अ० आत्माको भा० विचारते जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ ३८ ॥ त० तब ह० हस्तिनापुर न० नगर में सिं० शृंगाटक ति० त्रिक जा० यावत् प० परिषदा प० पर्युपासना करने लगी. त० तब त० उस म० महाबल कु०

पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहसंववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहा-पडिरूवं उग्गहं उगिण्हइत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे जाव विहरइ ॥३८॥ तएणं हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडगतिय जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ तएणं तस्स महब्ब-लस्स कुमारस्स तं महया जणसद्दंवा जणबूहंवा एवं जहेव जमाली तहेव चित्ता

५०० साधुओं के परिवार से ग्रामानुग्राम विचरते हुवे हस्तीनापुर नगर के सहस्रवन उद्यान में यथोक्त अव-ग्रह याचकर संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ ३८ ॥ उस समय में शृंगाटकाकार मार्गमें यावत् महान रस्ते पर ऐसा वार्तालाप होने लगा यावत् परिषदा पर्युपासना करने लगी. उस समय में महाबल कुमारने ऐसा शब्द सुनकर जमाली की तरह कंचुकी पुरुषों को बोलाये और कंचुकी पुरुषों

कुमार का तं० उस म० बहुत ज० मनुष्य शब्द ज० मनुष्य का समूह ए० ऐसे ज० जैसे ज० जमाली त० तैसे वि० जानकर त० तैसे कं० कंचुकी पु० पुरुषों को स० बोलाकर कं० कंचुकी पु० पुरुषोंने त० वैसे ही अ० कहा ण० विशेष ध० धर्मघोष अ० अनगार का आ० आगमन ग० जाना वि० निश्चय किया क० करतल जा० यावत् णि० नीकले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय वि० विमल अ० अरिहंत प० प्रशिष्य ध० धर्मघोष अ० अनगार से० शेष तं० तैसे जा० यावत् सो० वह भी त० तैसे र० श्रेष्ठ रथ से

तहेव कंचुइज्जपुरिसे सद्दावेइ, कंचुइज्ज पुरिसो तहेव अक्खाइ, णवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल जाव णिग्गच्छइ ॥ एवं खलु देवाणुप्पिया ! विमलस्स अरहओ पउप्पए धम्मघोसे णामं अणगारे सेसं तंचेव जाव सोवि तहेव रहवरेण णिग्गच्छइ, धम्मकहा जहा केसिसामिस्स सोवि तहेव अम्मापियरं आपुच्छइ, णवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ

अन्य से पूछकर हाथ जोडकर कहने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! श्री विमलनाथ अरिहंत के प्रशिष्य श्री धर्मघोष नामक अनगार पांच सो साधु के परिवार सहित तप संयम से आत्मा को भावते हुवे विचरते हैं. इस तरह वृत्तान्त सुनकर जमाली जैसे रथारूढ होकर महाबल कुमार नीकले. धर्मकथा श्रवण की, और मातपिता की आज्ञा लेकर धर्मघोष अनगारकी पास दीक्षा अंगीकार की. इसमें विशेषता इतनी कि

णि० नीकले ध० धर्म कथा ज० जैसे के० केशी स्वामी की सो० वह भी त० तैसे अ० माता पिताको आ० पुछकर ण० विशेष ध० धर्मघोष अ० अनगार की अं० पास मुं० मुंड भ० होकर अ० गृहवास से अ० साधुपना प० अंगीकार करने का त० तैसे ही वु० उत्तर प० प्रत्युत्तर ण० विशेष इ० ये ते० तेरी जा० पुत्र वि० बहुत रा० राजकुल बा० बालाओं क० कला से० शेष तं० तैसे जा० यावत् ता० उन अ० अकाम म० महाबल कु० कुमार को ए० ऐसे व० बोले तं० इस से इ० इच्छते हैं ते० तेरी जा० पुत्र ए० एक दि० दिवस की रा० राज्यलक्ष्मी पा० देखनेको त० तब से० वह म० महाबल कुमार अ० माता पिता के व० वचन को अ० नहीं उल्लंघते तु० मौन सं० रहा ॥ ३९ ॥ त० तब से० उन ब० बलराजाने

अणगारियं पव्वइत्तए, तहेव वुत्त पडिवुत्तयाओ णवरं इमाओय ते जाया! विपुल रायकुल बालियाओ कला सेसं तंचेव जाव ताहे, अकामाइं चेव महब्बलं कुमारं एवं वयासी तं इच्छामो ते जाया ! एग दिवसमवि रज्जसिरिं पासेमि ॥ तएणं से महब्बले कुमारे अम्मापिउवयण मणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ ३९ ॥ तएणं से बलेराया कोडुं

जमाली के कथन में विपुल कुल बालिका कही है और यहां विपुल राज्यकुलोत्पन्न बालिका कहना. और अहो पुत्र ! तुम एक दिन राज्यसुख भोगवो ऐसा हम देखना चाहते हैं. महाबल कुमार मातपिता की ऐसी आज्ञा नहीं उल्लंघने से मौन रहे ॥ ३९ ॥ फीर बल राजाने कौटुम्बिक पुरुषों को बोलाये और शिव-

को० कौटुम्बिक पु० पुरुषों को स० बोलाये ए० ऐसे ज० जैसे सि० शिवभद्र त० तैसे रा० राज्याभिषेक भा० कहना जा० यावत् अ० सिंचनकर क० करतल म० महावल कु० कुमार को ज० जय वि० विजय से व० वधाया ए० ऐसे व० बोले म० कहे जा० पुत्र कि० क्या दे० देवे कि० क्या प० विशेष देवे से० शेष ज० जैसे ज० जमाली त० तैसे जा० यावत् ॥ ४० ॥ त० तत्र से० वह म० महावल अ० अनगार ध० धर्मघोष अ० अनगार की अं० पास सा० सामायिकादि च० चउदह पु० पूर्व अ०

बिय पुरिसे सद्दावेइ, एवं जहा सिवभद्दस्स तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो जाव अभिसिंचइ २ त्ता करयल परिमहब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता, एवं वयासी भण जाया ! किं देमो किं पयच्छामो सेसं जहा जमालिस्स तहेव जाव ॥४०॥ तएणं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतिए सामाइयमाइ-

भद्रकुमार के अधिकार समान राज्याभिषेक की तैयारी कराइ यावत् राज्याभिषेक करके महावल कुमार को जय विजय शब्द से वधाये और बोले कि अहो पुत्र! तुम कहो कि हम क्या देवे ? शेष सब जमालीवत् जानना ॥ ४० ॥ फीर महावल कुमारने धर्मघोष अनगार की पास से सामायिकादि चौदह पूर्व का अध्ययन किया, चौथभक्तादि विविध प्रकार के तप किये और बारह वर्ष साधुपना पालकर एक मास की संले-

पढकर ब० बहुत च० चतुर्थ जा० यावत् वि०,विचित्र त० तपकर्म से अ० स्वतः को भा० विचारता ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण दु० बारह वा० वर्ष सा० साधु की प० पर्याय पा० पालकर मा० मास की सं० संलेखना से स० साठ भक्त अ० अनशन आ०आलोचना प० प्रतिक्रमण सहित का० काल के अवसर में का० काल कि० करके उ० ऊर्ध्व चं० चंद्र सू० सूर्य ज० जैसे अ० अम्बड जा० यावत् बं० ब्रह्मलोक क० देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुए त० वहां अ० कितनेक दे० देवों की द० दश सा० सागरोपम

याइं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ २ त्ता बहूहिं चउत्थ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ २ त्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते काल मासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरिय जहा अम्मडो जाव बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णे; तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं मह-

खना से आत्मा को झोंसकर साठ भक्त अनशन का छेदन कर आलोचना प्रतिक्रमण कर काल के अवसर में काल कर जैसे अम्बड सन्यासी ऊंचे चंद्र सूर्य में उत्पन्न हुवा वैसे ही पांचवे ब्रह्मदेवलोक में ÷ उत्पन्न

÷ पूर्वधर जघन्य छठे देवलोक में उत्पन्न होते है और यहां पांचवे देवलोक मे उत्पन्न होने का कहा है. इस से यहां पर मरण समय में पूर्व का विस्मरण होने का संभव है.

की ठि० स्थिति प० प्ररूपी से० अथ तु० तुम सु० सुदर्शन बं० ब्रह्मलोक क० देवलोक में द० दश सा० सागरोपम के दि० दीव्य भो० भोगोपभोग भुं० भोगने हुवे वि० विचरने को त० तत्पश्चात् दे० देवलोक में से आ० आयुष्यक्षय अ० अनंतर च० चवकर इ० इस वा० वाणिज्यग्राम न० नगर में से० श्रेष्ठिकुल में पु० पुत्रपने प० उत्पन्न हुवा त० तब तु० तुम सु० सुदर्शन उ० मुक्त वा० बालभाव से वि० विज्ञान प० परिणत से जो० यौवन को अ० प्राप्त नहीं हुवे त० तथारूप थे० स्थविर को अं० पास से के०

ब्बलस्सवि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ सेणं तुम्मं सुदंसणा ! बंभलोए कप्पे दससागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ॥ तओचेव देवलोगाओ आउक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियगामे णयरे सेट्ठिं कुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए ॥ तएणं तुम्मं सुदंसणा ! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णाय परिणयमेत्तेणं जोव्वणग मणुप्पत्तेणं, तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपण्णत्ते धम्मे

हुवा. वहां पर उन की दश सागरोपम की स्थिति कही. अहो सुदर्शन ! तुम पांचवे ब्रह्मदेवलोक में दश सागरोपम की स्थिति से दीव्य भोग भोगते हुवे विचरते थे. फीर आयुष्य, स्थिति व भव का क्षय होने से वहां से चवकर यहां पर वाणिज्यग्राम नगर में श्रेष्ठिकुल में पुत्रपने उत्पन्न हुए हो. अहो सुदर्शन ! तुमारी बाल्यावस्था मुक्त हुई है, तुम ७२ कला में प्रवीण हुए हो और यौवन अवस्था प्राप्त होते

केवली प० प्ररूपित ध० धर्म नि० सुना से० वही ध० धर्म इ० इच्छा प० विशेष इच्छा अ० रुचि की सु० अच्छा तु० तुम सु० सुदर्शन इ० अभी क० करते हो ते० इसलिये सु० सुदर्शन ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० है प० पल्योपम सा० सागरोपम का ख० क्षय अ० अपचय ॥ ४१ ॥ त० तब त० उस सु० सुदर्शन से० श्रेष्ठि स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० पास ए० यह अ० अर्थ सो० सुनकर णि० अवधारकर सु० शुभ अ० अध्यवसाय से सु० शुभ प० परिणाम से ले० लेश्या भी सु० शुद्ध करते

णिसंते, सेवियसे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए तं सुट्ठुणं तुम्मं सुदंसणा! इदाणिं विकरेंति, से तेणट्ठेणं सुदंसणा! एवं वुच्चइ अत्थिणं एतेसिं पलिओवम सागरोवमाइं खएइत्ता अवचएइवा ॥ ४१ ॥ तएणं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेस्सा विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं

है, तथारूप स्थविर की पास से केवली प्ररूपित धर्म तुमने सुना है; इस से तुम को ऐसा धर्म की इच्छा, प्रतीच्छा, रुचि व अभिरुचि हुई है. और अद्यापि पर्यंत भी ऐसा धर्म करते हो. अब अहो सुदर्शन! इसलिये ऐसा कहा गया है कि पल्योपम व सागरोपम का क्षय व अपचय होता है ॥ ४१ ॥ सुदर्शन श्रेष्ठिने श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास से ऐसा अर्थ सुनकर अवधार कर शुभ अध्यवसाय व

त० तैने अ० आवरणीय कर्म के ख० क्षयोपशम से ई० विचारणा म० मार्ग की ग० गवेषणा क० करते हुए स० संज्ञी पु० पूर्वजाति स० स्मरण स० उत्पन्न हुवा ए० इस अ० अर्थ को स० सम्यक् प्रकार से स० अच्छा जाना ॥ ४२ ॥ त० तब ते० उन सु० सुदर्शन से० श्रेष्ठि स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर सं० स्मरण कराया पु० पूर्वभव दु० दुगुना स० श्रद्धा सं० संवेग आ० आनंद सं० संपूर्ण न० नयन स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को ति० तीन वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसे व० बोले

ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सण्णी पुव्वजाईसरणे समुप्पण्णे एयमट्ठं सम्मं अभिसमेति ॥ ४२ ॥ तएणं ते सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारिय पुव्वभवे दुगुणाणिय सड्ढसंवेगे आणंदसंपुण्णणयणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आ २ वंदति णमंसति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी एवमेतं भंते ! जाव से जहेयं

व शुभ परिणाम से धारन करने से आवरण रूप कर्म का क्षय किया, विचारणा करते हुवे संज्ञीरूप जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हुवा और इस से भगवंत श्री महावीर स्वामीने जो कथन किया था इस को सम्यक् प्रकार से जानने लगा ॥ ४२ ॥ श्रमण भगवन्त श्री महावीर स्वामीने सुदर्शन श्रेष्ठि को पूर्व भव कहा जिससे वह दुगुनी श्रद्धा व संवेगवाला हुवा, आनंद से परिपूर्ण हुवा और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करके बोलने लगा कि अहो भगवन् ! जो आप कहते हैं- वह ऐसाही है यों कहकर उत्तर

करके उ०
ए० ऐसे ए० यह भं० भगवन् जा० यावत् ज० जैसे तु० तुम व० कहते हो त्ति० ऐसा क० करके उ०
ईशान कौन में अ० गया से० शेष ज० जैसे उ० ऋषभदत्त जा० यावत् स० सब दु०दुःख प० रहित ण०
विशेष च० चतुर्दश पु० पूर्वका अ० अध्ययन किया ब० बहुत प० पूर्ण दु० बारहवर्ष सा० साधुपना
पा० पालकर से० शेष तं० तैसे से० वैसे ही भं० पूज्य म० महाबल म० समाप्त ॥ ११ ॥ ११ ॥
ते० उस का० काल ते० उस स० समय में आ० आलंभिका ण० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त सं०

तुज्झे वदहत्तिकट्टु उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ । सेसं जहा उसभदत्तस्स
जाव सव्वदुक्खप्पहीणं णवरं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस
वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ सेसं तंचेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ महब्बलो
सम्मत्तो ॥ एगारस सयस्सय एगारसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ ११ ॥
तेणं कालेणं तेणं समएणं आलंभिया णामं णयरी होत्था वण्णओ संखवणे चेइए

दीक्षा धारन कर कर्म का
पूर्व (ईशान) कौन में गया, वहां जाकर शेष सब ऋषभदत्त ब्राह्मण समान दीक्षा धारन कर कर्म का
क्षय कर मुक्ति प्राप्त की वगैरह कहना. विशेष में इतना कि चौदह पूर्व का अध्ययन किया, बारह वर्ष
संयम पाला. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं. यह महाबल का आधिकार संपूर्ण हुवा. यह अग्यार-
हवा शतक का अग्यारहवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ११ ॥ ११ ॥ ० ० ०
अग्यारहवे उद्देशे में काल का स्वरूप कहा अब आगे काल के भांगांतर कहते हैं. उस काल उस

शंखवन चे० उद्यान व० वर्णन युक्त त० वहां आ० आलंभिका न० नगरी में ब० बहुत इ० ऋषिभद्र पुत्र प० प्रमुख स० श्रमणोपासक प० रहते थे अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपारिभूत अ० जाने हुवे जी० जीव अजीव जा० यावत् वि० विचरते थे ॥ १ ॥ त० तत्र ते० उन स० श्रमणोपासकों को अ० एकदा ए० एकत्रित स० मीले हुवे स० साथ स० बैठे हुवे अ० यह ए० ऐसा मि० परस्पर क० कथा अ० अध्यवसाय स० उत्पन्न हुवा दे० देवलोक में अ० आर्य दे० देवों की के० कितने काल की ठि० स्थिति प० कही त० तब इ० ऋषिभद्र पुत्र स० श्रमणोपासक दे० देवस्थिति ग० जानी हुई ते० उन स०

वण्णओ, तत्थणं आलंभिया णयरीए बहवे इसिभद्दपुत्तप्पमोक्खा समणोवासगा परिवसंति, अड्ढे जाव अपरिभूए, अभिगय जीवा जीवा जाव विहरंति ॥ १ ॥ तएणं तेसिं समणोवासयाणं अण्णदा कयायि एगयओ समुवागयाणं सहियाणं समुविट्ठाणं सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था, देवलोएसुणं अज्जो देवाण केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? तएणं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देव

समय में आलंभिका नामक नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ जैसे जानना. उस की ईशान कौन में शंखवन नामक उद्यान था. उस आलंभिका नगरी में ऋषिभद्र पुत्र प्रमुख बहुत श्रमणोपासक ऋद्धिवाले यावत् अपरिभूत व जीवाजीव के स्वरूप जाननेवाले रहते थे ॥ १ ॥ एकदा वे श्रमणोपासक मीलकर बैठे हुवे थे

श्रमणोपासक को ए० ऐसे व० बोले दे० देवलोक में अ० आर्य दे० देवों की ज० जघन्य द० दश वा० वर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति प० प्ररूपी ते० उस पीछे स० समयाधिक दु० दो स० समयाधिक जा० यावत् द० दश समयाधिक सं० संख्यात स० समयाधिक अ० असंख्याता स० समयाधिक उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ते० उस पीछे वो० नष्ट दे० देव दे० देवलोक ॥२॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक इ० ऋषिभद्र पुत्र स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा आ० कहते जा० यावत्

ट्ठिई गहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी देवलोएसु णं अज्जो! देवाणं जहण्णेणं दसवास सहस्साइं ठिई पण्णत्ता, तेणपरं समयाहिया दुसमयाहिया जाव दससमयाहिया संखेज्जसमयाहिया असंखेज्जसमयाहिया उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमट्ठिई पण्णत्ता, तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय ॥ २ ॥ तएणं ते समणोवासगा इसि-

उन में परस्पर ऐसा वार्तालाप हुवा कि अहो आर्यो ! देवलोक में देवताओं की कितनी स्थिति कही ? उस समय में देव स्थिति के जाननेवाले ऋषिभद्र पुत्र नामक श्रमणोपासकने कहा कि अहो आर्यो ! देवलोक में देवों की जघन्य दश हजार वर्ष की स्थिति कही और इस में एक समय, दो समय यावत् दश समय संख्यात, असंख्यात समय अधिक होते २ उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही. इस से आगे देवलोक में देवता की स्थिति का विच्छेद होता है ॥२॥ उस समय में उक्त श्रमणोपासकने ऋषिभद्र पुत्र श्रम-

ए० ऐसा प० प्ररूपते ए० यह अ० अर्थ णो० नहीं स० श्रद्धते हैं णो० नहीं प० प्रतीति करते हैं णो० नहीं रो० रुचि करते हैं ए० यह अ० अर्थ अ० नहीं श्रद्धते अ० नहीं प्रतीति करते अ० नहीं रुचि करते जा० जिसदिशि से पा० आये ता० उस दि० दिशी में प० पीछे गये ॥ ३ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर जा० यावत् स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पर्युपासना की ॥ ४ ॥ त० तब स० श्रमणोपासक इ० इस क० कथा ल० प्राप्त हुई ह० हृष्ट तु०

भद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं णो सद्दहंति, णोपत्तियंति, णो रोयंति. एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया ॥ ३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे, जाव परिसा पज्जुवासइ ॥४॥ तएणं ते समणो-

णोपासक के कथन पर श्रद्धा प्रतीति व रुचि की नहीं. और इस तरह श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं करते हुवे जिस दिशा में से आये थे उसी दिशा में पीछे गये ॥ ३ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उस आलंभिका नगरी में पधारे. परिषदा वंदने को आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई ॥ ४ ॥ उस समयमें वहां के श्रमणोपासकोंने भगवंत श्रीमहावीर स्वामी के पधारनेकी वार्ता सुनी, और बहुत हर्षित

तुष्ट ए० ऐसे ज० जहां तुं० तुंगिया का उ० उद्देशा जा० यावत् ण० नमस्कार कीया ॥ ५ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० उन म० श्रमणोपासकों को ती० उस म० बडी ध० धर्मकथा जा० यावत् आ० आराधक भ० होता है ॥ ६ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट उ० उठकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे

वासगा इमीसे कहाए लध्दट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठा एवं जहा तुंगियोद्देसए जाव णमंसंति ॥ ५ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसेय महइ धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवइ ॥ ३ ॥ तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंतिं णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु भंते! इसिभद्द

यावत् आनंदित हुवे वगैरह जैसे तुंगिया नगरी के श्रावकों का कथन किया वैसे ही यहांपर कथन जानना॥५॥उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उस महती परिषदा में धर्मोपदेश सुनाया यावत् आज्ञा का आराधक होता है वहां तक कहना ॥ ६ ॥ भगवंत श्री महावीर स्वामी से ऐसा धर्मोपदेश सुनकर श्रावक बहुत हर्षित हुवे और उठकर वंदना नमस्कार करने लगे. फीर वंदना नमस्कार कर बोलने लगे कि अहो भग-

भं० भगवन् इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक अ० हम को ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ए० ऐसा प० प्ररूपते हैं दे० देवलोक में अ० आर्य दे० देवों की ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति प० प्ररूपी ते० इस से स० समयाधिक जा० यावत् ते० इस से वो० विच्छेद दे० देव दे० देवलोक से० अथ क० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे अ० आर्य स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले जं० जो अ० आर्य इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक तु०

पुत्ते समणोवासए अम्हं एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ देवलोएसुणं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता, तेणपरं समयाहिया जाव तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय ॥ से कहमेयं भंते ! एवं ? अज्जोत्ति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी जंणं अज्जो ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुज्झं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ देवलोगेसुणं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिई

वन् ! ऋषिभद्र पुत्र नामक श्रमणोपासक हम को ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि अहो आर्यो ! देवलोक में देवताओं की जघन्य दश हजार वर्ष की स्थिति कही है पीछे एक दो यावत् दश, संख्यात असंख्यात समय की वृद्धि करते उत्कृष्ट तेंत्तीस सागरोपम की स्थिति कही है. बाद में स्थिति का विच्छेद होता है. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? श्रमण भगवंत महावीर स्वामी बोले कि अहो आर्यो ! ऋषिभद्रपुत्र

तुम को ए० ऐसा आ० कहते हैं, दे० देवलोक में अ० आर्य दे० देवों की ज० जघन्य द० दश वा० वर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति प० प्ररूपी तं० वैसे ही स० समयाधिक जा० यावत् ते० इस से प० आगे वो० विच्छेद दे० देव दे० देवलोक स० सत्य ए० यह अ० अर्थ ॥ ७ ॥ अ० मैं पु० पुनः अ० आर्य पूर्ववत् ॥ ८ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० पास से ए० यह

पण्णत्ता, तंचेव समयाहिया जाव तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय सच्चेणं एसमट्ठे ; ॥ ७ ॥ अहं पुण अज्जो ! एव माइक्खामि जाव परूवेमि, देवलोगेसुणं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवास सहस्साइं तंचेव जाव तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय सच्चेणं एसमट्ठे ॥ ८ ॥ तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति

श्रमणोपासकने जो तुम को कहा है कि देवों की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति है आगे नहीं है. यह अर्थ सत्य है ॥ ७ ॥ अहो आर्यों ! मैं भी वैसा ही कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि देवलोक में देवताओं की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही आगे स्थिति का विच्छेद होता है ॥ ८ ॥ फीर उक्त श्रमणोपासक श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीकी पास से ऐसा अर्थ सुनकर अवधार कर भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऋषिभद्र पुत्र

अ० अर्थ सो० सुनकर णि० अवधारकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर जे० जहां इ० ऋषिभद्रपुत्र म० श्रमणोपासक ते० वहां उ० आकर इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणो-पासक को वं० वंदना की ण० नमस्कार किया ए० इस अ० अर्थ स० सम्यक् वि० विनय से भु० वारं-वार खा० खमाया ॥ ९ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक प० प्रश्न पु० पुछकर अ० अर्थ प० ग्रहण कर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर जा० जिस दि० दिशि से पा० आये ता० उस दिशि में प० पीछे गये ॥ १० ॥ भं० पूज्य भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण

वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता, इसिभद्दपुत्त समणोवासगं वंदंति णमंसंति एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति ॥ ९ ॥ तएणं ते समणोवासगा पसिणाइं पुच्छंति २ त्ता, अट्ठाइं परि-यादियंति २ त्ता, समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता जामेव-दिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया ॥ १० ॥ भंतेति ! भगवं गोयमे समणं

श्रमणोपासक की पास आये और उन को वंदना नमस्कार कर अपना अपराध की विनय पूर्वक क्षमा मांगी ॥ ९ ॥ फीर उन श्रमणोपासकोंने अन्य अनेक प्रश्न पूछे, उन का अर्थ धारन किया, और श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर जहां से आये थे वहां पीछे गये ॥१०॥ उस समय में

भ० भगवन्त को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसे व० बोले प० समर्थ इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक दे० देवानुप्रिय की अं० पास मुं० मुंड भ० होकर अ० गृहवास से अ० अनगारपना प० अंगीकार करने को गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ गो० गौतम इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक ब० बहुत सी० शीलव्रत गु० गुणव्रत वे० विरमणव्रत प० प्रत्याख्यान पो० पौषध उ० उपवास अ० यथा प० ग्रहण किये हुवे त० तपकर्म से अ० स्वतः को भा० विचारते ब० बहुत वा० वर्ष

भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभूणं भंते ! इसिभद्द पुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्व- इत्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! इसिभद्दपुत्तेणं समणोवासए बहूहिं सीलव्वयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं

भगवान गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! ऋषिभद्र पुत्र नामक श्रमणोपासक क्या आपकी पास मुंडित बनकर गृहस्थपना से साधुपना अंगीकार करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक मुंडित नहीं होवेंगे. परंतु बहुत शीलव्रत, गुण व्रत, विरमण व्रत, पौषधोपवास वगैरह ग्रहण करके तप कर्म से

स० श्रमणोपासक प० पर्याय पा० पालकर मा० मास की सं० संलेखना से अ० आत्माको झू० झूसकर स० साठ भक्त अ० अनशन छे० छेदकर आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण स० समाधि मास का० काल के मा० अवसर में का० कालकर सो० सौधर्म क० देवलोक में अ० अरुणाभ वि० विमान में दे० देवपने उ० उत्पन्न होगा त० उस में अ० कितनेक दे० देवों की च० चार प० पल्योपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी त० वहां इ० ऋषिभद्रपुत्र दे० देवकी च० चार प० पल्योपम की ठि० स्थिति भ० होगा ॥ ११ ॥ से०

अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिति २ त्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिति २ त्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहि छेदेइत्ता, आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालंकिच्चा, सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववाजिहिति ॥ तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता तत्थणं इसिभद्दपुत्तस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई

आत्मा को भावते हुवे बहुत वर्ष साधु की पर्याय पालकर, एक मास की संलेखना से आत्मा को झोंसकर साठ भक्त अनशन छेदकर, आलोचना प्रतिक्रमण कर, काल के अवसर में काल कर सौधर्म देवलोक में अरुणाभ विमान में देवतापने उत्पन्न होवेंगे. वहां कितनेक देवों की चार पल्योपम की स्थिति कही है उन में ऋषिभद्र पुत्र देव की चार पल्योपम की स्थिति होगी ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! वह ऋषिभद्र पुत्र

अत्र इ० ऋषिभद्रपुत्र दे० देव दे० देवलोक में से आ० आयुष्यक्षय से जा० यावत् क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सीझेंगे जा० यावत् अं० अंत का० करेंगे से० वैसे ही भं० भगवन् भ० भगवान् गो० गौतम जा० यावत् अ० आत्माको भा० विचारते वि० विचरते हैं ॥१२॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर अ० अन्यदा कदापि अ० आलंभिका न० नगरी मे से सं० शंखवन चे० उद्यान में से प० नीकलकर बा० बाहिर ज० जनपद वि० विहार वि० विचरने लगे ॥१३॥

भाविस्सइ ॥ ११ ॥ सेणं भंते! इसिभद्दपुत्ते देवत्ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहवासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिति ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ भगवं गोयमे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १२ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयायि आलंभियाओ णयरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता, बाहिरिया जणवय विहारं विहरइ ॥ १३ ॥ तेणं कालेणं

वहां से आयुष्य, स्थिति व भव क्षय से कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में सीझेंगे यावत् अंत करेंगे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों तप व संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री गौतम स्वामी विचरने लगे ॥ १२ ॥ तत्पश्चात् श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उस आलंभिका नगरी के शंखवन उद्यान में से बाहिर नीकलकर जनपद विहार से विचरने लगे ॥ १३ ॥ उस काल उस समय में

ते० उस का० काल ते० उस स० समय में आ० आलंभिका ना० नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त सं० शंखवन चे० उद्यान त० वहां सं० शंखवन चे० उद्यान की अं० पास पो० पुद्गल प० परिव्राजक प० रहताथा रि० ऋग्वेद ज० यजुर्वेद जा० यावत् न० नय में सु० पंडित छ० छठ २ से जा० यावत् आ० आतापनालेने प० प्रकृति भद्रिक से ज० जैसे सि० शिव को जा० यावत् वि० विभंग णा० नामक अ० अज्ञान स० उत्पन्न हुवा से० अब ते० उस वि० विभंग अ० अज्ञान उ० उत्पन्न होने से बं० ब्रह्म

तेणं समएणं आलंभिया णामं णयरी होत्था वण्णओ, संखवणे चेइए वण्णओ, तत्थणं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते पोग्गलेणामं परिव्वाए परिवसइ, रिउव्वेय जउव्वेय जाव नएसु सुपरिनिट्ठिए, छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ जाव आयावेमाणे विहरइ तएणं तस्स पोग्गलस्स छट्ठं छट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स पगइ-भद्दयाए जहा सिवस्स जाव विभंगे णामं अण्णाणे समुप्पण्णे, सेणं तेणं विभंगे णामं

आलंभिका नामक नगरी थी. शंखवन नामक उद्यान था. उस शंखवन उद्यान की पास पुद्गल नामक परिव्राजक रहता था. वह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्वणवेद आदि अनेक शास्त्रों जाननेवाला था. ब्राह्मणों के नय व न्याय शास्त्र आदि में निपुण था और छठ २ की निरंतर तपस्या करके ऊर्ध्व बाहु से यावत् आतापना लेता हुवा विचरता था. इस तरह छठ २ की तपस्या सहित आतापना करते हुवे, प्रकृति भद्रिकपना से यावत् शिवराजर्षि जैसे विभंग ज्ञान उत्पन्न हुवा. उस विभंग

लोक क० देवलोक में दे० देवों की ठि० स्थिति जा० जानी पा० देखी ॥ १४ ॥ त० तब त० उस पो० पुद्गल प० परिव्राजक को अ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय स० उत्पन्न हुवा अ० है म० मुझे अ० अतिशय ज्ञा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न हुवा दे० देवलोक में दे० देवोंकी ज० जघन्य द० दश हजार वर्ष प० प्ररूपी ते० उस से आगे स० समयाधिक दु० दो समयाधिक जा० यावत् अं० असंख्यात स० समयाधिक उ० उत्कृष्ट द० दश सा० सागरोपम ठि० स्थिति प० प्ररूपी ते० उस से प० आगे वो० विच्छेद दे० देव दे० देवलोक ॥ १५ ॥ ए० ऐसा सं० विचारकर आ० आतापना भू० भूमि से प० पीछा

अण्णाणेणं समुप्पण्णेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठिई जाणइ पासइ ॥ १४ ॥ तएणं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पाजित्था अत्थिणं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे देवलोएसुणं देवाणं जहण्णेणं दसवास सहस्साइं ठिई पण्णत्ता तेणपरं समयाहिया दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देव लोगाय

नामक अज्ञान से देवताओं की स्थिति वह जानने लगा ॥१४॥ अब उस पुद्गल परिव्राजक को ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुवा कि मुझे अतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुवा है जिस से मैं जानता हूं कि देवताओं की जघन्य दश हजार वर्ष की स्थिति है. इस में एक समय, दो समय यावत् संख्यात, असंख्यात समय की वृद्धि करते उत्कृष्ट दश सागरोपम की स्थिति है. पीछे देवों की स्थिति का क्षय है ॥ १५ ॥ ऐसा

आकर ति० त्रिदंड कुं० कुंडिका जा० यावत् धा० धारनकर ग० ग्रहणकर जे० जहां आ० आलंभिका न० नगरी जे० जहां प० परिव्राजक आ० आवास ते० तहां उ० आया भं० भंड णि० प्रक्षेप क० करके आ० आलंभिका न० नगरी के सिं० शृंगाटक जा० यावत् प० मार्ग में अ० परस्पर ए० ऐसा आ० कहा जा० यावत् प० प्ररूपा शेष पूर्ववत् ॥ १६ ॥ त० तब आ० आलंभिका ण० नगरी में ए० ऐसे ए० इस

॥ १५ ॥ एवं संपेहेइ २ त्ता, आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ २ त्ता, तिदंडकुंडिया जाव धाउरत्ताउय गण्हंति २ त्ता, जेणेव आलंभिया णयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागए भंडगाणिक्खेवं करेइ २ त्ता आलंभियाए णयरीए सिंगाडग जाव पहेसु अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ अत्थिणं देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे देवलोएसुणं देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्स तहेव जाव वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय ॥ १६ ॥ तएणं

विचार करके आतापना भूमि में से पीछा आकर त्रिदंड कुंडिका यावत् धारन कर आलंभिका नगरी में परिव्राजक के आवास में आया. वहां भंडोपकरण रखकर आलंभिका नगरी के शृंगाटक यावत् बडे रस्ते में ऐसा कहने यावत् प्ररूपने लगा कि अहो देवानुप्रिय ! मुझे आतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुवा है. जिस से मैं जान सकता हूं कि देवलोक में देवताओं की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट दश सागरोपम की स्थिति है

अ० अभिलाप से ज० जैसे सि० शिवका तं० वैसे ही जा० यावत् क० कैसे ए० यह म० मानाजावे ए० ऐसे सा० स्वामी स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगई भ० भगवान गो० गौतम त० तैसे भि० भिक्षाचरी केलिये त० तैसे ब० बहु म० मनुष्यों का स० शब्द नि० सुना त० तैसे स० सब भा० कहना जा० यावत् अ० मैं पु० पुनः गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं ए० ऐसा भा० बोलता हूं ए०

आलंभियाए णयरीए एवं एएणं अभिलावेणं जहा सिवस्स तंचेव जाव से कहमेयं मण्णे एवं ? सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया ॥ भगवं गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसदं निसामेइ तहेव सव्वं भाणियव्वं जाव अहं पुण गोयमा! एव माइक्खामि एवं भासामि जाव परूवेमि देवलोएसुणं देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता तेणपरं समयाहिया दुसमियाहिया जाव उक्कोसेणं तेत्तीसं

पीछे स्थिति का क्षय है ॥ १८ ॥ तब आलंभिका नगरी में इस कथन से जैसे शिवराजर्षिका कथन वैसे ही यावत् वह किस तरह है ? उस काल उस समय में स्वामी पधारे, भगवान गौतम स्वामी भिक्षाचरी के लिये नीकले यावत् बहुत मनुष्यों से ऐसा सुनकर भगवंत की पास आये और वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! पुद्गल परिव्राजक जो इस तरह कहता है सो कैसे है ? अहो गौतम ! पुद्गल परिव्राजक का यह कथन मिथ्या है. मैं ऐसा कहता हूं कि देवलोक में देवता की जघन्य दश हजार वर्ष की

ऐसा प० प्ररूपता हू शेष पूर्ववत् ॥ १७ ॥ अ० हैं भं० भगवन् सो० सौधर्म क० देवलोक में द० द्रव्य स० वर्ण सहित अ० वर्ण रहित त० तैसे जा० यावत् हं० हां अ० है ए० ऐसे ई० ईशान में भी जा० यावत् अ० अच्युत ए० ऐसे गे० ग्रैवेयक वि० विमान में अ० अनुत्तर विमान में ई० ईषत्प्रागभार जा० यावत् हं० हां अ० है ॥ १८ ॥ त० तब सा० वह म० बडी जा० यावत् प० पीछी ॥ १९ ॥ त० तब आ० आलंभिका ण० नगरी में सिं० शृंगाटक ति० त्रिक ण० शेष ज० जैसे सि० शिव जा० यावत् स०

सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय ॥ १७ ॥ अत्थिणं भंते ! सोहम्मेकप्पे दव्वाइं सवण्णाइंपि अवण्णाइंपि तहेव जाव हंता अत्थि ॥ एवं ईसाणेवि, एवं जाव अच्चुएवि, एवं गेविज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु ईसिप्पभारा-एवि जाव हंता अत्थि ॥ १८ ॥ तएणं सा महइ महालिया जाव पडिगया ॥१९॥ तएणं आलंभियाए णयरीए सिंगाडगतिग अवसेसं जहा सिवस्स जाव सव्व

भावार्थ — स्थिति है और एक, दो, तीन, यावत् दश, संख्यात व असंख्यात समय अधिक करते उत्कृष्ट तेत्तीस सागरो-पम की स्थिति है. इस से आगे देवलोक में देवता की स्थिति नहीं है ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में क्या द्रव्य सवर्णवाले या अवर्णवाले हैं ? हां गौतम ! ऐसे ईशान यावत् अच्युत, नवग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान व इषत् प्रागभार पृथ्वी तक कहना ॥ १८ ॥ फीर वह परिषदा पीछी गई ॥ १९ ॥ फीर उस आलंभिका नगरी में शृंगाटकत्रिक चौक यावत् महापथ में ऐसा वार्तालाप होने लगा कि पुद्गल

सव दुःख प० रहित ण० विशेष ति० त्रिदंड कुं० कुंडिका जा० यावत् धा० धातु रक्त व० वस्त्र प० पहिना हुवा प० पतित वि० विभंग ज्ञान आ० आलंभिका ण० नगरी की म० बीच में से णि० नीकलकर जा० यावत् उ० ईशान कौन में अ० जाकर तिं० त्रिदंड कुं० कुंडिका ज० जैसे खं० स्कंदक प० प्रव्राजित से० शेष ज० जैसे सि० शिव जा० यावत् अ० अव्याबाध सो० सुख अ० अनुभवते हैं सा० शाश्वत सि० सिद्ध से० वैसे ही भं० भगवन् ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ० ० ०

दुक्खप्पहीणे णवरं तिदंडकुंडियं जाव धाउरत्तवत्थ परिहिए परिवाडियविभंगे, आलंभियं णयरं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ त्ता, तिदंडं कुंडियंच जहा खंदओ जाव पव्वइओ सेसं जहा सिवस्स जाव अव्वाबाहं सोक्ख मणुभवंति सासयंसिद्धा ॥ सेवं भंते भंते त्ति ॥ एगारस सयस्स दुवालसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ १२ ॥ एगारसमं सयं सम्मत्तं ॥ ११ ॥ *

परिव्राजक का कथन असत्य है ऐसा सुनकर उन को संकल्प विकल्प होने लगा और इस तरह करते उस का विभंग ज्ञान नष्ट होगया. फीर शिवराजर्षि तरह श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आया धर्मोपदेश सुना, त्रिदंड, कुंड वगैरह डालकर ईशान कौन में जाकर स्कंदक संन्यासी जैसे प्रव्राजित हुवा. शेष सब शिवराजर्षि जैसे कहना यावत् सब कर्मों का क्षय करके सिझे, बुझे यावत् सब दुःखों से रहित हुए और अनुत्तर प्रधान मोक्ष का सुख अनुभवने लगे. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यह अग्यारहवा शतक का बारहवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ ११ ॥ १२ ॥ यह अग्यारहवा शतक समाप्त हुवा ॥ ११ ॥

॥ द्वादश शतकम् ॥

सं० शंख ज० जयंति पु० पृथ्वी पो० पुद्गल अ० अतिपात रा० राहु लो० लोक ना० नाग दे० देव आ० आतमा बा० बारहवे स० शतक में द० दश उ० उद्देशे ॥ १ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में सा० श्रावस्ती णा० नाम नगरी हो० थी व० वर्णन से को० कोष्टक चे० उद्यान व० वर्णन से त० उस सा० श्रावस्ती ण० नगरी में ब० बहुत सं० शंख प० प्रमुख स० श्रमणोपासक प० रहते थे अ०

संखे, जयंति, पुढवी। पोग्गल, अइवाय, राहु, लोगेय॥ नागेय देवआता । बारसम सए दसुद्देसा ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थीणामं णयरी होत्था, वण्णओ कोट्ठए चेइए वण्णओ, तत्थणं सावत्थीए णयरीए बहवे संखप्पमोक्खा समणोवासगा

अग्यारहवे शतक में विविध अर्थ कहे, अब आगे भी वैसाही कथन करते हैं. इस बारहवे शतक में दश उद्देशे कहे १ शंख श्रमणोपासक का, २ जयंति श्राविका, ३ रत्नप्रभा पृथ्वी का ४ पुद्गल विचार ५ प्राणातिपात का ६ राहू की वक्तव्यता ७ लोक की वक्तव्यता ८ नाग की वक्तव्यता ९ देवता की वक्तव्यता १० आत्म भेद निरूपण. अब इन में से प्रथम शंख श्रमणोपासक का कथन करते हैं ॥ १ ॥ उस काल उस समय में श्रावस्ती नामक नगरी थी. उस की ईशान कौन में कोष्टक नामक उद्यान था. उस श्रावस्ती नगरी में शंख प्रमुख श्रमणोपासक रहते थे. वे ऋद्धिवंत यावत् अपरिभूत व जीवाजीव के

ते० उस का० काल ते० उस स० समय में सा० स्वामी स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पर्युपा त० उस सा० श्रावस्ती न० नगरी में पो० पुष्कली स० श्रमणोपासक प० रहता था अ० ऋद्धिवंत ॥४॥ यावत् सु० सुरूपा स० श्रमणोपासिका अ० जाने हुवे जी० जीवा जीव जा० यावत् वि० रहती थी ॥ ३ ॥ त० उस सं० शंख स० श्रमणोपासक को उ० उत्पला ना० नामकी भा० भार्या हो०थी सु० सुकुमार जा० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत अ० जाने हुवे जी० जीवाजीव जा० यावत् वि० रहते थे ॥ २ ॥

परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगय जीवाजीवा जाव विहरंति ॥ २ ॥ तस्सणं संखस्स समणोवासगस्स उप्पलाणामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरइ ॥ ३ ॥ तत्थणं सावत्थीए णयरीए पोक्खलीणामं समणोवासए परिवसइ, अड्ढे अभिगय जाव विहरइ ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ ५ ॥ तएणं ते सम-

स्वरूप जाननेवाले थे ॥ २ ॥ उस शंख श्रमणोपासक को उत्पला नामक भार्या थी. वह सुकुमार यावत् सुरूपा व जीवाजीव का स्वरूप जानती हुई विचरती थी ॥ ३ ॥ उस श्रावस्ती नगरी में ऋद्धिवंत यावत् जीवाजीव का स्वरूप जाननेवाला पुष्कली नामक श्रावक रहता था ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में स्वामी पधारे, परिषदा वंदने को आई यावत् पर्युपासना करने लगी ॥ ५ ॥ उस समय में उस श्रमणोपासकने

सना की ॥ ५ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक इ० इम क० कथा ज० जैसे आ० आलंभिका जा० यावत् प० पर्युपासना की ॥ ६ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीरने ते० उन स० श्रमणोपासकों को ती० उस म० बडी ध० धर्म कथा जा० यावत् प० परिषदा प०पीछीगइ ॥७॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदना की ण० नमस्कार क्रिया प० प्रश्न पु० पूछे अ० अर्थ प० ग्रहणकर उ० उठकर उ० खडे हुवे उ० खडे होकर

णोवासगा इमीसे कहाए जहा आलंभियाए जाव पज्जुवासंति ॥ ६ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसेय महइ धम्मकहा, जाव परिसा पडिगया ॥ ७ ॥ तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति पसिणाइं पुच्छंति २ त्ता अट्ठाइं परियादियंति २ त्ता उट्ठाए उट्ठेंति २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स

स्वामी पधारे हैं ऐसी वार्ता सुनी, और जैसे आलंभिका नगरी के श्रावकों दर्शन के लिये आयेथे वैसे ही श्रावस्ती नगरी के श्रावक आये ॥ ६ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उस महती पारिषदा में धर्मोपदेश सुनाया. और परिषदा पीछी गई ॥ ७ ॥ फीर वे श्रमणोपासक श्रमण भगवंत.

स० श्रमण भं० भगवन्त म०महावीर की अं० पास से को० कोष्टक चे० उद्यान में से प० नीकलकर जे० जहां सा० श्रावस्ती ण० नगरी ते० तहां प० नीकला ग० जाने को ॥ ८ ॥ त० तब से० उस शं० शंख श्रमणोपासकने ते० उन स० श्रमणोपासकों को ए० ऐसा व० बोले तु० तुम दे० देवानुप्रिय वि० बहुत अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम उ० तैयार करो त० तब अ० हम तं० उस वि० बहुत अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम को आ० आस्वादते वि० विशेष आस्वादते प० विभाग

अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमंति २ त्ता जेणेव सावत्थी णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ ८ ॥ तएणं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी तुज्झेणं देवाणुप्पिया! विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह, तएणं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आस्सादेमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परि-

महावीर स्वामी की पास धर्म सुनकर, अवधारकर हृष्ट तुष्ट हुवे, और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार किया. फीर कितनेक प्रश्नों पूछकर उन के अर्थ ग्रहण किये. फीर अपने स्थान से उठकर कोष्टक उद्यानमेंसे नीकलकर श्रावस्ती नगरी में जाने को नीकले ॥ ८ ॥ उस समय में शंख श्रमणोपासक उन अन्य श्रमणोपासकों को ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! तुम विपुल अशन, पान, खादिम व स्वादिम तैयार करो, और अपन सब उस अशनादि को आस्वादेंगे, विस्वादेंगे, परस्पर विभाग करेंगे और

करते प० भोगते प० पाक्षिक पौ० पौषध प० पालते हुवे वि० विचरेंगे ॥ ९ ॥ त० तत्र तें० वे सं० श्रमणोपासक स० शंख स० श्रमणोपासक की ए० इस अ० बात को वि० विनय से प० सुनी ॥ १० ॥ त० तब त० उस सं० शंख श्रमणोपासक को अ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय स० हुवा णो० नहीं मे० मुझे से० श्रेय तं० उस वि० बहुत अ० अशन जा० यावत् सा० स्वादिम आ० आस्वादते प० पाक्षिक पो० पौषध प० पालते वि० विचरने को से० श्रेय मे० मुझे पो० पौषध बं० ब्रह्मचारी उ० साग म० मणि सु० सुवर्ण व०

भुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो ॥ ९ ॥ तएणं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥ १० ॥ तएणं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, णो खलु मे सेयं तं विउलं असणं जाव साइमं आसाएमाणस्सय पक्खिय पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स उम्मुक्कमणि सुवण्णस्स, वव-

भोगवेंगे. फीर पक्खिका पोषध कर जागरणा जागते हुवे विचरेंगे ॥ ९ ॥ उन अन्य श्रावकोंने शंख श्रमणोपासक की इस बात को विनय पूर्वक सुनी ॥ १० ॥ फीर उस शंख श्रमणोपासक को ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुवा कि अशन, पान, खादिम व स्वादिम इन चारों का आहार करके पक्खी पौषध करते हुवे विचरना मुझे श्रेय नहीं है; परंतु पौषधशाला में पौषध युक्त, ब्रह्मचर्य सहित, मणि सुवर्ण का साग

र्थ

पृथक् मा० माला व० वर्णक वि० विलेपन णि० दूरक्रिया स० शस्त्र मु० मुशल ए० एक अ० अद्वितीय द० दर्भ संथारेपर अ० रहा हुवा प० पाक्षिक पौषध प० पालते वि० विचरने को त्ति० ऐसा क० करके ए० ऐसा सं० विचारकर जे० जहां सा० श्रावस्ती ण० नगरी जे० जहां स० स्वगृह जे० जहां उ० उत्पला स० श्रमणोपासिका ते० वहां उ० जाकर उ० उत्पला स० श्रमणोपासिकाको आ० पूछकर जे० जहां पो० पौषध शाला ते० वहां उ० जाकर पो० पौषध शाला में अ० प्रवेशकर पो० पौषध शाला को प० प्रमार्जकर

गय माला वण्णग विलेवणस्स णिक्खित्तसत्थ मुसलस्स एगस्स अबितियस्स दब्भसंथा-रोवगयस्स पक्खिय पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता, जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव सए गिहे जेणेव उप्पला समणोवासिया तेणेव उवाग-च्छइ २ त्ता, उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ २ त्ता, जेणेव पोसह सालाए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसालं अणुप्पविसइ २ त्ता पोसहसालं पमज्जइ २ त्ता,

र्थ

करके, माला, वर्ण, विलेपन को दूर करके, शस्त्र मूशलादि दूर करके, एक दर्भ संथारावाला पाक्षिक पौषध करते हुवे विचरना मुझे श्रेय है. ऐसा विचार करके श्रावस्ती नगरी में अपने गृह में उत्पला नामक अपनी भार्या की पास आया, और उन को पूछकर पोषधशाला में गया. वहां पर पौषधशाला पूंजकर, उच्चार

उ० उच्चार पा० प्रस्त्रवण भू० भूमि को प० देखकर द० दर्भ सं० संथारा सं० संथरकर दु० बैठकर पो० पौषध शाला में पो० पौषध सहित बं० ब्रह्मचर्य जा० यावत् प० पाक्षिक पो० पौषध प० पालते वि० विचरने लगा ॥११॥ त० फीर ते० वे स० श्रमणोपासक जे० जहां सा० श्रावस्ती न० नगरी जे० जहां सा० अपने २ गि० गृह ते० वहां उ० आकर वि० विपुल अ० अशन ४ उ० तैयार किया अ० परस्पर स० बोलाये ए० ऐसे व० बोले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय अ० हमने वि० बहुत अ० अशन ४ उ० तैयार

उच्चार पासवण भूमीओ पडिलेहेइ २ त्ता, दब्भसंथारगं संथरइ २ त्ता, दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता, पोसह सालाए पोसहिए बंभचारीओ जाव पक्खियं पोसहं पडि जागरमाणे विहरइ ॥ ११ ॥ तएणं ते समणोवासगा जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति २ त्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले

उच्चार प्रस्त्रवण भूमि देख कर, दर्भ संथारा संथरकर, दर्भ संथारे पर बैठकर, पौषधशाला में पौषध सहित ब्रह्मचर्य युक्त यावत् पाक्षिक पौषध करते हुवे विचरने लगा ॥ ११ ॥ अब अन्य श्रमणोपासक भी श्रावस्ती नगरी में अपने २ गृह आये और विपुल अशन, पान, खादिम व स्वादिम बनाकर परस्पर ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! अपनने अशनादि तैयार किये हैं, परंतु शंख श्रमणोपासक आये नहीं हैं; इस से

किया सं० शंख श्रमणोपासक णो० नहीं ह० शीघ्र आ० आया तं० इसलिये से० श्रेय दे० देवानुप्रिय
अ० हमको सं० शंख स० श्रमणोपासक को स० बोलाने को ॥ १२ ॥ त० फीर पो० पुष्कली स० श्रमणो-
पासक ते० उन स० श्रमणोपासकों को ए० ऐसा व० बोला अ० बैठो तु० तुम दे० देवानुप्रिय सु० समाधि
से वी० विश्राम से अ० मैं सं० शंख स० श्रमणोपासक को स० बोलाताहूं ए० ऐसा क० करके
ते० उन स० श्रमणोपासकों की अं० पास से प० नीकलकर सा० श्रावस्ती ण० नगरी के म० मध्यबीच में
जे० जहां सं० शंख स० श्रमणोपासक का गि० गृह त० वहां उ० आकर सं० शंख स० श्रमणोपासक

असण पाणखाइमसाइमे उवक्खडाविए, तं संखे समणोवासए णो हव्वमागच्छइ,
तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं संखं समाणोवासगं सद्दावेत्तए ॥ १२ ॥ तएणं
से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासा अत्थहणं तुब्भे देवाणुप्पिया !
सुनिच्छुया वीसत्था अहंणं संखं समणोवासगं सद्दामित्ति कट्टु, तेसिं समणोवास-
गाणं अंतियाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता सावत्थीं णयरीं मज्झं मज्झेणं जेणेव संखस्स
समणोवासगस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, संखस्स समणोवासगस्स गिहं अणुप्प-

उन को बोलाना चाहिये ॥ १२ ॥ उस समय में पुष्कली श्रमणोपासक बोला कि अहो देवानुप्रिय ! तुम
शांति से बैठो; मैं शंख श्रमणोपासक को बोलाने के लिये जाता हूं. ऐसा कहकर वह श्रमणोपासक की

क गि० गृह में अ० प्रवेश किया ॥ १३ ॥ त० तब सा० वह उ० उत्पला स० श्रमणोपासिका पो० पुष्फली स० श्रमणोपासक को ए० आता हुवा पा० देखकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट आ० आसन से अ० उपस्थित हुइ स० सात आठ प० पांव अ० जाकर पो० पुष्कली स० श्रमणोपासक को वं० वंदना ण० नमस्कार कर आ० आसन से उ० निमंत्रणाकर ए० ऐसे व० बोले सं० कहो दे० देवानुप्रिय कि० किस लिये आ० आनेका प० प्रयोजन ॥ १४ ॥ त० तब से० वह पु० पुष्कली स० श्रमणोपासक उ० उत्पला

विट्ठे ॥ १३ ॥ तएणं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासगं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता सत्तट्ठपयाहिं अणुगच्छइ २ त्ता, पोक्खलिं समणोवासगं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता आसणेणं उवनिमंतेइ २ त्ता एवं वयासी संदिसंतुणं देवाणुप्पिया ! किमागमण पओयणं ? ॥ १४ ॥ तएणं से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवं

पास से नीकलकर श्रावस्ती नगरी की मध्य में होता हुवा शंख श्रमणोपासक के गृह गया ॥ १३ ॥ उस समय में उत्पला श्राविकाने पोखली श्रावक को आता हुवा देखा. देखकर बहुत हर्षित हुई और अपने आसन से उठकर सात आठ पांव (कदम) सन्मुख गई. पोखली श्रमणोपासक को वंदना नमस्कार करके आसन की निमंत्रणा की. फीर आने का प्रयोजन पूछा ॥ १४ ॥ पोखली श्रावकने उत्पला

स० श्रमणोपासिका को ए० ऐसा व० बोला क० कहां दे० देवानुप्रिये सं० शंख स० श्रमणोपासक त०
तब सा० वह उ० उत्पला स० श्रमणोपासिका पो० पुष्कली स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोली
दे० देवानुप्रिय सं० शंख स० श्रमणोपासक पो० पौषधशाला में पो० पौषध सहित व० ब्रह्मचारी जा०
जावत् वि० रहे हैं ॥ १५ ॥ त० तब से० वह पो० पुष्कली स० श्रमणोपासक जे० जहां पो० पौषध
शाला जे० जहां सं० शंख स० श्रमणोपासक ते० तहां उ० आकर ग० गमनागमन का प० प्रतिक्रमण

वयासी कहिणं देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए ? तएणं सा उप्पला समणो-
वासिया पोक्खलिं ममणोवासयं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणो-
वासए पोसह सालाए पोसहिए बंभचारी जाव विहरइ ॥ १५ ॥ तएणं
से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसालाए जेणेव संखे समणोवासए तेणेव

श्रमणोपासिका को पूछा कि अहो देवानुप्रिये ! शंख श्रमणोपासक कहां है ? उत्पला श्रमणोपासिका
पोखली श्रमणोपासक को बोली कि अहो देवानुप्रिय ! शंख श्रमणोपासक पौषधशाला में ब्रह्मचर्य सहित
यावत् पौषध करते हुवे विचरते हैं ॥ १५ ॥ फीर पोखली श्रमणोपासक पौषधशाला में शंख श्रमणोपासक
की पास गया. वहां जाकर गमनागमन का प्रतिक्रमण किया और शंख श्रमणोपासक को वंदना नमस्कार
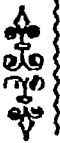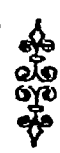
किया सं० शंख स० श्रमणोपासक को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोला पूर्ववत् ॥ १९ ॥ त० तब से० वह सं० शंख स० श्रमणोपासक पु० पुष्कली म० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोला णो० नहीं क० कल्पता है मे० मुझे दे० देवानुप्रिय तं० उस वि० बहुत अ० अशन ४ आ० आ-स्वादते जा० यावत् प० पालते वि० विचरने को क० कल्पता है मे० मुझे पो० पौषध शाला में पो०

उवागच्छइ २ त्ता, गमणागमणाए पडिक्कमइ २ त्ता, संखं समणोवासगं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण जाव साइमे उवक्खडाविते तं गच्छामोणं देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं जाव साइमं आस्सादेमाणा जाव पडिजागरमाणा विहरामो ॥ १६ ॥ तएणं से संखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासगं एवं वयासी णो खलु कप्पइ मे देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आस्साएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स

कर ऐसा बोलने लगा कि अहो देवानुप्रिय ! हमने विपुल अशनादि बनाया है, इस से तुम वहां चलो और अपन सब उस का आस्वादन यावत् पौषध की जागरणा जागते हुवे विचरेंगे ॥ १६ ॥ शंख श्रमणोपासक ऐसा बोला कि अहो देवानुप्रिय ! मुझे अशनादि भोगवकर यावत् पौषध करते हुवे विचरना नहीं कल्पता है परंतु पौषधशाला में यावत् पौषध करके विचरना मुझे कल्पता है, इस से अहो देवानुप्रिय ! तुम सुखपूर्वक

पोषध सहित जा० यावत् वि० विचरने को तं० इस भ छं० इच्छानुसार दे० देवानुप्रिय तु० तुम वि० पोषध सहित जा० यावत् वि० विचरो ॥१७॥ त० तब से० वह पो० पुष्कली स० श्रमणो बहुत अ० अन्न आ० अस्वादते जा० यावत् वि० विचरो ॥१७॥ त० तब से० वह पो० पुष्कली स० श्रमणो पासक सं० शंख स० श्रमणोपासक की अं० पास से पो० पौषध शाला में से प० नीकल कर सा० श्रावस्ती ण० नगरी की म० बीचमें जे० जहां ते० व स० श्रमणोपासक ते० वहां उ० आकर ते० उन स० श्रमणोपासकों को ए० ऐसा व० बोला दे० देवानुप्रिय सं० शंख स० श्रमणोपासक पो० पौषध शाला में पो० पौषध सहित जा० यावत् वि० विचरता है ते० इसलिये छं० इच्छानुसार

विहरित्तए। कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव विहरित्तए,तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे विउलं असणं ४ आस्सादेमाणा जाव विहरह ॥ १७ ॥ तएणं से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता सावत्थिं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, ते समणोवासए एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! संखे समणोवासए पोसहसालाए

अशनादिक का आस्वादन करते हुवे विचरो ॥ १७ ॥ फीर वह पोखली श्रावक शंख श्रावकी पास से पौषधशाला में से नीकलकर श्रावस्ती नगरी की बीच में होकर उन श्रमणोपासकों की पास आया और बोला कि अहो देवानुप्रिय! शंख श्रमणोपासक पौषधशाला में पौषध करते हुवे विचरते हैं इस से तुम

दे० देवानुप्रिय तु० तुम वि० विपुल अ० अशन जा० यावत् वि० विचरो सं० शंख स० श्रमणो-
पासक नो० नहीं आ० आता है ॥ १८ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक वि० विपुल अ० अशन ४
आ० आस्वादते जा० यावत् वि० विचरते थे ॥ १९ ॥ त० तब त० उस सं० शंख स० श्रमणो-
पासक को पु० पूर्व रात्रि में ध० धर्म जागरणा जा० करते अ० यह ए० ऐसा जा० यावत् स० उत्पन्न
हुआ से० श्रेय मे० मुझे क० कल पा० प्रभात में जा० यावत् ज० ज्वलंत स० श्रमण भ० भगवन्त

पोसहिए जाव विहरइ तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे विउलं असणं ४ जाव विहरह
संखेणं समणोवासए णो हव्व मागच्छइ ॥ १८ ॥ तएणं ते समणोवासगा तं विउलं
असणं ४ आस्साएमाणा जाव विहरंति ॥ १९ ॥ तएणं तस्स संखस्स समणोवास-
गस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्म जागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे जाव
समुप्पज्जित्था, सेयं खलु मे कल्लं पादु जाव जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता

अर्थ

इच्छानुसार अशनादि भोगवकर पाक्षिक पौषध करते हुवे विचरो. शंख श्रमणोपासक अभी नहीं आसकते
हैं ॥ १८ ॥ फीर वे श्रमणोपासक उस विपुल अशनादि आस्वादते हुवे विचरने लगे ॥ १९ ॥ उस समय में
शंख श्रमणोपापक को पूर्व रात्रि में धर्म जागरणा करते हुवे ऐसा अध्यवसाय हुवा कि कल प्रभात में सूर्योदय
होते श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर वहां से आये पीछे पौषध व्रत पालना मुझे

म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर त० वहां से प० पीछे आते प० पाक्षिक पो० पौषध पा० पारने को त्ति० ऐसा क० करके ए० ऐसा सं० विचार कर क० कल जा० यावत् ज० ज्वलंत पो० पौषध शाला में से प० निकलकर सु० शुद्ध पा० प्रवेश करने योग म० मंगलिक व० वस्त्र प० श्रेष्ठ प० पहिना हुवा सा० अपने गिं० गृह मे प० नीकल कर पा० पाद विहार से सा० श्रावस्ती ण० नगरी के म० बिच में जा० यावत प० पर्युपासना की अ० अभिगम न० नहीं है ॥ २० ॥ त० तत्र

नमंसित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलंते पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता सुद्धाप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता पायविहारचारेणं सावत्थिं णयरिं मज्झं मज्झेणं जाव पज्जुवासइ, "अभिगमोनत्थि" ॥ २० ॥ तएणं ते समणोवासगा कल्लं पादु जाव जलंते ण्हाया कय जाव सरीरा सएहिं

श्रेय है. ऐसा विचारकर प्रभात होते पौषधशालामें से नीकलकर, शुद्ध परिषदामें प्रवेशन करने योग्य मंगलीक श्रेष्ठ वस्त्र धारण कर स्वगृह से नीकलकर, पग से चलते हुए श्रावस्ती नगरी की बीच में होकर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आये, और वंदना नमस्कार कर यावत् पर्युपासना करने लगे. इन में अभिगम नहीं है क्यों कि वह पौषध व्रत में था ॥ २० ॥ अन्य सब श्रमणोपासकने प्रभात होते स्नान

ते० वे स० श्रमणोपासक क० काल पा० प्रातः में जा० यावत् ज० ज्वलंत ण्हा० स्नान किया क० कृत
जा० यावत् स० शरीर वाले अ० अपने गि० गृह से प० नीकल कर ए० एकत्रित मि० मीलते हैं
शे० शेष अ० जैसे प० प्रथम जा० यावत् प० पर्युपासना की ॥ २१ ॥ त० तब स० श्रमण भ०
भगवन्त म० महावीर ते० उन स० श्रमणोपासकों को ती० उस ध० धर्मकथा जा० यावत् आ० आज्ञा
से आ० आराधक भ० होता है ॥ २२ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगवंत
म० महावीर की अ० पास ध० धर्म सो० सुनकर नि० अवधार कर ह० हृष्ट तु० तुष्ट उ० उठकर स०

सएहिं गिहेहिंतो पडिणिक्खमंति २ त्ता एगयओ मिलायंति २ त्ता, सेसं जहा पढमं
जाव पज्जुवासइ ॥ २१ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं
तीसेय धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवइ ॥ २२ ॥ तएणं ते समणोवासगा
समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति २ त्ता

किया, यावत् अलंकारों से शरीर विभूषित किया अपने २ गृह से नीकलकर एकत्रित हुए. शेष
सब पहिले जैसे जानना यावत् पर्युपासना करने लगे ॥ २१ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उन श्रमणो-
पासकों को उस महती परिषदा में धर्मकथा सुनाइ यावत् आज्ञा का आराधक होता है ॥ २२ ॥ भगवंत
श्री महावीर स्वामी की पास से धर्म श्रवण कर के श्रमणोपासकों हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुए और श्रमण

श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर जे० जहां सं० शंख स० श्रमणोपासक ते० वहां उ० आकर सं० शंख स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले तु० तुमने दे० देवानुप्रिय हि० कल अ० हमको अ० स्वतःने ए० ऐसा व० कहाथा तु० तुम दे० देवानुप्रिय वि० विपुल अ० अशन जा० यावत् वि० विचरेंगे त० तब तु० तुम पो० पौषध शाला में जा० यावत् वि० विचरने को त० इससे सु० अच्छा तु० तुमको दे० देवानुप्रिय अ० हमको ही० नींदते हो ॥ २३ ॥ अ० आर्यो

समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता संखं समणोवासगं एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया! हिज्जो अम्हे अप्पणाचेव एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया! विउलं असणं जाव विहरिस्सामो तएणं तुम्मं पोसहसालाए जाव विहरिए तं सुठुणं तुम्मं देवाणुप्पिया! अम्हे हीलेसि ॥ २३ ॥ अज्जोत्ति! समणे भगवं महावीरे ते समणो-

भगवंत को वंदना नमस्कार कर शंख श्रमणोपासक को ऐसा बोले अहो देवानुप्रिय! तुमने स्वतःने हम को ऐसा कहा था कि विपुल अशनादि बनाकर उस को भोगते हुवे यावत् पाक्षिक पौषध अंगीकार करते हुवे विचरेंगे, फीर तुम पौषधशाला में यावत् पौषध कर विचरने लगे तो अहो देवानुप्रिय! तुम हमारी हीलना करो यह क्या अच्छा है? ॥२३॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उन श्रमणोपासकों को ऐसा बोले कि

स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० उन स० श्रमणोपासकों को ए० ऐसा व० बोले मा० मत अ० आर्यो तु० तुम सं० शंख स० श्रमणोपासक की ही० हीलनाकरो नि० निंदा करो खिं० खिंसना करो अ० अवज्ञा करो सं० शंख स० श्रमणोपासक पि० प्रिय धर्मी द० दृढधर्मी सु० अच्छी जा० जागरणा जा० जगा ॥ २४ ॥ भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले क० कितने प्रकार की भं० भगवन् जा० जागरणा गो० गौतम ति० तीन प्रकार की जा० जागरणा प० प्ररूपी बु० बुद्ध जागरिका अ० अबुद्ध जागरिका सु०

वासए एवं वयासी माणं अज्जो ! तुब्भे संखं समणोवासगं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह, अवमण्णह संखेणं समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिए ॥२४॥ भंतेत्ति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ २ त्ता णमंसइ २ त्ता एवं वयासी कइविहाणं भंते ! जागरिया पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जागरिया पण्णत्ता तंजहा बुद्धजागरिया, अबुद्ध जागरिया, सुदक्खु जागरिया । से केणट्ठेणं

भावार्थ

अहो आर्यो ! तुम शंख श्रमणोपासक की हीलना, निंदा, खिंसना व गर्हा मत करो, क्यों कि शंख श्रमणोपासक प्रिय धर्मी दृढ धर्मी है. इन्होंने प्रमाद रहित जागरणा की है ॥ २४ ॥ फीर भगवान् गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! जागरणा कितने

सुदक्षु जागरिका से० वह | के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा बु० कहा जाता है त्रि० तीन प्रकार की जा०
जागरिका प० प्ररूपी बु० बुद्ध जागरिका अ० अबुद्ध जागरिका सु० सुदक्षु जागरिका गो० गौतम
जे० जो अ० अरिहंत भ० भगवन्त उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दं० दर्शन के धारक ज० जैसे खं० स्कंदक
जा० यावत् स० सर्वज्ञ स० सर्व दर्शी बु० बुद्ध बु० बुद्ध जागरिका जा० जागते हैं जे० जो अ० अनगार भ०
भगवन्त इ० ईर्या समिति वाले भा० भाषा समिति वाले जा० यावत् गु० गुप्त बं० ब्रह्मचारी अ० अबुद्ध
अ० अबुद्ध जागरिका जा० जागते हैं जे० जो स० श्रमणोपासक अ० जाने जी० जीवाजीव जा०

भंते ! एवं वुच्चइ तिविहा जागरिया प० तं० बुद्ध जागरिया, अबुद्ध जागरिया,
सुदक्खु जागरिया ? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पण्णणाण दंसणधरा जहा
खंदए जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी एएणं बुद्धा बुद्धजागरियं जागरंति। जेइमे अणगारा भगवंतो
इरियासमिया भासासमिया जाव गुत्तबंभयारी, एएणं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरंति।
जे इमे समणोवासगा अभिगय जीवाजीवा जाव विहरंति; एएणं सुदक्खु जागरियं

प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! जागरणा के तीन भेद कहे हैं. बुद्ध जागरणा, अबुद्ध जागरणा व
सुदर्शन जागरणा. अहो जो उत्पन्न ज्ञान दर्शन धारन करनेवाले वगैरह जैसा स्कंदक में कहा वैसे गुणों-
वाले यावत् सर्वज्ञ सर्व दर्शी जो अरिहंत होते हैं वे बुद्ध जागरणा जागते हैं. जो अनगार ईर्या समिति

यावत् वि० विचरते हैं सु० सुदक्षु जागरिका जा० जागते हैं से० वह ते०इसलिये गो० गौतम वु० कहा जाता है ति० तीन प्रकार की जा० जागरिका जा० यावत् सु० सुदक्षु जागरिका ॥ २५ ॥ त० तब से० वह सं० शंख स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगन्त म० महावीर को वं० वंदन कर न०नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले को० क्रोध वश से भं० भगवन् जी० जीव किं० क्या बं०बांधे किं० क्या प० करे कि० चि० चिने किं० क्या उ० उपचिने सं० शंख को० क्रोधवश से जी० जीव आ०आयुष्य व० वर्जकर

जागरंति ॥ से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तिविहा जागरिया जाव सुदक्खु जागरिया ॥ २५ ॥ तएणं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी कोह वसट्टेणं भंते ! जीवे किं बंधइ किं पकरेइ किं चिणाइ किं उवचिणाइ ? संखा ! कोहवसट्टेणं जीवा आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिल बंधणबद्धाओ एवं जहा पढमेसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणु-

भावार्थ

भाषा समिति यावत् गुप्त ब्रह्मचारी होते हैं वे अबुद्ध जागरणा जागते हैं और जो जीव का स्वरूप जाननेवाले श्रमणोपासक होते हैं वे सुदक्षु जागरणा जागते हैं इस से अहो गौतम ! तीन जागरणा कही गई है॥२५॥ फीर वह शंख श्रमणोपासक श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! क्रोध में वर्तता हुवा जीव क्या बांधता है, क्या करता है, क्या एकत्रित करता है ? अहो

स० सात क० कर्म प्रकृति सि० शिथिल बं० बंधन ब० बंधीहुई ए० ऐसे ज० जैसे प० प्रथम शतक में अ० असंवृत अनगारका ए० ऐसे लो० लोभवश से अ० परिभ्रमण करे ॥ २६ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० पास से ए० इस अर्थ सो० सुनकर णि० अवधार कर भी० डरेहुवे सं० संसार भयसे उद्विग्न स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन कर न० नमस्कार कर जे० जहां सं० शंख स० श्रमणोपासक ते० तहां उ० जावे उ० जाकर

परियट्टइ ॥ माणवसट्टेणं भंते ! एवं चेव, एवं मायावसट्टेवि, एवं लोभवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ ॥ २६ ॥ तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया तत्था तासिया संसारभयुव्विग्गा, समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता, जेणेव संखे समणोवासए तेणेव

शंख ! क्रोध में वर्तनेवाला जीव आयुष्य छोडकर सात कर्म प्रकृतियों यदि शिथिल बंधवाली होवे तो दृढ बंधवाली करता है वगैरह यावत् प्रथम शतक में असंवृति साधु के अधिकार में जैसा कहा वैसा सब जानना यावत् अनंत संसार परिभ्रमण करे वहां तक जानना जैसे क्रोध का कहा वैसे ही मान माया व लोभ का कहना ॥ २६ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास ऐसा सुनकर वे श्रमणोपासक भय भीत हुए, त्रसित हुए, मन में उद्वेग उत्पन्न हुवा संसार भय से उद्वेग पामे और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को

सं० शंख स० श्रमणोपासक को वं० वंदन किया न० नमस्कार किया ए० इसअर्थ को वि० विनय से भु०
वारंवार खा० क्षमाया ॥ २७ ॥ तब ते० वे स० श्रमणोपासक से० शेष ज० जैसे आ० आलंभिका में
जा० यावत् प० पीछे गये ॥ २८ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को
वं० वंदन कर न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले प० समर्थ भं० भगवन् सं० शंख स० श्रमणोपासक
दे० देवानुप्रिय की अं० पास से० शेष ज० जैसे इ० ऋषि भद्रपुत्र का जा० यावत् अं० अंत का०

उवागच्छंति २ त्ता संखं समणोवासगं वंदंति नमंसंति एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २
खामेंति ॥ २७ ॥ तएणं ते समणोवासगा सेसं जहा आलंभियाए जाव पडिगया
॥ २८ ॥ भंते त्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता
णमंसित्ता एवं वयासी पभूणं भंते ! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिए सेसं
जहाइसे भद्दपुत्तस्स जाव अंतं काहिति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥

भावार्थ

वंदना नमस्कार कर शंख श्रमणोपासक की पास आये और उन की पुनःपुनः क्षमा याची ॥ २७ ॥ फीर
वे श्रमणोपासक आलंभिका नगरी के श्रावक की समान जहां से आये थे वहां पीछे चले गये ॥ २८ ॥
भगवान् गौतम स्वामी श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भग-
वन् ! शंख श्रमणोपासक आप की पास मुंडित बनकर गृहस्थावास से साधुपना अंगीकार करने को क्या

करेगा से० वह भं भगवन् ॥ १२ ॥ १ ॥ × × +

ते० उस काल ते० उस समय में को० कौशाम्बी ण० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त चं० चंद्रोत्तरा-
यनक चे० चैत्य व० वर्णन युक्त ॥ १ ॥ त० उस को० कौशाम्बी न० नगरी में सहस्रानीक र० राजा
का पो० पौत्र स० शतानीक र० राजा का पुत्र चे० चेडा राजा का न० दौहित्र मि० मृगावती दे० देवी

दुवालसम सयस्सय पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ १ ॥ + × ×

तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबीणामं णयरी होत्था वण्णओ, चंदोत्तरायणे चेइए
वण्णओ, ॥ १ ॥ तत्थणं कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते, सयाणीयस्स
रण्णो पुत्ते, चेडगस्स रण्णो नत्तुए, मिगावतीए देवीए अत्तए, जयंतीए समणोवासियाए

समर्थ है ? अहो गौतम ! जैसे ऋषिभद्रपुत्र का कहा वैसे ही यहां जानना यावत् अंत करेंगे. अहो भग-
वन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ १ ॥ ०

प्रथम उद्देशे में श्रावकका कथन किया दूसरे उद्देशे में श्राविका का कथन करते हैं. उस काल उस
समय में कौशाम्बी नामक नगरी थी उस की ईशान कौन में चंद्रोत्तरायण नामक चैत्य था उस का वर्णन
उववाइ सूत्र से जानना ॥ १ ॥ उस कौशाम्बी नगरी में सहस्रानिक राजा का पौत्र, शतानिक राजा का
पुत्र, चेटक राजा का दौहित्र, मृगावती रानी का आत्मज, और जयंति श्रमणोपासिका का भतीजा उदायन

का अ० आत्मज ज० जयंती स० श्राविका का भ० भत्तिजा उ० उदायन रा० राजा हो० था व० वर्णन युक्त ॥ २ ॥ त० उस को० कौशाम्बी न० नगरी में स० शतानीक र० राजा की भ० भार्या चे० चेडा राजा की धू० पुत्री उ० उदायन राजा की मा० माता ज० जयंती स०श्रमणोपासिका की भा० भावज मि० मृगावती दे० देवी हो० थी व० वर्णन युक्त जा० यावत् सु० सुरूप स० श्रमणोपासिका जा० यावत् वि० विचरती थी ॥ ३ ॥ त० उस को० कौशाम्बी ण० नगरी में स० सहस्रानीक राजाकी धू० पुत्री

भात्तिज्जए, उदायणे णामं राया होत्था, वण्णओ ॥ २ ॥ तत्थणं कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा, सयाणीयस्स रण्णो भज्जा, चेडगस्स रण्णो धूया, उदायणस्स रण्णो माया, जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मियावती णामं देवी होत्था वण्णओ, तंजहा जाव सुरूवा समणोवासिया जाव विहरइ ॥ ३ ॥ तत्थणं कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया, सयाणीस्स रण्णो भगिणी, उदायणस्स रण्णो

भावार्थ नामक राजा था. उस का वर्णन कुणिक की समान जानना ॥ २ ॥ उस कौशाम्बी नगरी में सहस्रानिक राजा की पुत्रवधू, शतानिक राजा की भार्या, चेटक राजा की पुत्री, उदायन राजा की माता, जयंती श्रमणोपासिका की भावज मृगावती नामक रानी थी. वह वर्णन योग्य यावत् सुरूपा यावत् श्रमणोपासिका थी ॥ ३ ॥ वहां पर कौशाम्बी नगरी में सहस्रानिक राजा की पुत्री, शतानिक राजा की भगिनी,

स० शतानीक राजा की भ० भगिनी उ० उदायन राजा की पि० भुआ मि० मृगावती देवी की नणंद वे० वैशालीक की सा० श्राविका अ० अरिहंत पु० पूर्वशय्यांतर देनेवाली ज० जयन्ती स० श्रमणोपासीका हो० थी सु० सुकुमार जा० यावत् सु० सुरूप आ० जाने जा० यावत् वि० विचरती है ॥ ४ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में सा० स्वामी अ० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पर्युपासना करे ॥ ५ ॥ त० तब

पिउत्था, मिगावतीए देवीए णणंदा, वेसालीसावयाणं अरहंताणं पुव्वसिज्जातरी जयंती समणोवासिया होत्था सुकुमाल जाव सुरूवा, अभिगय जाव विहरइ ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसड्ढे जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ ५ ॥ तएणं

उदायन राजा की पितृस्वसा (भूआ) मृगावती देवी की ननंद, वैशालिक श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की श्राविका, अरिहंत भगवंत को प्रथम शैय्या देनेवाली जयंती नामक श्राविका थी. वह सुरूपा यावत् जीवाजीव का स्वरूप जानती हुई विचरती थी ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे यावत् परिषदा पर्युपासना करने लगी ॥ ५ ॥ उस समय में उदायन राजा इस बात

१ शैय्या का दान देने मे जयंति श्राविका प्रसिद्ध है. जो नये साधु आते थे वे प्रथम शैय्या की याचना करते थे इस से पूर्व शैय्यातरी कही है.

से० वह उ० उदायन रा० राजा इ० इस क० कथा को ल० प्राप्त होते ह०हृष्ट तुष्ट को० कौटुम्बिक पुरुषों को स०बोलाकर ए० ऐसा व०बोला खि० शीघ्र दे०देवानुप्रिय को० कौशाम्बी न०नगरी को स०आभ्यंतर स० सर्व जा० यावत् प० पर्युपासना करे ॥ ६ ॥ त० तब सा० वह ज० जयन्ती स० श्रमणोपासिका इ० इस क० कथाको ल० प्राप्त होते ह० हृष्ट तुष्ट जे० जहां मि० मृगावती दे० देवी ते० तहां उ० आकर ए० ऐसा व० बोली ए० ऐसा ज० जैसे ण० नवमें शतक में उ० ऋषभदत्त जा० यावत् भ० होगा त०

से उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २त्ता, एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कोसंबिं णयरिं सब्भिंतर बाहिरियं एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव पज्जुवासइ ॥ ६ ॥ तएणं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ तुट्ठा जेणेव मिगावतीदेवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एवं वयासी एवं जहा णवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ तएणं सा मियावई देवी

सुनकर बहुत हर्षित यावत् आनंदित हुए और कौटुम्बिक पुरुषों को बोलाकर ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! कौशाम्बी नगरी को आभ्यंतर व बाहिर साफ करो वगैरह वर्णन जैसे कूणिक राजा का कहा वैसे ही जानना ॥ ६ ॥ उस समय में जयंति श्रमणोपासिकाने इस बात को सुनी और हृष्ट तुष्ट बनकर मृगावती रानी की पास गई और जैसे नववे शतक में ऋषभदत्त ब्राह्मणने देवानंदा ब्राह्मणी को कहा

त० तब सा० वह मि० मृगावती देवी ज० जयंती स० श्रमणोपासिका को ज० जैसे दे० देवानंदा जा० यावत् प० सुने ॥ ७ ॥ त० तब सा० वह मि० मृगावती देवी को० कौटुम्बिक पुरुषों को स० बोलाकर खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय ल० लघु कर्ण वाले जु० युक्त जा० यावत् ध० धार्मिक जा० यान प्रवर जु० युक्त उ० तैयार जा० यावत् उ० तैयार करते हैं जा० यावत् प० पीछी देते हैं ॥ ८ ॥ सरल शब्दार्थ

जयंतीए समणोवासियाए जहा देवाणंदा जाव पडिसुणेइ ॥ ७ ॥ तएणं सा मिया-
वई देवी कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !
लहुकरणजुत्तारोहिया जाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठावेह, जाव उवट्ठावेंति
जाव पच्चप्पिणंति ॥ ८ ॥ तएणं सा मियावई देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं
ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव अंतेउराओ णिग्गच्छंति २ त्ता

वैसा कहने लगी. और मृगावती रानीने भी देवानंदा ब्राह्मणी जैसे सब श्रवण किया ॥ ७ ॥ फीर मृगा-
वती देवीने कौटुम्बिक पुरुषों को बोलाये और कहा की लघुकर्णवाले व शीघ्रगतिवाले यावत् धार्मिक
श्रेष्ठ रथ शीघ्र तैयार करके मुझे मेरी आज्ञा पीछी दो. कौटुम्बिक पुरुषोंने ऐसा किया ॥ ८ ॥ फीर मृगा-
वती रानीने जयंती श्राविका की साथ स्नान किया, कोगळे किये, तिलमसादिक किये यावत् शरीर अलंकृत

जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव दुरूढा॥ ९॥ तएणं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढासमाणी णियगपरियाल जहा उसभदत्तो जाव धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ॥ १०॥तएणं सा मियावई देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं बहूहिं खुज्जाहिं जहा देवाणंदा जाव वंदइ णमंसइ, उदायणं रायं पुरओ कट्टु ठिइया चेव पज्जुवासइ ॥ ११॥तएणं समणे भगवं महावीरे उदायणस्स रण्णो मियावईए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसेय महइ जाव धम्मं परिकहेइ जाव परिसा पडिगया ॥ उदायणे पडि-

क्रिया, बहुत कुब्ज वगैरह दासियों के परिवार से अंतःपुर से नीकलकर बाहिर उपस्थान शाला में धार्मिक रथ की पास आकर उस में बैठी ॥ ९ ॥ फीर वह मृगावती देवी जयंती श्रमणोपासिका की साथ वाहन पर बैठी हुइ अपने परिवार सहित वगैरह जैसे ऋषभदत्त का कहा वैसे ही धार्मिक रथसे नीचे उतरे ॥१०॥ वह मृगावती देवी बहुत दासियों के परिवार से जयंति श्राविकाके साथ देवानंदा जैसे वंदना नमस्कार किया और उदायन राजा को आगे करके बैठी ॥ ११ ॥ फीर श्रमण भगवंत महावीरने उदायन राजा मृगावती रानी, व जयंति श्रमणोपासिका को उस महती परिषदा में धर्मकथा सुनाइ यावत् परिषदा

गए, मियावईवि पडिगया ॥ १२ ॥ तएणं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठा समणं भगवं महावीरं वदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी कहण्णं भंते ! जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति ? जयंती! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं एवं खलु जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति, एवं जहा पढम सए जाव वीईवयंति ॥ १३ ॥ भवसिद्धियत्तणं भंते ! जीवाणं किं सभावओय परिणामओय? जयंती ! सभावओय णो परिणामओय ॥ १४ ॥

पीछी गई. उदायन राजा पीछा गया और मृगावती रानी भी पीछीगइ ॥ १२ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास से जयंती श्राविका धर्म सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुई और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोलने लगी कि अहो भगवन् ! जीव गुरुत्व कैसे प्राप्त करता है ? अहो जयंती ! प्राणातिपात से यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से जीव गुरुत्व प्राप्त करता है. वगैरह जैसे प्रथम शतक में कहा वैसे ही जानना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीवों को भवसिद्धिकपना स्वभाव से है या परिणाम से है ? अहो जयंती ! जीवों को भवसिद्धिकपना स्वभाव से है परंतु परिणाम से नहीं है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब भवसिद्धिक जीवों सीझेंगे ? हां जयंती ! सब भवसिद्धिक

१-२ स्वभाव जैसे पुद्गलका मूर्तत्व और परिणाम सो नहीं हुवे का होवे जैसे पुरुष की बाल्यावस्था में से तरुणावस्था

सव्वेविणं भंते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ? हंता जयंती ! सव्वेविणं भवसि-
द्धिया जीवा सिज्झिस्संति । जइणं भंते ! सव्वेवि भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति
तम्हाणं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणं खाइएणं
अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सव्वेविणं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति णो चेवणं भव-
सिद्धिय विरहिए लोए भविस्सइ ? जयंती ! से जहा नामए सव्वागाससेढी सिया
अणादिया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा साणं परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समए २
अवहीरमाणी २ अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरइ णो चेवणं अवहिरिया

जीवों सीझेंगे. अहो भगवन् ! यदि सब भव्य जीवों सीझेंगे तब क्या भवसिद्धिक जीवों से रहित यह लोक होगा ? अहो जयंती ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् सब भवसिद्धिक जीवों से रहित यह लोक नहीं होगा. अहो भगवन् ! यह किस तरह कहाजाय कि सब भवसिद्धिक जीवों सीझेंगे परंतु भवसिद्धिये जीव रहित लोक नहीं होगा ? अहो जयंती ! अनादि अनंत परित्त व समस्त लोकालोक में श्रेण्यांतर परिवृत्त आकाशश्रेणि है. उस में से प्रति समय परमाणु पुद्गल जितना खण्ड नीकालते २ अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी तक नीकाले परंतु वह आकाश श्रेणी खाली नहीं होती है, वैसे ही जयंती सर्व ! भवसि-

सिया से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ सव्वेविणं जाव भविस्सइ ॥ १५ ॥ सुत्तत्तं भंते! साहू, जागरियत्तं साहू? जयंती! अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगइयाणं जाव साहू? जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया, अहम्माणुया, अहम्मिट्ठा, अहम्मक्खाई अहम्मपलोई, अहम्मपलज्जमाणा, अहम्मसमुदायारा, अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति एएसिणं सुत्तत्तं साहू ॥ एएणं जीवा सुत्ता समाणा णो बहूणं

द्धिक जीवों सिद्ध होने से भविसिद्धिक रहित लोक नहीं होगा ÷ ॥ १५ ॥ अहो भगवन्! क्या सोना

÷ अहो भगवन्! क्या समस्त जीव सीझेंगे? हां समस्त जीव सीझेंगे. यदि सीझे नहीं तो भवसिद्धिकपना होवे नहीं. और जब सब भवसिद्धिक सीझेंगे तब भवसिद्धिक शून्यतावाला लोक होवे ऐसा नहीं है. उस पर समय का दृष्टांत बताते हे. सर्व एव अनागतकालसमया वर्तमानतां लप्स्यन्ते । भवति स नामातीतः प्राप्तो यो नामवर्तमानत्वं । एष्यश्च नाम स भवति यः प्राप्स्यति वर्तमानत्वम् ॥ अर्थात् जितने अनागत काल के समय है वे सब वर्तमानता को प्राप्त होते है और वर्तमानवाले अतीत होते हैं, और जो वर्तमान को प्राप्त होवेंगे सो अनागत है. परंतु अनागत समय रहित लोक कदापि नहीं होता है.

पाणभूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति ॥ एएणं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणंवा परंवा तदुभयंवा णो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति ॥ एएणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू ॥ जयंती ! जे इमे जीवा धम्मत्थिया धम्माणुगा जाव धम्मेणंचेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसिणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ॥ एएणं जीवा जागरमाणा बहूणं पाणाणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति ॥ तेणं जीवा जागरासमाणा अप्पाणंवा परंवा तदुभयं-वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति ॥ एएणं जीवा जागरमाणा

अच्छा या जागृत रहना अच्छा ? अहो जयंती ! कितनेक जीवों का सोना अच्छा है और कितनेक जीवों का जागृत रहना अच्छा है. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीवों का सोना अच्छा और कितनेक जीवों का जागना अच्छा कहा ? अहो जयंती ! जो जीव अधर्मी हैं, अधर्म में अनुरक्त हैं, अधर्म इच्छकारी हैं, अधर्म अवतारवाले हैं, अधर्म को ही आचरने रूप देखते हैं, अधर्म का उपदेश करते हैं, अधर्मियों का समुदाय है और अधर्मवृत्ति से ही आजीविका करते हैं ऐसे जीवों सोते हुवे अच्छे हैं क्योंकि वे प्राणियों को दुःख सोक यावत् परितापना उत्पन्न नहीं कर सकते हैं. अपने, अन्य के व उभय के

धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति ॥ एएसिणं जीवाणं जागरियत्तं साहू से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ॥ १६ ॥ बलियत्तं भंते! साहू दुब्बलियत्तं साहू? जयंती अत्थेगइयाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जाव साहू? जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति एएसिणं जीवाणं दुब्बालियत्तं साहू, एएणं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्ब-लियत्तस्स वत्तव्वया भाणियव्वा ॥ बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं जाव

आत्मा को अधर्म से संयोजना करते हैं और जो जीव धर्मी, धर्मानुरागवाले, यावत् धर्म से आजीविका करनेवाले होते हैं वे जागते हुवे अच्छे हैं. वे जागते हुवे प्राणियों को अदुःख यावत् अपरितापना करते हैं और स्वतः को, अन्य को व उभय को अनेक धार्मिक संयोगो से जोडनेवाले होते हैं. वे जीवों जागते हुवे धर्म जागरणा जागते हैं; इस से इन जीवों का जागना अच्छा है ॥१६॥ अहो भगवन्! क्या बलवान् अच्छ या दुर्बल अच्छे? अहो जयंती! कितनेक जीवों बलवन्त अच्छे व कितनेक जीवों निर्बल अच्छे. अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है? अहो जयंती! जो जीवों अधर्मी, अधर्मानुरागी यावत् पूर्वोक्त प्रकार से जो अधर्मी जीवों हैं वे दुर्बल अच्छे हैं क्यों कि वे दुर्बल होने से प्राणों को दुःख

संजोएत्तारो भवंति ॥ एएसिणं जीवाणं वलियत्तं साहू ॥ से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ तंचेव जाव साहू ॥ १७ ॥ दक्खत्तं भंते ! साहू आलसियत्तं साहू? जयंती ! अत्थेगइयाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू अत्थेगइयाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तंचेव जाव साहू ? जयंती ! जेइमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति, एएसिणं जीवाणं आलसियत्तं साहू, एएसिणं जीवा अलसाउमाणा णो बहूणं जहा सुत्ता तहा अलसा भाणियव्वा, जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा

यावत् परितापना उत्पन्न नहीं कर सकते हैं और स्वतः को, अन्य को व उभय को अधर्म में नहीं जोड सकते हैं. वगैरह सब सुप्त जीवों जैसे कहना. और बलवन्त को जाग्रत रहते जीवों जैसे कहना. अहो जयंती ! उक्त कारनों से कितनेक जीवों बलवन्त अच्छे हैं और कितनेक जीवों जागृत अच्छे हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! उद्यम अच्छा या आलस्य अच्छा ? अहो जयंती ! कितनेक जीवों को उद्यम अच्छा है और कितनेक जीवों को आलस्य अच्छा है. अहो भगवन् ! यह किस तरह ? अहो जयंती ! जो जीव अधर्मी, अधर्मानुरागी यावत् विचरते हैं उन जीवों को आलस्य अच्छा है, क्यों कि वे सुप्त जीवों समान प्राणियों को दुःख वगैरह नहीं दे सकते हैं और स्वतः को, अन्य को व उभय को अधर्म से नहीं जोड- सकते हैं. और जो धर्मी होते हैं उनको उद्यम अच्छा है क्योंकि वे प्राणियों को सुख वगैरह उत्पन्न करते हैं

जाव संजोएत्तारो भवंति,एएणं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं,उवज्झायवेयावच्चेहिं, थेरवेयावच्चेहिं, तवस्सीवेयावच्चेहिं, गिलाणवेयावच्चेहिं, सेह वेयावच्चेहिं, कुलवेयावच्चेहिं, गणवेयावच्चेहिं, संघवेयावच्चेहिं साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति, एएसिणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, से तेणट्ठेणं तंचेव जाव साहू ॥१७॥ सोइंदिय वसट्टेणं भंते ! जीवे किं बंधइ, एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ ॥ एवं चक्खिंदियवसट्टेवि, जाव फासिंदियवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ॥ २१ ॥ तएणं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठा सेसं जहा देवाणंदा तहेव पव्वइए जाव सव्व दुक्खप्प-

और स्वतः को, अन्यको व उभय को धार्मिक कार्य में जोडते हैं और भी उद्यमी जीव आचार्य, उपाध्याय स्थविर, तपस्वी, ग्लानि, नव दीक्षित, कुल, गण, व साधु की वैयावृत्य में आत्मा को जोडनेवाले होते हैं. इस से वे जीवों उद्यमी अच्छे हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! श्रोतेन्द्रिय के वश होनेवाला जीव क्या बांधता है ? अहो जयंती! जैसे क्रोधका कहा वैसेही सब कहना, और श्रोत्रेन्द्रिय जैसे शेष सब इन्द्रियों का जानना ॥१९॥ अब जयंती श्रमणोपासिका भगवंत श्री महावीर स्वामी की पास धर्म सुनकर हृष्ट तुष्ट हुई वगैरह सब

रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात पु० पृथ्वी प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे प० प्रथमा दो० दूसरी जा० यावत् स० सातवी ॥ १ ॥ प० प्रथमा भं० भगवन् पु० पृथ्वी किं० क्या ना० नाम गो० गोत्र प० प्ररूपा गो० गौतम घ०

हीणा ॥ सेवं भंते भंतेति ॥ दुवालसम सयस्सयाबितीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ २ ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा—पढमा दोच्चा जाव सत्तमा ॥ १ ॥ पढमाणं भंते ! पुढवी किं नामा किं गोत्ता पण्णत्ता ? गोयमा ! घम्मा णामेणं, रयणप्पभा गोत्तेणं,

देवानंदा जैसे कहना यावत् प्रव्रजित हुई और सब दुःखों से रहित हुई. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ २ ॥ ० ०

दूसरे उद्देशे के अंत में कर्मबंध कहा. बहुल कर्मी जीव नरक में जाते हैं इस से तीसरे उद्देशे में नरक का प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कही पहिली, दूसरी यावत् सातवी ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! पहिली पृथ्वी का क्या नाम व गौत्र कहा है ? अहो गौतम ! १ पहिली पृथ्वी का घम्मा नाम कहा है और रत्नप्रभा गौत्र कहा है २ दूसरी का वंशा

घम्मा ना० नाम र० रत्नप्रभा गो०गोत्र ए० ऐसे ज० जैसे जी० जीवाभिगम में प० प्रथम णे०नारकी उ०
उद्देश सो० वह णि० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् अ० अल्पाबहुत्व ॥ १२ ॥ ३ ॥

एवं जहा जीवाभिगमे पढमो णेरइय उद्देसओ सो णिरवसेसो भाणियव्वो जाव अप्पा-
बहुगत्ति॥२॥सेवं भंते भंतेत्ति॥दुवालसम सयस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥१२॥३॥

रायगिहे जाव एवं वयासी दो भंते! परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति एगयओ

अर्थ

नाम व शर्कर प्रभा गोत्र ३ तीसरी का सीला नाम व वालुप्रभा गोत्र ४ चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा
गोत्र ५ पांचवी का रिठा नाम व धूम्रप्रभा गोत्र ६ छठीका मघा नाम व तमप्रभा गोत्र और ७ सातवी का
माघवती नाम व तमतमा गोत्र वगैरह सब कथन जीवाभिगम सूत्र के प्रथम नरक उद्देशे में जितना कहा वह सब
जानना. यावत् सब से थोडे सातवी नरक के नेरिये उस से छठी नरक के नेरिये असंख्यातगुने, उस से
पांचवी नरक के नेरिये असंख्यातगुने. यों क्रम से पहिली नरक के नेरिये असंख्यातगुने. अहो भगवन्
आप के वचन सत्य हैं यह बारहवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ ३ ॥ *

तीसरे उद्देशे में पृथ्वी का कथन किया. वह पुद्गलात्मक होने से आगे पुद्गल का अधिकार कहते हैं.
राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिपदा वांदने को आइ, धर्मो
पदेश सुनकर पीछीगइ. उस समय में श्री गौतम स्वामीने भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार

साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! दुपदेसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ, एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ ॥ १ ॥ तिण्णि भंते! परमाणु पोग्गला एगयओ साहणित्तए किं भवइ? गोयमा! तिपदेसिए खंधे भवइ से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणु पोग्गला भवंति ॥ २ ॥ चत्तारि भंते! परमाणु पोग्गला पुच्छा? गोयमा! चउपदेसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि, तिहावि, चउहावि कज्जइ; दुहाकज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले,

कर प्रश्न किया कि अहो भगवन्! दो पुद्गल एकत्रित होते हैं और इस तरह एकत्रित बनकर क्या होता है? अहो गौतम! दो प्रदेश एकत्रिन होने से द्विप्रदेशात्मक स्कंध होता है और जब उस का दो विभाग करते हैं तब एक२ परमाणु पुद्गल ऐसे दो विभाग होते हैं. इस तरह द्विप्रदेशात्मक स्कंधका एक भांगा होता है ॥१॥ अहो भगवन्! तीन पुद्गल एकत्रित होकर क्या होता है? अहो गौतम! तीन प्रदेशात्मक स्कंध होता है. उस के विभाग करते दो व तीन विभाग होते हैं जब दो विभाग होते हैं तब एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध व एक परमाणु पुद्गल और तीन विभाग में एक२ परमाणु पुद्गलों के तीन विभाग होते हैं ॥ २ ॥ अहो
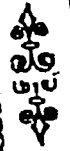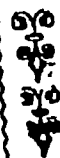
एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा दो दुपदेसिया खंधा भवंति. तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ. चउहाकज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति ॥ ३ ॥ पंच भंते ! परमाणु पोग्गला पुच्छा ? गोयमा ! पंच पएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि, तिहावि, चउहावि, पंचहावि कज्जइ. दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ चउपदेसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपदेसिए खंध, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ दो दुपदेसिया खधा भवंति चउहा कज्जमाणे एग-

भगवन् ! चार परमाणु पुद्गल मीलने से क्या होवे ? अहो गौतम ! चार प्रदेशात्मक स्कंध होवे. उस के दो, तीन व चार विभाग हो सकते हैं. जब दो टुकडे करते हैं तब एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध का व एक परमाणु पुद्गल का, अथवा दो २ परमाणु पुद्गलों के दो स्कंध. तीन टुकडे करने से एक २ परमाणु पुद्गल के दो टुकडे और एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध और चार टुकडे करने से एक २ परमाणु पुद्गलों के चार विभाग ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! पांच परमाणु मीलने से क्या होवे ? अहो गौतम ! पांच प्रदेशात्मक स्कंध होवे उस के भेद होने से दो तीन चार व पांच टुकडे होवे. यदि दो होवे तो चार प्रदेशात्मक स्कंध व एक एक

अर्थ

यओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणु पोग्गला भवंति ॥४॥ छब्भंते! परमाणु पुच्छा? गोयमा! छप्पदेसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव छविहावि कज्जइ दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा, दो तिपदेसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ; अहवा तिण्णि दुपदेसिया खंधा

परमाणु पुद्गल, तीन प्रदेशात्मक स्कंध व दो प्रदेशात्मक स्कंध, तीन टुकडे में एक२ परमाणु पुद्गलके दो टुकडे और तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल व दो दोप्रदेशात्मक स्कंध, चारमें तीन परमाणु पुद्गल व एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, पांचमें पांच अलग२ परमाणु पुद्गल ॥४॥ अहो भगवन्! छ परमाणु पुद्गलों एकत्रित होनेसे क्या होता है? अहो गौतम! छ परमाणु पुद्गलोंका छ प्रदेशात्मक एक स्कंध होता है. उसके दो, तीन, चार, पांच व छ टुकडे होते हैं. दो टुकडे करे तो पांच प्रदेशात्मक स्कंध व एक परमाणु पुद्गल, चार प्रदेशात्मक स्कंध व दो प्रदेशात्मक स्कंध और तीन प्रदेशात्मक स्कंध के दो टुकडे. तीन करने में एक २ परमाणु पुद्गलों के दो

भवंति. चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति. पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ छहा कज्जमाणे छपरमाणु पोग्गला भवंति ॥ ५ ॥ सत्त भंते ! परमाणु पोग्गला पुच्छा ? गोयमा सत्तपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव सत्तविहावि कज्जइ दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ

टुकडे और चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो प्रदेशात्मक स्कंध एक, तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक और एक परमाणु पुद्गल अथवा तीन दो प्रदेशात्मक स्कंध, चार टुकडे करते एक २ परमाणु पुद्गल के तीन और तीन प्रदेशात्मक स्कंध का एक, अथवा एक २ परमाणु पुद्गल के दो टुकडे और द्विप्रदेशात्मक स्कंध के दो टुकडे, पांच भाग में एक २ परमाणु के चार और द्विप्रदेशात्मक स्कंध का एक और छ भाग में भिन्न२ छ परमाणु पुद्गल ॥ ५ ॥ सात परमाणु पुद्गल की पृच्छा अहो गौतम ! सात परमाणु पुद्गल मीलकर सात प्रदेशात्मक स्कंध होता है. और उस के टुकडे करते दो यावत् सात टुकडे होते हैं. दो टुकडे करते एक

तिपदेसिए खंधे एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ पंच पदेसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा

ार्थ

परमाणु पुद्गल और एक छ प्रदेशात्मक स्कंध. अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक पंच प्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध. तीन टुकडे करते. परमाणु पुद्गल के दो और पांच प्रदेशात्मक स्कंध का एक अथवा एक परमाणु पुद्गल, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध व एक चार प्रदेशात्मक स्कंध; एक परमाणु पुद्गल दो तीन २ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल के तीन और चार प्रदेशात्मक स्कंध एक अथवा दो परमाणु पुद्गल के दो, द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक और तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक. अथवा एक

भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदिसिया खंधा भवंति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ । सत्तहा कज्जमाणे सत्तपरमाणुपोग्गला भवंति ॥ ६ ॥ अट्ठ परमाणुपोग्गला पुच्छा ? गोयमा! अट्ठ पदेसिएखंधे भवइ, जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ सत्त पदेसिएखंधे भवइ, अहवा-एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ छप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा-एगयओ तिपएसिएखंधे एगयओ पंचपदेसिएखंधे भवइ अहवा दो

र्थ

परमाणु पुद्गल और तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध. पांच टुकडे करते एक तरफ चार परमाणु पुद्गल और एक तरफ तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक, अथवा तीन परमाणु पुद्गल के तीन और दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध छ करते पांच परमाणु पुद्गल के पांच और द्विप्रदेशात्मक स्कंध का एक, सात टुकडे करते सात परमाणु पुद्गल के सात ॥ ६ ॥ अब आठ परमाणु पुद्गल की पृच्छा करते हैं. अहो गौतम ! आठ प्रदेशात्मक स्कंध होता है और उस के दो यावत् आठ टुकडे होते हैं. दो टुकडे करते एक परमाणु पुद्गल और सात प्रदेशात्मक स्कंध एक, द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक और छ प्रदेशात्मक स्कंध एक, तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक और

चउप्पदेसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ छप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंचपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपदेसिएखंधे, एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपदेसियाखंधा एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ दो तिपदेसियाइं खंधाइं भवंति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ पंचपदेसिएखधे भवइ, अहवा एगयओ दोण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखधे भवइ, एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु

भावार्थ

पांच प्रदेशात्मक स्कंध एक, दो चार प्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. तीन टुकडे करते दो परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक दो प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो दो प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक दो प्रदेशात्मक स्कंध दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध. चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक दो प्रदेशात्मक स्कंध एक

पोग्गला एगयओ दो तिपदेसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा-चत्तारि दुपदेसियाखंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ तिपदेसिएखंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिण्णि दुपदेसियाखंधा भवंति छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणु पोग्गला, एगयओ तिपदेसिएखंधे भवति अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छपरमाणुपोग्गला

चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो दो प्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. पांच टुकडे करते चार परमाणु पुद्गल एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. सात

एगयओ दुपदेसिएखंधे भवति ; अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणु पोग्गला भवंति. ॥७॥ णव भंते ! परमाणु पोग्गला पुच्छा ? गोयमा ! जाव णवहा कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ, एवं एक्केकं संचारिएहिं जाव अहवा एगयओ चउप्पदेसिए खधे, एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा-एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दो चउप्पदेसिया खंधा भवंति. अहवा-एगयओ दुपदेसिए एगयओ तिपदेसिए एगयओ चउप्पएसिए. खंधे भवइ. अहवा-

टुकडे करते छ परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध होता है आठ टुकडे करते आठ परमाणु पुद्गल होते हैं ॥ ७ ॥ अब नव परमाणु पुद्गल की पृच्छा करते हैं. अहो गौतम ! नव प्रदेशात्मक स्कंध होता है और दो यावत् नव टुकडे होते हैं दो टुकडे करते एक परमाणु पुद्गल एक आठ प्रदेशात्मक स्कंध होता है ऐसे एकेक बढाना यावत् अथवा एक चार प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध होता है. तीन टुकडे करते दो परमाणु पुद्गल एक सात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक छ

तिण्णि तिपदेसिया खंधा भवंति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ छप्पएसिए खंधे भवति, अहवा-एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ पंच पदेसिए खंधे भवइ. अहवा-एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ. अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति. अहवा-एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपदेसिए

प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक अथवा तीन तीन प्रदेशात्मक तीन स्कंध चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदे-

खंधे भवति. अहवा-एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चत्तारि दुपदेसिया खधा भवंति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पदेसिए खंध भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ. अहवा-एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खधा भवंति. सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणु

शात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध. पांच टुकडे करने चार परमाणु पुद्गल एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन

पोग्गला, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ, । णवहा कज्जमाणे णव परमाणुपोग्गला भवंति ॥८॥ दस भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा ? गोयमा ! जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ णव पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ अट्ठ पएसिए खंधे भवइ, एवं एक्केक्कं संचारेंति जाव अहवा दो पंचपदेसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपदेसिए

प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध. सात टुकडे करते छ परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा पांच परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध आठ टुकडे करते सात परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, नव टुकडे करते नव परमाणु पुद्गल ॥८॥ अब दश परमाणु पुद्गल की पृच्छा करते हैं. अहो गौतम ! दश प्रदेशात्मक एक स्कंध होता है. इस के दो यावत् दश टुकडे होते हैं. जब दो टुकडे होते हैं तब एक परमाणु पुद्गल व एक नव प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध व एक आठ प्रदेशात्मक स्कंध यों एक २ बढाते यावत् दो पांच प्रदेशात्मक स्कंध. तीन

खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ सत्तपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपदेसिए खंधे एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चउप्पदेसिए खंधे, एगयओ पंच पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे, एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ पंचपदेसिएखंधे भवइ अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ दो चउप्पदेसिया खंधा भवंति, अहवा-एगयओ दो तिपदेसिया खंधा एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ पंचपदेसिएखंधे, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ

परमाणुपोग्गला एगयओ सत्तपदेसिएखंधे, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ टुकडे करते दो परमाणु पुद्गल व एक आठ प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक सात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक छप्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक चार प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध

दुपदेसिएखंधे एगयओ छप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखधे, एगयओ पंचपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोंग्गले, एगयओ दुपदेसिएखंधे, एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ चउप्पदसिएखंधे भवइ, अहवा एंगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिण्णि तिपदेसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि दुपदेसियाखंधा एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपदे-सियाखंधा एगयओ दो तिपदेसियाखंधा भवंति, । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ छप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला

चारटुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक सात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन दो प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा

एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ पंचपएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखंधे, एगयओ चउप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा पंच दुपदेसिया खंधा भवंति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला

दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध. पांच टुकडे करते चार परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा दो परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल, तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा पांच द्विप्रदेशात्मक स्कंध. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल और पांच प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा चार परमाणु पुद्गल, एक

एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला, एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ चत्तारि दुपदेसिया खंधा भवंति, । सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छपरमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा-एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा

द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल और दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल, दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा दो परमाणु पुद्गल चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध. सात टुकडे करते छ परमाणु पुद्गल और चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा पांच परमाणु पुद्गल, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, चार परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध. आठ टुकडे करते सात परमाणु पुद्गल और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा

एगयओ सत्तपरमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खंधे भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदेसिय खंधा भवंति। अहवा एगयओ अट्ठपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ। णवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ। दसहा कज्जमाणे दसपरमाणुपोग्गला भवंति ॥ ९ ॥ संखेज्जाणं भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति एए किं भवंति ? गोयमा ! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि संखेज्जहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिपदेसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए

छ परमाणु पुद्गल व दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध, नव टुकडे करते आठ परमाणु पुद्गल और एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध. और दश टुकडे करते दश परमाणु पुद्गल ॥ ९ ॥ संख्यात प्रदेश एकत्रित करने से संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध होता है और इस के दो यावत् दश यावत् संख्यात टुकडे होते हैं. दो टुकडे करने से एक परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मकस्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसेही तीन चार यावत् दश प्रदेशात्मक स्कंध व एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध और दो संख्यात प्रदेशात्मक

खंधे, एवं जाव अहवा एगयओ दसपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पदेसिएखंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ दसपदे-

स्कंध, तीन टुकडे करने से दो परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक परमाणु पुद्गल, एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध व एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक परमाणु पुद्गल एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक दश प्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध

सिएखंधे एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति । अहवा तिण्णि संखेज्ज पएसिया खंधा भवंति ॥ चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे, एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपदेसिएखंधे, एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ ॥ एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दसपएसिएखंधे, एगयओ संखेज्जपएसिएखंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति ॥ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा

भावार्थ चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल व एकसंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसेही दो परमाणु पुद्गल एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एकसंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा दो परमाणु पुद्गल दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मकस्कंध इस क्रमसे एक परमाणुपुद्गल एक दशप्रदेशात्मकस्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मकस्कंध

भवंति, एवं जाव, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिएखंधे, एगयओ दो संखेज पएसियाखधा भवंति। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि संखेज पएसियाखंधा भवंति अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे, एगयओ तिण्णि संखेज पएसियाखंधा भवंति, एवं जाव, अहवा एगयओ दसपएसिएखंधे एगयओ तिण्णि संखेज्ज पएसिया खंधा भवंति ॥ एवं एएणं कमेणं पंचसंजोगोवि भाणियव्वो जाव णवसंजोगा ॥ दसहा कज्जमाणे एगयओ णवपरमाणुपोग्गला एगयओ संखेज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ। एवं एएणं कमेणं एकेक्को पूरेयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिएखंधे भवइ एगयओ

अथवा एक परमाणु पुद्गल तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक दश प्रदेशात्मक स्कंध तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध इस तरह इस क्रम से पांच छ यावत् नव तक कहना. अब दश टुकडे करते नव परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशी स्कंध, आठ परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. इस क्रम से एक दश प्रदेशात्मक स्कंध नव संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दश संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. संख्यात टुकडे करते

णवसंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, अहवा दससंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति ॥ १० ॥ असंखेज्जहाणं भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, एगयओ साहणित्ता किं भवंति? गोयमा! असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि, संखेज्जहावि असंखेज्जहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्ज-

संख्यात परमाणु पुद्गल जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! असंख्यात पुद्गल एकत्रित होने से क्या होता है? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध होता है. उस का विभाग करने से दो तीन यावत् दश संख्यात असंख्यात विभाग होते हैं. अब दो विभाग करने से एक परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. तीन टुकडे करने से दो परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा

पएसिए खंधे भवइ, अहवा दो असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवति एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दस पएसिए खंधे एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दो असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो असंखेज्ज पदेसिया खंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्ज पएसिए खंधे

अर्थ एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक परमाणु पुद्गल एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. अथवा एक परमाणु पुद्गल दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक दश प्रदेशात्मक स्कंध दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध दो अस-

एगयओ दो असंखेज्ज पदेसिया खंधा भवंति, अहवा तिण्णि असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ असंखेज्ज पए-सिए खंधे भवइ, एवं चउक्क संजोगो जाव दससंजोगो; एवं जहेव असंखेज्ज पएसियस्स णवरं असंखेज्जयं एगं अब्भहियं जाणियव्वं जाव अहवा दस असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति, संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जा दुपएसिया खंधा एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्ज पएसिया खंधा एगयओ

ख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही संपूर्ण चार संयोग यावत् दश संयोग का जैसे संख्यात प्रदेशी का कहा वैसे ही असंख्यात प्रदेशी का कहना. मात्र इन में असंख्यात प्रदेशी जानना यावत् दश असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. अब संख्यात टुकडे करते संख्यात परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा संख्यात द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, ऐसे ही संख्यात दश प्रदेशा-

असंखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, अहवा संखेज्जा असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, असंखेज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति ॥ १० ॥ अणंताणं भंते ! परमाणुपोग्गला जाव किं भवंति ? गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव दसहावि संखेज्जहा असंखेज्जहा अणंतहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा दो अणंतपदेसिया खंधा भवंति, । तिहाकज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए एगयओ अणंतपदेसिए खधे भवइ, जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असंखेज्ज

त्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, संख्यात संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा संख्यात असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. असंख्यात टुकडे करने से असंख्यात परमाणु पुद्गल होते हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! अनंत परमाणु पुद्गल एकत्रित होने से क्या होता है ? अहो गौतम ! अनंत परमाणु पुद्गल मीलने से अनंत प्रदेशात्मक स्कंध होता है. उस के विभाग करने से दो तीन यावत् दश संख्यात असंख्यात व अनंत विभाग होते हैं. दो विभाग करने से एक परमाणु पुद्गल

पएसिए खंधे एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले
एगयओ दो अणंतपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ
दो अणंतपदेसिया खंधा भवंति, एवं जाव एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ दो
अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ संखेज्ज पएसिए खंधे एगयओ दो
अणंतपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे एगयओ दो
अणंतपदेसिया खंधा भवंति, अहवा तिण्णि अणंतपएसिया खंधा भवंति, । चउहा
कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, एवं

एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही दो अनंत प्रदे-
शात्मक स्कंध होवे. तीन विभाग करने से दो परमाणु पुद्गल एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक
परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक परमाणु पुद्गल एक असं-
ख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो अनंत प्रदेशात्मक स्कंध
एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो अनंत प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक दश प्रदेशात्मक स्कंध दो अनंत प्रदेशात्मक
स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध दो अनंत प्रदेशात्मक, एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध दो अनंत प्रदे-

चउक्कसंजोगो जाव असंखेज्ज संजोगो. एए सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भाणिया तहेव जाव अणंताणवि भाणियव्वं, णवरं एक्कं अणंतगं अब्भहियं भाणियव्वं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्ज पएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा संखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति, असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ असंखेज्जा दुपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, जाव अहवा एगयओ असंखेज्जा संखेज्जपएसिया

अर्थ

शात्मक स्कंध अथवा तीन अनंत प्रदेशात्मक स्कंध चार विभाग करने से तीन परमाणु पुद्गल एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध. इसी क्रम से चार पांच यावत् संख्यात संयोग जैसे असंख्यात का कहा वैसे ही कहना विशेष में यहां अनंत बोल कहना. यावत् संख्यात संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा संख्यात असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध. अथवा संख्यात अनंत प्रदेशात्मक स्कंध, असंख्यात विभाग करने से असंख्यात परमाणु पुद्गल एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध, असंख्यात द्विप्रदेशात्मक स्कंध यावत् असंख्यात संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध असं-

खंधा एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ असंखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति(५७५)॥ ११ ॥ एएसिणं भंते! परमाणुपोग्गलाणं साहणणाभेदाणुवाएणं अणंताणं पोग्गलपरियट्टाणं अणंताणंता पोग्गल परियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया? हंता गोयमा ! एएसिणं परमाणुपोग्गलाणं साहणणाभेदाणु जाव मक्खाया ॥ १२ ॥ कइविहेणं भंते! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तंजहा ओरालिय पोग्गलपरियट्टे, वेउव्विय

अर्थ

ख्यात. असंख्यात असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध अथवा असंख्यात अनंत प्रदेशात्मक स्कंध. अनंत विभाग करने से अनंत परमाणु पुद्गल होते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या भगवन्तने ऐसा कहा है कि परमाणु पुद्गलों के संहनन (एकत्रित मीलना) व भेद (पृथक् होना) के योग से अनंत को अनंत गुने करे इतने पुद्गल परावर्त जानना ? हां गौतम ! परमाणु पुद्गलों के संहनन व भेद के योग से अनंतगुने करे इतने पुद्गल परावर्त होते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! पुद्गल परावर्त कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! सात पुद्गल परावर्त कहे हैं उदारिक पुद्गल परावर्त, वैक्रेय पुद्गल परावर्त, तेजस्

पोग्गलपरियट्टे, तेया पोग्गलपरियट्टे, कम्मापोग्गलपरियट्टे, मण पोग्गलपरियट्टे,
वइ पोग्गलपरियट्टे, आणापाणु पोग्गलपरियट्टे ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते! कइविहे
पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते? गोयमा! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते तंजहा ओरालिय
पोग्गलपरियट्टे, वेउव्विय पोग्गलपरियट्टे जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, ॥ एवं जाव
वेमाणियाणं ॥ १४ ॥ एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स केवइया ओरालिय पोग्गल-
परियट्टा अतीता? गोयमा! अणंता, केवइया पुरक्खडा? गोयमा! कस्सइ अत्थि
कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा

पुद्गल परावर्त, कार्माण पुद्गल परावर्त, मन पुद्गल परावर्त, वचन पुद्गल परावर्त व श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त
॥ १३ ॥ अहो भगवन्! नारकी को कितने पुद्गल परावर्त कहे हैं? अहो गौतम! नारकी को सात
पुद्गल परावर्त कहे हैं ऐसे ही उक्त सातों पुद्गल परावर्त वैमानिक तक जानना. ॥ १४ ॥ अहो भगवन्!
एक २ नारकी को कितने उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत काल में हुए? अहो गौतम! अतीत काल में
एक २ नारकी को उदारिक के अनंत पुद्गल परावर्त हुए क्यों कि अतीत काल व जीव दोनों अनादि हैं.
अहो भगवन्! एक २ नारकी आगे कितने उदारिक पुद्गल परावर्त करेंगे? अहो गौतम! जो दूर भव्य

असंखेज्जावा अणंतावा ॥ एगमेगस्सणं भंते! असुरकुमारस्स केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा एवं चेव, एवं जाव वेमाणियस्स ॥ एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स केवइया वेउव्विय पोग्गलपरियट्टा अतीता? गोयमा! अणंता एवं जहेव ओरालिय पोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्विय पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा, एवं जाव वेमाणियस्स ॥ एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टा, एए एगइया सत्तदंडगा भवंति ॥ २५ ॥ णेरइयाणं भंते! केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अतीता? गोयमा! अणंता।

अथवा अभव्य जीव हैं उनको पुद्गल परावर्त है और जो नरक से नीकलकर मुक्त सिद्ध होवेंगे अथवा जो संख्यात असंख्यात भव में सीझनेवाले होंगे उनको पुद्गल परावर्त नहीं है क्योंकि पुद्गल परावर्त में अनंत भव होते हैं. जिस को पुद्गल परावर्त होता है उस को जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात व अनंत पुद्गल परावर्त होते हैं. अहो भगवन्! एक २ असुर कुमार को कितने पुद्गल परावर्त कहे हैं? अहो गौतम! जैसे नारकी का कहा वैसे ही असुर कुमार का जानना. और ऐसे ही वैमानिकतक जानना. अहो भगवन्! एक २ नारकी को कितने वैक्रेय पुद्गल परावर्त अतीत काल में हुए? अहो गौतम! अनंत पुद्गल परावर्त हुए. वगैरह जैसे उदारिक का कहा वैसे ही वैक्रेय का जानना. ऐसे ही श्वासोश्वास तक सातों पुद्गल परावर्त का चौवीस दंडक आश्री जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन्! समस्त नारकीने अतीत काल में कितने

केवइया पुरक्खडा? अणंता । एवं जाव वेमाणियाणं ॥ एवं वेउव्वियपोग्गलपरि-
यट्टावि, एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टावि जाव वेमाणियाणं एवं एए पोहत्तिया
सत्तचउव्वीस दंडगा ॥ १६ ॥ एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया
ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अतीता? गोयमा! णत्थि एक्कोवि। केवइया पुरक्खडा?
नत्थि एक्कोवि ॥ एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया
ओरालियपोग्गल परियट्टा एवं चेव. एवं जाव थणिय कुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥

ार्थ

उदारिक पुद्गल परावर्त किए? अहो गौतम! सब नारकीने अतीत काल में अनंत पुद्गल परावर्त किये.
अहो भगवन्! आगे कितने उदारिक पुद्गल परावर्त करेंगे? अहो गौतम! अनंत पुद्गल परावर्त करेंगे
ऐसे ही वैमानिक तक जानना. जैसे उदारिक का कहा वैसे ही वैक्रेय आदि सब पुद्गल परावर्त का
जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन्! एक २ नारकीने नारकीपने कितने उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत
काल में किए? अहो गौतम! एक की नहीं किया क्योंकि नारकी में उदारिक शरीरका अभाव है. अहो
भगवन्! आगामिक काल में कितने करेंगे? अहो गौतम! आगामिक काल में एकभी नहीं करेंगे. क्योंकि
नरक में उदारिक शरीर नहीं हैं. अहो भगवन्! एक २ नारकी असुर कुमारपने कितने उदारिक पुद्गल
परावर्त किये? अहो गौतम? एक नारकीने असुर कुमारपने एकभी पुद्गल परावर्त किया नहीं है और करेंगे

एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गल परियट्टा अतीता ? अणंता, केवइया पुरक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि. जस्सत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा एवं जाव मणुस्सत्ते, वाणमंतर जोइसिय वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥ १७ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! असुरकुमारस्स णेरइयत्ते केवइया, ओरालियपोग्गल परियट्टा एवं जहा णेरइयस्स वत्तव्वया भणिया तहा असुरकुमारस्सवि भाणियव्वा जाव वेमाणि-

भी नहीं ऐसे ही स्थनित कुमार तक सब भुवनपति का जानना. अहो भगवन् ! एक नारकीने पृथ्वी-कायापने कितने उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत काल में किये ? अहो गौतम ! अनंत उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत काल में किये. अहो भगवन् ! आगामिक काल में कितने करेंगे ? अहो गौतम ! कितनेक करेंगे और कितनेक नहीं करेंगे जो करेंगे वे जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात व अनंत पुद्गल परावर्त करेंगे. ऐसे ही मनुष्य तक जानना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे कहना ॥१७॥ अहो भगवन् ! एक २ असुर कुमारने नारकीपने कितने उदारिक पुद्गल परावर्त किये ? अहो गौतम ! जैसे नारकी का कहा वैसे ही असुर कुमार का जानना. और ऐसे ही स्थनित कुमारतक सब

यत्ते, एवं जाव थणियकुमारस्स, एवं पुढविकाइयस्सवि, एवं जाव वेमाणियस्स सव्वेसिं एक्को गमओ ॥ १८ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया वेउव्वियपोग्गल परियट्टा अतीता ? अणंता. केवइया पुरक्खडा ? एगुत्तरिया जाव अणंतावा, एवं जाव थणियकुमारत्ते. पुढवीकाइयत्ते पुच्छा, णत्थि एक्कोवि केवइया पुरक्खडा ? णत्थि एक्कोवि. एवं जत्थ वेउव्विय सरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरियाओ, जत्थ णत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥ १९ ॥ तेयापोग्गल परियट्टा कम्मापोग्गल परियट्टा सव्वत्थ एगुत्तरिया भाणियव्वा॥

भवनपति पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! एक नारकीने नारकीपने अतीत काल में कितने वैक्रेय पुद्गल परावर्त किये ? अहो गौतम ! अनंत पुद्गल परावर्त किये और आगामिक काल में कितनेक करेंगे, कितनेक नहीं करेंगे. जो करेंगे वे एक दो तीन यावत् संख्यात, असंख्यात व अनंत करेंगे ऐसे ही स्थनित कुमारतक कहना. पृथ्वीकाया में वैक्रेय शरीर नहीं होने से वैक्रेय पुद्गल परावर्त नहीं है अब जिस को वैक्रेय शरीर है उस को नारकी जैसे कहना और जिन को वैक्रेय शरीर नहीं है उन को पृथ्वीकाया जैसे

मणपोग्गल परियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगुत्तरिया, विगलिंदिएसु णत्थि, वइ पोग्गल परियट्टा एवं चेव, णवरं एगिंदिएसु णत्थि भाणियव्वा ॥ आणापाणु पोग्गल परियट्टा सव्वत्थ एगुत्तारिया एवं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥ २० ॥ णेरइयाणं भंते ! णेरइयत्ते केवइया ओरालिय पोग्गल परियट्टा अतीता ? णत्थि, केवइया पुरक्खडा ? णत्थि एक्कोवि ॥ एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥ पुढवीकाइयत्ते पुच्छा ? अणंता केवइया पुरक्खडा ? अणंता एवं मणुस्सत्ते, वाणमंतर जोइसिय वेमाणियत्ते जहा णेरइयत्ते. एवं सत्तवि पोग्गल परियट्टा भाणियव्वा, जत्थ अत्थि तत्थ अतीतावि पुरक्खडावि

भावार्थ वैमानिक तक सब दंडक का कहना ॥ १९ ॥ तेजस व कार्माण पुद्गल का वर्णन मन को जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात व अनंत कहना. मन पुद्गल परावर्त सब पंचेन्द्रिय में होता है वचन पुद्गल परावर्त एकेन्द्रिय वर्ज कर सब जीव म है और श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त सब जीवों में जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात अनंत तक जानना.॥२०॥ अहो भगवन् ! बहुत नारकीने नारकीपने अतीतकाल में कितने उदारिक पुद्गल परावर्त किये ? अहो गौतम ! बहुत नारकीने अतीत में नहीं किये और आगामिक काल में नहीं करेंगे क्यों की उदारिक शरीर उन में नहीं हैं ऐसे ही स्थनित कुमार तक जानना.

अणंता भाणियव्वा; जस्स नत्थि तस्स दोत्रि णत्थि भाणियव्वा, जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते॥ केवइया आणापाणु पोग्गल परियट्टा अतीता? अणंता। केवइया पुरक्खडा? अणंता ॥२१॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ओरालिय पोग्गल परियट्टे ? ओरालिय पोग्गल परियट्टे गोयमा! जंणं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालिय सरीरपाउग्गाइं दव्वाइं ओरालिय सरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं, निविट्ठाइं, अभिणिविट्ठाइं, अभिसमण्णागयाइं परियागयाइं परिणामियाइं, णिज्जिण्णाइं णिसिरियाइं णिसिट्ठाइं भवंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ ओरालिय पोग्गलपरियट्टे

पृथ्वी कायापने बहुत नारकीने अतीत काल में अनंत उदारिक पुद्गल परावर्त किये और आगामीक कालमें करेंगे ऐसे ही मनुष्य तक जानना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना. ऐसे ही सातों पुद्गल परावर्त जानना. उन में जिनको जो है उनको अतीत व अनागत काल में अनंत पुद्गल परावर्त कहना. ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक पुद्गल परावर्त किस तरह कहा गया है ? अहो गौतम ! उदारिक शरीर में रहा हुवा जीवने उदारिक शरीर के योग्य द्रव्य उदारिक शरीरपने ग्रहण किये, बांधे, स्पर्शे, किये, रखे, मीलाये, परिणमाये, निर्जराये, व छोडे इस से उदारिक पुद्गल परावर्त कहा गया. ऐसे ही

एवं वेउव्विय पोग्गल परियट्टेवि णवरं वेउव्विय सरीरवट्टमाणेणं वेउव्वियसरीर पाउग्गाइं सेसं तंचेव । एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टेवि, णवरं आणापाणु पाउग्गाइं सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए सेसं तंचेव ॥ २ २ ॥ ओरालिय पोग्गलपरियट्टेणं भंते ! केवइयं कालं णिव्वत्तिज्जइ? गोयमा ! अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं एवइय कालस्स णिव्वत्तिज्जइ ॥ एवं वेउव्विय पोग्गलपरियट्टेवि, एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टेवि ॥ २ ३ ॥ एयस्सणं भंते ! ओरालिय पोग्गलपरियट्टणिव्वत्तणा कालस्स, वेउव्वियपोग्गल जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणा कालस्स कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा?

वैक्रेय पुद्गल परावर्तका जानना परंतु इसमें वैक्रेय शरीर योग्य पुद्गल ग्रहण किये यावत् छोडे कहना. ऐसे ही श्वासोश्वास तक जानना ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक पुद्गल परावर्त की कितने काल में निवृत्ति होती है ? अहो गौतम ! अनंत काल में निवृत्ति होती है क्योंकि जीव एक है और पुद्गल अनंत है ऐसे ही वैक्रेय पुद्गल परावर्त यावत् आन पान पुद्गल परावर्त का जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! इन उदारिक पुद्गल परावर्त निवर्तन काल, वैक्रेय पुद्गल परावर्त निवर्तन काल यावत् श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त निवर्तन काल में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा कार्माण

गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मपोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणा काले, तेया पोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालिय पोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे आणापाणु पोग्गल परियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोग्गल परियट्टणिव्वट्टणाकाले अणंतगणे, वइपोग्गल परियट्ट णिव्वट्टणाकाले अणंतगुणे, वेउव्विय पोग्गल परियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ॥ २४ ॥ एएसिणं भंते ! ओरालिय पोग्गल परियट्टाणं जाव आणापाणु पोग्गल परियट्टाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा वेउव्विय पोग्गल परियट्टा, वइपोग्गल परियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गल

पुद्गल परावर्त निवर्तन काल क्यों कि कार्माण पुद्गल बहुत सूक्ष्म परमाणु से बनते हैं एक वक्त में बहुत ग्रहण होते हैं सब नरकादि पदमें रहनेवाले जीव समय२ में ग्रहण करते हैं इस से तेजस पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना, इस से उदारिक पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना इस से श्वासोश्वास पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना इस से मन पुद्गल परावर्तन काल अनंत गुना इस से वचन पुद्गल परावर्तन काल अनंत गुना इस से वैक्रेय पुद्गल परावर्त काल अनंत गुना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! इन उदारिक यावत् श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त में कौन किस से अल्प यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा वैक्रेय पुद्गल

रायगिहे जाव एवं वयासी-अह भंते पाणाइवाए, मुसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे,

परिग्गहे एएसिणं कइवण्णा कइगंधा...

रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले अ० अथ भं० भगवन् पा० प्राणातिपात मु० मृषा वाद अ० अदत्तादान मे० मैथुन प० परीग्रह ए० इन का क० कौनसा व० वर्ण क० कौनसा गंध क०

परियट्टा अणंतगुणा; ओरालिय पोग्गल परियट्टा अणंतगुणा, जाव आणापाणुपोग्गल परियट्टा अणंतगुणा, तेयापोग्गल परियट्टा कम्मापोग्गल परियट्टा अणंतगुणा ॥ २५ ॥ सेवं भंते भंते त्ति ! भगवं जाव विहरइ ॥ दुवालसम सयस्सय चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ४ ॥ *

* * *

परावर्त अनंतगुना इससे श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त अनंतगुना इससे मनपुद्गल परावर्त अनंतगुना इससे वचन पुद्गल परावर्त अनंतगुना इससे कार्माण पुद्गल परावर्त अनंत गुना,इससे तेजस पुद्गल परावर्त अनंत गुना,इससे उदारिक पुद्गल परावर्त अनंतगुना ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं कहकर भगवान् गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कारकर तप संयम से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे. यह बारहवा शतक का चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ ४ ॥

० ०

चतुर्थ उद्देशे में पुद्गल का कथन किया. पुद्गल रूपी अरूपी दोनों होते हैं इसलिये पांचवे उद्देशे में रूपी अरूपी दोनों का कथन करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर

कौनसा रस क० कौनसा स्पर्श प० प्ररूपा गो० गौतम पं० पांच वर्ण दु० दोगंध पं० पांचरस च० चार स्पर्श प० प्ररूपा ॥१॥ अ० अथ भं० भगवन् को० क्रोध को० कोप रो० रोष दो० द्वेष अ० अक्षमा सं० संज्वलन क० कलह चं० रौद्रहोना भं० भांडना वि० विवाद करना ए० इन का क० कौनसा वर्ण जा० यावत् क० कौनसा स्पर्श गो० गौतम पं० पांचवर्ण पं० पांचरस दु० दोगंध च० चार स्पर्श प० प्ररूपा सरल शब्दार्थ

परिग्गहे, एसणं कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे, पण्णत्ते? गोयमा! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते ॥१॥ अह भंते कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अक्खमा, संजलणे, कलहे, चंडिक्के, भंडणे, विवादे, एसणं कइवण्णे जाव कइफासे प०? गोयमा! पंचवण्णे, पंचरसे दुगंधे, चउफासे पण्णत्ते ॥२॥ अह भंते! माणे, मदे, दप्पे, थंभे, गव्वे, अणुक्कोसे परपरिवाए; उक्कोसे,

स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछनेलगे कि अहो भगवन् प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान,, मैथुन व परिग्रह इन पांच पापस्थान में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पाते हैं? अहो गौतम ये पापस्थान पुद्गल रूप होने से पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व चार स्पर्श यों १६ बोल पाते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन्! क्रोध, कोप, रोष, द्वेष, अक्षमा, संज्वलन, कलह, चांडालपना, भंडन और विवाद इन में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श कहे हैं? अहो गौतम! पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस चार स्पर्श कहे हुवे हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! मान (अहंकार रखना) मद (नशो ज्यों छके) दर्प (डरता रहे,) ४ स्थंभ (स्थंभ

अवक्कासे, उण्णए उण्णामे दुण्णामे एसणं कइवण्णे ४ पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचवण्णे जहा कोहे तहेव ॥ ३ ॥ अह भंते ! माया, उवही, नियडी, वलए, गहणे, णूमे, कक्के, कुरुए, झिम्मे, किव्विसे, आयरणया, गूहणया, वंचणया, पलिउंचणया, साति-जोगेय, एसणं कइवण्णे ४ पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचवण्णे जहेव कोहे ॥ ४ ॥

जैसा करडा रहना ५ गर्व [अन्य से कीर्ति कराना] ६ अनुक्रोश (अन्य को हलका करना) ७ परपरिवाद [अन्य की निन्दा करना] ८ उत्कर्ष [अपनी श्रेष्ठता बतलाना] ९ अपकर्ष [अपनी लघुता छिपाना १० उन्नत [नमना नहीं] ११ उन्नाम [जो आकर नमा होवे उसपर गर्व करे] १२ दुन्नाम (दुष्टपने नमे) (ये मानके बारह पर्याय वाची नाम कहे हैं.) उन में कितने वर्ण यावत् स्पर्श कहे हैं. ? अहो गौतम ! पांच वर्ण यावत चार स्पर्श यों १६ बोल क्रोध जैसे कहना. ॥ ३ ॥ १ माया २ उपाधि [समीप जाकर ठगना] ३ नियडी [कार्यकर छिपाना] ४ वलय (वक्र रहना) ५ गहन (छिपी हुई) ६ णूम [गुप्ताश्रयी] ७ कर्कश (कठोर रहना ८ कुरात [कुचेष्टा] करना ९ झिम (अन्य को ठगना) १० किल्विष (मायावी किल्विष में उत्पन्न होवे) ११ आदरणता, १२ गुह्य १३ वंचन १४ प्रतिकुंचन [सरल वचन का खंडन करना] १५ शाति योग (विश्वास रहित) यह माया के १५ पर्याय वाची नाम कहे हैं. अहो भगवन् इन पंदरह में कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श पावे ? अहो गौतम ! क्रोध की तरह १६ बोल पाते हैं. ॥ ४ ॥ लोभ इच्छा, मूर्च्छा,

अह भंते! लोभे, इच्छा, मुच्छा, कंखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, आसासणया, पत्थासणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मरणासा, नंदिरागे, एसणं कइवण्णे ४ पण्णत्ते? गोयमा! जहेव कोहे ॥ ५ ॥ अह भंते! पेज्जे दोसे, कलहे जाव मिच्छादंसणसल्ले एसणं कइवण्णे ४ प०? जहेव कोहे तहेव जाव चउफासे ॥ ६॥ अह भंते! पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसण सल्लविवेगे एसणं कइवण्णे जाव कइफासे पण्णत्ते? गोयमा! अवण्णे, अगंधे, अरसे अफासे, पण्णत्ते ॥ ७ ॥ अह भंते! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, परिणामिया,

कांक्षा, गृद्धि, तृष्णा, भेद्य, अभेद्य, आशासनता (अन्य के अर्थ की आशा) प्रार्थना, लालपनता, कामाशा भोगाशा, जीविताशा, मरणाशा, नंदीराग समृद्धि होने से हर्ष इन में अहो भगवन्! कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श कहे हुवे हैं ? अहो गौतम! क्रोध जैसे १६ बोले इस में कहे हैं. ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! राग द्वेष कलह यावत् मिथ्या दर्शन शल्य में कितने वर्ण गंध रस स्पर्श कहे हैं ? अहो गौतम! क्रोध जैसे १६ बोल कहे हुवे हैं. ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! प्राणातिपात विरमण यावत् परिग्रह विरमण, क्रोध का त्याग यावत् मिथ्या दर्शन शल्यका त्याग में कितने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श कहे हुवे हैं ? अहो गौतम! वर्ण, गंध,

त्र
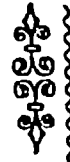
एसणं कइवण्णा ४ पण्णत्ता? तंचेव जाव अफासा पण्णत्ता ॥ ८ ॥ अह भंते! उग्गहे ईहा अवाए धारणा एसणं कइवण्णा ४ पण्णत्ता? एवंचेव जाव अफासा पण्णत्ता ॥ ९ ॥ अह भंते! उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार परक्कम्मे एसणं कइ- वण्णे ४ पण्णत्ते? तंचेव जाव अफासे पण्णत्ते ॥ १० ॥ सत्तमेणं भंते! उवा संतरे कइवण्णे ४ पण्णत्ते? तंचेव जाव अफासे पण्णत्ते ॥ ११ ॥ सत्तमेणं भंत्ते तणुवाए कइवण्णे ९ प०? जहा पाणाइवाए णवरं जाव अट्ठफासे पण्णत्ते ॥ एवं जहा

वार्थ

रस, स्पर्श उन में नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! उत्पातिकी वैनयिकी, कार्मिकी व परिणामिकी इन में कितने वर्ण, गंध रस व स्पर्श पाते हैं? अहो गौतम! इन में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श नहीं पाते हैं क्यों की वे जीव परिणाम है. ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! अवग्रह ईहा. अपाय व धारणा इन में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श कहे हैं? अहो गौतम! इन में वर्ण गंधादि नहीं कहे हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन्! उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कारपराक्रम में कितने वर्णादि कहे हैं? अहो गौतम! इन में वर्ण गंधादि नहीं कहे हैं ॥१०॥ अहो भगवन्! सातवी नरक नीचे सातवा आकाश अंतर में कितने वर्ण गंधादि कहे हैं? अहो गौतम! वर्ण गंधादि नही हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन्! सातवा तनुवात में कितने वर्णादि कहे हैं? अहो गौतम! पांच वर्ण, दोगंध, पांच रस व आठ स्पर्श कहे हैं. जैसे सातवा तनुवात का कहा वैसे सातवा

सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदही, पुढवी ॥ छट्ठे उवासंतरं अवण्णे ॥ तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी एयाइं अट्ठफासाइं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं ॥ १२ ॥ जंबूदीवे दीवे जाव सयंभु-रमणे समुद्दे सोहम्मे कप्पे जाव ईसिप्पब्भारा पुढवी, णेरइयावासा जाव वेमाणि-यावासा एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते ! कइवण्णा जाव कइफासा पण्णत्ता ? गोयमा ! वेउव्वियतेयाइं पडुच्च पंचवण्णा दुगंधा पंचरसा अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च पंचवण्णा दुगंधा पंचरसा चउफासा पण्णत्ता,

घनवात का कहना व घनोदधि का व सातवी पृथ्वी का जानना. छठा आकाशांतर में वर्णादि नहीं है. और छठा तनुवात, घनवात, घनोदधि व पृथ्वी में पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श ऐसे बीस बोल कहे हैं इस तरह जैसे सातवी नरक का कहा वैसे पहिली नरक तक जानना ॥ १२ ॥ जम्बूद्वीप यावत् स्वयंभूरमण समुद्र, सौधर्म देवलोक यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी, नरकावास यावत् वैमानिक आवास इन सब में आठ स्पर्श जानना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने वर्णादि कहे हैं ? अहो गौतम ! वैक्रेय तेजस आश्री पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श कहे हैं और कार्माण आश्री पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व

जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता. एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवी-काइयाणं पुच्छा ? ओरालिय तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठ फासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च पंचवण्णा जाव चउफासा पण्णत्ता, जहा नेरइयाणं, जीवं पडुच्च तहेव. ॥ एवं जाव चउरिंदिया णवरं वाउकाइया, ओरालिय वेउव्विय तेयगाइं पडुच्चपंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता सेसं जहा णेरइयाणं, पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया जहा वाउकाइया ॥ ॥ मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! ओरालिय वेउव्विय आहारग तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं जीवं

चार स्पर्श कहे हैं. और जीव आश्री वर्णादि रहित है. ऐसे ही स्थनित कुमारतक जानना. पृथ्वीकायामें उदारिक तेजस् आश्री पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श और कार्माण आश्री पांच वर्ण यावत् चार स्पर्श. जीव आश्री अरूपी ऐसे ही अप्, तेउ, वनस्पाति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना. वायुकायामें उदारिक वैक्रेय व तेजस् आश्री पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श और कार्माण व जीव आश्री नारकी जैसे जानना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय वायुकाया जैसे जानना. मनुष्य में उदारिक, वैक्रेय आहारक व तेजस् आश्री पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श और कार्माण व जीव आश्री नारकी जैसे जानना. वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक

पडुच्च जहा णेरइयाणं, वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा णेरइया॥ १४ ॥धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए एए सव्वे अवण्णा जाव अफासा णवरं पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे अट्ठफासे पण्णत्ते ॥ १५॥ णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए एयाणि जाव चउफासाणि ॥ १६॥ कण्ह लेस्साणं भंते ! कइवण्णा पुच्छा ? गोयमा ! दव्वलेस्सं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, भावलेस्सं पडुच्च अवण्णा एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ १७ ॥ सम्मद्दिट्ठी ३, चक्खुदंसणे ४, आभिणिबोहियणाणे, ५ जाव विभंगणाणे, आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा एयाणि अवण्णाणि ४,॥ १८॥ओरालियसरीरे जाव तेयग

का नारकी जैसे कहना ॥ १४ ॥ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय काल व जीव इन में वर्णादि नहीं है और पुद्गलास्तिकाय में पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श ऐसे वीस बोल होते हैं ॥ १५ ॥ ज्ञानावरणीय यावत् अंतराय में पांच वर्ण यावत् चार स्पर्श कहे हैं ॥ १६ ॥ कृष्ण लेश्या में अहो भगवन् ! कितने वर्णादि कहे हुवे हैं ? अहो भगवन् ! द्रव्य लेश्या आश्री पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श कहे हुवे हैं भावलेश्या आश्री वर्णादि रहित है. ऐसे ही शुक्ल लेश्या तक जानना ॥ १७ ॥ सम-दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, व मिश्र दृष्टि, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन व केवल दर्शन, आभिनिबोधिक

सरीरे एयाणि अट्ठफासाणि, कम्मग सरीरे चउफासे; मण जोगेय वइ जोगेय चउफासे, कायजोगे अट्ठफासे । सागारोवओगेय अणागारोवओगेय अवण्णा ॥ १९ ॥ सव्वदव्वाणं भंते ! कइवण्णा ? गोयमा ! अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव चउफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा एगवण्णा एगगंधा एगरसा दुफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता, ॥ एवं सव्वपएसावि, सव्व पज्जवावि ॥

ज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान व केवल ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व विभंग ज्ञान, आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा व परिग्रह संज्ञा, इन में वर्णादि नहीं पाते हैं ॥ १८ ॥ उदारिक शरीर वैक्रेय शरीर, आहारक शरीर, तेजस् शरीर में पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श ऐसे २० बोल और कार्माण शरीर में पांच वर्ण यावत् चार स्पर्श यों १६ बोल. मन योग व वचन योग में चार स्पर्श और काय योग में आठ स्पर्श साकारोपयोग व अनाकारोपयोग में वर्णादि नहीं है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! सब द्रव्य में कितने वर्ण यावत् स्पर्श हैं ? अहो गौतम ! कितनेक द्रव्य में पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श हैं कितनेक द्रव्य में पांच वर्ण यावत् चार स्पर्श हैं, कितनेक द्रव्य में एक वर्ण, एक गंध, एक रस, व दो स्पर्श हैं और कितनेक द्रव्य में वर्णादि नहीं हैं ऐसे ही सब प्रदेश व पर्यव का जानना. अतीत काल, अनागत

नीयद्धा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता, एवं जाव अणागयद्धावि सव्वद्धावि ॥२०॥ जीवेणं भंते! गब्भं वक्कममाणे कइवण्णं कइगंधं कइरसं कइफासं परिणामं परिणमइ? गोयमा! पंचवण्णं दुगंधं पंचरसं अट्ठफासं परिणामं परिणमइ ॥२१॥ कम्मओणं भंते! जीवे णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ कम्मओणं जए णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ? हंता गोयमा! कम्मओणं तंचेव जाव परिणमइ, णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ दुवालसमसयस्सय पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ५ ॥ * ॥

काल व सर्व काल वर्णादि रहित हैं ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के परिणाम को परिणमता है ? अहो गौतम ! पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के परिणाम को परिणमता है ॥ २१ ॥ अब जीव कर्म की विचित्रता बताते हैं. अहो भगवन् ! जीव कर्म से नरकादि गति में जाता है व विना कर्म नहीं जाता है अथवा कर्म से नरकादि गतिरूप विभक्ति भाव को परिणमता है और विना कर्म से क्या नहीं परिणमता है ? अहो गौतम ! जीव कर्म से नरकादि गति में जाता है और विभाग रूप नरक तिर्यंच मनुष्य व देव वगैरह नाना प्रकार के रूपमयको परिणमता है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का पांचवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ ५ ॥

रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले व० बहुत ज० मनुष्य भं० भगवन् अ० अन्योन्य ए०
ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ए० ऐसा प० प्ररूपते हैं रा० राहु चं० चंद्रको गे० ग्रहण करता है
से० वह क० कैसे ए० ऐसे भं० भगवन् गो० गौतम जे० जो ब० बहुत मनुष्य अ० अन्योन्य जा० यावत्
मि० मिथ्या तं० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० मैं गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत्
प० प्ररूपता हूं रा० राहु दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महासुखी व० प्रधान व० वस्त्रधारी म० माला

रायगिहे जाव एवं वयासी बहुजणेणं भंते ! अण्णमण्णस्स एव माइक्खइ जाव
एवं परूवेइ एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ एवं २ से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा !
जंणंसे बहुजणे अण्णमण्णस्स जाव मिच्छं ते एव माहंसु, अहं पुण गोयमा ! एव
माइक्खामि जाव परूवेमि-एवं खलु राहू देवे महिड्ढीए जाव महेसक्खे वरवत्थधरे

ार्थ

पांचवे उद्देशे के अंत में जीव कर्म से गति परिणाम को परिणमता है. उक्त जीवों का कर्म संयोग चंद्र
व राहू कोभी होता है इस से आगे उद्देशे में चंद्र व राहू का कथन करते हैं. राजगृही नगरी के गुणशील
नामक उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि
अहो भगवन् ! बहुत मनुष्यों परस्पर ऐसा वार्तालाप करते हैं कि राहू चंद्रमा को ग्रहण करता है तो यह
कथन किस तरह है ? अहो गौतम ! बहुत मनुष्यों जो ऐसा कहते हैं कि राहू चंद्रमा को ग्रहण करता है

धारी गं० गंधधारी आ० आभरणधारी रा० राहु दे० देवके ण० नव ना० नाम प० प्ररूपे तं० वह ज०
जैसे सिं० शृंगाटक ज० जटिल ख० क्षत्रक ख० खरक द० दर्दूर म० मकर म० मत्स्य क० कच्छप क०
कृष्णसर्प ॥ १ ॥ रा० राहु दे० देवके पं० पांच नि० विमान कि० कृष्ण नी० नील लो० लोहित हा०
हारिद्र सु० शुक्ल अ० है का० काला रा० राहु का विमान खं० काजल जैसा अ० है नी० नीला
रा० राहु का विमान ला० तूम्बक जैसा अ० है लो० लोहित रा० राहु का विमान मं० मजिठ जैसा अ०

वरमल्लधरे, वरगंधधरे, वराभरणधारी; राहुस्सणं देवस्स णव णामधेज्जा पण्णत्ता-
तंजहा- सिंघाडए, अडिलए, खत्तए, खरए, दद्दुरे, मगरे, मच्छे, कच्छभे, कण्हसप्पे
॥ १ ॥ राहुस्सणं देवस्स पंच विमाणा पण्णत्ता तंजहा- किण्हा नीला लोहिया
हालिद्दा सुक्किल्ला ॥ अत्थि कालए राहुविमाणे खंजण वण्णाभे पण्णत्ते ॥ अत्थि
नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते ॥ अत्थिणं लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठवण्णाभे

उन का यह कथन असत्य है. अहो गौतम ! मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि राहू एक महर्द्धिक
व महा ऐश्वर्यवन्त देव है, श्रेष्ठ वस्त्र, माला गंध व आभरण का धारन करनेवाला है. राहू के नव नाम
कहे हैं. १ शृंगाटक २ जटिल ३ क्षत्रक ४ खरक ५ दर्दूर ६ मकर ७ मच्छ ८ कच्छ और ९ कृष्ण सर्प
॥ १ ॥ राहू देवता के, पांच वर्णवाले विमान कहे हैं, १ कृष्ण वर्णवाला २ नील वर्णवाला ३ रक्त वर्ण-

है पी० पीला रा० राहु का विमान हा० हालिद्र जैसा अ० है सु० शुक्ल रा० राहु का विमान भा० भस्म
राशि जैसा प० रूप॥२॥ ज० जब रा० राहु आ० आते ग० जाते वि० विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते
चं० चंद्र लेश्याको पु० पूर्व से आ० आवर्त कर प० पश्चिम में वी० जावे त० तब पु० पूर्व में चं० चंद्र उ०
देखावे प० पश्चिम में रा० राहु ज० जब रा० राहु आ० आते ग० जाते वि० विकुर्वणा करते प० परि-

पण्णत्ते ॥ अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते ॥ अत्थि सुक्किल्लए राहु विमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते ॥ २ ॥ जदाणं राहू आगच्छमाणेवा, गच्छमाणेवा, विउव्वमाणेवा, परियारेमाणेवा, चंदलेस्सं पुरच्छिमेणं आवरेत्ताणं पच्चच्छिमेणं वीईवयाति, तदाणं पुरच्छिमेणं चंदे उवदसेति पच्चच्छिमेणं राहू ॥ जदाणं

वाला ४ पीत वर्णवाला और ५ शुक्ल वर्णवाला. जो कृष्ण वर्णवाला विमान है वह दीपक का काजल जैसी कान्ति वाला है. जो विमान नील वर्णवाला है वह कच्चे तुम्बे की कान्ति जैसा नीला है जो रक्त वर्ण वाला है वह मजीठ वर्ण जैसा है, जो पीला विमान वह हलदी समान है और जो विमान शुक्ल वर्णवाला है वह भस्म के ढग समान वर्ण वाला है ॥ २ ॥ जब राहू आता हुवा व जाता हुवा [स्वाभाविक गति] वैक्रेय करता हुवा या परिचारणा करता हुवा [अस्वाभाविक गति] चंद्र की कान्ति को पूर्व में आवरणकर पश्चिम में जाता है तब चंद्र पूर्व में दीखता है और पश्चिम में राहू दीखता है और जब आते, जाते,

चारणा करते चं० चंद्र लेश्या को प० पश्चिम से आ० आवर्तकर पु० पूर्व में वी० जावे त० तब प० पश्चिम में चं० चंद्र उ० देखावे पु० पूर्व में रा० राहु ए० ऐसे ज० जैसे प० पश्चिम में दो० दो आ० आलापक त० तैसे दा० दक्षिण उ० उत्तर में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे उ० ईशान कौन में दा० नैऋत्य में दो० दो आ० आलापक ए० ऐसे दा० अग्नि उ० वायव्य में दो०दो आ०आलापक भा० कहना जा० यावत् त० तब उ० वायव्य में चं० चंद्र उ० देखावे दा० अग्नि में राहु ज० जब

राहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा, विउव्वमाणेवा, परियारेमाणेवा, चंदलेस्सं पच्चच्छिमेणं आवरेत्ताणं पुरच्छिमेणं वीईवयइ, तदाणं पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेति पुरच्छिमेणं राहू॥ एवं जहा पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणिया तहा दाहिणेणय उत्तरेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं उत्तर पुरच्छिमेणं, दाहिण पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं दाहिण पुरच्छिमेणं, उत्तर पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा

वैक्रेय करते व परिचारणा करते चंद्रकी कान्ति को पश्चिम में ढककर पूर्व में राहू जाता है तब पश्चिम में चंद्र दीखता है और पूर्व में राहू दीखता है. जैसे पूर्व पश्चिम के दो आलापक कहे वैसे ही दक्षिण उत्तर के दो आलापक जानना. ऐसे ही उत्तर पूर्व [ईशान] व नैऋत्य और अग्नि व वायव्य के दो २ आलापक जानना. यावत् वायव्य कौन में चंद्र दीखता है और अग्नि कौन में राहू दीखता है. आते, जाते वैक्रेय

रा० राहु आ० आते ग० जाते वि० विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते चं० चंद्र लेश्या को आ० आवरण करता चि० रहे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु चं० चंद्र को ग० ग्रहण करता है ज० जब रा० राहु आ० आते चं० चंद्र लेश्या आ० आवर्त कर पा० पास से वी० जावे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं चं० चंद्रने रा० राहु की कु० कुक्षी भि० भेदी ज० जब रा० राहु आ० आते चं० चंद्र लेश्या को आ० आवर्तकर प० पीछा फीरे त० तब म०

एवं चेव जाव तदाणं उत्तर पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेति दाहिण पुरच्छिमेणं राहू ॥ जदाणं राहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा विउव्वमाणेवा परियारेमाणेवा चंदलेस्सं आवरेमाणं २ चिट्ठइ, तदाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति एवं खलु राहू चंदं गिण्हइ ॥ एवं जदाणं राहू आगच्छमाणेवा ४ चंदलेस्सं आवरेत्ताणं पासेणं वीईवयइ तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदाति-एवं खलु चदेणं राहुस्स कुच्छी भिणाए ॥ एवं जदाणं

करते व परिचारणा करते जब राहू चंद्र की कांति को ढकता है तब मनुष्य लोक में मनुष्यों बोलते हैं कि राहू चंद्र को ग्रहण करता है. जब राहू जाते, आते, वैक्रेय करते, परिचारणा करते चंद्रकी कान्ति का आवरण कर बाजु से जाता है तब मनुष्य लोक में मनुष्य कहते हैं कि चंद्र राहू की कुक्षि में गया. ऐसे ही राहू जाते, आते, वैक्रेय करते व परिचारणा करते चंद्र की कान्ति को ढक कर पीछा जाता है तब मनुष्य

मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु चं० चंद्र का वं० वमन कीया ज० जब रा० राहु-
आ० आते जा० यावत् प० परिचारना करते चं० चंद्र लेश्या को अ० नीचे स० चारों बाजु आ० आवर्त-
कर चि० रहे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र में म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु से चं० चंद्र ग्र० ग्रस्त हुवा-
॥ ३ ॥ कि० कितने प्रकार का भं० भगवन् रा० राहु प० प्ररूपा गो० गौतम दु० दो रा० राहु प०

राहू आगच्छमाणेवा ४ चंदलेस्सं आवरेत्ताणं पच्चोसक्कइ तदाणं मणुस्सलोए मणुस्सा
वदंति-एवं खलु राहुस्सणं चंदे वंते ॥ एवं जयाणं राहू आगच्छमाणेवा जाव
परियारेमाणेवा चंदलेस्सं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं आवरेत्ताणं चिट्ठइ, तयाणं मणुस्सलोए
मणुस्सा वदंति-एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे, एवं २ ॥ ३ ॥ कतिविहेणं भंते !
राहू पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे राहू पण्णत्ते, तंजहा-धुवराहूय, पव्वराहूय ॥ तत्थणं

लोक में मनुष्यों कहते हैं कि राहूने चंद्र का वमन किया. और जब राहू जाते आते, वैक्रेय करते व परिचा-
रणा करते चंद्र की कान्ति को नीचे, बाजुपर व चारों दिशि में ढक कर रहता है तब मनुष्य लोक में कहा
जाता है कि राहूने चंद्र ग्रहण किया ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! राहू कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! राहू
दो कहे हैं. ध्रुव राहू कि जो चंद्र की साथ सदैव रहता है और पर्व राहू पूर्णिमा वगैरह पर्व तिथियों में

प्रक्षेप धु० ध्रुवराहु प० पर्वराहु त० तहां जे० जो धु० ध्रुवराहु व० कृष्ण प० पक्ष के प० प्रतिपदा प० पन्नरवा भाग से प० पन्नरवा भाग को चं० चंद्रलेश्या को आ० आवरणकर चि० रहे तं० वह ज० जैसे प०प्रथमा में प०प्रथम भाग बि०दूसरा में बि०दूसरा भाग जा०यावत् प० पन्नरवा में प०पन्नरवा भाग च० चरम समय में चं० चंद्र र० आच्छादित भ० होवे अ० अवशेष स० समय चं० चंद्र र० आच्छादित वि० खुला भ० होवे ता० तैसे ही सु० शुक्लपक्ष में उ० देखाता चि० रहे प० प्रथमा में प० प्रथम भाग जा०

जे से धुवराहू सेणं बहुलस्स पक्खस्स पाडिवए पण्णरसति भागेणं पण्णरसभागं चंदलेस्सं आवरेमाणे २ चिट्ठइ, तंजहा-पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं, जाव पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं. चरमसमए चंदे रत्ते भवइ अवसेसे समए चंदे रत्तेवा

रहता है. अब जो ध्रुव राहू है वह कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से पन्नरह * भाग का एक भाग ढकता हुवा रहता है. प्रथम तीथि में प्रथम भाग यावत् पन्नरहवी तिथि में पन्नरहवा भाग. चरम समय में चंद्र रक्त रहता है और शेष समय में रक्त विरक्त दोनों रहता है, अर्थात् आच्छादित अनाच्छादित रहता है. वैसेही शुक्ल पक्ष में दीखता हुवा प्रथम तिथि में एक भाग यावत् पंदरवी तिथि में पन्नरहवा भाग दीखता है. चरम

* अन्य स्थान चद्र मडल के सोलह विभाग किये है और सोलहवा विभाग सदैव खुल्ला रहता है. परंतु एक भाग का अल्पपना से यहां उस की विवक्षा नहीं करते पन्नरह भाग ग्रहण किये है.

यावत् प० पन्नरवे में प० पन्नरवा भाग च० चरम समय में चं० चंद्र वि० खुला भ० होवे अ० अवशेष स० समय में चं० चंद्र र० आच्छादित वि० खुला भ० होवे ॥ ४ ॥ त० तहां जे० जो प० पर्वराहु ज० जघन्य छ० छमास में उ० उत्कृष्ट बा० बीयालीस मा० मास चं० चंद्र का अ० अडतालीस सं० वर्ष सू० सूर्य का ॥ ५ ॥ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है चं० चंद्र स० शशी चं० चंद्र जो० ज्योतिषीन्द्र जो० ज्योतिषी राजा का मि० मृगांक वि० विमान में कं० मनोहर दे० देव कं०

विरत्तेवा भवइ ॥ तामेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे २ चिट्ठइ, तं पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं चरम समए चंदे विरत्ते भवइ अवसेसे समए चंदे रत्तेवा विरत्तेवा भवइ ॥ ४ ॥ तत्थणं जे से पव्वराहू से जहण्णेणं छण्हं मासाणं उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं, चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स ॥ ५ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चंदे ससी ? गोयमा ! चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे, कंता देवा, कंताओ

काल अर्थात् पूर्णिमा को चंद्र विरक्त (खुला) दीखता है और शेष सब तिथियों में चंद्र आच्छादित व अनाच्छादित रहता है ॥ अब जो पर्व राहू है वह जघन्य छमास उत्कृष्ट बीयालीस मास में चंद्र को आच्छादित करता है और सूर्य को जघन्य छमास उत्कृष्ट ४८ संवत्सर में आच्छादित करता है ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! चंद्र को शशी क्यों कहा ? अहो गौतम ! ज्योतिषीन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्र को मृगांकवाला

मनोहर दे० देवी कं० मनोहर आ० आसन स० शयन खं० स्तंभ भं० भंडपात्र उ० उपकरण अ० आप
चं० चंद्र जो० ज्योतिषी राजा सो० सौम्य कं० मनोहर सु० सुभग पि० प्रियदर्शन सु० सुरूप से० वह
ते० इसलिये जा० यावत् स० शशी ॥ ६ ॥ भं० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता
है सू० सूर्य आ० आदित्य गो० गौतम स० समय आ० आवलिका जा० यावत् उ० उत्सर्पिणी अ०
अवसर्पिणी से० वह ते० इसलिये गो० गौतम आ० आदित्य ॥ ७ ॥ चं० चंद्र भं० भगवन् जो० ज्योतिषी

अप्पणा वियणं चंदे जोइसिंदे जोइसिराया सोमे कंते सुभगे पियदंसणे सुरूवे से तेणट्ठेणं जाव ससी ॥ ६ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-सूरे आइच्चे सूरे २ ? गोयमा ! सूरादियाणं समयाइवा, आवलियाइवा जाव उस्सप्पिणीइवा अवसप्पिणीइवा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव आइच्चे ॥ ७ ॥ चंदस्सणं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसिरण्णो कइ अग्गमहिसीओ

देवीओ, कंताइं आसण सयण खंभ भंडमत्तोवगरणाइं

विमान है, मनोहर देव, मनोहर देवियों, मनोहर आसन, शयन, स्तंभ, भंड, पात्र व उपकरण है और स्वयमेव ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा सोम, कांत, सुभग, प्रिय दर्शनीय व सुरूप है इस से चंद्र को शशी कहा है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सूर्य को आदित्य क्यों कहा ? अहो गौतम ! सूर्यआदित्य से समय, आवलिका, यावत् उत्सर्पिणी अवसर्पिणी है इस से अहो गौतम ! सूर्य आदित्य कहा गया है ॥ ७ ॥

राजा को क० कितनी अ० अग्रमहिषी प० प्ररूपी ज० जैसे द० दशवे शतक में जा० यावत् णो० नहीं
मे० मैथुन सेवने को सू० सूर्य त० तैसे ॥ ८ ॥ चं० चंद्र सू० सूर्य भं० भगवन् जो० ज्योतिषी रा० राजा
क० कैसे का० काम भोग प० भोगवते वि० विचरते हैं गो० गौतम ज० जैसे के० कोइ पु० पुरुष प०
प्रथम जो० यौवन उ० उत्थान ब० बलवाला प० प्रथम जो० यौवन उ० उत्थान ब० बलवाली भा० भार्या
स० साथ अ० थोडा काल में वि० विवाह करके अ० अर्थ ग० गवेषणा को सो० सोलह वा० वर्ष वि०

पण्णत्ताओ ? जहा दसम सए जाव णो चेवणं मेहुणवत्तियं ॥ सूरस्सवि तहेव ॥८॥
चंदिम सूरियस्सणं भंते ! जोइसिंदा जोइसिरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भव-
माणा विहरंति ? गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणट्ठाण बलत्थे पढम
जोव्वणट्ठाण बलत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरत्त विवाहकज्जे अत्थगवेसणत्ताए सोलसवास
विप्पवासिए सेणं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमए पुणरवि णियणं गिहं हव्वमागए, ण्हाए

अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र ज्योतिषी के राजा चंद्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो गौतम ! इस का सब वर्णन दशवे शतक में से जानना. यावत् सभा में मैथुन सेवने को समर्थ नहीं है वहां तक कहना और सूर्य का भी वैसे ही जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र, चंद्र, सूर्य, कैसे कामभोग भोगवते हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष यौवन के उदय से प्राप्त बलवाली भार्या की साथ

विदेश जावे त० तहां से ल० अर्थ प्राप्त कर क० कार्य कर अ० विघ्न रहित णि० अपना गि० गृह को ह० शीघ्र आ० आया ण्हा० स्नान क्रिया क० बलीकर्म कीया क० तिलमसादि किये स० सर्वालंकार वि० विभू-षित म० मनोज्ञ था० स्थालीपाक सु० शुद्ध अ० अठारह वं० प्रकार का भो० भोजन भु० भोगवते तं० उस ता० तैसे वा० गृह में व० वर्णन युक्त म० महाबल जा० यावत् स० सयन उ० उपचार क० युक्त ता० तैसी भा० भार्या से सिं० शृंगार आ० गृह चा० मनोहर जा० यावत् क० कलावन्त अ० अनुरक्त अ०

कयबलिकम्मे कयकोउयमंगल पायच्छित्ते सव्वालंकार विभूसिए, मणुण्णं थालीपाक सिद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्तेसमाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि वण्णओ-महब्बले जाव सयणोवयारकलिए ताए तारिसयाए भारियाए सिंगारागार चारुवेसाए जाव कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धिं इट्ठे सद्दे फरिसे जाव पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥ तासेणं गोयमा ! पुरिसे

अल्प समय में विवाह करके धनप्राप्ति के लिये सोलह वर्ष पर्यंत परदेश गया. वहां पर इच्छित द्रव्य तथा सामग्री प्राप्त कर पुनः अपने गृह पीछा आया. स्नान किया, चंदन प्रमुखादिक का विलेपन किया, कोगले किये, तिलमसादिक किये, सर्वालंकार से विभूषित बना. और उत्तम भाजन में पकाये हुवे अठारह प्रकार के व्यंजनादि युक्त भोजन करके महाबल के भुवन गृह समान भुवन में शृंगार के गृह समान मनो-

अविरक्त म० मनानुकुल स० साथ इ० इष्ट स० शब्द फ० स्पर्श जा० यावत् पं० पांच प्रकार के मा० मनुष्य के का० काम भोग प० भोगवते वि० विचरता है ता० उस गो० गौतम पु० पुरुष वि० रतिसमय में के० कैसा सा० सातासुख प० भोगवता वि० विचरता है उ० उदार स० आयुष्यवन्त गो० गौतम पु० पुरुष का० काम भोग से वा० वाणव्यंतर दे० देवका अ० अनंत गुणा वि० श्रेष्ठ का० काम भोग वा० वाणव्यंतर दे० देवके का० काम भोग से अ० असुर कुमार व० वर्जकर भ० भवनवासी दे० देवका अ०

विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सातसोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? उरालं समणाउसो ! तस्सणं गोयमा ! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराचेव कामभोगा, वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंद वज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराचेव कामभोगा, असुरिंद वज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणंतगुण विसिट्ठतराचेव काम भोगा, असुर कुमाराणं देवाणं कामभोगेहिंतो

इस वंशवाली यावत् कलावंत, अनुरक्त, अविरक्त, व पति के मन को अनुकूल ऐसी भार्या की साथ इष्ट शब्द यावत् स्पर्श ऐसे पांच प्रकार के मनुष्य के कामभोग भोगता हुआ रहे. अहो गौतम ! पुरुष वेद के विकार का जो उपशम उस काल के अंत में अर्थात् वीर्य क्षरणराते समय में वह पुरुष कैसा सुख अनुभवे ? अहो भगवन् ! वह पुरुष उदार सुख अनुभवे. तब अहो गौतम ! उस पुरुष के कामभोगों से

अनंत गुणा व० श्रेष्ठ का० काम भोग अ० असुरेन्द्र व० वर्जकर भ० भवनवासी दे० देवका का० काम भोग से अ० असुर कुमार दे० देवका अ० अनंत गुणा वि० श्रेष्ठ काम भोग अ० असुर कुमार दे० देव का का० काम भोग से ग० ग्रह ग० गण ण० नक्षत्र ता० तारारूप जो० ज्योतिषी का अ० अनंतगुणा वि० श्रेष्ठ का० काम भोग ग० ग्रह ग० गण ण० नक्षत्र जा० यावत् का० काम भोग से चं० चंद्र सू० सूर्य जो० ज्योतिषी जो० ज्योतिषी राजा का अ० अनंत गणा वि० श्रेष्ठ काम भोग चं० चंद्र सू० सूर्य गो० गौतम

गहगणणक्खत्त तारारूवाणं जोइसियाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराचेव कामभोगा गहगणणक्खत्ततारारूवाणं जोइसियाण कामभोगेहिंतो चंदिम सूरियाणं जोइसियाणं जोइसिरायाणं एत्तो अणंतगुण विसिट्ठतराचेव कामभोगा, चंदिम सूरियाणं गोयमा ! जोइसिंदा जोइसिरायाणो एरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ? भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव विहरइ ॥

वाणव्यंतर के कामभोगों अनंतगुणे विशिष्टतर होते हैं. और वाणव्यंतर के कामभोगों से असुरेन्द्र छोडकर अन्य भवनवासी देवों के कामभोग श्रेष्ठ कहे हैं. असुरेन्द्र छोडकर अन्य सब भुवनपति के कामभोगों से असुरेन्द्र के कामभोग अनंतगुने श्रेष्ठ हैं असुर कुमार के कामभोग से ग्रह, नक्षत्र तारा रूप ज्योतिषियों के कामभोग अनंतगुने श्रेष्ठ हैं और ग्रह नक्षत्र व तारा रूप ज्योतिषियों के कामभोगों से ज्योतिषीके

ज्योतिषीन्द्र जो० ज्योतिषी राजा ए०इस प्रकार का का०काम भोग प०अनुभवते वि०विचरते हैं॥१२॥५॥
ते० उस काल ते० उस समय में जा० यावत् ए० एसा व० बोले के० कितना म० बडा भं० भगवन्
लो० लोक प० प्ररूपा गो० गौतम म० महा म० बडा लो० लोक प० प्ररूपा पु० पूर्व में अ० असंख्यात
योजन को० कोडा कोडी दा० दक्षिण में अ० असंख्यात ए० ऐसे प० पश्चिम में ए० ऐसे उ० उत्तर में

दुवालसम सयस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ६ ॥ * *

तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी के महालएणं भंते ! लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! महइमहालए लोए पण्णत्ते, पुरच्छिमेणं असंखेज्जाओ जोअण कोडा कोडीओ दाहिणेणं असंखेज्जाओ एवं चेव, एवं पच्चच्छिमेणवि, एवं उत्तरेणवि, एवं

राजा चंद्र, सूर्य के कामभोग श्रेष्ठतर कहे हैं. अहो गौतम! ज्योतिषी के इन्द्र चंद्र, सूर्य ऐसे कामभोग भोगते हुवे विचरते हैं. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कारकर यावत् विचरने लगे. यह बारहवा शतक का छठा उद्देशा पूर्ण हुवा॥१२॥६॥

अनंतर उद्देशे में चंद्रादिक के अतिशय सुख कहे. चंद्रादिक लोक में होने से लोक के अंश में जीवों के जन्म जरा मरण की वक्तव्यता कहते हैं. उस काल उस समय में भगवान् गौतम स्वामी श्री महा-वीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन्! लोक कितना बडा कहा है? अहो

ए०ऐसे उ०ऊर्ध्व अ०अधो अ०असंख्यात जो०योजन को०क्रोडाक्रोडी आ०लंबा वि०चौडा॥१॥सरलशब्दार्थ

उड्ढंवि, अहे असंखेज्जाओ जोअण कोडा कोडीओ आयाम विक्खंभेणं ॥ १ ॥ एयंसिणं भंते ! ए महालयंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे जत्थणं अयं जीवे न जाएवा न मएवावि ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-एयंसिणं महालयंसि लोगंसि णत्थि केइ परमाणु पोग्गलमेत्तेवि पदेसे जत्थणं एयं जीवे ण जाएवा ण मएवावि ? गोयमा ! से जहा णामए केइ पुरिसे अयासयस्स एगं महं अयावयं करेज्जा, सेणं तत्थ जहण्णेणं एगंवा दोवा तिण्णिवा,

गौतम ! यह लोक बहुत बडा कहा बहुत पदार्थ का स्थान कहा. पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर ऊर्ध्व व अधो में असंख्यात योजन का लम्बाचौडा लोक कहा. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इतना बडा लोक में एक परमाणु मात्रभी कोई प्रदेश है कि जहां यह जीव न जन्मा होवे और न मरा होवे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् किस कारन से ऐसा कहा गया है कि इतना बडा लोक में ऐसा कोइभी परमाणु जितना प्रदेश नहीं हैं कि जहां यह जीव जन्मा व मरा न होवे ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष सेंकडो अजा (बकरियों) के लिये एक अजाव्रज (वाडा) वनावे. उस में एक दो तीन

उक्कोसेणं अयासहस्सं पक्खिवेज्जा, ताओणं तत्थ पउर गोयराओ पउरपाणीयाओ जहण्णेणं एगाहंवा दुयाहंवा तियाहंवा, उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा, ॥ अत्थिणं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केइ परमाणु पोग्गलमेत्तेवि पएसे जेणं तासिं अयाण उच्चारेणवा, पासवणेणवा, खेलेणवा, सिंघाणेणवा, वंतेणवा पित्तेणवा पूएणवा, सुक्केणवा,सोणिएणवा,चम्मेहिंवा, रोमेहिंवा, सिंगेहिंवा, खुरेहिंवा, णहेहिंवा अणिक्कंत पुव्वे भवइ ? णोइणट्ठे समट्ठे, होज्जाइणं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केइ परमाणुपोग्गल मेत्तेवि पएसे जेण तासिं अयाणं उच्चारेणवा जाव णहेणवा अणिक्कंत पुव्वे णोचेवणं

यावत् सहस्र बकरियों भरदेवे. उनके लिये घास चारा वगैरह की वहां बहुलता होवे. उस वाडे में उन बकरियों को जघन्य एकदिन दोदिन तीन दिन यावत् उत्कृष्ट छमास तक रखे. अब अहो गौतम ! उस बाडे का कोईभी प्रदेश ऐसा रह सकता है कि जो बकरी उच्चार, प्रस्रवण, खेंकार, सिंघाण (नाक-कामल) वमन, पित्त, राध, शुक्र, रुधिर, चर्म, रोम, शृंग, खुर, व नख से नहीं स्पर्श हुवा होवे ? अहो भगवन् ! यह अर्थ समर्थ नहीं होसकता है क्यों की वह वाडाका सब भाग बकरियों के मूत्र यावत् नख से स्पर्शाता हैं. वैसे ही इस महालोक की परमाणु जितनी जगह नहीं कि जहां जीव के जन्म जरा मरण न

एयंसि ए महालयंसि लोगस्स सासयं भावं, संसारस्स अणादिभावं, जीवस्सय णिच्च-भावं, कम्म बहुत्तं जम्मण मरण बाहुल्लंच पडुच्च णत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे जत्थणं अयंजीवे ण जाएवा ण मएवावि से तेणट्ठेणं तंचेव जाव ण मएवावि॥ २॥ कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जहा पढमसए पंचमोद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव अणुत्तरविमाणेत्ति जाव अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे ॥ ३ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावाससयसहस्सेसु एग-मेगंसि णिरयावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइ काइयत्ताए णरगत्ताए णेरइ-

हुवे होवे. क्योंकी महालोक शाश्वत अनादि, नित्य है वैसे हीं संसारी जीव भी अनादि से कर्म की बाहुल्यता से जन्म मरण कर रहे हैं. अहो गौतम! इसी कारन से ऐसा कहा गया है कि इतना बडा लोक में एक परमाणु जितना भी प्रदेश ऐसा नहीं है कि जहां जीवने जन्म मरण न किया होवे ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वियों कितनी कही ? अहो गौतम ! जैसे प्रथम शतक के पांचवे उद्देशे में आवास तक कहा वैसे सब अनुत्तर विमान में अपराजित व सर्वार्थसिद्ध तक कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! यह जीव रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से एक २ नरकावास में पृथ्वीकायापने यावत् वनस्पतिकाया-

यत्ताए उववण्ण पुव्वे ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो ॥ ४ ॥ सव्व जीवाविणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरया तंचेव जाव अणंतखुत्तो ॥ ५ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसाए एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा, एवं जाव धूमप्पभाए। अयण्णं भंते! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे णिरयावास सयसहस्से एगमेगंसि सेसं तंचेव अयण्णं भंते ! जीवे अहे सत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महइ महालएसु महाणिरएसु एगमेगंसि णिरयावासंसि सेसं जहा रयणप्पभाए ॥ ६ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे चउसट्ठी असुरकुमारावास सयसहस्सेसु एग-

पने, नरकपने व नारकीपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! यह जीव रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से एक २ नरकावास में पृथ्वीकाय यावत् वनस्पतिकायापने व नारकीपने अनेकवार यावत् अनंतवार पहिले उत्पन्न हुवा ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सब जीव पहिले इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख नरकावास में से एक २ नरकावास में पृथ्वीकायापने यावत् नारकीपने पहिले उत्पन्न हुवे ? हां गौतम ! अनेकवार व अनंतवार उत्पन्न हुवे. ॥ ५ ॥ जैसे रत्नप्रभा के दो आलापक कहे वैसे ही शर्कर प्रभा के २५ लाख नरकावास के दो आलापक जानना ऐसे ही वालुप्रभा के १५ लाख; पंकप्रभा के १० लाख, धूम्र प्रभा के तीन लाख, तम में पांचकम एक लाख और तमतम प्रभा के पांच अनुत्तर बहुत

मेगंसि असुरकुमारावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइ काइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसणसयण भंडमत्तोवगरणत्ताए उववण्णपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो ॥ सव्वजीवाविणं भंते ! एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारेसु, णाणत्तं आवासेसु आवासा पुव्वभणिया ॥ ७ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु पुढवी-काइयावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढवीकाइयावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववण्ण पुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव क्खुत्तो ॥ एवं सव्व जीवावि ॥ एवं जाव वणस्सइ-काइएसु ॥ ८ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु बेइंदियावास सयसहस्सेसु एगमे-

बडे महा नरकावास का जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! चौसठ लाख असुरकुमार के आवास में से एक २ आवास में पृथ्वीकाय पने यावत् वनस्पतिकाय पने, देवपने, देवीपने, आसन, शयन, भंड, पात्र उपकरणपने क्या पहिले यह जीव उत्पन्न हुआ ? हां गौतम ! अनेकवार २ अनंतवार उत्पन्न हुआ. सब जीवों आश्री वैसे ही जानना जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही स्थनित कुमारोंतक का अपन आवास अनुसार कहना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! यह जीव पृथ्वीकाया के असंख्यात आवास में से एक २ आवास में क्या पृथ्वी-कायापने यावत् वनस्पतिकायापने पहिले उत्पन्न हुआ ? हां गौतम ! अनेकवार व अनंतवार उत्पन्न

गंसि बेइंदियावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइ काइयत्ताए बेइंदियत्ताए उववण्ण-
पुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंतखुत्तो ॥ सव्वजीवाविणं एवं चेव ॥ एवं जाव मणुस्सेसु,
णवरं तेइंदिएसु जाव वणस्सइ काइयत्ताए, तेइंदियत्ताए चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए एवं पंचिं
दिय तिरिक्खजोणिएसु पंचिंदिय तिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए सेसं
जहा बेइंदियाणं, वाणमंतरजोइसिय सोहम्मीसाणाणय जहा असुरकुमाराणं ॥ ९ ॥
अयण्णं भंते! जीवे सणंकुमारकप्पे बारससु विमाणावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि

हुवा. ऐसे ही सब जीवों का कहना. जैसे पृथ्वीकाया के दो आलापक कहे वैसे ही अप् तेऊ, वायु व
वनस्पति के दो २ आलापक कहना ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! असंख्यात बेइन्द्रिय के वास में से एक २ वास
में यह जीव पृथ्वीकाया पने यावत् वनस्पति काया पने व बेइन्द्रिय पने क्या पहिले उत्पन्न हुवा? हां
गौतम! अनेकवार व अनंत वार उत्पन्न हुवा. ऐसे ही सब जीवों का कहना. जैसे बेइन्द्रिय का कहा वैसे
ही बेइन्द्रिय यावत् मनुष्य तक कहना विशेष में तेइन्द्रिय में तेइन्द्रियपने, चौरेन्द्रिय में चोरेन्द्रिय पने,
तिर्यंच पंचेन्द्रिय में तिर्यंच पंचेन्द्रियपने और मनुष्यमें मनुष्यपने कहना. वाणव्यंतर, ज्योतिषी व सौधर्म ईशान
का असुर कुमार जैसे कहना ॥९॥ अहो भगवन्! यह जीव सनत्कुमार देवलोक के बारह हजार विमान में
से एक २ विमान में पृथ्वीकाया पने यावत् वनस्पति काया पने देवतापने देवीपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा? अहो

वेमाणियावासंसि, पुढवीकाइया सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो णो चेवणं देविताए, एवं सव्वजीवावि ॥ एवं जाव आणयपाणएसु एवं आरणच्चुएसुवि अयण्णं भंते! जीवे तिसुवि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जगविमाणावाससएसु एवंचेव ॥१०॥ अयण्णं भंते! जीवे पंचसु अणुत्तर विमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तर विमाणंसि पुढवि तहेव जाव अणंतखुत्तो, णो चेवणं देवत्ताए देवित्ताए एवं सव्वजीवावि ॥ ११ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पित्तित्ताए, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जात्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए, उववण्ण पुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंत खुत्तो

गौतम! अनेकवार व अनंतवार उत्पन्न हुवा. किन्तु इस में देवियोंकी उत्पत्ति नहीं होने से देवी ग्रहण नहीं की है. ऐसे ही सब जीवोंका जानना. जैसे सनत्कुमार का कहा वैसे ही माहेन्द्र यावत् आरण अच्युत तक का जानना. ऐसे ही नवग्रैवेयक के ३१८ विमान का जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन्! यह जीव पांच अनुत्तर विमान के एक २ अनुत्तर विमान में पृथ्वीकायापने यावत् वनस्पतिकायापने क्या पहिले उत्पन्न हुवा? हां गौतम! अनेकवार व अनंतवार उत्पन्न हुवा. परंतु देवपने या देवीपने उत्पन्न नहीं हुवा. ऐसे ही सब जीव आश्री जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन्! यह जीव सब जीवों की माता, पिता,

॥ १२ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घायगत्ताए, वहगत्ताए पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए, उववण्ण पुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंतखुत्तो सव्व जीवाविणं भंते ! एवंचेव ॥ १३ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए, जाव सत्थवाहत्ताए उववण्ण पुव्वे ? हंता गोयमा! असतिं जाव अणंत खुत्तो ॥ सव्वजीवाणं एवंचेव ॥ १४ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सव्व जीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भुयगत्ताए, भाइल्लगत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसुत्ताए. उववण्णपुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंतखुत्तो ॥ एवं सव्वजीवावि जाव अणंत

भाई, भगिनी, भार्या, पुत्र, पुत्री व पुत्रवधूपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकवार यावत् अनंतवार उत्पन्न हुवा ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! यह जीव सब जीवों के शत्रु, वैरी, घातक, वधक, प्रत्यनीक, व अमित्रपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकवार यावत् अनंतवार. जैसे एक जीवका कहा वैसे सब जीवोंका जानना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! यह जीव सब जीवों के राजा, युवराज, यावत् सार्थवाहपने पहिले क्या उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकवार यावत् अनंतवार उत्पन्न हुवा. ऐसे ही सब जीवों का जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! यह जीव सब जीवों के दास, प्रेषक, भृत्यक, भागीदार, भोग पुरुष, शिष्य व द्वेष्यपने

ते० उस काल ते० उस समय में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महासुखी अ० अनंतर च० चवकर वि० विशरीरी ना० नाग में उ० उत्पन्न होवे हं० हां

खुत्तो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ दुवालसमसयस्सय सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ७ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी-देवेणं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे

क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकवार यावत् अनंतवार पहिले उत्पन्न हुवा. ऐसे ही सब जीवों का जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का सातवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ १२ ॥ ७ ॥

सातवे उद्देशे में जीव की उत्पत्ति कही आठवे उद्देशे में उस का ही अन्य प्रकार से स्वरूप कहते हैं. उस काल उस समय मे श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महा ऐश्वर्यवंत देव अपना शरीर छोडकर अंतर रहित दो शरीरवाला ÷ नागपर क्या उत्पन्न होता है ? हां गौतम ! उत्पन्न होता है. वह नाग क्या अर्चनीय,

÷ दो शरीर दो भव आश्री लिया गया है एक भव नाग का व एक भव वहां से चवकर मनुष्य होवे सो. नाग का अर्थ हाथी व सर्प दोनो होते है.

गो० गौतम उ० उत्पन्न होवे से० वह त० तहां अ० अर्चनीय वं० वंदनीय पू० पूजनीय स० सत्कार करने योग्य स० सन्मान करने योग्य दि० दिव्य स० सत्य स० सत्य अवपात स० सन्निहित पा० प्रातिहार्य भ० होवे त० तहां से अ० अनंतर उ० मरकर सि० सिझे बु० बुझे जा० यावत् अं० अंतकरे हं० हां सि० सिझे जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ १ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक ए० ऐसे जा० जावत् वि० विशरीरी म०

अणंतरं चयं चइत्ता विसरीरेसु नागेसु उववजेज्जा ? हंता गोयमा ! उववजेज्जा ॥ सेणं तत्थ अच्चिय वंदिय पूइय सक्कारिय सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवए सण्णिहियपाडिहेरयावि भवेज्जा ? हंता भवेज्जा ॥ सेणं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा, जाव अंतकरेज्जा ? हंता सिज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा ॥ १ ॥ देवेणं भंते ! महिड्ढीए एवं चेव जाव विसरी-

वंदनीय, सत्कार योग्य, सन्मान योग्य, सेवा योग्य, दीव्य, सत्य, स्वप्नादि से सत्य सेवा बतानेवाला व पूर्व संगति से पास रहकर कार्य करनेवाला देवाधिष्ठित क्या होता है ? हां गौतम ! वह नाग ऐसा ही होता है. अहो भगवन् ! क्या वह नाग मरकर अंतर रहित मनुष्य गति में जाकर सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ? हां गौतम ! वह सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महा ऐश्वर्यवंत देव दो शरीरी मणि (पृथ्वीकाया विशेष) में क्या उत्पन्न होता है ? अहो

मणि में उ० उत्पन्न होवे ए० ऐसे ज० जैसे ना० नागका ॥ २ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक जा० यावत् वि० विशरीरी रु० वृक्ष में उ० उत्पन्न होवे ए० ऐसे ही ण० विशेष जा० यावत् स० सन्निहित पा० प्रातिहार्य ला० संवाली करना लो० साफ करना म० पूजा भ० होवे से० शेप तं० तैसे जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ ३ ॥ गो० बडा वानर कु० कुकुटवृषभ मं० मंडुकवृषभ णि० निःशील नि० व्रतरहित णि०

देवेणं भंते ! महिड्डीए जाव रेसु मणीसु उववज्जेज्जा एवं चेव जहा नागाणं ॥ २ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डीए जाव विसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ? एवं चेव, णवरं इमं णाणत्तं जाव सण्णिहिय पाडिहेरे लाउल्लोइय महइयावि भवेज्जा, सेसं तंचेव जाव अंतं करेज्जा ॥ ३ ॥ अह भंते ! गोणं गुलवसभे कुक्कुडवसभे मंडुकवसभे, एएणं णिस्सीला, णिव्वया, णिग्गुणा,

गौतम ! इस का सब अधिकार नाग जैसे कहना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या महर्द्धिक देव दो शरीरी वृक्ष में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! इस का सब अधिकार नाग जैसे कहना विशेष में उस वृक्ष के नजदिक पूर्व संगति देवता से किया हुवा प्रतिहार्य कर्म से छाना गोबरादि मे भूमिका साफकरे खडीचूनादि लगावे और इस से वह वृक्ष पूजनीय होवे यावत् मनुष्य बनकर सब दुःखों का अंतकरे. ॥ ३ ॥ अब नरक गामी का कथन कहते हैं. अहो भगवन् ! सब वानरों मे बडा वानर, कुकुट वृषभ, मण्डूक वृषभ ये तीन

णिम्मेरा, णिप्पच्चक्खाण पोसहोववासा कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठिइयंसि णरगंसि णेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ? समणे भगवं महावीरे वागरेइ उववज्जमाणे उववण्णेत्ति वत्तव्वं सिया ॥ ४ ॥ अह भंते ! सीहे वग्घे जहा उस्सप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे एएसिं णिस्सीला एवं चेव जाव ढंके कंके पिलए मड्डुए सिखीए एएणं णिस्सीला वत्तव्वं सिया ॥ ५ ॥ अह भंते !

निर्गुणी णि॰ मर्यादाविना के णि॰ प्रत्याख्यान रहित पो॰ पोषध उ॰ उपवास का॰ काल के अवसर में का॰ काल करके इ॰ इस र॰ रत्नप्रभा पु॰ पृथ्वी में उ॰ उत्कृष्ट सा॰ सागरोपम ठि॰ स्थिति वाले ण॰ नरक में णे॰ नारकीपने उ॰ उत्पन्न होवे स॰ श्रमण भ॰ भगवन्त म॰ महावीर वा॰ कहते हैं उ॰ उत्पन्न होवे उ॰ उत्पन्न हुवा व॰ कहना ॥ ४ ॥ अ॰ अथ भं॰ भगवन् सी॰ सिंह व॰ व्याघ्र ज॰ जैसे उ॰ उत्सर्पिणी उ॰ उद्देशा में जा॰ यावत् प॰ परस्पर णि॰ निःशील ए॰ ऐसे ही जा॰ यावत् व॰ कहना

शील, व्रत, गुण मर्यादा प्रत्याख्यान व पौषधोपवास रहित काल करे तो इस रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्कृष्ट एक सागरोपमकी स्थिति मे क्या नरकमें नारकीपने उत्पन्न होवे? श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उत्तर दिया कि उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न हुवे भी हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सिंह, व्याघ्र वगैरह जो सातवे शतक के छठे उद्देशे में कहे वैसे वे शीलादि व्रत प्रत्याख्यान रहित यावत् नरक में उत्पन्न होते हैं ॥ ५ ॥ अहो

निःशील से०

॥ ५ ॥ अ० अथ भं० भगवन् ढं० ढंक कं० कंक पि० पीलक मं० मंडूक सि० मोर णि० निःशील से०

शेष तं० तैसे जा० यावत् व० वक्तव्यता भि० होवे ॥ १२ ॥ ८ ॥

क० कितने प्रकार के भं० भगवन् दे० देव प० प्ररूपे गो० गौतम पं० पांच प्रकार के दे० देव प०

प्ररूपे तं० वह ज० जैसे भ० भविक द्रव्यदेव न० नरदेव ध० धर्मदेव दे० देवाधिदेव भा० भावदेव ॥ १ ॥

सेसं तंचेव जाव वत्तव्वं सिया ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ! जाव विहरइ ॥ दुवालसम-

सयस्सय अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ८ ॥

कइविहेणं भंते! देवा पण्णत्ता? गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तंजहा भवियदव्वदेवा,

नरदेवा, धम्मदेवा, देवाधिदेवा, भावदेवा ॥ १ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ

भगवन् ! ढंक, कंक, पीलक, मण्डुक, मयूर, शीलादि रहित होने से रत्नप्रभा पृथ्वी में एक सागरोपम

की स्थिति से क्या नरक में उत्पन्न होते हैं ? भगवंतने उत्तरदिया कि हां गौतम ! वे नरक में उत्पन्न

होते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे भगवान्

गौतम स्वामी विचरने लगे. यह बारहवा शतक का आठवा उद्देशा पूर्ण हुआ. ॥ १२ ॥ ८ ॥

आठवे उद्देशे में देवों की उत्पत्ति कही. नववे उद्देशे में देवका ही कथन करते हैं. अहो भगवन् ! देव

के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम ! देव के पांच भेद कहे हैं. १ भविकद्रव्य देव २ नरदेव ३ धर्मदेव

से० वह के० कैसे भं० भगवन् भ० भविक द्रव्यदेव भ० भविक द्रव्यदेव गो० गौतम जे० जो भ० भविक पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव में उ० उत्पन्न होने वाले से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है भ० भविक द्रव्यदेव से० वह के० कैसे न० नरदेव गो० गौतम जे० जो रा० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती उ० उत्पन्न स० समस्त च० चक्ररत्न प० प्रधान ण० नवनिधि स० समृद्धि को० कोश ब० बत्तीस रा० राजा व० प्रधान स० सहस्र अ० सेवा करने वाले सा० सागर मे०

भवियदव्वदेवा ? भवियदव्वदेवा गोयमा ! जे भविय पंचेंदिय तिरिक्ख जोणिएवा मणुस्सेवा देवेसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ भवियदव्वदेवा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नरदेवा ? नरदेवा गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंत चक्कवट्टी उप्पण्ण सम्मत्त चक्करयणप्पहाणा णवणिहि पइणो समिद्धकोसा, बत्तीस रायवर सहस्साणुयातमग्गा, सागरवर मेहिलाहिपतिणो मणुस्सिंदा, से तेणट्ठेणं जाव

४ देवाधिदेव और ५ भावदेव ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भविकद्रव्य देव क्यों कहा गया ? अहो गौतम ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य में देवों का आयुष्य बांधकर देवलोक में उत्पन्न होने को योग्य होता है वह भविक द्रव्यदेव कहाता है. अहो भगवन् ! नरदेव किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! जो समस्त भरत क्षेत्र का राजा, चारों दिशा का चक्रवर्ती, चक्ररत्नादि सात एकेन्द्रिय व सेनापति आदि सात पंचेन्द्रिय

पृथ्वी का अ० अधिपति म० मनुष्येन्द्र से० वह ते० इसलिये जा० यावत् न० नरदेव से० वह के० कैसे भं० भगवन् ध० धर्मदेव गो० गौतम जे० जो अ० अनगार भ० भगवन्त इ० ईर्यासमितिवाले जा० यावत् गु० गुप्तब्रह्मचारी से० वह ते० इस लिये जा० यावत् ध० धर्मदेव से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है दे० देवाधिदेव गो० गौतम जे० जो अ० अरिहंत भ० भगवन्त उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दं० दर्शन धारक जा० यावत् स० सर्वदर्शी से० वह ते० इसलिये; जा० यावत् दे० देवाधिदेव से० वह

नरदेवा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ धम्मदेवा ? धम्मदेवा गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो इरियासमिया जाव गुत्तबंभयारी से तेणट्ठेणं जाव धम्मदेवा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवाधिदेवा ? देवाधिदेवा गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पण्ण णाणदंसणधरा जाव सव्वदरिसी, से तेणट्ठेणं जाव देवाधिदेवा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-भावदेवा ? भावदेवा गोयमा ! जे इमे भवणवइ

रत्नों प्रधान चौदह रत्न, नवनिधान समृद्ध भंडार वाला है बत्तीस हजार राजा जिनकी सेवा करते होवे समुद्रकी मेखला पर्यंत के स्वामी, मनुष्य के इन्द्र जो होते हैं वे नरदेव कहाते हैं. अहो भगवन्! धर्मदेव किसे कहते हैं ? अहो गौतम! जो अनगार ईर्यासमिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हैं वे धर्मदेव कहाते हैं. अहो भगवन्! देवाधिदेव किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक यावत् सर्व दर्शी

के० कैसे भा० भावदेव गो० गौतम जे० जो भ० भवनपति वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक दे० देव दे० देवगति णा० नाम गो० गोत्र क० कर्म वे० वेदते हैं से० वह ते० इसलिये जा० यावत् भा० भावदेव ॥ २ ॥ सरल शब्दार्थ

वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया देवा देवगइनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति से तेणट्ठेणं जाव भावदेवा ॥ २ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति- किं णेरइए हिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णेरइएहिंतो उववज्जंति तिरि-मणु-देवेहिंतो उववज्जंति ॥ भेदो जहा वक्कंतीए, सव्वेसु उववातेयव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, णवरं असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमिग अंतरदीव सव्वट्ठ

अरिहंत भगवंत होते हैं वे देवाधिदेव कहाते हैं. अहो भगवन्! भावदेव किसे कहते हैं? अहो गौतम! जो भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषि व वैमानिक देव देवगति, नाम, गोत्र के कर्म वेदते हैं वे भावदेव कहाते हैं. यह दूसरा लक्षण द्वार हुवा ॥ २ ॥ अहो भगवन्! भविक द्रव्य देव कहां से उत्पन्न होते हैं क्या नरक से उत्पन्न होते हैं तिर्यंच, मनुष्य व देव में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! भविक द्रव्य देव नरक में से, तिर्यंच में से, मनुष्य व देव में से उत्पन्न होते हैं. इसका विशेष खुलासा पन्नवणा के छठा पद में कहा है वैसे कहना यावत् अनुत्तर विमान तक के देव उत्पन्न होते हैं. परंतु असंख्यात वर्ष की स्थितिवाले अकर्म

सिद्धवज्जं जाव अपराजिय देवेहिंतोवि उववज्जंति। णरदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइए पुच्छा?गोयमा!णेरइएहिंतो उववज्जंति,णो तिरि णो मणु, देवेहिंतो उववज्जंति॥ जइ णेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभा पुढवि णेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहे सत्तमाए पुढविए णेरइएहिंतोवि उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभा पुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति, णो सक्कर जाव णो अहे सत्तम पुढवि णेरइएहिंतो उववज्जंति। जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! भवणवासि देवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतर एवं सव्व-

भूमि, अंतरद्वीप व सर्वार्थ सिद्ध में से चवकर भविक द्रव्य देव नहीं होते हैं क्यों की अकर्म भूमि न अंतर द्वीप के मनुष्य देवलोक में उत्पन्न होते हैं और सर्वार्थ सिद्ध वाले मनुष्य में आकर सिद्ध होते हैं. अहो भगवन्! नरदेव कहां से आकर उत्पन्न होते हैं? क्या नरक में से उत्पन्न होते हैं यावत् देवलोक में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! नरक व देव इन दोनों में से नरदेव उत्पन्न होते हैं परंतु मनुष्य तिर्यंच में से आकर उत्पन्न नहीं होते हैं. जब नरक में से नरदेव उत्पन्न होते हैं तो क्या रत्नप्रभा में से यावत् तमतम प्रभा में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! रत्नप्रभा में से उत्पन्न होते हैं परंतु शेष छ नरक में से नहीं

देवेसु उववाएयव्वा, वक्कंती भेदेणं जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति। धम्मदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति-किं नेरइएहिंतो एवं वक्कंती भेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, णवरं तमा, अहे सत्तमाए तेऊवाऊ असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमिग अंतरदीवग वज्जेसु। देवाधिदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिंतो उववज्जंति पुच्छा? गोयमा! णेरइएहिंतो उववज्जंति, णो तिरि णो मणु देवेहिंतो उववज्जंति जइ णेरइए एवं तिसु पुढवीसु उववज्जंति सेसाओ खोडेयव्वाओ, जइ देवेहिंतो वेमाणिएसु

उत्पन्न होते हैं जब देव में से उत्पन्न होते हैं तब क्या भवनपति में से उत्पन्न होते हैं यावत् वैमानिक में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! भवनपति वाणव्यंतर यावत् सर्वार्थसिद्ध में से उत्पन्न होते हैं वगैरह सब पन्नवणा के छठे पद से जानना. अहो भगवन्! धर्मदेव क्या नरक यावत् देवगति में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! नरक यावत् देवगति में से उत्पन्न होते हैं उन की सब उत्पत्ति पन्नवणा सूत्रानुसार जानना परंतु छठी, सातवी पृथ्वी, तेऊ वायु, असंख्यात वर्ष वाले अकर्म भूमि व अंतरद्वीप के मनुष्य में से धर्मदेव नहीं होसकते हैं. अहो भगवन्! देवाधिदेव कहां से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! नरक व देवलोक में से देवाधिदेव उत्पन्न होते हैं परंतु मनुष्य तिर्यंच में से नहीं उत्पन्न होते हैं. नारकी में से रत्नप्रभा, शर्कर प्रभा व वालुप्रभा ऐसी तीन नरक में से उत्पन्न होते हैं और देवलोक में से सर्वार्थ सिद्ध तक के सब

सव्वेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठ सिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा। भावदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? एवं जहा वक्कंतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वं ॥ ३ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ णरदेवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं सत्तवाससयाइं उक्कोसेणं चउरासीति पुव्व सयसहस्साइं। धम्मदेवाणं भंते! पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणाइं पुव्वकोडी। देवाहिदेवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं बावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेणं चउरासीइ पुव्व सयसहस्साइं। भाव-देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोव-

वैमानिक में से उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! भावदेव कहां से उत्पन्न होते हैं? कहो गौतम! जैसे पन्न-वणा सूत्र में छठे पद का कहा वैसे कहना. यह तीसरा उत्पत्ति द्वार हुवा ॥ ३ ॥ अहो भगवन् भाविक द्रव्य देव की कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की कही. नरदेव की स्थिति जघन्य सातसो वर्ष की उत्कृष्ट चौरासी लक्ष पूर्व की, धर्मदेव की स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्ट देशऊणा क्रोड पूर्व, देवाधिदेव की स्थिति जघन्य बहोत्तर वर्ष उत्कृष्ट चौरासी लक्ष पूर्व. भावदेव की

माइं ॥ ६ ॥ भविय दव्वदेवाणं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए ॥ एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं जाव पंचिंदिय रूवंवा, पुहत्तं विउव्वमाणे एगिंदिय रूवाणिवा जाव पंचिंदिय रूवाणिवा, ताइं संखेज्जाणिवा असंखेज्जाणिवा, संबद्धाणिवा असंबद्धाणिवा, सरिसाणिवा असरिसाणिवा, विउव्वित्तए विउव्वित्ता तओ पच्छा अप्पणो जहत्थियाइं कज्जा करेंति एवं णरदेवावि एवं धम्मदेवावि ॥ देवाहिदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए पुहत्तंपि पभू विउव्वित्तए, णो चेवणं संपत्तीए,

स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! भविक द्रव्य देव एक अथवा अनेक रूप वैक्रेय करने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! एक अथवा अनेक रूप वैक्रेय करने को भविक द्रव्य देव समर्थ है ? एक रूप वैक्रेय करते एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय के रूप का वैक्रेय करे और अनेक रूप वैक्रेय करते एकेन्द्रिय के रूपों यावत् पंचेन्द्रिय के रूपों संख्यात व असंख्यात संबद्ध या असंबद्ध, सदृश या असदृश ऐसे वैक्रेय करने को समर्थ है. फीर अपना इच्छित कार्य करते हैं, ऐसे ही नरदेव व धर्मदेव का जानना. देवाधिदेव एक अथवा अनेक वैक्रेय करने में समर्थ हैं

विउव्विंसुवा विउव्विंतिवा, विउव्विस्संतिवा । भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा ॥ ५ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति, किं णेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! णो णेरइएसु उववज्जंति, णो तिरि णोमणु, देवेसु उववज्जंति, ॥ जइ देवेसु उववज्जंति सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति । णरदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा? गोयमा ! णेरइएसु उववज्जंति, णोतिरि णोमणु णोदेवेसु उववज्जंति ॥ जइ णेरइएसु उववज्जंति सत्तसुवि पुढवीसु उववज्जंति ॥ धम्मदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा ? गोयमा ! णो

ार्थ

परंतु उत्सुकता रहित होने से गत काल में इतने रूप किये नहीं, करते नहीं हैं व करेंगे नहीं. भाव देव का भविक द्रव्य देव जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! भविक द्रव्य देव चवकर क्या नरक यावत् देव-लोक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! भविक द्रव्य देव नरक, तिर्यंच व मनुष्य में नहीं उत्पन्न होते हैं. परंतु देवलोक में उत्पन्न होते हैं और देवलोक में सब देवलोक में यावत् सर्वार्थ सिद्ध में उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! नरदेव चवकर कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नरक में उत्पन्न होते हैं परंतु तिर्यंच, मनुष्य व देव में नहीं उत्पन्न होते हैं जब नरक में उत्पन्न होते हैं तब सातों नरक में से किसी

णेरइएसु उववज्जंति, णोतिरि णोमणु, देवेसु उववज्जंति ॥ जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि पुच्छा? गोयमा ! णो भवणवासी देवेसु उववज्जंति, णो वाणमंतर, णो जोइसिय, वेमाणिय देवेसु उववज्जंति, सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्ध उववज्जंति, अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंतं करेंति देवाहिदेवाणं भंते ! अणंतरं उवट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति ? गोयमा ! सिज्झंति जाव अंतं करेंति भावदेवाणं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा ? जहा वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते ! भवियदव्वदेवोत्ति कालओ केव-

नरक में उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! धर्मदेव चवकर कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नरक, तिर्यंच व मनुष्य में नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु देवलोक में उत्पन्न होते हैं. जब देवलोक में उत्पन्न होते हैं तब सब वैमानिक देव में सर्वार्थ सिद्ध वैमानिक तक उत्पन्न होते हैं और कितनेक सिद्ध बुद्ध यावत् मुक्त होते हैं. अहो भगवन् ! देवाधिदेव कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! देवाधिदेव सीझते हैं. बुझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं. अहो भगवन् ! भावदेव वहां से चवकर कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसे असुर कुमार का उत्पन्न होने का कहा वैसे ही उद्वर्तना कहना ॥ ॥६॥ अहो भगवन् !

चिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं, एवं जच्चेव तित्ती सच्चेव संचिट्ठणावि जाव भावदेवा, णवरं धम्मदेवस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणाइं पुव्वकोडी ॥ ७ ॥ भवियदव्व देवस्सणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, वणस्सइकालो नरदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं सागरोवमं, उक्कोसेणं अणंतंकालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं । धम्मदेवस्सणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ३० ॥ देवाधिदेवाणं पुच्छा ?

भविक द्रव्य देव भविक द्रव्य देवपने कितना कालतक रहता है ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम यों जैसे पहिले भव स्थिति कही वैसे संचिठना काल जानना. परंतु धर्मदेव की जघन्य एक समय उत्कृष्ट देश उना क्रोड पूर्व ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! भविक द्रव्य देव को कितना अंतर कहा ! अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति आश्री, नरदेव का अंतर जघन्य एक सागरोपम अधिक, उत्कृष्ट अनंत काल अथवा देश ऊना अर्ध पुद्गल परावर्त कहना. धर्म

गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं गोयमा ! णत्थि अंतरं भावदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो ॥ ८ ॥ एएसिणं भंते ! भविय दव्व देवाणं णरदेवाणं जाव भावदेवाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्व-त्थोवा णरदेवा, देवाहिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भविय दव्वदेवा असंखेज्जगुणा, भावदेवा असंखेज्जगुणा, ॥ ९ ॥ एएसिणं भंते ! भावदेवाणं भवण-वासीणं, वाणमंतराणं, जोइसियाणं, वेमाणियाणं, सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाणं गेवेज्जगाणं अणुत्तरोववाइयाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा !

देव का अंतर जघन्य प्रत्येक पल्योपम उत्कृष्ट देश ऊना अर्ध पुद्गल परावर्त, देवाधिदेव का अंतर नहीं है और भावदेव जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! भविक द्रव्य देव, नरदेव, यावत् भावदेव में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे नरदेव उस से देवाधिदेव संख्यातगुने उस से धर्मदेव संख्यातगुने उस से भविक द्रव्य देव असंख्यातगुने उस से भावदेव असंख्यातगुने ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! भावदेवों में भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक सौधर्म यावत् अच्युत ग्रैवेयक यावत् अनुत्तर विमान इनमें कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है ?

सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा; हेट्ठिम गेवेज्जा संखेज्जगुणा, अच्चुयकप्पे देवा संखेज्जगुणा, जाव आणतकप्पे भावदेवा एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिस अप्पाबहुयं जाव जोइसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा ॥ १० ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ दुवालसम सयस्सय णवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ९ ॥ ० * *

कइविहाणं भंते ! आता पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठविहा आता पण्णत्ता, तंजहा

अहो गौतम ! सब मे थोडे अनुत्तरोपपातिक भावदेव उस मे उपर की ग्रैवेयक के भावदेव संख्यातगुने, उस से मध्यम ग्रैवेयक के भावदेव संख्यातगुने उस से नीचे की ग्रैवेयक के भावदेव संख्यातगुने उस से अच्युत देवलोकवाले संख्यातगुने यावत् आनत देवलोक के भावदेव संख्यातगुने इस तरह जैसे जीवाभिगम में देव पुरुष की अल्पाबहुत्व कही वैसे कहना. यावत् ज्योतिषी देव असंख्यातगुने. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का नववा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ ९ ॥ ०

नववे उद्देशे में देवता का कथन किया. देव आत्मावाले होने से इस उद्देशे में आत्मा का कथन करते हैं, अहो भगवन् ! आत्मा के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जो अपर पर्याय को सतत जाता है अथवा उपयोग लक्षण से जो सतत जानता है उसे आत्मा कहते हैं. इस के आठ भेद कहे हैं.

दवियाता, कसायाता, जोगायाता, उवओयाता, णाणत्ता, दंसणाया, चरित्ताया, वीरियाता ॥ १ ॥ जस्सणं भंते ! दवियाता तस्सणं कसायाता, जस्स कसायाता तस्स दवियाता ? गोयमा ! जस्स दवियाता तस्स कसायाता सियअत्थि सियणत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्सणं भंते ! दवियाता तस्स जोगाता एवं जहा दवियाता कसायाता भाणिया तहा दवियाता जोगायायावि भाणि-

१ त्रिकालानुगामी उपसर्जनी कृत कषायादि पर्यायरूप आत्मा सो द्रव्य आत्मा २ क्रोधादि कषाय विशिष्ट आत्मा सो कषाय आत्मा यह आत्मा अनुपशान्त कषायवंतको होता है ३ मन प्रभृति व्यापार रूप जो योग वह जिन को प्रधान आत्मा है सो योगात्मा यह योगवंत जीवों को होता है. ४ साकार अनाकार भेद से उपयोग जिन को प्रधान है सो उपयोग आत्मा यह संसार व सिद्ध दोनों को होता है ५ ज्ञान विशेष उपसर्जनी कृत दर्शनादि आत्मा सो ज्ञानात्मा यह सम्यग्दृष्टि को होता है ६ ऐसे ही दर्शन आत्मा का जानना परंतु दर्शनात्मा सब जीवों को होता है ७ चारित्र आत्मा विरती को होता है और ८ उत्थानादि वीर्यरूप आत्मा सो वीर्यात्मा ॥ १ ॥ अब इन आठों आत्मा का परस्पर संयोग बताते हैं. अहो भगवन् ! जिस को द्रव्य आत्मा है उस को क्या कषाय आत्मा है अथवा जिस को कषाय आत्मा है उसको क्या द्रव्य आत्मा है ? अहो गौतम ! जिसको द्रव्य आत्मा है उसको कषाय आत्मा
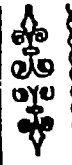
यव्वा ॥ जस्सणं भंते ! दवियाता तस्स उवओगाता एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा?
गोयमा ! जस्स दवियाता तस्स उवओगाया णियमं अत्थि, जस्सवि उवओगाता
तस्सवि दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्स दवियाता तस्स णाणाता भयणाए, जस्स पुण
णाणाता तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्स दवियाता तस्स दंसणाता णियमं

क्वचित् होता है और क्वचित् नहीं भी होता है. क्योंकी अनुपशान्त कषायी को द्रव्यात्मा व कषायात्मा
दोनों हैं और उपशांत कषायी को कषायात्मा नहीं है परंतु द्रव्यात्मा है और जिस को कषायात्मा है
उस को द्रव्य आत्मा निश्चय ही होता है. अहो भगवन् ! जिस को द्रव्य आत्मा है उस को क्या योगात्मा
है और जिस को योगात्मा है उस को क्या द्रव्यात्मा है ? अहो गौतम ! जो सयोगी है उस को द्रव्यात्मा
व योग आत्मा दोनों हैं और जो अयोगी है उस को मात्र द्रव्य आत्मा है इस से द्रव्य आत्मा को
योग आत्मा क्वचित् होता है और क्वचित् नहीं होता है और योग आत्मावाले को द्रव्य आत्मा अवश्य
मेव होता है; क्यों की द्रव्यात्मा विना योगोंकी प्रवृत्ति नहीं है. अहो भगवन् ! द्रव्य आत्मा वाले को
क्या उपयोग आत्मा और उपयोग आत्मा वाले को क्या द्रव्य आत्मा होता है ? अहो गौतम ! जिन को
द्रव्य आत्मा है उन को उपयोग आत्मा अवश्यमेव होता है और जिनको उपयोग
आत्मा है उस को द्रव्य आत्मा अवश्यमेव होता है क्यों की जीव उपयोग लक्षण वाला कहाता है, और

अत्थि, जस्सवि दंसणाता तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्स दवियाता तस्स चरित्ताया भयणाए जस्स पुण चरित्ताता तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ एवं वीरियाता एवि समं ॥ २ ॥ जस्सणं भंते ! कसायाता तस्स जोगाया पुच्छा ? गोयमा ! जस्स कसायाता तस्स जोगाता णियमं अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाता सिय

उन दोनों को अविनाभूत संबंध है. अहो भगवन् ! जिस को द्रव्यात्मा है उस को क्या ज्ञानात्मा और ज्ञानात्मा वाले को क्या द्रव्यात्मा है ? अहो गौतम ! जिस को द्रव्य आत्मा है उस को ज्ञानात्मा की भजना है क्यों की सम्यग् दृष्टि को ज्ञानात्मा होता है और जो समदृष्टि होते हैं उन को ज्ञानात्मा व द्रव्यात्मा दोनों होते हैं मिथ्या दृष्टि को मात्र द्रव्य आत्मा होता है और ज्ञानात्मा वाले को द्रव्यात्मा की नियमा है क्यों की ज्ञानमय आत्मा है. जिस को द्रव्यात्मा होता है उस को दर्शनात्मा निश्चयही होता है और जिस को दर्शनात्मा होता है उस को द्रव्यात्मा निश्चय ही होता है क्यों कि दोनों अविना भूत हैं. द्रव्य आत्मा वाले को चारित्र आत्मा की भजना है क्यों कि विरति द्रव्यात्मा को चारित्र है और अविरति व सिद्धको चारित्र नहीं है और चारित्र आत्मा वाले को द्रव्यात्मा निश्चयही है क्यों की द्रव्यात्मा विना चारित्र नहीं ग्रहण किया जासकता है. द्रव्य आत्मा वाले को वीर्यात्मा की भजना है और वीर्यात्मा वाले को द्रव्यात्मा की नियमा है, सिद्ध में द्रव्यात्मा है परंतु करण वीर्य का अभाव है और संसारी

अत्थि सिय णत्थि ॥ एवं उवओगाएवि समं कसायाता णेयव्वा कसायाता णाणाताय परोप्परं दोवि भइयव्वाओ जहा कसायाताय उवओगाथाय तहा कसायाया, दंसणाताय कसायाता चरित्ताताय दोवि परोप्परं भइयव्वाओ, जहा कसायाता जोगाता तहा कसायाता वीरियाताय भाणियव्वाओ एवं जहा कसायाता वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाएवि उवरिमाहिं समं

में करण वीर्य है वहां द्रव्यात्मा अवश्य ही है. इस तरह द्रव्यात्मा की साथ अन्य सात आत्माओं का संबंध कहा.॥२॥अब कषायात्मा की साथ अन्य छ का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! क्या कषायात्मा वाले को योगात्मा और योगात्मा वाले को कषायात्मा है ? अहो गौतम ! जिसको कषायात्मा है उस को योगात्मा की नियमा है और योगात्मावाले को कषायात्मा की भजना है क्यों की कषाय दशवा गुणस्थान पर्यंत है और योग तेरहवा गुणस्थान पर्यंत है. कषाय आत्मा वाले को उपयोग आत्मा अवश्यमेव होता है क्यों कि उपयोग शून्य आत्मा कदापि होता नहीं है और उपयोग आत्मा वाले को कषायात्मा की भजना होती है क्यों की उपशांत कषायी और क्षीण कषायी को उपयोग होता है परंतु कषाय नहीं होती है. कषायात्मा को ज्ञानात्मा की भजना है और ज्ञानात्मा को कषायात्मा की भजना है क्यों की सम्यक् दृष्टि कषायात्मा को ज्ञानात्मा है और मिथ्यादृष्टि कषायात्मा को ज्ञानात्मा नहीं है. वैसे ही उपशांत व क्षीण कषायी ज्ञानात्मा को कषाय नहीं है और शेष संसारी कषाय ज्ञानात्मा को कषायात्मा होता है. कषायात्मा को दर्शनात्मा की नियमा है क्यों की दर्शन शून्य आत्मा नहीं होता है और दर्शनात्मा को कषायात्मा की भजना है उपयोग आत्मा

भाणियव्वा जहा दवियाताए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगाताएवि उवरि-
ल्लाहिं समं भाणियव्वा जस्स णाणाया तस्स दंसणाया णियमं अत्थि, जस्स पुण
दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए ॥ जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि

जैसे कषाय आत्मा को चारित्रात्मा क्वचित् है कषायी साधुवत् और कषायात्मा को चारित्रात्मा नहीं भी है संसारीवत्. चारित्रात्मा को कषायात्मा की भजना है क्यों की उपशांत व क्षीण कषायी को चारित्र है परंतु कषाय नहीं है. और सकषायी अनगार को कषाय व चारित्र दोनों होते हैं. कषायात्मा व योगात्मा का जैसे कहा वैसे कषायात्मा व वीर्यात्मा का जानना अर्थात् कषायात्मा को वीर्यात्मा अवश्यमेव होता है और वीर्यात्माको कषायात्मा की भजना है क्यों कि कषाय मात्र दशवा गुणस्थान पर्यंत है यह कषायात्मा की साथ छ आत्मा का कहा. जैसे कषायात्मा की वक्तव्यता कही वैसे ही योगात्मा की वक्तव्यता ऊपर के पांच आत्मा की साथ कहना अर्थात् योगात्मा को उपयोगात्मा अवश्यमेव होता है और उपयोगात्माको योग आत्मा की भजना अयोगी सयोगीवत्. समदृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा होता है और मिथ्यादृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा नहीं होता है, और सयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा होता है और अयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा नहीं है इस से दोनों की परस्पर भजना है. योगात्मा को दर्शनात्मा नियमा है दर्शन शून्य आत्मा नहीं होने से और दर्शनात्मा को योगात्मा की भजना है अयोगी अवस्था में. योगात्मा को

सिय णत्थि ॥ जस्स पुण चारित्ताया तस्स णाणाया णियमं अत्थि ॥ णाणाता वीरि-
याता दोवि परोप्परं भयणाए, जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दोवि भयणाए, जस्स
पुण ताओ तस्स दंसणाया णियमं अत्थि, जस्स चारित्ताया तस्स वीरियाता णियमं

चारित्र आत्मा की भजना है अविरति व विरति आश्री और चारित्रात्मा को योगात्मा की भजना है
सयोगी अयोगी होने से, योगात्मा को वीर्यात्मा की नियमा है और वीर्यात्मा को योगात्मा की भजना है.
यह योगात्मा का कथन किया. अब उपयोगात्मा का कथन करते हैं जैसे द्रव्यात्मा का कहा वैसे उपयो-
गात्मा का जानना. अर्थात् उपयोगात्मा को ज्ञानात्मा की भजना है सम्यग् दृष्टि व मिथ्या दृष्टि होने से
और ज्ञानात्मा को उपयोगात्मा की नियमा है. उपयोगात्मा व दर्शनात्मा दोनों की परस्पर नियमा है
अविनाभूत संबंध होने से उपयोगात्मा को चारित्रात्मा की भजना और चारित्रात्मा को उपयोगात्मा की
नियमा है. उपयोगात्मा को वीर्यात्मा की भजना है संसारी व सिद्ध आश्री और वीर्यात्मा को उपयो-
गात्मा की नियमा है. यह उपयोगात्मा का कथन किया. अब ज्ञानात्मा का कथन करते हैं. ज्ञानात्मा को
दर्शनात्मा की नियमा, दर्शन शून्य जीव नहीं होने से और दर्शन आत्मा को ज्ञानात्मा की भजना सम्यग्
दृष्टि व मिथ्या दृष्टि आश्री. ज्ञानात्मा को चारित्रात्मा की भजना विरति अविरति आश्री और चारित्रा-
त्मा को ज्ञानात्मा की नियमा ज्ञान विना चारित्र का उदय नहीं होने से. ज्ञानात्मा को वीर्यात्मा की भजना

अत्थि, जस्स पुण वीरियाता तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय णत्थि ॥ ३ ॥ एया-सिणं भंते ! दवियाताणं कसायाताणं जाव वीरियाताणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसे-साहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा चरित्ताया, णाणायाओ अणंत गुणाओ, कसायायाओ अणंतगुणाओ जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियाताओ विसेसाहियाओ, उवओग दविय दंसणाताओ तिण्णिवि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥ ४ ॥ आया भंते ! णाणे अण्णे

और वीर्यात्मा को ज्ञानात्मा की नियमा संसारी सिद्ध आश्री. यह ज्ञानात्मा का कथन किया. दर्शन आत्मा को चारित्र व वीर्यात्मा की भजना है और चारित्र व वीर्यात्मा को दर्शनात्मा की नियमा है. चारित्रात्मा को वीर्यात्मा की नियमा और वीर्यात्मा को चारित्रात्मा की भजना है विरति अविरति आश्री ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन द्रव्यात्मा कषायात्मा यावत् वीर्यात्मा में से कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है? अहो गौतम ! सब से थोडे चारित्रात्मा क्यों कि उत्कृष्ट साधु नव क्रोड रहते हैं इस से ज्ञानात्मावाले अनंतगुने सिद्ध आश्री, इस से कषायात्मा अनंतगुने वनस्पति आश्री, इस से योगात्मा विशेषाधिक तेरहवा गुणस्थान आश्री, इस से वीर्यात्मा विशेपाधिक चौदहवा गुणस्थान आश्री, इस से उपयोगात्मा, द्रव्यात्मा व दर्शनात्मा ये तीनों परस्पर तुल्य और विशेपाधिक क्यों कि यह तीनों सब में होते हैं ॥ ४ ॥ अहो भग-

णाणे ? गोयमा ! आया सिय णाणे सिय अण्णाणे, णाणे पुण णियमं आया ॥ ५ ॥ आयाणं भंते ! णेरइयाणं णाणे अण्णे णेरइयाणं णाणे ? गोयमा ! आया णेरइयाणं सियणाणे सिय अण्णाणे, णाणे पुण ते णियमं आया, एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ आया भंते ! पुढवी काइयाणं अण्णाणे अण्णे पुढवी काइयाणं अण्णाणे,? गोयमा ! पुढवीकाइयाणं णियमं अण्णाणे अण्णाणे णियमं आया, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं ॥ बेइंदिया तेइंदिया जाव वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ ६ ॥ आया भंते ! दंसणे अण्णे दंसणे ? गोयमा !

वन् ! क्या आत्मा ही ज्ञान है या आत्मा से अन्य ज्ञान है ? अहो गौतम ! सम्यक्त्व होने से आत्मा क्वचित् ज्ञान है और मिथ्यात्व होने से आत्मा क्वचित् अज्ञान है. परंतु ज्ञान में आत्मा निश्चय ही होता है क्यों कि आत्मा का ज्ञान गुण रहा है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी का आत्मा क्या ज्ञान है या अन्य ज्ञान है ? अहो गौतम ! नारकी का आत्मा क्वचित् ज्ञानमय है और क्वचित् अज्ञानमय है. ज्ञान में आत्मा निश्चयही होता है. ऐसे ही असुर कुमार यावत् स्थनित कुमार पर्यंत दश भुवनपति का जानना. अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया का क्या आत्मा अज्ञान है या अन्य अज्ञान है ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया में नियमा अज्ञान होता है और अज्ञान में नियमा आत्मा होता है ऐसे ही वनस्पति काया

आया णियमं दंसणे, दंसणेवि णियमं आया ॥ आया भंते ! णेरइयाणं दंसणे अण्णे णेरइयाणं दंसणे ? गोयमा ! आया णेरइयाणं णियमं दंसणे, दंसणेवि णियमं आया, एवं, जाव वेमाणियाणं निरंतरं दंडओ ॥ ७ ॥ आया भंते ! रयणप्पभा पुढवी, अण्णा रयणप्पभा पुढवी ? गोयमा ! रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय णो आया सिय अवत्तव्वं आतातिय णो आतातिय से केणट्ठेणं भंते ! एवं जाव वुच्चइ रयणप्पभा पुढवी सिय आया सिय णो आया सिय अवत्तव्वं

तक कहना. बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय यावत् वैमानिक तक सब दंडक का नारकी जैसे कहना. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! क्या आत्मा दर्शन है या अन्य कोई दर्शन है ! अहो गौतम ! आत्मा निश्चय ही दर्शन होता है और दर्शन अवश्यमेव आत्मा होता है. अहो भगवन् ! नारकी का आत्मा दर्शन है या अन्य दर्शन है ? अहो गौतम ! नारकी का आत्मा नियमा दर्शन होता है और दर्शन नियमा आत्मा होता है. ऐसे ही वैमानिक तक सब दंडक का जानना. ॥ ७ ॥ अब अन्य प्रकार से आत्मा का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या आत्मा रत्नप्रभा है या अन्य रत्नप्रभा है अर्थात् सद्रूप (विद्यमान रूप) रत्नप्रभा है अथवा असद्रूप [अविद्यमान रूप] रत्नप्रभा पृथ्वी है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी क्वचित् आत्मा

आयातिय णो आयातिय ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभय आदिट्ठे अवत्तव्वं, रयणप्पभा पुढवी आयातिय णो आयातिय से तेणट्ठेणं तंचेव जाव णो आयातिय ॥ आया भंते ! सक्करप्पभा पुढवी जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभावि एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ आया भंते ! सोहम्मे कप्पे पुच्छा ? गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया सिय णो आया जाव णो आयातिय; से केणट्ठेणं भंते ! जाव णो आयातिय ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभय आदिट्ठे अवत्तव्वं, आयातिय णो आया-

भावार्थ असद्रूपा है और क्वचित् सद्रूपा व असद्रूपा पने करने को अशक्य वस्तु है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि रत्नप्रभा पृथ्वी क्वचित् सद्रूपा क्वचित् असद्रूपा और क्वचित् सद्रूप व असद्रूप पने करने में अशक्य वस्तु है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा स्वतः के वर्णादि पर्याय अर्थात् स्वपर्याय अपेक्षा से आत्मा है अन्य के वर्णादि पर्याय की अपेक्षा से अनात्मा असद्रूपा है और दोनों की अपेक्षा से आत्मा अनात्मा करने में अशक्य वस्तु है. अर्थात् रत्नप्रभा पृथ्वी क्वचित् आत्मा क्वचित् नो आत्मा है. इस से अहो गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी क्वचित् सद्रूपा क्वचित् असद्रूपा और सदसद्रूपपने

तिय; से तेणट्टेणं गोयमा ! तंचेव जाव णो आयातिय, एवं जाव अच्चुयकप्पे ॥ आया भंते ! गेविज्जगविमाणे अण्णे गेविज्जगविमाणे एवं जहा रयणप्पभा पुढवी तहेव एवं अणुत्तरविमाणावि, एवं ईसिप्पब्भारावि ॥ ८ ॥ आया भंते ! परमाणुपोग्गले अण्णे परमाणुपोग्गले ? एवं जहा सोहम्मे कप्पे तहा परमाणुपोग्गलेवि भाणियव्वे ॥ आया भंते! दुपदेसिए खंधे अण्णे दुपदेसिए खंधे? गोयमा! दुपदेसिए खंधे सिय आया सिय णो आया सिय अवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय, सिय आयाय सिय णो आयाय ४ सिय आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ५, सिय णो आयाय अवत्तव्वं, आयातिय णो

अवक्तव्य है. जैसे रत्नप्रभा का कथन किया वैसे ही सातवी तमतमप्रभा पृथ्वी तक और सौधर्म यावत् अच्युत ऐसे बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक पांच अनुत्तर विमान और ईषत्प्राग्भार पृथ्वी तक का जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या सद्रूप परमाणु पुद्गल है या अन्य असद्रूप परमाणु पुद्गल है ? अहो गौतम ! जैसे सौधर्म देवलोक का कहा वैसे ही परमाणु पुद्गल का जानना. अहो भगवन् ! क्या आत्मा द्विप्रदेशिक स्कंध है या अन्य द्विप्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कंध में छ भांगे होवे ? १ स्यादात्मा २ स्यादनात्मा ३ स्याद् अवक्तव्य ४ एक देश आश्री सत्तागत पर्याय दूसरा देश आश्री

आयातिय ६, ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवंचेव जाव णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय? गोयमा! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं दुपदेसिए खंधे आयातिय णो आयातिय, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे दुपदेसिए खंधे आयातिय णो आयातिय देसे अब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे उभओपज्जवे दुपदेसिए खंधे आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ५, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपदेसिए खंधे णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ६, से तेणट्ठेणं तंचेव जाव णो आयातिय ॥ आया भंते! तिपदेसिए खंधे अण्णे तिपदेसिए खधे? गोयमा! तिपदेसिए खंधे

ार्थ

असत्तागत पर्याय से क्वचित् आत्मा क्वचित् नहीं आत्मा ५ क्वचित् आत्मा अवक्तव्य और ६ क्वचित् नो आत्मा अवक्तव्य. अहो भगवन्! यह किस तरह है? अहो गौतम! अपनी पर्यायापेक्षा द्विप्रदेशिक स्कंध आत्मा है पर पर्यायापेक्षा द्विप्रदेशिक स्कंध अनात्मा है और दोनों की अपेक्षा से अवक्तव्य, एक देश स्वपर्याय की अपेक्षा से आत्मा दूसरा देश पर पर्याय की अपेक्षा से अनात्मा इस से दोनों का मीला हुवा द्विप्रदेशात्मक स्कंध आत्मा अनात्मा दोनों है. ५ एक देश सद्भाव पर्यायवाला है और दूसरा देश सद्भाव व असद्भाव ऐसी उभय पर्यायवाला है इस से दोनों का

सियआया, १ सियणोआया, २ सियअवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय ३, सिय आयाय
णो आयाय ४, सियआयाय णो आयाओय ५, सियआयाओय णो आयाय ६, सिय-
आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ७, सिय आयाय अवत्तव्वाइं आयातिय
णो आयातिय ८, सिय आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ९, सिय
णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १०, सिय णो आयाय अवत्तव्वाइं

मीला हुवा द्विप्रदेशात्मक स्कंध आत्मा इति अनात्मा इति होने से आत्मा की अवक्तव्यता है और ६ एक
देश असद्भाव पर्यायवाला है और दूसरा देश उभय पर्यायवाला है इस से नो आत्मा की अवक्तव्यता
होती है. इस से अहो गौतम ! उक्त छ भांगे द्विप्रदेशिक स्कंध आश्री कहे हैं. अहो भगवन् ! आत्मा
त्रिप्रदेशिक स्कंध है या अन्य त्रिप्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कंध में तेरह भांगे
होते हैं. १ त्रिप्रदेशिक स्कंध क्वचित् आत्मा २ क्वचित् अनात्मा ३ क्वचित् अवक्तव्य ४ क्वचित् एक
वचन से आत्मा और क्वचित् एक वचन से अनात्मा ५ क्वचित् आत्मा एक वचन से अनात्मा अनेक वचन से
६ क्वचित् आत्मा पृथक्त्व वचन से अनात्मा एक वचन से ७ क्वचित् एक वचन से आत्मा इति अनात्मा
इति एक वचन में अवक्तव्य ८ क्वचित् अनेक वचन से आत्मा इति अनात्माइति एक वचन में आत्मा
अवक्तव्य ९ क्वचित् एक वचन में आत्माइति अनात्माइति आत्मा पृथक्त्व वचन में अवक्तव्य १० एक

आयातिय णो आयातिय ११, सिय णो आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आया-
तिय १२, सिय आयाय, णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १३, ॥
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तिपदेसिए खंधे सिय आया एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव
सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ? गोयमा ! अप्पणो
आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं आयातिय णो
आयातिय ॥ देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे तिपदेसिए
खंधे आयातिय णो आयातिय ४, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसा आदिट्ठा अस-

वचन में आत्मा इति नोआत्मा इति कथंचित् नो आत्मा एकवचन में अवक्तव्य ११. अनेक वचनमें आत्मा
इति नोआत्मा इति एक वचन में आत्मा अवक्तव्य है १२ एक वचन में आत्मा इति यहां बहुवचन अवक्तव्य
और १३ कथंचित् आत्मा एक वचन में. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि तीन प्रदेशिक
स्कंध आत्मा है यावत् एकवचन में आत्मा, नो आत्मा, व अवक्तव्य ऐसे तेरह भांगे पाते हैं. १, अहो
गौतम ! अपनी पर्यायापेक्षा आत्मा, परपर्यायापेक्षा नोआत्मा, उभय पर्यायापेक्षा आत्मा नोआत्मा ४
देश आश्री स्वपर्याय देश आश्री परपर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा इति ५ एक देश आश्री

ब्भाव पज्जवा तिपदेसिए खंधे आयाय णो आयाओय ५, देसा आदिट्ठा सब्भाव पज्जवा, देसे आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाओय णो आयाय ६, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभय पज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ७, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभय पज्जवा तिपदेसिए खंधे आयाय अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ८, देसा आदिट्ठा सब्भाव पज्जवा, देसे आदिट्ठे तदुभय पज्जवे, तिपदेसिए खंधे आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय। एए तिण्णि भंगा ९ ॥ देसे

स्वपर्याय अनेक देश आश्री परपर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा ६ अनेक देश आश्री सद्भाव पर्याय एक देश आश्री पर पर्याय तीन प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा ७ देश आश्री स्वपर्याय और देश आश्री उभयपर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध एक वचन में आत्मा नो आत्मा इति एकवचनमें अवक्तव्य ८ एक देश आश्री स्वपर्याय और अनेकदेश आश्री उभय पर्याय दोनों से आत्मा अवक्तव्य है ९ अनेक देश आश्री स्वपर्याय एक देश आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा अवक्तव्य १० देश आश्री परपर्याय देश आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध नो आत्मा अवक्तव्य ११ देश आश्री परपर्याय अनेक देश

आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे, देसे आदिट्ठे तदुभय पज्जवे तिपदेसिए खंधे णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १०, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठा, तदुभय-पज्जवा तिपदेसिए खंधे णो आयाय अवत्तव्वाइं, आयातिय णो आयातिय ११, देसा आदिट्ठा असब्भाव पज्जवा, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिए खंधे णो आयाआय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १२, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १३,। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-तिपदेसिए खंधे सिय आया

आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध नो आत्मा अवक्तव्य १२ अनेक देश आश्री परपर्याय एक देश आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध नो आत्मा अवक्तव्य १३ देश आश्री स्वपर्याय, देश आश्री पर पर्याय और देश आश्री उभय पर्याय होने से त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा अवक्तव्य. अहो गौतम ! इस कारन से ऐसा कहा गया है कि त्रिप्रदेशिक स्कंध में तेरह भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! आत्मा चतुष्क प्रदेशिक स्कंध है या अन्य चतुष्क प्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! चतुष्क प्रदेशी स्कंध में १९ भांगे पाते हैं. १ चतुष्क प्रदेशी स्कंध क्वचित् आत्मा २ क्वचित् नो आत्मा ३ क्वचित् अवक्तव्य

तंचेव जाव णो आयातिय ॥ आया भंते ! चउप्पदेसिए खंधे अण्णे पुच्छा ? गोयमा! चउप्पदेसिए खंधे सिय आया १, सिय णो आया २, सिय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ३, सिय आयाय णो आयाय ४, सिय आयाय अवत्तव्वं ४, सिय णो आयाय अवत्तव्वं ४, सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १६; सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वाइं आयाय णो आयायं १७. सिय आयाय णो आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १८, सिय आयाओय णो आयाय

क्वचित् आत्मा नो आत्मा के एकवचन बहुवचन के ४, क्वचित् आत्मा अवक्तव्य के एकवचन अनेकवचन के ४, क्वचित् नो आत्मा अवक्तव्य के एकवचन अनेकवचन के ४, यों १६ भांगे हुए १६ क्वचित् आत्मा, नो आत्मा व अवक्तव्य एकवचन में १७ क्वचित् आत्मा नो आत्मा एकवचन में और अवक्तव्य अनेक वचन में १८ क्वचित् आत्मा एकवचन नो आत्मा बहुवचन और अवक्तव्य एक वचन और १९ क्वचित् आत्मा बहुवचन नो आत्मा व अवक्तव्य एक वचन में यों १९ भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से चतुष्क प्रदेशिक स्कंध में उक्त १९ भांगे पाते हैं ? अहो गौतम ! १ स्वपर्याय आश्री आत्मा २ पर पर्याय आश्री नो आत्मा ३ उभय पर्याय आश्री अवक्तव्य ४ देश से स्वपर्याय देश से पर पर्याय ऐसे चार भांग, स्वपर्याय व उभय पर्याय के एक वचन बहु वचन के चार भांग, ऐसे ही परपर्याय व उभय पर्याय के चार भांगे मीलकर १९ भांगे होते हैं

अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ११, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ चउप्पदेसिए खंधे सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वं, तंचेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं, गोयमा! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णोआया, तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो। सब्भावेणं तदुभएणय चउभंगो। असब्भावेणं तदुभएणं चउभंगो। देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे, तदुभयपज्जवे चउप्पदेसिए खंधे आयाय णो आयाय अवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय १६,॥ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पदेसिए खंधे आयाय णो आयाय अवत्तव्वाइं आयाय णो आयाय १७, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पदेसिए खंधे आयाय णो आया-

१६ देश आश्री स्वपर्याय देश आश्री पर पर्याय और देश आश्री उभय पर्याय चतुष्क प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा अवक्तव्य १७ एक देश आश्री स्वपर्याय एक देश आश्री पर पर्याय अनेक देश आश्री उभय पर्याय चतुष्क प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा ऐसे अनेक वचन में अवक्तव्य १८ देश आश्री स्वपर्याय अनेक देश आश्री पर पर्याय एक देश आश्री उभय पर्याय चतुष्क प्रदेशी स्कंध आत्मा नो आत्मा अवक्तव्य १९ अनेक देश आश्री स्वपर्याय एक देश आश्री पर पर्याय एक देश आश्री उभय

ओय अवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय १८, देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पदेसिए खंधे आयाओय णो आयाय अवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय १९, ॥ से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ चउप्पदेसिए खंधे सिय आया सिय णो आया सिय अवत्तव्वं, निक्खेवे एते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव णो आयातिय । आया भंते ! पंचपदेसिए खंधे अण्णे पंच पदेसिए खंधे ? गोयमा ! पंच पदेसिए खंधे सिय आया सिय णो आया सिय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ३, सिय, आयाय णो आयाय ४, सिय आयाय अवत्तव्वं णो आयाय अवत्तव्वं ४, तिय संजोगे एक्को न पडाति, से केणट्ठेणं भंते ! तंचेव उच्चारेयव्वा ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभयस्स आदिट्ठे अव-

पर्याय चतुष्क प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा अवक्तव्य. अहो गौतम ! इसी कारन से चतुष्क प्रदेशी स्कंध में १९ भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! आत्मा पांच प्रदेशिक स्कंध है या अन्य पांच प्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! पांच प्रदे-शिक स्कंध में क्वचित् आत्मा क्वचित् नो आत्मा क्वचित् अवक्तव्य यों बावीस विकल्प होते हैं. अहो भगवन् ! यह किस कारन से कहा है कि पांच प्रदेशिक स्कंध में बावीस विकल्प होते हैं ? अहो गौतम ! स्वपर्याय से आत्मा, पर पर्याय से नो आत्मा उभय पर्याय से अवक्तव्य देश आश्री स्वपर्याय देश आश्री पर पर्याय ऐसे द्विसंयोगी

च्चव्वं, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे-देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, एवं दुयसंजोगे सव्वे-
पडंति, तिया संजोगे एक्कोनपडांति ॥ छप्पदेसिया सव्वेपडंति ॥ जहा छप्पदेसिए एवं
जाव अणंतपदेसिए ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ! जाव विहरइ ॥ दुवालसम सयस्सय
दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ १० ॥ दुवालसमं सयं सम्मत्तं ॥ १२ ॥

१२ भांगे होते हैं. सब मीलकर १९ हुवे और तीन संयोगी में पहिला एक भांगा छोडना. शेष सात भांगे
होवे. छ प्रदेशिक स्कंध में २३ भांगे होते हैं. जैसे छ प्रदेशी स्कंध का कहा वैसे ही अनंत प्रदेशी स्कंधका
जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुवा
॥ १२ ॥ १० ॥ यह बारहवा शतक संपूर्ण हुवा ॥ १२ ॥

❋ त्रयोदश शतकम् ❋

पुढवीदेव मणंतर पुढवी आहारमेव उववाए; भासा कम्मणगारे, केया घडिया समुग्घाए ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवइया णिरयावास सयसहस्सा पण्णत्ता ?

बारहवे शतक के अंत में आत्म स्वरूप का कथन किया आत्मा पृथिव्यादि आधीन हैं इसलिये इस तेरहवे शतक के प्रारंभ में पृथिवी का कथन करते हैं. इस शतक के दश उद्देशे कहे हैं १ पृथ्वी उद्देशे में नरक (पृथिव्यादि) का कथन २ देवता की प्ररूपणा ३ अंत आहारादिक का कथन ४ पृथ्वी गत वक्तव्यता ५ नरकादिक के आहार की प्ररूपणा ६ नरकादिक का उत्पात ७ भाषा का अर्थ ८ कर्मों का अर्थ ९ भावितात्मा अनगार और १० समुद्धात. अब इन में से प्रथम उद्देशा कहते हैं राजगृही नगरी के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! पृथ्वियों कितनी कहीं ? अहो गौतम ! पृथ्वियों सात कहीं, जिन के नाम रत्नप्रभा यावत् सातवी तम तम प्रभा ॥१॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने लाख नरकावास कहे हैं ? अहो

गोयमा ! तीसं णिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥ २ ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्ज-वित्थडा असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडावि, असंखेज्जवित्थडावि ॥ ३ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज वित्थडेसु णरएसु एगसमए केवइया णेरइया उववज्जंति १ केवइया काउलेस्सा उववज्जंति पुच्छा २ केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति ३, केवइया सुक्कपक्खिया उववज्जंति ४, केवइया सण्णी उववज्जंति ५ केवइया असण्णी उववज्जंति ६, केवइया भवसिद्धिया जीवा उववज्जंति ७, केवइया अभवसिद्धिया जीवा उववज्जंति ८,

गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख नरकावास कहे हैं. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वे नरकावास संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तार वाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात योजन के विस्तार वाले भी हैं और असंख्यात योजन के विस्तार वाले भी हैं ॥ ३ ॥ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से संख्यात योजन के विस्तार वाले एक २ नरकावास में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं, कितनेक कापुत लेश्या वाले हैं, कितने कृष्ण पक्ष वाले उत्पन्न होते हैं, कितने

१ अर्धपुद्गलपरावर्तन से अधिक संसार परिभ्रमण करने का जिन को होता है वे कृष्ण पक्षीकहाते हैं.

केवइया आभिणिबोहियणाणी उववज्जंति ९, केवइया सुयणा उववज्जंति १०, केवइया ओहिणाणी उववज्जंति ११, केवइया मइअण्णाणी उववज्जंति १२, केवइया सुअ अण्णाणी उववज्जंति १३, केवइया विभंगणाणी उववज्जंति १४, केवइया चक्खुदंसणी उववज्जंति , १५, केवइया अचक्खुदंसणी उववज्जंति १६, केवइया ओहिदंसणी उववज्जंति १७, केवइया आहारसण्णोवउत्ता उववज्जंति १८, केवइया भयसण्णोवउत्ता उववज्जंति १९, केवइया मेहुण सण्णोवउत्ता उववज्जंति २०, केवइया परिग्गह सण्णोवउत्ता उववज्जंति २१, केवइया इत्थिवेदगा उववज्जंति २२,

शुक्ल पक्ष वाले उत्पन्न होते हैं, कितने संज्ञी उत्पन्न होते हैं, कितने असंज्ञी उत्पन्न होते हैं, कितने भव सिद्धिक उत्पन्न होते हैं, कितने अभवसिद्धिक उत्पन्न होते हैं, कितने आभिनिबोधिक ज्ञानी, श्रुतज्ञानी अवधि ज्ञानी, मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी, विभंग ज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, अवधि दर्शनी आहार संज्ञा वाले, भय संज्ञा वाले, मैथुन संज्ञा वाले, परिग्रह संज्ञा वाले, स्त्री वेदक, पुरुष वेदक, नपुंसक वेदक क्रोध कषायी, मान कषायी, माया कषायी, लोभ कषायी, श्रोत्रेन्द्रियवाले यावत् स्पर्शेन्द्रियवाले, नो इन्द्रिय वाले, मन योगी, वचन योगी, काय योगी, सागारोपयुक्त, और अनाकारोपयुक्त उत्पन्न होते हैं ? अहो

केवइया पुरिसवेदगा उववज्जंति २३, केवइया णपुंसगवेदगा उववज्जंति २४, केवइया कोहकसायी उववज्जंति २५, जाव केवइया लोभकसायी उववज्जंति २८, केवइया सोइंदियोवउत्ता उववज्जंति २९, जाव केवइया फासिंदियोवउत्ता उववज्जंति ३३; केवइया णोइंदियोवउत्ता उववज्जंति ३४, केवइया मणजोगी उववज्जंति ३५, केवइया वइजोगी उववज्जंति ३६, केवइया कायजोगी उववज्जंति ३७, केवइया सागारोवउत्ता उववज्जंति ३८, केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ३९? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णेरइयावास सयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु णरएसु जहण्णेणं एकोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा णेरइया उववज्जंति, जहण्णेणं

अर्थ

गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में के संख्यात योजन के नरकावास में जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात नारकी उत्पन्न होते हैं, जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्याते कापुत लेश्यावाले उत्पन्न होते हैं, जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्याते कृष्ण पक्षवाले उत्पन्न होते हैं ऐसे ही, शुक्लपक्षी, संज्ञी, असंज्ञी, भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक, आभिनिवोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, और अवधि ज्ञानीका जानना, चक्षुदर्शनी नारकी नहीं उत्पन्न होते हैं. क्यों की उत्पन्न होते शरीर पर्याय का बंध किये बिना इन्द्रिय का अभाव होता है. अचक्षुदर्शनी जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्याते उत्पन्न

एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति, एवं सुक्कपक्खियावि, एवं सण्णोवि, एवं असण्णीवि, एवं भवसिद्धियावि, एवं अभवसिद्धिया, आभिणिबोहियणाणी सुअणाणी, ओहिणाणी, मइअण्णाणी सुअ अण्णाणी; विभंगणाणी एवं चेव, चक्खुदंसणी ण उववज्जंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति, एवं ओहिदसणीवि, एवं आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गह सण्णोवउत्तावि, इत्थीवेदगा न उववज्जंति, पुरिसवेदगा न उववज्जंति. जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेदगा उववज्जंति, एवं कोहकसायी जाव लोभ कसायी, सोइंदिय उवउत्ता न उववज्जंति एवं जाव फासिंदियोवउत्ता ण

होते हैं. ऐसे ही अवधि दर्शनी, आहार संज्ञा वाले, भयसंज्ञा वाले, मैथुन संज्ञा वाले, परिग्रह संज्ञा वाले का जानना. स्त्री वेदी, पुरुष वेदी उत्पन्न नहीं होते हैं क्यों की नरक में दोनों वेद नहीं हैं. जघन्य एक दो तीन चार उत्कृष्ट संख्याते नपुंसक वेदी. ऐसे ही क्रोध कषायी यावत् लोभ कषायी का जानना. श्रोत्रेन्द्रिय वाले यावत् स्पर्शेन्द्रिय वाले उत्पन्न नहीं होते हैं नोइन्द्रिय वाले जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट

उववज्जंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उववजंति, मणजोगी ण उववज्जंति, एवं वइजोगीवि, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उववज्जंति, एवं जाव सागारोवउत्तावि, एवं अणागारोवउत्तावि, ॥ ४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु णरएसु एग समएणं केवइया णेरइया उव्वट्टंति, केवइया काउलेस्सा उव्वट्टंति जाव केवइया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ? गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज्ज

संख्याते उत्पन्न होते हैं. मन योगी व वचन योगी उत्पन्न नहीं होते हैं. जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्याते काय योगी उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही साकारोपयोग व अनाकारोपयोग का जानना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में के संख्यात योजन वाले नरकावास में से एक समय में कितने नारकी उद्वर्तते हैं कितने कापुत लेश्या वाले उद्वर्तते हैं यावत् कितने अनाकारोपयोग वाले उद्वर्तते हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से जो संख्यात योजन के विस्तार वाले हैं, उन में से जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात नारकी उद्वर्तते हैं, जघन्य एक दो तीन

वित्थडेसु णरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं संखेज्जा णेरइया उव्वट्टंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उव्वट्टंति, एवं जाव सण्णी असण्णी ण उव्वट्टंति जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टंति एवं जाव सुअअण्णाणी विभंगणाणी ण उव्वट्टंति चक्खुदंसणी ण उव्वट्टंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खु दंसणी उव्वट्टंति, एवं जाव लोभ कसायी, सोइंदियोवउत्ता ण उव्वट्टंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता ण उव्वट्टंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा णो इंदियोवउत्ता उव्वट्टंति, मणजोगी ण उव्वट्टंति, एवं वइजोगीवि, जहण्णेणं

उत्कृष्ट संख्यात कापुत लेश्या वाले उद्वर्तते हैं. ऐसे ही संज्ञी तक कहना. असंज्ञी नहीं उत्पन्न होते हैं. जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात भवसिद्धिक उद्वर्तते हैं ऐसे ही श्रुत अज्ञानी तक जानना. विभंग ज्ञानी नहीं उद्वर्तते हैं क्यों की उद्वर्तन काल में विभंग ज्ञान नहीं होता है. चक्षुदर्शनी नहीं उद्वर्तते है. जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात अचक्षुदर्शनी उद्वर्तते हैं ऐसे ही लोभ कषायी पर्यंत जानना. श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय नहीं उद्वर्तते हैं. जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात नोइन्द्रिय उद्वर्तते हैं. मनयोगी और वचन

एकोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा काय जोगी उव्वट्टंति, एवं सागारोवउ-त्तावि, एवं अणागारोवउत्तावि, ॥ ५ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सय सहस्सेसु संखेज्ज वित्थडेसु णरएसु केवइया णेरइया पण्णत्ता, केवइया काउलेस्सा पण्णत्ता जाव केवइया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता ३९, केवइया अणंतरोववण्णगा पण्णत्ता, केवइया परंपरोववण्णगा पण्णत्ता, केवइया अणंतरोवगाढा पण्णत्ता, केवइया परंपरोवगाढा पण्णत्ता, केवइया अणंतराहारा पण्णत्ता, केवइया परंपराहारा पण्णत्ता, केवइया अणंतर पज्जत्ता पण्णत्ता, केवइया

योगी नहीं उद्वर्तते हैं और काय योगी जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात उद्वर्तते हैं. ऐसे ही साकारोपयोग और अनाकारोपयोग का जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से संख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास में कितने नारकी यावत् अनाकारोपयुक्त रहे हुवे हैं और कितने अनंतर उत्पन्न, कितने परंपरा से उत्पन्न, कितने अनंतर अवगाढ, कितने परंपरा अवगाढ, कितने अनंतर आहारी, कितने परंपरा आहारी, कितने अनंतर पर्याप्त, कितने परंपरा पर्याप्त, कितने चरिम और कितने अचरिम रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में

परंपर पज्जत्ता पण्णत्ता, केवइया चरिमा पण्णत्ता, केवइया अचरिमा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज वित्थडेसु णरएसु संखेज्जा णेरइया पण्णत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा सण्णी पण्णत्ता, असण्णी सिय अत्थि सियणत्थि, जइ अत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता, संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसण्णोवउत्ता पण्णत्ता, इत्थिवेदगा णत्थि, पुरिसवेदगा णत्थि, संखेज्जा णपुंसग वेदगा पण्णत्ता, एवं कोह कसायीवि, माण कसायी जहा असण्णी एवं जाव लोभ कसायी, संखेज्जा सोइंदियोवउत्ता एवं जाव फासिंदियोवउत्ता, नो

से संख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास में संख्यात नारकी, संख्यात कापुन लेश्यावाले ऐसे ही संख्यात संज्ञी पर्यंत जानना. असंज्ञी कदाचित् होते हैं कदाचित् नहीं होते हैं यदि होते हैं तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात कहे हैं संख्यात भवसिद्धिक यावत् संख्यात परिग्रह संज्ञावाले हैं. स्त्रीवेदी पुरुष वेदी नहीं हैं संख्यात नपुंसक वेदी हैं ऐसे ही क्रोध कषायी. मान कषायी, माया व लोभ कषायी असंज्ञी जैसे जानना. संख्यात श्रोत्रेन्द्रियवाले यावत् स्पर्शेन्द्रियवाले हैं नो इन्द्रिय असंज्ञी जैसे जानना. संख्यात

इंदियोवउत्ता जहा असण्णी, संखेज्जा मणजोगी, एवं जाव अणागारोवउत्ता ३९, अणंतरोववण्णगा सिय अत्थि सिय णत्थि जइ अत्थि जहा असण्णी संखेज्जा परंपरोववण्णगा एवं जहा अणंतरोववण्णगा तहा अणंतरोवगाढा. अणंतराहारगा, अणंतर पज्जत्तगा चरिमा, परंपरोवगाढा, जाव अचरिमा, जहा परंपरोववण्णगा ॥ ६ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु असंखेज्ज वित्थडेसु णरएसु एगसमएणं केवइया णेरइया उववज्जंति, जाव केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ? गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु असंखेज्ज

मन योगी ऐसे ही अनाकारोपयोग पर्यंत जानना अनंतर उत्पन्न क्वचित् हैं क्वचित् नहीं हैं यदि है तो जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात हैं, संख्यात परंपरा से उत्पन्न हुवे हैं. ऐसे ही अनंतरावगाढ, अनंतराहारी, अनंतर पर्याप्त, चरिम, परंपरावगाढ, यावत् अचरिम का जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से असंख्यात योजनवाले नरकावास में एक समय में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं यावत् कितने अनाकारोपयोगवाले उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से असंख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास में एक समय में जघन्य

वित्थडेसु णरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं असंखेज्जा णेरइया उववज्जंति, एवं जहेव संखेज्ज वित्थडेसु तिण्णिगमा पण्णत्ता तहा असंखेज्ज वित्थडेसुवि तिण्णि भाणियव्वा, णवरं असंखेज्जा भाणियव्वा सेसं तंचेव जाव असंखेज्जा अचरिमा णाणत्तं लेस्सासु लेस्साओ जहा पढमसए, णवरं संखेज्ज वित्थडसुवि असंखेज्ज वित्थडसुवि ओहिणाणी ओहिदंसणी संखेज्जा उवट्टावे यव्वा सेसं तंचेव ॥७॥ सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवीए केवइया णिरयावासा पुच्छा ? गोयमा ! पणवीसं णिरयावास सयसहस्सा, ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्ज वित्थडा

एक दो तीन उत्कृष्ट असंख्यात नारकी उत्पन्न होते हैं ऐसे ही जैसे संख्यात योजन विस्तारवाले के तीन गमा कहे वैसे ही असंख्यात योजन के विस्तारवाले को तीन गमा जानना. विशेष में असंख्यात कहना शेष सब असंख्यात अचरिम तक जानना. लेश्या का प्रथम शतक में कहा वैसा जानना. अवधि ज्ञानी व अव-धि दर्शनी संख्यात व असंख्यात योजनवाले नरकावास में से संख्यात उद्वर्तते हैं ॥७॥ अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा में कितने लाख नरकावास कहे ? अहो गौतम ! शर्कर प्रभा में पच्चीस लाख नरकावास कहे. अहो भगवन् ! क्या वे संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? अहो

असंखेज वित्थडा, एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाएवि णवरं असण्णी तिसुवि गमएसु नभण्णति, सेसं तचेव ॥ ८ ॥ वालुयप्पभाएणं पुच्छा ? गोयमा ! पण्णरसाणिरयावास सयसहस्सा पण्णत्ता, सेसं जहा सक्करप्पभाए, णाणत्तं लेस्सासु लेस्साओ जहा पढमसए ॥ ९ ॥ पंकप्पभाएणं भंते ! णिरयावास सयसहस्सा पुच्छा ? गोयमा ! दस णिरयावासयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा सक्करप्पभाए, णवरं ओहिणाणी ओहिदंसणी ण उव्वट्टंति, सेसं तंचेव ॥ १० ॥ धूमप्पभाएणं पुच्छा ? गोयमा ! तिण्णि णिरयावाससयसहस्सा एवं जहा पंकप्पभाए ॥ ११ ॥ तमाएणं भंते ! पुढवीए केवइया णिरयावास पुच्छा ? गोयमा ! एगे पंचूणे

गौतम ! जैसे रत्नप्रभा कहा वैसे ही शर्कर प्रभा का जानना. परंतु असंज्ञी तीनों आलापक में कहना नहीं ॥ ८ ॥ वालु प्रभा की पृच्छा. वालु प्रभा में १५ लाख नरकावास कहे शेष सब अधिकार रत्नप्रभा जैसे कहना लेश्या में जो भिन्नता है वह प्रथम शतक में जानना ॥ ९ ॥ पंक प्रभा में दश लाख नरकावास हैं इस का अधिकार भी शर्कर प्रभा जैसे कहना परंतु इन में से अवधि ज्ञानी व अवधि दर्शनी उद्वर्तते नहीं हैं ॥ १० ॥ धूम्रप्रभा में तीन लाख नरकावास हैं उस का सब कथन पंकप्रभा जैसे कहना ॥ ११ ॥ अहो

णिरयावाससयसहस्से पण्णत्ते सेसं जहा पंकप्पभाए ॥ १२ ॥ अहे सत्त-
माएणं भंते ! पुढवीए कइ अणुत्तरा महतिमहालया महाणिरया वासापण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तर जाव अप्पइट्ठाणे ॥ तेणं भते ! किं संखेज्ज वित्थडा असंखेज्ज
वित्थडा ? गोयमा ! संखेज्ज वित्थडेय असंखेज्जवित्थडाय ॥ अहे सत्तमाएणं भते !
पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महति महालया जाव महाणिरएसु संखेज्ज वित्थडे
णरए एगसमएणं केवइया एवं जहा पंकप्पभाए, णवरं तिसु णाणेसु ण उववज्जंति, ण
उव्वट्टंति, पण्णत्ताएसु तहेव अत्थि ॥ एवं असंखेज्ज वित्थडेसुवि, णवरं असंखेज्जा

भगवन् ! तम पृथ्वी में कितने नरकावास कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच कम एक लाख नरकावास कहे हैं शेष सब पंक प्रभा जैसे जानना ॥१२॥ नीचे की सातवी पृथ्वी में कितने बडे महा नरकावास कहे हैं अहो गौतम ! पांच अनुत्तर नरकावास कहे हैं. अहो भगवन् ! क्या वे संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात योजन के विस्तारवाले और असं-ख्यात योजन के विस्तारवाले हैं. इस का सब अधिकार पंक प्रभा जैसे कहना परंतु व तीन ज्ञान में उत्पन्न नहीं होते हैं वैसे ही तीन ज्ञान में चवते नहीं हैं. असंख्यात योजन के विस्तारवाले में असंख्यात

भाणियव्वा ॥ १३ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु णरएसु किं सम्मदिट्ठी णेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी णेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छदिट्ठी णेरइया उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी णेरइया उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी णेरइया उववज्जंति, णो सम्मामिच्छदिट्ठी णेरइया उववज्जंति ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज वित्थडेसु णरएसु किं सम्मदिट्ठी णेरइया उव्वट्टंति ? एवं चेव ॥ १४ ॥ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु

उत्पन्न होते हैं और चवते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में क्या समदृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं, मिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं या सममिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! समदृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं मिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं परंतु सममिथ्यादृष्टि नारकी नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से क्या समदृष्टि नारकी उद्वर्तते हैं मिथ्यादृष्टि नारकी उद्वर्तते हैं या सम मिथ्यादृष्टि नारकी उद्वर्तते हैं ? अहो गौतम ! जैसे उत्पन्न होने का कहा वैसे ही उद्वर्तने का जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरका-

संखेज्ज वित्थडा णरया किं सम्मादिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया, मिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया ? गोयमा ! सम्मदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया मिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया सम्मामिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिय विरहियाऽ॥ एवं असंखेज्ज वित्थडेसुवि तिण्णि गमगा भाणियव्वा ! एवं सक्करप्पभाएवि । एवं जाव तमाएवि ॥ अहे सत्तमा एणं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव संखेज्ज वित्थडे णरए किं सम्मदिट्ठी णेरइया पुच्छा ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी णेरइया ण उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी णेरइया

वास में से संख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास क्या समदृष्टि से अविरहित हैं, मिथ्यादृष्टि से अविरहित हैं या समामिथ्यादृष्टि से अविरहित हैं ? अहो गौतम ! समदृष्टि नारकी से अविरहित हैं, मिथ्या दृष्टि नारकी से अविरहित हैं और सममिथ्यादृष्टि नारकी से विरहित, अविरहित दोनों प्रकार के नरकावास रहे हुवे हैं. संख्यात योजन के विस्तारवाले नारकी जैसे असंख्यात योजन के विस्तारवाले नारकी का कहना. जैसे रत्नप्रभा का कहा वैसे ही शर्कर प्रभा यावत् तम प्रभातक का जानना. सातवी तमतम-प्रभा के पांच अनुत्तर नरकावास में यावत् संख्यात विस्तारवाले में नारकी क्या समदृष्टि उत्पन्न होते हैं वगैरह

उववजंति, सम्मामिच्छदिट्ठी णेरइया णउववज्जंति, एवं उव्वट्टंतिवि, अविरहिए जहेव रयणप्पभाए ॥ एवं असंखेज्ज वित्थडेसु तिण्णि गमा ॥१५॥ से णूणं भंते ! कण्ह-लेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता, कण्हलेस्से णेरइएसु उववज्जंति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जंति ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ कण्हलेस्से जाव उववज्जंति ? गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु संकिलिस्समाणेसु कण्हलेस्सं परिणमइ कण्हलेस्सं परिणममाणेसु कण्हलेस्सेसु णेरइएसु उववज्जंति से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ॥ सेणूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता णीललेस्सेसु

पृच्छा ? अहो गौतम ! समदृष्टि नहीं उत्पन्न होते हैं, मिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं, समामिथ्यादृष्टि नारकी नहीं उत्पन्न होते हैं, ऐसे ही उद्वर्तन व अविरहित का जानना. संख्यात योजन के विस्तार वाले में जैसे तीन गमा कहे वैसे ही असंख्यात योजन के विस्तार वाले में तीन गमा जानना. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! कृष्णलेशी, नीललेशी यावत् शुक्लेशी होकर क्या कृष्णलेशी नारकी में उत्पन्न होते हैं ? हां गौतम ! कृष्णलेशी यावत् उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहते हो ? अहो गौतम ! लेश्या स्थान के भेद में निर्मलता व मलिनता को प्राप्त होते हैं. इस तरह अशुद्ध लेश्या परिणमते कृष्ण

णेरइएसु उववज्जंति? हंता गोयमा! जाव उववज्जंति। से केणट्ठेणं जाव उववज्जंति? गोयमा! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु विसुज्झमाणेसु णीललेस्सं परिणमइ, णीललेस्सं परिणमइत्ता; णीललेस्सेसु णेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव उववज्जंति॥ सेणूण भंते! कण्हलेस्से णीललेस्से जाव भवित्ता काउलेस्सेसु णेरइएसु उववज्जंति? एवं जहा णीललेस्साए तहा काउलेस्साएवि भाणियव्वा जाव उववज्जंति सेवं भंते! भंतेत्ति॥ तेरसम सयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो॥ १३॥ १॥

अहो भगवन्! कृष्ण लेशी, नील लेशी यावत् शुक्ल लेशी होकर कापोत लेश्यापने क्या उत्पन्न होवे? हां गौतम! उत्पन्न होवे. अहो भगवन्! किस कारन से उत्पन्न होवे? अहो गौतम! लेश्या के स्थान भेद में अशुद्ध लेश्या में विशुद्ध होता है फीर नील लेश्या में परिणमकर नीललेश्यावंत नारकी में उत्पन्न होवे. इस तरह कृष्ण लेश्यापने परिणमे फीर कृष्ण लेश्यावाली नरक में जाकर उत्पन्न होवे. अहो गौतम! इस कारन से ऐसा कहा है कि कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्यावाले होकर कृष्ण लेश्यावाले नारकी उत्पन्न होवे. अहो भगवन्! कृष्णलेशी यावत् शुक्ललेशी बनकर क्या नीललेशी नारकी में उत्पन्न होवे? हां गौतम! उत्पन्न होवे. यावत् शुक्ल लेश्यावाले नील लेशी नरक में उत्पन्न होवे. अहो भगवन्! कृष्ण लेशी, नील लेशी यावत शुक्ल लेशी होकर कापोत लेश्यापने क्या उत्पन्न होवे? हां गौतम! उत्पन्न होवे वगैरह सब कथन नील लेश्या जैसे कहना. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं. यह तेरहवा शतक का प्रथम उद्देशा संपूर्ण हुवा॥ १३॥ १॥

कइविहाणं भंते ! देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, तंजहा भवण-वासि वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया ॥ १ ॥ भवणवासीणं भंते ! देवा कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा असुर कुमारा एवं भेदो जहा बितियसए देवुद्देसए जाव अपराजिया सव्वट्ठसिद्धगा ॥ २ ॥ केवइयाणं भंते ! असुर कुमारा वास सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! चोयट्ठि असुर कुमारावास सयसहस्सा पण्णत्ता ॥ ते भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा? गोयमा! संखेज्जवित्थडावि असंखेज्जवित्थडावि ॥३॥ चोयट्ठीएणं भंते! असुर कुमारावास सयसहस्सेसु संखेज्ज-

प्रथम उद्देशे में नरकका अधिकार कहा. दुसरे उद्देशे में सार्धर्मिक देव होने से देव का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! देव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! देव के चार भेद कहे हैं भवनपति, वाण-व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक ॥१॥ भवनपति देव के दश भेद कहे हैं. असुरकुमार वगैरह दूसरे शतक के देव उद्देशे में कहा वैसे ही यहांपर सर्वार्थ सिद्ध तक जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार के आवास कितने लाख कहे हैं ? अहो गौतम ! असुरकुमार के चौसठ लाख आवास कहे हैं. अहो भगवन् ! वे संख्यात योजन के विस्तार वाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तार वाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात

वित्थडेसु असुर कुमारावासेसु एगसमएणं केवइया असुरकुमारा उववज्जंति केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति, केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव वागरणं, णवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति, णपुंसग वेदगा ण उववज्जंति, सेसं तंचेव ॥ उव्वट्टंतगावि तहेव, णवरं असण्णी उव्वट्टंति, ओहिणाणी ओहिदंस णीय ण उव्वट्टंति, सेसं तंचेव पण्णत्ताएसु तहेव णवरं संखेज्जगा इत्थी वेदगा पण्णत्ता, एवं पुरिसवेदगावि, णपुंसगवेदगा णत्थि कोह कसायी सिय अत्थि सिय

योजन के विस्तार वाले हैं और असंख्यात योजन के विस्तार वाले भी हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! असुर-कुमार के चौसठ लाख आवास में से संख्यात योजन वाले आवास में एक समय में कितने असुरकुमार देव उत्पन्न होते हैं, कितने तेजो लेश्यावाले उत्पन्न होते हैं कितने कृष्णपाक्षिक उत्पन्न होते हैं ? वगैरह ३९ प्रश्नो जो रत्नप्रभा आश्री पूछे हैं वे यहांपर भी जानना. उस का उत्तर भी वैसे ही जानना परंतु वि-शेषता इतनी कि इस में दो वेद उत्पन्न होते है नपुंसक नहीं उत्पन्न होते हैं. उद्वर्तन प्रश्न में भी वैसे ही कहना परंतु असंज्ञी उद्वर्तते हैं अवधिज्ञानी व अवधि दर्शनी नहीं उद्वर्तते हैं. तीसरा गमा विद्यमानता का भी वैसे ही कहना परंतु इस में संख्यात स्त्री वेदी कहे, ऐसे पुरुष वेदी. नपुंसक वेदी नहीं. क्रोध कषाय क्वचित् हैं और क्वचित् नहीं भी हैं जब हैं तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात कहे हैं ऐसे

णत्थि, जइ अत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता, एवं माण माया, संखेज्जा लोभ कसायी पण्णत्ता, सेसं तंचेव, तिसुवि गमएसु संखेज्ज वित्थडेसु चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ ॥ एवं असंखेज्ज वित्थडेसुवि णवरं तिसुवि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ॥ ४ ॥ केवइयाणं भंते ! णाग कुमारावास एवं जाव थणिय कुमारावास णवरं जत्थ जत्तिया भवणा ॥ ५ ॥ केवइयाण भंते ! वाणमंतरावास सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरावास सयसहस्सा पण्णत्ता ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्ज

मान, माया लोभ कषायी संख्याते जानना. संख्यात योजन के विस्तार वाले आवासके तीनों गमा में चार लेश्याओं कही हैं. जैसे संख्यात का कहा वैसे ही असंख्यात का जानना परंतु इस में तीनों गमा में असंख्यात कहना. यावत् असंख्यात अचरिम ॥ ४ ॥ ऐसे ही नाग कुमार से स्थनित कुमार तक में जिन में जितने आवास होवे उतना कहना. और तीनों गमा संख्यात असंख्यात योजन के आश्री असुर कुमार जैसे जानना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! वाणव्यंतर के आवास कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! वाणव्यंतर के आवास असंख्यात लाख कहे हैं. अहो भगवन् ! क्या वे संख्यात योजन के विस्तारवाले

वित्थडा असंखेज्ज वित्थडा? गोयमा! संखेज वित्थडा णो असंखेज्ज वित्थडा ॥ संखेज्जेसुणं भंते ! वाणमंतरा वास सयसहस्सेसु एग समएणं केवइया वाणमंतरा उववज्जंति ? एवं जहा असुरकुमाराणं संखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा तहेव भाणियव्वा, वाणमंतराणवि तिण्णि गमगा ॥ ६ ॥ केवइयाणं भंते ! जोइसिय विमाणावास सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा विमाणा वास सय सहस्सा पण्णत्ता ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा एवं जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाणवि तिण्णि गमगा भाणियव्वा. णवरं एगा तेउलेस्सा उववज्जंतेसु पण्णत्तेसुय असण्णी णात्थि सेसं तंचेव

है या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं परंतु असंख्यात योजन के विस्तारवाले नहीं हैं. अहो भगवन् ! संख्यात योजन के असंख्यात लाख आवास में एक समय में कितने वाणव्यंतर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसे असुर कुमार के संख्यात योजन के विस्तारवाले आवास के तीन गमा कहे वैसे ही वाणव्यंतर का जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषीके कितने लाख विमान कहे ? अहो गौतम ! ज्योतिषी के असंख्यात लाख विमान कहे. उन का सब वर्णन वाणव्यंतर जैसे कहना. इस में मात्र एक तेजोलेश्या कहना. और असंज्ञी नहीं कहना ॥ ७ ॥ अहो

॥ ७ ॥ सोहम्मेणं भंते ! कप्पे केवइया विमाणावास सयसहस्सा पण्णत्ता? गोयमा! बत्तीसं विमाणावास सयसहस्सा पण्णत्ता ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्ज वित्थडा असंखेज्ज वित्थडा ? गोयमा ! संखेज्ज वित्थडावि असंखेज्ज वित्थडावि ॥ ॥ सोहम्मेण भंते! कप्पे बत्तीस विमाणावास सयसहस्सेसु संखेज्ज वित्थडेसु विमाणेसु एगसमएणं केवइया सोहम्मगा देवा उववज्जंति, केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति, एवं जहा जोइसियाणं तिण्णि गमगा तहेव तिण्णि गमगा भाणियव्वा, णवरं तिसुवि संखेज्जा भाणियव्वा, ओहिणाणी ओहिदंसणीय चयावेयव्वा सेसं तचेव ॥ असंखेज्ज वित्थडावि एवं चेव

भगवन् ! सौधर्म देवलोक में कितने लाख विमान कहे हैं ? अहो गौतम ! बत्तीस लाख विमान कहे हैं. अहो भगवन् ! क्या वे संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं और असंख्यात योजन के भी विस्तारवाले हैं. अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख विमान में से संख्यात योजन के विस्तारवाले विमान में कितने सौधर्मिक देव उत्पन्न होते हैं, कितने तेजोलेश्यावाले वगैरह सब ज्योतिषी जैसे कहना. परंतु इसमें संख्यातका बोल होने से संख्यात प्रश्न करना. अवधि ज्ञानी व अवधि दर्शनी यहां से चवते हैं. असंख्यात योजन के

तिण्णि गमगाय, णवरं तिसुवि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा, ओहिणाणीय ओहि-दंसणी संखेज्जा चयंति, सेसं तंचेव एवं जहा सोहम्मवडसगा य भणिया तहा ईसाणे छग्गमगा भाणियव्वा सणंकुमारवि एवंचेव णवरं इत्थीवेदगा ण उववज्जंति, तसु पण्णत्तेसुय ण भण्णंति असण्णी तिसुवि गमएसु ण भण्णंति सेसं तंचेव ॥ एवं जाव सहस्सारो णाणत्तं विमाणेसु लेस्सासुय सेसं तंचेव ॥ आणय पाणएसुणं भंते! कप्पेसु केवइया विमाणावाससया पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि विमाणावास सया पण्णत्ता ॥ तेणं भंते! किं संखेज्जा पुच्छा?

विस्तार के तीन गमा संख्यात जैसे कहना वहां पर संख्यात के स्थान असंख्यात कहना. परंतु अवधिज्ञानी व अवधि दर्शनी संख्यात चवते हैं. जैसे सौधर्म देवलोक का कहा वैसे ही ईशान में संख्यात असंख्यात के छ गमा कहना. सनत्कुमार में वैसे ही जानना परंतु स्त्रीवेद वहां नहीं उत्पन्न होते हैं, विद्यमान अवस्था में भी नहीं होता हैं. असंज्ञी तीनों गमा में नहीं है. ऐसे ही सहस्रार तक कहना. मात्र लेश्या और विमानों में भिन्नता रही हुइ है. ईशान देवलोक में २८ लाख, सनत्कुमार में १२ लाख, माहेन्द्र में ८ लाख, ब्रह्म में ४ लाख, लंतक में ५० हजार, महाशुक्र में ४० हजार, और सहस्रार में ६ हजार. वैसे ही सौधर्म ईशान में तेजोलेश्या, सनत्कुमार, माहेन्द्र व ब्रह्म देवलोक में पद्म लेश्या और उपर एक शुक्ल लेश्या. अहो भगवन्! आणत प्राणत में कितने विमान कहे हैं? अहो गौतम! आणत प्राणत में ४०० विमान कहे हैं. अहो

संखेज वित्थडावि असंखेज वित्थडावि, एवं संखेज वित्थडेसु तिण्णि गमगा, जहा सहस्सारे असंखेज वित्थडेसु उववज्जंति तेसुय चयंतेसुय एवं चेव संखेजा भाणियव्वा पण्णत्तेसु असंखेज्जा, णवरं णोइंदियोवउत्ता अणंतरोववण्णगा, अणंतरोवगाढा, अणंतराहारगा, अणंतर पज्जत्तगाय एएसिं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा, पण्णत्तेसु असंखेज्जा भाणियव्वा ॥ आरणच्चुएसु एवं चेव जहा आणयपाणएसु णाणत्तं विमाणेसु, एवं गेवेज्जगावि ॥८॥ कइणं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?

भगवन् ! वे क्या संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं, असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात और असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं. संख्यात योजन के विस्तारवाले में तीन गमा सहस्रार जैसे कहना. असंख्यात योजन के विस्तारवाले में उत्पन्न होना व चवने का तो ऐसे ही कहना मात्र संख्यात उत्पन्न होना व संख्यात चवना कहना, और विद्यमानता में असंख्यात का बोल कहना. परंतु नोइन्द्रिय युक्त, अनंतरोत्पन्न, अनंतरावगाढ, अनंतराहारक, अनंतर पर्याप्त ये पांच पदवाले जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात चवते हैं व उत्पन्न होते हैं और असंख्यात विद्यमान रहते हैं. आरण अच्युत का आणत प्राणत जैसे कहना इस में तीन सो विमान कहे हैं. नवग्रैवेयक का भी ऐसे ही जानना; परंतु इस में पहिली त्रिक में १११, दूसरी त्रिक में १०७, तीसरी त्रिक में १०० विमान हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् !

गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्ज-वित्थडाय ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडाय असंखेज्जवित्थडाय ॥ पंचसुणं भंते! अणुत्तरविमाणेसु संखेज वित्थडे विमाणे एगसमए केवइया अणुत्तरोववाइया उववज्जंति, केवइया सुक्कलेस्सा उववज्जंति पुच्छा? तहेव, गोयमा ! पंचसुणं अणुत्तर विमाणेसु संखेज्ज वित्थडेसु अणुत्तर विमाणे एगसमएणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा अणुत्तरोववाइया उववज्जंति, एवं जहा गेविज्जग विमाणेसु संखेज्ज वित्थडेसु णवरं कण्ह पक्खिया अभवसिद्धिया तिसु अण्णाणेसु एए ण उववज्जंति, ण चयंति, णवि पण्णत्तएसु भाणियव्वा अचरिमावि खोडिज्जंति, जाव संखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेसं तचेव

अनुत्तर विमान कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! अनुत्तर विमान पांच कहे हैं. अहो भगवन् ! क्या वे संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं व असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं. अहो भगवन् ! पांच अनुत्तर विमान में संख्यात योजन के विस्तारवाले विमान में कितने अनुत्तरोपपातिक उत्पन्न होते हैं कितने शुक्ल लेश्यावाले उत्पन्न होते हैं वगैरह पृच्छा ? अहो गौतम ! पांचों अनुत्तर विमानों में संख्यात योजन के विस्तारवाले अनुत्तर विमान में एक समय मे जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्यात अनुत्तरोपपातिक उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही

असंखेज्ज वित्थडेसुवि एए ण भण्णंति. अचरिमा अत्थि सेसं जहा गेवेज्जएसु असंखेज्ज वित्थडेसु जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ॥ ९ ॥ चोसट्ठीएणं भंते ! असुर कुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मदिट्ठी असुर-कुमारा उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी एवं जहा रयणप्पभाए तिण्णि आलावगा भणिया तहा असंखेज्ज वित्थडेसुवि तिण्णि गमगा एवं जाव गेवेज्जविमाणे अणुत्तर विमाणेसु एवं चेव, णवरं तिसुवि आलावएसु मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठीय ण भण्णाति सेसं

ग्रैवेयक विमान का संख्यात विस्तार का कहा वैसे ही जानना. परंतु कृष्ण पाक्षिक, अभवसिद्धिक, तीन अज्ञानवाले, उत्पन्न नहीं होते हैं और चवते भी नहीं हैं और विद्यमान भी नहीं रहते हैं. अचरिम भी नहीं होते हैं यावत् संख्यात चरिम रहते हैं असंख्यात विस्तार वाले में भी उक्त बोल कहना परंतु अचरिम हैं यावत् असंख्यात विस्तार वाले में असंख्यात अचरिम कहे हुवे हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार के भवनपति जाति के देवता के चौसठ लाख स्थान में संख्यात योजन वाले भवन में, क्या समदृष्टि असुर कुमार उत्पन्न होते हैं या मिथ्यादृष्टि उत्पन्न होते हैं ? जैसे रत्नप्रभा में तीन आलापक कहे वैसे ही यहां पर तीनों आलापक जानना. ऐसे ही असंख्यात योजन के विस्तारवाले में भी तीनों आलापक जानना. ऐसे ही नवग्रैवेयक व अनुत्तर विमान तक

तंचेव ॥ १० ॥ सेणूणं भंते ! कण्हलेस्से णील जाव सुक्कलेस्से भवित्ता, कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति ? हंता गोयमा ! एवं जहेव णेरइएसु पढमे उद्देसए तहेव भाणियव्वं, णीललेस्साएवि जहेव णेरइयाणं, जहा णील लेस्साए एवं जाव पम्हलेस्सेसु सुक्कलेस्सेसु एवं चेव, णवरं लेस्साट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्सं परिणमइ, परिणमइत्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति. से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तेरसम सयस्सय बितिओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ २ ॥

कहना परंतु अनुत्तर विमान में मात्र एक समदृष्टिवाले उत्पन्न होते है, समदृष्टिवाले चवते हैं और समदृष्टि-वाले पाते हैं. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कृष्णलेशी नीललेशी यावत् शुक्लेशी होकर क्या पुनः कृष्ण लेश्यावाले देवपने उत्पन्न होवे ? हां गौतम ! उत्पन्न होवे. इस का विशेष खुलासा पहिला नरक उद्देशा में कहा है. ऐसे ही शेष पांचों लेश्या का जानना. विशेष में इतना कि लेश्या के स्थानक में विशुद्ध होता हुवा शुक्ललेश्या के परिणामपने परिणमे, शुक्ल लेश्यावंत बनकर शुक्ल लेश्यावाले देव में उत्पन्न होवे. अहो गौतम इसलिये ऐसा कहा गया है कि उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह तेरहवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा. ॥ १३ ॥ २ ॥

क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात पु० पृथ्वी प० प्ररूपी तं० वह

णेरइयाणं भंते ! अणंतराहारा ततो णिव्वत्तणया एवं परिचारणा पदं णिरवसेसं भाणियव्वं ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ तेरसमसयस्सय तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ ३ ॥

कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा

दूसरे उद्देशे में देवता की वक्तव्यता कही. देवता प्रायः परिचारणावाले होते हैं इसलिये परिचारणा का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! नारकी उपपात क्षेत्र में प्राप्त हुवे पीछे आहार करे, पश्चात् शरीर निवृति करे, फीर परिचारणा करे, फीर परिणमे, और परिणमे बाद क्या विकुर्वणा करे ? हां गौतम ! सब वैसे ही जानना. इस का सब कथन पन्नवणा के चौतीसवे पद में परिचारणा पद अनुसार जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह तेरहवा शतक का तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा. ॥ १३ ॥ ३ ॥

तीसरे उद्देशे में परिचारणा कही. वह नरक में होने से नरक का अधिकार कहते हैं. + अहो भगवन् !

÷ इस उद्देशे मे द्वार बतानेवाली दो गाथाओ कितनेक स्थान दीखने मे आती है सो कहते हैं. णेरइया फास पणिही निरयते चेव लोयमज्झेय । दिसि विदिसाणय पवहा पव्वत्तण अत्थिकाएहिं ॥ १ ॥ अत्थोपएस फुसमाणा ओगाहणणायाय जीव मोगाढा । अत्थि पएसनिसीयण बहुस्समे लोग संठाणेत्ति ॥ २ ॥ ऐसे बारह द्वार कहे हैं इस का विवेचन उद्देशे में ही आता है.

ज० जैसे र० रत्नप्रभा जा० यावत् अ० अधो स० सातवीं ॥ १ ॥ अ० अधो स० सातवीं भं० भगवन् पु० पृथ्वी में पं० पांच अ० अनुत्तर म० बहुत बडे जा० यावत् अ० अप्रतिष्ठान न० नरक छ० छठी त० तमा पु० पृथ्वी न० नरक मे म० बहुत लम्बे म० बहुत चौडे म० बहुत आकाश वाले म० बडे शुन्य स्थानक णो० नहीं म० महाप्रवेश णो० नहीं आ० आकीर्ण णो० नहीं आ० आकुल णो० नहीं अ०

रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ अहे सत्तमाएणं भंते ! पुढवीए पंच अणुत्तरा महति महालया जाव अप्पइट्ठाणे तेणं णरगा छट्ठीए तमाए पुढवीए णरएहिंतो महत्तरा चेव, महाविच्छिण्णतरा चेव, महोवासंतरा चेव महापातिरिक्कतरा चेव णो तहा महा पवेसणतरा चेव णो आइण्णतरा चेव णो आउलतरा चेव, णो अणोमाणतरा चेव ४, तेसुणं

पृथ्वी कितनी कही हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कही हैं, जिन के नाम रत्नप्रभा यावत् सातवी तमतम प्रभा ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! सातवी पृथ्वी में पांच अनुत्तर बडे नरकावास कहे हैं वगैरह अप्रतिष्ठान तक कहना. वे पांचों नरकावासाओं छठी तमा पृथ्वी के नरकावासाओं से लम्बाइ व चौडाइ में बहुत बडे हैं बहुत विस्तारवाले, बहुत आकाश क्षेत्रवाले और बहुत शून्य स्थानकवाले हैं, छठी नरक में जैसे जीवों का महा प्रवेश है वैसा इस में नहीं है अत्यंत आकीर्ण नहीं है. अत्यंत आकुल नहीं हैं व अत्यंत संकीर्ण नहीं है. उस नरक में रहे हुवे नारकी छठी तमा में रहे हुवे नारकी से वेदनीयादिक आयुष्य की

संकीर्ण ते० उस नं० नरक में णे० नारकी छ० छठी त० तमा पु० पृथ्वी के णे० नारकी से म० महाकर्म वाले म० महाक्रिया वाले म० महा आश्रव वाले, म० महावेदना वाले णो० नहीं त० तथा अ० अल्प कर्म वाले अ० अल्पक्रिया वाले अ० अल्प आश्रव वाले अ० अल्प वेदना वाले अ० अल्प ऋद्धिवाले अ० अल्पद्युति वाले णो० नहीं म० बडी ऋद्धिवाले णो० नहीं म० महाद्युति वाले छ० छठी त० तमा पु० पृथ्वी में ए० एक पं० पांच कम णि० नरकावास स० शत सहस्र प० प्ररूपे ते० वे ण० नरकावास अ० अधो

णरएसु णेरइया छट्ठीए तमाए पुढवीए णेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेयणतरा चेव, णो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेयणतरा चेव ४, अप्पिड्ढियतरा चेव अप्पजुत्तियतरा चेव णो तहा महिड्ढियतरा चेव णो महज्जुत्तियतरा चेव २ छट्ठीएणं तमाए पुढवीए एगे पंचूणे णिरयावास सयसहस्से पण्णत्ता तेणं णरगा अहे सत्तमाए पुढवीए णरएहिंतो

अपेक्षा से महा कर्मवाले हैं कायिक्यादिक क्रिया की अपेक्षा से महा क्रियावाले हैं, महा आश्रववाले व महा वेदनावाले हैं परंतु छठी नारकी के नेरये जैसे अल्प कर्मवाले, अल्प क्रियावाले, अल्प आश्रव व अल्प वेदनावाले नहीं हैं. वे अल्प ऋद्धिवाले व अल्प द्युतिवाले हैं बहुत ऋद्धिवाले व बहुत द्युतिवाले नहीं हैं छठी तमा नामक नरक में पांच कम एक लाख नरकावास कहे हैं. वे नरकावास सातवी तमतमा पृथ्वी के

स० सातवी पु० पृथ्वी के ण० नरकावास से णो० नहीं म० बहुत लम्बे म० बहुत चौडे म० बडा प्रवेश वाले आ० आकीर्ण ते० उस ण० नरक में ण० नारकी अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी के णे० नारकी से अ० अल्प कर्म वाले अ० अल्प क्रिया वाले णो० नहीं म० महाकर्म वाले म० महाक्रिया वाले म० महर्द्धिक म० महाद्युति वाले णो० नहीं अ० अल्प ऋद्धि वाले णो० नहीं अ० अल्पद्युति वाले छ० छठी त० तमा पु० पृथ्वी के ण० नरकावास पं० पांचवी धू० धूम्रप्रभा पु० पृथ्वी के ण० नरकावास से म०

णो तहा महत्तरा चेव महाविच्छिण्णतरा चेव ४, महप्पवेसणतरा चेव आइण्णतरा चेव ४, तेसुणं णरएसु णेरइया अहे सत्तमाए पुढवीणेरइएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव अप्पकिरियतरा चेव; ४ णो तहा महाकम्मतरा चेव महाकिरियतरा चेव ४, महिड्डियतरा चेव, महाजुत्तियतरा चेव, णो तहा अप्पिड्डियतरा चेव णो तहा अप्पजुत्तियतरा चेव॥ छट्ठीएणं तमाए पुढवीए णरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए णेरइएहिंतो महत्तरा

नरकावासों से लम्बाइ चौडाइ में बहुत बडे नहीं हैं. बहुत विस्तृत नहीं हैं, अवकाशवाले नहीं है व शून्य नहीं हैं परंतु बहुत प्रवेशवाले, आकीर्ण, आकुल व अत्यंत संकीर्ण हैं. उस नरक में नारकी सातवी नरक के नारकी से अल्प कर्मवाले, अल्प क्रियावाले, अल्प आश्रव व अल्प वेदनावाले हैं परंतु महा कर्म, क्रिया, आश्रव व वेदनावाले नहीं हैं. महा ऋद्धिवाले व महा द्युतिवाले हैं; परंतु अल्प ऋद्धिवाले व अल्प द्युति-

नारकी पं० पांचवी धू० धूम्रप्रभा पु०
बहुत लंबे णो० नहीं म० बडा प्रवेशन ते० उस ण० नरक में णे० नारकी पं० पांचवी धू० धूम्रप्रभा पु०
पृथ्वी के ने० नारकी से म० महाकर्म वाले णो० नहीं अ० अल्प कर्म वाले अ० अल्पऋद्धि वाले णो०
नहीं म० महर्द्धिक पं० पांचवी धू० धूम्रप्रभा पु० पृथ्वी में ति० तीन णि० नरका वास स० लक्ष प० प्ररूपे
ए० ऐसे ज० जैसे छ० छठी में भ० कहा ए० ऐसे स० सात पु० पृथ्वी का प० परस्पर भा० कहना

चेव ४, तेसुणं णरएसु णेरइया पंचमाए धूमप्प-
चेव ४, णो तहा महप्पवेसणतरा चेव ४, णो तहा अप्पकम्मतरा चेव, ४,
भाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव ४, णो तहा अप्पकम्मतरा चेव, ४,
अप्पिड्ढियतरा चेव २, णो तहा महिड्ढियतरा चेव २, पंचमाएणं धूमप्पभाए पुढवीए
तिण्णि णिरयावास सयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा छट्ठीए भाणिया एवं सत्तवि

बहुत बडे, विस्तृत, अव-
काशवाले व शून्य हैं. पांचवी नरक जैसे प्रवेशवाले, आकीर्ण, आकुल व अत्यंत संकीर्ण नहीं हैं. छठी
नरक के नारकी पांचवी धूम्रप्रभा के नारकी से महा कर्म, क्रिया, आश्रव व वेदनावाले हैं परंतु अल्प कर्म,
क्रिया, आश्रव व वेदनावाले नहीं हैं. अल्प ऋद्धिवाले व द्युतिवाले हैं परंतु महर्द्धिक व महा द्युतिवाले
नहीं हैं. पांचवी धूम्रप्रभा पृथ्वी में तीन लाख नरकावास कहे हैं. इस का वर्णन जैसे छठी का कहा
वाले नहीं हैं. छठी तमा पृथ्वी के नरकावास पांचवी धूम्रप्रभा के नरकावास से

जा० यावत् र० रत्नप्रभा जा० यावत् णो० नहीं म० महर्द्धिक अ० अल्पद्युति वाले ॥२॥ सरल शब्दार्थ

पुढवीओ परोप्परं भण्णति जाव रयणप्पभात्ति जाव णो तहा महिड्डियतरा चेव अप्पजुत्तिय-तराचेव ॥२॥ रयणप्पभा पुढवी णेरइयाणं भंते! केरिसयं पुढवीफासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठ जाव अमणामं एवं जाव अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइया एवं आउफासं एवं जाव वणस्सइ फासं ॥ ३ ॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभा पुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाय सव्व महतिया बाहल्लेणं सव्व खुड्डिया सव्वंतेसु,

वैसे ही जानना. ऐसे ही सातों नरक का परस्पर जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसा पृथ्वी स्पर्श अनुभवते हुवे विचरते हैं ? अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमनोज्ञ पृथ्वी स्पर्श अनुभवते हुवे रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी विचरते हैं. ऐसे ही सातवी नरक तक जानना. पृथ्वी स्पर्श जैसे अप्काय, तेउकाय, वायुकाय व वनस्पतिकाया का स्पर्श कहना. यह दूसरा द्वार हुआ ॥ ३ ॥ अब तीसरा प्रणिधिद्वार कहते हैं. यह रत्नप्रभा पृथ्वी पृथ्वीपिंड से दूसरी शर्कर प्रभा पृथ्वी आश्री सब से बडी है क्यों कि रत्नप्रभा का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है और शर्कर प्रभा का एक लाख बत्तीस हजार योजन का पृथ्वी पिंड है, और परिधि से रत्नप्रभा पृथ्वी शर्कर प्रभा आश्री सब से छोटी

१ नारकी मे तेजस्काय परमाधामी कृत है परंतु साक्षात नहीं है.

एवं जहा जीवाभिगमे बितिए णेरइए उद्देसए ॥ ४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए, पुढवीए णिरय परिसामंतेसु जे पुढवीकाइया एवं जहा णेरइए उद्देसए जाव अहे सत्तमाए॥ ५॥ कहिण्णं भंते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स असंखेजइ भागं उग्गहित्ता, एत्थण लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते कहिण्णं भंते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स साइरेगं अद्धं उग्गहित्ता एत्थणं अहे लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते कहिण्णं भंते ! उड्ढ लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? गोयमा ! उप्पिं सणकुमार माहिंदाणं कप्पाणं बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडे एत्थणं उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥ कहिण्णं भंते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?

है क्यों कि चारों दिशि में रत्नप्रभा की लम्बाइ चौडाइ एक राजु प्रमाण है और शर्कर प्रभ की लम्बाइ चौडाइ अढी राजु प्रमाण है. इस का विशेष विवेचन जीवाभिगम के दूसरे नरक उद्देशे से जानना. यह तीसरा द्वार पूर्ण हुवा ॥ ४ ॥ अब चौथा निरंतर द्वार कहते हैं, अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावासों की पास जो पृथ्वीकायादि रह हुवे हैं वे क्या महा कर्मवंत हैं . यों सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र से जानना, यावत् सातवी नरक पर्यंत स्थावर काय के जीवों महा कर्मवाले यावत् महा दुःखवाले हैं ॥ ५ ॥ अब लोक मध्य द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! लोक का मध्य लम्बाइ में कहां कहा है ?

गोयमा ! जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिम हेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु एत्थणं तिरिय मज्झे अट्ठ पएसिए रुयए पण्णत्ते, जओणं इमाओ दसदिसाओ पवहंति तंजहा पुरच्छिमा, पुरच्छिमदाहिणा,

अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशांतर का असंख्यातवा भाग उल्लंघ कर जावे वहां लोक का मध्य भाग लम्बाइ में कहा है. अहो भगवन् ! अधो लोक का आयाम मध्य कहां कहा है ? अहो गौतम ! चौथी पंक प्रभा पृथ्वी के आकाशांतर के साधिक अर्ध भाग अवगाह कर जावे वहां अधो लोक का आयाम मध्य कहा है. क्यों कि रुचक प्रदेश से ९०० योजन नीचे ऊर्ध्व लोक रहा है. वह सात राजु से कुच्छ अधिक है. उस का मध्य चौथी पांचवी पृथ्वी के मध्य का आकाशांतर ऊर्ध्व से अधिक उल्लंघ कर जावे जब आता है. अहो भगवन् ! ऊर्ध्व लोक का आयाम मध्य कहां कहा है ? अहो गौतम ! रुचक प्रदेश से नव सो योजन जावे तब ऊर्ध्व लोक आता है. वह सात राजु मे न्यून है, सनत्कुमार व माहेन्द्र देव लोक की उपर रिष्ट विमान प्रस्तर में ऊर्ध्व लोक का आयाम मध्य कहा है. अहो भगवन् ! तीर्च्छा लोक का मध्य भाग कहां कहा है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के बहुत मध्य भाग में मेरु पर्वत रहा हुवा है. इस की मध्य में रत्नप्रभा पृथ्वी की ऊपर रत्न काण्ड के नीचे सब से छोटी दो प्रतर हैं. इन दोनों की मध्य में तीर्च्छालोक का मध्य कहा है. वहां आठ रुचक प्रदेश कहे हैं. इन से दश दिशाओं
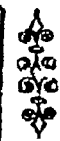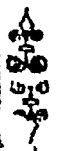
एवं जहा दसमसए जाव णामधेज्जंति ॥ ६ ॥ इंदाणं भंते ! दिसा किमादिया किं पवहा कइ पदेसादिया, कइपदेसुत्तरा कइपदेसिया किं पज्जवसिया, किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! इंदाणं दिसा रुयगादिया रुयगप्पवहा दुपदेसिया, दुपदेसुत्तरा, लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंत पएसिया ॥ लोगं पडुच्च सादिया सपज्जवासिया, अलोगं पडुच्च सादिया अपज्जवसिया; लोगं पडुच्च मुरवसंठिया अलोगं पडुच्च सगडुद्धियसंठिया पण्णत्ता ॥ अग्गीयीणं भंते ! दिसा किमादिया,

बनी हुइ हैं, जिन के नाम पूर्व, पश्चिम, दाक्षिण वगैरह जैसे दशवे शतक में कहा वैसे ही जानना ॥ ६ ॥ अब छठा दिशि विदिशि प्रवाह द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! इन्द्रा नामक दिशा की १ कहां आदि है, २ कहां से चली है, ३ आदि में कितने प्रदेश हैं, ४ कितने प्रदेशों की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है, ५ कितने प्रदेशात्मक है, ६ कहां अंत है और ७ कहां रही हुई है ? अहो गौतम ! ऐन्द्री दिशा की रुचक से आदि है २ रुचक से चलती है दो प्रदेशों की आदि है, आगे दो प्रदेश की उत्तरोत्तर वृद्धि पाती है. लोक आश्री असंख्यात प्रदेशात्मक है अलोक आश्री अनंत प्रदेशात्मक है, लोक आश्री आदि अंत सहित है अलोक आश्री आदि सहित अंत रहित है. लोक आश्री मुरज नामक आभरण विशेष के आकारवाली है और अलोक आश्री गाडी की धुरी के आकारवाली है. अहो भगवन् ! अग्नेयी दिशा की कहां से
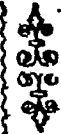
किं पवहा, कइ पएसादिया, कइ पएसविच्छिण्णा, कइ पएसिया किं पज्जवसिया, किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अग्गीयीणं दिसा रुयगादिया, रुयगप्पवहा, एगपदेसादिया, एगपदेसविच्छिण्णा, अणुत्तरा, लोगं पडुच्च असंखेज्ज पदेसिया, अलोगं पडुच्च अणंत पदेसिया, लोगं पडुच्च सादिया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च सादिया अपज्जवसिया छिण्णमुत्तावलि संठिया पण्णत्ता जमा जहा इंदा णेरई जहा अग्गेयी एवं जहा इंदा तहा दिसा चत्तारि ॥ जहा अग्गेयी तहा चत्तारि विदिसाओ । विमलाणं भंते !

आदि है, कहां से चली है, कितने प्रदेश आदि में है, कितने प्रदेश की विस्तारवाली है, कितने प्रदेशात्मक है, कहां उस का अंत है और कैसे संस्थान वाली है ! अहो गौतम अग्नेयी दिशा की रुचक से आदि है, रुचक से चली है, एक प्रदेश की आदि है, एक प्रदेश की विस्तीर्ण है, विदिशा की उत्तरोत्तर वृद्धि नहीं होती है, लोक आश्री असंख्यात प्रदेशात्मक अलोक आश्री अनंत प्रदेशात्मक, लोक आश्री आदि अंतसहित है अलोक आश्री आदि सहित अंतरहित है और छेद हुवे मुक्तावलि हार जैसे हैं. जैसे एन्द्री दिशा का कहा वैसे ही शेष सब दिशा का जानना. और जैसे अग्नेयी का कहा वैसे ही विदिशा का जानना. अहो भगवन् ! विमला दिशा की कहां आदि है वगैरह प्रश्न की अग्नेयी जैसे पृच्छा करते हैं. अहो गौतम ! विमला दिशा की रुचक से आदि है, रुचक से विमला दिशा नीकली है, चार प्रदेश की

दिसा किमादिया पुच्छा ? जहा अग्गेयी । गोयमा ! विमलाणं दिसा रुयगादीया रुयगप्पवहा, चउप्पदेसादिया, दुपदेसाविच्छिण्णा, अणुत्तरा लोगं पडुच्च सेसं जहा अग्गेयी णवरं रुयग संठिया एवं तमावि ॥ ७ ॥ किमियं भंते ! लोएत्ति पवुच्चइ गोयमा ! पंचत्थिकाया, एसणं एवइए लोएत्ति पवुच्चइ, धम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ॥ धम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तइ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाएणं जीवाणं आगमण गमण भासुम्मेस मण

आदिवाली है, दो प्रदेश की विस्तीर्ण है, अनुत्तर है, लोक आश्री असंख्यात प्रदेशात्मक है, अलोक आश्री अनंत प्रदेशात्मक है, लोक आश्री सादि सान्त है अलोक आश्री सादि अनंत है और रुचक के संस्थान वाली है. ऐसे ही तमादिशा का अधिकार जानना ॥ ७ ॥ अब प्रवर्तन द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! यह लोक है ऐसा क्यों कहा ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्ति काय व पुद्गलास्तिकाय यों पंचास्तिकाय रूप लोक है. अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाया से जीवों का क्या प्रवर्तन होता है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाया से जीवों का आगमन, गमन, बोलना, उन्मेष, मन योग, वचन योग, काया योग और अन्य भी ऐसे सब चलन व स्वभाव प्रवर्तते हैं क्यों कि धर्मास्तिकाय गति

जोग वइ जोग काय जोग, जेयावण्णे तहप्पगारा चलसभावा सव्वेते धम्मत्थिकाए, पवत्तंति, गतिलक्खणेणं धम्मत्थिकाए ॥ अहम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तइ गोयमा ! अहम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाणणिसीयणतुयट्टणमणस्सय एगत्तीभाव करणया जेयावण्णे तहप्पगारा थिरसभावा सव्वेते अहम्मत्थिकाए पवत्तंति, ठाणलक्खणेणं अहम्मत्थिकाए ॥ आगासत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं अजीवाणय किं पवत्तइ गोयमा ! आगासत्थिकाएणं जीवदव्वाणय अजीवदव्वाणय भायणभूए एगेण वि से

लक्षणवाली है. अहो भगवन् ! अधर्मास्तिकाया से जीवों को क्या प्रवर्तन होता है ? अहो गौतम ! अधर्मास्तिकाया से जीवों को खडे रहना, बैठना, सोना, मन का एकत्व भाव करना और ऐसे अन्य सब स्थिर स्वभाववाले कार्य होते हैं क्यों कि अधर्मास्तिकाया का लक्षण स्थिर का है. अहो भगवन् ! आकाशास्तिकाया से जीवों को क्या प्रवर्तन होता है ? अहो गौतम ! आकाशास्तिकाय जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य को भाजनभूत है. एक आकाशास्तिकाय प्रदेश, एक परमाणु, दो परमाणु, सो परमाणु, क्रोड, सो क्रोड, क्रोड सहस्र परमाओं से भराहुवा रहता है. जैसे एक कमरे में दीपक किया उस का प्रकाश उस कमरे में होता है, फीर दूसरा दिवा किया उस का प्रकाश भी उस में ही आता है, यों हजारों

पुण्णे सयंवि माएज्जा, कोडिसएणवि पुण्णे कोडिसहस्संपि माएज्जा, अवगाहणा लक्खणेणं आगासत्थिकाए । जीवत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तइ ? गोयमा ! जीवत्थि काएणं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियणाण पज्जवाणं, अणंताणं सुअणाण पज्जवाणं, जहा वितियसए अत्थिकाय उद्देसए जाव उवओगं गच्छंति, उवओग लक्खणेणं जीवे ॥ पोग्गलत्थिकाए पुच्छा ? गोयमा ! पोग्गलत्थिकाएणं, जीवाणं ओरालिय वेउव्विय-आहारग-तेया कम्मा, सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदिय,

दीपक का प्रकाश भी उसी कमरे में आ जाता है वैसे ही एक आकाश प्रदेश में परमाणुओं का समावेश होता है क्योंकि आकाशास्तिकाया का लक्षण अवगाहना है. अहो भगवन् ! जीवास्ति-काया से जीवों को क्या प्रवर्तन होता है ? अहो गौतम ! जीवास्तिकाया से अनंत आभिनिबोधिक ज्ञान के पर्यव, अनंत श्रुतज्ञान के पर्यव वगैरह सब कथन दूसरे शतक के अस्तिकाय उद्देशे में से जानना. यावत् उपयोग लक्षण वाला जीव है. अहो भगवन् ? पुद्गलास्तिकाया से जीवों को क्या प्रवर्तन है ? अहो गौतम ! पुद्गलास्तिकाया से जीवों को उदारिक, वैक्रेय, आहारिक, तेजस् व कार्माण शरीर, श्रोते-न्द्रिय चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय. मनयोग, वचनयोग, कायायोग और श्वासोश्वास का

मणजोग-वइजोगं कायजोगं,आणा पाणूणंच गहणं पवत्तंति,गहण लक्खणेणं पोग्गलत्थि काए ॥ ८ ॥ एगे भंते ! धम्मत्थिकायप्पएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं ॥ केवइएहिं अहम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे? गोयमा ! जहण्णपदे चउहिं उक्कोसपदे सत्तहिं ॥ केवइएहिं आगासत्थिकायप्पएसेहिं

लेना होता है. क्यों की पुद्गलास्तिकाया का ग्रहण लक्षण है. ॥ ८ ॥ अब अस्तिकाय प्रदेश स्पर्शन द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाया के प्रदेश से स्पर्शा हुवा है? अहो गौतम ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश जघन्य तीन धर्मास्तिकाय प्रदेशको स्पर्शा हुवा है. लोक के अंत में निकुटरूप जहां एकधर्मास्तिकायादि प्रवेशन बहुत अल्प है अन्य प्रदेश साथ स्पर्शना होवे. भूमि आसन्न कमरा के खुने का एक प्रदेश को दो बाजु दो और एक नीचेयों तीनप्रदेश होवे वैसेही धर्मास्तिकाया के प्रदेश को जघन्य पना से धर्मास्तिकाया के तीन प्रदेशो स्पर्शे हुवे रहे हैं. और उत्कृष्ट पद से छ प्रदेश स्पर्शे हुवे रहे हैं किसी एकप्रदेश के उपर, नीचे व चारों दिशा के चार योंछ प्रदेश स्पर्शकर रहे हुवे हैं. अहो भगवन्! एक धर्मास्ति काया का प्रदेश अधर्मास्तिकाया के कितने प्रदेश से स्पर्शा हुवा है? अहो गौतम ! जघन्यपद से चार से स्पर्शे उत्कृष्ट पदसे सातसे स्पर्शे. पहिले जो तीन व छ कहे हैं उसमें जो धर्मास्तिकायाका प्रदेश स्पर्शने का वही अधर्मास्ति काया के स्थान होने से अधिक लिया गया है अहो भगवन्! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने आकाशास्तिकाय प्रदेश से

पुट्ठे ? गोयमा ! सत्तहिं ॥ केवइएहिं जीवत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! अणंतेहिं ॥ केवइएहिं पोग्गलत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! अणंतेहिं ॥ केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय णो पुट्ठे, जइ पुट्ठे णियमं अणंतेहिं ॥ ९ ॥ एगे

हुवा है ? अहो गौतम ! सात प्रदेश से स्पर्शा हुवा है क्यों कि लोकांत में भी अलोकाकाश विद्यमान है. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश से कितने जीवास्तिकाय प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! अनंत जीवास्तिकाय प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं, क्यों कि एक धर्मास्तिकाय प्रदेश के तीनों तरफ अनंत जीव के प्रदेश रहे हुवे हैं. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश को कितने पुद्गलास्तिकाय प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पुद्गलास्तिकाय प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं जीवास्तिकाय प्रदेशवत्. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय को कितना अद्धा (काल) स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय प्रदेश को काल क्वचित् स्पर्शा हुवा है और क्वचित् स्पर्शा हुवा नहीं है क्यों कि काल मात्र अढाइ द्वीप में है इस से अढाइ द्वीप में स्पर्श कर रहा है और अढाइ द्वीप सिवाय अन्यत्र काल स्पर्श कर नहीं रहा है. जो स्पर्श कर रहा है वह अनंत स्पर्श कर रहा है. क्यों कि तीनों काल के समय अनंत हैं; वैसे ही वर्तमान समय अनंत द्रव्य का आलिंगन होने से अनंत द्रव्य के अनंत समय को स्पर्शता है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! एक अध-

भंते ! अहम्मत्थिकायप्पएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे चउहिं उक्कोसपदे सत्तहिं ॥ केवइएहिं अहम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे तिहिं उक्कोसपदे छहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ १० ॥ एगे भंते ! आगासत्थि कायप्पएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा !

र्मास्तिकाय प्रदेश को कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य चार उत्कृष्ट सात. अहो भगवन् ! कितने अधर्मास्तिकाया के प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य तीन उत्कृष्ट छ शेष सब धर्मास्तिकाया जैसे कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! एक आकाशास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाया के प्रदेश से स्पर्श हुवा है ? अहो गौतम ! आकाशास्तिकाया को धर्मास्तिकाया क्वचित् स्पर्शी हुई है और क्वचित् नहीं स्पर्शी हुई है क्यों की आकाशास्तिकाया के दो भेद कहे हैं लोकाकाश व अलोकाकाश. लोकाकाश में धर्मास्तिकाया है और अलोकाकाश में धर्मास्तिकाया नहीं है इस से क्वचित् स्पर्शी हुई है और क्वचित् स्पर्शी हुई नहीं है. जब धर्मास्तिकाया स्पर्शी हुई है तब जघन्य एक प्रदेश से स्पर्शी है लोकान्त में रहा हुवा आकाश प्रदेश पर धर्मास्तिकाया का प्रदेशवत्. क्वचित् दो धर्मास्तिकाया प्रदेश, वक्रगति आकाश प्रदेशको दो धर्मास्तिकाया के प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं और तीन प्रदेश का भी स्पर्श होता है वह अलोकाकाश वंधक प्रदेश के आगे का, नीचे का

सिय पुट्ठे सिय णो पुट्ठे, जइ पुट्ठे जहण्णपदे एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा, उक्कोसपदे सत्तहिं ॥
एवं अहम्मत्थिकायप्पएसेहिंवि ॥ केवइएहिं आगासत्थिप्पएसेहिं पुट्ठे? गोयमा ! छहिं ॥ के-
वइएहिं जीवत्थि कायप्पदेसेहिं पुट्ठे? गोयमा ! सियपुट्ठे सिय णो पुट्ठे, जइ पुट्ठे णियमं अणं-
तेहिं एवं पोग्गलत्थि कायप्पदेसेहिंवि ॥ अद्धासमएहिं ॥ ११ ॥ एगे भंते ! जीवत्थि-

स्पर्श किया है. लोकान्त की कौन में रहा हुवा आकाश प्रदेश धर्मास्तिकाया के प्रदेश को अवगाहकर रहाहुवा है और इस की एक उपर, एक अधो व एक बाजु पर का प्रदेश यों चार, और दोनों बाजु दो, उपर, नीचे के दो और एक धर्मास्तिकाया प्रदेश जिस में रहा है सो यों पांच, व उपर, नीचे व तीनों दिशा के तीन यों छ और उपर नीचे व चारों दिशा के चार प्रदेश स्पर्श कर रहे हैं. इस तरह एक आकाशास्ति-काय प्रदेश धर्मास्तिकाया के सात प्रदेशों से स्पर्श कर रहा हुवा है. जैसे आकाशास्तिकाया की साथ धर्मास्तिकाया का कहा वैसे ही अधर्मास्तिकाया का जानना. अहो भगवन् ! कितने आकाशास्तिकाय प्रदेश से स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! छ आकाश प्रदेश से स्पर्शा हुवा है. अहो भगवन् ! कितने जीवास्तिकाय प्रदेश से स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! कदाचित् स्पर्शा हुवा है और कदाचित् नहीं स्पर्शा हुवा है क्यों कि लोकाकाश में जीव हैं और अलोकाकाश में जीव नहीं हैं. यदि स्पर्शा हुवा है तो निश्चय

व उपर का और उत्कृष्ट पद मे एक आकाशास्तिकाय के प्रदेशको धर्मास्तिकाया के सात प्रदेशोंने स्पर्श

कायप्पदेसे केवइएहिं धम्मत्थिकाय पुच्छा? जहण्णपदे चउहिं, उक्कोसपदे सत्तहिं ॥ एवं अधम्मत्थि कायप्पदेसेहिंवि॥ केवइएहिं आगासत्थिकाय पुच्छा? सत्तहिं॥ केवइएहिं जीवत्थि सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ १२ ॥ एगे भंते! पोग्गलत्थिकायप्पदेसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पदेसेहिं; एवं जहेव जीवत्थिकायस्स ॥ १३ ॥ दो भंते! पोग्गलत्थि-कायप्पदेसा केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पदेसेहिं पुट्ठा? गोयमा! जहण्णपदे छहिं उक्को-

अनंत प्रदेशों से स्पर्शा हुवा है. ऐसे ही पुद्गलास्तिकाया का जानना. और वैसे ही कालका भी कथन कहना॥११॥अहो भगवन्! एक जीवास्तिकाय प्रदेश को कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश स्पर्शकर रहे हैं? अहो गौतम! जघन्य चार उत्कृष्ट सात धर्मास्तिकाय प्रदेश, अधर्मास्तिकाय के भी जघन्य चार उत्कृष्ट सात प्रदेश स्पर्शकर रहे हैं. आकाशास्तिकाय के सात प्रदेश रहे हैं और शेष सब धर्मास्तिकाय जैसे कहना. ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! एक पुद्गलास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश से स्पर्श कर रहा है? अहो गौतम! जैसे जीवास्तिकाया का कहा वैसे ही यहां कहना. ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! दो पुद्गलास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश से स्पर्शे हुवे हैं? अहो गौतम! जघन्य छ उत्कृष्ट बारह प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं. +

+ यहांपर चूर्णिकार ऐसा कहते हैं कि लोकान्त में जो द्विप्रदेशिक स्कंध एक प्रदेश अवगाह कर रहा हुवा है, उस एक अवगाहित प्रदेश को भी प्रतिद्रव्य अवगाहि प्रदेश ऐसा नयमत का आश्रय ग्रहण कर के भिन्नपना से दो स्पर्शे, और

संपदे बारसहिं ॥ एवं अहम्मत्थिकायप्पदेसेहिंवि ॥ केवइएहिं आगासत्थिकाय पुच्छा? गोयमा ! बारसहिं सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ १४ ॥ तिण्णि भंते ! पोग्गलत्थि-कायप्पदेसा केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पदेसेहिं पुट्ठा ? गोयमा ! जहण्णपदे अट्ठहिं

उत्कृष्ट पद में बारह का विवरण. जिन दो प्रदेशों का अवगाह कर रहे हैं वे नीचे के दो, उपर के दो, पूर्व पश्चिम दिशी के दो २ दाक्षिण बाजु में एक और उत्तर बाजु में एक यों बारह धर्मास्तिकाय के प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं. ऐसे ही अधर्मास्तिकाय का जानना. आकाशास्तिकाय के बारह प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं शेष सब धर्मास्तिकाय जैसे कहना ॥१४॥ अहो भगवन् ! तीन पुद्गलास्तिकाय प्रदेश को कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य पद से तीन पुद्गलास्तिकाय प्रदेश को आठ धर्मास्तिकाय प्रदेश

नीचे व उपर जो प्रदेश है उन को भी दो पुद्गल का स्पर्शन होने से भेद से दो प्रदेश साथ स्पर्शे वैसे ही दोनों बाजु एक२ अणु को एक २ यों दो प्रदेश स्पर्शे. यो जघन्य पद में छ धर्मास्तिकाय प्रदेश द्व्यणुक स्कंध को स्पर्शे. यदि नयमत स्वीकृत न किया जावे तो द्व्यणुक को चार प्रदेश स्पर्शे. अब वृत्तिकार का कथन ऐसा है कि द्विप्रदेशीक स्कंध सो दो परमाणुओं जानना. उस मे इधर रहा हुवा परमाणु इधर के प्रदेश की साथ स्पर्शे और उधर रहा हुवा परमाणु उधर के प्रदेश से स्पर्शे इस तरह दोनों तरफ के दो प्रदेश, और जिन दो प्रदेश में दो परमाणुओ की स्थापना की उन की आगे के दो प्रदेश स्पर्शे यों चार और दो प्रदेश अवगाह कर रहे है सो यो छ प्रदेश हुए.

उक्कोसपदे सत्तरसहिं, एवं अहम्मत्थि कायप्पदेसेहिंवि ॥ केवइएहिं, आगासत्थि सत्तरसहिं ॥ सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ एवं एएणं गमएणं भाणियव्वा जाव दस, णवरं जहण्णपदे दोण्णि पक्खिवियव्वा उक्कोसेणं पंच ॥ चत्तारि पोग्गलत्थि कायप्पदेसे० जहण्णपदे दसहिं उक्कोसपदे बावीसाए ॥ पंच पोग्गलत्थिकाय० जहण्णपदे बारसहिं उक्कोसपदे सत्तावीसाए ॥ छ पोग्गल० जहण्णपदे चउद्दसहिं उक्कोसेणं बत्तीसाए ॥ सत्तपोग्गल० जहण्णपदे सोलसहिं उक्कोसपदे सत्ततीसाए ॥ अट्ठपोग्गल० जहण्णपदे अट्ठारसहिं उक्कोसपदे बायालीसाए॥ णवपोग्गल० जहण्णपदे

स्पर्शे हुवे हैं. अवगाहनावाले तीन प्रदेश, तीन नीचे के अथवा उपर के प्रदेश और दो दोनों बाजु के यों आठ प्रदेश, उत्कृष्ट पद से सत्तरह सो अवगाहे हुवे तीन, उपर के तीन, नीचे के तीन, तीन पूर्व के, तीन पश्चिम के एक उत्तर व एक दक्षिण के यों सत्तरह हुवे. अधर्मास्तिकाय का भी वैसे ही जानना. आकाशास्तिकाय के सत्तरह प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं शेष सब धर्मास्तिकाया जैसे कहना. इस क्रम से पांच छ सात यावत् दश तक कहना; विशेषता इतनी की जघन्य पद में पूर्वोक्त जघन्य पद से दो अधिक कहना और उत्कृष्ट पद में पांच अधिक कहना. जैसे चार पुद्गलास्तिकाय प्रदेश में जघन्य दश उत्कृष्ट बावीस

वीसाए, उक्कोसपदे सीयालीसाए, दसपोग्गल० जहण्णपदे बावीसाए उक्कोसपदे बावण्णाए ॥ आगासत्थिकाय० सव्वत्थ उक्कोसगं भाणियव्वं ॥ १५ ॥ संखेज्जाणं भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पदेसा केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पदेसेहिं पुच्छा ? जहण्णपदे तेणेव संखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं उक्कोसपदे तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवा हिएणं ॥ केवइएहिं अहम्मत्थिकाएहिं ?, एवं चेव । केवइएहिं आगासत्थिकाय तेणेवं संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं ॥ केवइएहिं जीवत्थिकाय ? अणतेहिं, केवइएहिं पोग्गलत्थिकाय ? अणंतेहिं ॥ केवइएहिं अद्धासमएहिं ? सियपुट्ठे सिय णो पुट्ठे जाव

पांच पुद्गलास्तिकाय प्रदेश में जघन्य बारह उत्कृष्ट सत्तावीस, छ पुद्गलास्तिकाय प्रदेश में जघन्य चउदह उत्कृष्ट बत्तीस, सात में जघन्य सोलह उत्कृष्ट सेंतीस, आठ में जघन्य अठारह उत्कृष्ट बियालीस, नव में जघन्य बीस उत्कृष्ट सेंतालीस, दश में जघन्य बावीस उत्कृष्ट बावन, आकाशास्तिकाय सब में उत्कृष्ट कहना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! संख्यात पुद्गलास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश से स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य संख्यात को दुगुना करके उस में दो अधिक कर उतने प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं. उत्कृष्ट संख्यात को पांचगुने करके दो अधिक करे उतने प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं. अधर्मास्तिकाया का वैसे ही जानना. आकाशास्तिकायाका उत्कृष्ट संख्यातको पांचगुने करके दो अधिक कहना. जीवास्तिकायके अनंत प्रदेश

अणंतेहिं ॥ १६ ॥ असंखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पदेसा केवइएहिं धम्मत्थिकाय पदेसेहिं ? जहण्णपदे तेणेव असंखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपदे तेणेव असंखेज्जएणं, पंचगुणएणं दुरूवाहिएणं सेसं जहा संखेज्जाणं जाव णियमं अणंताहिं ॥ अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पदेसा केवइएहिं धम्मत्थिकाय एवं जहा असंखेज्जा तहा अणंता, णिरवसेसं ॥ १७ ॥ एगे भंते ! अद्धासमए केवइएहिं धम्मत्थिकायप्प-देसेहिं पुट्ठे ? सत्तहिं, केवइएहिं अहम्मत्थि० एवं चेव ॥ एवं आगासत्थिकाय-

पुद्गलास्तिकाय के अनंत और काल क्वचित् स्पर्शता है और क्वचित् नहीं स्पर्शता है. जब स्पर्शता है तब अनंत स्पर्शता है. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! असंख्यात पुद्गलास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश से स्पर्शे हुवे हैं? अहो गौतम! जघन्य पद से असंख्यात को दोगुने करके दो अधिक करे उतने और उत्कृष्ट पद में असंख्यात को पांच गुने करके दो अधिक करे उतने शेष सब संख्यात जैसे कहना. जैसे असंख्यातका कहा वैसे ही अनंत का जानना ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! एक अद्धा[१] समय कितने धर्मास्तिकाया के प्रदेशों से स्पर्शा है? अहो गौतम ! एक अद्धा समय सात धर्मास्तिकाय प्रदेश को स्पर्शा है. काल मात्र अढाइद्वीप में होने से धर्मास्तिकाया की कोन में होता है इस से जघन्य पद यहां नहीं है. अद्धा समय विशिष्ट

१ यहां वर्तमान समय विशिष्ट क्षेत्रवर्ती परमाणु का अद्धासमय ग्रहण करना.

प्पएसेहिं ॥ केवइएहिं जीवत्थिकाय० अणंतेहिं, एवं जाव अद्धासमएहिं ॥ १८ ॥ धम्मत्थिकाएणं भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकाय पदेसेहिं पुट्ठे ? णत्थि एक्केणवि ॥ केवइएहिं अहम्मत्थिकायप्पदेसेहिं? असंखेज्जेहिं, केवइएहिं आगासत्थिकायपदेसेहिं ? असंखेजेहिं ॥ केवइएहिं जीवत्थिकायपदेसेहिं ? अणतेहिं ॥ केवइएहिं पोग्गलत्थिकाय० अणंतेहिं ॥

परमाणु द्रव्य एक धर्मास्तिकाय प्रदेश को अवगाह कर रहा है वह और अन्य छ दिशि के छ प्रदेश यों सात को स्पर्शा है. ऐसे ही अधर्मास्तिकाय व आकाशास्तिकाय का जानना. जीवास्तिकाय के अनंत प्रदेश स्पर्शे, क्यों की एक प्रदेश में अनंत जीव कहे हैं. पुद्गलास्तिकाय के अनंत प्रदेश से स्पर्शा हुवा है व अद्धासमय अनंत स्पर्शा हुवा है. ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! संपूर्ण धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश से स्पर्शी हुई है ? अहो गौतम ! एक भी प्रदेश को नहीं स्पर्शी हुइ है क्यों की यहां संपूर्ण धर्मास्तिकाय ग्रहण कर प्रश्न किया है. इस से वाहिर किंचिन्मात्र धर्मास्तिकाय नहीं है. अहो भगवन् ! कितने अधर्मास्तिकाय के प्रदेश से स्पर्शी हुई है ? अहो गौतम ! असंख्यात अधर्मास्तिकाय के प्रदेश से स्पर्शी हुई है. क्यों की जितनी लोकव्यापक धर्मास्तिकाय है उतनी ही लोकव्यापक अधर्मास्तिकाय है और उस के प्रदेश असंख्यात कहे हैं आकाशास्तिकाय के असंख्यात प्रदेश से स्पर्शी हुई है क्यों की लोक व्यापक आकाशास्तिकाय असंख्यात प्रदेशात्मक है. जीवास्तिकाय के अनंत प्रदेश

अद्धासमए सिय पुट्ठे सिय णो पुट्ठे, जइ पुट्ठे णियमा अणंतेहिं ॥ १९ ॥ अहम्मत्थिकाएणं भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकाय० ? असंखेज्जेहिं, केवइएहिं अहम्मत्थि० ? णत्थि एक्केणवि, सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ एवं एएणं गमएणं सव्वे विसट्ठाणएणं णत्थि एक्केणवि पुट्ठा परट्ठाणेहिं आदिल्लएहिं तिहिं असंखेज्जएहिं भाणियव्वं ॥ पच्छिल्लएसु तिसु अणंता भाणियव्वा जाव अद्धा समओत्ति । केवइएहिं अद्धा समएहिं पुट्ठे ? णत्थि एक्केणवि ॥ २० ॥ जत्थणं भंते ! एगे धम्मत्थिकाय

से स्पर्शी हुई है क्यों की अनंत जीव के प्रदेश रहे हुवे हैं ऐसे ही पुद्गलास्तिकाय के भी अनंत प्रदेशों को स्पर्श कर रही है. अद्धा समय कदाचित् स्पर्शे कदाचित् स्पर्शे नहीं क्यों की अढाइ द्वीप में ही मात्र काल रहा हुवा है. जब स्पर्शता है तब निश्चय ही अनंत प्रदेश से स्पर्शता है. ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! अधर्मास्तिकाय कितने धर्मास्तिकाय के प्रदेश से स्पर्शी हुई है ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेश से अधर्मास्तिकाय से स्पर्शी हुइ है. शेष सब धर्मास्तिकाया जैसे जानना. इस क्रम से आकाशास्तिकाय यावत् अद्धा समय तक कहना. अपने स्थान आश्री अपना स्थान को एक भी नहीं स्पर्शे हुवे हैं, पर स्थान आश्री पहिले के तीन असंख्यात और पीछे के तीन के अनंत प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं यावत् अद्धा समय अद्धा समय से एक भी नहीं स्पर्शा हुआ है ॥ २० ॥ अब अवगाहना द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! जहां धर्मास्तिकाया

पदेसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ? णत्थि एक्कोवि, केवइया अहम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा एक्को, केवइया आगासत्थि कायपदेसा ओगाढा ? एक्को ॥ केवइया जीवत्थिकायपदेसा ? अणंता ॥ केवइया पोग्गलत्थिकाय पदेसा ? अणंता ॥ केवइया अद्धा समया ? सिय ओगाढा सिय णो ओगाढा जइ ओगाढा अणंता ॥ २१ ॥ जत्थणं भंते ! एगे अहम्मत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ? एक्को ॥ केवइया अहम्मत्थि ? णत्थि

का एक प्रदेश अवगाहकर रहा है वहां धर्मास्तिकाया के अन्य कितने प्रदेश अवगाहकर रहे हैं? अहो गौतम! एक भी प्रदेश अवगाहकर रहे नहीं हैं. अहो भगवन्! कितने अधर्मास्तिकाया के प्रदेश अवगाहकर रहे हैं ? अहो गौतम! एक प्रदेश. अहो भगवन्! कितने आकाशास्तिकायके प्रदेश अवगाहकर रहे हैं ? अहो गौतम एक अहो भगवन्! जावास्तिकाया के कितने प्रदेश अवगाहकर रहे हैं? अहो गौतम! अनंत प्रदेश, पुद्गलास्ति काय के भी अनंत प्रदेश. अद्धा समय के समय क्षेत्र आश्री अवगाहकर रहे हुवे हैं और समय क्षेत्र बाहिर अवगाहकर नहीं रहे हुवे हैं जब रहे हुवे हैं तब अनंत अद्धा समय अवगाहकर रहे हुवे हैं. ॥२१॥ अहो भगवन् ! जहां एक अधर्मास्तिकाया का प्रदेश अवगाहकर रहा हुवा है वहां कितने धर्मास्तिकाय के प्रदेश अवगाहकर रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक प्रदेश. अधर्मास्तिकायाका एक भी प्रदेश

एक्कोवि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स॥ २२ ॥ जत्थणं भंते! एगे आगासत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ? सिय ओगाढा सिय णो ओगाढा, जइ ओगाढा एक्को, एवं अहम्मत्थिकाय पदेसावि, ॥ केवइया आगासत्थिकाय ? णत्थि एक्कोवि ॥ केवइया जीवत्थि ? सिय ओगाढा सिय णो ओगाढा, जइ ओगाढा-अणंता ॥ एवं जाव अद्धा समया ॥ २३ ॥ जत्थणं भंते ! एगे जीवत्थिकाय पदेसे तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय ? एक्को, एवं अहम्मत्थिकाय पदेसावि ॥ एवं आगासत्थि-

नहीं है. शेष सब धर्मास्तिकाय जैसे कहना.॥२२॥ अहो भगवन्! जहां आकाशास्तिकायाके प्रदेश अवगाहकर रहे हैं. वहां कितने धर्मास्तिकाया के प्रदेश अवगाहकर रहे हैं? अहो गौतम! क्वचित् अवगाहकर रहे हैं और क्वचित् अवगाहकर नहीं रहे हैं जब अवगाहकर रहे हुवे हैं तब एक प्रदेश अवगाहकर रहा हुवाहै. ऐसेही अधर्मास्तिकायाका जानना आकाशास्तिकाया का एक भी प्रदेश अवगाह कर नहीं रहा हुवा है. जीवास्तिकाया के क्वचित् अवगाहकर रहे हैं क्वचित् नहीं हैं जब हैं तब अनंत अवगाहकर रहे हैं ऐसे ही अद्धा समय तक जानना. ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! जहां एक जीवास्तिकाय का प्रदेश है वहां कितने धर्मास्तिकाया के प्रदेश हैं ? अहो गौतम ! एक प्रदेश है, ऐसे ही अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय के भी एक २ प्रदेश हैं

काय पदेसावि ॥ केवइया जीवत्थिकाय ? अणंता, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स॥२४॥ जत्थणं भंते ! पोग्गलत्थिकाय पदेसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय ? एवं जहा जीवत्थिकाय पदेसे तहेव णिरवसेसं ॥ जत्थणं भंते ! दो पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थणं केवइया धम्मत्थिकाय सिय एक्को, सिय दोण्णि, एवं अहम्मत्थिकायस्सवि ॥ एवं आगासत्थिकायस्सवि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ जत्थणं भंते ! तिण्णि पोग्गलत्थिकायप्पएसा ओगाढा तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय पदेसा ओगाढा ?

जीवास्तिकाय के अनंत प्रदेश अवगाहकर रहे हैं शेष सब धर्मास्तिकाय जैसे जानना. ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! जहां पुद्गलास्तिकाय का प्रदेश अवगाह कर रहा हुवा है वहां कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! जैसे जीवास्तिकाय का कहा वैसे ही यहां कहना. अहो भगवन् ! दो पुद्गलास्तिकाय के प्रदेश जहां अवगाहकर रहे हैं वहां कितने धर्मास्तिकाय के प्रदेश अवगाह कर रहते हैं ? अहो गौतम ! क्वचित् एक व क्वचित् दो प्रदेश अवगाह कर रहते हैं. ऐसे ही अधर्मास्तिकाय व आकाशास्तिकाया का जानना. शेष सब धर्मास्तिकाया जैसे कहना. अहो भगवन् ! जहां तीन पुद्गलास्तिकाय प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं वहां कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! क्वचित् एक, क्वचित् दो, व क्वचित् तीन. ऐसे ही अधर्मास्तिकाय व आकाशास्तिकाया का जानना.

सिय एक्को, सिय दोण्णि, सिय तिण्णि ॥ एवं अहम्मत्थिकायस्सवि ॥ एवं आगासत्थि कायस्सवि सेसं जहेव दोण्हं ॥ एवं एक्केक्को वड्डेयव्वो पएसो आदिल्लेहिं तिहिं अत्थि-काएहिं सेसेहिं जहेव दोण्हं जाव दसण्हं सिय एक्को, सिय दोण्णि, सिय तिण्णि जाव सिय दस ॥ संखेज्जाणं सिय एक्को, सिय दोण्णि जाव सिय दस, सिय संखेज्जा ॥ असंखे-ज्जाणं सिय एक्को जाव सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा, जहा असंखेज्जा, एवं अणंतावि ॥२५॥ जत्थणं भंते ! एगे अद्धासमए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायप्पदेसा ?

शेष जैसे दो पुद्गलास्तिकाय प्रदेश का कहा वैसे ही कहना. इसी तरह धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय व आकाशास्तिकाय इन तीन में एक २ बढाना और शेष तीन में दो पुद्गलास्तिकाय प्रदेश जैसे कहना. इस तरह चार पांच यावत् दश तक कहना. दश पुद्गलास्तिकाय प्रदेश में क्वचित् एक, क्वचित् दो, क्वचित् तीन यावत् क्वचित् दश धर्मास्तिकाय प्रदेश कहे हुवे हैं. ऐसे ही अधर्मास्तिकाय व आकाशास्तिकाय का जानना. शेष तीन के अनंत प्रदेश कहना. संख्यात पुद्गलास्तिकाय में क्वचित् एक, क्वचित् दो यावत् क्वचित् दश क्वचित् संख्यात कहना. असंख्यात में क्वचित् असंख्यात तक कहना. असंख्यात जैसे अनंत पुद्गलास्तिकाय प्रदेश का कहना ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! एक अद्धा समय में कितने धर्मास्तिकाय

एक्को, केवइया अहम्मत्थिकाय० ? एक्को, केवइया आगासत्थिकाय० ? एक्को, केवइया जीवात्थि० ? अणंता ॥ एवं जाव अद्धासमया ॥ २६ ॥ जत्थणं भंते ! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मात्थिकायपदेसा ओगाढा? णात्थि एक्कोवि, केवइया अहम्मत्थि? असंखेज्जा, केवइया आगासत्थि? असंखेज्जा, केवइया जीवात्थिकाय? अणंता॥ एवं जाव अद्धासमया ॥ २७ ॥ जत्थणं भंते ! अहम्मात्थिकाए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय० ? असंखेज्जा, केवइया अहम्मत्थि० णत्थि एक्कोवि, सेसं

प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक, अधर्मास्तिकाय एक, आकाशास्तिकाय एक, जीवास्तिकाय अनंत, पुद्गलास्तिकाय अनंत, और अद्धा समय अनंत तक कहना ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! जहां संपूर्ण धर्मास्तिकाय अवगाह कर रही है वहां कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक भी प्रदेश अवगाह कर नहीं रहे हुवे हैं, अधर्मास्तिकाया के असंख्यात प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं, आकाशास्तिकाया के असंख्यात प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय व अद्धा समय के अनंत प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! जहां अधर्मास्तिकाया है वहां पर धर्मास्तिकाया के कितने प्रदेश हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेश हैं. अधर्मास्ति-

जहा धम्मत्थिकायस्स, एवं सव्वे सट्ठाणे णत्थि एक्कोवि भाणियव्वं, परट्ठाणे आदिल्ला तिण्णि असंखेज्जा भाणियव्वा, पच्छिल्ला तिण्णि अणंता भाणियव्वा जाव अद्धा समओत्ति, जाव केवइया अद्धा समया ओगाढा ? णत्थि एक्कोवि ॥ २८ ॥ जत्थणं भंते ! एगे पुढवीकाइए ओगाढे तत्थणं केवइया पुढवीकाइया ओगाढा ? असंखेज्जा. केवइया आउकाइया ओगाढा ? असंखेज्जा, केवइया तेऊकाइया ओगाढा ? असंखेज्जा, केवइया वाऊकाइया ओगाढा ? असंखेज्जा, केवइया वणस्सइ काइया ओगाढा ? अणंता ॥ २९ ॥ जत्थणं भंते ! एगे आउकाइए ओगाढे तत्थ केवइया पुढवी० ?

काया के एक भी प्रदेश नहीं हैं शेष सब धर्मास्तिकाय जैसे कहना. ऐसे ही सब को अपने स्थान में नहीं हैं वैसा कहना और अन्य स्थान में पहिले के तीन के प्रदेश असंख्यात कहना और पीछे के तीन के प्रदेश अनंत कहना. यों अद्धासमय तक कहना ॥ २८ ॥ अब जीव अवगाहना द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! जहां एक पृथ्वीकायिक अवगाहित है वहां कितने अन्य पृथ्वीकायिक अवगाहित हैं ? अहो गौतम ! एक पृथ्वीकायिक अवगाह में असंख्यात पृथ्वीकायिक अवगाहित हैं. अहो भगवन् ! कितने अप्कायिक अवगाहित हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात अप्कायिक अवगाहित हैं, ऐसे ही असंख्यात

असंखेज्जा. केवइया आऊ० ? असंखेज्जा, एवं जहेव पुढवीकाइयाणं वत्तव्वया तहेव सव्वे णिरवसेसं भाणियव्वं जाव वणस्सइ काइयाणं जाव केवइया वणस्सइ काइया ओगाढा ? अणंता ॥ ३० ॥ एयंसिणं भंते ! धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकायंसि चक्किया केइ आसइत्तएवा, सुइत्तएवा, चिट्ठित्तएवा, णिसियत्तएवा, तुयट्टित्तएवा? णो इणट्ठे समट्ठे, अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ- एयंसिणं, धम्मत्थि जाव आगासत्थिकायंसि णो चक्किया केइ आसइत्तएवा जाव ओगाढा ? गोयमा ! से जहा णामए कूडागारसाला सिया दुहओलित्ता गुत्ता

तेउकायिक असंख्यात वायुकायिक व अनंत वनस्पतिकायिक अवगाहित हैं ॥ २९ ॥ जहां एक अपूकायिक अवगाहित है वहां कितने पृथ्वीकायिक अवगाहित है ? अहो गौतम ! असंख्यात पृथ्वीकायिक अवगाहित हैं असंख्यात अपूकायिक यों सब पृथ्वीकाया जैसे कहना. ऐसे ही तेउ, वायु व वनस्पतिका जानना ॥ ३० ॥ अब अस्तिकाय प्रदेश निषेधन द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! इन धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय व आकाशास्तिकाय में क्या कोई बैठने को, सोने को, खडा रहने को, चलने को, व त्रायण [रक्षण] करने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् समर्थ नहीं है. और भी वे

गुत्तदुवारा जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइं पिहेंति दुवार० तीसेय कूडागार सालाए बहुमज्झदेसभाए जहण्णेणं एकोवा, दोवा, तिण्णिवा, उक्कोसेणं पदीवसहस्सं पलीवेज्जा, सेणूणं गोयमा! ताओ पदीवलेस्साओ अण्णमण्ण संबद्धाओ अण्णमण्ण पुट्ठाओ जाव अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति? हंता चाक्कियाणं गोयमा! केइ तासु पदीव लेस्सासु आसइत्तएवा जाव तुयट्टित्तएवा ? भगवं णो इणट्ठे समट्ठे, अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव ओगाढा ॥ ३१ ॥ कहिण्णं भंते !

अनंत जीव अवगाह कर रहे हुवे हैं. अहो भगवन्! ऐसा क्यों कहा कि धर्मास्तिकाया यावत् आकाशास्तिकाय में सोने को यावत् रक्षण करने को समर्थ नहीं है क्यों कि अनंत जीव वहां अवगाह कर रहे हुवे हैं? अहो गौतम! जैसे कोई एक कूटाकारशाला है, वह दोनों तरफ से लिप्त होवे, गुप्त द्वारवाली होवे वगैरह रायप्रसेणी सूत्र में कहे जैसी होवे. अब कोई पुरुष उस के द्वार बंध कर देवे और उस में एक, दो यों सहस्र दीपक करे. अहो गौतम! क्या उन प्रदीप का तेज परस्पर स्पर्शे? हां भगवन्! उन प्रदीप का तेज परस्पर संबद्ध होवे. अहो गौतम! उक्त दीपक के प्रकाशपर कोई बैठने को यावत् सोने को क्या समर्थ होवे? अहो भगवन्! ऐसा नहीं हो सके क्यों अनंत जीव वहां अवगाह कर रहे हुवे हैं. अहो गौतम! इसी से ऐसा कहा गया है कि यावत् अनंत जीव अवगाह कर रहे हुवे हैं ॥ ३१ ॥ अब बहुसम

लोए बहुसमे, कहिण्णं भंते ! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ? गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिलेसु खुड्डगपयरेसु एत्थणं लोए बहुसमे एत्थणं लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ॥ ३२ ॥ कहिण्णं भंते ! विग्गह विग्गहिए लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! विग्गहकंडए, एत्थण विग्गह विग्गहिए पण्णत्ते ॥ ३३ ॥ किं संठिएणं भंते ! लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! सुप्पइट्ठिय संठिए लोए पण्णत्ते. हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अंतं करेंति ॥ ३४ ॥ एयस्सणं

द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! किस स्थान लोक बराबर सम है और किस स्थान सब से संकुचित है ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की उपर व नीचे की क्षुद्रक प्रतर में लोक बहुत सम है. यहां हानि वृद्धि नहीं हैं और वहां पर ही लोक सब से संकुचित है ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! कहां पर लोक का शरीर वांका है ? अहो गौतम ! ब्रह्म नामक पांचवे देवलोक की उपर जहां प्रदेश की हानि वृद्धि है वहां प्रायः लोकान्त होता है और वहांपर लोक का शरीर वक्र है ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! किस आकारवाला लोक रहा हुवा है ? अहो गौतम ! सुप्रतिष्ठित लोक रहा हुवा है. अर्थात् सरावले के आकार मे लोक रहा हुवा है. वह नीचे से विस्तीर्ण, मध्य में संक्षिप्त वगैरह जैसे सातवे शतक के प्रथम उद्देशे में लोक का वर्णन किया वैसे कहना यावत् अंत करते हैं ॥ ३४ ॥ अधो लोक, ऊर्ध्व लोक व मध्य लोक

भंते ! अहे लोयस्स तिरिय लोअस्स, उड्ढलोयस्सय कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे तिरियलोए उड्ढलोए असंखेज्ज गुणे, अहे लोए विसेसाहिए॥सेवं भंते भंतेत्ति तेरसमसयस्सय चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो॥ १३-४॥ णेरइयाणं भंते! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, मीसाहारा, ? गोयमा ! णो सचित्ताहारा अचित्ताहारा, णो मीसाहारा ॥ एवं असुर कुमारा पढमो णेरइय उद्देसओ णिरवसेसओ भाणियव्वो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तेरसम सयस्सय पंचमो उद्देसो सम्मत्तो॥ १३॥ ५॥

इन तीन में कौन किस से अल्प यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से छोटा तीर्च्छा लोक, उस से ऊर्ध्व लोक असंख्यातगुना उस से अधो लोक विशेषाधिक. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह तेरहवा शतक का चतुर्थ उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १३ ॥ ४ ॥

अहो भगवन् ! क्या नारकी सचित्त का आहार करनेवाले हैं. अचित्त का आहार करनेवाले हैं या मीश्र का आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! नारकी सचित्त व मीश्र का आहार नहीं करते हैं परंतु अचित्त का आहार करते हैं. ऐसे ही असुर कुमारादि सब का कथन प्रथम नरकउद्देशा जैसे जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह तेरहवा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १३ ॥ ५ ॥

रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले सं० अंतर सहित भं० भगवन् णे० नारकी उ० उत्पन्न होते हैं नि० निरंतर णे० नारकी उ० उत्पन्न होते हैं गो० गौतम सं० अंतर सहित णे० नारकी उ० उत्पन्न होते हैं णि० निरंतर णे० नारकी उ० उत्पन्न होते हैं ए० ऐसे अ० असुर कुमार ए० ऐसे ज० जैसे गं० गांगेय त० तैसे दो० दो दं० दंडक जा० यावत् सं० अंतर सहित वे० वैमानिक च० चवते

रायगिहे जाव एवं वयासी-संतरं भंते ! णेरइया उववज्जंति, णिरंतरं णेरइया उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि णेरइया उववज्जंति, णिरंतरंपि णेरइया उववज्जंति, ॥ एवं असुरकुमारावि ॥ एवं जहा गंगेए तहेव दो दंडगा जाव संतरंपि वेमाणिया चयंति

पांचवे उद्देशे में नरक की वक्तव्यता कही. और छठे उद्देशे में उस का ही कथन कहते हैं. राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदन नमस्कार कर गौतम स्वामी पुछने लगे कि अहो भगवन् ! नेरये अंतर सहित उत्पन्न होते हैं या निरंतर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी नेरये उत्पन्न होते हैं और निरंतर भी नेरये उत्पन्न होते हैं. जैसे नरक की वक्तव्यता कही वैसे ही असुरकुमारादि सब की नववे शतक के बतीसवे उद्देशे में गांगेय अनगार की वक्तव्यता में उत्पत्ति उद्वर्तन भेद के दो दंडक कहे वैसे ही यहां कहना यावत् अंतर सहित वैमानिक चवते हैं और निरंतर भी

हैं णि० निरंतर वे० वैमानिक च० चवते हैं ॥ १ ॥ क० कहां भं० भगवन् च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का च० चमर चंचा आ० आवास प० प्ररूपा गो० गौतम जं० जंबूद्वीप में मं० मंदर प० पर्वत की दा० दक्षिण में अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र ए० ऐसे ज० जैसे बि० दूसरा शतक में स० सभा उ० उद्देशा में व० वक्तव्यता स० सर्व अ निर्विशेप णे० जानना ण० विशेप इ० यह णा० विशेष जा० यावत् ति० तिगिच्छकूट के उ० उत्पात प० पर्वत की च० चमर चंचा रा० राज्यधानी च०

णिरंतरंपि वेमाणिया चयति ॥ १ ॥ कहिण्णं भंते ! चमररस्स असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचा णामं आवासे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं असंखेज्जे दीवसमुद्दे एवं जहा बितियसए सभाउद्देसए वत्तव्वया सव्वेव अपरिसेसा णेयव्वा, णवरं इमं णाणत्तं जाव तिगिच्छि कूडस्स उप्पायपव्वयस्स चमर चंचा रायहाणी चमरचंचस्स आवास पव्वयस्स अण्णेसिंच वहूणं सेसं तंचेव जाव

वैमानिक चवते हैं ॥१॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र का चमरचंचा नामक आवास कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप मेरुपर्वत की दक्षिण में असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जावे इत्यादि सब कथन दूसरे शतक के आठवे सभा उद्देशे में जैसे कहा वैसे सब ही यहां जानना यहां पर इतना विशेष जानना कि तिगिच्छकूट, उत्पात पर्वत, चमरचंचा राज्यधानी, चमरचंचा आवास पर्वत और अन्य भी बहुत

चमर चंचा आ० आवास प० पर्वत की अ० अन्य न० बहुत से० शेषं तं० तैसे जा० यावत् ते० तेरह
अं० अंगुल अ० अर्ध अंगुल किं० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि ती० उस च० चमर चंचा रा०
राज्यधानी की दा० नैऋत्य कोन में छ० छ को० क्रोड स० शत प० पंचावन को० क्रोड प० पेंतीस स०
लाख प० पच्चास स० सहस्र अ० अरुणोदक स० समुद्र में ति० तीच्छी वी० उल्लंघन करे ए० तहां च०
चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का च० चमर चंचा आ० आवास प० प्ररूपा च० चौरासी

तेरसय अंगुलाइं अद्धंगुलं किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेणं ॥ तीसेणं चमर
चंचाए रायहाणीए दाहिणपच्चत्थिमेणं छक्कोडिसए पण्णपण्णेच कोडीओ पणतीसंच
सयसहस्सा पण्णासंच सहस्साइं अरुणोदगसमुद्दे तिरियं वीतीवइत्ता, एत्थणं चमरस्स
असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचा णामं आवासे पण्णत्ते, चउरासीइं जोअणसहस्साइं
आयामविक्खंभेणं दोजोअणसयसहस्सा पण्णट्ठिंच सहस्साइं छच्च बत्तीसे जोअणसए

वगेरह शेष पूर्वोक्त जैसे कहना यावत् तीन लाख, सोलह हजार दोसो वत्तीस योजन, तीन कोस दोसो अठा-
वीस धनुष्य साढे तेरह अंगुल से कुछ अधिक परिधि कही. उस चमरचंचा राज्यधानी की नैऋत्य कौन
में ६५५३५५०००० योजन अरुणोदय समुद्र में तीच्छी जावे वहां चमर असुरेन्द्र का चमरचंचा
आवास कहा है. वह चौरासी हजार योजन का लम्बा चौडा कहा है, दो लाख पेंसठ हजार छसो वत्तीस

जो० योजन स० सहस्र आ० लंबा वि० चौडा दो० दो जो० योजन स० लाख प० पेंसठ स० सहस्र छ० छ ब० बत्तीस जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि ए० एक पा० कोट स० चारों बाजु स० घेराया हुवा पा० कोट दि० देढ जो० योजन स० शत उ० ऊर्ध्व उ० उंचपने ए० ऐसे च० चमर चंचा रा० राज्यधानी व० वक्तव्यता भा० कहना स० सभा रहित जा० यावत् च० चार पा० प्रासाद पंक्ति ॥ २ ॥ च० चमर च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा च० चमर चंचा आ०

किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं ॥ सेणं एमाए पागारेणं सव्वओ समंता समंपरिक्खित्तं, सेणं पागारे दिवड्ढं जोअणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं ॥ एवं चमरचंचा रायहाणी वत्तव्वया भाणियव्वा सभाविहूणा जाव चत्तारि पासाय पंतीओ ॥ २ ॥ चमरेणं भंते ! असुरिंदे असुरराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेइ ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ सेकेणं खाइण्णं

योजन से किंचित् अधिक की परिधि कही है. उस की दिशा विदिशा की चारों तरफ एक कोट है. वह कोट १५० योजनका ऊंचा कहा है. इस प्रकार चमरचंचा राज्यधानी की वक्तव्यता कही. इस में सुधर्मा सभा, उपपात सभा, अभिषेक सभा, अलंकार सभा, और व्यवसाय सभा ये पांच सभाओं नहीं है. यावत् चार प्रासाद पंक्ति कही है, इन प्रासाद पंक्ति में ३४१ विमान कहे हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! चमर असुरेन्द्र चमरचंचा आवास में क्या बसकर रहता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं

आवास में व० वसति उ० रहे णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है च० चमर चंचा आ० आवास गो० गौतम से० अथ ज० जैसे इ० इस म० मनुष्य लोक में उ० प्रासाद पीठ सरिखे ले० गृह उ० उद्यान में ले० गृह णि० नगर बाहिर ले० गृह वा० वारिधारा जैसे ले० गृह त० तहां ब० बहुत म० मनुष्य म० मनुष्यणी आ० बैठते हैं स० सोते हैं ज० जैसे रा० रायप्रश्नीय में जा० यावत् क० कल्याण फ० फल वृत्ति वि० विशेष प० अनुभवते वि०

अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-चमरचंचे आवासे ? गोयमा ! से जहा णामए इहेव मणुस्सलोगंसि उवगारिय लेणाइवा उज्जाणियलेणाइवा, णिज्जाणियलेणाइवा, वारि धारियलेणाइवा, तत्थणं बहवे मणुस्साय मणुस्सीओय आसयंति सयंति जहा राय-प्पसेणइज्जे जाव कल्लाणफलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, अण्णत्थ पुण वसहिं

है. अर्थात् चमर असुरेन्द्र वहां नहीं रहता है. अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहते हो कि चमर चंचा आवास में चमर असुरेन्द्र नहीं रहता है ? अहो गौतम ! जैसे मनुष्यलोक में उपकार करनेवाले विश्रांति गृह होते हैं, उद्यान में बंगले, बगीचे वगैरह होते हैं. नगर से बाहिर नीकलते धर्मशाला वगैरह होते हैं, जलपानादि के लिये पो रहती है. वहां पर बहुत मनुष्य व मनुष्यणियों आश्रय करती हैं शयन करती हैं. इस का विस्तार पूर्वक कथन रायप्रश्रेणीय सूत्र से जानना यावत् कल्याण, फलवृत्ति

विचरते हैं अ० अन्यत्र व० वसति में उ० आते हैं ए० ऐसे गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का च० चमर चंचा आ० आवास के० केवल कि० क्रीडा र० रति प० निमित्त अ० अन्यत्र व० वसति को उ० जाते हैं से० वह ते० इसलिये जा० यावत् आ० आवास से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ ३ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर अ० एकदा रा० राजगृह न० नगर से गु० गुणशील से जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ ४ ॥ ते० उस काल

उवेंति, एवामेव गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे आवासे केवलं किड्डारतिपत्तियं अण्णत्थपुण वसहिं उवेति, से तेणट्ठेणं जाव आवासे सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरति ॥ ३ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइं रायगि-हाओ णयराओ गुणसिलाओ जाव विहरइ ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं

विशेष भोगते हुवे विचरते हैं. परंतु यहां पर निवास नहीं करते हैं. अहो गौतम! ऐसे ही चमर असुरेन्द्र चमर चंचा आवास में केवल क्रीडा व रति सुख भोगने को ही आता हैं. उन के निवास स्थान अन्य होते हैं. अहो गौतम! इसी कारन से चमर चंचा आवास कहे है. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर तप संयम से आत्मा को भावते हुवे भगवान् गौतम स्वामी विचरने लगे ॥ ३ ॥ फीर भगवान् महावीर स्वामी राजगृह नगर में से नीकलकर गुणशील उद्यान में से जनपद में विहार विचरने

ते० उस समय में चं० चंपा ण० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त पु० पूर्णभद्र चे० चैत्य व० वर्णन युक्त त० तत्र स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर अ० एकदा पु० अनुक्रम से च० चलते जा० यावत् वि० विचरते जे० जहां चं० चंपा नगरी जे० जहां पु० पूर्णभद्र चे० चैत्य ते० तहां उ० आकर जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ ५ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में सिं० सिंधु सौवीर ज० देश में वी० वीतिभय णा० नाम का ण० नगर हो० था व० वर्णन युक्त त० उस वी० वीतिभय ण० नगर की ब०

चंपा णामं णयरीहोत्था वण्णओ, पुण्णभद्दे चेइए वण्णओ, ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव विहरमाणे जेणेव चंपा णयरी। जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता जाव विहरइ ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सिंधुसोवीरेसु जणवएसु वीतिभयणामं णयरे होत्था वण्णओ॥ तस्सणं वीतिभयस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थणं मियवणे णामं

लगे ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में चंपा नाम की नगरी थी. पूर्णभद्र उद्यान था. उस समय में श्री श्रमण भगवन्त महावीर अनुक्रम से ग्रामानुग्राम विचरते हुवे चंपा नगरी के पूर्णभद्र उद्यान में यथा अवग्रह याचकर यावत् विचरने लगे ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में सिन्धु नदी के किनारे पर सौवीर नामक देश था. उस में वीतिभय नामक नगर था. वह वर्णन योग्य था. उस वीतिभय नामक नगर की

नाहि उ० ईशान कौन में मि० मृगवन उ० उद्यान हो० था स० सर्व उ० ऋतु व० वर्णन युक्त ए० इस वी० वीतिभय न० नगर में उ० उदायन रा० राजा हो० था य० बहुत व० वर्णन युक्त त० उस उ० उदायन र० राजा को प० पद्मावती दे० देवी हो० थी सु० सुकुमार व० वर्णन युक्त जा० यावत् वि० विचरती है त० उस उ० उदायन र० राजा का पु० पुत्र प० प्रभावती दे० देवी का अ० आत्मज अ० अभीचि कुमार हो० था सु० सुकुमार ज० जैसे सि० शिवभद्र कुमार जा० यावत् सि० शिवभद्र जा० यावत् प० अनुभवता वि० विचरता है त० उस उ० उदायन रा० राजा को णि० अपना भा० भाणजा

उज्जाणे होत्था. सव्वोउयवण्णओ ॥ एत्थणं वीतिभए णयरे उदायणे णामं राया होत्था महया वण्णओ ॥ तस्सणं उदायणस्स रण्णो पउमावई णामं देवी होत्था, सुकुमाल वण्णओ तस्सणं उदायणस्स रण्णो पभावती नामं देवी होत्था वण्णओ जाव विहरति ॥ तस्सणं उदायणस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए अभीइणामं कुमारे होत्था सुकुमाल जहा सिवभद्दे जाव पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥ तस्सणं उदायणस्स रण्णो णियए भायणिज्जे केसीणाम कुमारे होत्था, सुकु-

ईशान कौन में मृगवन नामक उद्यान था. वह सब ऋतु में वर्णन योग्य था. उस वीतिभय नामक नगर में वहां उदायन राजा रहता था, वह उदायन राजा महा हिमवंत पर्वत जैसा वर्णन योग्य था. उस उदायन राजा को पद्मावतीरानी थी. वह सुकुमार यावत् वर्णन योग्य थी. उस उदायन राजा को प्रभावती नाम की

के० केशीकुमार हो० था सु० सुकुमार जा० यावत् सु० सुरूप से० वह उ० उदायन रा० राजा सिं० सिंधु सो० सौवीर पं० प्रमुख सो० सोलह ज० देश का वी० वीतिभग पा० प्रमुख ति० तीन ते० तेसठ ण० नगर आ० आगार स० शत का म० महासेन पा० प्रमुख द० दश रा० राजा के ब० मुकुट बद्ध वि० विस्तीर्ण छ० छत्र चा० चामर वा० वालव्यंजन अ० अन्य ब० बहुत रा० राजा ई० ईश्वर त० तलवर जा० यावत् स० सार्थवाह प० प्रभृतिका आ० आधिपत्य पो० अग्रेसर पना जा० यावत् का० कराता पा०

माल जाव सुरूवे ॥ सेणं उदायणे राया सिंधुसोवीरप्पामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं वीइभयप्पामोक्खाणं तिण्हंतेसट्ठीणं णगरागरसयाणं, महसेणप्पामोक्खाणं दसण्हं राईणं बद्धमउडाणं, विदिण्णछत्त चामर बालवीयणाणं अण्णेसिंच बहूणं राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईण आहेवच्च पोरेवच्चं जाव कारेमाणे पालेमाणे समणोवासए अभिगय

दूसरी रानी थी वह वर्णन योग्य यावत् विचरती थी. उस उदायन राजा को प्रभावती रानी से उत्पन्न हुवा अभिचि कुमार था. वह सुकोमल हस्त पांववाला वगैरह शिवभद्र कुमार जैसा वर्णन योग्य यावत् राज्य की चिन्ता करता हुवा रहता था. उस उदायन राजा को केशी कुमार नाम का भाणजा था वह भी सुकुमार यावत् वर्णन योग्य था. वह उदायन राजा सिन्धु सौवीर प्रमुख सोलह देश व वीतिभय प्रमुख तीन सो त्रेसठ नगर और आगर का राजा था. विस्तीर्ण छत्र, चामर व वालव्यंजनवाले महासेन प्रमुख दश मुकुट

पालता म० श्रमणोपासक अ० जाने जी० जीव अजीव जा० यावत् वि० विचरता है ॥ ६ ॥ त० तब से० वह उ० उदायन रा० राजा अ० एकदा जे० जहां पो० पौपध शाला ते० तहां उ० आकर ज० जैसे सं० शंख जा० यावत् वि० विचरता है त० तब त० उस उ० उदायन र० राजा को पु० पूर्व र० रात्रि में ध० धर्म जा० जागरणा जा० जागते अ० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ध० धन्य ते० उन गा० ग्राम आ० आगर न० नगर खे० खेड क० कर्वट म०• मडंव दो० द्रोण मुख प० पाटन आ० आश्रम सं० संवाह सं०सन्निवेश ज० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर वि० विचरते हैं ध० धन्य ते० वे रा०

जीवाजीवे जाव विहरइ ॥ ६ ॥ तएणं से उदायणे राया अण्णयाकयाइं जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता जहा संखे जाव विहरइ ॥ तएणं तस्स उदायंणस्स रण्णो पुव्वरत्तावरत्त काल समयंसि धम्मं जागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था धण्णाणं ते गामागरनगरखेडकब्बड मडंवदोणमुहपट्टणासमसंवाहसंण्णिवेसा जत्थणं समणे भगवं महावीरे

बंध राजा और इन सिवाय अन्य अनेक राजेश्वर, तलवर, सार्थवाह आदि का आधिपतिपना करता हुवा श्रमणोपासक बनकर जीवाजीव का स्वरूप जानता हुवा विचरता था ॥ ६ ॥ एकदा वह उदायन राजा पौपधशाला में शंख श्रमणोपासक जैसे पौषध करते विचरने लगा. वहां पर पूर्वरात्रि में धर्म जागरणा

राजा ई० ईश्वर त० तलवर जा० यावत् स० सार्थवाह प० प्रमुख जे० जो स० श्रमण भ० भगवन्त म०
महावीर को वं० वंदते हैं ण० नमस्कार करते हैं जा० यावत् प० पर्युपासना करते हैं ज० जो स०
श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर पु० पूर्वानुपूर्व च० चलते गा० ग्रामानुग्राम वि० विचरते इ० यहां आ०
आवे इ० यहां स० पधारे इ० यहां वी० वीतिभय ण० नगर की ब० बाहिर मि० मृगवन उ० उद्यान में
अ० यथा प्रतिरूप उ० आज्ञा उ० ग्रहणकर सं० संयम से जा० यावत् वि० विचरे त० तब अ० मैं स०

विहरइ, धण्णाणं ते राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईओ जेणं समणं भगवं
महावीरं वंदंति णमंसंति जाव पज्जुवासंति ॥ जइणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणु-
पुव्विं चरमाणे, गामाणु जाव विहरमाणे, इह मागच्छेज्जा, इह समोसरेज्जा, इहेव
वीतिभयस्स णयरस्स बाहिया मियवणे उज्जाणे अहापाडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संज-

करते उदायन राजा को ऐसा अध्यवसाय हुवा कि जिस ग्राम, आगर, नगर, खेड, कर्वट, मंडप, द्रोण मुख,
पाटण, आश्रम, संवाह व सन्निवेश में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी विचरते हैं उन को धन्य है
और भी राजेश्वर यावत् सार्थवाह कि जो श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की वंदना, पूजा, नमस्कार
यावत् सेवा करते हैं उन को धन्य है. यदि श्रमण भगवंत ग्रामानुग्राम विचरते यहां वीतिभय नगर में
मृगवन उद्यान में यथा प्रतिरूप अवग्रह याचकर संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरे तो मैं

श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वांदू ण० नमस्कार करूं जा० यावत् प० पर्युपासना करूं ॥ ७ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर उ० उदायन र० राजा को अ० इसरूप अ० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा जा० जानकर चं० चंपा ण० नगरी के पु० पूर्णभद्र चे० चैत्य से प० नीकलकर पु० पूर्वानुपूर्व च० चलते गा० ग्रामानुग्राम जा० यावत् वि० विचरते जे० जहां सिं० सिंधु सो० सौवीर ज० देश वी० वीतिभद्र ण० नगर जे० जहां मि० मृगवन उ० उद्यान ते० तहां उ० आकर

समणं जाव विहरेज्जा, तओणं अहं समणं भगवं महावीरं वंदेज्जा णमंसेज्जा, जाव पज्जुवासेज्जा ॥ ७ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे उदायणस्स रण्णो अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव समुप्पण्णं विजाणित्ता; चंपाओ णयरीओ पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं जाव विहरमाणे जेणेव सिंधु-सोवीरे जणवये, जेणेव वीइभये णयरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ,

श्री श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करूं ॥ ७ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उदायन राजा का मनोगत संकल्प जानकर चंपा नगरी के पूर्णभद्र उद्यान में से नीकलकर पूर्वानुपूर्वी चलते ग्रामानुग्राम विचरते सिन्धु सौवीर प्रदेश में वीतिभय नगर के मृगवन उद्यान

जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ ८ ॥ त० तब वी० वीतिभय ण० नगर में सिं० शृंगाटक जा० यावत् प० परिषदा प० पर्युपासना करे ॥ ९ ॥ त० तब से० वह उ० उदायन रा० राजा इ० इस क० कथा को ल० प्राप्त होते ह० हृष्ट तु० तुष्ट को० कौटुम्बिक पुरुषों को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोला खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय वी० वीतिभय नगर को स० आभ्यंतर बा० बाह्य ज० जैसे कू० कूणिक उ० उववाइ में जा० यावत् प० पर्युपासना करे प० पद्मावती पा० प्रमुख दे० देवी त० तैसे प० पर्युपासना करे

उवागच्छइत्ता जाव विहरइ ॥ ८ ॥ तएणं वीइभये णयरे सिंघाडग जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ ९ ॥ तएणं से उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ तुट्ठ, कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीतिभयं णयरं सब्भितर बाहिरियं जहा कूणिओउववातिए जाव पज्जुवासइ, पउमावइ पामो-

भावार्थ में यथा प्रतिरूप अवग्रह याचकर यावत् विचरने लगे ॥ ८ ॥ तब वीतिभय नगर के शृंगाटक, त्रिक, चौक यावत् राज पथ मे लोकों एकत्रित होकर यावत् परिषदा पर्युपासना करने लगी ॥ ९ ॥ उस समय में उदायन राजाने यह बात सुनी और हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवा. कौटुम्बिक पुरुषों को बोलाकर ऐसा बोले. अहो देवानुप्रिय! वीतिभय नगर को आभ्यंतर व बाहिर सब सजाइ करो. वर्णन कूणिक राजा तरह यावत् वंदना नमस्कार सेवा करने लगा. और पद्मावती प्रमुख रानियों भी सेवा करने लगी. भगवंत श्री महा-

ध० धर्म कथा ॥ १० ॥ त० तब से० वह उ० उदायन रा० राजा स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तुष्ट उ० स्थान से उ० उठे उ० उठकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ति० तीनवक्त जा० यावत् ण० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोला ए० ऐसे ए० यह भं० भगवन् जा० यावत् से० वह ज० जैसे तु० तुम व० कहते हो त्ति० ऐसा करके जं० जो० ण० विशेष दे० देवानुप्रिय अ० अभीचि कुमार को र० राज्य में ठा० स्थापकर त० तब

क्खाओ देवीओ तहेव पज्जुवासति धम्मकहा ॥ १० ॥ तएणं से उदायणे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एवं वयासी एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! जाव से जहेयं तुज्झे वदह त्तिकट्टु जं, णवरं देवाणुप्पिया! अभीइ-कुमारं रज्जे ठावेमि तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामि ॥९॥

वीर स्वामीने उस महती परिषदा में धर्मकथा सुनाइ ॥ १० ॥ उस समय में उदायन राजा श्रमण भगवंत महावीर स्वामी से धर्म सुनकर हृष्ट तुष्ट हुवा. अपने स्थान से उठकर खडा हुवा और श्रमण भगवंत महा-वीर को हस्तद्वय जोडकर तीन आवर्त प्रदक्षिणा देकर बोला कि अहो भगवन्! जैसे तुम कहते हो वैसा है. विशेष में अभिचि कुमार को राज्य पर स्थापकर (राज्याभिषेक कर) के मैं आप की पास मुंड

अ० मैं दे० देवानुप्रिय की अं० पास मुं० मुंड भ० होकर जा० यावत् प० प्रव्रज्या अंगीकार करूं अ० यथा सुखं दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंध ॥११॥ त० तब से० वह उ० उदायन रा० राजा स० श्रमण भगवन्त म० महावीर से ए० ऐसा वु० बोलाते ह० हृष्ट तुष्ट स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर अ० अभिषेक ह० हस्ति पर दु० चढकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० पास से मि० मृगवन उ० उद्यान से प० नीकलकर जे० जहां वी० वीतिभय

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंधं ॥ ११ ॥ तएणं से उदायणे राया समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठे, समणं भगवं महावीरं वंदित्ता णमंसित्ता, तमेव अभिसेकहत्थिं दुरूहइ, दुरूहइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ मियवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता जेणेव वीइभए णयरे तेणेव पहारेत्थगमणाए ॥ तएणं तस्स उदायणस्स रण्णो अयमेयारूवे

वनकर यावत् दीक्षा अंगीकार करूंगा. अहो देवानुप्रिय ! तुम को जैसा सुख होवे वैसा करो विलंब मत करो ॥ ११ ॥ जब श्रमण भगवंत महावीरने उदायन राजा को ऐसा कहा तब वह बहुत हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवा और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कारकर वैसे ही अभिषेक हस्ति पर आरूढ होकर श्रमण भगवंत महावीर की पास से मृगवन उद्यान में से नीकल

ण० नगर में तं० तहां प० उद्यवन्त हुवा ग० जाने को त० तत्र उ० उस उ० उदायन र० राजा को अ० इमरूप अ० चितवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे अ० अभीचि कुमार म० मुझे ए० एक पु० पुत्र इ० इष्ट कं० कांत जा० यावत् पा० देखने को त० उस को ज० यदि अ० मैं अ० अभीचि कुमार को र० राज्य पे ठा० स्थापकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० पास मुं० मुंड भ० होकर जा० यावत् प० प्रव्रज्या अंगीकार करूं त० तब अ० अभीचि कुमार र०

आउझत्थिए जाव समुप्पज्जित्था- एवंखलु अभीइकुमारे मम एगे पुत्ते जाव किमंगपुण पासणयाए तं जइणं अहं अभीइकुमारं रज्जे ठावेत्ता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामि तओणं अभीइकुमारे रज्जेय रट्ठेय जाव जणवएय माणुस्सएसुय कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अणादीयं आणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कतारं अणुपरियट्टिस्सति ॥ तं णो खलु मे सेयं अभीइकुमारं

कर वीतिभय नगर में जाने को तैयार हुवा. उस समय में उदायन राजा को ऐसा अध्यवसाय हुवा कि अभिचिकुमार मेरा एक ही पुत्र है वह इष्टकारी कान्तकारी मनोज्ञ है. उस का दर्शन दुर्लभ है इसलिये यदि मैं अभिचिकुमार को राज्य पर स्थाप कर प्रव्रजित होऊंगा तो अभीचिकुमार राज्य में मनुष्य संबंधी काम भोगों में मूर्च्छित हो कर गृद्ध हो जायगा. इस तरह गृद्ध बनकर अनादि अनंत दीर्घ

राज्य में जा० यावत् ज० देश में मा० मनुष्य के का० काम भोग में मु० मूर्च्छित गि० गृद्ध ग० बंधाया हुवा अ० अध्यवसाय अ० अनादि अ० अनंत दी० दीर्घ काल चा० चातुरंत सं० संसार कंतार को अ० भ्रमण करेगा तं० इसलिये णो० नहीं मे० मुझे से० श्रेय अ० अभीचिकुमार को र० राज्य में ठ० स्थापकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की जा० यावत् प० प्रवर्ज्या अंगीकार करने को से० श्रेय मे० मुझे णि० अपना भा० भाणजा के० केशीकुमार को र० राज्य में ठा० स्थापकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की जा० यावत् प० प्रवर्ज्या अंगीकार करने को ए० ऐसा सं०

रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए, सेयं खलु मे णियगं भाइणिज्जं केसीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए, एवं संपेहेइ, संपेहेइत्ता जेणेव वीइभए णयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता वीइभयं णयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता अभिसेकं हत्थिं ठावेइ, अभिसेकाओ हत्थीओ पच्चोरुभइ,

चतुर्गतिक संसार में परिभ्रमण करेगा. इस से अभीचि कुमार को राज्याभिषेक कराके श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास प्रव्रजित होना मुझे श्रेय नहीं है परंतु केशी कुमार को राज्य देकर दीक्षा अंगीकार करना मुझे श्रेय है. ऐसा विचार कर वीतिभय नगर की मध्य बीच में होकर अपने गृह में

विचारकर जे० जहां वी० वीतिभय न० नगर ते० तहां उ० आकर वी० वीतिभय न० नगर की म० मध्य से जे० जहां स० अपना गे० गृह जे० जहां बा० बाहिर की उ० उपस्थान शाला ते० तहां उ० आकर अ० अभिषेक ह० हस्ति को ठा० स्थापकर अ० अभिषेक ह० हस्ति से प० उत्तर कर जे० जहां सी० सिंहासन ते० तहां उ० आकर सी० सिंहासनपे ते० पु० पूर्वाभिमुख से णि० बैठकर को० कौटुम्बिक पुरुषों को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोला खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय वी० वीतिभय न० नगर को स० आभ्यंतर बा० बाह्य जा० यावत् प० पीछीदेवे ॥ १२ ॥ त० तब से० वह उ० उदायन

पच्चोरुभइत्ता, जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता सीहासणवरंसि पुरच्छाभिमुहे णिसीयइ, णिसीयइत्ता, कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीइभयं णयरं सब्भिंतर बाहिरियं जाव पच्चप्पिणंति ॥ १२ ॥ तएणं से उदायणे राया दोच्चंपि कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता

उपस्थान शाला में आया. वहां अभिषेक के हस्ती को खडा कर के उस पर से उदायन राजा नीचे उतरा, और सिंहासन की पास जाकर उस पर पूर्वाभिमुख से बैठा. फीर कौटुम्बिक पुरुषों को बोलाकर ऐसा बोला कि अहो देवानुप्रिय वीतिभय नगर को अंदर व बाहिर सज्ज करो यावत् मुझे मेरी आज्ञा पीछी दो ॥ १२ ॥ उस समय में उदायन राजाने कौटुम्बिक पुरुषों को दूसरी वक्त बोलाये

रा० र.जा. दो० दूसरी वक्त को० कौटुम्बिक पुरुषों को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय के० केशी कु० कुमार का म० महा अर्थ वाला र० राज्याभिषेक ज० जैसे सि० शिवभद्र कुमार को त० तैसे भा० कहना जा० यावत् प० उत्कृष्ट आयुष्य पा० पालो इ० इष्ट जनसे सं० घेराये हुवे सि० सिंधु सो० सौवीर पा० प्रमुख सो० सोलह ज० देश वी० वीतिभय पा० प्रमुख ति० तीन ते० तेसठ ण० नगर आ० आगर स० शत म० महासेन पा० प्रमुख द० दश रा० राजा के अ० अन्य ब० बहुत रा० राजा ई० ईश्वर जा० यावत् का० करते पा० पालते वि० विचरो त्ति० ऐसा करके ज० जय

एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! केसिस्स कुमारस्स महत्थं एवं रायाभिसेओ जहा सिवभद्दस्स तहेव भाणियव्वो जाव परमाउं पालयाहिं, इट्ठजण संपरिवुडे सिंधुसोवीरप्पामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं वीइभयप्पामोक्खाणं तिण्णि तेसट्ठीणं णगरागरसयाणं महसेणप्पामोक्खाणं दसण्हं राईणं अण्णेसिंच बहूणं राईसर जाव कारेमाणे पालेमाणे विहराहि त्तिकट्टु जयजय सद्दं पउंजंति ॥ तएणं केसीकुमारे

र्थ और कहने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! केशीकुमार के लिये महाअर्थ वाला यावत् राज्याभिषेक करो. उस का वर्णन शिवभद्र जैसे जानना, यावत् परम आयुष्य पालो. इष्ट जनों साथ परवरे हुवे सिन्धु सौवीर प्रमुख सोलह देश, वीतिभय प्रमुख तीन सो त्रेसठ नगर का व महासेन प्रमुख दश राजा व अन्य अनेक राजेश्वर

जय स० शब्द प० प्रयुंजते त० तब के० केशी कुमार रा० राजा जा० हुवा म० बडे जा० यावत् वि० विचरता है ॥ १३ ॥ त० तब से० वह उ० उदायन रा० राजा के० केशी राजा को आ० पूछे त० तब ते० वह के० केशीराजा को० कौटुम्बिक पु० पुरुषों को स० बोलाकर ज० जैसे जं० जमाली का त० तैसे स० आभ्यंतर बा० बाह्य त० तैसे जा० यावत् नि० दीक्षा अ० अभिषेक उ० तैयार करे त० तब से० वह के० केशीराजा अ० अनेक ग० गण णा० नायक जा० यावत् सं० घेराया हुवा उ० उदायन रा० राजा को सी० सिंहासनपे पु० पूर्वमुख से नि० बैठाकर अ० आठ स० शत सो० सौवर्णिक ए० ऐसे ज० जैसे

राया जाए, महया जाव विहरइ ॥ १३ ॥ तएणं से उदायणे राया केसिं रायाणं आपुच्छइ ; ॥ तएणं से केसीराया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ एवं जहा जमालिस्स तहेव सब्भिंतर बाहिरियं तहेव जाव णिक्खमणाभिसेयं उवट्ठावेति तएण से केसी राया अणेगगणणायग जाव संपरिवुडे उदायणं रायं सीहासणवरंसि पुरच्छाभिमुहे

तलवर यावत् सार्थवाह का आधिपत्यपना करते हुए पालते हुए विचरो. यों कहकर जय जय शब्द बोलने लगे. फीर केशीकुमार राजा हुवे यावत् विचरने लगे ॥ १३ ॥ फीर उदायन राजाने केशी राजा को दीक्षा लेनेका पूछा. उस समयमें केशी राजाने कौटुम्बिक पुरुषोंको बोलाये और जिस प्रकार जमाली कुमार का दीक्षा उत्सव किया वैसा उत्सव करने लगे. तब केशी कुमार अनेक गणनायकों से परवरे हुवा उदा-

ज० जमाली का ए० ऐसा व० बोले भ० कहो सा० स्वामिन् किं० क्या दे० देवे किं० क्या प० विशेष
देवे कि० किस से ते० तुमारा अ० अर्थ त०तब से० वह उ० उदायन रा० राजा के० केशीराजा को ए०
ऐसा व० बोले इ० इच्छनाहूं दे० देवानुप्रिय कु० कुत्रिकाहाट से प० ऐसे ज० जैसे ज० जमाली का ण०
विशेष प० पद्मावती अ० अग्रकेश प० लेवे पि० प्रिय वि० वियोग दू० दूस्सह ॥ १४ ॥ त० तब से० वह
के० केशी रा० राजा दो० दूसरी वक्त उ० उत्तर मुख से सी० सिंहासन र० रचावे उ० उदायन राजा

निसियावेइ, निसियावेइत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं एवं जहा जमालिस्स एवं वयासी-
भण सामी किं देमो किं पयच्छामो किण्णा वा ते अट्ठे? तएणं से उदायणेराया केसिरायं
एवं वयासी- इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! कुत्तियावणाओ एवं जहा जमालिस्स, णवरं
पउमावई अग्गकेसे पडिच्छइ, पियविप्पओगओ दूसहा ॥ १४ ॥ तएणं से केसी राया
दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेइ, रयावेइत्ता उदायणं रायं सीयापीतएहिं कल

यन राजा को पूर्वाभिमुख से बैठाकर एक सो आठ सुवर्ण कलशादि से जमाली की तरह महोत्सव किया.
फीर केशी राजा बोले अहो स्वामिन् ! कहो कि आप को क्या देवे या आप को किस से प्रयोजन है?
तब उदायन राजा केशी राजा को ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! कुत्रिक की दुकान से ओघे पात्रे
वगैरह सब कथन जमाली जैसे कहना. विशेष में पद्मावतीने अग्रकेश लीये और प्रिय का वियोग से

को सी० श्वेत पी० पीत क० कलश से० शेष ज० जैसे ज० जमाली का जा० यावत् स० बैठे जा० यावत् अ० अंबाधात्री ण० विशेष प० पद्मावती हं० हंस लक्षण प० वस्त्र ग० ग्रहणकर से० शेष तं० तैसे जा० यावत् सि० शिबिकासे प० उतरकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ति० तीन वक्त आ० प्रदक्षिणा जा० यावत् वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर उ० ईशान कौन में अ० जाकर स० स्वयं आ० आभरण अ० अलंकार तं० तैसे जा० यावत् प० पद्मावती प० ग्रहण करे जा० यावत् घ० घटाना सा० स्वामिन् जा० यावत् णो० नहीं प० दुःखिनी हुइ ॥ १४ ॥

सेहिं सेसं जहा जमालिस्स जाव सण्णिसण्णं, तहेव अम्मधाई, णवरं पउमावई हंस-लक्खणं पडसाडणं गहाय सेसं तंचेव जाव सिबियाओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभइत्ता जे-णेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खत्तो जाव वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमइत्ता सयमेव आभरण मल्लालंकारं तंचेव जाव पउमावई पडिच्छइ जाव घडि-

पुनः केशी राजाने उत्तराभिमुख सिंहासन बनाकर उदायन राजा को बैठाये श्वेत व पीले कलशों से स्नान यावत् जमाली की तरह शिबिका में बैठाये. और अम्माधात्री पात्र लेकर बैठी. इतना विशेष कि पद्मावती रानी हंस समान श्वेत वस्त्र ग्रहण कर बैठी. और सब कथन पूर्वोक्त जैसे कहना. यावत् शिबिका में से उतरकर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास गये और श्रमण भग-

प्रमाद करना के० केशीराजा प० पद्मावती स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनकर ण० नमस्कारकर जा० यावत् प० पीछे गये ॥ १५ ॥ त० तब से० वह उ० उदायन राजा स० स्वयं पं० पंचमुष्टि लो० लोच से० शेष ज० जैसे उ० ऋषभदत्त जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख प० मुक्त हुआ ॥ १६ ॥ त० तब त० उस अ० अभीचि कुमार को अ० एकदा पु० पूर्व र० रात्रि समय में कु० कुटुम्ब

यव्वं सामी जाव णो पमादीयव्वं त्तिकट्टु केसीराया पउमावईय समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता जाव पडिगया ॥ १५ ॥ तएणं से उदायणे राया सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं, सेसं जहा उसभदत्तस्स जाव सव्व दुक्खप्पहीणे ॥ १६ ॥ तएणं तस्स अभीइकुमारस्स अण्णयाकयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि कुटुंब जागरियं जागरमाणस्सअयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पाजित्था एवं खलु

वंत महावीर को वंदना नमस्कार कर ईशान कौन में गये. सब आभरणालंकार उतार दिये और पद्मावतीने सब ले लीये. और अश्रु पूर्ण नयनों से बोली स्वामिन् ! संयम को योग्य कार्य करना प्रमाद करना नहीं ऐसा करके केशी राजा व पद्मावती रानी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर यावत् पीछे गये ॥ १५ ॥ फीर उदायन राजाने स्वयमेव पंच मुष्टि लोच किया शेष सब ऋषभदत्त जैसे कहना यावत् सब दुःखों से रहित हुवे ॥ १६ ॥ उस समय में अभिचिकुमार को एकदा पूर्व रात्रि में कुटुम्ब

जा० जागरणा जा० जागते अ० इसरूप अ० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा अ० मैं उ० उदायन का पु० पुत्र प० प्रभावती का अ० आत्मज त० तब से० वह उ० उदायन राजा म० मुझे अ० छोडकर णि० अपना भा० भाणजा के० केशी कुमार को र० राज्य में ठा० स्थापकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की जा० यावत् प० प्रवर्ज्या अंगीकार की इ० इस ए० इसरूप म० बडी अ० प्रीतिरहित म० मनोविकार दु० दुःख से अ० पराभवपाया हुवा अं० अंतःपुर प० परिवार से सं० घेराया हुवा स० भांडे म० पात्र उ० उपकरण आ० लेकर वी० वीतिभय न० नगर से णि० नीकलकर पु० पूर्वानुपूर्व च० चलता

अहं उदायणस्स पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए तएणं से उदायणे राया ममं अवहाय णियगं भायणिज्जं केसीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए, इमेणं एयारूवेणं महता अपत्तिएणं मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अंतेउर परियाल संपरिवुडे सभंडमत्तोवगरण मादाय वीइभयाओ णयराओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव

जागरणा जागते हुवे ऐसा अध्यवसाय हुवा कि मैं उदायन का पुत्र हूं और प्रभावती देवी का आत्मज हूं. उदायन राजा मुझे छोडकर अपना भाणजा को राज्य देकर श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास प्रव्राजित हुवे. ऐसा अप्रीति कारक मानसिक दुःख से पराभूत होता हुवा अंतःपुर के परिवार सहित

गा० ग्रामानुग्राम दू० जाता, जे० जहां चं० चंपा न० नगरी जे० जहां कू० कूणिक राजा उ० आकर कू० कूणिक राजा का उ० आश्रय लेकर वि० विचरता है ॥ १७ ॥ त० तहां से० वह वि० विपुल भो० भोग स० समृद्धि स० सन्मुख हुइ हो० थी ॥ १८ ॥ त० तत्र से० वह अ० अभीचि कुमार स० श्रमणो पासक हो० था० अ० जाने जा० यावत् वि० विचरता है उ० उदायन रा० राजर्षि में स० वैरवाला हो० था ॥ १९ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के णि० नरका वास में

चंपाणयरी जेणेव कूणिएराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता कूणियं रायं उवसं- पज्जित्ताणं विहरइ ॥ १७ ॥ तत्थविणं से विउलभोगसमिति समण्णागएयावि होत्था ॥ १८ ॥ तएणं से अभीइकुमारे समणोवासएयावि होत्था अभिगय जाव विहरइ ॥ उदायणंमि रायरिसिंमि समणुबद्ध वेरेयावि होत्था ॥ १९॥ तेणं कालेणं तेणं

परवरा हुवा वीतिभय नगर में से अपने भंडोपकरणादि लेकर नीकला और पूर्वानुपूर्वी चलते ग्रामानुग्राम विजरते चंपा नगरी में कूणिक राजा की पास गया और कूणिक राजा का आश्रय लेकर विचरने लगा ॥ १७ ॥ वहां पर भी अभिचि कुमार को भोगोपभोग की प्राप्ति हुई और उन्हे भोगवते हुवे विचरने लगे ॥१८॥ अभिचि कुमार श्रमणोपासक होते हुवे व जीवाजीव का स्वरूप जानते हुवे उदायन राजर्षि की साथ वैर बद्ध हुवे ॥ १९ ॥ उस काल उस समय में इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नरक की चारों तरफ चौसठ

चो० चौसठ अ० असुर कुमार के आ० आवास त० शत सहस्र प० प्ररूपे ॥ २० ॥ त० तब अ० अभीचि कुमार ब० बहुत व० वर्ष स० श्रमणोपासक प० पर्याय पा० पालकर अ० अर्धमास की सं० संलेखना ती० तीस भक्त अ० अनशन त० उस ठा० स्थान को अ० विना आलोचकर प० प्रतिक्रमणकर का० काल के अवसर में का० कालकर इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के णि० नरकावास में चो० चौसठ जा० यावत् स० शत सहस्र में अ० अन्यतर आ० विशेष अ० असुर कुमार आ० आवास में अ० असुर कुमार पने उ० उत्पन्न हुवा त० तहां अ० कितनेक अ० असुर कुमार की ए० एक पल्योपम

समएणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णिरयपरिसामंतेसु चोयट्ठि असुरकुमारावाससय सहस्सा पण्णत्ता, ॥ २० ॥ तएणं से अभीईकुमारे बहूइ वासाइं समणोवासगं परियागं पाउणइ, पाउणइत्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणं २ तस्स ठाणस्स अणालोइय पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णिरय परिसामंतेसु चोयट्ठीए आत्तावा जाव सहस्सेसु अण्णयरंसि आयावा

लाख असुर कुमार के वास कहे हुवे हैं ॥ २० ॥ उस समय में अभिचिकुमारने बहुत वर्ष पर्यंत श्रमणोपासक पर्याय पालकर अर्ध मासकी संलेखना से तीन भक्त अनशन का छेदकर उस स्थान की आलोचना प्रतिक्रमण किये विना काल के अवसर में काल करके इस रत्नप्रभा पृथ्वी की पास चौसठ लाख असुर

की ठि० स्थिति प० प्ररूपी त० तहां अ० अभीचि दे० देव की ए० एक प० पल्योपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ॥ २१ ॥ अ० अभीचि देव ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से ठि० स्थितिक्षय से अ० पीछे उ० चवकर क० कहां ग० जावेगा क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेगा जा० यावत् अं० अंत करेगा से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १३ ॥ ६ ॥

असुरकुमारावासंसि आतावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववण्णो ॥ तत्थणं अत्थेगइयाणं असुरकुमाराणं एगंपलिओवमाट्ठिई पण्णत्ता, तस्सणं अभीइस्स देवस्स एगं पलिओवमंठिई पण्णत्ता ॥ २१ ॥ सेणं अभीईदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएण अणंतरं उवट्टित्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तेरसमसयस्सय छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ ६ ॥ * ॥

÷ ÷ ÷

कुमार के आवास में से किसी एक आवास में असुर कुमारपने उत्पन्न हुवा. वहां कितनेक असुर कुमारकी एक पल्योपम की स्थिति कही. उस में अभिचि देव की एक पल्योपम की स्थिति प्ररूपी ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! वह अभिंचि देवता आयुष्य स्थिति व भव क्षयसे कहां जावेगा कहां उत्पन्न होवेगा ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा बुझेगा यावत् अंत करेगा. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह तेरहवा शतक का छठा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १३ ॥ ६ ॥

रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले आ० आत्मा भं० भगवन् भा० भाषा अ० अन्य भा० भाषा गा० गौतम णो० नहीं आ० आत्मा भा० भाषा अ० अन्य भा० भाषा ॥ १ ॥ रू० रूपी भं० भगवन् भा० भाषा अ० अरूपी भाषा गो० गौतम रू० रूपी भा० भाषा णो० नहीं अ० अरूपी

रायगिहे जाव एवं वयासी-आया भंते ! भासा, अण्णा भासा ? गोयमा ! णो आया भासा अण्णाभासा ॥ १ ॥ रूवी भंते ! भासा, अरूवी भासा ? गोयमा ! रूवी

अब इस उद्देशे में भाषा का कथन करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! आत्मा-जीव स्वरूप क्या भाषा है ? क्यों कि जीव के व्यापार से जीव को बंध मोक्ष होता है. इस लिये जीवपना से जीव ऐसा कहने को योग्य है. अथवा अन्य श्रोत्रेन्द्रिय ग्राह्यपना से भाषा है ? अहो गौतम ! आत्मा भाषा नहीं है क्यों कि भाषा पुद्गलमयी है. परंतु अन्य भाषा है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या रूपी भाषा है श्रोत्र के अनुग्रह उपघातकारिपना से कर्णाभरणवत् अथवा अरूपी भाषा है चक्षु से अनुपलभ्यमानपना से धर्मास्तिकायवत् ? अहो गौतम ! भाषा रूपी है; तुमने जो चक्षुअग्राह्य को अरूपी कहा वह अनेकान्तिक द्रष्टांत होने से यहां पर योग्य नहीं होता है. यदि ऐसा ही सर्वत्र ग्रहण किया जावे तो

भाषा ॥ २ ॥ स० सचित्त भं० भगवन् भा० भाषा अ० अचित्त भा० भाषा गो० गौतम णो० नहीं स० सचित्त भा० भाषा ॥ ३ ॥ जी० जीव भं० भगवन् भा० भाषा अ० अजीव भा० भाषा गो० गौतम णो० नहीं जी० जीव भा० भाषा अ० अजीव भा० भाषा ॥ ४ ॥ जी० जीव को भं० भगवन भा० भाषा अ० अजीव को भा० भाषा गो० गौतम जी० जीव को भा० भाषा णो० नहीं अ० अजीव को भा०

भासा णो अरूवीभासा ॥ २ ॥ सचित्ता भंते ! भासा अचित्ता भासा ? गोयमा ! णो सचित्ता, अचित्ता भासा ॥ ३ ॥ जीवा भंते ! भासा अजीवा भासा ? गोयमा ! णो जीवा भासा, अजीवा भासा ॥ ४ ॥ जीवाणं भंते ! भासा, अजीवाणं भासा ? गोयमा ! जीवाणं भासा णो अजीवाणं भासा ॥ ५ ॥ पुव्विं भंते ! भासा,

परमाणु वायु पिशाचादि रूपवंत होने पर चक्षुग्राह्य नहीं है. इसलिये भाषापुद्गलमयी होने से रूपी है परंतु अरूपी नहीं है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! भाषा क्या सचित्त है या अचित्त है ? अहो गौतम ! भाषा सचित्त नहीं है परंतु अचित्त है. क्यों की जीव से नीकले हुवे पुद्गलों की भाषा होती है. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या भाषा जीव है या अजीव है ? अहो गौतम ! भाषा जीव नहीं है परंतु अजीव है. क्यों की भाषा को उश्वासादि प्राणों का अभाव है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जीव को भाषा है या अजीव को भाषा है ? अहो गौतम ! जीव को भाषा है परंतु अजीव को भाषा नहीं होती है. अक्षरों तात्वादि स्थान

भाषा ॥५॥ पु० पहिली भं० भगवन् भ० भाषा भा० भाषा भा० बोलाती भा० भाषा भा० भाषा स० समय वी० व्यतीत हुइ भाषा गो० गौतम णो० नहीं पु० पहिली भाषा भा० बोलाती भा० भाषा णो० नहीं भा० भाषा स० समय वी० व्यतीत हुइ भा० भाषा ॥ ६ ॥ पु० पहिले भं० भगवन् भा० भाषा भि० भेदावे भा० बोलाती भा० भाषा भि० भेदावे भा० भाषा समय वी० व्यतीत हुई भा० भाषा भि० भेदावे गो० गौतम नो० नहीं पु० पहिले भा० भाषा भि० भेदावे भा० बोलाती भा० भाषा भि० भेदावे णो० नहीं

भासिज्जमाणी भासा, भासासमयवीइक्कंता भासा ? गोयमा ! णो पुव्विं भासा भासिज्जमाणी भासा, णो भासासमयवीइक्कंता भासा ॥६॥ पुव्विं भंते ! भासा भिज्जइ, भासिज्जमाणी भासा भिज्जइ; भासा समयवीइक्कंता भासा भिज्जइ ? गोयमा ! णो

से बोले जाते हैं और तात्वादि स्थान जीवाश्रित है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! बोले पहिले भाषा, बोलाती हुइ भाषा, अथवा भाषा समय व्यतीत हुवे पीछे क्या भाषा कहना ? अहो गौतम ! बोले पहिले भाषा नहीं होती है मृत्पिण्ड अवस्था में घटवत् परंतु बोलाती हुई भाषा कही जाती है. घट की अवस्था में घट कहा जावे. और बोलने का समय व्यतीत, हुए पीछे भाषा नहीं होती है. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! भाषा क्या पहिले भेदाती है, बोलाती हुई भेदाती है अथवा भाषा समय व्यतीत हुए पीछे भाषा भेदाती है ? अहो

भा० भाषा समय वी० व्यतीत हुइ भा० भाषा भि० भेदावे ॥ ७ ॥ क० कितने प्रकार की भं० भगवन् भा० भाषा प० प्ररूपी गो० गौतम च० चार प्रकार की भाषा प० प्ररूपी तं० जैसे स० सत्य मो० मृषा स० सत्यमृषा अ० असत्यमृषा ॥ ८ ॥ आ० आत्मा भं० भगवन् म० मन अ० अन्य म० मन णो० नहीं

पुव्विंभासा भिज्जइ, भासिज्जमाणी भासा भिज्जइ, णो भासा समय वीइकंता भासा भिज्जइ ॥ ७ ॥ कइविहाणं भंते ! भासा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा भासा पण्णत्ता, तंजहा सच्चा, मोसा, सच्चामोसा, असच्चामोसा ॥ ८ ॥ आता भंते ! मणे

गौतम ! भाषा पहिले नहीं भेदाती है, भाषा समय व्यतीत हुए पीछे भाषा नहीं भेदाती है परंतु भाषा बोलते भाषा भेदाती है * ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! भाषा के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! भाषा के चार भेद कहे हैं. सत्याभाषा, मृषा भाषा, सत्यमृषा व असत्य मृषा ॥ ८ ॥ भाषा प्रायः मन पूर्वक

---

*-कोई मन्द प्रयत्नवक्ता अभिन्न ही शब्द बोले. वह असंख्यात द्रव्यात्मक होने से व स्थूलपना से भिद्यमान होकर संख्यात योजन जाकर शब्द परिणाम त्याग करे. वैसे ही कोई महा प्रयत्नवक्ता ग्रहण की हुई भाषा को अवश्य ही विसर्ग व प्रयत्न से भेद कर नीकाले. सूक्ष्मपना व बहुलपना से उस की अनतगुनी वृद्धि होती हुइ छ दिशि में लोकान्त पर्यंत जावे. यहां पर जिस अवस्था मे शब्द परिणाम है उस अवस्था मे भाष्यमानपना जानना.

आ० आत्मा म० मन अ० अन्य म० मन गौ० गौतम ज० जैसे भा० भाषा त० तैसे म० मन जा०

अण्णे मणे ? णो आता मणे अण्णे मणे ? गोयमा ! जहा भासा तहा मणेवि, जाव णो अजीवा ॥ १० ॥ पुव्विं भंते ! मणे, मणिज्जमाणे मणे, एवं जहेव भासा ॥ ११ ॥ पुव्विं भंते ! मणे भिज्जइ, मणिज्जमाणे मणे भिज्जइ, मण समयवीइक्कंते मणे भिज्जइ ? एवं जहेव भासा ॥ १२ ॥ कइविहेणं भंते ! मणे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे मणे पण्णत्ते, तंजहा-सच्चे जाव असच्चामोसे ॥ १३ ॥ आया भंते !

होने से मन का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! क्या आत्मा मन है या अन्य मन है ? अथवा नो आत्मा मन है या अन्य मन है ? अहो गौतम ! जैसे भाषा का कहा वैसे ही मन का जानना ॥१०॥ अहो भगवन् ! मनन पहिले मन, मनन करने लगे जब मन, अथवा मनन का समय व्यतीत हुवे पीछे मन ? अहो गौतम ! जैसे भाषा का कहा वैसे ही मन का जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! पहिले मन भेदा जाता है, मनन करते मन भेदा जाता है अथवा मनन समय व्यतीत हुए पीछे मन भेदा जाता है ? अहो गौतम ! जैसे भाषा का कहा वैसे ही मन का जानना ॥ १२ ॥ अहो गौतम ! मन के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! मन के चार भेद कहे. सत्य मन, मृषा मन, सत्य मृषा, व असत्य मृषा मन ॥ १३ ॥

काए अण्णे काए ? गोयमा ! आयावि काए, अण्णेवि काए ॥ १४ ॥ रूवी भंते ! काए, अरूवी काए ? गोयमा ! रूवीवि काए, अरूवीवि काए, एवं एकेक्के पुच्छा ? गोयमा! सचित्तेवि काए अचित्तेवि काए, जीवेवि काए अजीवेवि काए; जीवाणवि काए,

कायावाले को प्रायः मन होता है इस लिये काया का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! क्या आत्मा काया है. या अन्य काया है ? अहो गौतम ! आत्मा भी काया होवे क्षीर नीर की तरह, अग्नि लोहपिंड की तरह, इस में काया से स्पर्शा हुवा आत्मा संवेदन करे. और जो काया करे वह आत्मा भवांतर में वेदे इसलिये आत्मा काया भी है और अन्य भी काया है यदि अत्यंत अभेद होवे तब शरीर के अंग का छेदन करने से आत्मा को छेदन का प्रसंग उपस्थित होवे, वैसे ही शरीर के दाह से आत्मा को दाह होवे और ऐसा होने से परलोक अभाव प्रसंग आजावे इस से आत्मा से अन्य भी काया है. कितनेक आचार्य का ऐसा भी कथन है कि कार्माण शरीर की अपेक्षा से आत्मा काया है. क्यों कि कार्माण शरीर व संसारी जीव का परस्पर अव्यभिचार है और उदारिकादि शरीर की अपेक्षा से अन्य काया है क्यों की जब वे शरीर भिन्न होते हैं तब आत्मा इन से पृथक् होता है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! रूपी काया है या अरूपी काया है ? अहो गौतम ! उदारिक शरीर की अपेक्षा से रूपी काया है और कार्माण शरीर की अपेक्षा से अरूपी काया है. अहो भगवन् ! सचित्त काया है या अचित्त काया है ?

अजीवाणवि काए ॥ १५ ॥ पुव्विं भंते ! काए पुच्छा ? गोयमा ! पुव्विवि काए काइज्जमाणेवि काए, कायसमयवीइक्कंतेवि काए ॥ १६ ॥ पुव्विं भंते ! काए भिज्जइ पुच्छा ? गोयमा ! पुव्विंपि काए भिज्जइ, काइज्जमाणेवि काए भिज्जइ, काय समयवीइक्कं-

अहो गौतम ! जीवित अवस्था में सचित्त काया है और मृतक अवस्था में अचित्त काया है. अहो भगवन् ! जीव काया है या अजीव काया है ? अहो गौतम ! उश्वासादि लक्षण से जीव काया है और मृतक अवस्था में उश्वासादि रहित होने से अजीव काया है. अहो भगवन् ! जीवों को काया है या अजीवों को काया है ? अहो गौतम ! संसारी जीवोंको काया होती है और चित्रित चित्रों रूप अजीवों को भी काया होती है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! पहिले काया है, कायस्थ होते काया कहना, काया का नाश हुवे पीछे काया क्या कहना ? अहो गौतम ! पहिले भी काया होती है मृत मेंडक की तरह पहिले की काया में पुनः जीव उत्पन्न हो जावे. कायस्थ जीव को भी काया होती है और जीव चवे बाद भी काया होती है जीव रहित कलेवरवत् ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पहिले काया भेदावे, काया में वर्तते काया भेदावे, या जीव रहित काया हुवे पीछे काया भेदावे ? अहो गौतम ! पहिले भी काया का भेद होता है, मधु घृतादि न्याय से द्रव्य काया भेदावे, प्रतिक्षण पुद्गल का चय अपचय होने से जीव क्रीयमान होते काया भेदाती है. कायस्थ काया भेदाती है और काया का समय

यावत् णो० नहीं अ० अजीव ॥ १० १८ ॥ क० कितने प्रकार का भं० भगवन् म० मरण प० प्र० प्ररूपा गो० गौतम पं० पांच प्रकार का म० मरण प० प्ररूपा तं० वह ज० जैसे आ० आवीचिक मरण ओ० अवधि मरण आ० आत्यन्तिक मरण बा० बाल मरण पं० पंडित मरण ॥ १९ ॥ आ० आवीचिक

तेनि काए भिज्जइ ॥ १७ ॥ कइ विहेणं भंते ! काए पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे काए पण्णत्ते, तंजहा-ओरालिय ओरालिए मीसिए, वेउव्विए, वेउव्वियमीसए, आहारए, आहारयमीसए, कम्मए ॥ १८ ॥ कइविहेणं भंते ! मरणे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे मरणे पण्णत्ते, तंजहा-आवीचियमरणे, ओहिमणे, आदितियमरणे, बालमरणे

व्यतीत हुवे पीछे काया भेदाती है ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! काया के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! काया के सात भेद कहे हैं. उदारिक, उदारिक का मीश्र, वैक्रेय, वैक्रेय का मीश्र, आहारक, आहारक का मीश्र और कार्माण काया ॥ १८ ॥ काया को मृत्यु होती है इसलिये मृत्यु का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! मरण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! मरण के पांच भेद कहे हैं. १ आवीचिक मरण उत्पन्न हुवे बाद प्रतिसमय निरंतर आयुष्य की क्षीणता होवे सो २ अवधि मरण मर्यादा युक्त जो आयुर्दलि है उसे वर्तमान काल में भोगवकर मरता है. अथवा उसे आगामिक काल में भी भोगवकर मरेगा ३ आत्यं-तिक मरण नारकी देवादिक की तरह आयुष्य भोगवकर मरते हैं उसी आयुष्य को पुनः दूसरे भव में नहीं

मरण भं० भगवन् क० कितने प्रकार का प० प्ररूपा गो० गौतम पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य आवी-चिक मरण खे० क्षेत्र आवीचिक मरण का० काल आवीचिक मरण भ० भव आवीचिक मरण भा० भाव आवीचिक मरण ॥ २० ॥ सरल शब्दार्थ-

पंडियमरणे ॥ १९ ॥ आवीचियमरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-दव्वावीचियमरणे, खेत्तावीचियमरणे, कालावीचियमरणे, भवावीचिय मरणे, भावावीचियमरणे ॥ २० ॥ दव्वावीचिय मरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-णेरइय दव्वावीचियमरणे, तिरिक्खजोणिय दव्वावीचियमरणे, मणुस्सदव्वावीचियमरणे, देवदव्वावीचियमरणे, ॥ २१ ॥

भोगते हैं वह आत्यंतिक मरण है ४ बाल मृत्यु अविरति जीव का और ५ पंडित मरण सब विरति जीव का ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! आवीचिक मरण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! आवीचिक मरण के पांच भेद कहे हैं. १ द्रव्य आवीचिक मृत्यु २ क्षेत्र आवीचिक मृत्यु, ३ काल आवीचिक मृत्यु ४ भव आवीचिक मृत्यु और ५ भाव आवीचिक मृत्यु ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य आवीचिक मृत्यु के कितने भेद हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य आवीचिक मृत्यु के चार भेद कहे हैं. नारकी द्रव्य आवीचिक मृत्यु, तिर्यंच आवीचिक मृत्यु, मनुष्य आवीचिक मृत्यु और देव आवीचिक मृत्यु ॥ २१ ॥ अहो भगवन् !

से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-णेरइयदव्वावीचियमरणे ? णेरइयदव्वावीचियमरणे गोयमा ! जंणं णेरइया णेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं णेरइयाउयत्ताए गहियाइं, बद्धाइं, पुट्ठाइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, निविट्ठाइं, अभिणिविट्ठाइं, अभिसमण्णागयाइं, भवंति. ताइं दव्वाइं आवीचिय मणुसमय णिरंतरं मरंतीतिकट्टु; से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ णेरइय दव्वावीचियमरणे. एवं जाव देव दव्वावीचियमरणे ॥ २१ ॥ खेत्तावीचिय-मरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-णेरइयखेत्ता-वीचियमरणे, जाव देवखेत्तावीचियमरणे ॥ २२ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-णेरइय खेत्तावीचियमरणे ? णेरइय खेत्तावीचियमरणे गोयमा ! जण्णं णेरइया

नारकीका द्रव्य आवीचिक मरण किस कारनसे कहा गया है ? अहो गौतम ! नरक द्रव्य में रहे हुवे नारकीने नारकी के आयुष्यपना से जो द्रव्य ग्रहण किये हैं, बंधन से बांधे हैं, प्रदेश प्रक्षेपण से पुष्ट (स्पर्श किये हैं, अनुभाव स्थिति करने से जीव प्रदेश में स्थापन किये और उदयकी पंक्ति में आयेहुवे हैं उन द्रव्यों को प्रतिसमय निरंतर मरण मरे. अहो गौतम ! ऐसा होने से नारकी द्रव्य आवीचिक मरण कहा है. ऐसे ही यावत् देव द्रव्य आवीचिक मरण का जानना. ॥२१॥ अहो भगवन् ! नारकी क्षेत्र आवीचिक मरण किसे

णेरइयखेत्ते वट्टमाणा जाइं दव्वाइं णेरइयाउयत्ताए; एवं जहेव दव्वावीचियमरणे तहेव खेत्तावीचियमरणेवि; एवं जाव भावावीचिय मरणे ॥ २३ ॥ ओहि मरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा-दव्वोहिमरणे, खेत्तोहिमरणे जाव भावोहिमरणे दव्वोहिमरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-णेरइयदव्वोहिमरणे जाव देवदव्वोहिमरणे ॥२४॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-णेरइय दव्वोहिमरणे ? गोयमा ! जंणं णेरइया णेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति जंणं णेरइया ताइं दव्वाइं अणागए काले पुणोवि मरिस्संति से

कहते हैं ? अहो गौतम ! नरक क्षेत्र में रहे हुवे नारकी जिन द्रव्यों को नरक के आयुष्यपने वगैरह द्रव्य आवीचिक मरण जैसे कहना. और एसे ही काल, भव और भाव आवीचिक मरण का जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! अवधि मरण के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम ! अवधि मरण के पांच भेद कहे हैं ? द्रव्य अवधि, क्षेत्र अवधि यावत् भाव अवधि. अहो भगवन् ! द्रव्य अवधि मरण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य अवधि मरण के चार भेद कहे हैं. नारकी द्रव्य अवधि मरण यावत् देव द्रव्य अवधि मरण ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी द्रव्य अवधि मरण किस कारन से कहा गया है ? अहो गौतम !

तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव दव्वोहिमरणे, एवंतिरिक्ख जोणिय, मणुस्स, देवदव्वोहिमरणेवि । एवं एएणं गमएणं खेत्तोहिमरणेवि, कालोहिमरणेवि, भवोहिमरणेवि, भावोहिमरणेवि ॥ २५ ॥ आदिंतिय मरणेणं पुच्छा ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा-दव्वादितियमरणे, खेत्तादितियमरणे, जाव भावादितिय मरणे ॥ २६ ॥ दव्वादितिय मरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-णेरइय दव्वादितियमरणे जाव देवदव्वाइंतियमरणे ॥ २७ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णेरइय दव्वाइंतियमरणे ? णेरइय दव्वाइंतियमरणे गोयमा! जंणं णेरइया णेरइयदव्वे

नरक में रहने वाले नारकी जिन द्रव्यों से सांप्रत मे मरे उन द्रव्यों को फीर अनागत काल में मरेंगे इसलिये अहो गौतम ! नारकी द्रव्य अवधि मरण यावत् देव द्रव्य अवधि मरण कहा गया है और इसी क्रम से क्षेत्र, काल, भव व भाव अवधि मरण का जानना ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! आत्यंतिक मरण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच प्रकार के आत्यंतिक मरण कहे हैं. द्रव्यात्यंतिक मरण क्षेत्रात्यंतिक मरण यावत् भावात्यंतिक मरण ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य आत्यंतिक मरण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चार प्रकार के द्रव्य आत्यंतिक मरण कहे हैं. नारकी द्रव्य आत्यंतिक यावत् देव

वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति तेणं णेरइया ताइं दव्वाइं अणागए काले णो पुणोवि मरिस्संति से तेणट्टेणं जाव मरणे ॥ २८ एवं तिरिक्ख, मणुस्सदेवे ॥ एवं खेत्तादिंतिय मरणेवि ॥ एवं जाव भावादिंतिय मरणेवि ॥ २९ ॥ बाल मरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुवालसविहे पण्णत्ते, तंजहा-वलयमरणे जहा खंदए जाव गिद्धपिट्ठे ॥ ३० ॥ पंडियमरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-पाओवगमणेय, भत्तपच्चक्खाणेय ॥ ३१ ॥ पाओवगमणेणं

द्रव्य आत्यंतिक मरण अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी द्रव्य आत्यंतिक मरण कहा गया है ? अहो गौतम ! नरक में वर्तमान नारकी जिन द्रव्यों को ग्रहण कर मरते हैं. उन द्रव्यों को ग्रहण किये विना अनागत में मरेंगे इसलिये नरक द्रव्य आत्यंतिक मरण कहा है. ॥ २८ ॥ ऐसे ही तिर्यंच मनुष्य व देव का जानना. और ऐसे ही क्षेत्र आत्यंतिक यावत् भावात्यंतिक मरण का जानना. ॥२९॥ अहो भगवन् ! बाल मरण के कितने भेद कहे हैं ? अहो भगवन् ! बाल मरण के बारह भेद कहे हैं. वलय मरणादिक से लगा कर अधिकार स्कंधक में कहा वैसे ही यहां सब कहना. ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! पंडित मरण के कितने भेद कहे हैं. अहो गौतम ! पंडित मरण के दो भेद कहे हैं. १ पादोपगमन और २ भक्त प्रत्याख्यान ॥ ३१ ॥ अहो

क० कितनी भं० भगवन् क० कर्म प्रकृति प० प्ररूपी गो० गौतम अ० आठ क० कर्म प्रकृति प० प्ररूपी ए० ऐसे बं० बंध ठि० स्थिति उ० उद्देशा भा० कहना णि० निर्विशेष ज० जैसे प० पन्नवना में से० वह

भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-णीहारिमेय, अणीहारिमेय, जाव णियमं अपाडिक्कमे ॥३२॥ भत्तपच्चक्खाणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? एवं चेव. णवरं सपडिक्कमे ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तेरसम सयस्सय सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥१३॥७॥

कइणं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठकम्म पगडीओ पण्णत्ताओ, एवं बंधट्ठिति उद्देसओ भाणियव्वो णिरवसेसो जहा पण्णवणाए सेवं भंते भंतेत्ति ॥

भगवन् ! पादोपगमन के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! पादोपगमन के दो भेद कहे हैं. १ ग्राम में मरण होवे सो निहारिम उस का निहारन होवे और २ ग्राम बाहिर अटवि वगैरह स्थान में मरण होवे सो अनिहारिम, यह मरणवाला प्रतिक्रमण करे ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! भक्त प्रत्याख्यान के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! इस के उक्त दो भेद जानना. परंतु प्रतिक्रमण सहित होवे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह तेरहवा शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ १३ ॥ ७ ॥

सातवे उद्देशे के अंत में मृत्यु का कथन कहा. वह मृत्यु कर्म से होता है इसलिये कर्म का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! कितनी कर्म प्रकृतियों कही ? अहो गौतम ! आठ कर्म प्रकृतियों कहीं. इस का

ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १३ ॥ ८ ॥

रा० राजगृही में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले से० वह ज० जैसे के० कोइ पु० पुरुष के० रज्जु घ० घडा ग० ग्रहण कर ग० जावे ए० ऐसे अ० अनगार भा० भावितात्मा के० रज्जुवाला घ० घडा कि० कृत ह० हस्त अ० आप उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० जावे हं० हां उ० जावे अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा के० कितने प० समर्थ के० रज्जु वाला घ० घडा कि० कृत्यहस्त रू० रूप वि० विकूर्वणा

तेरसमसयस्सय अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ ८ ॥ * *

राजगिहे जाव एवं वयासी से जहा णामए केइ पुरिसे केयाघडियं गहाय गच्छेज्जा एवामेव अणगारेवि भावियप्पा केयाघडियाकिच्चहत्थगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ? हंता गोयमा ! जाव समुप्पएज्जा । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा

विशेष वर्णन पन्नवणा सूत्र के तेत्तीसवे उद्देशे में कहा है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह तेरहवा शतक का आठवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १३ ॥ ८ ॥

आठवे उद्देशे में कर्म प्रकृति कही. कर्म क्षय से वैक्रेय लब्धि होती है इसलिये आगे वैक्रेय का कथन करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामीको वंदना नमस्कारकर श्री गौतम स्वामी प्रश्न पूछने लगे कि अहो भगवन् ! जैसे कोई पुरुष रस्सी बांधकर घटिका लेजावे वैसे ही भावितात्मा अनगार

करने को गो० गौतम से० वह ज० जैसे जु० युवति को जु० युवान ह० हस्त से ह० हस्त ए० ऐसे ज० जैसे त० तीसरा शतक में पं० पांचवा उ० उद्देशा जा० यावत् णो० नहीं सं० संपत्ति से वि० विकुर्वणा की वि० विकुर्वणा करते हैं वि० विकुर्वणा करेंगे ॥ १ ॥ से० वह ज० जैसे के० कोई पु० पुरुष हि० हिरण्य पेटी को ग० ग्रहण कर ग० जावे ए० ऐसे अ० अनगार भा० भावितात्मा हिं० हिरण्य पेटी को ह० हस्त

केवइयाइं पभू केयाघडियं किच्चहत्थगयाई रूवाइं विउव्वित्तए ? गोयमा ! से जहाणामए जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थं एवं जहा तइयसए पंचमोद्देसए जाव णो चेवणं संपत्तीए विउव्विसुवा, विउव्वितिवा, विउव्विस्संतिवा ॥ १ ॥ से जहा णामए केइपुरिसे हिरण्णपेडिं गहाय गच्छेज्जा एवामेव अणगारेवि भावियप्पा हिरण्णपेडिं

क्या उक्त प्रकार से रज्जु का वैक्रेय बनाकर उसे अपने हस्त में ग्रहण कर आप स्वयं ऊर्ध्व आकाश में क्या जा सकते हैं ? हां गौतम ! जा सकते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार रज्जु घटिका के कितने रूप बनाकर जा सकते हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई युवान पुरुष युवति का हस्त पकडकर जावे वैसे ही सघन रूप बनाकर तीसरे शतक के पांचवे उद्देशे में कहा वह सब यहां कहना यावत् इतनी संपदा है परंतु इतने रूप गत काल में किये नहीं, वर्तमान में करते नहीं और अनागत में करेंगे नहीं ॥ १ ॥ जैसे कोई पुरुष रूपे की संदूक ग्रहण करके जावे वैसे ही भावितात्मा अनगार रूपे की संदूक का वैक्रेय

कि० कृत्य रहा हुवा अ० आप से० शेष तं० तैसे ए० ऐसे सु० सुवर्ण पेटी र० रत्नपेटी व० वज्रपेटी व० वस्त्रपेटी आ० आभरणपेटी ए० ऐसे वि० वंशकीडा सुं० तृणकीडा च० चर्मकीडा कं० कंवलकीडा ए० ऐसे अ० लोहका भार तं० तांबा का भार त० तरुया का भार सी० सीसा का भार हि० हिरण्य का भार सु० सुवर्ण का भार व० वज्र भार ॥२॥ से० वह ज० जैसे व० वल्गुली सि० होवे दो० दो पा० पांव उ० आवलंबन करके ऊर्ध्व पा० पांव अ० अधो शिरवाली चि० रहे ए० ऐसे अ० अनगार भा० भावितात्मा व० वल्गुली कि०

हत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं सेसं तंचेव ॥ एवं सुवण्णपेडिं, एवं रयणपेडिं, वयरपेडिं, वत्थपेडिं, आभरणपेडिं ॥ एवं वियलकिडं, सुंबकिडं, चम्मकिडं, कंबलकिडं ॥ एवं अयभारं, तंबभारं, तउयभारं, सीसगभारं, हिरण्णभारं सुवण्णभारं वइरभारं ॥ २ ॥ से जहा णामए वग्गुली सिया दोविपाए उल्लंबिय २ उद्धं पाया अहो सिरा

बनाकर स्वयं आकाश में क्या जा सकते हैं ? शेष सब अधिकार उपर्युक्त जैसे कहना. ऐसे ही सुवर्ण की संदूक ग्रहण कर जावे, रत्नों की संदूक ग्रहण कर जावे, वज्र रत्नों की संदूक ग्रहण कर जावे, वस्त्र की संदूक ग्रहण कर जावे, आभरण की संदूक ग्रहण कर जावे, ऐसे ही वंश, तृण, चमडा कम्बल, करंड को ग्रहण कर जावे. वैसे ही लोहे के भार को, तांबे के भार को, सीसे के भार को, तरुवे के भार को, रूपे के भार को, सुवर्ण के भार को और वज्र के भार को भी ग्रहण कर जावे ॥ २ ॥ जैसे वागुल

कृत्य से अ० आपको उ० ऊर्ध्व वे० आकाश को ए० ऐसे ज० ब्राह्मण व० वक्तव्यता भा० कहना जा० यावत् वि० विकुर्वणा करेगे ॥ ३ ॥ से० वह ज० जैसे ज० जलो सि० होवे उ० पानी में का० काया को वि० प्ररकर ग० जावे ए० ऐसे से० शेष ज० जैसे व० वल्गुली ॥ ४ ॥ से० वह ज० जैसे वी० वीज वि० वीजक स० शकुन सि० होवे दो० दोनों पांव स० साथ उपाडते ग० जावे ए० ऐसे अ० अनगार ॥

चिट्ठिज्जा, एवामेव अणगारेवि भावियप्पा वग्गुलीकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं एवं जण्णोवईयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव विउव्विस्संतिवा ॥ ३ ॥ से जहाणामए जलोया सिया उदगंसि कायं विउव्विहिय २ गच्छेज्जा एवामेव, सेसं जहावग्गुलीए ॥ ४ ॥ से जहा णामए वीयं वियगसउणे सियादोवि पाए समतुरंगेमाणे समतुरंगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे सेसं तंचेव ॥ ५ ॥ से जहा

पक्षी अपने दोनों पांव को ऊपर व नीचे शिर करके वटादि वृक्ष का अवलम्बन कर रहती है वैसे ही भावितात्मा अनगार वागुल की तरह रहकर ऊर्ध्व आकाश में गमन करे. ऐसे ही यज्ञोपवीत ब्राह्मण जैसे गले में जनोइ डालकर जाता है वैसे ही साधु भी विचरे ॥ ३ ॥ जैसे जलज द्विइन्द्रिय जीव पानी में अपने शरीर को ऊंचा नीचा करे ऐसे ही साधु भी आकाश में गमन करे ॥ जैसे वीज वीजक पक्षी दोनों पांव साथ उठाता हुवा चले वैसे ही साधु भी वैक्रेय कर जावे यों कहना ॥ ५ ॥ जैसे विरालक पक्षी एक

से० वह ज० जैसे प० पक्षी वि० विरालक सि० होवे रु० वृक्ष से रु० वृक्ष को डे० अतिक्रमता ग० जावे ए० ऐसे अ० अनगार ॥ ६ ॥ से० वह ज० जैसे जी० जीवं जीवक सि० होवे दो० दोनों पांव स० साथ उपाडता ग० जावे ए० ऐसे अ० अनगार ॥ ७ ॥ से० वह ज० जैसे ह० हंस सि० होवे ती० तीरसे ती० तीरको अ० रमता ग० जावे ए० ऐसे अ० अनगार ॥ ८ ॥ से० वह ज० जैसे स० समुद्र कागपक्षी वी० वेली से वी० वेलीको डे० उल्लंघन करता ग० जावे ए० ऐसे त० तैसे ॥ ९ ॥ से० वह ज० जैसे के०

नामए पक्खिविरालए सिया रुक्खाओ रुक्खं डेवेमाणे गच्छेज्जा एवामेव अणगारे सेसं तंचेव ॥ ६ ॥ से जहा नामए जीवं जीवगसउणे सिया दोवि पाए समतुरंगेमाणे २ गच्छेज्जा एवामेव अणगारे सेसं तंचेव ॥ ७ ॥ से जहा णामए हंसे सिया तीराओ तीरं आभिरममाणे २ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे हंसकिच्चगएणं अप्पाणेणं सेसं तंचेव ॥ ८ ॥ से जहाणामए समुद्दवायसए सिया वीईओ वीइंडेवेमाणे गच्छेज्जा,

वृक्ष से दूसरे वृक्षपे उडता हुवा जावे वैसे ही अनगार जावे शेष पूर्ववत् ॥ ६ ॥ जैसे जीवंजीवक नाम का पक्षी घोडे की तरह दोनों पांव को साथ उठाता हुवा जावे वैसे ही अनगार दोनों पांवों को साथ उठाता हुवा जावे ॥ ७ ॥ जैसे हंस एक तीर से दूसरे तीरपे क्रीडा करता हुवा जावे वैसे ही अनगार वैक्रेय कर जावे शेष पूर्ववत् ॥ ८ ॥ जैसे समुद्र का वायस एक वेल से दूसरी वेल पर कूदे वैसे ही अनगार साधु का

कोई पुरुष च० चक्र ग० लेकर ग० जावे ए० ऐसे अ० अनगार भा० भावितात्मा च० चक्र कि० कृत्य ह० हस्त से अ० आत्मा से० शेष ज० जैसे के० रज्जु घ० घडावाला ए० ऐसे छ० छत्र च० चामर ॥ १० ॥ सरल शब्दार्थ

एवामेव तहेव ॥ ९ ॥ से जहा णामए केइपुरिसे चक्कं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे भावियप्पा चक्ककिच्चहत्थगएणं अप्पाणेणं, सेसं जहा केयाघडियाए, ॥ एवं छत्तं, एवं चम्मं, ॥ १० ॥ से जहा केइ पुरिसे रयणं गहाय गच्छेज्जा, एवं चेव, एवं वइए, वेरुलियं जाव रिट्ठं ॥ एवं उप्पलहत्थगं, पउमहत्थगं कुमुदहत्थगं, एव जाव ॥ ११ ॥ से जहा णामए केइ पुरिसे सहस्सपत्तगं गहाय गच्छेज्जा, एवं चेव ॥ १२ ॥ से जहा णामए केइ पुरिसे भिसं अवदालय २ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारेवि भिसं किच्चगएणं अप्पाणेणं

भी कहना ॥ ९ ॥ जैसे कोई पुरुष चक्र लेकर जाता है वैसे ही अनगार चक्र कृत्य हस्तगत कर जावे ऐसे ही छत्र व चर्म का जानना ॥ १० ॥ जैसे कोई पुरुष रत्न ग्रहण कर जावे वैसे ही अनगार जावे ऐसे ही वैडूर्य यावत् रिष्टतक रत्नों का जानना ऐसे ही उत्पल, पद्म, कुमुद का कहना ॥ ११ ॥ जैसे कोई पुरुष सहस्रपत्र ग्रहण कर जावे वैसे ही अनगार का कहना ॥ १२ ॥ जैसे कोइ पुरुष मृणाल (कमल की डाल) को तोडकर जावे वैसेही साधु भी मृणाल कृत्यगत आत्मा से शेष जैसेही. ॥ १३ ॥ जैसे कमलिनी

तंचेव ॥ १३ ॥ से जहाणामए मुणालिया सिया, उदगंसि कायं उम्मज्जिअ २ चिट्ठेज्जा, एवामेव सेसं जहा वग्गुलीए ॥ १४ ॥ से जहा णामए वणखंडे सिया, किण्हे किण्होभासे जाव निकुरुंबभूए पासादीए दरसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एवा मेव अणगारे भावियप्पा वणखंडं किच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा, सेसं तंचेव ॥ १५ ॥ से जहा णामए पुक्खरिणी सिया चउक्कोणा समतीरा अणुपुव्वसु-जाय जाव सद्दुण्णइय महुरसरणादिया पासादीया ४, एवामेव अणगारेवि भावियप्पा पोक्खरिणी किच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ? हंता उप्पएज्जा, ॥ १६ ॥

अपने शरीर को पानी में डुबा २ कर ऊर्ध्वमुख से रहती है ऐसे ही सब वागुल जैसे कहना ॥ १४ ॥ जैसे कोई वनखण्ड होवे वह कृष्ण वर्णवाला, कृष्ण प्रभावाला, यावत् निकुरुंब भूत व देखने योग्य, दर्शनीय, अभिरूप प्रतिरूप, ऐसेही भावितात्मा अनगार वनखण्ड कृत्यगत आत्मा से ऊंचा आकाश में गमन करे शेष वैसे ही ॥ १५ ॥ जैसे कोई पुष्करणी होवे उस को चार कोने व बराबर तीर होवे, अनुक्रम से अच्छी बनी हुई होवे, यावत् शुकादि पक्षियों के मधुरस्वर वाली होवे और बहुत देखने योग्य होवे वैसे भावितात्मा अनगार पुष्करणी कृत्यगत आत्मा से ऊर्ध्व आकाश में उडे ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! भावितात्मा

क०कितनी भं०भगवन् छा० छद्मस्थकी स० समुद्घात प०प्ररूपी गो०गौतम छ० छ छ०छद्मस्थ की स०

अणगारेणं भंते! भावियप्पा केवइयाइं पभू पोक्खरिणी किच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए सेसं तंचेव जाव विउव्विस्संतिवा ॥ १७ ॥ से भंते ! किं मायी विउव्वइ अमायी विउव्वइ ? गोयमा ! मायी विउव्वइ णो अमायी विउव्वइ ॥ माईणं तस्स ठाणस्स अणालोइय एवं जहा तइयसए चउत्थुद्देसए जाव अत्थि तस्स आराहणा ॥ १८ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ तेरसम सयस्सय नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥१३-९॥ कइणं भंते ! छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! छच्छाउमत्थिय समुग्घाया

अनगार कितने पुष्करणी कृत रूप करने में समर्थ है ? अहो गौतम ! इस का सब अधिकार पूर्वोक्त जैसे जानना. ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! क्या मायी विकुर्वणाकरे या अमायी विकुर्वणाकरे ? अहो गौतम ! मायी विकुर्वणा करे परंतु अमायी विकुर्वणा करे नहीं. मायी उस स्थान की आलोचना प्रतिक्रमण किये विना काल करे तो आराधक नहीं होता है और आलोचना प्रतिक्रमणकर काल करेतो आराधक होता है. ॥१८॥ अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर तप संयम से आत्मा को भावते हुवे विचरनेलगे. यह तेरहवा शतक का नववा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ १३ ॥ ९ ॥

नववे उद्देशे में वैक्रेय का कथन किया वह वैक्रेय समुद्घात से होता है इसलिये दशवे उद्देशे में समुद्घात का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! छद्मस्थ समुद्घात कितने प्रकार की कही ? अहो गौतम !

स० समुद्घात तं० वह ज० जैसे वे० वेदना समुद्घात ए० ऐसे छा० छद्मस्थ समुद्घात णे० जानना ज० जैसे प० पन्नवणा में जा० यावत् आ० आहार स० समुद्घात से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् विचरते हैं ॥ १३ ॥ १० ॥ ० ० ०

पण्णत्ता, तंजहा वेदणा समुग्घाए एवं छाउमत्थिय समुग्घाया णेतव्वा, जहा पण्णवणाए जाव आहारग समुग्घायत्ति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ तेरसम सयस्सय दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ १० ॥ सम्मत्त तेरसमं सयं ॥ १३ ॥

छ छद्मस्थ समुद्घात कही १ वेदना समुद्घात २ कषाय समुद्घात ३ मारणांतिक समुद्घात ४ वैक्रेय समुद्घात ५ आहारक समुद्घात और तेजस समुद्घात. इन में वेदनीय समुद्घात असाता वेदनीय कर्म आश्री वेदनीय कर्म का शातन करे २ कषाय समुद्घात कषाय नामक चारित्र मोहनीय कर्म आश्री कशाय के पुद्गलशातन करे ३ मारणांतिक समुद्घात आयुःकर्म आश्री आयुः के पुद्गल शातन करे ४ वैक्रेय समुद्घात, आहारक समुद्घात और तेजस समुद्घात ये तीनों नाम कर्म आश्री जानना यह नाम कर्म के पुद्गलों का शातन करे. इन का विशेष वर्णन पन्नवणासूत्र के छत्तीसवे उद्देशे जैसे जानना. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यों कह कर विचरने लगे. यह तेरहवा शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ १३ ॥ १० ॥ यह तेरहवा शतक समाप्त हुवा ॥ १३ ॥ ० ०

॥ चतुर्दश शतकम् ॥

च० चरम उ० उन्माद स० शरीर पो० पुद्गल अ० अग्नि आ० आहार सं० संसृष्ट अं० अंतर अ० अनगार के० केवली रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोला अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा च० चरम दे० देवावास वी० व्यतीक्रांत हुवा प० उपर का दे० देवावास को अ० अप्राप्त अं० बीच में का० काल क० करे त० उस की भं० भगवन् क० कहां ग० गति

चर उम्माद सरीरे पोग्गल अगिणी तहा किमाहारे ॥ संसट्ठ मंतरे खलु, अणगारे केवली चेव ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी अणगारेणं भंते ! भावियप्पा चरमं देवावासं वीइक्कंते परमं देवावासं असंपत्ते; एत्थणं अंतरालं कालं करेज्जा, तस्सणं भंते ! कहिं गई कहिं उववाए पण्णत्ते ? गोयमा ! जेसे तत्थ परिस्सओ तल्लेस्सा

तेरहवे शतक में विचित्र भाव कहे. अब आगे के शतक में भी वैसे ही कहते हैं. इस शतक के दश उद्देशे कहे हैं. १ चरिम, २ उन्माद, ३ शरीर, ४ पुद्गल, ५ अग्नि, ६ आहार, ७ संसृष्ट ८ अंतर, ९ अनगार, और १० केवली राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! भावितात्मा साधु उपपात हेतुभूत लेश्या

क० कहां उ० उत्पात प० प्ररूपा गो० गौतम जें० जो त० तहां प० नजदीक त० उस लेश्या वाला दे० देवावास त० तहां त० उस की ग० गति त० तहां त० उस का उ० उपपात प० प्ररूपा से० वह त० तहां ग० गया हुवा वि० विराधना करे क० कर्म लेश्या को प० पीछापडे से० वह त० तहां ग० गया हुवा णो० नहीं वि० विराधनाकरे त० लेश्या को उ० अंगीकार कर वि० विचरे ॥ १ ॥ अ० अनगार

देवावासा तहिं तस्स गई तहिं तस्स उववाए पण्णत्ते, सेयं तत्थगए विराहेज्जा कम्म-लेस्सामेव पडिवडइ, सेयं तत्थगए णो विराहेज्जा, तामेव लेस्सं उवसंपज्जित्ताणं

परिणाम की अपेक्षा से चरम सौधर्मादिक देवलोक की स्थिति को अतिक्रम परम सनत्कुमार देवलोक की स्थिति को अप्राप्त होकर बीच में काल कर जावे तो वह अनगार वहां से कहां जावे और कहां उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जिस लेश्या में साधु काल कर जावे उसी लेश्या में चरम व परम देवलोक की बीच के ईशान देवलोक में उत्पन्न होवे. अब जिस लेश्या परिणाम से वह वहां उत्पन्न होता है उस लेश्या परिणाम की यदि वहां उत्पन्न हुवे पीछे विराधना करे तो वह कर्म लेश्या भाव लेश्या से से हीनता को प्राप्त होती है परंतु द्रव्य लेश्या से हीन होवे नहीं क्यों की देवों को द्रव्य लेश्या अवस्थित रहती है. यदि यहां गया हुवा लेश्या परिणाम की विराधना करे नहीं तो जिस लेश्या से वहां उत्पन्न हुवा होवे उसी लेश्या सहित रहता है ॥ १ ॥ अब विशेषपना से प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! भावि-

भं० भगवन् भा० भावितात्मा च० चरम अ० असुर कुमारावास वी० व्यतीक्रांत हुवा प० उत्कृष्ट अ० असुर ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमारावास जो० ज्योतिषी आवास वे० वैमानिक आवास जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ २ ॥ णे०. नारकी को भं० भगवन् क० कैसे सी० शीघ्र ग० गति क० कैसे सी० शीघ्र गति वि० विषय प० प्ररूपा गो० गौतम से० वह ज० जैसे के० कोई पु० पुरुष त०

विहरइ ॥ १ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा चरमं असुरकुमारावासं वीइक्कंते परमं असुरएवंचेव. एवं जाव थणियकुमारावासं जोइसियावासं, एवं वेमाणियावासं जाव विहरंति ॥ २ ॥ णेरइयाणं भंते । कहं सीहा गई कहं सीहागइविसए पण्णत्ते ?

तात्मा अनगार चमर असुरकुमारावास को अतिक्रम कर परम असुरकुमारावास को अप्राप्त बना हुवा बीच में काल करे तो उस की गति कहां होती है और उपपात कहां होता है ? अहो गौतम ! जैसे चरम परम देवावास का कहा वैसे ही यहां जानना. ऐसे ही स्थनित कुमारावास तक कहना वैसे ही ज्योतिषी वैमानिक का जानना + ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नरक में उत्पन्न होते नारकी को कैसी शीघ्र-

÷ भावितात्मा अनगार वैमानिक सिवाय अन्य स्थान उत्पन्न नहीं होते हैं तो यहां भुवनपति ज्योतिषी का कैसे कथन किया ! ऐसा कोई प्रश्न करे तो पूर्व काल में भावितात्मा अनगार थे परंतु संयम विराधना से विराधित होगये होवे तो वे असुरकुमारादि भुवनपति मे उत्पन्न हो सकते है. और इस अपेक्षा से यह ग्रहण किया है.

तरुण ब० बलवन्त जु० युगवाला जा० यावत् णि० निपुण सि० शिल्प शास्त्र अ० ज्ञाता आ० संकोचकर बा० हस्त प०प्रसारे प०प्रसार कर बा०हस्त आ० संकोचकरे वि० प्रसारी हुई मु०मुष्टि को सा० संकोचकरे सा० संकोचकर मु० मुष्टि को वि० प्रसारे उ० खुली अ० आंख को णि० बंधकरे णि० बंधकरी हुई अ०

गोयमा ! से जहा णामए केइ पुरिसे तरुणे बलवं जुगवं जाव णिउणसिप्पोवगए आउंटियं बाहं पसारेज्जा, पसारियं बाहं आउंटेज्जा, विकिण्णिवा मुट्ठिं साहारेज्जा,

गति है कैसा शीघ्रगति का विषय है ? अहो गौतम ! जैसे चौथा आरा का उत्पन्न कोई पुरुष युवान, बलवन्त यावत् शिल्प कलामें निपुण होता है वह संकुचित की हुइ भुजाको लम्बी करे लम्बी की हुई भुजाको संकुचित करे, बंध मुष्टि को खुली करे और खुली मुष्टि को बंध करे, बंध चक्षु को खुल्ले करे और खुल्ले चक्षु बंध करे. उन की जैसी शीघ्र गति होती है वैसी नारकी की नहीं होती है परंतु इस से अधिक शीघ्र-गति से नारकी नरक में उत्पन्न होते हैं; क्यों कि नारकी एक समय दो समय अथवा तीन समय में विग्रह गति से उत्पन्न होते हैं *. और संकुचन प्रसारण में असंख्यात समय व्यतीत होते हैं. यह नरक की

* भरत क्षेत्र की पूर्व दिशा का नारकी पश्चिम दिशा में उत्पन्न होता है तब एक समय में अधो दिशा में उत्पन्न होवे, दूसरे समय में तीर्च्छा और तीसरे समय में वायव्यादि विदिशा में उत्पन्न होवे. क्योंकि प्रथम समय में अधःश्रेणी तरफ जाता है दूसरे समय में तीर्च्छा पश्चिम दिशा में जावे और तीसरे समय में तीर्च्छा वायव्यादि कोन में जाकर उत्पन्न होवे.

आंख को उ० खुलीकरे भ० होवे ए० ईस रूप णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी ए० एक समय में दु० दो समय में ति०तीन समय में वि०विग्रह से उ०उत्पन्न होते हैं णे०नारकी को त० तैसे सी० शीघ्र गति त० तैसे सी० शीघ्र गति वि० विषय प० प्ररूपा ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानीक ण० विशेष ए० एकेन्द्रिय को च० चार समय की वि० विग्रह भा० कहना से०शेष तं० तैसे॥३॥ सरल शब्दार्थ

साहरियंवा मुट्ठिं विक्खिरेज्जा, उम्मिसियंवा अच्छि णिम्मिसेज्जा, णिम्मिसियंवा अच्छि उम्मिसेज्जा, भवे एयारुवे ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ णेरइयाणं एगसमएणंवा दुसमएणवा, तिसमएणवा, विग्गहेणं उववज्जंति णेरईयाणं तहा सीहा गई, तहा सीहागइविसए पण्णत्ते ; एवं जाव वेमाणियाणं णवरं एगिंदियाणं चउसमइए विग्गहे भाणियव्वे

शीघ्रगति व शीघ्रगतिका विषय कहा ऐसे ही एकेन्द्रिय छोडकर वैमानिक पर्यंत का जानना एकेन्द्रिय को ÷

÷ एकेन्द्रिय की वक्रगति होती है तब प्रथम समय में त्रस नाडी के बाहिर विदिशा मे जाता है, दूसरे समय में अनुश्रेणी गमन से लोक मे प्रवेश करे, तीसरे समय में ऊर्ध्व गमन करे और चौथे समय मे त्रस नाडी से बाहिर नीकलकर दिशा में व्यवस्थित उपपात स्थान में जावे. ग्रथकार पांच समय भी कहते है. प्रथम समय में त्रस नाडी से बाहिर अधोलोक मे जावे, दूसरे समय में लोक में प्रदेश करे, तीसरे समय में ऊर्ध्व गमन करे, चौथे समय मे दिशा में जावे और पांचवे समय में उत्पत्ति स्थान में जावे.

सेसं तंचेव ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं अणंतरोववण्णगा परंपरोववण्णगा, अणंतर परंपर अणुववण्णगा? गोयमा ! णेरइयाणं अणंतरोववण्णगावि परंपरोववण्णगावि अनंतर परंपर अणुववण्णगावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव अणंतर परंपर अणुववण्णगावि ? गोयमा ! जेणं णेरइया पढमसमओववण्णगा तेणं नेरइया अणंतरोववण्णगा, जेणं णेरइया अपढम समओववण्णगा तेणं णेरइया परंपरोववण्णगा जेणं णेरइया विग्गहगइसमाववण्णगा तेणं णेरइया अणंतर परंपर अणुववण्णगा, से तेणट्ठेणं जाव अणुववण्णगावि एवं णिरंतरं जाव वेमाणिया ॥ ४ ॥ अणंतरोववण्णगाणं भंते ! णेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खमणुस्स देवाउयं पकरेंति ?

विग्रहगति करते चार समय लगते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अनंतर उत्पन्न हैं, परंपरा उत्पन्न हैं, अथवा अनंतर परंपरा दोनों अनुत्पन्न है ? अहो गौतम ! नारकी अनंतर उत्पन्न, परंपरा उत्पन्न व अनंतर परंपरा दोनों उत्पन्न नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि नारकी अनंतर उत्पन्न है यावत् अनंतर परंपरा उत्पन्न नहीं हैं ? अहो गौतम ! जो नारकी प्रथम समय में उत्पन्न होते हैं वे अनंतर उत्पन्न हैं, दूसरे समय में उत्पन्न होते हैं वे परंपरा उत्पन्न हैं और विग्रह गति से उत्पन्न होते हैं वे अनंतर परंपरा अनुत्पन्न हैं. ऐसे ही वैमानिक तक चौवीस दंडक का जानना ॥४॥ अब

गोयमा! णो णेरइयाउयं पकरेंति जाव णो देवाउयंपकरेंति॥५॥परंपरोववण्णगाणं भंते !
णेरइया किं णेरइयाउयं पकरेंति जाव देवाउयं पकरेंति? गोयमा! णो णेरइयाउयं पकरेंति,
तिरिक्ख जोणियाउयं पकरेंतिं, मणुस्साउयं पकरेंति, णो देवाउयं पकरेंति ॥ ६ ॥
अणंतर परंपर अणुववण्णगाणं भंते ! णेरइया किं णेरइयाउयं पुच्छा ? गोयमा !
णो णेरइयाउयं पकरेंति जाव णो देवाउयं पकरेंति ; एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं
पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया मणुस्साणय परंपरोववण्णगा चत्तारिवि आउयं बंधंति सेसं

आयुर्बंध कहते हैं. अहो भगवन् ! अनंतर उत्पन्न हुए नारकी क्या नरकायुष्य का बंध करते हैं तिर्यंच के आयुष्य का बंध करते हैं, मनुष्य के आयुष्य का बंध करते हैं अथवा देवता के आयुष्य का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! अनंतरोत्पन्न नारकी नरक का आयुष्य बांधे नहीं यावत् देव का आयुष्य बांधे नहीं क्यों कि उस अवस्था में वैसे अध्यवसाय का अभाव है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! परंपरा उत्पन्न नारकी क्या नारकी का अयुष्य बांधते हैं यावत् देव का आयुष्य बांधते हैं. ? अहो गौतम ! नारकी का आयुष्य नहीं बांधते हैं परंतु मनुष्य व तिर्यंच का आयुष्य बांधते हैं. और देवता का आयुष्य नहीं बांधते हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! अनंतर परंपरा अनुत्पन्न नारकी क्या नरक का आयुष्य बांधते हैं यावत् देवका आयुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! नरक का आयुष्य नहीं बांधते हैं यावत् देवका आयुष्य

तंचेव ॥ ७ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं अणंतरणिग्गया, परंपरणिग्गया, अणंतर परंपर अणिग्गया ? गोयमा ! णेरइया अणंतरणिग्गयावि जाव अणंतर परंपर अणिग्गयावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जाव अणिग्गयावि ? गोयमा ! जेणं णेरइया पढम समयणिग्गया तेणं णेरइया अणंतरणिग्गया, जेणं णेरइया अपढम समयणिग्गया तेणं णेरइया परंपरणिग्गया, जेणं णेरइया विग्गहगइसमावण्णगा, तेणं णेरइया अणंतर परंपर अणिग्गया, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अणिग्गयावि ॥ एवं जाव वेमाणिया ॥ ८ ॥

नहीं बांधते हैं ऐसे ही वैमानिक तक जानना. परंतु तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य परस्पर चारों का आयुष्य बांधते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अनंतर निर्गत है परंपरा निर्गत है अथवा अनंतर परंपरा निर्गत नहीं है ? अहो गौतम ! नारकी अनंतर निर्गत है, परंपरा निर्गत है और अनंतर परंपरा निर्गत दोनों नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी अनंतर निर्गत यावत् अनंतर परंपरा अनिर्गत है ? अहो गौतम ! जो नारकी प्रथम समय में नीकलते हैं वे नारकी अनंतर निर्गत कहाते हैं. जो नारकी अप्रथम समय में नीकलते हैं, वे परंपरा निर्गत कहाते हैं और जो विग्रह गतिवाले होते हैं वे अनंतर परंपरा अनिर्गत है. अहो गौतम ! इस कारन से यावत् अनिर्गत हैं.

अणंतर णिग्गयाणं भंते ! णेरइया किं णेरइयाउयं पकरेंति जाव देवाउयं पकरेंति ? गोयमा ! णो णेरइयाउयं पकरेंति जाव णो देवाउयं पकरेंति ॥ ९ ॥ परंपरणिग्गयाणं भंते ! णेरइया किं णेरइयाउयं पुच्छा ? गोयमा ! णेरइयाउयंपि पकरेंति जाव देवाउयंपि पकरेंति ॥ १० ॥ अणंतर परंपर अणिग्गयाणं भंते ! णेरइय पुच्छा? गोयमा ! णो णेरइयाउयं पकरेंति जाव णो देवाउयं पकरेंति णिरवसेसं जाव वेमाणिया ॥ ११ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं अणंतरखेदोववण्णगा परंपर खेदोववण्णगा

ऐसे ही वैमानिक तक जानना. ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! अनंतर निर्गत नारकी क्या नरक का आयुष्य बांधते हैं यावत् देवता का आयुष्य बांधते हैं? अहो गौतम ! नारकी का आयुष्य नहीं बांधते हैं यावत् देव का आयुष्य नहीं बांधते हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! परंपरा निर्गत नारकी क्या नरक का आयुष्य बांधते हैं. यावत् देव का आयुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! नारकी का आयुष्य बांधते यावत् देव का आयुष्य बांधते हैं. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! अनंतर परंपर अनिर्गत नारकी की पुच्छा ? अहो गौतम ! नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधे. जैसे नारकी का कहा वैसे वैमानिक तक चौविस दंडक का जानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अनंतर खेद [दुःख] में उत्पन्न हैं परंपरा दुःख

अणंतर परंपर खेदाणुववण्णगा ? गोयमा णेरइया एवं एएणं अभिलावेणं तंचेव चत्तारि दंडगा भाणियव्वा ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति । जाव विहरइ ॥ चउदसम-सयस्सय पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥१॥ * × ×

कइविहेणं भंते ! उम्मादे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तंजहा-जक्खा-वेसेय, मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं ॥ तत्थणं जे से जक्खावेसे सेणं सुहवेदण

में उत्पन्न हैं अथवा अनंतर परंपरा दुःख में अनुत्पन्न है ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार से उत्पन्न हैं: जिन का उत्पन्न होते प्रथम समय में दुःख उत्पन्न हुवा वे अनंतर खेद उत्पन्न है, जिन को प्रथम समय सिवा अन्य समय में दुःख उत्पन्न हुवा वे परंपरा खेद उत्पन्न और विग्रह गतिवाले दोनों प्रकार के खेद अनुत्पन्न हैं. इसका वर्णन पूर्वोक्त जैसे चौवीस ही दंडक आश्री जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य है यावत् विचरने लगे. यह चउदहवा शतक का प्रथम उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥१४॥१॥ ० ०

गत उद्देशे में अनंतरोत्पन्न नरकादिक की वक्तव्यता कही. नारकी मोहवंत होते हैं और मोह उन्माद कहाता है इसलिये आगे उन्माद का कथन करते है. अहो भगवन् ! उन्माद कितने प्रकार का कहा ? अहो गौतम ! उन्माद के दो भेद कहे हैं. १ यक्षावेश से और २ मोहनीय कर्म के उदय से. उस में मोहनीय कर्म के उदय से जो उन्माद होता है उस मे यक्षावेश का उन्माद सुख से वेदा जावे वैसा है और

तराए चेव, सुहाविमोयणतराए चेव ॥ तत्थणं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं सेणं दुहवेदणतराए चेव, दुहाविमोयणतराए चेव ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते ! कइविहे उम्मादे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते तंजहा-जक्खावेसेय; मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ-णेरइयाणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते ? जक्खावेसेय, मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! देवे वा से असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, सेणं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खावेसेणं, उम्मादे पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्सवा कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणेज्जा, से तेणट्ठेणं

सुख से छोडा जावे वैसा है. और मोहनीय कर्म के उदाय से जो उन्माद होता है वह दुःख से वेदा जावे वैसा है और दुःख से छोडा जावे वैसा है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने उन्माद कहे हैं ? अहो गौतम ! नारकी को दोनों प्रकार का उन्माद कहा है. १ यक्षावेश से व २ मोहनीय कर्म के उदय से. अहो भगवन् ! नारकी को दोनों प्रकार का उन्माद किस कारन से कहा है ? अहो गौतम ? देवताओं उन नारकी पर अशुभ पुद्गलों का प्रक्षेप करे. उन असुभ पुद्गलों के प्रक्षेप से यक्षावेश उन्माद को नारकी प्राप्त होते हैं. और मोहनीय कर्म के उदय से मोहनीय कर्म के उन्माद को प्राप्त होते हैं.

जाव उदएणं ॥ २ ॥ असुर कुमाराणं भंते ! कइविहे उम्मादे पण्णत्ते ? एवं जहेव णेरइयाणं णवरं देवेवासे महिड्डियतराए चेव असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, तेणं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खावेसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्सवा सेसं तंचेव से तेणट्ठेणं जाव उदएणं ॥ एवं जाव थणिय कुमाराणं, पुढवि काइयाणं, जाव मणुस्साणं एएसिं जहा णेरइयाणं ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥ ३ ॥ अत्थिणं भंते ! पज्जण्णे कालवासी वुट्ठिकायं पकरेति ?

अहो गौतम ! इन कारनों से नारकी दोनों उन्माद को प्राप्त होते हैं. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार को कितने उन्माद कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे नारकी का कहा वैसे ही असुर कुमार का जानना. इस में महर्द्धिक देव अशुभ पुद्गल डाले इस से अशुभ पुद्गल प्रक्षेप कराया हुवा यक्षावेश से उन्माद और दूसरा मोहनीय कर्म के उदय से होता. है. ऐसे ही स्थनित कुमार तक कहना. पृथ्वीकाया यावत् मनुष्य का नारकी जैसे कहना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे कहना ॥ ३ ॥ मोहउदय से देव वृष्टि भी करते हैं. अहो भगवन् ! क्या मेघ वर्षा काल में वर्षा करता है अथवा इन्द्र वर्षा काल की तरह वृष्टि करता है ? हां गौतम ! वर्षा काल में वर्षा होती है और इन्द्र भी वर्षा करता है. अहो भगवन् ! जब शक्र देवेन्द्र वृष्टि करने का कामी होता है तब कैसे करता है ?

हंता अत्थि ॥ जाहेणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं काउं कामे भवइ से कहमियाणं पकरेइ ? गोयमा ! ताहे चेवणं सक्के देविंदे देवराया अब्भितर परिसाए देवे सद्दावेइ , तएणं ते अब्भितर परिसगा देवा सद्दाविया समाणा मज्झिम परिसाए देवे सद्दावेंति, तएणं ते मज्झिम परिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिर परिसाए देवे सद्दावेंति, तएणं ते बाहिर परिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिर बाहिरिगा देवा सद्दावेंति, तएणं ते बाहिरि बाहिरिगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेंति, तएणं ते जाव सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाइए देवे सद्दावेंति, तएणं ते वुट्ठिकाइया देवा सद्दाविया समाणा वुट्ठिकायं पकरेंति ; एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं पकरेति ॥ ४ ॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमारावि देवा

अहो गौतम ! जब शक्र देवेन्द्र वृष्टि करने का कामी होता है तब आभ्यतंर परिषदा के देवों को बोलाता है आभ्यंतर परिषदा वाले मध्यम परिषदा के देवों को बोलाते हैं. मध्यम परिषदा वाले बाहिर की परिषदा के देवों को बोलाते हैं बाहिर की परिषदा वाले देवों आभियोगिक देवता को बोलाते हैं और आभियोगिक देवता वृष्टि करने वाले देवों को बोलाते हैं उस समय में वे वृष्टि कायदेव बोलाये हुवे

वुट्ठिकायं पकरेंति ? हंता अत्थि ॥ किं पत्तियण्णं भंते ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंता एएसिणं जम्मणमहिमासुवा, णिक्खमण महिमासुवा णाणुप्पाय महिमासुवा, परिणिव्वाण महिमासुवा, एवं खलु असुरकुमारा देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ॥ एवं णागकुमाराविं, एवं जाव थणियकुमारा, वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया एवं चेव ॥ ५ ॥ जाहेणं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुकायं काउं कामे भवइ, से कहमिदाणिं पकरेति ? गोयमा ! ताहे चेवणं ईसाणे देविंदे देवराया आब्भितर परिसाए देवे सद्दावेइ, तएणं ते अब्भितर परिसगादेवा सद्दाविया

वर्षा करते हैं ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देव क्या वृष्टि करते हैं ? हां गौतम ! असुर कुमार देव वृष्टि करते हैं अहो भगवन् ! किस कारन से असुर कुमार देव वृष्टि करते हैं ? अहो गौतम ! जो यहां अरिहंत भगवंत होते हैं उन के जन्म महोत्सव, दीक्षा महोत्सव, ज्ञानोत्सव और निर्वाण महोत्सव में असुर कुमार देव वृष्टि करते हैं ऐसे ही नाग कुमार यावत् स्थनित कुमार, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का भी जानना. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जब ईशानेन्द्र तमस्काय करने को कामी होवे तब वह क्या करता है अहो गौतम ! ईशान देवेन्द्र आभ्यंतर परिषदा के देवों को बोलाता है वगैरह जैसे शक्रेन्द्र का कहा वैसे

समाणा एवं जहेव सक्कस्स जाव तएणं ते आभिओगिया देवा सद्दाविया समाणा तमुकाइए देवे सद्दावेंति, तएणं ते तमुकाइया देवा सद्दाविया समाणा तमुकायं पकरेंति एवं खलु गोयमा ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुकायं पकरेइ ॥ ६ ॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमारा देवा तमुकायं पकरेंति ? हंता अत्थि ॥ किं पत्तियण्णं भंते ! असुर कुमारा देवा तमुकायं पकरेंति ? गोयमा ! किड्डारतिपत्तियं वा पडिणीयविमोहणट्ठ-याए गुत्तीसंरक्खणहेओवा अप्पणोवा सरीरपच्छायणट्ठयाए ॥ एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा तमुकायं पकरेंति ॥ एवं जाव वेमाणिया ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥

ही यावत् आभियोगिक देवों को बोलाते हैं और वे तमस्काय देवों को बोलाते हैं. अहो गौतम ! इस तरह ईशानेन्द्र तमस्काय करता है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार क्या तमस्काय करते हैं ? हां गौतम ! असुरकुमार देव तमस्काय करते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से असुरकुमार देव तम-स्काय करते हैं ? अहो गौतम ! क्रीडा करने के लिये, रति, आनंद सुख भोगने के लिये, शत्रु को विमोह उत्पन्न करने के लिये, द्रव्य का संरक्षण करने के लिये, अथवा अपना शरीर छिपाने के लिये असुरकुमार देव तमस्काय करते हैं. ऐसे ही वैमानिक तक जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन

चउद्दसम सयस्सय बितिओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ २ ॥ :०: :०:

देवेणं भंते ! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइया वीईवएज्जा अत्थेगइया णो वीईवएज्जा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अत्थेगइया वीईवएज्जा अत्थेगइया णो वीईवएज्जा ? गोयमा ! देवा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा मायीमिच्छदिट्ठीउववण्णगाय, अमायीसम्मादिट्ठीउववण्णगाय । तत्थणं जेसे मायीमिच्छादिट्ठी उववण्णए देवे, सेणं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासइत्ता णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं

सत्य हैं. यह चउदहवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ २ ॥ ० ०

दूसरे उद्देशे में देव व्यतिकर कहा. आगे इस उद्देशे में भी वैसा ही कहते हैं. अहो भगवन् ! महा कायावाला और महा शरीरवाला देव क्या भावितात्मा अनगार की बीच में होकर जा सकता है ? अहो गौतम ! कितनेक देव जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि कितनेक देव जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं ? अहो गौतम ! देव दो प्रकार के कहे हैं. १ मायी मिथ्यादृष्टि और २ अमायी समदृष्टि. इन में जो मायी मिथ्यादृष्टि देव है,

देवयं जाव पज्जुवासइ, सेणं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ॥ तत्थणं जेसे अमायी सम्मादिट्ठी उववण्णए देवे, सेणं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासइत्ता वंदइ णमंसइ जाव पज्जुवासइ, सेणं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं णो वीईवएज्जा. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव णो वीईवएज्जा ॥ १ ॥ असुर कुमारेणं भंते ! महाकाए महासरीरे एवं चेव ॥ एवं देव दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणिए ॥ २ ॥ अत्थिणं भंते ! णेरइयाणं-सक्कारेइवा, सम्माणेइवा, किइकम्मेइवा, अब्भुट्ठाणेइवा, अंजलिपग्गहेइवा, आसणाभिग्गहेइवा, आसणाणुप्पदाणेइवा इंतस्स

वे भावितात्मा अनगार को देखकर वंदना पूजा, सत्कार, सन्मान करे नहीं, वैसे ही कल्याणकारी, मंगलकारी, देव तुल्य, ज्ञानवन्त जाने नहीं और सेवा भक्ति करे नहीं. वे देवता भावितात्मा अनगार की बीच में होकर जा सकते हैं. और जो देव अमायी समदृष्टि होते हैं वे भावितात्मा अनगार को "देखकर वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करने से भावितात्मा अनगार की बीच में होकर नहीं आते हैं. अहो गौतम ! इस कारनसे ऐसा कहा गया है कि, कितनेक देव व्यतिक्रमे और कितनेक देव व्यतिक्रमे नहीं ॥ १ ॥ अहो गौतम ! महा काया व महाशरीरवाला असुर कुमार देव का वैसे ही जानना. ऐसे ही देव दंडक वैमानिक तक कहना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को परस्पर सत्कार, सन्मान देना, कृतिकर्म

पच्चुगच्छणया ठियस्सपज्जुवासणया गच्छंतस्स पडिसंसाहणता ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ ३ ॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं सक्कारेइवा सम्माणेइवा जाव पडिसंसाहणया ? हंता अत्थि, जाव थणियकुमाराणं ॥ ४ ॥ पुढवीकाइयाणं जाव चउरिंदियाणं, एएसिं जहा णेरइयाणं ॥ ५ ॥ अत्थिण भंते ! पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं सक्कारेइवा जाव पडिसंसाहणया ? हंता अत्थि. णो चेवणं आसणाभिग्गहेइवा आसणाणुप्पदाणेइवा ॥ ६ ॥ मणुस्साणं जाव वेमाणियाण जहा असुरकुमाराणं ॥ ७ ॥ अप्पाड्ढि

करना, आने पर खडे होना, हस्त जोडना, आसन का आमंत्रण करना, आसन बिछाना, आये हुवे की सन्मुख जाना, बैठेहुवे की सेवा भक्ति करना, और जाते हुवे को पहुंचाने का क्या है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वैसा नहीं कर सकते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार देव को क्या परस्पर सत्कार सन्मान यावत् जाते हुवे को पहुंचाने का क्या है ? हां गौतम ! वैसा है. ऐसे ही स्थनित कुमार का जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकायादि पांच स्थावर और द्विइन्द्रिय, तीइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का नारकी जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! पंचेंद्रिय तिर्यंच को सत्कार सन्मान यावत् जाते को पहुंचाने का क्या है ? हां गौतम ! वैसा है परंतु आसन की निमंत्रणा करने का व आसन बिछाने का तिर्यंच को नहीं होता है ॥ ६ ॥ मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे कहना ॥ ७ ॥

एणं भंते ! देवे महड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥८॥ समड्ढिएणं भंते ! देवे समड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ? णोइणट्ठे समट्ठे; पमत्तं पुण वीईवएज्जा ॥ सेणं भंते ! किं सत्थेणं अक्कमित्ता पभू अणक्कमित्ता पभू ? गोयमा ! अक्कमित्ता पभू णो अणक्कमित्ता पभू ॥ सेणं भंते ! किं पुव्विं सत्थेणं अक्कमित्ता पच्छा वीईवएज्जा, पुव्विं वीईवएज्जा पच्छा सत्थेणं अक्कमेज्जा ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा दसमसए आइड्ढी उद्देसए तहेव णिरवसेसं चत्तारि दंडगा

अहो भगवन् ! अल्प ऋद्धिवाला देव महर्द्धिक देव की मध्य में होकर जाने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! समऋद्धिवाला देव समऋद्धिवाला देव की बीच में होकर जाने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. परंतु प्रमाद वश यदि वह देव होवे तो जा सकता है. अहो भगवन् ! क्या शस्त्र से घात करके जा सकता है या विना घात किये जा सकता है ? अहो गौतम ! शस्त्र से घात कर जा सकता है परंतु विना घात किये नहीं जा सकता है. अहो भगवन् ! क्या वह पहिले घात कर पीछे जाता है या पहिले जाकर पीछे घात करता है ? अहो गौतम ! पहिले घात कर पीछे जा सकता है परंतु घात किये विना नहीं जा सकता है, इसका विशेष वर्णन दशवे शतक के तीसरे उद्देश में कहा है वैसे ही यहां चारों दंडक के एकेक दंडक में तीन

भाणियव्वा जाव महाड्डियावेमाणिणी अप्पड्डिया वेमाणिणीए ॥ ९ ॥ रयणप्पभा पुढवी णेरइयाणं भंते ! केरिसयं पोग्गलपरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं ॥ एवं जाव अहे सत्तमा पुढवी ॥ णेरइया एवं वेयणापरिणामं, एवं जहा जीवाभिगमे बितिए णेरइए उद्देसए जाव अहे सत्तमापुढवी ॥ १० ॥ णेरइयाणं भंते ! केरिसयं परिग्गहसण्णापरिणामं जाव पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं ॥ ११ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ चउद्दसम सयस्सय तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ ३ ॥

आलापक कहना. यावत् महर्द्धिक वैमानिक की देवी अल्पऋद्धिवाला वैमानिक देवी की बीच में होकर जा सकती है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसा पुद्गल परिणाम अनुभवते हुवे विचरते हैं ? अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमणाम पुद्गल परिणाम अनुभवते हुवे विचरते हैं. ऐसे ही सातवी पृथ्वी का जानना. ऐसे ही नारकी का वेदना परिणाम वगैरह जैसे जीवाभिगम के दूसरे नरक उद्देशे में कहा है वैसे ही यहां कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! नारकी कैसी परिग्रह संज्ञा अनुभवते हुवे विचरते हैं ? अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमणाम परिग्रह संज्ञा परिणाम अनुभवते हुवे विचरते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह चौउदहवा शतक का तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ ३ ॥

एसणं भंते ! पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं लुक्खी समयं, अलुक्खी समयं, लुक्खीवा अलुक्खीवा. पुव्विं चणं करणेणं अणेगवण्णं अणेगरूवं परिणामं परिणमइ, अहेसे परिणामे णिज्जिण्णे भवइ. तओ पच्छा एगवण्णे एगरूवे सिया ? हंता गोयमा ! एसणं पोग्गले तीतं तंचेव जाव एगरूवे सिया ॥ १ ॥ एसणं

तीसरे उद्देशे में पुद्गल परिणाम कहा आगे चौथे उद्देशे में भी पुद्गल काही कथन करते हैं. अहो भगवन् ! यह पुद्गल परमाणु अथवा स्कंधरूप अनंत अतीत काल में परिणाम से, तथा शाश्वत में अक्षय से, समय काल में एकसमय पर्यंत रूक्ष स्पर्श से, तथा एक समय स्निग्ध स्पर्श वंत हुवा तथा समय में ही रूक्ष तथा स्निग्ध रूक्ष दोनों स्पर्शवंत हुवा एक वर्णादि परिणाम से प्रथम प्रयोग करण से तथा वीस्रसा करण से अनेक वर्ण कृष्ण नीलादि वर्णों के भेद से अनेक रूप गंध रस स्पर्श व संस्थान के भेदों से परिणाम के पर्याय परिणमे अतीत काल विषम काल पना से परिणमा हुवा ऐसा कहना. अब अनंतर वह परमाणु अथवा स्कंध का अनेक वर्णादि परिणाम क्षीण होता है तब फीर निर्जरण के अनंत २ एक वर्ण एक रूप विवक्षित गंधादि पर्याय की अपेक्षा से पर पर्याय के त्याग से ऐसा पुद्गल क्या हुवा ? हां गौतम ! यह पुद्गल अतीत काल में यावत् एक रूप होवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! वर्तमान काल में शाश्वत समय में यावत्

भंते ! पडुप्पण्णं सासयं समयं एवं चेव । एवं अणागयमणंतंपि ॥२॥ एसणं भंते ! खंधे तीतमणंतं एवं चेव । खंधेवि जहा पोग्गले ॥३॥ एसणं भंते ! जीवे तीतमणंतं. सासयं समयं दुक्खी समयं अदुक्खी समयं दुक्खीवा अदुक्खीवा, पुव्विचणं करणेणं अणेगभावं अणेगभूतं परिणामं परिणमइ । अहे सविय णिज्जिण्णे भवइ, तओ पच्छा एगभावे एगभूते सिया ? हंता गोयमा ! एसणं जीव जाव एगभूए

एक रूप क्या होवे ? हां गौतम ! वैसा होवे वगैरह अतीत काल जैसे कहना. अनागत का भी वैसे ही जानना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! यह स्कंध अतीत काल यावत् एक रूप होवे ? अहो गौतम जैसे पुद्गल का कहा वैसे ही स्कंध का जानना. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! प्रत्यक्ष जीव अतीत अनंत शाश्वत समय में एक समय दुःखी दुःख हेतु योग से एक समय सुखी सुख हेतु योग से एक समय में सुखी दुःखी दोनों के हेतु से एक परिणाम से प्रथमहीज काल स्वभाव करण करके जिस में दुःखादि रूप पर्याय है वह अनेक भाव परिणाम को अनेक भाव पना से अनेक पना से अनेक रूप परिणाम स्वभाव को परिणमे यह अतीत काल विषय से परिणमा. अब अनेक भाव हेतु भूत वेदनीय कर्म के उपलक्षण से ज्ञानावरणीयादि कर्म भी क्षीण होवे तब फीर एक भाव सांसारिक सुख विपर्याय से स्वभाव से सुखरूप से एक रूप पने को क्या प्राप्त हुए ? हां गौतम ! यह जीव यावत् एकी भावपना प्राप्त हुए वहां तक कहना. ऐसे ही वर्तमान

सिया ॥ एवं पडुप्पण्णं सासयं समयं, एवं अणागयमणंतं सासयं समयं ॥४॥ परमाणु पोग्गलेणं भंते! सासए असासए ? गोयमा! सिय सासए सिय असासए। सेकेण-ट्ठेणं भंते; एवं वुच्चइ-सिय सासए सिय असासए ? गोयमा! दव्वट्ठयाए सासए वण्णपज्जवेहिं जाव फासपज्जवेहिं असासए, से तेणट्ठेणं जाव सिय असासए ॥ ५ ॥ परमाणुपोग्गलेणं भंते! किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा! दव्वादेसेणं णो चरिमे

काल शाश्वत समय में वगैरह सब कहना और इस प्रकार आगामिक काल अनंत में भी शाश्वत समय में इत्यादि कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! क्या परमाणु पुद्गल शाश्वत है या अशाश्वत है ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल क्वचित् शाश्वत और क्वचित् अशाश्वत है. अहो भगवन् ! किस कारन से परमाणु पुद्गल क्वचित् शाश्वत व क्वचित् अशाश्वत है ? अहो गौतम ! द्रव्य पर्याय से शाश्वत है और वर्ण पर्याय यावत् स्पर्श पर्याय की अपेक्षा से अशाश्वत है. इसलिये अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल क्वचित् शाश्वत व क्वचित् अशाश्वत है. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या परमाणु चरिम है या अचरिम है ? अहो गौतम !

[1] जो परमाणु जिस भाव से च्युत हुवा उसी भाव को पुनः प्राप्त न होवे; वह परमाणु उस भाव की अपेक्षा से चरिम कहा जाता है और इस से प्रतिपक्षी अचरिम कहाता है.

अचरिमे, खेत्तादेसेणं सिय चरिमे सिय अचरिमे, कालादेसेणं सिय चरिमे सिय अचरिमे, भावादेसेणं सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ ६ ॥ कइविहेणं भंते ! परिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते, तंजहा जीव परिणामेय अजीव परिणामेय एवं अजीवपरिणामपयं णिरवसेसं भाणियव्वं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ चउद्दस सयस्सय चउत्थओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ ४ ॥

णेरइयाणं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए वीईवएज्जा अत्थेगइए णो वीईवएज्जा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अत्थेगइए

द्रव्य आश्री चरिम नहीं है परंतु अचरिम है, क्षेत्र आश्री क्वचित् चरिम क्वचित् अचरिम, काल आश्री क्वचित् चरिम क्वचित् अचरिम, भाव आश्री क्वचित् चरिम क्वचित् अचरिम है. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! परिणाम के दो भेद कहे हैं जीव परिणाम और अजीव परिणाम ऐसे पन्नवणा पद का परिणाम पद यहां जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चौदहवा शतक का चतुर्थ उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ ४ ॥ ० ० ०

गत उद्देशे में परिणाम का अधिकार कहा. अब इस उद्देशे में, परिणाम के अधिकार से व्यतिव्रजादिक

त्र

वीईवएज्जा अत्थेगइए णो वीईवएज्जा ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा विग्गहगइ समावण्णगाय. अविग्गहगइ समावण्णगाय ॥ तत्थणं जे से विग्गहगइ समावण्णए णेरइए सेणं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा, सेणं तत्थ झियाएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे. णो खलु तत्थ सत्थं कमइ । तत्थणं जे से अविग्गहगइ समावण्णए, णेरइए सेणं अगणिकायस्स मज्झं मज्झेणं णो वीईवएज्जा.

ार्थ

विचित्र परिणाम केलिये पांचवा उद्देशा कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या नारकी अग्निकाय की बीच में होकर जा सकते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक नारकी जासकते हैं और कितनेक नारकी नहीं जासकते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा जाता है कि कितनेक नारकी अग्निकाय की बीच में होकर जासकते हैं और कितनेक नहीं जासकते हैं ? अहो गौतम ! नारकी दो प्रकार के कहे हैं विग्रहगति वाले और अविग्रहगति वाले. उनमें जो विग्रहगति वाले हैं वे अग्निकाय की बीचमें होकर जासकते हैं तब क्या वे वहां अग्नि में जलते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों की उन को शस्त्र का आक्रमण नहीं होता है. और जो अविग्रहगति वाले हैं वे नारकी अग्निकाय की बीच में होकर नहीं जा सकते हैं. अहो गौतम ! इस कारन से ऐसा कहा गया है कि कितनेक नारकी अग्निकाया की बीच में

से तेणट्ठेणं णो वीईवएज्जा ॥ १ ॥ असुरकुमारेणं भंते! अगणिकाय पुच्छा? गोयमा! अत्थेगइए वीईवएज्जा, अत्थेगइए णो वीईवएज्जा ॥ से केणट्ठेणं जाव णो वीईवएज्जा? गोयमा! असुरकुमारा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-विग्गहगइ समावण्णगाय, अविग्गहगइ समावण्णगाय ॥ तत्थणं जेसे विग्गहगइ समावण्णए असुरकुमारे सेणं जहेव णेरइए जाव कमइ, तत्थणं जे से अविग्गहगइसमावण्णए असुरकुमारे सेणं अत्थेगइए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा, अत्थेगइए णो वीईवएज्जा, जेणं वीईवएज्जा सेणं तत्थ झियाएज्जा? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ णो खलु तत्थ सत्थं कमइ,

होकर जासकते हैं और कितनेक नहीं जासकते हैं. ॥ १ ॥ अहो भगवन्! क्या असुरकुमार अग्नि काय की बीच में होकर जासकते हैं? अहो गौतम! कितनेक जासकते हैं और कितनेक नहीं जासकते हैं. अहो भगवन्! किन कारन से ऐसा कहा है कि कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं? अहो गौतम! असुरकुमार के दो भेद कहे हैं, विग्रहगतिवाले और अविग्रहगतिवाले. जो विग्रहगतिवाले हैं वे नरक की तरह अग्निकाया की बीच में से जा सकते हैं, और इस से जलते नहीं हैं, क्यों कि शस्त्र का आक्रमण उन को नहीं होता है. जो अविग्रहगतिवाले हैं उन में से कितनेक जा सकते हैं और कितनेक

से तेणट्ठेणं एवं जाव थणियकुमारा॥ एगिंदिया जहा णेरइया ॥ बेइंदियाणं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं जहा असुरकुमारे तहा बेइंदिएवि, णवरं जेणं वीईवएज्जा सेणं तत्थ ज्झियाएज्जा ? हंता ज्झियाएज्जा, सेसं तंचेव जाव चउरिंदिया ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएणं भंते ! अगणिकाय पुच्छा ? गोयमा ! अत्थेगइए वीईवएज्जा, अत्थेगइए 'णो वीईवएज्जा, ॥ से केणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा विग्गहगइ समावण्णगाय अविग्गहगइसमावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णए जहेव णेरइए जाव णो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥ अविग्गह

नहीं जा सकते हैं. और जो जा सकते हैं वे अग्निकाया में जलते नहीं हैं. अहो गौतम ! इस कारन से कितनेक असुर कुमार अग्निकाया में जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. ऐसे ही स्थनित कुमार तक कहना. एकेन्द्रिय का नारकी जैसे कहना. बेइन्द्रिय का असुर कुमार जैसे कहना परंतु इन में जो अग्निकाया की बीच में होकर जाते हैं वे उस में जलते हैं. बेइन्द्रिय जैसे तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना. पंचेन्द्रिय तिर्यंच की पृच्छा ? अहो गौतम ! कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं ?

गइ समावण्णगा पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-इड्ढिप्पत्ताय अणिड्ढिप्पत्ताय ॥ तत्थणं जे से इड्ढिप्पत्ते पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएणं सेणं अत्थेगइए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा, अत्थेगइए णो वीयीवएज्जा । जेणं वीईवएज्जा, सेणं तत्थ ज्झियाएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे । णो खलु तत्थ सत्थं कमइ, तत्थणं जे से अणिड्ढिप्पत्ते पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिए सेणं अत्थेगइए अगणिकायस्स मज्झं मज्झेणं वीईवएज्जा, अत्थेगइए णो वीईवएज्जा जेणं वीईवएज्जा सेणं तत्थ ज्झियाएज्जा? हंता ज्झियाएज्जा- से तेणट्ठेणं जाव णो ज्झियाएज्जा । एवं मणुस्सेवि ॥ वाणमंतर

अहो गौतम ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच के दो भेद कहे हैं विग्रह गतिवाले और अविग्रह गतिवाले. विग्रह-गतिवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय का नारकी जैसे कहना. और अविग्रह गतिवाले के दो भेद ऋद्धिवाले और ऋद्धि रहित. उन में ऋद्धिवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. जो जा सकते हैं वे वहां जलते नहीं हैं क्यों कि उन को शस्त्र नहीं लगता है और जो ऋद्धि रहित हैं उन में से कितनेक अग्निकाया की बीच में होकर जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. जो जा सकते हैं वे वहां जलते हैं. अहो गौतम ! इस कारन से ऐसा कहा गया है कि कितनेक जा सकते हैं

ओइसियमेमाणिए जहा असुरकुमारे ॥ २ ॥ णेरइया दसट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा-अणिट्ठा सद्दा, अणिट्ठा रूवा, अणिट्ठा गंधा, अणिट्ठा रसा, अणिट्ठा फासा अणिट्ठागई, अणिट्ठाठिई, अणिट्ठे लायण्णे, अणिट्ठे जसोकित्ति, अणिट्ठे उट्ठाण कम्मबलवीरिय पुरिसक्कार परक्कमे ॥ ३ ॥ असुरकुमारा दसट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा-इट्ठा सद्दा, इट्ठा रूवा, जाव इट्ठे उट्ठाणकम्मबलवीरिय पुरिसक्कार परिक्कमे, एवं जाव थणियकुमारा ॥४॥ पुढवीकाइया छट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तंजहा-इट्ठाणिट्ठ फासा, इट्ठाणिट्ठगई, एवं जाव परक्कमे ॥ एवं जाव वणस्सइ काइया ॥

और कितनेक नहीं जा सकते हैं. तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे मनुष्य का कहना. वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का असुरकुमार जैसे कहना ॥ २ ॥ नारकी दश स्थान अनुभवते हुवे विचरते हैं. १ अनिष्ट शब्द, २ अनिष्ट रूप, ३ अनिष्ट गंध, ४ अनिष्ट रस, ५ अनिष्ट स्पर्श, ६ अनिष्ट गति, ७ अनिष्ट स्थिति, ८ अनिष्ट लावण्य, ९ अनिष्ट यशोकीर्ति और १० अनिष्ट उत्थान कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम ॥३॥ असुरकुमार दश स्थान अनुभवते हुवे रहते हैं. इष्ट शब्द इष्ट रूप यावत् इष्ट उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रम. ऐसे ही स्थनित कुमार तक दश भुवनपतियों का जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकाय छ स्थान

बेइंदिया सत्तट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा-इट्ठाणिट्ठ रसा सेसं जहा एगिंदिया ॥ तेइंदिया अट्ठट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा-इट्ठाणिट्ठ गंधा सेसं जहा बेइंदियाणं ॥ चउरिंदियाणं नवट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा इट्ठाणिट्ठरूवा सेसा जहा तेइंदियाणं ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया दसट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति. तंजहा-इट्ठाणिट्ठ सद्दा जाव परक्कमे ॥ एवं मणुस्सावि ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥ ५ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू तिरियपव्वयंवा, तिरियभित्तिं, वा उल्लंघे-

अनुभवते हुवे विचरते हैं. इष्टाइष्ट स्पर्श इष्टाइष्ट गति यावत् इष्टाइष्ट उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रम ऐसे ही वनस्पतिकाया तक कहना. बेइन्द्रिय में सात, तेइन्द्रियमें आठ, चतुरेन्द्रिय में नव और तिर्यंच पंचेन्द्रियमें दश स्थान कहे हैं उनमें अनुक्रमसे रस, गंध, रूप व शब्दकी वृद्धि करना. मनुष्यका तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे कहना. वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का असुरकुमार जैसे कहना ॥५॥ अहो भगवन् महर्द्धिक यावत् महा सुखवाला देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना तीर्च्छा पर्वत या तीर्च्छी भीत उल्लंघने को क्या समर्थ है? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महा सुखवाला देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर

त्तएत्रा, पल्लंघेत्तएत्रा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ देवेणं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू तिरियं जाव पल्लंघेत्तएत्रा ? हंता पभू ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ चउद्दसम सयस्सय पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ ५ ॥ ० रायगिहे जाव एवं वयासी-णेरइयाणं भंते ! किमाहारा किं परिणामा किं जोणिया, किं ठिईया ? गोयमा ! णेरइयाणं पोग्गलाहारा पोग्गल परिणामा, पोग्गल जोणिया,

तीर्च्छा पर्वत अथवा तीर्च्छी भिंति क्या उल्लंघने को समर्थ है ? हां गौतम ! वह उल्लंघने को समर्थ है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चौदहवा शतक का पांचवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ ५ ॥

पांचवा उद्देशे में अग्नि का. य. का कथन किया. छठे उद्देशे में आहार का कथन करते हैं. राजगृही नगरी के गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पुछने लगे कि अहो भगवन् ! नरक के जीवों को कौनसा आहार है, आहार किये पीछे क्या परिणमन है, कैसी योनि (उत्पत्ति स्थान) है, और कैसी स्थिति है ? अहो गौतम ! नारकी को पुद्गल का आहार होता है पुद्गल का परिणमन होता है, शीत ऊष्णमय पुद्गल की योनि है, और आयुःकर्म रूप पुद्गल की स्थिति है. किस कारन से पुद्गल स्थिति होती है सो कहते हैं ज्ञानावरणियादि पुद्गल रूप को जाते हैं. नरक पना

पोग्गलट्ठिईया, कम्मोवगा, कम्मणिदाणा, कम्मट्ठिईया, कम्मुणा चेव विप्परियासमेंति, एवं जाव वेमाणिया ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं वीचिं दव्वाइं आहारेंति अवीचिं दव्वाइं आहारेंति ? गोयमा ! णेरइया वीचिदव्वाइंपि आहारेंति अवीचिदव्वाइंपि आहारेंति ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-णेरइया वीचि तंचेव आहारेंति ? गोयमा ! जेणं णेरइया एगपदेसूणाइंपि दव्वाइं आहारेंति तेणं णेरइया वीचिदव्वाइं आहारेंति, जेणं णेरइया पडिपुण्णाइं दव्वाइं आहारेंति, तेणं णेरइया अवीचिदव्वाइं आहारेंति,

निमित्त अथवा कर्म बंध निमित्त जिन को होता है सो कर्म निदान, कर्म पुद्गल से जिन को स्थिति है वे कर्म स्थितिवाले नारकी कर्म से ही पर्यायंतर को प्राप्त होते हैं. ऐसे ही वैमानिक तक जानना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी क्या वीचि द्रव्य का आहार करते हैं या अवीचि द्रव्य का आहार करते हैं ? अहो गौतम ! नारकी वीचिद्रव्य का भी आहार करते हैं और अवीचि द्रव्य का भी आहार करते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि नारकी वीचि द्रव्य का आहार करते हैं और अवीचि द्रव्य का भी आहार करते हैं ? अहो गौतम ! जिस द्रव्य का आहार करने का होवे उसमें एक प्रदेश की कमी रहजाय तो वीचि द्रव्य का आहार और संपूर्ण आहार करे तो अवीचि द्रव्य. अहो गौतम !

से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव आहारेंति ॥ एवं जाव वेमाणिया आहारेंति ॥ २ ॥ जाहेणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजित्तुकामे भवइ से कहमिदाणिं पकरेति ? गोयमा ! ताहे चेवणं से सक्के देविंदे देवराया एगं महं णेमि पडिरूवगं विउव्वइ, एगं जोयण सयसहस्सं आयाम विक्खंभेणं तिण्णि जोअणसय सहस्साइं जाव अद्धंगुलंच विसेसाहिए परिक्खेवेणं तस्सणं णेमि पाडिरूवस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, जाव मणीणं फासे; तस्सणं णेमि पडिरूवगस्स बहुमज्झदेसभागे तत्थणं महं एगं पासायवडिंसगं विउव्वति

इस कारन से ऐमा कहा गया है कि नारकी वीचि द्रव्य का आहार करते हैं और अवीचि द्रव्य का आहार भी करते हैं. ऐमे ही वैमानिक तक चौविस दंडक का जानना ॥ २ ॥ अब देवता के भोग आश्री प्रश्न पुछते हैं अहो भगवन् ! जब शक्र देवेन्द्र देवराजा दीव्य भोगोपभोग भोगने की वांच्छाकरे तब वह क्या करे ? अहो गौतम ! शक्र देवेन्द्र को भोगोपभोग भोगने की इच्छा होती है तब नेमी के आकार से गोल चक्र का वैक्रेय करते हैं उस की लम्बाइ चौडाइ एक लक्ष योजन की है ३१६२२७ जोजन ३१३॥अंगुल की परिधि है. उस नेमी के ऊपर बहुत बरावर नगारे के ऊपर के विभाग जैसा भूमिका

पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोअणसयाइं विक्खंभेणं, अब्भुग्गय मूसियवण्णओ जाव पडिरूवं ॥ तस्सणं पासाय वडिंसगस्स उल्लोए पउमलय भत्ति-चित्ते जाव पडिरूवे ॥ तस्सणं पासाय वडिंसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभाए, मणीणं फासो, मणिपेढिया, अट्ठ जोअणिया जहा वेमाणियाणं. तीसेणं मणिपेढियाए उवरिं एगं देवसयणिज्जे विउव्वइ, सयणिज्ज वण्णओ जाव पडिरूवे ॥ तत्थणं से सक्के देविंदे देवराया अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सद्धिं सपरिवाराहिय दोहिय अणिएहिं तंजहा-नट्टाणिएणय गंधव्वाणिएणय सद्धिं महयाहय णट्ट जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं

विभाग है यावत् मणि स्पर्श जैसा कोमल है. उस नेमी प्रतिरूपक के मध्य भाग में प्रासादों में मुकुट समान ऐसा एक प्रासाद का वैक्रेय करते हैं. वह पांचसो योजन का ऊंचा २५० योजन का चौडा है वह प्रासाद उच्छ्रित यावत् प्रतिरूप है. उस प्रासाद को उपर का तला पद्म व लता जैसा विचित्र यावत् प्रतिरूप है. उस प्रासाद की अंदर का भूमिभाग बहुत समरमणीय है मणि जैसा सुकुमाल स्पर्श वाला है, उस की मध्य में मणिपीठिका है. वह आठ योजन की लम्बी व चौडी है. उस मणि पीठिका के उपर एक देव शैय्या का वैक्रेय करते हैं वह वर्णन योग्य यावत् प्रति-रूप है. वहां पर शक्र देवेन्द्र अपने २ परिवारवाली आठ अग्रमहिषियों और नाटक करनेवाली व गायन

भुंजमाणे विहरइ ॥ जाहेणं ईसाणे देविंदे देवराया दिव्वाइं जहा सक्के तहा ईसाणेवि णिरवसेसं ॥ ४ ॥ एवं सणंकुमारेवि, णवरं पासाय वडिंसओ छजोअण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं तिण्णि जोअणसयाइं विक्खंभेणं मणिपेढिया तहेव अट्ठ जोअणिया, तीसेणं मणिपेढियाए उवरिं एत्थणं महेगं सीहासणं विउव्वइ सपरिवारं भाणियव्वं. तत्थणं सणंकुमारे देविंदे देवराया बावत्तारिए सामाणिय साहस्सी-एहिं जाव चउहिं बावत्तरीहिं आयरक्खदेव साहस्सीहिय, वहूहिं सणंकुमार कप्पवा-सीहिं वेमाणिएहिं देवेहिय सद्धिं संपरिवुडे महया जाव विहरइ ॥ एवं जहा सणंकुमारे

करनेवाली ऐसी दो सेना सहित अनेक प्रकार के नाट्य व गायन करते दीव्य भोग भोगवते हुवे रहते हैं. जैसे शक्रेन्द्र का कहा वैसे ही ईशानेन्द्र का जानना ॥ ४ ॥ सनत्कुमार का भी वैसे ही कहना परंतु इस में प्रासाद छ सो योजन के ऊंचे और तीन सो योजन के चौडे कहना. मणि पीठिका आठ योजन की कही. उस मणि पीठिका पर एक वडा सिंहासन की विकुर्वणा करके वहां सनत्कुमार देवेन्द्र ७२ हजार सामानिक २८८००० आत्म रक्षक और वहुत सनत्कुमारवासी देवों सहित परवरा हुवा यावत् रहता है. ऐसे ही जैसे सनत्कुमार का कहा वैसे ही प्राणत तक का कहना परंतु परिवार वगैरह जिन को जितना होवे उतना

रा० राजगृह में जा० यावत् परिषदा प० पीछीगइ गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवन्त ए०

तहा जाव पाणओ अच्चुओ, णवरं जो जस्स परिवारो सो तस्स भाणियव्वो, पासाय उच्चत्तं जं सएसु सएसु कप्पेसु विमाणाणं उच्चत्त अद्धद्धं वित्थारो जाव अच्चुयस्स णवजोअण सयाइं उद्धं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं जोअण सयाइं विक्खंभेणं, एत्थणं गोयमा ! अच्चुए देविंदे देवराया दसहिं सामाणिय साहस्सीहिं जाव विहरइ ॥ २ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ चउद्दसम सयस्सय छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ ६ ॥ *

रायगिहे जाव परिसा पडिगया, गोयमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं

कहना. प्रासादों की ऊंचाइ अपने २ देवलोक जितनी कहना और चौडाइ उस से आधि कहना. सनत्कुमार व माहेन्द्र के ६०० योजन के प्रासाद ऊंचे हैं, ब्रह्म व लंतक के ७०० योजन के शुक्र व सहस्रार के ८०० योजन के ऊंचे प्राणत व अच्युत के ९०० योजन के ऊंचे प्रासाद कहे हैं. यावत् अहो गौतम ! अच्युत देवेन्द्र दश हजार सामानिक देव व चालीस हजार आत्म रक्षक देव सहित दीव्य भोगोपभोग भोगते हुवे विचरते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चौदहवा शतक का छठा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ ६ ॥

० ० ०

छठे उद्देशे में इन्द्रों के भोगों का कथन किया. अब आगे तुल्य का अधिकार कहते हैं. राजगृह नगर

महावीर भ० भगवन्त गो० गौतम को आ० आमंत्रणकर ए० ऐसा व० बोले चि० चिरकाल से सं० संबंधीत है मे० मुझ से गो० गौतम चि० चिरकाल से सं० प्रशंसा करता है मे० मेरी गो० गौतम चि० चिरकाल से प० परिचित है मे० मुझ से गो० गौतम चि० चिरकाल से जु० सेवाकी है मे० मेरी गो० गौतम चि० चिरकाल से अ० अनुसरता है मे० मुझे गो० गौतम चि० चिरकाल से अ० अनुकरण करता है मे० मुझ गो० गौतम अ० अनंतर दे० देवलोक में अ० अनंतर मा० मनुष्य का भ० भव में किं० क्या प० विशेष म० मरण का० काया का भे० भेद इ० यहां से चु० चवकर दो० दोनों तु० तुल्य

आमंतेत्ता, एवं वयासी-चिरसंसिट्ठोसि मे गोयमा ! चिरसंथुतोसि मे गोयमा ! चिरपरिचितोसि मे गोयमा ! चिरंजुसिओसि मे गोयमा ! चिराणुगओसिमे गोयमा ! चिराणुवत्तीसिमे गोयमा ! अणंतरं देवलोए अणंतरं माणुस्सए भवे किं परं मरणकायस्स

के गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का उपदेश सुनकर परिषदा पीछी गइ. उस समय में गौतम स्वामी को केवल ज्ञान की प्राप्ति नहीं होने से खेदित हुए जानकर उन को संतुष्ट करने के लिये श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ने गौतम स्वामी को बोलाये और कहा कि अहो गौतम ! तुम्हारा मेरी साथ बहुत काल से संबंध है, तुमने बहुत काल से मेरी प्रशंसा की है, बहुत काल से देखने आदि से मेरी साथ परिचय है, बहुत काल से सेवा करते तुम मेरे विश्वास पात्र बने हुवे हो, बहुत काल से मेरी

ए० एक साथ अ० अविशेष आ० नाना प्रकार रहित भ० होवेंगे ॥१॥ सरल शब्दार्थ

भेदा इतो चुता दोवि तुल्ला एगट्ठा अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो, ॥ १ ॥ जहाणं भंते ! वयं एयमट्ठं जाणामो पासामो तहाणं अणुत्तरोववाइया देवा एयमट्ठं जाणंति पासंति ? हंता गोयमा ! जहाणं वयं एयमट्ठं जाणामो पासामो तहाणं अणुत्तरोववाइया देवा एयमट्ठं जाणंति पासंति ॥ से केणट्ठेणं जाव पासंति ? गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाणं अणंता मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ

पीछे चले आये हुवे हो, तुम मेरी अनुवृत्ति पालते हो अहो गौतम ! अंतर रहित देवताओं के व अंतर रहित मनुष्यों के भवों में और विशेष मे यहां से आयुष्य पूर्ण कर आगे अपने दोनों इस उदारिक पिण्ड का त्याग करके तुल्य, एक प्रयोजन वाले, विशेषता व नानात्व रहित होवेंगे ॥१॥ अहो भगवन् ! जैसे आप ज्ञान से और मैं आपके उपदेश से इस तरह अपन दोनों इस बात को जानते हैं वैसे ही क्या अनुत्तरोपपातिक देव क्या जानते हैं देखते हैं ? हां गौतम ! जैसे अपन जानते देखते हैं वैसे ही अनुत्तरोपपातिक देव इस अर्थ को जानते हैं. अहो भगवन् ! किस तरह अनुत्तरोपपातिक देव अपने जैसे जानते व देखते हैं ? अहो गौतम ! अनुत्तरोपपातिक देवोंको उस विषय में अवधिज्ञान की अपेक्षा से अनंत मनोद्रव्य वर्गणा

भवंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव पासंति ॥ २ ॥ कइ विहेणं भंते ! तुल्लए पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे तुल्लए पण्णत्ते, तंजहा-दव्वतुल्लए, खेत्ततुल्लए, कालतुल्लए, भवतुल्लए, भाव तुल्लए, संट्ठाण तुल्लए, ॥ ३ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ दव्व तुल्लए ? दव्व तुल्लए गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वओ तुल्ले, परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गल वइरित्तस्स दव्वओ णो तुल्ले, दुपदेसिए खंधे दुपदेसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, दुपदेसिए खंधे दुपदेसिय वइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ णो तुल्ले, एवं जाव दसपएसिए । तुल्लसंखेज्ज पएसिए खंधे, संखेज्ज पएसियस्स

भासहुई है इससे वे अपने जैसे अर्थ जानते हैं व देखते हैं. ॥२॥ अहो भगवन् ! तुल्य के कितने भेद कहे हैं. अहो गौतम ! तुल्य के छ भेद कहे हैं. १ द्रव्य तुल्य, २ क्षेत्र तुल्य, ३ काल तुल्य, ४ भव तुल्य ५ भाव तुल्य और ६ संठान तुल्य ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य तुल्य को द्रव्य तुल्य क्यों कहा ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल से परमाणु पुद्गल तुल्य है, और परमाणु पुद्गल से व्यतिरिक्त द्विप्रदेशात्मक स्कंध तुल्य नहीं हैं. द्विप्रदेशात्मक स्कंध द्विप्रदेशात्मक स्कंध की साथ द्रव्य से तुल्य है और द्विप्रदेशात्मक स्कंध अन्य की साथ तुल्य नहीं है ऐसे ही यावत् दश प्रदेशिक स्कंधका जानना. संख्यात प्रदेशिक स्कंधसे संख्यात प्रदेशिक

खंधस्स दव्वओ तुल्ले, संखेज पएसिए खंधे संखेज पएसिय वइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ णो तुल्ले, एवं तुल्ल असंखेज पएसिएवि ॥ एवं तुल्ल अणंत पएसिएवि ॥ से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ दव्वतुल्लए ॥ ४ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ खेत्त तुल्लए ? खेत्त तुल्लए गोयमा ! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढ वइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ णो तुल्ले ॥ एवं जाव दसपएसोगाढे, तुल्ल संखेज पएसोगाढेवि॥एवं तुल्ल असंखेज पएसोगाढेवि ॥ से तेणट्ठेणं जाव खेत्त तुल्लए ॥ ५ ॥ से केणट्ठेणं भंते !

स्कंध द्रव्य से तुल्य है और संख्यात प्रदेशिक स्कंध अन्य की साथ तुल्य नहीं है ऐसे ही असंख्यात प्रदेशिक स्कंध का व अनंत प्रदेशिक स्कंध का जानना. अहो गौतम ! इस कारन से द्रव्य तुल्य कहा है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! क्षेत्र तुल्य को क्षेत्र तुल्य क्यों कहा ? अहो गौतम ! एक प्रदेश अवगाह्य पुद्गल एक प्रदेश अवगाह्य पुद्गल की साथ क्षेत्र से तुल्य है और इस से अन्य की साथ क्षेत्र से तुल्य नहीं है. ऐसे ही दो तीन यावत् दश, संख्यात, व असंख्यात प्रदेश अवगाहित पुद्गल का जानना. अहो गौतम ! इस कारन से क्षेत्र तुल्य को क्षेत्र तुल्य कहा है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! काल तुल्य को काल तुल्य क्यों

एवं वुच्चइ काल तुल्लए? काल तुल्लए गोयमा! एग समय ट्ठिईए पोग्गले एग समयस्स ट्ठिईयस्स पोग्गलस्स कालओ तुल्ले. एगसमय ट्ठिईए पोग्गले एगसमय ट्ठिईय वइरित्तस्स कालओ णो तुल्ले एवं जाव दस समय ट्ठिईए ॥ तुल्ल संखेज्ज समय ट्ठिईए एवं चेव तुल्ल असंखेज्ज समय ट्ठिईएवि एवं चेव ॥ से तेणट्ठेणं जाव काल तुल्लए ॥ ६ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ- भवतुल्ले, ? भवतुल्ले गोयमा ! णेरइए णेरइयस्स भवट्ठयाए तुल्ले, णेरइए णेरइय वइरित्तस्स भवट्ठयाए णो तुल्लए; तिरिक्ख जोणिए एवं चेव ॥ एवं मणुस्सेवि ॥ एवं देवेवि ॥ से तेणट्ठेणं जाव भवतुल्ले ॥ ७ ॥

कहा ? अहो गौतम ! एक समय की स्थितिवाले पुद्गल से एक समय की स्थितिवाले पुद्गल काल से तुल्य है. और इस से अन्य की साथ तुल्य नहीं है. ऐसे ही दो तीन यावत् दश, संख्यात व असंख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गलों का जानना. अहो गौतम ! इस कारन से काल तुल्य को काल तुल्य कहा गया है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! भव तुल्य को भव तुल्य क्यों कहा ? अहो गौतम ! नारकी नारकी के भव से तुल्य है और अन्य से तुल्य नहीं है ऐसे ही तिर्यंच, मनुष्य व देव का जानना. अहो गौतम ! इस कारन से भव तुल्य को भव तुल्य कहा है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! भाव तुल्य को भाव तुल्य क्यों

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ भावतुल्ले ? भावतुल्ले गोयमा ! एगगुणकालए पोग्गले, एगगुणकालयस्स भावतुल्ले, एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालवइरित्तस्स पोग्गलस्स भावओ णो तुल्ले, एवं जाव दसगुणकालए, तुल्ल संखेज्जगुणकाल पोग्गले, तुल्ल असंखेज्जगुणकालएवि ॥ एवं तुल्ल अणतगुणकालएवि ॥ जहा कालए एवं णीलए, लोहियए, हालिद्दए, सुक्किल्लए, । एवं सुब्भिगंधे, एवं दुब्भिगंधे, । एवं तित्ते जाव महुरे । एवं कक्खडे जाव लुक्खे । उदइए भावे, उदइयस्स भावस्स भावओ तुल्ले, उदइय भाव वइरित्तस्स भावओ णो तुल्ले एवं उवसमिएवि ॥ खइए खओवसमिए ॥

कहा ? अहो गौतम ! एक गुन काला से एक गुन काला भाव से तुल्य है और एक गुन काला पुद्गल अन्य की साथ भाव मे तुल्य नहीं है. ऐसे ही दो तीन यावत् दश गुन काला पुद्गल संख्यात गुन काला पुद्गल, असंख्यात गुन काला पुद्गल व अनंत गुन काला पुद्गल का जानना. जैसे काला वर्ण का वर्णन किया वैसे ही नील, रक्त, पीत व शुक्ल का जानना. और ऐसे ही सुरभिगंध व दुरभिगंध, तिक्त यावत् मधुर पांच रस, कर्कश यावत् रूक्ष यों आठ स्पर्श का जानना. औदयिक भाव औदयिक भाव की साथ भाव से तुल्य है, औपशमिक औपशमिक की साथ तुल्य है, क्षयोपशमिक क्षयो-

परिणामिए सण्णिवाइए भावे, सण्णिवाइयस्स भावस्स; से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-भाव तुल्लए भाव तुल्लए ॥ ८ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-संठाण तुल्लए संट्ठण तुल्लए ? गोयमा ! परिमंडले संठाणे परिमंडलस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, परिमंडलसंठाणे परिमंडलस्स संठाणवइरित्तस्स संठाणस्स संठाणओ णो तुल्ले ॥ एवं वट्टे, तंसे, चउरंसे, आयए ॥ समचउरंससंठाणे समचउरंसस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, समचउरंस्स संठाणे समचउरंसस्स संठाणवइरित्तस्स संठाणओ णो तुल्ले ॥ एवं जाव हुंडे ॥ से तेणट्ठेणं जाव संठाण तुल्लए संठाण तुल्लए ॥ ९ ॥

पशमिक की साथ तुल्य है, परिणामिक परिणामिक से तुल्य है और सान्निपात सन्निपात भाव से तुल्य है. अहो गौतम ! इस कारन से भाव तुल्य को भाव तुल्य कहा है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! संस्थान तुल्य को संस्थान तुल्य क्यों कहा ? अहो गौतम ! परिमंडल संस्थान परिमंडल संस्थान से तुल्य है इस से अन्य की साथ तुल्य नहीं है ऐसे ही वर्तुल, त्र्यंस, चौरस व लम्बगोल का जानना. समचतुस्र संस्थान समचतुस्र संस्थान से तुल्य है और इस से अन्य की साथ तुल्य नहीं है ऐसे ही हुंडक तक सब संस्थान का जानना. अहो गौतम ! इस कारन से संस्थान तुल्य से संस्थान तुल्य कहा गया है ॥ ९ ॥

भत्तपच्चक्खायएणं भंते ! अणगारे मुच्छिए अज्झोववण्णे आहार माहारेइ अहेणं वीससाए कालं करेइ तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे जाव अणज्झोववण्णे आहार माहारेंति ? हंता गोयमा ! भत्तपच्चक्खायएणं अणगारे तंचेव ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-भत्तपच्चक्खायएणं तंचेव गोयमा ! भत्तपच्चक्खायएणं अणगारे मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे आहारे भवइ, अहेणं वीससाए कालं करेइ तओ पच्छा अमुच्छिए जाव आहारे भवइ, से तेणट्ठेणं जाव आहार माहारेइ ॥ १० ॥ अत्थिणं भंते ! अहो भगवन् ! भक्त प्रत्याख्यानवाला साधु तीव्र क्षुधा वेदनीय के उदय से व्रत का निर्वाह नहीं होता देख कर उस का उपशम करने को आहार करे फीर स्वभाव से मृत्यु प्राप्त हुए पीछे उस आहार में मूर्च्छा व गृद्धता रहित क्या वह होवे ? हां गौतम ! भक्त प्रत्याख्यान करनेवाला साधु आहारादि में मूर्च्छित होकर स्वभाव से काल कर गये पीछे मूर्च्छा व गृद्धता रहित होवे. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! भक्त प्रत्याख्यानवाला साधु आहार में मूर्च्छित यावत् तन्मय होवे और फीर काल कर गये पीछे आहार में मूर्च्छा व गृद्धता रहित होवे. अहो गौतम ! इस कारन से ऐसा कहा कि भक्त प्रत्याख्यानवाला साधु आहार में गृद्ध यावत् तन्मय बनकर काल कर गये पीछे उस में मूर्च्छा व गृद्धता रहित होवे ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! लव सप्तम देवता क्या हैं ? अहो गौतम ! लव सप्तम देव

लवसत्तमादेवा ? हंता अत्थि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-लवसत्तमा देवा लवसत्तमा देवा? गोयमा! से जहा णामए केइ पुरिसे तरुणे जाव णिपुणसिप्पोवगए सालीणवा, वीहीणवा, गोधूमाणवा, जवाणवा, जवजवाणवा, पिकाणं परियाताणं हरियाण हरितकंडाणं तिक्खेणं णवपज्जवएणं असियएणं पडिसाहरिया, पडिसाहरिया पडि-संखिविया, पडिसंखिविया जाव इणामेवात्तिकट्टु सत्तलए लुएज्जा, जइणं गोयमा ! तेसिं देवाणं एवइयं कालं आउए बहुप्पं तओणं ते देवा तेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतंकरेंति ॥ से तेणट्ठेणं जाव लवसत्तमादेवा लवसत्तमादेवा ॥ ११॥

हैं. अहो भगवन् ! लव सप्तम देव किस कारन से कहाये गये हैं ? अहो गौतम ! जैसे तरुण यावत् शिल्पकला में निपुण कोई पुरुष शाली, व्रीहि, गेंहु, जव तथा जुवार को परिपक्व व काटने योग्य देखकर अति तीक्ष्ण बनाया हुवा दात्रादि शस्त्र मुष्टि में ग्रहण कर छेदे तो उस काल को एक लव कहते हैं. और ऐसे सात वक्त काटने से सात लव होते हैं. यदि उन देवताओं का साधु की अवस्था में आयुष्य अधिक होवे तो वे भी उसी साधु के भव में आयुष्य पूर्ण कर सिद्ध बुद्ध मुक्त यावत् सब दुःखों का अंत करे. अहो गौतम ! इसलिये उन को लव सप्तम देव कहे हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! अनुत्तरो-

अत्थिणं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अणुत्तरोववाइया देवा अणुत्तरोववाइया देवा ? गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाणं अणुत्तरा सद्दा अणुत्तरा रूवा जाव अणुत्तरा फासा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव अणुत्तरोववाइया देवा ॥ १२ ॥ अणुत्तरोववाइयाणं भंते ! देवा केवइएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइय देवत्ताए उववण्णा ? गोयमा ! जावइयं छट्ठभत्तिए समणे णिग्गंथे कम्मं णिज्जरेइ एव इएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइय देवत्ताए उववण्णा ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ चउद्दसम सयस्सय सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ ७ ॥

पपातिक देव क्या है ? हां गौतम ! अनुत्तरोपपातिक देव है. अहो भगवन् ! किस कारन से अनुत्तरोपपातिक कहाये गये हैं ? अहो गौतम ! अनुत्तरोपपातिक देव को अनुत्तर शब्द, रूप, गंध यावत् अनुत्तर स्पर्श है. अहो गौतम ! इस कारन से अनुत्तरोपपातिक देव कहाये गये हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! किस कर्म विशिष्ट से अनुत्तरोपपातिक देव देवतापने उत्पन्न हुए हैं ? अहो गौतम ! छठ भक्त में जितने कर्म श्रमण निर्ग्रंथ निर्जरते हैं. इतने ही कर्म विशिष्ट से अनुत्तरोपपातिक देव देवतापने उत्पन्न हुवे हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चउदहवा शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ ७ ॥

इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी का स० शर्करप्रभा पु० पृथ्वीका के० कितना अ० अव्याबाध अं० अंतर प० प्ररूपा गो० गौतम अ० असंख्यात जो० योजन स० सहस्र अ० अबाधा अं० अंतर प० प्ररूपा स० शर्कर प्रभा भं० भगवन् पु० पृथ्वी का वा० वालुप्रभा पु० पृथ्वी का के० कितना ए० ऐसे ही ए० ऐसे जा० यावत् त० तमा अ० अधो स० सातवी का अ० अधो स० सातवी का भं० भगवन् पु० पृथ्वी का अ० अलोक का के० कितना अ० अबाधा अं० अंतर प० प्ररूपा गो० गौतम अ० असंख्यात जो० योजन स० सहस्र

इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाएय पुढवीए केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवीए बालुयप्पभाएय पुढवीए केवइयं, एवं चेव ॥ एवं जाव तमाए अहे सत्तमाएय ॥ अहे सत्तमाएणं भंते ! पुढवीए अलोगस्सय केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं अबाहाए अंतरे

सातवे उद्देशे में तुल्यता रूप धर्म का कथन किया आठवे में अंतर का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी व शर्कर पृथ्वी का अबाधा से कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा व शर्कर प्रभा का अबाधा से असंख्यात योजन सहस्र का अंतर कहा. शर्करप्रभा व वालु प्रभा का अंतर वैसे ही असंख्यात योजन सहस्र का जानना. यों तम प्रभा व तमतम प्रभा पर्यंत कहना. अहो भगवन् !

अ० अबाधा अं० अंतर प० प्ररूपा ॥ १ ॥ इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी का जो० ज्योतिषी का के० कितना पु० पृच्छा गो० गौतम स० सात ण० नेऊ जो० योजन स० शत अ० अबाधा अं० अंतर प० प्ररूपा जो० ज्योतिषी भं० भगवन् सो० सौधर्म ई० ईशान क० देवलोक का के० कितना पु० पृच्छा गौ० गौतम अ० असंख्यात जो० योजन जा० यावत् अं० अंतर प० प्ररूपा सो० सौधर्म ई० ईशान का भं० भगवन् स० सनत्कुमार मा० माहेन्द्र का० के० कितना ए० ऐसे ही स० सनत्कुमार

पण्णत्ते ॥ १ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए जोइसियस्स केवइयं पुच्छा ? गोयमा ! सत्तणउ जोअणसए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते । जोईसियस्सणं भंते ! सोहम्मीसाणाणय कप्पाणं केवइयं पुच्छा ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोअण जाव अंतरे पण्णत्ते । सोहम्मीसाणाणं भंते ! सणंकुमार माहिंदाणय केवइयं ? एवं चेव ॥ सणंकुमार माहिंदाणं भंते ! बंभलोगस्स कप्पस्स केवइयं ? एवं चेव ॥ बंभलोगस्सणं

सातवी तम तमा पृथ्वी व अलोक का कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! असंख्यात योजन सहस्र का अंतर कहा है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी व ज्योतिषी का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! सातसो नेउ [७९०] योजन का अंतर कहा. अहो भगवन् ! ज्योतिषी व सौधर्म ईशान देवलोक का कितने योजन का अंतर कहा ? अहो गौतम ! असंख्यात क्रोडाक्रोड योजन का अंतर कहा

मा० माहेन्द्रका भं० भगवन् वं० ब्रह्मदेवलोक का के० कितना ए० ऐसे ही वं० ब्रह्मदेवलोक का भं० भगवन् लं० लंतक क० देवलोक का के० कितना ए० ऐसे ही लं० लंतक का भं० भगवन् म० महाशुक्र का के० कितना ए० ऐसे ही ए० ऐसे म० महाशुक्र कल्प का स० सहस्रार का ए० ऐसे स० सहस्रार का आ० आणत पा० प्राणत का ए० ऐसे आ० आणत पा० प्राणत का आरण अ० अच्युत का आ० आरण अ० अच्युत का गे० ग्रैवेयक विमान का ए० ऐसे गे० ग्रैवेयक विमान का अ० अनुत्तर विमान का अ० अनुत्तर विमान का भं० भगवन् इ० ईपत्प्राग् भार पृथ्वी का के० कितना पु० पृच्छा गो० गौतम

भंते, लंतगस्सय कप्पस्स, केवइयं ? एवं चेव ॥ लंतगस्सणं भंते ! महासुकस्स कप्पस्स केवइयं ? एवं चेव ॥ एवं महासुकस्सय कप्पस्स सहस्सारस्सय ॥ एवं सहस्सारस्स आणयपाणय कप्पाणं ॥ एवं आणयपाणयाणं, आरणच्चुयाणं कप्पाणं ॥ आरणच्चुयाणं गेवेज्जगविमाणाणय ॥ एवं गेविजगविमाणाणं अणुत्तरविमाणाणय ॥ अणुत्तर विमाणाणं भंते ! ईसिप्पभाराए पुढवीए केवइयं पुच्छा ? गोयमा ! दुवालसजोअणे

सौधर्म ईशान व सनत्कुमार माहेन्द्र का भी वैसे ही जानना. सनत्कुमार माहेन्द्र व ब्रह्मलोक का, ब्रह्मलोक व लंतक, लंतक व महाशुक्र, महाशुक्र व सहस्रार, सहस्रार व आणत प्राणत, आणत प्राणत व आरण अच्युत का जानना. ऐसे ही आरण अच्युत व ग्रैवेयक विमान. ग्रैवेयक विमान व अनुत्तर विमान का

दु० बारह जो० योजन का अ० अबाधा अं० अंतर प० प्ररूपा ई० ईषत्प्राग् भार पु० पृथ्वी का अ० अलोक का के० कितना अ० अबाधा अं० अंतर पु० पृच्छा गो० गौतम दे० देसऊणा जो० योजन का अ० अबाधा अंतर ॥ २ ॥ ए० यह भं० भगवन् सा० शालवृक्ष उ० ऊष्ण से भेदाया त० तृषा से भेदाया द० दवाग्नि ज्वाला से भेदाया का० काल के अवसर में का० काल कर के क० कहां ग० जावेगा क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम इ० यह रा० राजगृह न० नगर में सा० शालवृक्ष पने प० उत्पन्न

अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ ईसिप्पब्भाराएणं भंते ! पुढवीए अलोगस्सय केवइए अबाहाए पुच्छा ? गोयमा ! देसूणं जोअणए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ २ ॥ एसणं भंते ! सालरुक्खए उण्हाभिहते, तण्हाभिहते, दवग्गिजालाभिहते, कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! इहेव रायगिहे णयरे

जानना. अनुत्तर विमान व ईषत्प्राग् भार पृथ्वी में कितना अंतर रहा हुवा है ? अहो गौतम अबाधा से बारह योजन का अंतरा कहा है. ईषत्प्राग् भार पृथ्वी व अलोक में कितना अंतर रहा हुवा है ? अहो गौतम ! एक योजन में कुच्छ कम का अंतर कहा है ॥२॥ सूर्य के ताप से हणाया हुवा, तृषा से हणाया हुवा, दवाग्नि से हणाया हुवा, शाल वृक्ष काल के अवसर में काल करके कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! इस राजगृह नगर में शालवृक्षपने उत्पन्न होगा. वहां पर उस की अर्चा, वंदना, पूजा, सत्कार व सन्मान

होगा से० वह त० तहां अ० अर्चनीय वं० वंदनीय पू० पूजनीय स० सत्कार करने योग्य स० सन्मान करने योग्य स० सत्य स० सत्योपपात स० सन्निहित पा० प्रातिहार्य ला० लीपनकीया म० पूजावाला भ० होगा से० वह भं० भगवन् त० वहां से उ० चवकर क० कहां ग० जावेगा क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेगा जा० यावत् अं० अंत करेगा ॥ ३ ॥ ए० यह भं० भगवन् सा० शालवृक्ष की ल० लकडी उ० ऊष्ण से भेदाइ जा० यावत् द० दावाग्नि ज्वाला से भेदाइ का० काल

सालरुक्खत्ताए पच्चायाहिति, सेणं तत्थ अच्चियवंदियपूईयसक्कारियसम्माणिय दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय पाडिहेरे लाउल्लोइयमहिएयावि भाविस्सइ ॥ सेणं भंते ! तओहिंतो उव्वट्टित्ता कहिं गमिहिति कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतंकाहिइ ॥ ३ ॥ एसणं भंते ! साललट्ठिया उण्हाभिहया जाव दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा जाव कहिं उववज्जिहिति ?

होगा और व दीव्य सत्यसेवा के फलदाता, प्रातिहार्यकर्मकरनेवाला होगा और उस की पीठिका गोमय से लींपकर पांडु से पोतकर पूजित होवेगा. अहो भगवन् ! वह वहां से नीकलकर कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा, बुझेगा यावत् सब दुःखों का अंत करेगा॥ ३॥ सूर्य के ताप से यावत् दवाग्नि से हणाइ हुई उस की लकडी का जीव काल के अवसर में काल कर

के अ० अवसर में का० काल कर के जा० यावत् क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गोतम इ० इस जं० जंबूद्वीप में विं० विंध्यागिरि के पा० नजदीक म० महाश्रीक न० नगर में सा० शामलीवृक्ष पने प० उत्पन्न होगा त० तहां अ० अर्चनीक वं० वंदनीक जा० यावत् ला० धवल कीया म० पूजावाला भ० होगा, से० वह भं० भगवन् त० वहां से अ० अनंतर उ० चवकर से० शेष ज० जैसे सा० शालीवृक्ष का जा० यावत् अं० अंत करेगा ॥ ४ ॥ ए० यह भं० भगवन् उ० उपर की लकडी उ० ऊष्ण से भेदाइ जा०

गोयमा ! इहेव जंबूद्दीवे विंझगिरिपायमूले महेस्सरीए णयरीए सामलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति, साणं तत्थ अच्चिय वंदिय जाव लाउल्लोहियमहियावि भविस्सइ ॥ सेणं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सेसं जहा सालिरुक्खस्स जाव अंतं काहिति ॥ ४ ॥ एसणं भंते ! उवरिलट्ठिया उण्हाभिहया कालमासे कालं किच्चा जाव

कहां जावेगा कहां उत्पन्न होवेगा ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप में विंध्यागिरि पर्वत के मूल में महा श्रीक नगर की पास शामली वृक्षपने उत्पन्न होगा. वह वहां वंदित पूजित यावत् गोमय से लिपकर पांडु से पोतकर पूजित होवेगा और वह वहां से नीकलकर महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा, बुझेगा यावत् अंत करेगा ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! ऊष्ण ताप से यावत् दवाग्नि से उपर की लकडी का जीव काल करके कहां

यावत् का० काल के अवसर में का० काल कर के जा० यावत् क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम इ० यह जं० जंबूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में पा० पाटली पुत्र नगर में पा० पाटलीवृक्ष पने प० उत्पन्न होगा से० वह त० तहां अ० अर्चनीय वं० वंदनीय जा० यावत् भ० होगा से० वह भं० भगवन् अ० पीछे स० चवकर ते० शेष तं० तैसे जा० यावत् अं० अंत करेगा ॥ ५ ॥ तं० उस काल ते० उस समय में अ० अंबड प० परिव्राजक के स० सात अं० अंते वासी स० शत गि० ग्रीष्म काल में ज० जैसे उ०

कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! इहेव जंबूदीवे दीवे भारहेवासे पाडालिपुत्ते णयरे पाडलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति सेणं तत्थ अच्चियवंदिय जाव भविस्सइ ॥ सेणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता सेसं तंचेव जाव अंतं काहिति ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासीसया गिम्हकाल समयंसि एवं जहा उववा-

जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में पाटलिपुत्र नगर में पाटली वृक्षपने उत्पन्न होगा. वह अर्चित यावत् पूजित होगा और वहां से नीकलकर महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा, बुझेगा यावत् अंत करेगा ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में गंगा नदी के दोनों तरफ रहनेवाले अम्बड सन्यासी के सात सो शिष्य कंपिलपुर नगर से पाटली पुर नगर जाते रस्ते में साथ लिये. पानी खुटने से पानी के दातार के अभाव से गंगा नदी की रेती में सात सो ही अरिहंत सिद्ध आचार्य को नमस्कार

उववाइ में जा० यावत् आ० आराधक ॥ ६ ॥ ब० बहुत ज० मनुष्य अ० अन्योन्य आ० कहते हैं अं० अंबड प० परिव्राजक कं० कांपिलपुर ण० नगर में घ० गृहशत ज० जैसे उ० उववाइ में अ० अम्बड व० वक्तव्यता जा० यावत् द० दृढ प्रतिज्ञ अं० अंत करेगा ॥ ७ ॥ अ० है भं० भगवन् अ० अव्याबाध दे० देव हं० हां अ० है से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० अव्याबाध दे०

इए जाव आराहगा ॥ ६ ॥ बहुजणेणं भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ ४ एवं खलु अम्मडे परिव्वायगे कांपिल्लपुरे णयरे घरसए एवं जहा उववाइए अम्मडवत्तव्वया जाव दढपइण्णो अंतं काहिति ॥ ७ ॥ अत्थिणं भंते ! अव्वावाहा देवा ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अव्वावाहा देवा ? अव्वावाहा देवा गोयमा !

पूर्वक अनशन कर छठे देवलोक में देवतापने उत्पन्न हुए. यावत् आराधक जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! कितने लोक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि अम्बड परिव्राजक कांपिलपुर नगर में पारणे के दिन सो घर में भोजन करता है तो यह कथन किस प्रकार है ? अहो गौतम ! यह कथन सत्य है. उन को अवधि ज्ञान व वैक्रेय लब्धि प्राप्त हुइ है जिस से ऐसा करता है. यावत् वह भी महाविदेह क्षेत्र में दृढप्रतिज्ञी कुमार जैसे कर्म क्षय करके सीझेगा, बुझेगा यावत् सब दुःखों का अंत करेगा. अम्बड परिव्राजक और इन के सात सो शिष्यों का उववाइजी सूत्र में बहुत विस्तार पूर्वक कथन किया है ॥ ७ ॥ अहो

देव अ० अव्याबाध दे० देव गो० गौतम प० समर्थ ए० परस्पर अ० अव्याबाध दे० देव को ए० परस्पर पु० पुरुष की अ० अक्षि पांपण में दि० दिव्य दे० देव ऋद्धि दे० देव द्युति दे० देवानु भाव ब० बत्तीस प्रकार की न० नर्तविधि उ० बताने को णो० नहीं त० उस पु० पुरुष को किं० किंचित् आ० आबाध वा० व्याबाध उ० उत्पन्न करे छ० छेद करे सु० सूक्ष्म उ० देखाडे से० वह ते० इसलिये जा० यावत् अ० अव्याबाध ॥ ८ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा पु० पुरुष का

पभूणं एगमेगे अव्वाबाहे देवे एगमेगस्स पुरिसस्स एगमेगंसि अच्छिपत्तंसि दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुतिं, दिव्वं देवाणुभावं, दिव्वं बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसेत्तए णो चेवणं तस्स पुरिसस्स किंचि आवाहंवा वावाहंवा उप्पाएइ छविच्छेदंवा करेइ, एसुहुमं चणं उवदंसेज्जा ॥ से तेणट्ठेणं जाव अव्वाबाहा ॥ ८ ॥ पभूणं

भगवन् ! क्या अव्याबाध देव हैं ? हां गौतम ! अव्याबाध देव है. लोकांतिक देव मध्यगत अव्याबाध देव कहे हैं. अहो भगवन् ! अव्याबाध देव क्यों कहे ? अहो गौतम ! एक अव्याबाध देव एक २ पुरुष की भ्रमर पर दीव्य देवर्द्धि, दीव्य देव द्युति दीव्य देवानुभाव, और दीव्य बत्तीस प्रकार के नाटकों बताने को समर्थ है परंतु उस को किंचिन्मात्र भी बाधा, विबाधा, उत्पात व चर्मच्छेद नहीं करता है. इस प्रकार सूक्ष्म क्रिया करने में कुशल होने से अव्याबाध देव कहाये गये हैं ॥८॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र

सी॰ मस्तक को सा॰ स्वहस्त से अ॰ असि से छिं॰ छेद कर क॰ कमंडल में प॰ डालने को हे॰ हां प॰ समर्थ से॰ वह क॰ कैसे इ॰ इस को प॰ करे गो॰ गौतम छिं॰ छेद कर प॰ डाले भिं॰ भेदकर प॰ डाले कुं॰ कूटकर प॰ डाले चु॰ चूर्णकर प॰ डाले त॰ पीछे खि॰ सीघ्र प॰ संधान करे त॰ उस पु॰ पुरुष को किं॰ किंचित् आ॰ अव्याबाध वा॰ व्याबाध उ॰ उत्पन्न करे छ॰ छेद क॰ करे सु॰ सूक्ष्म प॰

भंते ! सक्के देविंदे देवराया पुरिसस्स सीसं सापाणिणा असिणा छिंदित्ता कमंडलुं पक्खिवित्तए ? हंता पभू ॥ से कहमिदाणिं पकरेइ ? गोयमा ! छिंदिय छिंदिया चणंवा पक्खिवेज्जा, भिंदिय भिंदिया चणं वा पक्खिवेज्जा, कुट्टिय कुट्टिया चणं वा पक्खिवेज्जा, चुण्णिय चुण्णिया चणं वा पक्खिवेज्जा, तओ पच्छा खिप्पामेव पडिसंघाएज्जा, णो चेवणं तस्स पुरिसस्स किंचिवि आबाहंवा वाबाहं वा उप्पाएज्जा, छवि-

अपने हस्त में रहा हुवा खड्ग से पुरुष का मस्तक छेदकर कमंडल में डालने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! वह समर्थ है. अहो भगवन् ! वह कैसे करे ? अहो गौतम ! क्षुरप्रादिक से कुष्माण्डादिक समान छोटे २ टुकडे कर के छेदन करे, फाड कर के भेदन करे कुटकर चूर्ण करे और पीछे उस को एक कमंडल में भरे परंतु उस मनुष्य को किंचिन्मात्र बाधा, विबाधा व चर्म छेद नहीं होता है; क्यों कि वह इतनी

डाले ॥ ९ ॥ सरल शब्दार्थ.

छेदं पुण करेंति, एसुहुमं चणं पक्खिवेज्जा ॥ ९ ॥ अत्थिणं भंते ! जंभया देवा ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जंभया देवा जंभया देवा ? गोयमा ! जंभगाणं देवा णिच्चं पमुदित पक्कीलिया कंदप्परतिमोहण सीला, जेणं ते देवे कुद्धे पासेज्जा, सेणं महंतं अयसं पाउणेज्जा, जेणं ते देवे तुट्टे पासेज्जा सेणं महंतं जसं पाउणेज्जा, से तेणट्ठेणं गोयमा जंभगा देवा ॥ कइविहाणं भंते ! जंभगा देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा-अण्णजंभगा, पाणजंभगा,

सूक्ष्म क्रिया करने में बहुत कुशल होता है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! क्या जृंभक देव हैं ? हां गौतम ! हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जृंभक देव हैं ? अहो गौतम ! जृंभक देव नित्य प्रमुदित, हर्षवंत, क्रीडा सहित, केली सहित, व मोहन स्वभाववाले हैं. जिस को वे क्रुद्ध होकर देखे उस को बहुत अनर्थ करे. और जिस को तुष्ट होकर देखे उस को यश प्राप्त करावे. अहो गौतम ! इस कारन से जृंभक देव कहाये गये हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! जृंभक देव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जृंभक देव के दश भेद कहे हैं. अन्न जृंभक, पान जृंभक, वस्त्र जृंभक, लयन जृंभक, शयन जृं-

वत्थजंभगा लेणजंभगा, सयणजंभगा, पुप्फजंभगा, फलजंभगा, पुप्फफल जंभगा, विज्जाजंभगा, अवियत्तजंभगा ॥ ११ ॥ जंभगाणं भंते ! देवा कहिं वसहिं उवेंति? गोयमा ! सव्वेसु चेव दीहवेयड्ढेसु चित्तविचित्त जंमगपव्वएसु कंचणपव्वएसुय एत्थणं जंभगा देवा वसहिं उवेंति ॥ १२ ॥ जंभगाणं भंते देवाणं केवइयं कालंट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! एगपालिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ चउद्दसम सयस्सय अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ ८ ॥

अणगारेणं भंते ! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्सं ण जाणइ ण पासइ तंपुण जीव

भक, पुष्प जृंभक, फल जृंभक, पुष्पफल जृंभक, विद्या जृंभक और अवियत्त जृंभक ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जृंभक देव कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! सब वैताढ्य पर्वत पर, चित्र विचित्र नाम के यमक पर्वत पर, और कंचनगिरी पर्वत पर जृंभक देव रहते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जृंभक देवताओं की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! एक पल्योपम की स्थिति कही. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चउदहवा शतक का आठवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ ८ ॥

आठवे उद्देशे में देवता की सामर्थ्यता कही. देवता से भी अधिक सुख के भोक्ता साधु हैं इस से

सरूविं सकम्मलेस्सं जाणइ पासइ ? हंता गोयमा ! अणगारेणं भावियप्पा अप्पणो जाव पासइ ॥ १ ॥ अत्थिणं भंते ! सरूविं सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति ४ ? हंता अत्थि ॥ कयरे भंते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति जाव पभासंति ४ ? गोयमा ! जाइं इमाओ चंदिम सूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेस्साओ बाहिया अभिनिस्सढओ पभासेंति एएणं गोयमा ! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला

इस का कथन नववे उद्देशे में कहते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार छद्मस्थपना से अपने कर्म संबंधी कृष्णादि लेश्या को सूक्ष्म भाव से ज्ञान से जाने नहीं व दर्शन से देखे नहीं और उसे ही पुनः जीव के शरीर कर्म लेश्या सहित क्या जाने देखे ? हां गौतम ! भावितात्मा साधु जाने देखे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! वर्णादि सहित स्वरूपी कर्म लेश्या क्या प्रकाशती है ? हां गौतम ! प्रकाश करती है. अहो भगवन् ! कितने स्वरूपी उदारिक शरीरी जीव के कर्म लेश्यावाले पुद्गल प्रकाशते हैं ? अहो गौतम ! चंद्र सूर्य के विमान से जो लेश्या समुद्र बाहिर नीकला वह प्रकाश करे. अहो गौतम ! इस से

१ यद्यपि इस मे कर्म लेश्या नहीं है परंतु चंद्र सूर्य के विमान मे पृथ्वीकाय रूप सचेतनपना रहा हुवा है उस में से नीकलने के कारन से कर्म लेश्या ग्रहण की है.

ओभासंति ४ ॥ २ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला अणत्ता पोग्गला ? गोयमा ! णो अत्ता पोग्गला अणत्ता पोग्गला ॥ असुरकुमाराणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला अणत्ता पोग्गला? गोयमा! अत्ता पोग्गला णो अणत्ता पोग्गला, एवं जाव थणिय कुमाराणं । पुढवी काइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! अत्तावि पोग्गला अणत्तावि पोग्गला, एवं जाव मणुस्साणं ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा असुर कुमाराणं ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं इट्ठा पोग्गला अणिट्ठा पोग्गला ? गोयमा ! णो इट्ठा पोग्गला

सरूपी कर्म लेश्यावाले पुद्गल प्रकाशते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को क्या दुःख रहित करे वैसे पुद्गल हैं या दुःख रहित न करे वैसे पुद्गल हैं ? अहो गौतम ! नारकी को दुःख कारक पुद्गलों हैं परंतु दुःख रहित करे वैसे पुद्गलों नहीं हैं. अहो भगवन् ! असुरकुमार को क्या दुःख कारक पुद्गलों हैं या दुःख नहीं करे वैसे पुद्गलों हैं ? अहो गौतम ! दुःख से रहित करे वैसे पुद्गलों हैं परंतु दुःख कारक पुद्गलों नहीं हैं. ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यंत कहना. पृथ्वीकाया को क्या दुःख रहित पुद्गलों हैं या दुःख सहित पुद्गलों हैं ? अहो गौतम ! दुःख रहित व दुःख सहित ऐसे दोनों पुद्गल रहे हुवे हैं. ऐसे ही शेष चार स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य का जानना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का असुरकुमार जैसे कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को क्या इष्ट पुद्गल या अनिष्ट पुद्गल हैं ?

अणिट्ठा पोग्गला, जहा अत्ता भणिया एवं इट्ठावि, कंतावि, पियावि, मणुण्णावि, भाणियव्वा. एवं पंचदंडगा ॥ ४ ॥ देवेणं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू भासासहस्सं भासित्तए ? हंता पभू ॥ साणं भंते ! किं एगाभासा भासासहस्सं ? गोयमा ! एगाणं सा भासा णो खलु तं भासासहस्सं ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे अचिरोग्गतं बालसूरियं जासुमणकुसुम पुंजप्पगासं लोहितगं पासइ पासइत्ता जायसड्ढे जाव समुप्पण्ण कोउहल्ले जेणेव समणे

अहो गौतम ! इष्ट पुद्गल नहीं हैं परंतु अनिष्ट पुद्गल हैं. वगैरह जैसे आत्मा [दुःख रहित] पुद्गलों जैसे कहना. और ऐसे ही इष्ट कान्त, प्रिय, मनोज्ञ यों पांच दंडक कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महा सुखवाला देव सहस्र रूप का वैक्रेय करके क्या सहस्र भाषा बोलने में समर्थ होता है ? हां गौतम ! वह समर्थ हो सकता है. अहो भगवन् ! क्या वह एक भाषा बोलता है या सहस्र भाषा बोलता है ? अहो गौतम ! एक भाषा बोलता है परंतु सहस्र भाषा नहीं बोलता है क्यों की एक जीव को एक उपयोग होता है ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में उदित होता हुवा बाल सूर्य को कुमुद के कुसुम समान लाल रंग का देख कर भगवंत श्री गौतम स्वामी को प्रश्न पुछने की श्रद्धा यावत् कुतुहल उत्पन्न हुवा और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास जाकर उन को वंदना नमस्कार करके ऐसा बोले कि अहो भगवन्

भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता जाव णमंसित्ता, एवं वयासी किमिदं भंते ! सूरिए किमिदं भंते ! सूरियस्स अट्ठे ? गोयमा ! सुभे सूरिए सुभे सूरियस्स अट्ठे ॥ किमिदं भंते ! सूरिए, किमिदं सूरियस्स पभा ? एवं चेव ॥ एवं छाया, एवं लेस्सा ॥ ६ ॥ जेइमे अज्जत्ताए समणा णिग्गंथा विहरंति, एएणं कस्स तेउल्लेस्सं वीईवयइ ? गोयमा ! मास परियाए समणे णिग्गंथे वाणमंतराणं देवाणं तेउल्लेस्सं वीईवयइ; दुमास परियाए समणे णिग्गंथे असुरिंदवज्जियाणं, भवणवासीणं देवाणं

यह सूर्य क्या है और सूर्य से क्या प्रयोजन है ? अहो गौतम ! सूर्य का विमान पृथ्वीकायिक जीवों के आतापना नामकर्म की पुण्य प्रकृति से प्रवर्तता है इस से शुभ स्वरूप सूर्य है सूर्य का प्रयोजन भी शुभ है. अहो भगवन् ! सूर्य क्या है और सूर्य की प्रभा क्या है ? अहो गौतम ! शुभ स्वरूप सूर्य है और शुभ स्वरूप सूर्य की प्रभा है. ऐसे ही छाया व लेश्या का जानना. ॥ ६ ॥ अब इस को प्रकारान्तर से कहते हैं. अहो भगवन् ! जो वर्तमान काल पने श्रमण निर्ग्रन्थ विचरते हैं इस में किसकी प्रशस्त तेजो लेश्या अतिक्रमे ? अहो गौतम ! जो एक मास की पर्याय को धारन करते हैं वे वाणव्यंतर देवता की तेजो लेश्या को अतिक्रमते हैं अर्थात् वाणव्यंतर के सुख से अधिक सुख के भोक्ता बनते हैं, दो मास की पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ असुरेन्द्र छोडकर भवनपति देवों की लेश्या को अतिक्रमते हैं. अर्थात्

तेयलेस्सं विइवयइ, एवं एएणं अभिलावेणं तिमासपरियाए समणे णिग्गंथे असुर कुमाराणं देवाणं तेयलेस्सं वीइवयइ, चउमास परियाए समणे णिग्गंथे गहगण णक्खत्ततारारूवाणं जोइसियाणं देवाणं तेयलेस्सं वीइवयइ, पंचमास परियाए समणे णिग्गंथे चंदिम-सूरियाणं जोइसियाणं जोइसिराथाणं तेयलेस्सं वीइवयइ; छम्मास परियाए समणे णिग्गंथे सोहम्मीसाणाणं देवाणं, सत्तमास परियाए सणंकु-मार माहिंदाणं देवाणं, अट्ठमास परियाए समणे णिग्गंथे बंभलोगलंतगाणं देवाणं, तेयलेस्सं वीइवयइ, णवमास परियाए समणे णिग्गंथे महासुक्कसहस्साराणं देवाणं

भवनपति देवों के सुख से अधिक सुख के भोक्ता होते हैं, तीन मास की पर्याय वाले असुरेन्द्र की तेजो लेश्या को अतिक्रमत हैं, चार मास की पर्याय वाले ग्रह नक्षत्र ताराओं की तेजो लेश्या को अतिक्रमते हैं पांच मास की पर्यायवाले ज्योतिषी के राजा चंद्र सूर्य की तेजो लेश्या को अतिक्रमते हैं, छ मास की पर्याय वाले सौधर्म ईशान देवलोक की तेजो लेश्या को अतिक्रमे, सात मास की पर्याय वाले सनत्कुमार माहेन्द्र, आठ मास की पर्यायवाले श्रमण निर्ग्रंथ ब्रह्मदेवलोक व लंतक, नव मास की पर्यायवाले श्रमण निर्ग्रंथ महाशुक्र व सहस्रार, दश मास की पर्यायवाले श्रमण निर्ग्रंथ आणत, प्राणत, आरण व अच्युत, अग्यारह मास की पर्यायवाले श्रमण निर्ग्रंथ ग्रैवेयक, बारह मास की पर्यायवाले श्रमण निर्ग्रंथ अनुत्तरो-

तेयलेस्सं वीईवयइ, दसमास परियाए समणे णिग्गंथे आणयपाणयआरणच्चुयाणं देवाणं, एक्कारसमास परियाए समणे णिग्गंथे गेवेज्जग देवाणं, बारसमास परियाए समणे णिग्गंथे अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ, तेणपरं सुक्के सुक्काभिजाए भवित्ता, तओ पच्छा सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ चउद्दसम सयस्सय णवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ ९ ॥ ० ०

केवलीणं भंते ! छउमत्थं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ १ ॥ जहाणं भंते ! केवली छउमत्थं जाणइ पासइ तहाणं सिद्धेवि जाणइ पासइ ? हंता जाणइ

पपातिक देवों की तेजोलेश्या को अतिक्रमे; फीर आगे शुक्ल शुक्लाभिजात बनकर सीझे, बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चौदहवा शतक का नववा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ ९ ॥ ० ० ०

नववे उद्देशे में शुक्लपना कहा और इसी से केवली प्रभृति अर्थ प्रतिबद्ध दशवा उद्देशा कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या केवली छद्मस्थ को जाने देखे ? हां गौतम ! केवली छद्मस्थ को जाने देखे. अहो भगवन् ! जैसे केवली छद्मस्थ को जाने देखे वैसे ही क्या सिद्ध छद्मस्थ को जाने देखे ? हां सिद्ध भी केवली

पासइ ॥ १ ॥ केवलीणं भंते ! आधोधियं जाणइ पासइ ? एवं चेव एवं परमा होहियं एवं केवलिं एवं सिद्धं जाव जहाणं भंते ! केवली सिद्धं जाणइ पासइ, तहाणं सिद्धेवि सिद्धं जाणइ पासइ ? हंता ! जाणइ पासइ ॥ २ ॥ केवली भंते ! भासेज्जवा वागरेज्जवा ? हंता भासेज्जवा वागरेज्जवा । जहाणं भंते ! केवली भासेज्जवा वागरेज्जवा तहाणं सिद्धेवि भासेज्जवा वागरेज्जवा ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहाणं केवली भासेज्जवा वागरेज्जवा णो तहाणं सिद्धे भासेज्जवा वागरेज्जवा ? गोयमा ! केवलीणं सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसकार

जैसे जाने देखे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! केवली मर्यादित क्षेत्र जाननेवाले अवधिज्ञानी को क्या जाने देखे? हां गौतम ! जैसे छद्मस्थ का कहा वैसे ही जानना. ऐसे ही परम अवधि ज्ञानी व केवल ज्ञानी व सिद्ध का जानना. जैसे केवली मर्यादित अवधि, परम अवधि केवल ज्ञानी व सिद्ध को जानते देखते हैं वैसे ही सिद्ध जानते व देखते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या केवली बोलते हैं ? हां गौतम ! केवली बोलते हैं. अहो भगवन् ! जैसे केवली बोलते हैं वैसे ही क्या सिद्ध बोलते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् सिद्ध नहीं बोलते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से जैसे केवली बोलते हैं वैसे सिद्ध

परक्कमे, सिद्धेणं अणुट्ठाणे जाव अपुरिसक्कार परक्कमे से तेणट्ठेणं जाव णो वागरेज्जवा ॥ ३ ॥ केवलीणं भंते ! उम्मिसेज्जवा निम्मिसेज्जवा ? हंता गोयमा ! उम्मिसेज्जवा णिम्मिसेज्जवा; एवं चेव ॥ एवं आउट्टेज्जवा पसारेज्जवा एवं ठाणंवा सेज्जंवा णिसीहियंवा वेएज्जा ॥ ४ ॥ केवलीणं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभ पुढवीति जाणइ पासइ ? हंता गोयमा ! जाणइ पासइ ॥ जहाण भंते ! केवली इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभ पुढवीति जाणइ पासइ, तहाणं सिद्धेवि इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभ पुढवीति जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ। केवलीणं भंते ! सक्करप्पभं पुढविं सक्करप्पभ पुढवीति जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ एवं जाव अहे सत्तमं ॥

नहीं बोलते हैं ? अहो गौतम ! केवली को उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है और सिद्ध को उत्थान यावत् पुरुषात्कार पराक्रम नहीं है इस से अहो गौतम ! वे नहीं बोलते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या केवली मेषोन्मेष करे ? हां गौतम ! केवली मेषोन्मेष करे वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे कहना. ऐसे ही हस्त पांवादि का संकुचित, प्रसारण, कायोत्सर्ग, शैय्या व ध्यान का जानना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! केवली रत्नप्रभा पृथ्वी को क्या रत्नप्रभा पृथ्वी जाने देखे ? हां गौतम ! जाने देखे. अहो भगवन् ! जैसे केवली रत्नप्रभा पृथ्वी को रत्नप्रभा पृथ्वी जाने देखे वैसे ही। सिद्ध क्या रत्नप्रभा पृथ्वी को
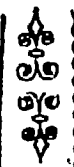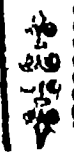
केवलीणं भंते ! सोहम्मं कप्पं सोहम्म कप्पेति जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ एवं ईसाणं, एवं जाव अच्चुयं ॥ केवलीणं भंते ! गेविज्जग विमाणं गेविज्जगविमाणेति जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ एवं अणुत्तराविमाणेवि ॥ केवलीणं भंते ! ईसिपब्भारं पुढविं ईसिप्पब्भार पुढवीति जाणइ पासइ? एवं चेव॥ ५॥ केवलीणं भंते! परमाणु पोग्गलं परमाणु पोग्गलेति जाणइ पासइ? एवं चेव॥ एवं दुपदेसियं खंधं, एवं जाव अणंत पदेसियं खंधं ॥ जहाणं भंते केवली अणंतपदेसिए खधेति जाणइ पासइ तहाणं सिद्धेवि अणतं पदेसियं खंधं जाव पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ चउद्दसम सयस्सय दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ १० ॥ सम्मत्तंय चउद्दसमं सयं ॥ १४ ॥

रत्नप्रभा पृथ्वी जाने देखे ? हां गौतम ! जाने देखे. ऐसे ही शर्कर प्रभा पृथ्वी यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी का जानना. जैसे नारकी का कहा. वैसे ही सौधर्म ईशान यावत् अच्युत, ग्रैवेयक, अनुत्तर विमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का जानना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! केवली परमाणु पुद्गल को क्या परमाणु पुद्गल जाने देखे ? हां गौतम ! वैसे ही जानना. ऐसे ही द्विप्रदेशात्मक स्कंध, यावत् अनंत प्रदेशात्मक स्कंध का जानना. वैसे ही सिद्ध भी अनंत प्रदेशिक स्कंध को जाने देखे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चौदहवा शतक का दशवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ १० ॥ यह चौदहवा शतक संपूर्ण हुवा ॥ १४ ॥
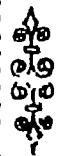
॥ पञ्चदश शतकम् ॥

ण० नमस्कार सु० श्रुत दे० देवता भ० भगवती को ते० उस काल उ० उस समय में सा० श्रावस्ती ण० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त ॥ १ ॥ ती० उस सा० श्रावस्ती ण० नगरी की उ० ईशान कौन में को० कोष्टक चे० उद्यान हो० था व० वर्णन युक्त ॥ २ ॥ त० तहां सा० श्रावस्ती न० नगरी में हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी आ० आजीविक उ० उपासिका प० रहती है अ० ऋद्धिवन्त जा० यावत्

णमो सुअदेवयाए भगवईए ॥ तेण कालेणं तेणं समएणं सावत्थी णामं णयरी होत्था, वण्णओ ॥ १ ॥ तीसेणं सावत्थीए णयरीए उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए तत्थणं कोट्ठए णामं चेइए होत्था, वण्णओ ॥ २ ॥ तत्थणं सावत्थीए णयरीए हालाहला णामं कुंभकारी आजीविय उवासिया परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया ॥ आजीवियसंम-

प्रथम मंगलाचरण निमित्त श्रुत देवता को नमस्कार करके कहते हैं कि चौदहवे शतक में केवली रत्न-प्रभादि वस्तु जाने. उस का आत्म संबंधी परिज्ञान श्री श्रमण भगवन्त महावीरने गौतम के लिये प्रगट किया. उस काल उस समय में श्रावस्ती नगरी थी. वह चंपा नगरी जैसी वर्णन योग्य थी ॥ १ ॥ उस श्रावस्ती नगरी के ईशान कौन में कोष्टक नाम का उद्यान था ॥ २ ॥ उस श्रावस्ती नगरी में हालाहला नाम की कुंभकारिणी आजीविक मत की उपासिका थी. वह ऋद्धिवंत यावत् अपरिभूत थी. आजीविक

अ० अपराभूत आ० आजीविक स० मत में ल० अर्थ प्राप्त कीया है ग० अर्थ ग्रहण कीया है पु० अर्थ पुछा है वि० अर्थ निश्चय कीया है अ० अस्थि मिं० मिंज पे० प्रेम से रक्त स० आयुष्यवन्त श्रमण आ० आजीविक मत में अ० अर्थ अ० यह अर्थ प० परम अर्थ से० शेष अ० अनर्थ आ० आजीविक मत में अ० आत्मा को भा० भावती वि० विचरती है ॥ ३ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र च० चौवीस वा० वर्ष की प० पर्याय से हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी की कुं०

यंसि लद्धट्ठा गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठिमिंज पेमाणुरागरत्ता, अयमाउसो ! आजीविय समए अट्ठे अयमट्ठे परमट्ठे, सेसे अणट्ठेत्ति ॥ आजीविय समएणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥ ३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं गोसाले मंखलिपुत्ते चउवीसवास परियाए हालाहलाए कुभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघ संपरि-

मत में प्ररूपित सिद्धांतों को उसने प्राप्त किया था, रत्न की तरह ग्रहण किया था, पूछकर निश्चय किया था, उस की हड्डी व हड्डियों की मिंजियों प्रेमानुराग से रक्त बनी हुई थी. धर्म चर्चा के प्रसंग वह यही कहती थी कि अहो आयुष्मन् ! आजीविक के शास्त्रों प्रयोजन मय हैं, वेही परमार्थ सुख के कारणभूत हैं, और शेष सब अनर्थ के हेतुभूत है. इस तरह आजीविक समय में स्वतः को भावती [विचारती] हुइ रहती थी ॥ ३ ॥ उस काल उस समय में मंखलिपुत्र गोशाला चौवीस वर्ष पर्यंत पर्याय पालकर हालाहला

कुंभार की दुकान में आ० आजीविक सं० परिवार से सं० घेराया हुवा आ० आजीविक मत से अ० आत्मा को भा० भावता वि० विचरता है ॥ ४ ॥ त० तत्र त० उस गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र को अ० एकदा छ० छ दि० दिशाचर पा० पास आये त० वह ज० जैसे सा० शाण क० कणंद क० कर्णिकार अ० अच्छिद्र अ० अग्नि वैशायन अ० अर्जुन गो० गोमायु पुत्र ॥५॥ त० तब ते० वे छ० छ दि० दिशाचर

वुडे अजीविय समएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ४ ॥ तएणं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णयाकयाइं इमे छदिसाचरा पाउब्भवित्था, तंजहा- साणे कणंदे कण्णियारे, अच्छिदे अग्गिवेसायणे; अज्जुणे गोमायुपुत्ते ॥ ५ ॥ तएणं ते छदि-

कुंभकारिणी[1] की दुकान में आजीविक संघ से परवरा हुआ स्वतः को भावता हुआ विचरता था ॥ ४ ॥ एकदा छ दिशाचर पार्श्वस्थ वनकर गोशाला की पास आये. जिन के नाम. १ शाण २ कणंद ३ कर्णिकार ४ अच्छिद्र ५ अग्निवैशायन और ६ अर्जुन ॥ ५ ॥ उनोंने १ दीव्य, २ उत्पात ३ अंतरिक्ष ४ भोम ५ अंग ६ स्वर ७ लक्षण और ८ व्यंजन यों आठ प्रकार के निमित्त और गीतमार्ग व नृत्यमार्गकी

१ उक्त छ दिशाचर महावीर स्वामी के शिष्य थे ऐसा टीकाकार कहते है और चूर्णिकार पार्श्वनाथ स्वामी के संतानीये थे वैसा कहते है.

अ० आठ प्रकार का पु० पूर्व गत म० मार्गदर्शन स० अपनी म० मतिदर्शन से णि० उद्धरे है गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र को उ० स्थापन करे ॥ ६ ॥ त० तब गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र ते० उस अ० अष्टांग म० महानिमित्त का के० कोइएक उ० उपदेश मात्र से स० सर्व पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व का इ० इम छ० छ अ० व्यभिचार रहित वा० प्रश्न वा० कहे तं० वह ज० जैसे ला० लाभ अ० अलाभ सु० सुख दु० दुःख जी० जीवित म० मरण ॥ ७ ॥ त० तब गो० गोशाला

साचरा अट्ठविहं पुव्वगयं मग्गदसमं सएहिं मइदंसणेहिं णिज्जूहिंति, सएहिं २ त्तिचा गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठाइंसु ॥ ६ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं, इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरइ, तंजहा-लाभं अलाभं सुहं दुखं जीवियं मरणं ॥ ७ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते

अपनी २ बुद्धि पूर्वक पूर्वगत लक्षण से श्रुत पर्याय में से नीकलकर मंखलीपुत्र गोशाला का आश्रय ग्रहण किया. अर्थात् उन के शिष्य बने ॥ ६ ॥ अब वह गोशाला उस अष्टांग महा निमित्त के उपदेश मात्र से सब प्राणि, भूत, जीव व सत्व छ कृत्य उल्लंघ नहीं सकते हैं ऐसा कहने लगा. जिन के नाम लाभ, अलाभ, सुख, दुःख जीवित और मरण ॥ ७ ॥ अब वह मंखली पुत्र गोशाला उक्त अष्टांग महा निमित्त में

पं० मंखलि पुत्र ते० उस अ० अष्टांग म० महानिमित्त का के० कोई एक उ० उपदेश से सा० श्रावस्ती ण० नगरी में अ० अजिन जि० जिन प्रलापी अ० अरिहंत नहीं अ० अरिहंत प्रलापी अ० अकेवली के० केवली प्रलापी अ० असर्वज्ञ स० सर्वज्ञ प्रलापी अ० जिन नहीं जि० जिन शब्द प० बोलता वि० विचरता है ॥ ८ ॥ त० तब सा० श्रावस्ती ण० नगरी के सिं० शृंगाटक जा० यावत् प० रस्ते में ब० बहुत मनुष्य अ० अन्योन्य ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० प्ररूपते हैं ए० ऐसे ख० खलु दे० देवानु प्रिय गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् प० बोलता वि०

तेणं अट्ठंगस्स महाणिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणे सावत्थीए णयरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवली प्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ ॥ ८ ॥ तएणं सावत्थीए णयरीए सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एव माइक्खइ, जाव एवं परूवेइ एवं खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पगासमाणे

से किसी एक उपदेश से श्रावस्ती नगरी में जिन नहीं होते हुवे जिन, अर्हन् नहीं होते हुवे अर्हन्, केवली नहीं होते हुवे केवली, और सर्वज्ञ नहीं होनेपर सर्वज्ञ हूं ऐसा प्रलाप करने लगा. ॥८॥ उस समयमें श्रावस्ती नगरी में शृंगाटक यावत् राजमार्ग में बहुत मनुष्य परस्पर ऐसा कहने यावत् प्ररूपने लगे कि मंखली पुत्र

विचरता है से० वह क० कैसे ए० यह म० माने ॥ ९ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में सा० स्वामी स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पीछी गई ॥ १० ॥ ते० उस काल में उ० उस समय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का जे० ज्येष्ठ अं० अंतेवासी इं० इंद्र भूति अ० अनगार गो० गौतम गो० गोत्र से छ० छठछठ से ए० ऐसे ज० जैसे बि० दूसरा शतक में णि० निर्ग्रंथ उ० उद्देशा जा० यावत् अ० फीरते व० बहुत मनुष्यों के स० शब्द णि० सुने व० बहुत मनुष्य अ० अन्योन्य

विहरइ; ते कहमेयं मण्णे एवं ? ॥ ९ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया ॥ १० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूईणामं अणगारे गोयम गोत्तेणं जाव छट्ठं छट्ठेणं एवं जहा बिईयसए णियंठुद्देसए जाव अडमाणे बहुजणसद्दं णिसामेइ बहुजणो अण्णम-

गोशाला जिन प्रलापी यावत् प्रकाश करता हुवा विचरता है ॥ ९ ॥ उस काल उस समय में स्वामी पधारे यावत् परिषदा धर्मोपदेश सुनकर पीछी गइ ॥ १० ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर के ज्येष्ठ अंतेवासी गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति अनगार छठ २ की तपस्या का पारणा करते वगैरह जैसे दूसरे शतक के निर्ग्रंथ उद्देशे में कहा वैसे फीरते हुवे बहुत मनुष्यों से ऐसा सुना कि बहुत मनुष्यों परस्पर ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि मंखली पुत्र गोशाला जिन प्रलापी यावत् प्रकाश करता हुवा विचरता

ए० ऐसा आ० कहते हैं ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् प० बोलता वि० विचरता है से० वह क० कैसे ए० यह म० माने ए० ऐसे त० तब भ० भगवन्त गो० गौतम ब० बहुत मनुष्य की अं० पास ए० यह अर्थ सो० सुनकर णि० अवधार कर जा० यावत् जा० श्रद्धा उत्पन्न हुई जा० यावत् भ० भक्तपान प० बतावे जा० यावत् प० पर्युपासना करते ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे ख० निश्चय अ० मैं भं० भगवन् छ० छठ तं० तैसे

ण्णस्स एव माइक्खइ ४ एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पगासमाणे विहरइ, से कहमेयं मण्णे एवं ? ॥ तएणं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म जाव जाय सड्ढे जाव भत्तपाणं पडिदंसेइ-जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी एवं खलु अहं भंते ! छट्ठं तंचेव जाव जिणसद्दं पगास-

है, यह ऐसा कैसे माना जावे ? इस समय में भगवंत गौतम बहुत मनुष्यों से ऐसा सुनकर अवधार, कर यावत् संदेह उत्पन्न हुवा यावत् भक्त पान बतलाकर यावत् पर्युपासना करते हुवे ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! छठ के पारने के लिये श्रावस्ती नगरी में फीरता हुवा बहुत लोकोंको परस्पर ऐसा वार्तालाप करते हुवे मैंने सुने कि मंखली पुत्र गोशाला कहता है कि मैं जिन हूं इस प्रकार प्रलाप करता हुवा विचरता है. अहो

जा० यावत् जि० जिन शब्द प० बोलता वि० विचरता है से० वह क० कैसे ए० यह भं० भगवन् ए० ऐसा इ० इच्छता हूं भं० भगवन् गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र का उ० पहिले से प० संबंध प० कहाया हुआ ॥ ११ ॥ गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर भ० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले जं० जो गो० गौतम ब० बहुत ज० मनुष्य अ० अन्योन्य आ० कहते हैं गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् प० बोलते वि० विचरते हैं तं० वह मि० मिथ्या अ० मैं गो०

समाणे विहरइ, से कहमेयं भंते ! एवं ? इच्छामिणं भंते ! गोसालस्स मंखलि-पुत्तस्स उट्ठाणपरियाणियं परिकहियं ? ॥ ११ ॥ गोयमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी जं णं गोयमा ! से बहुजणे अण्णमण्णस्स एव माइक्खइ ४ एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पगासमाणे विहरइ, तं णं मिच्छा

भगवन् ! यह किस तरह है ? मंखलीपुत्र गोशाला का जन्म से लगाकर आजतक सब संबंध सुनने को मैं इच्छता हूं ॥ ११ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने गौतम स्वामी को ऐसा कहा कि अहो गौतम ! तुमने बहुत मनुष्यों से ऐसा सुना है कि मंखलि पुत्र गोशाला जिन, जिन प्रलापी यावत् विचरता है वह मिथ्या है. मैं इस को ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि मंखलिपुत्र गोशाला

गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् प० प्ररूपता हूं ए० इन गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र का मं० मंखलि णा० नाम का मं० भिक्षुक पि० पिता हो० था त० उस मं० मंखलि मं० भिक्षुक को भ० भद्रा भा० भार्या हो० थी सु० सुकुमार जा० यावत् प० प्रतिरूपा ॥ १२ ॥ त० तब सा० वह भ० भद्रा भा० भार्या अ० एकदा गु० गर्भवती हो० थी ॥ १३ ॥ तं० उस काल ते० उस समय में स० सरवण ० सन्निवेश हो० था रि० ऋद्धिवंत जा० यावत् स० देवलोक समान पा० प्रासादिक ॥ १४ ॥

अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु एयस्स गोसालस्स मंखलि पुत्तस्स मंखलिणामं मंखे पिता होत्था, तस्सणं मंखलिमंखस्स भद्दा णामं भारिया होत्था सुकुमाल जाव पडिरूवा ॥ १२ ॥ तएणं सा भद्दा भारिया अण्णयाकयाइं गुव्विणयावि होत्था, ॥ १३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सरवणे णामं सण्णिवेसे होत्था, रिद्धत्थमिय जाव सण्णिभप्पगासे पासादीए ॥ १४ ॥

का मंखलि नाम का मंखे पिता था. उस मंखलि नामक मंख को भद्रा भार्या थी वह सुकुमार यावत् प्रतिरूपा थी ॥ १२ ॥ एकदा वह भद्रा भार्या गर्भवती हुई ॥ १३ ॥ उस काल उस समय में सरवण नाम का सन्निवेश था वह ऋद्धि से परिपूर्ण यावत् देवलोक समान देखने योग्य था. ॥ १४ ॥ उस सरवण सन्निवेश

काष्ट के पटियेपर अनेक चित्रों चित्रकर लोकों को बताकर उस से अपनी आजीविका करे उसे मंख कहते हैं.

त० तहां स० सरवण स० सन्निवेश में गो० गोबहुल मा० माहण प० रहता था अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत रि० ऋग्वेद जा० यावत् सु० सुपरिनिष्ठित हो० था ॥ १५ ॥ त० उस गो० गोबहुल को गो० गोशाला हो० थी ॥ १६ ॥ त० तब मं० वह मं० मंखलि मं० भिक्षुक अ० एकदा भ० भद्रा भा० भार्या गु० गर्भवती स० साथ चि० चित्र फ० पाटिया ह० हस्त में भे० भिक्षावृत्ति से अ० आत्मा को भा० भावता पु० अनुक्रम से च० चलता गा० ग्रामानुग्राम दू० जाता जे० जहां स० सरवण

तत्थणं सरवणे सण्णिवेसे गोबहुले णामं माहणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए ॥ रिउव्वेय जाव सुपरिणिट्ठिएयावि होत्था ॥ १५ ॥ तस्सणं गोबहुलस्स माहणस्स गोसालायावि होत्था ॥ १६ ॥ तएणं से मंखलिमंखणामं अण्णयाकयाइं भद्दाए भारियाए गुव्विणीए सद्धिं चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणु पुव्विं चरमाणे ग्रामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सण्णिवेसे जेणेव गोबहुलस्स

में गोबहुल नामका ब्राह्मण रहता था वह ऋद्धिवंत यावत् अपरिभूत था. ऋग्वेद यावत् सुपरिनिष्ठित था ॥ १५ ॥ उस गोबहुल ब्राह्मण को गा (गौओं रहने की शाला - स्थान) थी ॥ १६ ॥ एकदा मंखली नामक मंख अपनी गर्भवती स्त्री साथ हस्त में चित्र काष्ठ के टुकडे से भिक्षा याचता हुवा ग्रामानु ग्राम फीरता हुवा सरवण सन्निवेश में गोबहुल ब्राह्मण की गोशाला में आया. वहां आकर गोबहुल ब्राह्मण की

स० सन्निवेश जे० जहां गो० गोबहुल मा० माहण की गो० गौशाला ते० वहां उ० जाकर गो० गौबहुल मा० माहन की गो० गौशाला के ए० एक भाग में भं० पात्र निक्षेप क० करके स० सरवण स० सन्निवेश के उ० ऊंच णी० नीच म० मध्य कु० कुल में घ० घर समुदाण का भि० भिक्षा केलिये अ० शोधता व० वसति स० चारों बाजु म० मार्ग ग० गवेषण क० करे व० वसति की म० चारों बाजु म० मार्ग ग० गवेषण क० करता अ० अन्यत्र व० वसति को अ० नहीं प्राप्त होते त० उस गो० गोबहुल मा० माहन की गो० गौशाला के ए० एकदेश में वा० वास उ० किया ॥ १७ ॥ त० तब सा० वह भ० भद्रा भा०

माहणस्स गोसाले तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि भंडाणिक्खेवं करेइ, करेइत्ता सरवणे साण्णिवेसे उच्चणीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायारियाए अडमाणे वसही, सव्वओ समता मग्गणगवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणे अण्णत्थ वसहिं अलभमाणे तस्सेव गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए॥ १७॥ तएणं सा भद्दा

गोशाला के एक विभाग में भंडोपकरण रखे. और सरवण सन्निवेश के ऊंच नीच व मध्यम कुल में घर समुदान की भीक्षा के लिये फीरतेहुवे वसति में मार्गगवेषणा करने लगा. वसति में मार्ग गवेषणा करते अन्य स्थान नहीं मीलने से उस गोवहुल ब्रह्मण की गोशाला के एक विभाग में रहा. ॥ १७ ॥ अब उस भद्रा

भार्या ण० नव मा० मास ब० बहुत प० पतिपूर्ण अ० अर्ध अ० आठ रा० रात्रिदिवस वी० व्यतीत होते सु० सुकुमार जा० यावत् प० प्रतिरूप दा० पुत्र का प० जन्मदीया त० तब त० उस दा० पुत्र के अ० माता पिता ए० अग्यारवा दि० दिवस वी० व्यतीत होते जा० यावत् बा० बारवे दि० दिवस में अ० इसरूप गो० गौण गु० गुणनिष्पन्न णा० नाम क० करे अ० हमारा इ० यह दा० पुत्र गो० गोबहुल मा० माहण की गो० गौशाला में जा० उत्पन्न हुवा तं० इसलिये हो० होओ अ० हमारा इ० इस दा० पुत्र का णा० नाम गो० गोशाला त० तब त० उस दा० पुत्र के अ० माता पिता णा० नाम क०

भारिया णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमाल जाव पडिरूवं दारगं पयाता तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते जाव बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोणं गुणणिप्पणं णामधेज्जं करेंति जम्हाणं अम्हं इमे दारए गोबहुलस्स माहणस्स गोसालए जाते, तं होऊणं अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं 'गोसाले' गोसालेत्ति तएणं तस्स दारगस्स अम्मा-

भार्या को सवा नव मास पूर्ण होते सुकुमार यावत् प्रतिरूप पुत्र का जन्महुआ. अग्यारहवा दिन व्यतीत हुए पीछे बारहवे दिन में उस पुत्र का गुणनिष्पन्न गोशाला नाम रखा. क्यों की गोशाला का जन्म गोबहुल ब्राह्मण

करते है गो० गोशाला ॥ १८ ॥ तं० तब से० वह गो० गोशाला दा० पुत्र उ० रहित बा० बालभाव वि० विज्ञान प० परिणत जु० यौवन ग० गमन को प० प्राप्त स० स्वयं पा० प्रत्यक चि० चित्र फ० पटिया क० करके चि० चित्र फ० पटिया लेकर मं० भिक्षावृत्ति से अ० आत्मा को भा० भावता वि० विचरता है ॥ १९ ॥ ते० उस काल ते० उ० समय में अ० मैं गो० गौतम ती० तीस वा० वर्ष आ० गृहस्थावास में व० रहकर अ० माता पिता दे० देवलोक को ग० प्राप्त होते ए० ऐसा ज० जैसे भा० भावना में

पियरो णामधेज्जं करेंति गोसालेति ॥ १८ ॥ तएणं से गोसाले दारए उम्मुक्कबाल-भावे विण्णाय पारणयमेत्ते जुव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पाडिएक्कं चित्तफलग करेइ, करेइत्ता चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १९ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापिईहिं देवत्तगएहिं, एवं जहा भावणाए जाव एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता

की गौशाला में हुआथा, उस दिन से उन के मातापिता गोशाला कहने लगे. ॥१८॥ अब वह गौशाला बालभाव से मुक्त होकर युवावस्था को प्राप्त हुआ तब स्वयमेव एक चित्रित पटिया लेकर भीक्षा मांगता हुआ फीरने लगा ॥ १९ ॥ उस काल उस समय में मैंने तीस वर्ष पर्यंत गृहवास में रहकर मातपिता देवलोक गये पीछे वगैरह जैसे भावना शतक में कहा वैसे यावत् एक देवदूष्य सहित मुंडित बनकर गृहवास में से

प० एक दे० देवदूष्य आ० लेकर मुं० मुंड होकर आ० गृहवास से अ० अनगार को प० प्रव्राजित हुवा ॥ २० ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम प० पहिल्या वा० वर्ष को अ० अर्ध मास क्षमण करता अ० अस्थिग्राम की णि० निश्राय में प० प्रथम अं० वर्षा काल वा० वर्षा वास उ० रहा दो० दूसरा वा० वर्ष मा० मास क्षमण करता पु० पूर्वानुपूर्वि च० चलता गा० ग्रामानुग्राम दू० जाता जे० जहां रा० राजगृह न० नगर जे० जहां ना० नालिन्दा की बा० बाहिर जे० जहां तं० तणकर शाला ते० तहां उ०

अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥ २० ॥ तएणं अहं गोयमा ! पढमं वासं अद्ध-मासं अद्धमासेणं खममाणे अट्ठियगामे णिस्साए पढमं अंतरावासं वासावासं उवागए दोच्चं वासं मासं मासेणं खममाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणं गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव नालिंदा बाहिरिया जेणेव तंतुवाय साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हामि अहा २ तंतुवाय सालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए तएणं अहं गोयमा ! पढमं मासक्खमणं

साधुपना अंगीकृत किया ॥ २० ॥ उस समय मैं अर्धमासक्षमण की तपस्या करता हुवा अस्थिक ग्राम की नेश्राय से पहिला अंतरवास अर्थात् वर्षाकाल रहने आया. दूसरे वर्ष में मासक्षमण की तपश्चर्या करके पूर्वानुपूर्वि विचरता हुवा व ग्रामानुग्राम चलता हुवा राजगृह नगर के नालिंदा पाडा के बाहिर तंतुवाय शाला में यथाप्रतिरूप अवग्रह याच कर उस के एक विभाग में वर्षाकाल के लिये रहा.

आकर अ० यथा प० प्रतिरूप उ० आज्ञा उ० लेकर तं० वणकर शाला के ए० एकविभाग में वा० वर्षा काल उ० रहा त० तब अ० मैं गो० गौतम प० प्रथम मा०मासक्षमण उ० अंगीकार कर वि०विचरता था ॥ २१ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र चि० चित्र फ० फलक ह० हस्त में मं० भिक्षा-वृत्ति से अ० आत्मा को भा० भावता पु० पूर्वानुपूर्वि च०चलता जा० यावत् दू० जाता जे०जहां रा० राज गृह न० नगर जे० जहां णा० नालिन्दा बा० बाहिर का जे० जहां तं० वणकर शाला ते० तहां उ०

उवसंपजित्ताणं विहरामि ॥ २१ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते चित्तफलग हत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव णालिंदा बाहिरिया जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि भंडाणिक्खेवं करेइ, करेइत्ता रायगिहे णयरे उच्चणीय जाव अण्णत्थकत्थवि वसहिं अलभमाणे तीसेय तंतुवायसालाए

अहो गौतम ! मैं वहां प्रथम मासखमण कर के रहा ॥ २१ ॥ फीर मंखली पुत्र गोशाला हस्त में चित्रित पट्टिया लेकर भीक्षा मांगता हुवा ग्रामानुग्राम विचरता हुवा राजगृह नगर के नालिंदा पाडा की बाहिर तंतुवायशाला में आया. वहां आकर उसके एक विभाग में उसने अपने भंडोपकरण रखे और राजगृह नगरके ऊंच नीच व मध्यकुल में अन्यस्थान नहीं मीलने से उस ही तंतुशाला के एक विभाग में कि जहां मैं

आकर तं० वणकर शाला के ए० एकविभाग में भं० पात्र णि० निक्षेप क० करके रा० राजगृह ण० नगर में उ० ऊंच णी० नीच जा० यावत् अ० अन्यत्र क० कहांभी व० वसति अ० प्राप्त नहीं होते तौ० उस तं० वणकर शाला की ए० एकादिशा में वा० वर्षा काल उ० रहा ज० जहां अ० मैं गो० गौतम ॥ २२ ॥ त० तत्र अ० मैं गो० गौतम प० प्रथम मा० मास क्षमण पा० पारणा में तं० वणकर शाला में प० नीकलकर ना० नालिन्दा बा० बाहिर म० मध्य से जे० जहां रा० राजगृह न० नगर उ० ऊंच णी० नीच जा० यावत् अ० फीरते वि० विजय गा० गाथा पतिका गि० गृह में अ० प्रवेश किया ॥ २३ ॥

एगदेसंसि वासावास मुवागए, जत्थेवणं अहं गोयमा! ॥ २२ ॥ तएणं अहं गोयमा! पढम मासक्खमणपारणंसि तंतुवायसालाए पडिणिक्खमामि, तंतुवाय सालाए पडिणिक्खमित्ता नालिंदा बाहिरियं मज्झंमज्झेणं जेणेव रायगिहे णयरे उच्चणीय जाव अडमाणे विजयस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे ॥ २३ ॥ तएणं से विजए

रहाथा वहां आया. ॥ २२ ॥ अत्र अहो गौतम ! प्रथम मास खमण के पारणे के दिन तंतुशाला में से नीकला और नालंदिय पाडा के बाहिर मध्यबीच में होता हुवा राजगृह नगर में ऊंच नीच व मध्यम कुल में भीक्षा के लिये फीरता हुवा विजय गाथापति के गृह मैंने प्रवेश किया ॥ २३ ॥ विजय गाथापति मुझे आता हुवा देखकर अति हर्षित हुवा और शीघ्र अपने आसन से उठकर पादपीठिका से नीचे

त० तब से० वह वि० विजय गा० गाथापति म० मुझे ए० आता पा० देखकर ह० हृष्ट तुष्ट खि० शीघ्र आ० आसन से अ० उठकर पा० सिंहासन से प० खडा होकर ए० एक साडीका उ० उत्तरासंग क० करके अं० अंजलि म० जोडकर ह० हस्त से म० मेरी म० सात अ० आठ प० पॉंव अ० सामने आकर म० मुझे ति० तीनवक्त आ० आवर्तन प० प्रदक्षिणा क० करके म० मुझे वं० वंदन करे ण० नमस्कार करे म० मुझे वि० विपुल अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम मे प० देऊंगा इ० ऐसा तु० हर्षित हुवा प० देते तु० तुष्ट हुवा प० देकर तु० तुष्ट हुवा ॥ २४ ॥ त० तब त० उस वि० विजय

गाहावई ममं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठ तुट्ठ खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता पादपीठाओ पच्चोरुभति २ त्ता पाययाओ उमुयइ २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ २ त्ता, अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ २ त्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता ममं वंदइ नमंसइ त्ता २ विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभिस्सामित्ति तुट्ठे पडिलाभेमाणे वितुट्ठे पडिलाभितेवि तुट्ठे, ॥ २४ ॥ तएणं तस्स विजयस्स गाहाव-

उतरकर, एक साडीवाला वस्त्रका उत्तरासन कर, और दोनों हस्त की अंजली जोडकर सात आठ पॉंव मेरी सामने आया, और मुझे तीन वार हस्त जोडकर प्रदक्षिणा देकर, वंदना नमस्कार कर विपुल असन पान स्वादिम स्वादिम देवेंगें ऐसा विचार कर हर्षित हुवा, मुझे असनादि देता हुवा हर्षित हुवा

गा० गाथापति का ते० उस द० द्रव्य शुद्ध से दा० देनेवाला सु० शुद्ध प० लेनेवाला प० शुद्ध से ति० तीन विध ति० तीन करण सु० शुद्ध दा० दान से म० मुझे प० देता हुवा दे० देव आयुष्य णि० बंधा सं० संसार प० परत्त क० कीया गि० गृह में पं० पांच द्रव्य पा० प्राप्त हुवे व० द्रव्य वृष्टि द० दश अर्ध व० वर्ण वाले कु० कुसुम णि० वृष्टि हुइ चे० वस्त्र की उ० वृष्टिहुइ आ० बजाती दे० देवदुंदुभी अं० बीच में आ० आकाश में अ० अहो दा० दान त्ति० ऐसा घु० उद्घोषणा की ॥ २५ ॥ त० तब रा० राजगृह

इस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिग्गहसुद्धेणं तिविहं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउयाणिबद्धे संसारपरित्तीकए गिहंसिय से इमाइं पंचदिव्वाइं पाउब्भूया तंजहा वसुहारावुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे णिवातिते, चेलुक्खेवेकए आहयाओ देवदुंदुभीओ अंतरावियणं आगासे अहोदाणे २ त्ति घुट्टे ॥ २५ ॥ तएणं

अशनादि दिये पीछे भी हर्षित हुवा. ॥ २४ ॥ तब ४२ दोष रहित द्रव्य शुद्ध, आशंसादिदोष रहित दाता शुद्ध और दूषण रहित होने से पात्र शुद्ध यों तीनों शुद्ध होने से तीन करन तीन योग से मुझे शुद्ध दान देने से देवता का आयुष्य बांधने हुआ और संसार को परत्त करते हुवे विजय गाथापति के गृह में पांच द्रव्य की वृष्टि हुइ. १ रत्नादि धन की वृष्टि २ पांच वर्ण के पुष्प की वृष्टि ३ ध्वजारूप वस्त्र की वृष्टि ४ देव दुंदुभी और ५ आकाश में 'अहो दान अहो दान' ऐसी उद्घोषणा ॥ २५ ॥

न० नगर में सिं० शृंगाटक जा० यावत् प० रस्ते में ब० बहुत ज० मनुष्य अ० अन्योन्य ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ए० ऐसा प० प्ररूपते हैं ध० धन्य दे० देवानुप्रिय वि० विजय गा० गाथापति क० कृतार्थ दे० देवानुप्रिय वि० विजय गा० गाथापति क० कृतपुण्य दे० देवानुप्रिय वि० विजय गा० गाथापति क० कृतलक्षण दे० देवानुप्रिय वि० विजय गा० गाथापति क० कीया लो० लोक दे० देवानुप्रिय वि० विजय गा० गाथापति का सु० अच्छा प्राप्त दे० देवानुप्रिय मा० मनुष्य के ज० जन्म जी०

रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेंसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एव माइक्खइ जाव एवं परूवेइ धण्णेणं देवाणुप्पिए ! विजए गाहावई, कयत्थेणं देवाणुप्पिए विजए गाहावई, कयपुण्णेणं देवाणुप्पिया ! विजए गाहावई, कयलक्खेणं देवाणुप्पिया ! विजए गाहावई, कयाणं लोया देवाणुप्पिया ! विजयस्स गाहावइस्स सुलद्धेणं देवाणुप्पिए ! माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, जस्सणं गिहंसि तहारूवे

उस समय राजगृह नगर के शृंगाटक यावत् राज्यमार्ग में परस्पर लोको ऐसा कहने लगे यावत् प्ररूपने लगे कि देवानुप्रिय ! विजय गाथापति को धन्य है, विजय गाथापति कृतार्थ, कृत पुण्यवाला व कृत लक्षण वाला है, विजय गाथापतिने इसलोक व परलोक में शुभफल किये हुवे हैं, विजय गाथापति का मनुष्य जन्म सफल हुवा, क्यों की तथारूप साधुओंको दान देने से उन के गृह में पांच प्रकार की दीव्य वस्तुओं

जीवित फ० फल वि० विजय गा० गाथापतिका ज० जिस गि० गृह० में त० तथारूप सा० साधु सा० साधुरूप को प० देता हुवा इ० ये पं० पांच द० द्रव्य पा० प्राप्त हुवे व० द्रव्य वृष्टि जा० यावत् अ० अहो दान घु० उद्घोषणा की ध० धन्य क० कृतार्थ क० कृत पुन्य क० कृत लक्षण क० कीया लो० लोक सु० अच्छा प्राप्त मा० मनुष्य का ज० जन्म जी० जीवित फ० फल विजय गा० गाथापति का ॥ २६ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र ब० बहुत मनुष्य अं० पास ए० यह अर्थ सो०

साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंचादिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तंजहा वसुधारावुट्ठा जाव अहोदाणे घुट्ठे २, धण्णेणं कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे कयाणं लोया सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स विजयस्स २ ॥ २६ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णको- ऊहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता विजयस्स

प्रगट हुइ. इस से विजय गाथापति का जन्म धन्य, कृतार्थ, कृतपुन्यवाला कृतलक्षणवाला, इस लोक व परलोक में शुभफलवाला व सफल है, ॥ २६ ॥ उस समय में बहुत मनुष्यों से ऐसी वार्ता सुनकर मंखलि पुत्र गोशालक को संशय यावत् कोतुहल उत्पन्न हुवा और विजय गाथापति के गृह आया. वहां विजय गाथापति के गृह धन की वृष्टि पांच वर्णवाले पुष्प वगैरह पांच प्रकार की वस्तुओं व मुझे उस के गृह से

सुनकर णि० अवधारकर स० उत्पन्न हुवा सं० संशय स० उत्पन्न हुवा को० कुतूहल जे० जहां वि० विजय गा० गाथापति का गि० गृह त० तहां उ० आकर वि० विजय गा० गाथापति के गि० गृह में व० वसुधारा की वु० वृष्टि द० दश अ० अर्ध व० वर्ण कु० कुसुम णि० पडेहुए म० मुझे वि० विजय गा० गाथापति के गि० गृह से प० नीकला पा० देखकर हृ० हृष्ट तु० तुष्ट जे० जहां म० मेरी अं० पास ते० तहां उ० आकर म० मुझे ति० तीन वक्त आ० आवर्तन प० प्रदक्षिणा क० करके म० मुझे वं० वंदनकर ण० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोला तु० तुम भं० भगवन् म० मेरे ध० धर्माचार्य अ० मैं तु० तुमारा ध० धर्म अंतेवासी ॥ २७ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र का ए० इस

गाहावइस्स गीहंसि वसुहारांसि वुट्ठिं दसद्धवण्णं कुसुमं णिवडियं ममंचणं विजयस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिणिक्खममाणं पासइ, पासइत्ता हट्ठतुट्ठ, जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवगच्छइत्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं करेइ, करेइत्ता ममं वंदइ णमंसइ, णमंसइत्ता ममं एवं वयासी तुब्भेणं भंते ! ममं धम्मायरिया, अहंणं तुब्भं धम्मंतेवासी ॥ २७ ॥ तएणं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स

नीकलते हुवे देखकर हृष्ट तुष्ट हुवा और मेरी पास आकर मुझे तीनवार हस्त जोडकर प्रदक्षिणा कर के वंदना नमस्कार करते हुवे बोला कि अहो भगवन् ! आप मेरे धर्माचार्य हो और मैं आप का धर्मशिष्य हूं

अर्थ को णो० नहीं आ० आदर किया णो० नहीं प० अच्छा जाना तु० शांत सं० रहा ॥ २८ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम रा० राजगृह ण० नगर से प० नीकलकर णा० नालंदा बा० बाह्य की म० मध्य से जे० जहां तं० वणकर शाला ते० तहां उ० आकर दो० दूसरा मा० मास क्षमण उ० अंगीकार कर वि० विचरा ॥ २९ ॥ त० तब अ० मैं मा० मास क्षमण पा० पारणे में तं० वणकर सा० शाला से प० नीकलकर णा० नालंदा बा० बाहिर म० मध्य से जे० जहां रा० राजगृह ण० नगर जा० यावत्

एयमट्ठं णो आढामि णो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ॥ २८ ॥ तएणं अहं गोयमा ! रायगिहाओ णयराओ पडिणिक्खमामि २ त्ता, णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छामित्ता, दोच्चं मास-क्खमणं उवसंपज्जात्ताणं विहरामि ॥ २९ ॥ तएणं अहं मासक्खमणपारणगंसि, तंतुवायसालाओ पडिणिक्खमामि पडिणिक्खमामित्ता णालंदं बाहिरिंग मज्झंमज्झेणं

॥ २७ ॥ अहो गौतम ! उस समय मैंने गोशाला के वचन का आदर किया नहीं; उन के वचन मैंने अच्छे जाने नहीं परंतु मौन रहा. ॥ २८ ॥ फीर अहो गौतम ! मैं राजगृह नगर में से नीकलकर नालंदिय पाडा के बाहिर मध्यबीच में से नीकलता हुवा तंतुवाय शाला में आया और दूसरा मास खमण कर के रहने लगा. ॥ २९ ॥ मास खमण के पारणे के दिन तंतुवाय शाला में से नीकल कर नालंदिय पाडा के

अ० फिरते आ० आनंद गा० गाथापति का गि० गृह में अ० प्रवेश कीया ॥ ३० ॥ त० तब आ० आनंद गा० गाथापति म० मुझे ए० आता पा० देखकर ए० ऐसे ज० जैसे वि० विजय का ण० विशेष म० मुझे वि० विपुल ख० खाद्यादि से प० दूंगा तु० तुष्ट से० शेष तं० तैसे जा० यावत् त० तीसरा मा० मास खमण उ० अंगीकार कर वि० विचरा ॥ ३१ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम त० तीसरा मा० मास क्षमण पा० पारणे में तं० वणकर शाला से प० नीकलकर त० तैसे जा० यावत् अ० फिरते सु० सुदर्शने

जेणेव रायगिहे णयरे जाव अडमाणे आणंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे ॥ ३० ॥ तएण से आणंदे गाहावई ममं एज्जमाणं पासइ पासइत्ता एवं जहेव विजयस्स, णवरं ममं विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेसं तंचेव जाव तच्चं मासक्खमणं उवसंपाजित्ताणं विहरामि ॥ ३१ ॥ तएणं अहं गोयमा ! तच्चं मासक्खमणं पारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिणिक्खमामि, पडिणिक्खमामित्ता तहेव जाव अडमा-

वाहिर मध्यबीच में होकर राजगृह नगर में ऊंच नीच व मध्यकुल में फीरता हुवा आनंद गाथापति के गृह गया. ॥ ३० ॥ आनंद गाथापति मुझे आता हुवा देखकर विजय गाथापति की तरह हृष्ट तुष्ट हुवा और अपने आसन से उठकर सात आठ पांव साम ने आया. वगैरह विजय गाथापति की तरह सब किया विशेष में मुझे मकर की विधिवाला भोजन देकर संतुष्ट हुवा शेष पूर्ववत् यावत् तीसरा मासखमण अंगीकार

गा० गाथापति के गि० गृह में अ० प्रवेश कीया त० तब से० वह सु० सुदर्शन गा० गाथापति ण० विशेष स० सर्व का० रसमय भो० भोजन से प० देवे से० शेष तं० तैसे जा० यावत् च० चौथा मा० मास क्षमण उ० अंगीकार कर वि० विचरता हूं ॥ ३२ ॥ ती० उस णा० नालंदा बा० बाहिर अ० नजदीक को० कोल्लास स० सन्निवेश हो० था व० वर्णन युक्त ॥ ३३ ॥ त० तहां को० कोल्लास स० सन्निवेश में ब० बहुल मा० माहण प० रहता था अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत रि० ऋग्वेद जा० यावत्

णे सुदंसणस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे तएणं से सुदंसणे गाहावई, णवरं ममं-सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेति सेसं तंचेव, जाव चउत्थं मासक्खमणं उव-संपज्जित्ताणं विहरामि ॥ ३२ ॥ तीसेणं णालिंदा बाहिरियाए अदूरसामंते एत्थणं कोल्लाएणामं सण्णिवेसे होत्था, सण्णिवेस वण्णओ ॥ ३३ ॥ तत्थणं कोल्लाए

कर विचरने लगा ॥ ३१ ॥ अहो गौतम ! तीसरे मासखमण के पारणे के दिन राजगृह नगर में सुदर्शन शेठ के गृह में मैंने प्रवेश किया. सुदर्शन गाथापति मुझे इच्छानुमार सकल रसमय भोजन देकर संतुष्ट हुवा शेष सब अधिकार विजय गाथापति जैसे जानना यावत् चौथा मासखमण कर के विचरने लगा. ॥३२॥ उस नालिंदा पाडा के बाहिर पास एक कोल्लाससन्निवेश था. वह वर्णन युक्त था ॥ ३३ ॥ उस कोल्लास सन्निवेश में बहुल नामक ब्राह्मण रहता था. वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभूत था और ऋग्वेद यावत्

सु० सुपरिनिष्ठित ॥ ३४ ॥ त० तब से० वह ब० बहुल मा० माहण क० कार्तिक च० चतुर्मास की पा० प्रतिपदा को वि० विपुल म० मधु घ० घृत सं० युक्त प० श्रेष्ठ अ० अन्न से मा० ब्राह्मणों को आ० जिमाये त० तब अ० मैं गो० गौतम च० चौथा मा० मास क्षमण पा० पारणे में तं० वणकरशाला से प० नीकल कर णा० नालंदा बाहिर म० मध्य से णि० नीकलकर जे० जहां को० कोल्लाक स० सन्निवेश उ० ऊंच

सण्णिवेसे बहुलेणामं माहणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए रिउव्वेय जाव सुपरिणि-ट्ठिएयावि होत्था ॥ ३४ ॥ तएणं से बहुले माहणे कत्तियचाउम्मासिय पाडिवयंसि विउलेणं महुघयसंजुत्तेण परमण्णेणं माहणे आयामेत्था ॥ तएणं अहं गोयमा ! चउत्थमासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिणिक्खमामि, पडिणिक्खमामित्ता णालंदा बाहिरियं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छामि णिग्गच्छामित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णि-वेसे उच्चणीय जाव अडमाणे बहुलस्स माहणस्स गिहं अणुप्पविट्ठे ॥ ३५ ॥

सब नयों में प्रविण था. ॥ ३४ ॥ उस बहुल ब्राह्मण ने कार्तिक चौमासिकी प्रतिपदा को मधुघृत सहित विपुल परमअन्न [क्षीर] कर के ब्राह्मणों को जीमाये थे. उस समय मैंभी चौथा मासखमण का पारणा के लीये तंतुवायशाला में से नीकलकर नालंदा पाडाकी बाहिर मध्यवीच में से नीकला. नीकलकर कोल्लाग सन्निवेश में ऊंच नीच मध्यकुल में भीक्षा करते हुवे बहुल ब्राह्मण के घर में प्रवेश किया. ॥ ३५ ॥

नी० नीच जा० यावत् अ० फिरते ब० बहुल मा० ब्राह्मण के गि० गृह में अ० प्रवेश किया ॥ ३८ ॥ त० तब से० वह ब० बहुल मा० ब्राह्मण म० मुझे ए० आते त० तैसे जा० यावत् वि० विपुल म० मधु घ० घृत सं० युक्त प० उत्कृष्टअन्न से प० देऊंगा तु० तुष्ट से० शेष ज० जैसे वि० विजय का जा० यावत् ब० बहुल मा० माहण ॥ ३९ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र म० मुझे तं० वणकर शाला में अ० नहीं देखकर रा० राजगृह न० नगर में स० आभ्यंतर बा० बाहिर म० मुझे स०

तएणं से बहुले माहणे ममं एज्जमाणं तहेव जाव ममं विउलेणं महुघय संजुत्तेणं परमण्णणं पडिलाभेस्सामीति,तुट्ठे,सेसं जहा विजयस्स जाव बहुले माहणेबहु २ ॥ ३९ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं तंतुवाय सालाए अपासमाणे रायगिहे णयरे सब्भिंतर बाहिरियाए ममं सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ, ममं कत्थवि सुइंवा खुइंवा पवित्तिंवा अलभमाणे जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

उस समय में मुझे आता हुवा देखकर बहुल ब्राह्मण मधु घृत संयुक्त क्षीर मैं देऊंगा ऐसा विचार कर हर्षित हुवा वगैरह शेष सब विजय गाथापति जैसे कहना यावत् बहुल ब्राह्मण को धन्य है ऐसा लोगों में वार्तालाप होने लगा. ॥ ३९ ॥ फीर मंखली पुत्र गोशाला मुझे तंतुवाय शाला में नहीं देखने से राजगृह नगर की आभ्यंतर व बाहिर चारों तरफ मेरा मार्ग की गवेषणा करने लगा परंतु मेरी श्रुति,छींक व प्रवृत्ति

चारोंतरफ म० मार्ग गवेषण क० करे म० मेरा क० कहां सु० शब्द खु० छींक प० प्रवृत्ति अ० नहीं प्राप्त होते जे० जहां तं० वणकरशाला ते० तहां उ० आकर सा० परिधान वस्त्र पा० उत्तरीय वस्त्र कुं० पात्र वा० पगरखी चि० चित्र फलक मा० ब्राह्मण को आ० देकर स० दाढीमूंछ मुं० मुंड करके तं० वणकर शाला से प० नीकलकर णा० नालंदा वा० बाहिर म० मध्यसे णि० नीकलकर जे० जहां को० कोल्लाक स० सन्निवेश ते० तहां उ० आया ॥३७॥ त० तत्र त० उस को० कोल्लाक स० सन्नि-

च्छइत्ता साडियाओय पाडियाओय कुंडियाओय, वाणहाओय, चित्तफलगं च माहणे आयामेइ. आयामेइत्ता सउत्तरोट्ठं मुंडं करेइ, करेइत्ता तंतुवायसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता जेणेव कोल्लागसण्णिवेसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता ॥ ३७ ॥ तएणं तस्स

किसी स्थान नहीं मालूम पडने से पुनः तंतुवाय शाला में गया वहांपर पहिने हुवे वस्त्र, उतरेहुवे वस्त्र; कुण्डिकादिक भाजन, पग की पगरखियों और चित्रित पटियों वगैरह सब ब्राह्मण को देकर दाढी मुंछ वगैरह का मुंडन कर तंतुवायशाला में से नालंदिय पाडा के बाहिर मध्यबीच में होकर कोल्लाग सन्निवेश में आया. ॥ ३७ ॥ वहांपर कोल्लाग सन्निवेश की बाहिर परस्पर लोकों ऐसा कहने लगे यावत् प्ररूपने लगे

वशो की व० बाहिर व०बहुत ज०मनुष्य अ० अन्योन्य ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० प्ररूपते हैं ध० धन्य दे० देवानुप्रिय व० बहुल ब्राह्मण तं० तैसे जा० यावत् जी० जीवित फल व० बहुल माहण का ॥ ३८ ॥ त० तब तं० उस गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र को व० बहुत ज०मनुष्य की अं०पास ए०यह अर्थ सो० सुनकर णि० अवधारकर अ० इस रूप अ० चिंतवन जा० यावत् म० उत्पन्न हुवा जा० जैसे म० मेरा ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की इ० ऋद्धि जु० द्युति

कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स बाहिया बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ धण्णेणं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे तंचेव जाव जीवियफले बहुलस्स माहणस्स बहुलस्स माहणस्स ॥ ३८ ॥ तएणं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ॥ जारिसियाणं मम धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इड्ढी

कि बहुल ब्राह्मण को धन्य है यावत् बहुल ब्राह्मण का जीवित सफल है. ॥३८॥ बहुत मनुष्यों की पास से ऐसा सुनने से मंखली पुत्र गोशाला को ऐसा अध्यवसाय हुवा कि मेरे धर्माचार्य, धर्मोपदेशक श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की जैसी ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य व पुरुषात्कार पराक्रम है वैसी ऋद्धि द्युति यावत् पराक्रम अन्य किसी श्रमण ब्राह्मण को नहीं है. इसलिये निश्चय ही मेरे धर्माचार्य धर्मोप

ज० यश ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुए णो० नहीं अ० है ता० तैसी अ० अन्य क० किसी को त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की इ० ऋद्धि जु० द्युति जा० यावत् प० पराक्रम ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुए तं० इसलिये ए० संदेह रहित ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर भ० होंगे ति० ऐसा करके को० कोल्लाक स० सन्निवेश की व० बाहिर म० मुझे स० चारोंबाजु म० मार्ग गवेषणा क० करे म० मुझे स० चारोंबाजु क० करके को० कोल्लाक स० सन्निवेश की व० बाहिर प० मनोज्ञ भू० भूमि में म० मेरी

जुत्ती जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, णो खलु अत्थि तारिसियाणं अण्णस्स कस्सवि तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा, इड्ढी जुत्ती जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए तं णिस्संदिद्धूण्णं, एत्थं धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे भविस्सतीति कट्टु, कोल्लागसण्णिवेसे सब्भिंतर बाहिरिए ममं सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ, ममं सव्वओ जाव करेमाणे कोल्लगसण्णिवेसस्स

देशक वही श्री श्रमण भगवंत महावीर होगा. ऐसा कहकर कोल्लाग सन्निवेश की बाहिर चारों तरफ मेरी गवेषणा की. इस तरह गवेषणा करते कोल्लाग सन्निवेस के बाहिर उतरने के स्थान मुझे मीला ॥ ३९ ॥

स० साथ अ० भीला ॥ ३९ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र ह० हृष्ट तु० तुष्ट म० मुझे ति० तीन वक्त आ० आदान प० प्रदक्षिणा जा० यावत् ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोला तु० तुम भं० भगवन् म० मेरे ध० धर्माचार्य अ० मैं तु० तुमारा अं० अंतेवासी ॥ ४० ॥ त० तब अ० मैं गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र का ए० यह अर्थ प० अच्छाजानूं ॥ ४१ ॥ त० तब अ० मैं गोतम गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र की स० साथ प० मनोज्ञ भू० भूमिमें छ० छवर्ष ला० लाभ अ० अलाभ सु० सुख दु० दुःख स० सत्कार अ० सत्कार रहित अ० अनुभवता अ० अनित्य जा० जागरणा वाला वि०

बहिया पणियभूमीए मए सद्धिं अभिसमण्णागए ॥ ३९ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते हट्ठतुट्ठे ममं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव णमंसित्ता एवं वयासी तुब्भेणं भते ! ममं धम्मायरिया अहं णं तुब्भं अंतेवासी, ॥ ४० ॥ तएणं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेमि ॥ ४१ ॥ तएणं अहं गोयमा ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं पाणियभूमिए छवासाइ लाभं अलाभं सुहं

मुझे देखकर मंखली पुत्र गोशाला हृष्ट हुवा और मुझे वंदना नमस्कार कर ऐसा बोला कि अहो भगवन् ! आप मेरे धर्माचार्य हैं और मैं आप का धर्म का शिष्य हूं. ॥ ४० ॥ अहो गौतम ! उस समय मैंने मंखली पुत्र गोशाला के वचन सुने अर्थात् उस के वचन मान्य किये ॥ ४१ ॥ फीर मैं गोशाला की साथ मनोज्ञ

विचरताथा ॥ ४२ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम अ० एकदा प० प्रथम म० शरद ऋतु में अ० अल्प वु० वर्षाद में गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र की स० साथ सि० सिद्धार्थ ग्राम न० नगर से कु० कूर्मग्राम न० नगर को सं० चले वि० विचरने को ॥ ४३ ॥ त० उस सि० सिद्धार्थ ग्राम से कु० कूर्मग्राम की अं० बीचमें म० बडा ए० एक ति० तिलका वृक्ष प० पत्र वाला पु० पुष्प वाला ह० हरित से रि० विराजमान सि० शोभासे अ० अतीव उ० शोभता चि० रहा है ॥ ४४ ॥ त० तब मे० वह गो० गोशाला मं०

दुक्खं सक्कारमसक्कारं पच्चणुब्भवमाणे अणिच्च जागरियं विहरित्था ॥ ४२ ॥ तएणं अहं गोयमा ! अण्णयाकयाइं पढमं सरदकालसमयंसि अप्पवुट्ठिकायंसि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं सिद्धत्थ गामाओ णयराओ कुम्मगामं णयरं संपट्ठिए विहाराए ॥ ४३ ॥ तस्सणं सिद्धत्थगामस्स णयरस्स कुम्मगामस्सय णयरस्सय अंतरा एत्थणं महं एगे तिलथंभए पत्तिए पुप्फिए हरियगरे रिज्जमाणे सिरीए अईव२ उवसोभे

भूमि में छ वर्षपर्यंत लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, सत्कार व असत्कार, अनुभवता हुवा अनित्य जागरणा करने लगा ॥ ४२ ॥ एकदा प्रस्तावे अल्पवृष्टिवाले शरदकाल [मृगसर मास] में मंखली पुत्र गौशाला की साथ सिद्धार्थ नगर से कूर्म ग्राम में जाने को नीकला ॥ ४३ ॥ उक्त सिद्धार्थ नगर व कूर्म ग्राम की बीच में एक बडा पत्र व पुष्प सहित तीलस्तंभ अतिशय शोभता हुवा रहाथा ॥ ४४ ॥ मंखली पुत्र गौशा-

मंखलि पुत्र तं० उस ति० तिलवृक्ष को पा० देखता है पा० देखकर म० मुझे वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोला ए० यह भं० भगवन् ति० तिलवृक्ष किं० क्या णि० निपजेगा णो० नहीं णि० निपजेगा ए० ये स० सात ति० तिल के पु० पुष्प जीव उ० चवकर क० कहां ग० जावेंगे क० कहां उ० उत्पन्न होंगे त० तब अ० मैं गो० गौतम गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र को ए० ऐसा व० बोला गो० गोशाला ए० यह ति० तिलवृक्ष णि० उत्पन्न होगा ए० ये स० सात तिं० तिल पु० पुष्प जीव

माणे २ चिट्ठइ ॥५४॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते तं तिलथंभं पासइ, पासइत्ता ममं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसइत्ता एवं वयासी-एसणं भंते ! तिलथंभए किं णिप्पज्जिस्सइ णो णिप्पज्जिस्सइ, एएय सत्तातिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जिहिंति? तएणं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी गोसाला ! एसणं तिलथंभए णिप्पज्जिस्सइ णो निप्पज्जिस्सइ एएय सत्त तिल पुप्फ-

लाने उस तीलस्तंभको देख कर मुझे वंदना नमस्कार करता हुआ ऐसा बोला कि अहो भगवन् ! यह तील-स्तंभ निपजेगा या नहीं निपजेगा ? और ये सात तिलपुष्प के जीवों यहां से कालकर के कहां जावेंगे कहां उत्पन्न होंगे ? अहो गौतम ! उस समय मैंने ऐसा कहा कि अहो गोशाला ! यह तिल

उ० चवकर ए० इस ति० तिलवृक्ष की ए० एक ति० तिल की सं० फली में स० सात ति० तिल प० उत्पन्न होंगे ॥ ४५ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र म० मुझे ए० ऐसा आ० कहते ए० इस अर्थ को णो० नहीं स० श्रद्धे णो० नहीं प० प्रतीत किये णो० नहीं रो० रूचे ए० इस अर्थ को अ० नहीं श्रद्धता अ० नहीं प्रतीत करता अ० नहीं रूचता म० मेरी म० आश्री अ० यह म० मिथ्यावादी भ० होवो त्ति० ऐसा कर के प० मेरी अं० पास से प० पीछा जाकर जे० जहां ति० तिल वृक्ष ते० तहां उ० जाकर तं० उस ति० तिलवृक्ष को स० मूल सहित उ० उपाडकर ए० एकांत में ए० डालकर त० तत्क्षण

जीवा उद्दाइत्ता २ एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्ततिला पच्चायातिस्संति ॥ ४५ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं आइक्खमाणस्स एयमट्ठं णो सद्दहति, णो पत्तियति, णो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे मम पणिहाय अयण्णं मिच्छावादी भवउत्ति कट्टु, ममं अंतियाओ साणियं २ पच्चोसक्कइ २ जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता तं तिलथंभगं

स्तभं उत्पन्न होगा. और पुष्प के सात जीव वहां से चवकर इस की फली में सात तिलपने उत्पन्न होंगे. ॥ ४५ ॥ मंखली पुत्र गोशालाने मेरे इस कथन पर श्रद्धा रुचि व प्रतीति की नहीं और इस तरह श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं करते मेरे आश्रय में ही रहकर मैं मिथ्यावादी होऊं ऐसा विचार करके मेरी पास से

गो० गौतम दि० दीव्य अ० वर्षा के व० बद्दल पा० उत्पन्न हुए त० तब से० वह दि० दिव्य अ० वर्षा के बद्दल खि० शीघ्र प० गर्जे वि० विद्युत् होवे ण० बहुल पानी नहीं णा० बहुल कर्दम नहीं प० जलशीकर र० रजरेणु वि० विनाशक दि० दीव्य स० सलिल उ० उदक व० वर्षा वा० हुई जे० जिस से ति० तिलवृक्ष आ० स्थिर हुवा वी० विशेष स्थिर हुवा प० उत्पन्न हुवा ब० मूलबंधाया त० तहां प० प्रतिस्थित स० सात ति० तिल पु० पुष्प जीव उ० चवकर त० तहां ति० तिलवृक्ष के ए० एक ति० तिलसिंग में

सलेडुयायं चेव उप्पाडेइ, उप्पाडेइत्ता एगंते एडेइ, एडेइत्ता तक्खणमेत्तं च गोयमा! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए, तएणं से दिव्वे अब्भवद्दलिए खिप्पामेव पतण तणाए खिप्पामेव विज्जुयाइ, खिप्पामेव णच्चोसगं णातिमट्टियं पविरलपप्फुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वसलिलोदगं वासं वासइ ॥ जेणं से तिलथंभए आसत्थ वी-सत्थए पच्चायाए बद्धमूले तत्थेव पतिट्ठिए तेय सत्ततिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ तस्सेव

शनैः पीछा जाने लगा. और तिलस्तंभ को समूल मिट्टि सहित नीकाल कर एकान्त में डाल दिया. अहो गौतम! तत्क्षण वहां दीव्य अभ्रवद्दल प्रगट हुवा. उस दीव्य मेघ से शीघ्र गर्जारव हुवा, विजलियों चमकी, शीघ्र बहुत पानी की वर्षा हुई नहीं, बहुत कादव हुवा नहीं, पानी की फुंवार पडी, रजरेणु दबगई, दीव्य नदी के पानी जैसी वर्षा हुई, रसादिगुण सहित वह तिलस्थंभ स्थिर हुवा, बहुत स्थिर हुवा, उदय को

स० सात तिल प० उत्पन्न हुवे ॥ ४६ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र की स० साथ जे० जहां कु० कूर्मग्राम ते० तहां उ० गया ॥ ४७ ॥ त० तब त० उस कु० कूर्मग्राम की ब० बाहिर वे० वैश्यायन वा० बालतपस्वी छ० छठ छठ से अ० अंतर रहित त० तपकर्म से उ० ऊर्ध्व बा० बाहु से प० रखकर सू० सूर्याभिमुख से आ० आतापन भूमि में आ० आतापनालेते वि० विचरता है

तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया ॥ ४६ ॥ तएणं अहं गोयमा ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं जेणेव कुम्मगामे णयरे तेणेव उवागच्छामि ॥ ४७ ॥ तएणं तस्स कुम्मगामस्स णयरस्स बहिया वेसियायणे णामं बालतवस्सी छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ, आइच्चतेयतवियाओ से छप्पदीओ सव्वओ समंता

प्राप्त हुवा, उत्पन्न हुवा, उन के मूल बन्ध, और उस के उक्त सातों जीव वहां से चवकर उस स्तंभ की एक तिल फलि में सात तिलपने उत्पन्न हुए ॥ ४६ ॥ अहो गौतम ! मैं वहां से गौशाला की साथ कूर्म ग्राम नगर में गया ॥ ४७ ॥ वहां पर कूर्म ग्राम नगर की बाहिर वैश्यायन नामका बाल तपस्वी छठ २ के निरंतर तप कर्म से ऊंची बाहा कर सूर्याभिमुख से आतापना भूमि में आतापना लेता हुवा रहता था. सूर्य

आ० सूर्य ते० तेज से त० तपता छ० षट्पद स० चारोंबाजु अ० उत्पन्न होवे पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व द० दया केलिये प० पडी हुइ त० वहां भु० वारंवार प० मूके ॥ ४७ ॥ त० तत्र से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी को पा० देखकर म० मेरी अं० पास से स० धीमे धीमे प० पीछा जाकर ज० जहां वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी ते० तहां उ० आकर वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी को ए० ऐसा व० बोला किं० क्या भ० तुम मु० मुनि मु० यति उ० अथवा जू० यूका स०

अभिणिस्सवेंति पाणभूयजीवसत्तदयट्ठत्ताए एयण्णं पडियाओ २ तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चोरुभइ ॥ ४७ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं पासइ, पासइत्ता ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कइत्ता जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी-किं भवं मुणी मुणीए उदाहु जूया सेज्जायरए ? तएणं से वेसियायणे बाल-

के ताप से तप्त यूकाओं उन के बालों में से चारों तरफ नीचे गिरती थी. प्राण, भूत, जीव व सत्त्व की दया देख कर उन नीचे गीरी हुई यूकाओं को उठाकर अपने मस्तक में वारंवार रखता था ॥ ४७ ॥ वहां पर मंखलीपुत्र गौशाला वैशायन बाल तपस्वी को देखकर शनैः २ मेरी पास से पीछे गया. और वैशायन बाल तपस्वी की पास जाकर ऐसा बोला क्या तू मुनि तपस्वी है, यति है, कदाग्रही है अथवा यूकाओं का

शैय्यान्तर त० तब वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र का ए० यह अर्थ को णो० नहीं आ० आदर किया णो० नहीं प० अच्छा जाना तु० शान्त सं० रहा ॥ ४८ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी को दो० दूसरी वक्त ए० ऐसा व० बोला किं० क्या भ० तुम मु० मुनि मु० यति जा० यावत् से० शैय्यान्तर त० तब से० वह वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र से दो० दुसरी त० तीसरी वक्त ए० ऐसा वु० बोलाया हुवा आ० क्रोधाय मान हुवा जा० यावत् मि० देदीप्यमान हुवा आ० आतापना भू० भूमि से प० उत्तरकर

तवस्सी गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणइ तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ ४८ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं दोच्चंपि एवं वयासी-किं भवं मुणी मुणीए जाव सेज्जायरए ? तएणं से वेसियायणे बाल तवस्सी गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तेसमाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कइत्ता तेयासमुग्घाएणं समो-

शैय्यांतर है ? वैशायन बाल तपस्वीने मंखली पुत्र गौशाला के उक्त वचनों का आदर किया नहीं, अच्छे जाने नहीं और मौन रहा ॥ ४८ ॥ मंखली पुत्र गौशालाने पुनः दूसरी वक्त भी ऐसा ही कहा. इस तरह दो वार, तीन वार करने से वैश्यायन बाल तपस्वी आसुरक्त यावत् क्रुद्ध हुवा और आतापना भूमि से

ने० तेजस स० समुद्घात स० करके स० सात आठ प० पद प० पीछा जाकर गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र के व० वध केलिये स० शरीर ते० तेज णि० निकाला ॥ ४९ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र की अं० अनुकंपा अर्थे वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी की उ० ऊष्ण ते० तेजो लेश्या प० दूर करने को अं० बीच में सी० शीतल ते० तेजो लेश्या णि० णिकाली जा० जिस से म० मेरी सी० शीतल ते० तेजो लेश्या से वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी की उ० ऊष्ण ते० तेजोलेश्या प० दूरहुइ

हणइ, समोहणइत्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्कइ २ त्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वहाए सरीरगं तेयं णिसिरइ ॥ ४९ ॥ तएणं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलि पुत्तस्स अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स सा उसिण तेयलेस्सा तेय पडिसाहरणट्ठयाए, एत्थणं अंतरा अहं सीयलियं तेयलेस्सं णिसिरामि, जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स वालतवस्सिस्स सा उसिणतेयलेस्सा पडिहया

नीकलकर तेजस समुद्घात बनाइ. सात, आठ पांव पीछे जाकर मंखलीपुत्र गौशाला के वध के लिये शरीर में से तेजो लेश्या नीकाली ॥ ४९ ॥ अहो गौतम ! उस समय मंखली पुत्र गौशाला की दया के लिये वैश्यायन बाल तपस्वी की ऊष्ण तेजो लेश्या के तेज का संहारन करनेको बीच में मैंने शीतल लेश्या नीकाली जिस से वैशायन बाल तपस्वी की ऊष्ण लेश्याका घात हुवा. अर्थात् वह लेश्या दूर हुई॥५०॥मेरी

॥ ५० ॥ त० तब से० वह वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी सी० शीत ते० तेजो लेश्या से सा० उस उ० ऊष्ण ते० तेजो लेश्या को प० दूर की जा० जानकर गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र को किं० किंचित् आ० आबाध वा० व्याबाध छ० चर्मच्छेद अ० नहीं किया पा० देखकर सा० उस उ० ऊष्ण ते० तेजो लेश्या प० पीछीली म० मुझे ए० ऐसा व० बोला ग० जाना ए० यह ग० जाना ए० यह भ० भगवन् ॥ ५१ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र म० मुझे ए० ऐसा व० बोला किं० कैसे भं० भगवन् ए० यह जू० यूका सि० शैय्यान्तर तु० तुम को ए० ऐसा व०

॥ ५० ॥ तएणं से वेसियायणे बालतवस्सी ममं सीयलियाए तेयलेस्साए सा उसिण तेयलेस्सं पडिहयं जाणित्ता गोसालस्स य मंखलिपुत्तस्स किंचि आवाहंवा, वावाहंवा छविच्छेदंवा अकीरमाणं पासित्ता, साउसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरइ ममं एवं वयासी-से गयमेयं भगवं! गय २ मेयं भगवं! ॥ ५१ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी-किं णं भंते! एस जूया सिज्जातरए तुब्भे एवं वयासी-से गयमेयं

शीतल तेजो लेश्या से ऊष्ण तेजो लेश्या का घात हुवा जानकर और मंखली पुत्र गोशाला को किंचिन्मात्र भी अवाधा, विवाधा व चर्मछेद नहीं हुवा देखकर वैशायन बाल तपस्वीने अपनी तेजो लेश्या पीछी खींचली, और मुझे कहा कि अहो भगवन्! मैंने जाना. अहो भगवन्! मैंने जाना ॥ ५१ ॥ फीर

बोला से० वह ग० जाना ए० यह भ० भगवन् ॥ ५२ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम गो० गोशाला म० मंखलिपुत्र को ए० ऐसा व० बोला तु० तुम गो० गोशाला वे० वैश्यायन वा० बालतपस्वी को पा० देखकर म० मेरी अं० पास से स० धीमे धीमे प० पीछा जाकर जे० जहां वे० वैश्यायन धा० बालतपस्वी ते० तहां उ० जाकर वे० वैश्यायन वा० बालतपस्वी को ए० ऐसा व० बोले किं० क्या भ० तुम मु० मुनि मु० यति उ० अथवा जू० यूका से० शय्यान्तर त० तब से० वह वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी त० तुमारा ए० इस अर्थ णो० नहीं आ० आदरकिया णो० नहीं प० अच्छा जाता तु० शांत सं० रहे त०

भगवं ! -गयगयमेयं भगवं ! ॥ ५२ ॥ तएणं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-तुमंणं गोसाला ! वेसियायण बालतवस्सिं पासइ, पासइत्ता ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता वेसियायणे बालतवस्सिं एवं वयासी-किं भवं मुणी मुणीए उादहु जूया सेज्जायरए ॥ तएणं से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्ठं णो आढाइ णो परि-

मंखली पुत्र गोशाला मुझे ऐसा बोला कि अहो भगवन् ! यह यूकाशैय्यांतर आप को ऐसा क्यों कहता है कि मैंने जाना. अहो भगवन् ! मैंने जाना ॥ ५२ ॥ अहो गौतम ! उस समय मैं मंखली पुत्र गोशाला को ऐसा बोला कि अहो गोशाला ! वैश्यायन बालतपस्वी को देखकर तुम मेरी पास से शनैः नीकलकर

तब तु० तुम गो० गोशाला वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी को दो० दूसरी वक्त त० तीसरी वक्त ए० ऐसा व० बोले कि० क्या भ० तुम मु० मुनि जा० यावत् जू० यूका में० शय्यान्तर त० तब से० वह वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी तु० तुम को दो० दूसरी वक्त त० तीसरी वक्त ए० ऐसा बु० बोलते आ० क्रोधाय मान हुवा जा० यावत् प० पीछा जाकर स० शरीर का ते० तेज को णि० नीकाला त० तब अ० मैं गो० गोशाला त० तुमारी अ० अनुकंपाके लिये वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी की सा० वह ते० तेज प० दूर करने को अं० बीच में सी० शीतल ते० तेजो लेश्या णि० निकाला जा० यावत् प० दूर की जा० जानकर

जाणइ तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ तएणं तुमं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सिं दोच्चंवि तच्चंवि एवं वयासी-किं मवं मुणी जाव जूयासेज्जायरए ? ॥ तएणं से वेसियायणं बालतवस्सी तुमं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते जाव पच्चो सक्कइ सरीरगं तेयलेस्सं णिसिरइ ॥ तएणं अहं गोसाला ! तबअणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स सायतेय पडिसाहरणट्ठयाए एत्थणं अंतरा सीयलियं

उस की पास गये और उन को ऐसा बोले कि तुम मुनि हो या यूकाशैय्यांतर हो. वैश्यायन बाल, तपस्वीने तुमारे इन वचनों का आदर किया नहीं यावत् अच्छे जाने नहीं और मौन रहे. वैश्यायन बालतपस्वी को दो तीन बार उक्त कथन कहने से वह आसुरक्त यावत् क्रुद्ध हुवा और आतापना भूमि में से आकर तेजो

त० तुम्हारा स० शरीर को कि० किंचित् आ० पीडा वा० व्याबाध छ० चर्मच्छेद अ० नहीं कीया पा० देखकर सा० उस उ० ऊष्ण ते० तेजो लेश्या को प० साहरनकर म० मुझे ए० ऐसा व० बोला से० वह ग० जाना ए० यह भं० भगवन् ॥ ५३ ॥ त० तब गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र म० मेरी अं० पास से ए० यह अर्थ सो० सुनकर णि० अवधारकर भी० डरा हुवा जा० यावत् सं० उत्पन्न हुवा भ० भय क० कैसे भं० भगवन सं० संक्षिप्त वि० विपुल ते० तेजो लेश्या भ० होती है त० तब अ० मैं गो० गौतम गो०

तेयलेस्सं णिसिरामि जाव पडिहयं जाणित्ता तवसरीरगस्स किंचि आवाहंव वावाहंवा छविच्छेदंवा अकीरमाणे पासित्ता सा उसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरति २ त्ता ममं एवं वयासी से गयमेयं भगवं ! गयगयमेयं भगवं ॥ ५३ ॥ तएणं गोसाले मंखलिपुत्ते ममं अंतियाओ एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीए जाव संजायभए, ममं एवं वयासी कहिण्णं भंते ! संखित्तविउलतेयलेस्से भवइ ? तएणं अहं गोयमा ! गोसालं

लेश्या नीकाली. अहो गोशाला ! तेरी अनुकंपा से वैशायन बाल तपस्वी की तेजो लेश्या का संहारन करने के लिये वीच में मैंने शीतल तेजो लेश्या नीकाली. मेरी शीतल लेश्या से उन की ऊष्ण तेजो लेश्या हणाइ हुइ देखकर और तेरे शरीर को किंचिन्मात्र वाधा पीडा नहीं हुइ देखकर उसने ऊष्ण तेजो लेश्या पीछी खींचली. और मुझे ऐसा बोला. अहो भगवन् ! मैंने यह जाना. मैंने यह जाना ॥ ५३ ॥

गोशाला मं० मंखलिपुत्र को ए० ऐसा व० बोला जे० जो गो० गोशाला ए० एक स० नखसहित कु० उडीदकी पिं० मुष्टि ए० एक वि० विकटासन से छ० छठ छठ से अ० अंतर रहित उ० ऊर्ध्व बा० बाहु प० रखकर जा० यावत् वि० विचरे अं० अंदर छ० छमास की सं० संक्षिप्त वि० विपुल ते० तेजो लेश्या भ० होवे ॥ ५४ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र म० मेरा ए० यह अर्थ स० सम्यक्

मंखलिपुत्तं एवं वयासी जेणं गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेणय वियडासएणं छटुंछटेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय जाव विहरइ, सेणं अंतो छण्हं मासाणं संखित्त विउल तेउलेस्से भवइ, ॥ ५४ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एयमट्ठं सम्मं विणएणं पडिसुणेइ ॥ ५५ ॥ तएणं अहं

मेरी पास से ऐसा सुनकर मंखली पुत्र गौशाला डरा यावत् भयभीत होता हुवा बोला कि अहो भगवन् ! संक्षिप्त विपुल तेजोलेश्यावाला कैसे होवे ? अहो गौतम ! उस समय मैंने गोशाला से कहा कि अहो गोशाला ! उडद के बाकले की नख सहित एक मुष्टि और एक ऊष्ण पानी का चल्लू ग्रहण कर, निरंतर बेले २ का तप करे. और ऊर्ध्व बाहा से सूर्य की आतापना लेते हुवे विचरे तो उन को छ मास में संक्षिप्त विपुल तेजोलेश्या होती है. ॥ ५४ ॥ मंखली पुत्र गोशालाने मेरा इस अर्थ को सुना ॥ ५५ ॥

१ जब प्रयुंजने मे आवे नहीं तब संक्षिप्त और प्रयुंजने मे आवे तब विस्तृत होवे.

प० सूने ॥ ५५ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम अ० एकदा गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र की स०साथ कु० कूर्मग्राम से सि० सिद्धार्थ ग्राम ण० नगर को स० उद्यत हुवा वि० विचरने को जा० जब मो० हम तं० उस दे० भाग को ह० शीघ्र आ० आये ज० जहां से० वह ति० तिलकावृक्ष ॥ ५६ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र म० मुझे ए० ऐसा व० बोला तु० तुम मं० भगवन् त० तब म० मुझे ए० ऐसा आ०कहते थे जा० यावत् प० प्ररूपतेथे गो० गोशाला ए० यह ति० तिलकावृक्ष णि० उत्पन्न

गोयमा ! अण्णयाकयायि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं कुम्मगामाओ णयराओ सिद्धत्थगामं णयरं संपट्ठिए विहाराए,जाहेय मो तं देसं हव्वमागया जत्थणं से तिल-थंभए ॥ ५६ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी तुब्भेणं भंते ! तदा ममं एवं आइक्खह जाव एवं परूवेह गोसाला ! एसणं तिलथंभए णिप्पज्जिस्सइ

अहो गौतम ! एकदा मैं मंखली पुत्र गोशाला की साथ कूर्मग्राम नगर से सिद्धार्थ ग्राम नगर में जाने को नीकला. और जहां उक्त तिलस्थंभ था वहां हम दोनों आये ॥ ५६ ॥ तब मंखली पुत्र गोशाला मुझे ऐसा बोला कि अहो भगवन् ! उस समय तुमने मुझे ऐसा कहा था कि यह तिलस्तंभ उत्पन्न होगा और इन में रहे हुवे सात जीवों तील की फली में सात तीलपने उत्पन्न होंगे, तो यह मिथ्या है, क्यों की

होगा तं० तैसे प०उत्पन्न होंगे तं० वह मि०मिथ्या इ०यह प०प्रत्यक्ष दी०दीखता है ए०यह ति०तिलकावृक्ष णो० नहीं णि०उत्पन्न हुवा ते० वे स० सात ति० तिल पुष्प के जी० जीव उ०चवकर णो० नहीं ए० इस ति० तिलके वृक्ष की ए० एक ति०तीलफली में स० सात तिल प० उत्पन्न हुवे ॥ ५७ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र को ए० ऐसा व० बोला तु० तुम गो० गोशाला म० मुझे ए० ऐसा आ० कहते जा० यावत् प० प्ररूपते ए० इस अर्थ णो० नहीं स० श्रद्धा णो० नहीं प० प्रतीत किया णो० नहीं रो० रूचा ए० एस अर्थ को अ० नहीं श्रद्धता अ०नहीं प्रतीत करता अ० नहीं रूचता

णो णोणिप्पाज्जिस्सइ, तंचेव पच्चायाइस्संति, तंणंमिच्छा इमंचणं पच्चक्खमेव दीसइ, एसणं तिलथंभए णो णिप्पण्णे अणिप्पण्णमेव तेय सत्ततिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ णो एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्तातिला पच्चायाता ॥ ५७ ॥ तएणं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी तुमंणं गोसाला ! तदा ममं एवं आइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं णो सद्दहासि णो पत्तियसि णो

यह प्रत्यक्ष दीखता है कि यह तिलस्तंभ उत्पन्न नहीं हुआ है. और तिल पुष्प के सात जीवों वहां से चवकर इस तिल स्तंभ की तिलफली में सात तिलपने उत्पन्न नहीं हुवे हैं ॥५७॥ अहो गौतम ! उस समय मैंने मंखली पुत्र गोशाला को ऐसा कहा कि अहो गौशाला ! मैंने जो तुझे उस समय कहा था उस में

म० मुझे प० छोडकर अ० यह मि० मिथ्यावादी भ० होवे त्ति० ऐसा करके स० धीमे धीमे प० पीछा जाकर जे० जहां से० वह ति० तिल का वृक्ष ते० तहां उ० आकर जा० यावत् ए० एकांत में ए० डाले त० तत्क्षण गो० गोशाला दि० दीव्य अ० वर्षा के बद्दल पा० उत्पन्न हुवे त० तब से० वह दि० दीव्य अ० वर्षा के बद्दल खि० शीघ्र तं० तैसे जा० यावत् ति० तिलके वृक्ष की ए० एक ति० तिलसींग में मे स० सात ति० तिल प० उत्पन्न हुवे, तं० इसलिये गो० गोशाला से० वह तिं० तिलका वृक्ष णि० उत्पन्न

रोयसि, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे ममं पणिहाय अयंणं मिच्छा-वादी भवउत्ति कट्टु ममं अंतियाओ सणियं सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कइत्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता जाव एगंतमंते एडेसि, तक्खणमेत्तं गोसाला ! दिव्वे अब्भबद्दलए पाउब्भूए, तएणं से दिव्वे अब्भबद्दलए खिप्पामेव तंचेव जाव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्ततिला पच्चायाता तं एसणं

तेरी श्रद्धा प्रतीति व रुचि हुइ नहीं और इस तरह श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं होने से मैं मिथ्यावादी होऊं ऐसा विचार कर मेरी पास से तू शनैः २ पीछा गया और तिल स्तंभ की पास जाकर उसे मूल में मे उखेड कर अलग डाल दिया. अहो गोशाला ! उसी क्षण में दीव्य अभ्रबद्दल हुए और उस में पानी पडा यावत् तिलस्तंभ की एक तिल फली में सात तिलपने उत्पन्न हुए. अहो गौतम !

हुवा ते० वे स० सात ति० तिल के पु० पुष्प जीव उ० चवकर ए० इस ति० तिल के वृक्ष की ए० एक ति० तिलसींग में स०सात तिल पं०उत्पन्न हुवे ए०ऐसे ख०खलु गो०गोशाला व०वनस्पति काय प०परिवर्तन प० परिहार प० परिहार होवे ॥ ५८ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र म० मुझे ए० ऐसा आ० कहते जा० यावत् प० परूपते ए० यह अर्थ णो० नहीं स० श्रद्धे ए० इस अर्थ को अ० नहीं श्रद्धता जे० जहां से० वह ति० तिलका वृक्ष ते० तहां उ० जाकर ता० उस ति० तिलके वृक्ष

गोसाला! से तिलथंभए णिप्पण्णे णो अणिप्पण्णमेव, तेय सत्तातिल पुप्फजीवा उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्तातिला पच्चायाता ॥ एवं खलु गोसाला! वणस्सइकाइया पउट्ट परिहारं परिहरंति ॥ ५८ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एव माइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं णो सद्दहति ३ एयमट्ठं असद्दहमाणे जाव अरोएमाणे जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता ताओ तिलथंभयाओ तं तिलसंगलियं खुड्डुति खुड्डित्ता करय-

इस से यह तिल स्तंभ उत्पन्न हुवा है और उस की तिलफलि में पुष्प के सात जीवों मर कर सात तिलपने उत्पन्न हुए हैं. अहो गोशाला! वनस्पतिकायिक मरकर इस में ही उत्पन्न होते हैं ॥ ५८ ॥ तब गोशाला मेरा इस कथन की श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं करता हुवा उस तिल स्तंभ की पास गया

से तं० उस ति० तिलकी सींग को खु० तोडकर क० हथेली में स० सात तील प० नीकाले ॥ ५९ ॥ त० तब त० उस गो० गोशाला को ते० उन स० सात तिल ग० गीनते अ० ऐसा अ० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे ख० खलु स० सर्व जीव प० परिवर्तन प० परिहार प० परिहरते हैं ॥ ६० ॥ ए० यह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र का प० परिवर्तन ॥ ६१ ॥ ए० यह गो० गौतम गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र का म० मेरी अं० पास से आ० आत्मा से अ० अपक्रमण प० प्ररूपा ॥ ६२ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र ए० एक स० नख सहित कु० उडिद पिं० पिण्ड से

लंसि सत्ततिले पप्फोडेइ ॥ ५९ ॥ तएणं तस्स गोसालस्स ते सत्ततिले गणेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पाजित्था-एवं खलु सव्वजीवावि पउट्ट परिहारं परिहंरंति ॥६०॥ एसणं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स पउट्टे,॥६१॥ एसणं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ममं अंतियाओ आयाओ अवक्कमणे पण्णत्ते ॥ ६२ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते एगाए सणयाए कुम्मासपिंडियाए एगेणय वियडासएणं

और उस की फली तोडकर सातों तिल अलग किये ॥ ५९ ॥ इस तरह सात तिल गिनते हुवे गोशाला को ऐसा अध्यवसाय हुवा कि सब जीव मरकर उस ही योनि में उत्पन्न होते हैं ॥ ६० ॥ अहो गौतम ! मंखली पुत्र गौशाला का यह परिवर्तनवाद जानना ॥ ६१ ॥ अहो गौतम ! यही मंखली पुत्र गोशाला का मेरी पास से दूर होने का कहा ॥ ६२ ॥ अब मंखली पुत्र गोशाला मुष्टि प्रमाण उडीद के

ए० एक वि० विकटासन से छ० छठ छठ से उ० ऊर्ध्व बा० बाहु प० रखकर जा० यावत् वि० विचरता है त० तत्र गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र को अं० अंदर छ० छमास की सं० संक्षिप्त वि० विपुल ते० तेजो लेश्या जा० उत्पन्न हुइ ॥ ६३ ॥ त० तब गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र को अ० एकदा छ० छदिशाचर अं० पास पा० आये तं० वह ज० जैसे सा० साण तं० तैसे स० सर्व जा० यावत् अ० अजिन जि० जिन शब्द प० कहता वि० विचरता है णो० नहीं गो० गौतम गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र जि० जिन जि० जिनप्रलापी जा० यावत् जि० जिन शब्द प० कहता

छट्ठं छट्ठेणं उड्ढं बाहाओ पगज्झिय २ जाव विहरइ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते अंतो छण्ह मासाणं संखित्त विउलतेयलेस्से जाए ॥ ६३ ॥ तएणं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णयाकयाइ इमे छदिसाचरा अंतियं पाउब्भवित्था- तंजहा-साणे तंचेव सव्वं जाव अजिणे जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ तं णो खलु गोयमा! गोसाले मंखलि

बाकले और एक चुल्लू पानी लेकर निरंतर बेले २ पारने करके ऊर्ध्व बाहा से सूर्य की आतापना लेता हुवा विचरने लगा और छमास में उस को संक्षिप्त विपुल तेजो लेश्या हुइ ॥ ६३ ॥ अब एकदा मंखली पुत्र गोशाला की पास साण आदि छ दिशाचर आये, उन से अष्टांग निमित्त का ज्ञान प्राप्त कर यावत् अजिन होने पर जिन शब्द का प्रकाश करता हुवा विचरता है. अहो गौतम ! मंखली पुत्र गोशाला

वि० विचरता है गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र अ० जिन नहीं जि० जिन प्रलापी जा० यावत् प० कहता वि० विचरता है ॥६४॥ त० तब सा० वह म० बहुतबडी प० परिषदा ज० जैसे सि० शिव जा० यावत् प० पीछी गई ॥ ६५ ॥ त० तब सा० श्रावस्ती ण० नगरी के सिं० शृंगाटक जा० यावत् व० बहुत मनुष्य अ० अन्योन्य जा० यावत् प० प्ररूपते हैं दे० देवानुप्रिय गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी वि० विचरता है तं० वह मि० मिथ्या स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० प्ररूपते हैं त० उस गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र का

पुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ । गोसालेणं मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी जाव पगासमाणे विहरइ ॥ ६४ ॥ तएणं सा महइ महालिया महब्ब परिसा जहा सिवे जाव पडिगया ॥ ६५ ॥ तएणं सावत्थीए णयरीए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्सजाव परूवेइ-जेणं देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिंणे जिणप्पलवी विहरइ तं मिच्छा ॥ समणे भगवं महावीरे एवमा-

जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द प्रकाश करनेवाला नहीं है परंतु अजिन होने पर जिन का प्रलाप करता हुवा विचरता है ॥ ६४ ॥ फीर वह बडी परिषदा पीछी गई जिस का कथन शिवराजर्षि जैसे कहना ॥ ६५ ॥ अब श्रावस्ती नगरी के शृंगाटक यावत् महापथ में बहुत मनुष्यों परस्पर ऐसा

मं० मंखलि ना० नाम का मं० भिक्षुक पि० पिता हो० था त० तब त० उस मं० भिक्षुक को ए० ऐसे स० सब भा० कहना जा० यावत् अ० अजिन जि० जिन प्रलापी जि० जिन शब्द प० कहता वि० विचरता है तं० इसलिये णो० नहीं गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् वि० विचरता है गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र अ० अजिन जि० जिन प्रलापी वि० विचरता है स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् जि० जिन शब्द

इक्खइ जाव परूवेइ, एवं खलु तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखलीणामं मंखेपिता होत्था। तएणं तस्स मंखस्स एवं तंचेव सव्वं भाणियव्वं जाव अजिणे जिणप्पलावी जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ ॥ तं णो खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ गोसालेणं मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी विहरइ ॥

बोलने यावत् प्ररूपने लगे कि मंखली पुत्र गोशाला कि जो जिन जिन प्रलाप करता हुवा विचरता है वह मिथ्या है क्यों की श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि मंखली पुत्र गोशाला का पिता मंख था, उस को भद्रा भार्या थी वगैरह सब कथन पूर्वोक्त जैसे कहना यावत् आजिन होने पर जिन हूं ऐसा प्रलाप करता हुवा विचरता है; इसलिये मंखली पुत्र गोशाला जिन व जिन

प० कहते वि० विचरते हैं ॥ ६६ ॥ त० तब गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र ब० बहुत मनुष्य की अं० पास ए० यह अ० अर्थ सो० सुनकर णि० अवधार कर आ० क्रोधायमान हुवा जा० यावत् मि० देदीप्यमान हुवा आ० आतापना भू० भूमि से प० उतर कर सा० श्रावस्ती ण० नगरी की म० मध्य से जे० जहां हा० हालाहला कुं० कुंभकारीणी की कुं० कुंभकार की आ० दुकान ते० तहां उ० आकर कुं० कुंभकारीणी की कुं० कुंभकार की० दुकान में आ० आजीविक सं० संघ से सं० घेराया हुवा म० बहुत अ०

समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ ॥६५॥ तएणं गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभइत्ता सावत्थिं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणसि आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं

प्रलापी नहीं है परंतु अजिन व अजिन प्रलापी है और श्री श्रमण भगवंत महावीर जिन व जिन प्रलापी है. ॥ ६६ ॥ बहुत मनुष्यों की पास से ऐसा सुनकर मंखली पुत्र गोशाला आसुरक्त हुवा यावत् दांत पीसनेलगा और आतापना भूमि में से आकर श्रावस्ती नगरी की बीच में होता हुवा हालाहला कुंभकारी

अमर्ष व० रखता वि० विचरता है ॥ ६७ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का अं० अंतेवासी आ० अनंद थे० स्थविर प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत छ० छठ छठ के अ० अंतर रहित त० तप कर्म से सं० संयम त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते वि० विचरते थे ॥ ६८ ॥ त० तब से० वह आ० आनंद थे० स्थविर छ० छठ क्षमण पा० पारणे में प० प्रथम पो० पोरिषी में ए० ऐसे ज० जैसे गो० गौतम स्वामी त० तैसे आ० पूछे त० तैसे जा०

वहमाणे एवं वावि विहरइ॥६७॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे णामं थेरे पगइभद्दए जाव विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिखित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ६८ ॥ तएणं से आणंदेथेरे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ,

के कुंभकार की दुकान में आकर आजीविक से परवरा हुवा बहुत ईर्षा करनेलगा. ॥६७॥ उस काल उस समयमें महावीर स्वामीका प्रकृति भद्रिक यावत् विनीत आनंद नामका शिष्य निरंतर छठ२ के तप से आत्मा को भावते हुवे विचर ते थे ॥ ६८ ॥ छठ के पारने के दिन प्रथम पौरुषि में स्वाध्याय यों गौतम स्वामी जैसे श्री महावीर स्वामी को पुछकर ऊंच नीच व मध्यकुल में यावत् फीरते हुवे हालाहला कुंभकारीकी

यावत् उ० ऊंच नी० नीच म० मध्य जा० यावत् अ० फीरते हा० हालाहला कुं० कुंभकारी की अ० नजदीक से वी० गया ॥ ६९ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र आ० आनंद थे० स्थविर को हा० हाला हला कुं० कुंभकारिणी के कुं० कुंभकारावासकी अ० नजदीक वी० जाते पा० देखे पा० देखकर ए० ऐसा व० बोला ए० आव आ० आनंद इ० यहां ए० एक म० बडा उ० दृष्टान्त णि० सून ॥ ७० ॥ त० तब से० वह आ० आनंद थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र से ए० ऐसा

तहेव जाव उच्चणीय मज्झिम जाव अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीईवयइ ॥ ६९ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीईवयमाणं पासइ, पासइत्ता एवं वयासी-एहि ताव आणंदा ! इओ, एगं महं उवमियं णिसामेह ॥ ७० ॥ तएणं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्तेसमाणे जेणेव हालाहलाए कुंभका-

कुंभकार की दुकान की पास जाते थे. ॥ ६९ ॥ मंखली पुत्र गोशाला आनंद स्थविर को हालाहला कुंभकारी की कुंभकार शाला की पास जाते हुवे देखकर ऐसा बोला कि अहो आनंद ! तुम यहां आओ, मैं तुम को एक वडी उपमा (द्रष्टांत) कहूं ॥ ७० ॥ जब मंखलीपुत्र गोशाला आनंद स्थविर को ऐसा

वु० बोलाया जे० जहां हा० हाला हला कुं० कुंभकारिणी कुं० कुंभकारशाला जे० जहां गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र ते० तहां उ० गया॥७१॥इ० आज से चि० बहुत काल पहिले के० कोई उ० ऊंचनीच व० वणिक अ० अर्थ के अर्थी अ० लोभी अ० अर्थ गवेपणा वाले अ० अर्थ की कांक्षावाले अ० अर्थ पि० पिपासु अ० अर्थ केलिये णा० विविधप्रकारके वि० विपुल प० किराणा भं० पात्र आ० लेकर स० गाडा गाडीमें सु० बहुत भ० अन्न पानी प० पथ्य अन्न ग० लेकर ए० एक म० बडा अ० ग्राम रहित अ० अतिगहन छि० रस्ता रहित दी० बहुत

रिए कुंभकारावणे जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, ॥ ७१ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं एवं वयासी एवं खलु आणंदा ! इतो चिराईयाए केइ उच्चावया वणिया अत्थत्थी, अत्थलुद्धा, अत्थगवेसी, अत्थकंखिया, अत्थपिवासिया अत्थगवेसणयाए णाणाविह विउल पणिय भंड मायाय सगडीसगडेणं सुबहुं भत्तपाण पत्थयणं गहाय एगं महं अगामियं अणोहियं छिण्णावायं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठा

बोला तब वह हालाहला कुंभकारिणी की कुंभकार शाला में मंखली पुत्र गोशाला की पास गया ॥ ७१ ॥ मंखली पुत्र गोशाला आनंद स्थविर को ऐसा बोला कि अहो आनंद ! आज से कितने काल पहिले धन के अर्थी, धन में लुब्ध, धन की गवेपणा करने वाले, और धन की कांक्षा करनेवाले कितनेक छोटे बडे वणिक धन की गवेपणा के लिये विविध प्रकार के बहुत मनोज्ञ भंडोपकरण गाडि में डालकर और बहुत

कालवाली अ० अटवि में अ० प्रवेश किया किया॥७२॥ त० तब तं० उन व० वणिकों का ती० उस अ० ग्राम रहित छि० पंथरहित दी० दीर्घकालवाली अ० अटवि का किं० थोडाभाग को अ० नहीं प्राप्तहोते पु० पहिले ग० लियाहुवा उ० पानी अ० अनुक्रम से प० भोगवते क्षी० संपूर्ण हुवा त० तब ते० वे प० वणिक खी० क्षीण उदकवाले तं० तृष्णा से प० पराभवपाये अ० अन्योन्य स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय अ० अपन इ० इस अ० ग्रामरहित जा० यावत् अ० अटवि का किं० किंचित् दे० देशको अ० प्राप्तहोते पु० पहिले

॥७२॥ तएणं तेसिं वणियाणं तीसे अगामियाए अणोहियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए किंचिदेसं अणुप्पत्ताणं समाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे २ खीणे ॥ तएणं से वणिया खीणोदगासमाणा तण्हाए परिब्भवमाणा अण्णमण्णे सद्दावेंति सद्दवेंतित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए किंचिदेसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं

भात पानी साथ लेकर ग्राम नहीं होवे वैसी, पहाडों व वृक्षों से भरपूर, रस्ता मालूम पडे नहीं वैसी वडी अटवि में पैठे. ॥ ७२ ॥ अब ऐसी ग्राम रहित, रस्ता विना की व बहुत लम्बी अटवी में थोडा गये पीछे वणिको की पास पहिले लिया हुवा पानी भोगते हुवे क्षीण होगया. अब उन की पास पानी नहीं होने से तृषा से पीडित होने हुवे परस्पर बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय! अपन इस ग्राम रहित यावत् महान अटवि के

ग० लीया हुवा उ० पानी अ० अनुक्रम से प० भोगवते खी० संपूर्ण हुवा तं० इसलिये से० श्रेय दे० देवानुप्रिय अ० अपन इ० इस अ० ग्राम रहित जा० यावत् अ० अटवि में उ० पानी की स० चारोंबाजु म० मार्गगवेषणा क० करने को त्ति० ऐसा करके अ० अन्योन्य की अं० पास से ए० इस अर्थ को प० सूनकर ती० उस अ० ग्राम रहित अ० अटवि में उ० पानी की स० चारों बाजु म० मार्ग गवेपणा क० करे ॥ ७२ ॥ उ० पानी की स० चारों बाजु म० मार्ग गवेपणा क० करते ए० एक म० बडा व० वनखंड आ० प्राप्त हुवा कि० कृष्ण कि० कृष्णावभास जा० यावत् णि० निकुरंब भूत पा० देखने योग्य

पुरिभुंजमाणे परिभुंजमाणे खीणे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेत्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुर्णेति २ त्ता, तीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेंति ॥ ७२ ॥ उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण गवेसणं करेमाणे एगं महं वणखंडं आसादेंति, किण्हं किण्होभासं जाव

थोडे विभाग में आते अपनी पास रहा हुवा पानी भोगते क्षीण हो गया है, इस से इस अटवी में चारों तरफ पानी की गवेपणा करना चाहिये. ऐसा परस्पर सुनकर उस अटवि में चारों तरफ पानी की गवेपणा करने लगे. ॥ ७२ ॥ पानी की चारों तरफ गवेपणा करते हुए एक बडा वनखंड देखा, वह कृष्ण कृष्णाभास

जा० यावत् प० प्रतिरूप ॥ ७४ ॥ त० उस व० वनखंड की व० बहुत म० मध्य में म० बडा ए० एक व० वल्मीक आ० प्राप्त हुवा त० उस व० वल्मीक को च० चार व० शरीर अ० नीकले ति० तीर्च्छी सु० विस्तीर्ण अ० नीचे प० सर्प का अ० अर्धा रू० आकार से प० सर्प के सं० संठान से सं० संस्थित पा० प्रासादिक जा० यावत् प० प्रतिरूप ॥ ७५ ॥ त० तब ते० वे व० वणिक ह० हृष्ट तुष्ट अ० अन्योन्य स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय अ० अपन इ० इस अ० ग्राम रहित जा०

णिकुरुंबभूयं पासादीयं जाव पडिरूवं ॥ ७४ ॥ तस्सणं वणखंडस्सणं बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महेगं वम्मीयं आसादेंति ॥ तस्सणं वम्मियस्स चत्तारि वपुओ अब्भुग्गयाओ अभिणिसडाओ तिरियं सुसंपग्गहियाओ अहे पण्णगद्धरूवाओ पण्णगद्ध संठाणसंठियाओ पासादीयाओ जाव पडिरूवाओ ॥ ७५ ॥ तएणं से वणिया हट्ठ तुट्ठा अण्णमण्णं जाव सद्दावेंति, सद्दावेंतित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुंप्पिया !

यावत् निकुरुंब भूत, दर्शनीय यावत् प्रतिरूप था. ॥७४॥ उस वनखंड की मध्य में एक बडा वल्मीक उनोंने देखा. उस को चार शरीर थे अर्थात् उस पर मिट्टि के चार शिखर थे. उस अवयव रूप नीकले हुवे चारों तीर्च्छि दिशा में विशेष प्रसरे हुवे, विस्तीर्ण, नीचे अर्ध सर्प के आकार से, देखने योग्य यावत् प्रतिरूप थे ॥ ७५ ॥ अब वे वणिक संतुष्ट हुवे यावत् परस्पर ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! ग्राम रहित

यावत् स० चारों बाजु म० मार्ग गवेषणा क० करने से इ० यह व० वनखंड आ० प्राप्त हुवा किं० कृष्ण कि० कृष्णावभास इ० इस व० वनखंड की ब० बहुत मध्य में इ० वह व० वल्मीक आ० प्राप्त हुवा इ० इस व० वल्मीक के च० चार व० शरीर अ० नीकले हुवे जा० यावत् प० प्रतिरूप तं० इसलिये से० श्रेय दे० देवानुप्रिय अ० अपन इ० इस व० वल्मीक का प० प्रथम व० शरीर भिं० भेदने को अ० निश्चय उ० उदार उ० जलरत्न अ० आस्वादेंगे त० तब ते० वे व० वणिक अ० अन्योन्य की अ० पास ए० यह अर्थ प० सूनकर त० उस व० वल्मीक की प० पहिली व० शिखा भिं० भेदी त० तहां अ० अच्छा प० पथ्य

अम्हं इमीसे अगामियाए जाव सव्वओ समंता मग्गण गवेसणंकरेमाणेहिं इमे वणखंडे आसादिए, किण्हे किण्होभासे ॥ इमस्सणं वणखंडस्स बहुमज्झदेसभाए इमे वम्मीए आसादिए, इमस्सणं वम्मीयस्स चत्तारि वपुओ अब्भुग्गयाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इम्मस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पिं भिंदित्तए अवियाइ उरालं उदगरयणं अस्सादिस्सामो ॥ तएणं ते वणिया अण्ण-

यावत् बहुत दीर्घ अटवी में चारों तरफ पानी की गवेषणा करते कृष्ण, कृष्णावभास यावत् प्रतिरूप ऐसा यह वनखंड अपनने देखा, और इस की बीच में यह वल्मीक को चार शरीर नीकले हुवे हैं. इस का पहिला शिखर भेद नेसे अपन अच्छा पानी आस्वादेंगे. परस्पर ऐसा सुनकर उस वल्मीक का पहिला शिखर

ज॰ जातिवाला त॰ हलका फा॰ स्फटिक वर्ण जैसा उ॰ उदार उ॰ उदकरत्न आ॰ प्राप्तकिया त॰ वे व॰ वणिक ह॰ हृष्ट तु॰ तुष्ट पा॰ पानी पि॰ पीया पि॰ पीकर वा॰ बैलों को प॰ पीलाकर भा॰ भाजन भ॰ भरकर दो॰ दूसरी वक्त अ॰ अन्योन्य ए॰ ऐसा व॰ बोले ए॰ ऐसे ख॰ खलु दे॰ देवानुप्रिय अ॰ अपने से इ॰ इस व॰ वल्मिक की प॰ प्रथम व॰ शिखा भि॰ भेदाइ उ॰ श्रेष्ट उ॰ उदकरत्न आ॰ प्राप्त हुवा तं॰ इसलिये से॰ श्रेय दे॰ देवानुप्रिय अ॰ अपन को इ॰ इस व॰ वल्मीक की दु॰ दुसरी

मण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता तस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पिं भिंदेंति. तेणं तत्थ अच्छं पत्थं जच्चं तणुयं फालियवण्णाभं उरालं उदगरयणं आसादेंति ॥ तएणं ते वणिया हट्ठतुट्ठा पाणियं पिबंति २ त्ता वाहणाइं पज्जेंतित्ता भायणाइं भरेंति, भरेंतित्ता दोच्चंपि अण्णमण्णं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पाए भिण्णाए उराले उदगरयणे

उनोंने भेदा. जिस से उस में से उन को अच्छा, पथ्य, हलका व स्फटिक वर्णवाला उदक रत्न की प्राप्ति हुइ. उस से वे वणिक हर्षित हुवे, पानी पीया और साथ बैल वगैरह पशुओं को भी पानी पिलाया. भाजनों में पानी भर लिया. तत्पश्चात् वे परस्पर ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! इस वल्मीक का प्रथम शिखर भेदने से उदार उदक रत्न की प्राप्ति हुई. अब इस का दूसरा शिखर भी भेदना चाहिये क्योंकि

व० शिखा भिं० भेदने को ए० इस से उ० श्रेष्ठ सु० सुवर्णरत्न अ० प्राप्त करेंगे त० तव ते० वे व० वणिक अ० परस्पर की अं० पास ए० इस बात को प० सुनी त० उस व० वल्मीक की व० शिखा भिं० तोडी. त० उस में अ० अच्छा ज० जातिवाला त० तपाहुआ म० वहुत अर्थवाला म० वहुत मूल्यवाला म० बडा योग्य उ० उदार सु० सुवर्ण रत्न अ० प्राप्त किया त० तब ते० वे व० वणिक ह० हृष्टतुष्ट भा० भाजन भ० भरकर प० वाहन भ० भरकर त० तीसरीवक्त भी अ० परस्पर ए० ऐसा

अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स दोच्चंपि वप्पं भिंदित्तए, एत्थं उरालं सुवण्णरयणं अस्सादेस्सामो ॥ तएणं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता तस्स वम्मीयस्स दोच्चंपि वप्पं भिंदंति ॥ तत्थ अच्छं जच्चं तवणिज्जं महत्थं महग्घं महरिहं उरालं सुवण्णरयणं अस्सादेंति ॥ तएणं तेवाणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेंतित्ता पवहणाइं भरेंति २ त्ता तच्चंपि अण्णमण्णं एवं

इसे भेदने से इस में से अपन सुवर्ण रत्न प्राप्त करेंगे. उक्त वणिकोंने परस्पर ऐसी वात सुनी और दूसरा शिखर भी भेदा. उस में से अच्छा, जातिवाला, तपाया हुवा, वहुत अर्थवाला, बहुत किंमतवाला उदार सुवर्ण रत्न की प्राप्ति हुइ. अब वे वणिक हृष्ट तुष्ट हुए यावत् भाजन भरलिये और साथ के वाहन भी भरलिये, फीर तीसरी वक्त भी परस्पर ऐसा वोलने लगे कि इस वल्मीक के प्रथम शिखर में से अच्छा

व० बोले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय अ० अपनने इ० इस व० वल्मीक की प० प्रथम व० शिखा भि० भेदाने से उ० श्रेष्ठ उ० उदक रत्न अ० प्राप्तहुआ दो० दूसरी व० शिखा भि० भेदाने से उ० श्रेष्ठ सु० सुवर्ण रत्न अ० प्राप्तहुआ तं० इसलिये से० श्रेय दे० देवानुप्रिय त० तीसरी व० शिखा भि० भेदने को अ० अपिच इ० इस में उ० उदार म० मणिरत्न अ० प्राप्त करेंगे त० तब ते० वे व० वणिक अ० परस्पर अं० पास ए० ऐसा प० सुना त० उस व० वल्मीक की त० तीसरी व० शिखा भि० भेदी ते० इस से त० उस में वि० विमल नि० निर्मल णि० भेद रहित नि० दोष रहित म० बहुत मूल्यवाला म० महा प्रयोजनवाला

वयासी- एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पाए भिण्णाए उराले उदगरयणे अस्सादिए । दोच्चाए वप्पाए भिण्णाए उराले सुवण्णरयणे अस्सादिए । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! तच्चंपि वप्पं भिंदित्तए अवियाइं इत्थं उरालं मणिरयणं अस्सादेस्सामो । तएणं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणेंतित्ता, तस्स वम्मीयस्स तच्चंपि वप्पं भिंदंति ॥ तेणं तत्थ विमलं णिम्मलं

उदक रत्न की प्राप्ति हुई, दूसरा शिखर भेदने से सुवर्ण रत्न की प्राप्ति हुई इस मे तीसरा शिखर भी भेदना चाहिये. जिस से उदार मणिरत्न की प्राप्ति होगी. उक्त वणिकोंने परस्पर ऐसा सुनकर इस का तीसरा शिखर भी तोडा कि जिस में से विमल, निर्मल, त्रसादिदोष रहित, महा मूल्य महा

म० बहुत योग्य उ० प्रधान म० मणिरत्न आ० प्राप्त किया. त० तब वे व० वणिक ह० हृष्ट तुष्ट भा० भाजन भ० भरे भ० भरकर प० वाहन भ० भरकर च० चौथीवक्त भी अ० परस्पर ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय अ० हम को इ० इस व० वल्मीक की प० प्रथम व० शिखा भि० तोडने से उ० प्रधान उ० उदकरत्न अ० प्राप्त हुआ दो० दूसरी व० शिखा भि० भेदने से सु० सुवर्णरत्न अ० प्राप्त हुआ त० तीसरी व० शिखा भि० तोडने से उ० उदार म० मणिरत्न अ० प्राप्त हुआ तं० इसलिये

णित्तलं णिक्कलं महग्घं महत्थं महरिहं उरालं मणिरयणं अस्सादिंति ॥ तएणं ते वणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेंतित्ता पवहणाइं भरेंति, भरेंतित्ता चउत्थंपि अण्णमण्णं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पाए भिण्णाए उराले उदगरयणे अस्सादिए दोच्चाए वप्पाए भिण्णाए उराले सुवण्णरयणे अस्सादिए तच्चाए वप्पाए भिण्णाए उराले मणिरयणे अस्सादिए तं सेयं

प्रयोजन वाले व महा प्रधान मणि रत्नकी प्राप्ति हुई. तब वे हर्षित हुवे यावत् भाजन व वाहन उनोंने भरलिये और चौथी वक्त भी परस्पर ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! इस वल्मीक का प्रथम शिखर भेदने से उदक रत्न की प्राप्ति हुई, दूसरा शिखर भेदने से सुवर्ण रत्न की प्राप्ति हुइ, तीसरा शिखर भेदते मणि रत्न की प्राप्ति हुई तो अब चौथा शिखर तोडते अपन को अच्छे, उत्तम, बहुत मूल्यवाले, अर्थवाले, महेंगे

से० श्रेय दे० देवानुप्रिय अ० हम को इ० इस वल्मीक की च० चौथी व० शिखा भिं० भेदने को अ० अपिच इ० इस में उ० उत्तम म० महर्घ्य म० महाप्रयोजनवाला म० महायोग्य उ० प्रधान व० वज्ररत्न अ० प्राप्त करेंगे त० उस समय ते० उन व० वणिकों में ए० एक व० वणिक हि० हितकाकामी सु० सुख का कामी प० पथ्य का कामी अ० अनुकंपा वाला णि० निश्रेय वाला हि० हित सु० सुख नि० निश्रेय के का० इच्छक ते० उन व० वणिकों को ए० ऐसा व० बोला ए० ऐसा दे० देवानुप्रिय अ० अपन को इ० इस व० वल्मीक की प० प्रथम व० शिखा भि० भेदने से उ० उदार उ० उदकरत्न

खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स चउत्थंपि वप्पं भिंदित्तए अवियाइं इत्थ उत्तमं महग्घं महत्थं महरिहं उरालं वइररयणं अस्सादेस्सामो ॥ तएणं तेसिं वणियाणं एगे वणिए हियकामए, सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए, णिस्सेयसिए हियसुहणिस्सेसकामए तं वणिए एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्सवम्मीयस्स पढमाए वप्पाए भिण्णाए उराले उदगरयणे जाव तच्चाए वप्पाए

वज्ररत्न की प्राप्ति होगी. उस समय उन वणिकों में से हित, सुख, पथ्य की इच्छावाला, अनुकंपावाला, मोक्ष का वांच्छक व हित, सुख व मोक्ष का वांच्छक एक वणिक उन अन्य सब वणिकों को बोला कि अहो देवानुप्रिय ! इस वल्मीक का प्रथम शिखर तोडते अपन को उदक रत्न की प्राप्ति हुई यावत्

जा० यावत् त० तीसरी व० शिखा भि० भेदने से उ० उदार म० मणिरत्न अ० प्राप्त हुवा तं० इस लिये हो० होवे प० पर्याप्त ते० इसलिये णे० अपन ए० यह च० चतुर्थ व० शिखा मा० मत भि० तोडो च० चौथी व० शिखा उ० उपसर्ग वाली हो० होवे त० तब ते० वे व० वणिक त० उस व० वणिक के हि० हित का इच्छक सु० सुख का इच्छक जा० यावत् हि० हित सु० सुख णि० निश्रेय का का० इच्छक ए० ऐसा आ० कहने वाला जा० यावत् प० प्ररूपने वाले का ए० इस अ० बात को अ० नहीं श्रद्धते जा० यावत् अ० नहीं रुचि करते त० उस व० वल्मीक की च० चतुर्थ व० शिखा भिं०

भिण्णाए उराले मणिरयणे अस्सादिए, तं होउ अलाहि पज्जत्तं ते णे एसा चउत्थी वप्पा मा भिज्जउ, चउत्थीणं वप्पा सउवसग्गायावि होज्जा ॥ तएणं ते वणिया तस्स वणियस्स हियकामगस्स सुहकामगस्स जाव हियसुहणिस्सेस कामगस्स एव माइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं णो सद्दहंति जाव णोरोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा जावं अरोएमाणा तस्स वम्मीयस्स चउत्थंपि वप्पं भिंदंति । तेणं तत्थ

तीसरा शिखर तोडते श्रेष्ठ मणि रत्न की प्राप्ति हुइ, इस से अब संतुष्ट होवो, अपन को मीलना था सो मील गया. अब चौथा शिखर मत तोडो क्योंकि वह उपसर्ग करनेवाला होगा. इस तरह हित, सुख, पथ्य व मोक्ष का इच्छक वणिक के कथन में श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं करते उस वल्मीक का चौथा शिखर भी

तोडी ते० उस से त० उस में उ० उग्रविप वाला चं० चंडविप वाला घो० घोरविष वाला म० महाविष वाला अ० अतिकाय म० महाकाय वाला म० काजल मू० मूषा का० काला न० नयन वि० विपरोप से पु० पूर्ण अं० अंजन का पुं० पुंज नि० समुह प० प्रकाश र० रक्त आंख वाला ज० सहव॰॰॰ जु० युगल चं० चंचल च० चलती हुइ जी० जीव्हा वाला ध० पृथ्वीतल में वे० वेणिभूत उ० उत्कट फु० प्रकट कु० वक्र जु० केसर वाला क० कर्कश वि० विस्तीर्ण फ० फेन की आ० आटोप क० करने में द० दक्ष लो० लोहार ध० धमता हुवा ध० धमधमायमान घो० शब्दवाला अ० अप्रमेय चं० चंड ति० तीव्र

उग्गविसं चंडविसं घोरविसं महाविसं अतिकायं महाकायं मसिमूसाकालगं नयण-विसरोसपुण्णं अंजणपुंजणिगरप्पगासं रत्तच्छं जमलजुयलचंचलचलंत-जीहं, धरणितलवेणिभूयं उक्कडफुडकुडिलजुडुलकक्खडविकडफडाडोवकरणदच्छं

तोडा. उस में से उग्र विष, चंड विप, घोर विप व महाविषवाला, अतिकायवाला परंपरासे हजारों मनुष्यों को हणने में समर्थ, जंबूद्वीप प्रमाण विप फेलाने में समर्थ, मसी व मूषा समान काला, विषरोष से परिपूर्ण, नयनवाला अंजन, पुंजन का समुह समान प्रकाश करनेवाला, रक्त आंखोंवाला, सहवर्ति दोनों चंचल जीव्हावाला, पृथ्वीतल में स्त्री की वेणी समान, कंधपरवालों धारन करनेवाला, निष्ठुर विकट फेण का आटोप करने में दक्ष, लोहकार की धमण जैसे धमधमायमान शब्द करनेवाला, अप्रमेय प्रचण्ड रोष

रो० रोष वाला स० श्वान मुख तु० त्वरित च० चपल ध० धमता हुवा दि० दृष्टि विषवाला स० सर्प स० स्पर्शा ॥ ७६ ॥ त० तब से० वह दि० दृष्टिविष स० सर्प ते० उस व० वणिकों से सं० स्पर्शाया हुवा आ० आसुरक्त मि० देदीप्यमान स० शनैः उ० उठकर स० सर सर करता व० वल्मीक के सि० शिखरतलपे दु० चढा आ० सूर्य नि० देखा ते० उन व० वणिक अ० मेषोन्मेष दि० दृष्टि से स० चारों तरफ स० देखा त० तब ते० वे व० वणिक दि० दृष्टिविष वाला स० सर्प से अ० मेषोन्मेष रहित दि० दृष्टि से स०

लोहागरधम्ममाणधमधमंतघोसं अणागालिय चंडतिव्वरोसं समुहतुरियं चवलं धमंतं दिट्ठिविसं सप्पं संघट्टेंति ॥ ७६ ॥ तएणं से दिट्ठिविससप्पे तेहिं वणिएहिं संघट्टिए समाणे आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे सणियं सणियं उट्ठेइ, उट्ठेइत्ता सरसरसरस्स वम्मीयस्स सिहरतलं दुरूहइ, दुरूहइत्ता आदिच्चं निज्झाइ, निज्झाइत्ता ते वणिए अणिमीसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएति ॥ तएणं ते वणिया दिट्ठिविसेणं

वाला व कुत्ता के मुख समान मुखवाला शीघ्र शब्द करता हुवा सर्प का संघट्टन हुआ ॥ ७६ ॥ अब उन वणिकों से संघट्टन कराया हुआ वह सर्प आसुरक्त यावत् क्रुद्ध हुआ शनैः २ उपस्थित हुआ, और सर २ शब्द करता हुआ उस के शिखर तलपे चढा. शिखर तलपे चढकर सूर्य की सन्मुख देखा, पश्चात् सब को अनिमिष दृष्टि से चारों तरफ देखनेलगा. अब इस तरह दृष्टिविष सर्प की अनिमिष दृष्टि से देखाये हुवे

चारों तरफ स० देखाया हुवा खि० शीघ्र भं० भंड म० पात्र उ० उपकरण आ० लेकर ए० एक आ० प्रहार कू० कूट का आ० प्रहार भा० भस्म क० किया हुवा हो० था ॥ ७७ ॥ त० उस में जे० जो से० वह व० वणिक ते० उन व० वणिकों का हि० हित इच्छने वाला जा० यावत् हि० हित सु० सुख नि० कल्याण का० इच्छने वाला से० वह अ० अनुकंपा सहित दे० देवता से स० भंड सहित म० पात्र उ० उपकरण आ० लेकर णि० स्वतःके ण० नगर में सा० पहुंचाया ॥ ७८ ॥ ए० ऐसे ही आ० आनंद त० तेरा ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक म० श्रमण णा० ज्ञातपुत्रने उ० उदार प० पर्याय आ० प्राप्त

सप्पेणं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोयासमाणा खिप्पामेव भंडमत्तो-वगरण मायाए एगाहच्चं कूडाहच्चं भासिरासीकयायावि होत्था ॥ ७७ ॥ तत्थणं जे से वणिए तेसिं वणियाणं हियकम्मए जाव हियसुहणिस्सेसकामए सेणं अणुकंपि-याए देवताए सभंडमत्तोवगरण मायाए णियगं णयरं साहिए ॥ ७८ ॥ एवामेव आणंदा ! तववि धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं णायपुत्तेणं उराले परियाए

सब वणिक अपने भंडोपकरण सहित कूटाकार समान भस्मीभूत होगये ॥ ७७ ॥ अब उन में से जो अन्य वणिक हित, सुख, पथ्य यावत् कल्याण का कामी था उन की अनुकंपा करके देवताने भंडोपकरण सहित उन को अपने गांव पहूंचा दिया ॥ ७८ ॥ अहो आनंद ! वैसे ही तेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक श्रमण

की उ० प्रधान किं० कीर्ति व० वर्ण सि० श्लोक स० देव सहित म० मनुष्य अ० असुर लोक में पु० जाते हैं गु० गोपते हैं थु० स्तुति करते हैं इ० ऐसा स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ॥ ७९ ॥ तं० इसलिये ज० यदि मे० मुझे से० वह अ० आज से किं० किंचित् व० बोले ते० इस से त० तप ते० तेज से ए० एक प्रकार कू० कूट प्रहार भा० भस्म क० करेगा ज० जैसे वा० सर्प से ते० वे व० वणिक ए० एक प्रहार कू० कूट प्रहार भा० भस्म क० करूंगा ज० जैसे वा० सर्प से ते० वे व० वणिक तु० तुमारा आ० आनंद सा० रक्षण करूंगा सं० गोपन करूंगा ज० जैसे से० वह व० वणिक ते० उन व०

अस्सादिए । उराला कित्तिवण्णसद्दसिलोगा सदेव मणुयासुरेलोए पुवंति, गुवंति थुवंति इति खलु समणे भगवं महावीरे इति इति ॥ ७९ ॥ तं जदिमे से अज्ज किंचि वदति, तोणं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेमि जहा वा वालेणं ते वणिया ॥ तुमं चणं आणंदा ! सारक्खामि संगोवयामि, जहा वा से वणिए,

भगवंत ज्ञातपुत्र उदार पर्याय को प्राप्त हुवा है, उदार कीर्ति, वर्ण, शब्द व श्लोकवाला है और सदैव मनुष्य, देवलोक में स्तुति यावत् गुणग्राम होते हैं कि श्रमण भगवंत महावीर ॥ ७९ ॥ अब आज से यदि कुच्छ कहा तो तपतेज से जैसे सर्पने वणिकों को कूटाकार समान भस्म किये, वैसे मैं भस्म करूंगा.

वणिक का हि० हित का कामी जा० यावत् नि० निश्रेय का कामी अ० अनुकंपा से दे० देवता मे स० भंड सहित जा० यावत् सा० पहुंचाया ॥ ८० ॥ तं० इसलिये ग० जा तु० तुम आ० आनंद ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण णा० ज्ञातपुत्र को ए० यह अ० बात प० कहे ॥ ८१ ॥ त० तब से० वह आ० आनंद थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र से ए० ऐसा वु० कहाया भी० डरा जा० यावत् सं० भयभीत वाला गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र की अं० पास से ह० हालाहला कुं० कुंभकारिणी के कुं० कुंभकार की आ० दुकान में से प० नीकलकर सि० शीघ्र तु० त्वरित सा० श्रावस्ति न० नगरी की

तेसिं वाणियाणं हियकामए जाव णिस्सेसकामए अणुकंपियाए देवयाए सभंड जाव साहिए ॥ ८० ॥ तं गच्छहणं तुमं आणंदा ! धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स णायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि ॥ ८१ ॥ तएणं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्तसमाणे भीए जाव संजायभए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमइत्ता सिग्घं तुरियं

परंतु अहो आनंद ! जैसे उस देवताने अनुकंपा मे हित यावत् कल्याण इच्छनेवाला उस वणिक की रक्षा की थी वैसे मैं तेरी रक्षा करूंगा ॥ ८० ॥ अहो आनंद ! तू तेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक की पास जा और इस बात को कहे ॥ ८१ ॥ मंखली पुत्र गोशाला से ऐसा सुनने से आनंद स्थविर डरे यावत् भय

म० मध्य बीच में णि० नीकलकर जे०जहां को०कोष्टक चे०उद्यान जे० जहां स० श्रमण भगवंत म० महावीर ते०वहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को ति० तीनवार आ० आदान प० प्रदक्षिणा करके वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे ख० निश्चयार्थ अ० मैं भं० भगवन् छ० छठखमण के पा० पारणे में तु० आपकी अ० आज्ञा से सा० श्रावस्ती ण० नगरी में उ० ऊंच नीच जा० यावत् अ० फीरते हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी जा० यावत् वी० गया त० वहां से० उस गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र म० मुझे हा० हालाहला जा० यावत् पा० देखकर ए० ऐसा व० बोला

सावत्थिं णयरिं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेइत्ता वंदइ णमंसइ, णमंसइत्ता एवं वयासी एवं खलु अहं भंते ! छट्ठक्खमण पारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सवत्थीए णयरीए उच्चणीय जाव अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए जाव वीईवयामि तएणं

भीत हुवे और मंखलीपुत्र गोशाला की पास से हालाहला कुंभकार की दुकान में से नीकलकर शीघ्र त्वरित श्रावस्ती नगरी की बीच में से नीकलकर कोष्टक उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आये. महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! मैं बेले के पारणे के दिन

ए० आव ता० तैसे आ० आनंद इ० यहां ए० एक म० वडी उ० उपमा नि० सुन त० तव अ० मैं से० उस गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र से ए० ऐसा वु० कहाया हुवा जे० जहां हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी की कुं० कुंभकार की आ० दुकान जे० जहां गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र ते० वहां उ० गया त० तब से० उस गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्रने ए० ऐसा व० कहा ए० ऐसे आ० आनंद इ० आज से चि० लम्बा काल से के० कितनेक उ० ऊंच नीच व० वणिक ए० ऐसे तं० वैसा स० सब नि० निरवशेष भा०

से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं हालाहलाए जाव पासित्ता, एवं वयासी एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं उवमियं णिसामेहि ॥ तएणं अहं से गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्तेसमाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छामि ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते एवं वयासी एवं खलु आणंदा ! इओ चिराईयाए अद्धाए केइ उच्चावया वणिया एवं तंचेव सव्वं णिरवसेसं

आप की आज्ञा से श्रावस्ती नगरी में ऊंच नीच यावत् परिभ्रमण करते हालाहला कुंभकारिणी के कुंभकार शाला की पास जाता था. वहां पर मंखलीपुत्र गोशालाने मुझे जाता हुवा देखा और बोलाकर कहा कि अहो आनंद ! यहां आओ, मैं तुम को एक द्रष्टांत कहूं. मंखलीपुत्र गोशालाके ऐसा कहने पर मैं हालाहला कुंभकारिणी की दुकान में उस की पास गया. जब मुझे वह ऐसा बोलने लगा कि अहो आनंद ! कित-

कहना जा० यावत् नि० अपने ण० नगर को सा० पहुंचाया तं० इसलिये ग० जा तु० तुम आ० आनंद त० तेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक को जा० यावत् प० कहे ॥ ८३ ॥ तं० इस से प० समर्थ भं० भगवन् गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र त० तप से० तेज से ए० एक आ० प्रहार कू० कूट आ० प्रहार भा० भस्म क० करने को वि० विषय भं० भगवन् गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र का जा० यावत् क० करने को स० समर्थ भं० भगवन् गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र त० तप से जा० यावत् क० करने को

भाणियव्वं जाव णियगं णयरं साहिए तं गच्छहणं तुमं आणंदा तव धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स जाव परिकहेहि ॥८३॥ तं पभूणं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए, विसएणं भंते ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स जाव करेत्तए; समत्थेणं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं जाव करेत्तए ? पभूणं आणंदा ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं जाव करेत्तए, विसएणं आणंदा ! गोसाले

नेक समय पहिले कितनेक छोटे बडे वणिक वगैरह सब कथा पूर्वोक्त जैसे कहना यावत् हित, सुख व कल्याण इच्छनेवाले को अपने नगर में पहूंचा दिया. इस से अहो आनंद ! तू तेरा धर्माचार्य धर्मोपदेशक की पास जा और यह सब वृतांत कहे ॥ ८३ ॥ अहो भगवन् ! मंखलीपुत्र गोशाला अपने तप तेज से कूटाकार समान भस्म करने को क्या समर्थ है ? अहो भगवन् ! मंखलीपुत्र गोशाला को क्या

प० शक्तिवंत आ० आनंद गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र त० तप से जा० यावत् क० करने का वि० विषय आ० आनंद गो० गोशाला जा० यावत् क० करने को म० समर्थ आ० आनंद गो० गोशाला जा० यावत् क० करने को णो० नहीं अ० अरिहंत भ० भगवंत को प० परितापना पु० पुनः क० करे जा० जितना आ० आनंद गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र का त० तपतेज ए० इस से अ० अनंत गुण वि० विशिष्ट त० तपतेज अ० अनगार भ० भगवंत का खं० क्षमा सहने वाले पु० पुनः अ० अनगार भ० भगवंत

जाव करेत्तए, समत्थेणं आणंदा ! गोसाले जाव करेत्तए ॥ णोचेवणं अरहंते भगवंते परियावणियं पुण करेज्जा ॥ जावइएणं आणंदा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवतेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठयाए चेव तवतेए अणगाराणं भगवंतो खंतिखमा पुण अणगारा भगवंतो । जावइएणं आणंदा ! अणगाराणं भगवंताणं तवतेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराचेव तवतेए थेराणं भगवंताणं खंतिखमा पुण थेरा भगवंतो, जावं-

ऐसा करने का विषय है ? अहो भगवन् ! क्या मंखलीपुत्र गोशाला तप से यावत् करने को समर्थ है ? अहो आनंद ! मंखलीपुत्र गोशाला तप से यावत् करने को शक्तिवंत है, मंखलीपुत्र गोशाला का ऐसा विषय है और मंखली पुत्र यावत् करने को समर्थ है. परंतु अरिहंत भगवंत को भस्म करने में समर्थ नहीं है. मात्र अरिहंत भगवंत को परितापना कर सके. अहो भगवन् ! जितना तप तेज

जा० जितना आ० आनंद अ० अनगार भ० भगवंत का त० तपतेज ए० इस से अ० अनंत गुण वि० विशिष्टतर त० तपतेज थे० स्थविर भ० भगवंत का खं०क्षमा रखने० वाले पु० पुनः थे०स्थविर भ० भगवंत जा० जितना आ० आनंद थे० स्थविर भ० भगवंत का त० तपतेज ए० इस से अ० अनंतगुन वि० विशिष्टतर अ० अरिहंत भ० भगवंत का खं० क्षमा रखने वाले पु० पुनः अ० अरिहंत भ० भगवंत तं० इसलिये प० समर्थ आ० आनंद गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र त० तपतेज से जा० यावत् क० करने को वि० विषय आ० आनंद जा० यावत् क० करने को स० समर्थ आ० आनंद जा० यावत् क० करने को

इएणं आणंदा । थेराणं भगवंताणं तवतेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवतेए अरहंताणं भगवंताणं खंतिखमा पुण अरहंता भगवंतो, तं पभूणं आणंदा ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं जाव करेत्तए, विसएणं आणंदा ! जाव करेत्तए, समत्थेणं

गोशाला का है, इस से अनंत गुण विशिष्टतर सामान्य साधुओं को होता है और जितना तपतेज सामान्य साधुओं का है उस से अनंत गुण विशिष्टतर स्थविर भगवंत का तप तेज है, स्थविर भगवंत का जितना तपतेज है उससे अनंतगुण विशिष्टतर अरिहंत भगवंत का तपतेज है, क्योंकि वे सब क्षांति क्षमावाले होते हैं. इस से अहो आनंद ! मंखलीपुत्र गोशाला अपने तपतेज से भस्म करने को शक्तिवंत है, उन का इतना विषय है, और ऐसा करने को समर्थ भी है. परंतु अरिहंत भगवंत को भस्म करने में समर्थ नहीं है. मात्र

णो० नहीं अ० अरिहंत भ० भगवंत को प० परितापना पु० पुनः क० करे ॥ ८४ ॥ तं० इसलिये ग० जाओ तु० तुम आ० आनंद गो० गौतमादि स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थों को ए० इस अ० बात प० कहो मा० मत अ० आर्य तु० तुम के० कोई गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र को ध० धार्मिक प० निंदासे प० निंदो ध० धार्मिक प० प्रतिकुल याद करके प० यादकरो ध० धार्मिक प० प्रत्युपकार से प० प्रत्युपकार करो गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्रने स० श्रमण णि० निग्रन्थों से मि० मिथ्यात्व वि० अंगीकार किया है ॥ ८५ ॥ त० तब से० वह आ० आनंद थे० स्थविर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर से

आणंदा ! जाव करेत्तए, णो चेवणं अरहंते भगवंते परियावणियं पुण करेज्जा॥८४॥ तं गच्छह णं तुमं अणंदा ! गोयमादीणं समणाणं णिग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि— " माणं अज्जो ! तुब्भं केयि गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोइओ, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेओ, धम्मियेणं पडोयारेणं पडोयारेओ, गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं समणेहिं णिग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवण्णे " ॥८५॥ तएणं से आणंदे थेरे

अरिहंत भगवंत को परितापना करने में समर्थ है ॥ ८४ ॥ इसलिये अहो आनंद ! तुम गौतमादि श्रमण निर्ग्रंथ की पास जाओ, और कहो कि मंखलीपुत्र गोशालाने श्रमण निर्ग्रंथ की साथ अनार्यपना अंगीकार किया है. इस लिये इन का मत की चोयणा, निंदा व प्रतिकुल वचन मत करना ॥ ८५ ॥ जब स्थविर

ए० ऐसा बु० कहाया स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर जे० जहां गो० गौतम स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ ते० वहां उ० आकर गो० गौतम स० श्रमण णि० निग्रन्थों को आ० आमंत्रणकर ए० ऐसा व० बोला ए० ऐसा अ० आर्य छ० छठ खमण के पा० पारणे में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर अ० आज्ञा होते सा० श्रावस्ती ण० नगरी में उ० ऊंच णी० नीच तं० वैसे स० सब जा० यावत् णा० ज्ञात पुत्र ए० ऐसा अ० अर्थ प० कहते हैं तं० इसलिये मा० मत अ०

समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, जेणेव गोयमादि समणा णिग्गंथा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता, गोयमादि समणे णिग्गंथे आमंतेइ आमंतेइत्ता, एवं वयासी एवं खलु अज्जो ! छट्ठक्खमण पारणगंसि समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए णयरीए उच्चणीय तंचेव सव्वं जाव णायपुत्तस्स एयमट्ठ परिकहेहि तं माणं अज्जो ! तुब्भं केइ गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोयओ

भगवंतने आनंद श्रमण निर्ग्रंथ को ऐसा कहा तब वे श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर गौतमादि श्रमण निर्ग्रंथ की पास गये और कहा कि अहो आर्यो ! श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीकी आज्ञा से छठ के पारणे के दिन श्रावस्ती नगरी में ऊंच नीच व मध्यम कुल की गौचरी करते वगैरह सब पूर्वोक्त यावत् श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा है कि मंखली पुत्र गोशालाने श्रमण

आर्य तु० तुम के० कोई गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र ध० धार्मिक व० निंदा से प० निंदो जा० यावत् मि० मिथ्या वि० अंगीकार किया ॥ ८६ ॥ जा० जितने में आ० आनंद थे. स्थविर गो० गौतमादि स० श्रमण णि० निग्रन्थों को ए० ऐसी अ० बात प० कही ता० इतनेमें से० वह मं० मंखलीपुत्र गो० गोशाला हा० हाला हला कुं० कुंभकारिणी के कुं० कुंभकार की दुकान में से प० नीकलकर आ० अजीविकसंघ से प० परवरा हुवा अ० अमर्ष वहता हुवा सि० शीघ्र तु० त्वरित जा० यावत् सा० श्रावस्ती ण० नगरी

जाव मिच्छं विप्पडिवण्णे ॥ ८६ ॥ जावंचणं आणंदे थेरे गोयमाईणं समणाणं णिग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि तावंचणं से गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं वहमाणे सिग्घं तुरियं जाव सावत्थिं णयरिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,

निर्ग्रंथकी साथ अनार्यपना अंगीकार किया है, इस से कोई उस के मत की निंदा, चोयणा करना नहीं ॥ ८६ ॥ गौतमादि श्रमण निग्रंथ को आनंद स्थविर ऐसा कहते थे इतने में ही मंखलीपुत्र गोशाला हालाहला कुंभकारिणी की दुकान में से नीकला और अपने आजीविक पंथ के संघ से परवराहुवा महा अमर्ष [-ईर्षा] सहित शीघ्र त्वरित यावत् श्रावस्ती नगरी की बीच में होता हुवा कोष्टक उद्यान में श्री श्रमण

की म० मध्य बीच में णि० नीकलकर जे० जहां को० कोष्टक चे० उद्यान जे० जहां म० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० वहां उ० जाकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अ० पास ठि० रह कर स० श्रमण भगवंत म० महावीर को ए० ऐसा व० बोला सु० अच्छा आ० आयुष्मन का० काश्यप म० मुझे ए० ऐसा व० बोला सा० साधु आ० आयुष्मन् का० काश्यप म० मुझे ए० ऐसा व० बोला गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र म० मेरा ध० धर्म का अं० शिष्य गो० गोशाला ॥ ८७ ॥ जे० जो गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र म० मेरा ध० धर्म का अं० शिष्य से० वह सु० शुष्क सु० शुष्काभिजात भ०

उवागच्छइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंतेठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-सुठुणं आउसो ! कासवा ! ममं एवं वयासी साहूणं आउसो ! कासवा! ममं एवं वयासी गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी गोसाले २॥८७॥ जेणं गोसाले मंखलिपुत्ते तव धम्मंतेवासी सेणं सुक्के सुक्काभिइए भवित्ता, कालमासे कालं

भगवंत महावीर स्वामी की पास आया. वहां आकर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास खडा रहकर उन को ऐसा बोला कि अहो आयुष्मन् काष्यप ! ठीक है अहो आयुष्मन् काश्यप ! अच्छा है, तुमने मुझे ऐसा कहा कि "मंखली पुत्र गोशाला मेरा धर्म का शिष्य है." ॥ ८७ ॥ जो मंखली पुत्र गोशाला तेरा धर्म का शिष्य था वह शुक्ल शुक्लाभिजात बनकर कालके अवसर में कालकर किसी देव लोक में देवता

होकर का० काल के अवसर में का० काल कि० करके अ० किसी देवलोक में दे० देवतापनें उ० उत्पन्न हुआ अ० मैं उ० उदाइ णा० नामक कुं० कुंडिकायनीक अ० अर्जुन गो० गौतम पुत्र का स० शरीर वि० छोड कर गो० गोशाला मं० मखली पुत्र का स० शरीर में अ० प्रवेश किया अ० प्रवेश करके इ० यह सा० सातवा पा०पउट्ट परिहार अ०अंगीकार किया ॥ ८८॥ जे० जो आ०आयुष्मन् का० काश्यप अ० हमारे स० मत में के० कोइ सि० सीझे सि० सीझते हैं सि० सीझेंगे स० सब ते० वे च० चौरासी म० महाकल्प स० लक्ष म० सात दी० द्वीप स० सात सं० संजूथ स० सात स० संज्ञी ग० गर्भ स० सात

किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे, अहं णं उदाई णामं कुंडियायणीए अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहामित्ता गोसालस्स मंखलि पुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसामित्ता इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि ॥८८॥ जेवियाइं आउसो ! कासवा ! अम्हं समयंसि केइ सिज्झिसुवा सिज्झितिवा सिज्झिस्संतिवा सव्वे ते चउरासीइ महाकप्पसयसहस्साइं सत्तदिव्वे, सत्त संजूहे,

पने उत्पन्न हुआ है. कुंडिकायन गोत्रीय उदाइ नामवाले मैंने अर्जुन गौतमपुत्र का शरीर छोडकर मंखलीपुत्र गोशाला के शरीर में प्रवेश किया है. इस तरह प्रवेश करते मैंने सातवा शरीर धारन किया है ॥ ८८ ॥ अहो आयुष्मन् काश्यप ! जो कोई गत काल में सिद्ध हुवे, वर्तमान में सीझते हैं और अनागत

प० परिवर्तन प० अंगीकार करता है पं० पांच क० कर्म स० लक्ष स० साठ स० सहस्र छ० छसो ति० तीन क० कर्मांश अ० अनुक्रम से ख० खपाकर त० उस प० पीछे सि० सीझे बु० बुझे मु० मुक्त होवे प० निर्वाण प्राप्त होवे स० सब दु० दुःखों का अं० अंत क० किया क० करते हैं व क० करेंगे से० अथ ज० जैसे गं० गंगा म० महा नदी ज० जिससे प० बढी हुइ ज० जहां से प० नीकली ए० यह अ० आधा पं० पांच जो० योजन स० सो आ० लंबाइ से अ० आधा जो० योजन वि० चौडाइ से पं० पांच ध०

सत्त सण्णिगब्भे, सत्त पउट्ट परिहारे, पंचकम्माणिसयसहस्साइं सट्ठिंच सहस्साइं छच्च सए तिणिय कम्मंसे अणुपुव्वेणं खवइत्ता, तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति मुचंति परिणिव्वाइंति सव्व दुक्खाणं मंतं करिंसुवा करिंतिवा करिस्संतिवा ॥ से जहा वा गंगा महाणदी जओ पवूढा जहिंवा पज्जुवत्थिया एसणं अद्धापंचजोअण-सयाइं आयामेणं, अद्धजोअणं विक्खंभेणं, पंचधणुहसयाइं उव्वेहेणं एएणं गंगाप-

में सीझेंगे वे सब हमारे शास्त्रानुसार वहां पर चौराशी लक्ष महाकल्प पर्यंत सुख भोगते हैं. ऐसे ही सात देव, सात संज्ञी मनुष्य के भव भोगवकर शरीरान्तर में प्रवेश करते हैं. सात संज्ञी गर्भान्तर पश्चात् कर्म के पांच लाख साठ हजार छ सो तीन भेद अनुक्रम से क्षय करके सिद्ध हुवे, मुक्त हुवे यावत् सब दुःखोंका अंत किया, करते हैं व करेंगे. अब महा कल्पका प्रमाण कहते हैं. जैसे गंगा नदी जहां से नीकलकर

धनुष्य म० सहस्र उ० उंडी ए० इस गं० गंगा की आ० लम्बाइ से स० सात गं० गंगा ए० एक म० महागंगा स० सात म० महागंगा सा० वह ए० एक सा० सादीन गंगा स० सात सा० सादीनगंगा सा० वह ए० एक म० मृत्यु गंगा स० सात म० मृत्यु गंगा सा० वह ए० एक लो० लोहितगंगा स० सात लो० लोहितगंगा सा० वह ए० एक अ० अवंतिगंगा स० सात अ० अवंतिगंगा सा० वह ए० एक प० परमावती ए० ऐसे ही स० अनुक्रम से ए० एक गं० गंगा स० लक्ष स० सतरह स० हजार छ०

माणेणं सत्तगंगाओ, एगा महागंगा सत्तमहागंगाओ सा एगा सादीणगंगा, सत्तसादीणगंगाओ सा एगा मच्चुगंगा, सत्तमच्चुगंगाओ सा एग लोहियगंगा, सत्त लोहियगंगाओ सा एगा अवंतीगंगा, सत्त अवंतीगंगाओ सा एगा परमावती, एवामेव सपुव्वावरेणं एगंगंगासयसहस्सं सत्तरसयसहस्सा छच्चगुणपण्णं गंगासया भवंतीति

जहां जाकर समस्त प्रकार से समाप्तपने को पाई है, वहां गंगा का मार्ग पांच सो योजन का लम्बा, अर्धा योजन का चौडा व पांचसो धनुष्य का ऊंडा है. ऐसी सात गंगा एकत्रित करने से एक महा गंगा होती है, सात महा गंगा की एक सादीन गंगा, सात सादीन गंगा की एक मृत्यु गंगा, सात मृत्यु गंगा की एक लोहित गंगा, सात लोहितगंगा की एक अवन्ती गंगा, सात अवन्ती गंगा की एक परमावती
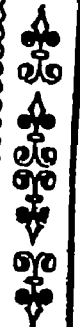
छसो गु० गुनपच्चास गं० गंगा स० सो भ० होती है अ० कही ॥८९॥ ता० उन का दु० दोप्रकारका उ० उद्धार तं० जैसे सु० सूक्ष्म बों० शरीर क० कलेवर बा० बादर बों० शरीर क० कलेवर त० वहां जे० जो से० वह सु० सूक्ष्म बों० शरीर क० कलेवर से० उस को ठ० स्थाप कर त० वहां जे० जो से० वह बा० बादर बों० शरीर क० कलेवर ता० उस का वा० सो वर्ष ग० गये ए० एक गं० गंगा की वा० रेती अ० नीकाल कर जा० जितने का० काल में से० वह को० कोठा खी० क्षीण णी० रज रहित णि० लेप रहित

मक्खाया ॥ ८९ ॥ तासिं दुविहे उद्धारे पण्णत्ते, तंजहा सुहुमबोंदिकलेवरे चेव, बादरबोंदिकलेवरे चेव ॥ तत्थणं जे से सुहुमबोंदिकलेवरे से ठप्प, तत्थणं जे से बादरबोंदिकलेवरे तओणं वाससए गते एगमेगं गंगा वालुयं अवहाय जावइएणं कालेणं से कोट्ठे खीणे णीरए णिल्लेव णिट्ठिए भवइ, से तं सरप्पमाणे ॥ एएणं सर-

गंगा, यों सातों गंगा एकत्रित होने से एक लाख सात हजार छ सो गुनपच्चास गंगाओं होती हैं ॥ ८९ ॥ अब उन गंगा नदियों में रही हुई वालु के दो भेद कहे हैं १ सूक्ष्म शरीर कण और २ बादर शरीर कण. उस में से सूक्ष्म शरीर कण की व्याख्या करना नहीं, और जो बादर शरीर कण हैं उन में से प्रतिशतवर्षमें एक २ कण नीकलते जितने काल में उक्त गंगा नदीयों क्षीणरजरहित, निर्लेप व अवयव रहित होवे

ाण० स्वच्छ भ० होवे से० वह स० सरप्रमाण ए० इस स० सरप्रमाण से ति० तीन स० सर स० लक्ष से० वह म० महा कल्प च० चोरासी म० महाकल्प स० लक्ष से० वह ए० एक म० महामानस ॥ ९० ॥ अ० अनंत सं० संजुह जी० जीव च० छोडकर उ० उपर के मा० मनुष्य सं० संजूह दे० देव में उ० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां दि० दीव्य भो० भोगोपभोग भुं० भोगते हुवे वि० विचर कर ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से भ० भवक्षय से ठि० स्थिति क्षय से अ० अंतर रहित च० चवकर

प्पमाणेणं तिण्णि सरसयसाहस्सीओ से महाकप्पे, चउरासीति महाकप्पसयसहस्साइं से एगे महामाणसे ॥ ९० ॥ अणंताओ संजूहाओ जीवे चयं चइत्ता उवरिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जिहिति, से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता

उसे सर प्रमाण काल कहते हैं. ऐसे तीन लक्ष सरप्रमाण का एक महाकल्प होता है. चौरासी लक्ष महा कल्प का एक महा मानस होता है, इसे मानसोत्तर भी कहते हैं. यह चौरासी महा कल्प की व्याख्या कही ॥ ९० ॥ अब सात दीव्यादिक की प्ररूपणा करते हैं. अनंत जीवों की समुदायरूप काय है, उस में से जीवों शरीर सजकर उपर बीच का व नीचे का यों जो तीन मानस के सद्भाव हैं उन में सो दो को छोडकर

प० प्रथम स० संज्ञी गर्भ में जी० जीव प० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां से अ० अनंतर उ० उद्वर्त कर म० मध्य के मा० मानस सं० संजूह दे० देव में उ० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां दि० दीव्य भो० भोगोपभोग जा० यावत् वि० विचर कर ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से जा० यावत् च० छोड कर दो० दूसरा स० संज्ञी गर्भ जी० जीव प० उत्पन्न होवे से० वह त० उस से अ० अंतर रहित उ० उद्वर्तकर हे० नीचे के मा० मानस सं० संजूह दे० देव उ० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां दि० दीव्य जा० यावत् च० चवकर त० तीसरा स० संज्ञी गर्भ में जी० जीव प० उत्पन्न होवे

पढमे साण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति, से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ, से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव विहरित्ता॥ ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं २ जाव चइत्ता दोच्चे साण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति, से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ, से णं तत्थ दि-

उपर के मानस संजुह में उत्पन्न होवे. गंगादिककी प्ररूपना से सरप्रमाण आयुष्य युक्त संजुह काय के देवता में उत्पन्न होवे. यह प्रथम दीव्य भव. वहां दीव्य प्रधान देवयोग्य भोग भोगवते विचरकर वहां का आयुष्य भव व स्थिति का क्षय होने से अंतर रहित चवकर प्रथम संज्ञी के भव को प्राप्त होवे. वहां से अंतर रहित नीकलकर बीच का मानस प्रमाण आयुष्यवाला संजुह की काया में देवतापने उत्पन्न होवे. और वहां दीव्य

से० वह त० वहां से जा० यावत् उ० नीकल कर उ० उपर के मा० मानुष्योत्तर सं० संजूह दे० देव में उ० उत्पन्न होवे से वह त० वहां दि०दीव्य भो० भोग च०छोडकर च० चतुर्थ स० संज्ञी गर्भ में जी०जीव प० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां से अ० अंतर रहित उ० चवकर म० मध्य के मा० मानुष्योत्तर सं० संजूह दे० देव में उ० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां दि० दीव्य भो०भोग जा० यावत् च० छोडकर पं० पांचवा स० संज्ञीगर्भ जी० जीव में प० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां से अ० अनंतर उ०नीकलकर

व्वाइं जाव चइत्ता तच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति, से णं तओहिंतो जाव उव्व-ट्टित्ता उवरिल्ले माणसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ, से णं तत्थदिव्वाइं भोगं चइत्ता, चउत्थे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति, से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ, से णं तत्थ दिव्वाइं भोग जाव चइत्ता पंचमे स-

भोग भोगता हुवा विचरे. वहां से आयुष्य भव व स्थिति क्षय से यावत् चवकर दूसरा संज्ञी गर्भ में यावत् उत्पन्न होवे. वहां से चवकर नीचे का मानससंजुह देवतापने उत्पन्न होवे, वहां दीव्य भोगं भोगते हुवे विचरे. वहां से अंतर रहित चवकर तीसरा संज्ञी भव में उत्पन्न होवे,और वहां से अंतर रहित चवकर उपर के मानुषोत्तर संजुह देव में उत्पन्न होवे, वहां दीव्य भोगोपभोग छोडकर चौथा संज्ञी भव में उत्पन्न होवे.

हि० नीचे का मा० मानुष्योत्तर सं० संजूह दे० देव में उ० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां दि० दीव्य
भो० भोग जा० यावत् च० छोड कर छ० छठ स० संज्ञीगर्भ में जी० जीव प० उत्पन्न
होवे से० वह त० वहां से अ० अंतर रहित उ० नीकल कर बं० ब्रह्मलोक क० देव लोक
प० प्ररूपा पा० पूर्व पा० पश्चिम में आ० लम्बा उ० उत्तर दा० दक्षिण वि० विस्तार वाला
ज० जैसे ठा० स्थानपद में जा० यावत् प० पांच व० अवतंसक प० प्ररूपा तं० तैसे

णिगब्भे जीवे पच्चायाति, से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हिट्ठिले माणसुत्तरे
संजूहे देवे उववज्जति, से णं तत्थ दिव्वाइं, भोग जाव चइत्ता छट्ठेणं सण्णिगब्भे
जीवे पच्चायाति, से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता बंभलोगे णामं सेकप्पे पण्णत्ते,
पाईण पईणायए उदीण दाहिणविच्छिण्णे, जहा ठाणपदे जाव पंचवडेंसगा पण्णत्ता,

वहां से अंतर रहित चवकर मध्य का मानुषोत्तर संजुह देव में उत्पन्न होवे. वहां दीव्य भोगोपभोग यावत्
छोडकर पांचवा संज्ञी गर्भ में उत्पन्न होवे, वहां से अंतर रहित चवकर नीचे का मानुषोत्तर संजुह देव में
देवतापने उत्पन्न होवे, वहां दीव्य भोगोपभोग भोगता हुवा यावत् छोडकर छठा सन्नी गर्भ में उत्पन्न होवे
वहां से अंतर रहित चवकर ब्रह्मलोक देवलोक में देवतापने उत्पन्न होवे. वह देवलोक पूर्व पश्चिम लम्बा,

अ० अशोकावतंसक जा० यावत् प० प्रतिरूप से० वह त० वहां दे० देव में उ० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां द० दश सा० सागरोपम दि० दीव्य भो० भोग जा० यावत् च० छोड कर स० सातवा स० संज्ञी गर्भ जी० जीव में प० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां ण० नव मा० मास व० बहुत प० प्रतिपूर्ण अ० साढे सात जा० यावत् वी० व्यतिक्रान्त सु० सुकुमार भ० भद्र मि० मृदु कुं० दर्भ जैसे कुं० गुच्छावाले के० केश म० आभरण विशेष क० कान के पि० पृष्ठ भाग में दे० देवकुमार स० समान प० कांति वाला दा० पुत्र

तंजहा असोगवडेंसए जाव पडिरूवा, से णं तत्थ देवे उववज्जइ, से णं तत्थ दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोग जाव चइत्तासत्तमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति, से णं तत्थ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं जाव वीइक्कंताणं सुकुमाल-गभद्दलए मिउकुंडलकुंचियकेसए मट्ठगंडतलकण्णपीठए देवकुमारसमप्पभए

उत्तार दक्षिण चौडा वगैरह जैसे स्थान पद में कहा यावत् पांच अवतंसक कहे. अशोकावतंसक यावत् प्रति-रूप. वहां देवलोक में दश सागरोपमतक दीव्य भोगोपभोग यावत् छोडकर सातवा संज्ञी गर्भ में उत्पन्न होवे. वहां सवा नव मास पूर्ण हुवे पीछे सुकोमल, मृदु, भद्रमूर्तिवाला, कुंचली पडे हुवे मस्तक के केशवाला, देव

प० उत्पन्न हुवा से० वह अ० मैं का० काश्यप ॥ ९१ ॥ त० तब अ० मैं आ० आयुष्मन् का० काश्यप को० कौमारावस्था में प० प्रवर्जा मे कु० कुमारावस्था में ब० ब्रह्मचर्य अ० नहीं विंधा कर्ण सं० बुद्धि प० प्राप्त की प० प्राप्त करके इ० यह स० सातवा पा० परावर्त प० परिहार प० हुआ तं० वह ज० जैसे ए० एणेक का म० मल्लराम का मं० मंडित का रो० रोहका भा० भारद्वाज का अ० अर्जुन गो० गौतम पुत्र गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र का ॥ ९२ ॥ त० वहां जे० जो प० प्रथम प० परावर्त प० परिहार

दारए पयाते ॥ सेणं अहं कासवा !॥ ९१ ॥ तएणं अहं आउसो कासवा ! कोमारियाए पव्वज्जाए कोमारिएणं बंभचेरवासेणं अविद्धकण्णए चेव संखाणं पडिलभामि, संखाणं पडिलभामित्ता इमे सत्तमं पउट्ट परिहारं परिहरामि, तंजहा एण्णेजस्स, मल्लरामस्स, मंडियस्स, रोहस्स, भारद्दाइस्स अज्जुणस्स, गोयमपुत्तस्स, गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ॥ ९२ ॥ तत्थणं जे से पढमे पउट्टपरिहारे सेणं रायागिहस्स णयरस्स बाहिया मंडि-

कुमार समान शरीर की प्रभावाला ऐसा बालक का जन्म हुवा. अहो काश्यप ! वही मैं हूं ॥ ९१ ॥ अहो आयुष्मन् काश्यप ! कुमार अवस्था में ही प्रवर्ज्या धारन करने से और कुमार अवस्था में ही ब्रह्मचर्य पालने से किसी के उपदेश विना स्वयमेव संख्यान (बुद्धि) की प्राप्ति की, और इन सात शरीर में प्रवेश किया. १ एणेक का २ मल्लराम का ३ मंडित का ४ रोहा का ५ भारद्वाज का ६ अर्जुन गौतम पुत्रका

से० वह रा० राजगृह न० नगरी की व० बाहिर मं० मंडकुक्षि चे० उद्यान में उ० उदायन कु० कुंडिकायन का स० शरीर वि० छोडकर ए० एणेजक के स० शरीर में अ० प्रवेश किया अ० प्रवेश कर बा० बावीस वा० वर्ष प० प्रथम पा० परावर्त प० परिहार प० किया त० उस में जे० जो दो० दूसरा पा० शरीर परिहार से० वह उ० उद्दण्डपुर न० नगर की व० बाहिर चं० चंद्रोत्तार चे० उद्यान में ए० एणेक का स० शरीर वि० छोडकर म० मल्लराम का स० शरीर में अ० प्रवेश किया ए० इक्कीस वा० वर्ष दो० दूसरा पा० शरीर परावर्त प० किया त० उस में जे० जो त० तीसरा पा० शरीर परावर्त से० वह

कुण्डिछसि चेइयंसि उदायणस्स कंडियायणस्स सरीरं विप्पजहामि, विप्पजहामित्ता, एण्णेज्जगस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसामित्ता बावीसं वासाइं पढमं पउट्ट परिहारं परिहरामि। तत्थणं जेसे दोच्चे पउट्टपरिहारे सेणं उद्दण्डपुरस्स णयरस्स बहिया चंदोयरणंसि चेइयंसि एणेज्जगस्स सरीरगं विप्पजहामि विप्पजहामित्ता मल्लरामस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसामित्ता एगवीसं वासाइं दोच्चं पउट्ट परिहारं परिह-

और ७ मंखलीपुत्र गोशाला का ॥ ९२ ॥ इन सात में से प्रथम पउट्ट परिहार (शरीर परिहार) राजगृही नगरी के बाहिर मंडकुच्छ उद्यान में उदायन कुंडिकायन का शरीर छोडकर एणक के शरीर में प्रवेश किया, वहां पर बावीस वर्ष पर्यंत रहा, यह प्रथम शरीर परावर्तन जानना. अब दूसरा परावर्तन उद्दंड

में॰ चंपा ण॰ नगरी से ब॰ बाहिर अं॰ अंग मंदिर चे॰ उद्यान में म॰ मल्लराम का स॰ शरीर वि॰ छोडकर मं॰ मंडित के स॰ शरीर में अ॰ प्रवेश कर वी॰ वीस वा॰ वर्ष त॰ तीसरा पा॰ शरीर परावर्त प॰ किया त॰ उस में जे॰ जो च॰ चौथा पा॰ शरीर परावर्त से॰ वह व॰ वाणारसी ण॰ नगरी की ब॰ बाहिर का॰ काम महावन चे॰ उद्यान में मं॰ मंडित का स॰ शरीर वि॰ छोडकर रो॰ रोह के स॰ शरीर में अ॰ प्रवेश करके ए॰ गुन्नीस वा॰ वर्ष च॰ चौथा पा॰ शरीर परावर्त प॰ किया त॰ उस में जे॰ जो॰ पं॰ पांचवा प॰ शरीर परावर्त से॰ वह आ॰ आलंभिका ण॰ नगरी की ब॰ बाहिर प॰

रामि ॥ तत्थणं जेसे तच्चे पउट्टपरिहारे सेणं चंपाए णयरीए बहिया अंगमंदिरंमि चेइयंसि मल्लरामस्स सरीरं विप्पजहामि २ त्ता मंडियस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसामित्ता, वीसं वासाइं तच्चं पउट्ट परिहारं परिहरामि ॥ तत्थणं जेसे चउत्थे पउट्ट परिहारे सेणं वाणारसीएं णयरीए बाहिया काममहावणंसि चेइयंसि मंडियस्स सरीरं विप्पजहामि २ त्ता रोहस्स सरीरं अणुप्पविसामि, अणुप्पवि सामित्ता एगूणवीसं वासाइं चउत्थं पउट्ट

नगर की बाहिर चंद्रोत्तर उद्यान में एणकके शरीर में से नीकलकर मल्लराम के शरीर में प्रवेश किया. वहां इक्कीस वर्ष पर्यंत रहा. वहां से तीसरा शरीर परावर्तन चंपा नगरी के बाहिर अंग मंदिर उद्यान में मल्लराम का शरीर छोडकर मंडित के शरीर में प्रवेश किया, वहां वीस वर्ष पर्यंत रहा. वहां से चौथा शरीर

प्राप्तकाल चे० उद्यान में रो० रोहे का स० शरीर वि० छोडकर भा० भारद्वाज के म० शरीर में अ० प्रवेश कर अ० अठारह वा० वर्ष व० शरीर परावर्त प० परिहार प० किया त० उस में जे० जो छ० छठा प० शरीर परावर्त से० वह वे० वैशालिक ण० नगरी की व० बाहिर कं० कंडिकायन चे० उद्यान में भा० भारद्वाज का स० शरीर वि० छोडकर अ० अर्जुन गो० गोतमपुत्र के स० शरीर में अ० प्रवेश कर स० सत्तरह वा० वर्ष छ० छठा प० शरीर परावर्त प० किया त० उस में जे० जो स० सातवा प०

परिहारं परिहरामि ॥ तत्थणं जेसे पंचमे पउट्ट परिहारे सेणं आलंभियाए णयरीए बहिया पत्तकालगंसि चेइयंसि रोहस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहामित्ता भारद्दाइस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसामित्ता अट्ठारस वासाइं पंचमं पउट्टपरिहारं परिहरामि, तत्थणं जे से छट्ठे पउट्ट परिहारे सेणं वेसालीए णयरीए बहिया कंडियायणंसि चेइयंसि भारद्दाइस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहामित्ता अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि अणुप्पविसामित्ता सत्तरसवासाइं छट्ठं

परावर्तन वणारसी नगरी के बाहिर काम महावन उद्यान में मंडित का शरीर छोडकर रोहे के शरीर में प्रवेश किया, वहां गुनीस वर्ष तक रहा. वहां से पांचवा शरीर परावर्तन आलंभिका नगरी के बाहिर प्राप्त काल उद्यान में रोहे का शरीर छोडकर भारद्वाज के शरीर में प्रवेश किया. यहां पर मैं अठारह

शरीर परावर्त से० वह इ० यहां सा० श्रावस्ती ण० नगरी में हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी की कुं० कुंभकार शाला में अ० अर्जुन गो० गौतमपुत्र का स० शरीर वि० छोडकर गो० गोशाला मं० मंखली-पुत्र का स० शरीर अ० समर्थ थि० स्थिर धु० धृव धा० धारन करने योग्य सी० शीत सहने वाला उ० ऊष्ण सहने वाला खु० क्षुधा सहने वाला वि० विविध दं० दंश म० मशक प० परिसह उ० उपसर्ग सहने वाला थि० स्थिर सं० संघयण वाला ति० ऐसा क० करके अ० प्रवेश कर तं० उसे सो० सोलह

पउट्टपरिहारं परिहरामि, तत्थणं जेसे सत्तमे पउट्टपरिहारे, सेणं इहेव सावत्थीए णयरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहामित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं सीयसहं उण्हसहं खुहासहं विविहदंसमसगपरिसहोवसग्गसहं थिरसं-घयणं तिकट्टु तं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसामित्ता तं सोलसवासाइं इमं सत्तमं

वर्ष पर्यंत रहा. वहां से छठा परिहार वैशाली नगरी के बाहिर कांडिकायन उद्यान में किया. वहां भारद्वाज का शरीर छोडकर गौतम पुत्र अर्जुन के शरीर में प्रवेश किया. वहां सतरह वर्ष पर्यंत रहा. और वहां से सातवा शरीर परावर्तन यहां पर श्रावस्ती नगरी में हालाहला कुंभकारिणी की कुंभकारशाला में किया. वहां गौतम पुत्र अर्जुन का शरीर छोडकर मंखली पुत्र गोशाला का संपूर्ण इन्द्रियोंवाला, स्थिर संघयणी,

वा० वर्ष इ० यह स० सातवा प० शरीर परावर्त प० किया ए० ऐसे आ० आयुष्मन् का० काश्यप ए० एक ते० तेत्तीस व० वर्ष स० शत में स० सात प० शरीर प० परावर्त भ० होते हैं ति० ऐसा अ० कहा ॥ ९३ ॥ तं० इसलिये सु० अच्छा आ० आयुष्मन् म० मुझे ए० ऐसा व० बोला सा० साधु गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र म० मेरा ध० धर्म का अं० शिष्य है गो० गौतम ॥ ९४ ॥ त० तब स० श्रमण भ०

पउट्टपरिहारं परिहरामि ॥ एवामेव आउसो ! कासवा ! एगेणं तेत्तीसेणं वाससएणं सत्तपउट्टपरिहारा परिहारिया भवंतीति मक्खाया ॥ ९३ ॥ तं सुट्ठुणं आउसो ! कासवा ! ममं एवं वयासी साधुणं आउसो ! कासवा ! ममं एवं वयासी गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी गोयमा ! गोयमा ! ॥ ९४ ॥ तएणं समणे भगवं

ध्रुव, निश्चल, धारन करने योग्य यावत् क्षुधा, तृषा, शीत, ऊष्णादिक परिषह व उपसर्ग सहन करने वाला शरीर देखकर इस में प्रवेश किया. यहां पर सोलह वर्ष पर्यंत शरीर परावर्तन करूंगा. अहो आयुष्मन् काश्यप ! इस तरह एक सो तेत्तीस वर्ष में सात शरीर परावर्तन होते हैं ॥ ९३ ॥ इस लिये अहो आयुष्मन् काश्यप ! ठीक है. अहो आयुष्मन् काश्यप ! अच्छा है कि तुम मुझे ऐसा कहते हो मंखलीपुत्र गोशाला मेरा धर्म का शिष्य है ॥ ९४ ॥ तब श्री श्रमण भगवंत महावीर मंखली पुत्र गोशाला को

भगवंत म० महावीर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र को ए० ऐसे व० बोले गो० गोशाला ज० जैसे ते० चोर सि० होवे गा० ग्राम के लोक से प० पराभव पाया हुवा क० किसी स्थान ग० खड्डा द० खाइ दु० दुर्ग, णि० छपने का स्थान प० पर्वत वि० विषम अ० नहीं प्राप्त होते ए० एक म० बडा उ० उनके लो० तांतणे से स० सन के लो० तांतणे से क० कपास के तांतणे से प० तृणसूत्र से अ० स्वतः को आ० ढककर चि० रहे से० वह अ० नहीं ढकाया हुवा अ० ढका अ० स्वतः को म० मानता है अ०

महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी गोसाला ! से जहा णामए तेणए सिया गामेल्लएहिं परब्भवमाणे २ कत्थइ गत्तंवा दरिंवा दुग्गंवा णिण्णंवा पव्वयं वा विसमं वा अणस्सादेमाणे एगेणं महं उण्णालोमेणवा सणलोमेणवा कप्पासपम्हेणया-तणसूएणवा अत्ताणं आवरेत्ताणं चिट्ठेज्जा ॥ सेणं अणावरिए आवरियमिति अप्पाणं मण्णइ, अपच्छण्णेय पच्छण्णमिति अप्पाणं मण्णइ, अणलुक्के लुक्कमिति अप्पाणं मण्णइ, अपलायए पलायमिति अप्पाणं मण्णइ एवामेव तुम्हं पि गोसाला ! अणण्णे

ऐसा बोले कि अहो गोशाला ! ग्रामलोक से पराभव पाया हुवा कोई चोर किसी स्थान स्वतःको छिपाने के लिये खड्डा, गुफा, दुर्ग, पर्वत व विषम स्थान नहीं मीलने पर बडा उन का तार, सन का तार, कपास का तार अथवा तृण के तार से स्वतः को लपेट कर ढका हुवा माने, अप्रच्छन्न को प्रच्छन्न

अप्रच्छन्न को प० प्रछन्न म० मानता है अ० अलोक को लु० लोक ति० ऐसा अ० स्वतः को म० माने अ० नहीं भगा हुवा प० भगा हुवा अ० स्वतः को म० माने ए० ऐसे ही तु० तुम भी गो० गोसाला अ० अनन्य सं० होनेपर अ० अनन्य ति० ऐसा उ० उपालंभ करता है तं० इसलिये मा० मत ए० ऐसा गो० गोशाला ण० नहीं अ० योग्य है गो० गोशाला स० सत्य ते० तेरी छा० छाया णो० नहीं अ० अन्य ॥ ९५ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर से ए०

संते अण्णामिति उपलंभासि, तं मा एवं गोसाला ! णारिहासि गोसाला ! सच्चे व ते साच्छाया णो अण्णा॥९५॥तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तेसमाणे आसुरुत्ते समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ, आउसइत्ता उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेइ, उद्धंसेइत्ता उच्चावयाहिं णिब्भंच्छ-णाहिं णिब्भंच्छेइ, णिब्भंच्छेइत्ता उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं णिच्छोडेइ, णिच्छो-

माने, नहीं भगे को भगा हुवा माने. वैसे ही अहो गोशाला ! तू अन्य होते हुवे अन्य है ऐसा मानता है. इस से अहो गोशाला ! तुझे ऐसा करना योग्य नहीं है. अहो गोशाला ! यह मात्र तेरी छाया है परंतु अन्य नहीं है ॥ ९५ ॥ जब श्री श्रमण भगवंतने ऐसा कहा तब वह गोशाला आसुरक्त यावत्

ऐसा वु० बोलाया आ० क्रोधित स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को उ० ऊंचनीच आ० आक्रोश से आ० आक्रोश किया आ० आक्रोश करके उ० ऊंचनीच उ० उध्वंस से उ० हलका बनाकर नि० निर्भर्त्सना करके णि० दुष्टवचन कर ए० ऐसा व० बोला ण० नष्ट क० कदाचित् वि० विनष्ट क० कदाचित् भ० भ्रष्ट अ० आज ण० नहीं अ० है णा० नहीं ते० तुझे म० मेरेसे सु० सुख अ० है ॥ ९६ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर का अं० शिष्य पा०

डेइत्ता एवं वयासी णट्ठेसि कदायि, विणट्ठेसि कदाइ, भट्ठेसि कदायि णट्ठविणट्ठभट्ठेसि कदाइ, अज्ज ण भवसि णाहिते ममाहिंतो सुहमत्थि ॥ ९६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूईणामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए धम्माणुरेयाणुरागेणं एयमट्ठं असद्दहमाणे उट्ठाए उट्ठेइ,

क्रोधित हुवा और श्रमण भगवंत महावीर को अच्छे, बुरे आक्रोश के शब्दों से बोलने लगा, अभिमान पूर्वक असमंजस शब्दों से नीचा गिराने लगा, तेरी साथ मेरा कुच्छ भी प्रयोजन नहीं है वैसे कर्कश वचनों से निर्भर्त्सना करने लगा, तीर्थंकरादि अलंकारों से हम को छोडकर वगैरह वचनों से प्राप्त अर्थ को छोडने में प्रवर्तने लगा, और बोला कि तू अपने आचारसे नष्ट भ्रष्ट हुवा है ऐसा मानता हूं, अथवा धर्म-

पूर्वदिशा के ज० देश के स० सर्वानुभूति अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत ध० धर्माचार्य के अ० अनुराग से ए० इस वात को अ० नहीं श्रद्धता उ० उठकर जे० जहां गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र ते० वहां उ० आकर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र को ए० ऐसा व० बोला जे० जो कोइ गो० गोशाला त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास से ए० एक भी आ० आर्य ध० धार्मिक सु० सुवचन णि० सुनता है से० वह भी तं० उसे वं० वंदता है ण० नमस्कार करता

उट्ठेइत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी जेवि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं णिसामेइ सेवि ताव तं वंदइ णमंसइ जाव कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ ॥ किमंग पुण तुमं गोसाला ! भगवया

त्रय के समकाल योग से तू नष्ट, भ्रष्ट हुवा है. अब मेरे से तुझे सुख नहीं है ॥ ९५ ॥ उस काल उस समय में पूर्व दिशा के देश का महावीर स्वामी का शिष्य प्रकृति भद्रिक यावत् विनीत सर्वानुभूति अनगार धर्म के अनुराग से इस अर्थ को नहीं श्रद्धता हुवा अपने स्थान से उठा, और जहां गोशाला था वहां गया. वहां जाकर उस को ऐसा बोला कि अहो गोशाला ! जो कोई तथारूप श्रमण माहण की पास से मात्र एक आर्य धर्म के सुवचन अवधारते हैं वे भी उन को वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करते हैं; तो

है जा० यावत् क० कल्याण कारी मं० मंगलकारी दे० धर्म देव समान चे० ज्ञानवंत प०पर्युपासना करते हैं कि० क्या पु० पुनः तु० तुम गो० गोशाला भ० भगवंत से प० दीक्षित हुवा भ० भगवंत से मुं० मुंडित हुवा सें० शिष्य बना सि० पढा ब० बहु सूत्री कराया भ० भगवंत से मि० मिथ्यात्व वि० अंगीकार किया तं० इसलिये मा० मत गो० गोशाला णो० नहीं रि० योग्य है गो० गोशाला स० सत्य ते० तेरी सा० वह छा० छाया णो० नहीं अ० अन्य ॥ ९७ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र स० सर्वानुभूति अ० अनगार को ए० ऐसा वु० कहाया हुवा आ० क्रोधित स० सर्वानुभूति

चेव पव्वाविए भगवया चेव मुंडाविए, भगवयाचेव सेहाविए, भगवयाचेव सिक्खाविए, भगवया चेव बहुस्सुईकए, भगवओ चेव मिच्छं विप्पडिवण्णे, तं मा एवं गोसाला ! णो रिहासि गोसाला ! सच्चेव ते सा च्छाया णो अण्णा ॥ ९७ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूइ णामं अणगारे एवं वुत्तेसमाणे आसुरुत्ते सव्वाणुभूतिं अणगारं तवेणं

अहो गोशाला ! तू भगवंत से दीक्षित बना हुवा है, भगवंतने तेरे को मुंडित किया है, पढाया है, शिक्षा दी है, भगवंतने ही तुझे बहुसूत्री बनाया है ताहंपि भगवंत की साथ ही निश्चयभूत बनकर मिथ्याभाव अंगीकार करता है. इसलिये अहो गोशाला ! ऐसा मत कर. तुझे ऐसा करना योग्य नहीं है, यह तेरी छाया है अन्य कुच्छ भी नहीं है ॥ ९७ ॥ सर्वानुभूति अनगारने मंखलीपुत्र गोशाला को ऐसा कहा तब वह

अ० अनगार के त० तपतेज से ए० एक आ० प्रहार कू० कूटाहतन भा० भस्म क० किया ॥ ९८ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र स० सर्वानुभूति अ० अनगार को त० तप तेजसे ए० एक आ० आहतन कू० कूटाहतन भा० भस्म क० करके दो० दूसरी वक्त भीं स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को उ० ऊंचनीच आ० आक्रोश से आ० आक्रोश किया जा० यावत् सु० सुख ण० नहीं है. ॥ ९९ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर का

तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेइ ॥ ९८ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिं अणगारं तवेण तेएण एगाहच्चं कूडाहच्चं भासिरासिं करेत्ता, दोच्चंपि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ जाव सुहं णत्थि ॥ ९९ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी कोसल जाणवए

आसुरक्त यावत् क्रोधित बनकर सर्वानुभूति अनगार को अपने तप तेज से भस्म किया ॥ ९८ ॥ अब सर्वानुभूति अनगार को अपने तप तेज से भस्म करके मंखली पुत्र गोशाला पुनः श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को ऊंच नीच आक्रोशकारी वचनों से आक्रोशने लगा यावत् अब तुझे मेरे से सुख नहीं है ॥ ९९ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर का कोशल देश का उत्पन्न प्रकृति भद्रिक

अं० शिष्य को० कोशल जा० जनपद सु० सुनक्षत्र अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत ध० धर्माचार्य के अ० अनुराग से ज० जैसे स० सर्वानुभूति त० तैसे जा० यावत् स० सत्य ते० तेरी सा० वह छा० छाया णो० नहीं अ० अन्य ॥ १०० ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र सु० सुनक्षत्र अ० अनगार से ए० ऐसा वु० बोलाया आ० आसुरक्त सु० सुनक्षत्र अ० अनगार को त० तप के ते० तेजसे प० पीडित किया ॥ १०१ ॥ त० तब से० वह सु० सुनक्षत्र अ०

सुणक्खत्ते णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए धम्मायरियाणुरागेणं जहा सव्वाणुभूई तहेव जाव सच्चेव ते सा च्छाया णो अण्णा ॥ १०० ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुणक्खत्तेणं अनगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते सुणक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेइ ॥ १०१ ॥ तएणं से सुणक्खत्ते अणगारे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं

यावत् प्रकृति विनीत सुनक्षत्र नाम के अनगार थे. वह धर्मानुरागसे गोशाला की पास जाकर सर्वानुभूति अनगार जैसे कहने लगा यावत् वह छाया है परंतु अन्य नहीं है ॥ १०० ॥ अब सुनक्षत्र अनगारने गोशाला को ऐसा कहा तब वह आसुरक्त यावत् क्रोधित हुवा और अपने तपतेज से उन को परितापना की ॥ १०१ ॥ इस तरह मंखली पुत्र गोशाला के तप तेज से पीडित हुवा सुनक्षत्र अनगार श्रमण भग-

अनगार गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र के त० तप ते० तेजसे प० पीडित जे० जहां स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० वहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को ति० तीन वार वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर स० स्वयमेव पं० पांच म० महाव्रत की आ०आराधना की स० साधु स० साध्वी को ख० खमाये खा० खमाकर आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण स० समाधि प्राप्त आ० अनुक्रम से का० काल क्रिया ॥ १०२ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला सु० सुनक्षत्र अ० अनगार को त० तप तेजसे प० पीडितकर के त० तीसरी वल्लभी स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को उ० ऊंचनीच

तवेणं तेएणं परितावेिए समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ णमंसइ, णमंसइत्ता सयमेव पंचमहव्वयाइं आरुहेइ, आरुहेइत्ता समणाय समणीओय खामेइ, खामेइत्ता आलो-इय पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए ॥ १०२ ॥ तएणं से गोसाले

वंत महावीर स्वामी की पास गये और उनको तीन वार वंदना नमस्कार कर स्वयमेव पांच महा व्रत की आराधना कर साधु साध्वीयों को खमाकर आलोचना प्रतिक्रमण करके सामाधि प्राप्त बना हुवा काल को प्राप्त हुए ॥ १०२ ॥ अपने तपतेज से सुनक्षत्र अनगार को पीडित करके मंखली पुत्र गोशाला तीसरी

आ० आक्रोश से आ० आक्रोश किया स० सब तं० वैसे जा० यावत् सु० सुख प० नहीं है. ॥ १०३ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र को ए० ऐसा व० बोले जे० जो गो० गोशाला त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की तं० वैसे जा० यावत् प० पर्युपासना करते हैं किं० कैसे पु० पुनः गो० गोशाला तु० तुम म० मेरेसे प० प्रव्रजित हुआ जा० यावत् म० मेरेसे ब० बहु सूत्री कराया म० मेरेसे मि० मिथ्या प० अंगीकार किया त० इसलिये

मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेत्ता तच्चंपि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ सव्वं तंचेव जाव सुहं णत्थि ॥ १०३ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी जेवि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा तंचेव जाव पज्जुवासति, किमंग पुण गोसाला ! तुम्हं मएचेव पव्वाविए जाव मएचेव बहुसुईकए ममंचेव मिच्छं विप्पडिवण्णे तं मा

वक्त भी श्रमण भगवंत महावीर को ऊंच नीच आक्रोशकारी वचनों से आक्रोशकर यावत् तुझे सुख नहीं है ॥ १०३ ॥ तब श्रमण भगवंत महावीर स्वामी मंखलीपुत्र गोशाला को ऐसा बोले कि अहो गोशाला ! जो कोई तथारूप श्रमण माहण की पास से मात्र एक आर्य धर्म के सुवचन श्रवण करते हैं वे उन की वंदना पूजा यावत् पर्युपासना करते हैं, तो अहो गोशाला ! मेरे से दीक्षित बना हुवा यावत् मैंने बहुसूत्री बनाया हुवा मेरे से ही मिथ्यात्वभाव अंगीकार कर रहा है. अहो गोशाला ! ऐसा

म० मत ए० ऐसे गो० गोशाला जा० यावत् णो० नहीं अ० अन्य ॥ १०४ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर से ए० ऐसा वु० बोलाया आ० आसुरक्त ते० तेजस स० समुद्घात स० करके स० सात आठ प० पांव प० पीछा जाकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर का व० वध के लिये स० शरीर में से ते० तेज णि० नीकाला ॥ १०५ ॥ ज० जैसे वा० वात उ० उत्कलिक वा० वायु मं० मंडलिक से० पर्वत को कु० कुट्को थं० स्तंभ को आ० स्खलना पाता

एवं गोसाला ! जाव णो अण्णा ॥ १०४ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तेसमाणे आसुरुत्ते तेयासमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइत्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि तेयं णिस्सरइ ॥ १०५ ॥ से जहा णामए वाउक्कलियाइवा वाय मंडलियाइवा सेलंसिवा कुड्डुयंसिवा थंभंसिवा आवरिज्जमाणावा थूभंसि णिवारिज्जमाणावा

मत कर. ऐसा करना तुझे योग्य नहीं है. अहो गोशाला ! यह तेरी छाया है अन्य कुच्छ भी नहीं है ॥ १०४ ॥ जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब मंखली पुत्र गोशाला आसुरक्त यावत् क्रोधित हुवा, तेजस समुद्घात करके सात आठ पांव पीछा गया और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का वधके लिये तेज नीकाला॥१०५॥जैसे वातोत्कलिका अथवा मंडलिका वायु शैल, कूट व स्तंभ से स्खलना पाता

हुवा णि० विशेष स्खलना पाता हुवा से० वह त० वहां णो० नहीं क० जाता है णो० नहीं प० विशेष जाता है ए० ऐसे गो० गोशाला का त० तपतेज स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर के व० वध के लिये स० शरीर में से णि० नीकला हुवा से० वह त० वहां णो० नहीं क० गया णो० नहीं प० विशेष गया अं० एक वार चि० अनेक वार क० करके आ० आवर्त प० प्रदक्षिणा क० करके उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० गया ते० वह त० वहां प० हणाया हुवा प० पीछा आता गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र के

साणं तत्थ णोक्कमइ णोपक्कमइ, एवामेव गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवतेए समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगं णिसिट्ठेसमाणे, सेणं तत्थ णोक्कमइ णोपक्कमइ, अंचियंचियं करेइ, करेइत्ता आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेइत्ता उड्ढं वेहासं उप्पइ, ते से णं तओ पडिहए पडिणियत्तमाणे तस्सेव गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुडहमाणे २,

हुवा उसे पराभव करे नहीं वैसे ही श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का वध के लिये नीकाला हुवा तेज उन को अतिक्रमा नहीं, उन का पराभव कर सका नहीं, परंतु एक वक्त जावे पुनः पीछा आवे यों इधर उधर फीरता हुवा महावीर स्वामी की दक्षिण बाजु प्रदक्षिणा करता हुवा ऊंचे आकाश में गया, ऊंचे आकाश में उछलकर वहां से हणाया हुवा, पुनः वहां से पीछा आता हुवा उस ही मंखली पुत्र गोशाला के

स० शरीर को अ० जलाता अ० प्रवेश किया ॥ १०६ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र स० स्वतः के ते० तेज से अ० पराभव पाया हुवा स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को ए० ऐसे व० बोला तु० तुम आ० आयुष्मन् का० काश्यप म० मेरे त० तप तेज से अ० पराभव पाया हुवा अ० अंदर छ० छमास में पि० पित्तज्वर प० परिगत स० शरीर वाला दा० ज्वलनयुक्त छ० छद्मस्थ में का० काल क० करेंगे ॥ १०७ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र को ए०

अंतो २ अणुप्पविट्ठे ॥ १०६ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते सएणं तेएणं अणाइट्ठे समाणे समणं भगवं महावीरं एवं वयासी तुमंणं आउसो कासवा! ममं तवेणं तेएणं अणाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगय सरीरे दाहवक्कंतिए छउमत्थे चेव कालं करिस्सइ ॥१०७॥ तएणं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी णो खलु अहं

शरीर को जलाता हुवा अंदर प्रवेश किया ॥ १०६ ॥ अब स्वतः के तेज से पराभव पाया हुवा मंखलीपुत्र गोशाला श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को ऐसा बोला कि अहो आयुष्मन् काश्यप ! मेरे तप तेज से पराभव पाया हुवा पित्तज्वर के शरीरवाला व दाह युक्त छद्मस्थपना में ही छ मास की अंदर तू काल करेगा ॥ १०७ ॥ तब श्रमण भगवंत महावीर मंखली पुत्र गोशाला को ऐसा बोले कि अहो गोशाला !

ऐसा व० बोले णो० नहीं अ० मैं गो० गोशाला त० तेरे त० तपतेज से अ० पराभव पाया हुवा अं० अंदर छ० छ मास में जा० यावत् का० काल करूंगा अ० मैं अ० अन्य सो० सोलह वा० वर्ष जि० जिन सु० सुखार्थी वि० विचरूंगा तु० तुम गो० गोशाला अ० स्वतः स० अपने ते० तेज से अ० पराभव पाया हुवा अं० अंदर स० सात रात्रि पि० पित्तज्वर प० परिगय स० शरीर पाला जा० यावत् छ० छद्मस्थ में का० काल क० करेगा ॥ १०८ ॥ त० तब सा० श्रावस्ती ण० नगरी में सिं० शृंगाटक जा० यावत् प० महापथ में ब० बहुतमनुष्यों अ० परस्पर ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ए० ऐसा प० प्ररूपते

गोसाला ! तव तवेणं तेएणं अणाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं जाव कालं करिस्सामि ॥ अहं णं अण्णाइं सोलसवासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि ॥ तुम्हंणं गोसाला अप्पणाचेव सएणं तवेणं तेएणं अणाइट्ठे समाणे अंतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगय सरीरे जाव छउमत्थे चेव कालं करिस्सासि ॥ १०८ ॥ तएणं सावत्थीए णयरीए सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एव माइक्खइ जाव एवं परूवेइ एवं खलु देवाणु-

तेरे तपतेज से पराभूत बना हुवा छ मास की अंदर मैं काल नहीं करूंगा, परंतु अन्य सोलह वर्ष पर्यंत जीन व सुखार्थी बना हुवा विचरूंगा. अहो गोशाला ! तू तेरे तप तेज से ही पराभव पाया हुवा सात रात्रि में पित्तज्वर सहित छद्मस्थ अवस्था में काल करेगा ॥ १०८ ॥ उस समय श्रावस्ती नगरी में

हैं ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय सा० श्रावस्ती ण० नगरी की व० बाहिर को० कोष्टक चे० उद्यान में दु० दो जि० जिन स० विवाद करते हैं ए० एक ए० ऐसा व० कहते हैं तु० तुम पु० पहिले क० काल क० करेंगे ए० एक ए० ऐसा व० बोले तु० तुम पु० पहिले का० काल क० करेंगे त० उस में के० कौन स० सम्यक बोलने वाला के० कौन मि० मिथ्या बोलने वाला त० उस में जे० जो अ० अर्हप्रधान ज० मनुष्य से० वे व० बोले स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर स० सम्यग् वादी गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र मि० मिथ्यावादी ॥ १०९ ॥ अ० आर्य म० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर स० श्रमण णि०

प्पिया! सावत्थीए णयरीए बहिया कोट्ठए चेइए दुवे जिणा संलवंति एगे एवं वयासी तुमं पुव्विं कालं करिस्सासि एगे एवं वदंति तुमं पुव्विं कालं करिस्सासि तत्थणं के सम्मावादी के मिच्छावादी? तत्थणं जेसे अहप्पहाणे जणे से वदंति समणे भगवं महावीरे सम्मा- वादी गोसाले मंखलिपुत्ते मिच्छावादी ॥ १०९ ॥ अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे

शृंगाटक यावत् महापथ में लोगों परस्पर ऐसा कहने यावत् प्ररूपने लगे कि अहो देवानुप्रिय! श्रावस्ती नगरी के बाहिर कोष्टक उद्यान में दो जिन को परस्पर विवाद होता है; उस में एक ऐसा कहता है, कि तू पहिले काल करेगा और दूसरा ऐसा कहता है कि तू पहिले काल करेगा. इस में कौन सम्यग्वादी और कौन मिथ्यावादी? उन में जो मुख्य मनुष्यों थे वे ऐसा कहते थे कि श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी सम्यग्वादी और मंखली पुत्र गोशाला मिथ्यावादी है ॥ १०९ ॥ अब श्रमण भगवंत महावीर

निर्ग्रन्थों को आ० आमंत्रण कर ए० ऐसा ब० बोला अ० आर्य से० अथ ज० जैसे त० तृण का समुह क० काष्ट का समुह प० पत्र का समुह त० त्वचा का समुह तु० फुस का समुह भु० भूसे का समुह गो० गोबर का समुह अ० कचवर का समुह अ० अग्नि से जला हुवा अ० अग्नि से स्पर्शा अ० अग्नि से प० परिणमा ह० हत तेजवाला ग० गया हुवा तेजवाला ण० नष्ट तेजवाला भ० भ्रष्ट तेजवाला लु० लुप्त तेजवाला वि० विनष्ट तेजवाला जा० यावत् ए० ऐसे गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र म० मेरा व० वध केलिये स० शरीर में से ते० तेज णि० नीकाल कर ह० हत तेजवाला ग० गत तेजवाला जा० यावत् वि० विनष्ट

समणे णिग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी अज्जो ! से जहा णामए तणरासीतिवा कट्ठरासीतिवा पत्तरासीतिवा, तयारासीतिवा, तुसरासीतिवा, भुसरासीतिवा, गोमयरासीतिवा, अवकररासीतिवा अगणिज्झामिए अगणिज्झूसिए अगणिपरिणामिए हयतेए गयतेए णट्ठतेए भट्ठतेए लुत्तलेए विणट्ठतेए जाव एवामेव गोसाले मंखलिपुत्ते ममं वहाए सरीरगांसि तेयं णिसिरित्ता हयतेए गयतेए जाव विणट्ठतेए, तं छंदेणं अज्जो !

स्वामी श्रमण निर्ग्रंथों को उद्देश कर ऐसा बोले कि अहो आर्यो ! जैसे तृण, काष्ट, पत्र, त्वचा, तुष, फूस, गोमय और कचरे की राशि अग्नि से जलने से, बलने से व परिणमने से, तेज रहित होती है ऐसे ही मेरा वध के लिये तेज नीकालने से मंखलीपुत्र गोशाला तेज रहित हुवा है. इसलिये अहो आर्यो ! इच्छानुमार

तेजवाला तं० इसलिये छं० इच्छानुसार अ० आर्य तु० तुम गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र को ध० धार्मिक प० चोयणा से प० चोयणा करो प० प्रतिसारणा से, प० प्रतिसारणा दो ध० धार्मिक प० प्रत्युपकार से प० प्रत्युपकार करो ध० धार्मिक अ० अर्थ से हे० हेतु से प० प्रश्न से वा० व्याकरण से का० कारन से प०, प्रश्न वा० उत्तर क० करो ॥ ११० ॥ त० तब से० वे स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर से ए० ऐसा वु० कहाये हुवे स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना ण० नमस्कार कर जे० जहां गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र ते० वहां उ० आकर गो०

तुब्भं गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएह, धम्मि २ धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेह धम्मि २, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेह, धम्मिं २ अट्ठेहिय हेऊहिय पसिणेहिय वागरणेहिय कारणेहिय णिप्पट्ठपसिणवागरणं करेह ॥ ११० ॥ तएणं से समणा णिग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदइ णमंसइत्ता जेणेव गोसाले

तुम मंखली पुत्र गोशाला की साथ धर्म की चोयणा, प्रतिचोयणा करो और धर्म के वचन से प्रत्युपकार करो. अर्थ, प्रश्न, हेतु उत्तर व प्रत्युत्तर से प्रश्नोत्तर देने में असमर्थ करो ॥११०॥ तब उन श्रमण निर्ग्रंथोंने श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के उक्त वचन श्रवण कर श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना

गोशाला मं० मंखलीपुत्र को ध० धार्मिक प० चोयणा से प० चोयणा की प० प्रतिसारणा से प० प्रतिसारणा की प० प्रत्युपकार से प० प्रत्युपकार किया अ० अर्थ हे० हेतु का० कारन से जा० यावत् वा० उत्तर क० किया ॥ ११ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थों से ध० धार्मिक प० प्रतिचोयणा से प० चोयणा कराया हुवा जा० यावत णि० पुछाये हुवे प० प्रश्न वा० व्याकरण की० करता हुवा आ० आसुरक्त जा० यावत मि० दांत पीसता हुवा णो० नहीं सं० समर्थ

मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएंति ध० २ धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेंति ध० २, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारंति ध० २, अट्ठेहिय हेऊहिय, कारणेहिय जाव वागरणं करेंति ॥ १११ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेहिं णिग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोइज्जंमाणे जाव णिप्पट्ठुपसिणवागरणे कीरमाणे आसुरुत्ते जाव मिसि-

नमस्कार किया. और वंदना नमस्कार कर मंखली पुत्र गोशाला की पास गये. वहां मंखलीपुत्र गोशाला की साथ धर्म की चोयणा प्रतिचोयणा करके धर्म की प्रतिसारणा की, धर्ममय प्रतिसारणा करके धर्ममय प्रतिवचन से उपकार किया, और अर्थ, हेतु, कारण यावत् व्याकरण से उत्तर देने में असमर्थ किया ॥ १११ ॥ जब मंखली पुत्र गोशाला की साथ श्रमण निर्ग्रंथोंने धर्म की चोयणा, प्रति चोयणा यावत्

हुवा स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ के स० शरीर को किं० किंचित् अ० अबाधा वि० व्याबाध उ० उत्पन्न करने को छ० चर्म छेद क० करने को ॥ ११२ ॥ त० तब आ० आजीविक थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र को स० श्रमण निर्ग्रंथ से ध० धार्मिक प० प्रतिचोयणा से प० चोयणा कराता हुवा ध० धार्मिक प० प्रतिसारणा कराता हुवा ध० धार्मिक प० प्रत्युपकार से प० प्रत्युपकार कराता हुवा अ० अर्थ हे० हेतु जा० यावत् की० करता आ० आसुरक्त जा० यावत् मि० दांत पीसता हुवा स० श्रमण

मिसेमाणे णो संचाएइ ॥ समणाणं णिग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा बाबाहं वा उप्पएत्तए छविच्छेदं वा करेत्तए ॥ ११२ ॥ तएणं ते आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं समणेहिं णिग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएज्जमाणं धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणं धम्मियेणं पडोयारेणं पडोयारिज्जमाणं अट्ठेहिय हेऊहिय जाव कीरमाणं आसुरुत्तं जाव मिसिमिसेमाणे समणाणं णिग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि

प्रश्न, हेतु यावत् व्याकरण से उत्तर रहित किया, तब वह आसुरक्त यावत् क्रोधित हुवा; परंतु श्रमण निर्ग्रन्थों को किंचिन्मात्र बाधा पीडा उत्पन्न कर सका नहीं, वैसे ही चर्मछेद भी कर सका नहीं ॥ ११२ ॥ अब श्रमण निर्ग्रंथों मंखली पुत्र गोशाला की साथ धर्म की चोयणा, प्रतिचोयणा प्रतिसारणा, धर्ममय प्रतिवचन से उपकार करनेपर और उन को हेतु प्रश्न, यावत् व्याकरण से उत्तर देने में असमर्थ करने पर

णि० निर्ग्रन्थों को किं० किंचित् आ० पीडा वि० व्याबाध छ० चर्मछेद अ० नहीं करता हुवा पा० देखकर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र की अं० पास से आ० आत्मा से अ० अवक्रम कर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० वहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को ति० तीन बार आ० आवर्त प० प्रदक्षिणा वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को उ० प्राप्त होकर वि० विचरने लगे अ० कितनेक आ० आजीविक थे० स्थविर गो० गोशाला मं०

आवाहंवा वाबाहंवा छविच्छेदं वा अकरेमाणे पासंइ, पासइत्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ आताए अवक्कमंति, अवक्कमंतित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छंतित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति अत्थे-

वह उन को किंचिन्मात्र बाधा, पीडा यावत् चर्म छेदकर सका नहीं. ऐसा देखकर आजीविक मत के कितनेक स्थविर मंखलीपुत्र गोशाला की पास से स्वयमेव नीकल गये और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आये. वहां महावीर स्वामी को तीन आवर्त व प्रदक्षिणा सहित वंदना नमस्कार कर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की नेश्राय से विचरने लगे और कितनेक मंखली पुत्र गोशाला की

मंखलीपुत्र को उ० प्राप्त होकर वि० विचरने लगे ॥ १३ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखली-पुत्र ज० जिस लिये ह० शीघ्र आ० आयाथा त० उसे अ० नहीं साधता रुं० इन्द्रादि प० देखता दी० दीर्घ उ० ऊष्ण नी० निवास डालते दा० दाढी के लो० रोम लुं० तोडता अ० पुरुषलिंग कुं० खुजालता पु० पुततटि प० फोडता ह० हस्त वि० मसलता दो० दोनों पा० पांव से भू० भूमि को० कुटते हा० हाहा अ० अरे ह० हणाया अ० मैं अ० हूं ति० ऐसा क० करके स० श्रमण भ० भगवंत म०

गइया आजीवियथेरा गोसालं चेव मंखलिपुत्तं उवसंपजित्ताणं विहरंति ॥ ११३ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते जस्सट्ठाए हव्वमागए तमट्ठमसाहेमाणे रुंदाइं पलोएमाणे दीहुण्हाइं नीससमाणे, दाढियाए लोमाए लुंचमाणे, अवटुं कंडुयमाणे, पुयलिं पप्फोडेमाणे हत्थे विणिद्धुणमाणे दोहिंविपाएहिं भूमिं कोट्टेमाणे हाहा अहो हतो हमस्सतीति कट्टु समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडि-

नेश्राय में रहकर विचरने लगे ॥ ११३ ॥ अब मंखली पुत्र गोशाला जिस कार्य (महावीर स्वामी का वध) के लीये आया था उस कार्य को नहीं साध सकने से दशोंदिशि में दीर्घ दृष्टि से देखता हुवा, दीर्घ नीश्वास डालता हुवा, दाढी के बालों हाथ से खींचता हुवा, गरदन खुजालता हुवा, दोनों हस्त परस्पर मसलता हुवा, दोनों पांवों से जमीन तोडता हुवा, 'हाहा,' 'अहो' 'मैं हणाया' ऐसा करके भगवंत श्री महावीर

महावीर की अं० पास से को० कोष्ठक चे० उद्यान में से प० नीकलकर जे० जहां सा० श्रावस्ती ण० नगरी जे० जहां हा० हालाहला कुं० कुंभकारी की कुं० कुंभकार की आ० दुकान ते० वहां उ० आकर हा० हालाहला कुं० कुंभकारि से कुं० कुंभकार शाला में अं० आम्र फल ह० हस्तगत म० मद्यपान पि० पीता अ० वारंवार गा० गाता हुवा अ० वारंवार ण० नृत्य करता हुवा अ० वारंवार हा० हालाहला कुं० कुंभकारी को अं० अंजलिकर्म क० करता सी० शीतल म० मृत्तिका पा० पानी आ० कुंभार के भाजन में रहा हुवा पानी से गा० गात्रों को प० सींचता हुवा वि० विचरने लगा ॥ ११४ ॥ अ० आर्य स० श्रमण भ० भगवंत

णिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता जेणेव सावत्थीं णयरी जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता हालाहलाहिं कुंभकारीहिं कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए मज्जपाणगं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं णच्चमाणे, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे सीतलएणं मट्टियापाणएणं आयंचणिउदएणं गाताइं परिसिंचमाणे विहरइ ॥ ११४ ॥ अज्जो-

स्वामी की पास से कोष्टक उद्यान में से नीकलकर श्रावस्ती नगरी में हालाहला कुंभकारिणी की कुंभकार शाला में आया.. वहां पर हालाहला कुंभकारीणी की साथ हस्त में आम्र फल सहित मद्यपान करता हुवा, वारंवार गाता हुवा, वारंवार नृत्य करता हुवा, वारंवार हालाहला कुंभकारी को अंजली कर्म करता हुवा

म० महावीर स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ को आ० आमंत्रण कर ए० ऐसा व० बोला जा० जो अ० आर्य गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र म० मेरा व० वध के लिये स० शरीर में से ते० तेज णि० नीकाला से० वह अ० समर्थ प० पूरा मो० सोलह ज० देश को अं० अंग वं० वंग म० मगध म० मलय मा० मालव अ० अच्छ व० वत्स को० कोच्छ पा० पाढ ला० लाढ व० वज्री मो० मोली का० काशी को० कोशल को अ० आवाध मं० भोगशाले के घा० घात के लिये व० वध के लिये उ० जलाने के लिये भा० भस्म

त्ति ! समणे भगवं महावीरे समणे णिग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी जावइएणं अज्जो ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेयं णिसट्ठे सेणं अलाहि पज्जंते सोलसण्ह जणवयाणं, तंजहा अंगाणं, वंगाणं, मगहाणं, मलयाणं, मालवगाणं, अच्छाणं, वच्छाणं, कोच्छाणं, पाढाणं, लाढाणं, वज्जीणं, मोलीणं, कासीणं; कोस-

शीतल मृत्तिका के पानी मे अपने गात्रों को सींचता हुआ रहने लगा * ॥ ११४ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी श्रमण निर्ग्रन्थों को उद्देशकर बोले कि अहो आर्यों ! मंखलीपुत्र गोशालाने मेरे वध के लिये जो तेजो लेश्या नीकाली थी वह यदि अपने पूर्णरूप में प्रकट होती तो १ अंग २ वंग ३ मगध ४ मलय ५ मालव ६ अच्छ ७ वच्छ ८ कोच्छ ९ पाढ १० लाढ ११ वज्री १२ मोली १३ काशी १४ कोसल

* मद्यपान पीने से व तेजोलेश्या के प्रतिघात से उक्त क्रियाओं करता है,

कम्मे के लिये जं० जो अ० आज गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र हा० हालाहला कुं० कुंभकारी की कुं० कुंभकार शाला में अं० आम्रफल ह० हस्तगत म० मद्यपान पि० पीता हुवा जा० यावत् अं० अंजली कर्म क० करता हुवा विं० विचरता है ॥११५॥ त० उस व० पापको ब० ढकने के लिये इ० ये अ० आठ च० चरिम प० प्ररूपे च० चरिम पा० पान च० चरिम गे० गीत च० चरिम ण० नृत्य च० चरिम अं० अंजलीकर्म च० चरिम पो० पुष्कल सं० संवर्तक म० महामेघ से० सेचनक गं० गंधहस्ती च०

लगाणं, अवाहाणं संभुत्तराणं घाताए वहाए उच्छादणट्ठयाए भासीकरणयाए जंपियं अज्ज गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगत्थगए मज्जपाणं पियमाणे अभि जाव अंजलिकम्मं करेमाणे विहरइ ॥ ११५॥ तस्सविणं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं अट्ठ चरमाइं पण्णवेइ, तंजहा चरिमे पाणे, चरिमेगेये, चरिमेणट्टे, चरिमे अंजलि कम्मे चरिमे पोक्खलस्स संवट्टए महामेहे, चरिमे सेयणए गंधहत्थि, चरिमे

१५ अवध और १६ संयुक्त इन सोलह देश की घात करने को, वध करने को, जलाने को व भस्म करने को समर्थ होती. आज वही गोशाला हालाहला कुंभकारीणी की कुंभकार शाला में हस्त में आम्र सहित मद्यपान पीता हुवा यावत् अंजली कर्म करता हुवा विचरता है ॥ ११५ ॥ उस पाप कर्म को छिपाने के लिये वह आठ चरिम की प्ररूपणा करता है. जिन के नाम- १ चरिम पान २ चरिम गान ३ चरिम नाटक

चरिम म० महाशिला कं० कंटक संग्राम अ० मैं इ० इस ओ० अवसर्पिणी के चो० चौवीस ति० तीर्थंकर में से च० चरिम ति० तीर्थंकर सि० सीझूंगा जा० यावत् अं० अंत करूंगा ॥११६॥ जं० यद्यपि अ० आर्य गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र सी० शतिल म० मृत्तिका पा० पानी से आ० मीट्टि से मीला उ० पानी से गा० गात्रों को प० सींचन करता हुवा वि० विचरता है त० उस व० पाप को भी व० छीपाने के लिये इ० ये च० चार पा० पान च० चार अ० अपान प० प्ररूपता है से० अथ किं० क्या पा० पान पा०

महासिलाकंटए संगामे ॥ अहं च णं इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थंकराणं चरिमे तित्थंकरे सिज्झिस्सं जाव अंतं करेस्सं ॥ ११६ ॥ जंपिय अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टिया पाणएणं आयंचाणि उदएणं गायाइं परिसिंचमाणे विहरइ, तस्सविणं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं चत्तारि पाणगाइं चत्तारि अपाण-गाइं पण्णवेइ ॥ सेकिंतं पाणए ? पाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा गोपुट्ठए, हत्थ-

४ चरिम अंजली ५ चरिम पुष्कल संवर्त महामेघ ६ चरिम सेचानक गंधहस्ती ७ चरिम महा शिला कंटक संग्राम और ८ इस अवसर्पिणी में चौवीस तीर्थंकरों में मैं चरिम तीर्थंकर होकर सिद्ध बुद्ध मुक्त होऊंगा यावत् सब दुःखों का अंत करूंगा ॥ ११६ ॥ और भी अहो आर्यो ! मंखली पुत्र गोशाला मृत्तिका मीश्रित शीतल जल से अपने गात्रों को सींचता हुवा विचरता है. इस पाप को छिपाने के लिये

पान के च० चार भेद तं० वैसे गो० गोपृष्टक ह० हस्तमर्दित आ० आतपतप्त सि० शिलाप्रभ्रष्ट अ०
अपान च० चार प्रकार के था० स्थाल पानक त० त्वचा पानक सिं० शंवली पानक सु० सुद्ध पानक से०
अव किं० क्या था० स्थाल पानक जे० जो दा० पानी का थाल दा० पानी का कुलडा दा० पानी का
कुंभ दा० पानी का कलश सी० शीतल उ० पानी से भींगा हुवा मृत्तिका का भाजन ह० हस्त से प०

मद्दियए, आतवतत्तए, सिलापब्भट्ठत्तए सेतं पाणए ॥ से किं तं अपाणए ? २ चउव्विहे
पण्णत्ते, तंजहा थालपाणए, तयापाणए, सिंवालिपाणए, सुद्धापाणए, ॥ सेकिंतं
थालपाणए ? २ जेणं दाथालगंवा, दावारगंवा, दाकुंभगंवा, दाकलसंवा, सीयलगंवा उल्लाग-
हत्थेहिं परामुसइ नय पाणियं पिवइ, से तं थालपाणए ॥ से किं तं तयापाणए ? जेणं अंबंवा

चार पान और चार अपान की प्ररूपणा की है. पान क्या है ? पान के चार भेद कहे हैं ? गौ की
पीठ से पडा हुवा पानी २ हाथ में मसला हुवा पानी ३ सूर्य के ताप से तपाया हुवा पानी और ४ शीला
पर्वत पहाड वगैरह स्थान से पडा हुवा पानी. अपान के चार भेद १ थालीका पानी २ वृक्ष की साल का
पानी ३ तुरा प्रमुख फली का पानी और ४ हस्तस्पर्श का पानी. इन में थालीका पानी क्या है ?
पानी से भींजा हुवा थाल, पानी से भींजा हुवा कुलडा, पानी से भींजा कुंभ और पानी से भींजा कलश.
उक्त पानी से भींजा हुवा मृत्तिका पात्र विशेष को हस्त से स्पर्श करना परंतु पानी पीना नहीं. यह थाल

लेकर ण० नहीं पा० पानी पि० पीवे ए० यह था० स्थालपानक कि० क्या त० त्वचा पानक जे० जो अ० आम्र अं० अंबाडा ज० जैसे प० प्रयोगपद में जा० यावत् बो० बोर तिं० तिंदुक त० छोटी आ० कच्ची आ० थोडापीडे प० विशेष पीडे न० नहीं पा० पानी पि० पीता है से० वह त० त्वचा पानक से० अथ कि० क्या सं० शंवली पानक क० चने की फली मु० मुंग फली मा० उडीद की फली त० नवीन आ० कच्ची आ० मुख में आ० थोडा डाले प० विशेष डाले ण० नहीं पा० पानी पि० पीवे से० वह सिं०

अंबाडगंवा जहा पओगपदे जाव वोरूंवा तिंदुयंवा तरुणगं आमगवा आसिगांसि आविसलेइ वा, पवालेतिंवा णय पाणियं पिवइ, से तं तयापाणए से किं तं संवलिपाणए ? संवलि पाणए जेणं कलसंगलियंवा, मुग्गसंगालियंवा, माससंगालियंवा, सिंवलिसंगालियंवा, तरुणियं आमियं आसिगंसि आवीसलेइवा, पवालेइवा, ण य पाणियं पिवइ, सेतं सिं-वलिपाणए ॥ से किं तं सुद्धापाणए ? सुद्धापाणए जेणं छम्मासं सुद्धखाइमं खाइ

पानी कहा जाता है. त्वचा पानी किसे कहते हैं ? आम्र, अम्बड वगैरह जैसे पन्नवणा के सोलहवे पद में कहा वैसे यावत् बोरका, टिंवरूका पानी तुर्त का नीकला कच्चा मुख में रखे, थोडा स्पर्श करे विशेष स्पर्श करे परंतु पीवे नहीं यह त्वचा पानी हुवा. फली का पानी किसे कहते हैं ? जो चने की फली, मुंग की फली, उडद की फली, व सेवले की फली इन फलियों के पानी को तरुणपना में, अभिनवपना में

शिवली पान से० अथ किं० क्या सु० शुद्धपान सु० शुद्धपानक जे० जो छ० छमास खा० खादिम खा० खाता है दो० दोमास पु० पृथ्वी पर उ० रहे दो० दोमास क० काष्ट सं० संथारापर उ० रहे दो० दो पास द० दर्भ संथारा पर उ० रहे त० उस को ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण छ० छमास की अं० अंतिम रा० रात्रि में इ० ये दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महा सुखवाले अं० पास पा० प्रगट होते हैं तं० वैसे पु० पुर्णभद्र मा० माणभद्र त० तब से० वे दे० देव सी० शीतल उ० भीने ह०

दोमासे पुढविसंथारोवगए, दोमासे कट्ठसंथारोवगए, दोमासे दब्भसंथारोवगए, तस्सणं बहुपाडिपुण्णाणं छण्हं मासाणं अंतिमराइए इमे दो देवा महिड्डिया जाव महेस-क्खा अंतियं पाउब्भवंति, तंजहा पुण्णभद्दय, माणिभद्दय, ॥ तएणं से देवा सीयालिएहिं उल्लएहिं हत्थेहिं गायाइं परामुसंति ॥ जेणं ते देवा साइज्जइ सेणं

स्पर्श करे विशेष स्पर्श करे परंतु पानी पीवे नहीं, उसे फली का पानी कहते हैं. अब शुद्ध पानी किसे कहते हैं ? जो कोई छ मास पर्यंत शुद्ध खादिम [मेवा] खावे, दो मास पर्यंत भूमि पर शयन करे, दो मास पर्यंत काष्ट पर शयन करे, और दो मास पर्यंत दर्भ पर शयन करे. इस तरह करते छ मास में पूर्ण भद्र व माणभद्र ऐसे दो महर्द्धिक यावत् महासुखवाले देव उत्पन्न होवे. अब वे देवता शीतल व आर्द्र हस्तसे

हस्त से गा० गात्रों को प० स्पर्श करे जे० जिससे ते० वे दे० देव सा० अनुमोदावे से० वह आ० आशीविषपने क० कर्म प० करे जे० जीससे ते० वे दे० देव णो० नहीं आ० अनुमोदावे त० उस का स० स्व स० शरीर में अ० अग्निकाय सं० उत्पन्न होवे स० वह स० स्वतः के ते० तेज से स० शरीर को झा० जलावे त० उस प० पीछे सि० सीझे जा० यावत् अं० अंतकरे से० यह सु० शुद्ध पानक ॥ ११७ ॥ त० तहां सा० श्रावस्ती ण० नगरी में अ० अयंपुल आ० आजीविक उ० उपासक प० रहता है अ०

आसीविसत्ताए कम्मं पकरेइ ॥ जेणं ते देवे णो साइज्जइ तस्सणं संसि सरीरगंसि अगाणिकायं संभवति, सेणं सएणं तेएणं सरीरगं झामेइ स० २, तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करेंति सेतं सुद्धापाणए ॥ ११७ ॥ तत्थणं सावत्थीए णयरीए अयंपुलेणामं आजीवियउवासए परिवसइ अड्ढे जहा हालाहला, आजीवियसमएणं

गात्रों को स्पर्श करे. यदि उन देवताओं को अनुमोदे अर्थात् ये देव अच्छा करते हैं ऐसा कहे तो वह आशीविष पानी का कर्म करता है, यदि उन देवताओं को अनुमोदे नहीं तो उन के शरीर में अग्नि काम उत्पन्न होवे, अपने तेज से अपना शरीर को जलावे और पीछे सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे. यह शुद्ध पानी कहा जाता है ॥ ११७ ॥ उस श्रावस्ती नगरी में अयंपुल नाम का आजीविक उपासक रहता था. वह हालाहला कुंभकारिणी जैसा ऋद्धिवंत था और आजीविक समय में स्वतः

ऋद्धिवंत ज० जेसे हा० हालाहला आ० आजीविक सं० मतमें अ० स्वतःको भा० भावता वि० विचरता है॥ ११८॥ त० तब अ० अयंपुल आ० आजीविक उ० उपासक को अ० अन्यथा क० कदापि पु० पूर्वरात्रि में कुं० कुटुंब जागरणा जा० जागते अ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुआ कि० कैसा सं० संस्थानवाला ह० हल प० कहे त० तब त० उस अ० अयंपुल आ० आजीविक उ० उपासक को दो० दूसरी वक्त भी ए० ऐसा अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुआ ए० ऐसे म० मेरे ध० धर्माचार्य

अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ११८ ॥ तएणं तस्स अयंपुलस्स आजीवियउवासगस्स अण्णयाकयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणे अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था किं संठिया हल्ला प० ? तएणं तस्स अयंपुलस्स आजीवियउवासगस्स दोच्चंपि अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था,

को भावता हुवा विचरता था ॥ ११८ ॥ उस समय एकदा अयंपुल आजीविक उपासक को पूर्व रात्रि में कुटुम्ब जागरणा करते ऐसा अध्यवसाय हुवा कि हल्ला[1] का संस्थान क्या है ? इस से दुसरी वक्त भी ऐसा अध्यवसाय हुवा कि मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक उत्पन्न ज्ञान, दर्शन के धारक यावत् सर्वज्ञ सर्व

१ गोवालिका तृण सरिखा आकारवाला कीट विशेष.

ध० धर्मोपदेशक गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दं० दर्शन ध० धारन करनेवाले जा० यावत् स० सर्वज्ञ स० सर्व दर्शी इ० यहां सा० श्रावस्ती ण० नगरी में हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी की कुं० कुंभकारशाला में आ० आजीविक संघ से सं० परवरा आ० आजीविक स० मत से अ० स्वतः को भा० चिंतवता वि० विचरता था तं० इस लिये से० श्रेय मे० मुझे क० कल जा० यावत् ज० ज्वलंत गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र को वं० वंदना कर जा० यावत् प० पर्युपासना कर इ० यहां ए० ऐसा वा० प्रश्न वा० करने को ति० ऐसा क० करके ए० ऐसा सं० विचार कर क० कल जा० यावत्

एवं खलु मम धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी इहेव सावत्थीए णयरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघ संपरिवुडे आजीविय समएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तंसेयं खलु मे कल्लं जाव जलंते गोसालं मंखलिपुत्तं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्ता, इमं एयाणुरूवं वागरणं वागरित्तए चिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलंतं ण्हाए कय

दर्शी मंखलीपुत्र गोशाला श्रावस्ती नगरी में हालाहला कुंभकारिणी की कुंभकारशाला में आजीविक संघ सहित आजीविक मत को भावते हुवे विचरते हैं. इससे कल प्रभातमें सूर्य उदित होते मंखली पुत्र गोशालाकी पास जाकर और उन को वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना कर ऐसा प्रश्न पूछना मुझे श्रेय है. ऐसा विचार

ज० ज्वलंत ण्हा० स्नान किया जा० यावत् अ० अल्प म० महर्घ्य आ० आभरण अ० अलंकृत स० शरीरवाला सा० अपने गि० गृह से प० नीकलकर पा० पग मे चा० चलते सा० श्रावस्ती ण० नगरी की म० मध्य बीच में से जे० जहां हा० हालाहला कुं० कुंभकारी की कुं० कुंभकारशाला ते० वहां उ० आकर पा० देखकर गो० गोशाला मंखली पुत्र को हा० हालाहला कुं० कुंभकारी की कुं० कुंभकारशाला में अं० आम्र फल ह० हस्तगत जा० यावत् अं० अंजली कर्म क० करता हुवा सी० शीतल म० मृत्तिका जा०

जाव अप्पमहग्घाभरणलंकिय सरीरे साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमइत्ता पादविहार चारेणंसावत्थिं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता पासइ पासइत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगयं जाव अंजलिकम्मं करेमाणे सीयालियाए मट्टिया जाव गाथाइं परिसिंचमाणं पासइ, पासइत्ता

कर प्रभात होते उसने स्नान किया यावत् अलपभार व बहुमूल्यवाले आभरणों से शरीर अलंकृत किया. और अपने गृह से नीकलकर पादविहार से श्रावस्ती नगरी की बीच में होता हुवा हालाहला कुंभकारिणी की कुंभकार शाला में आया. वहां हालाहला कुंभकारिणी की कुंभकारशाला में हस्तमें आम्र सहित यावत् अंजली कर्म करता हुवा व शीतल जल से गात्रों को सिंचन करता हुवा मंखली पुत्र गोशाला को देखकर

यावत् गा० गात्रों को प० सींचन करता हुवा पा० देखकर ल० लज्जित वि० विलिप्त वि० शरमवाला स० शनैः प० पीछा गया ॥ ११९ ॥ त० तब ते० वे आ० आजीविक थे० स्थविर अ० अयंपुल आ० आजीविक उ० उपासक को ल० लज्जित जा० यावत् प० पीछा जाता हुवा पा० देखकर ए० ऐसा व० बोला ए० आव अ० अयंपुल इ० यहां ॥ १२० ॥ त० तब से० वह आ० आजीविक थे० स्थविरों से ए० ऐसा बु० बोलाया हुवा जे० जहां आ० आजीविक थे० स्थविर ते० वहां उ० गया आ० आजीविक थे० स्थविर को वं० वंदना ण० नमस्कार कर ण० नम्र आसन से जा० यावत् प० पर्युपासना की ॥१२१॥

लज्जिए विलित्तए विड्ड साणियं २ पच्चोसक्कइ ॥ ११९ ॥ तएणं ते आजीविय थेरा अयंपुलं आजीविय उवासगंलज्जियं जाव पच्चोसक्कमाणं पासइ, पासइत्ता एवं वयासी एहि ताव अयंपुला इतो॥१२०॥ तएणं से अयंपुले आजीविय उवासए आजीविय थेरेहिं एवं वुत्तेसमाणे जणेव आजीवियथेरा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता आजीविय थेरे वंदइत्ता णमंसइ, वंदइ णमंसइत्ता णच्चासण्णे जाव पज्जुवासति ॥ १२१ ॥

लज्जित हुवा, मन में असमंजस भाव हुवा और शनैः पीछा गया ॥ ११९ ॥ अब इस तरह अयंपुल आजीविक उपासक को लज्जित यावत् पीछा जाता हुवा देखकर आजीविक स्थविर बोले कि अहो अयंपुल ! यहां आव ॥ १२० ॥ आजीविक स्थविर के बोलाने से अयंपुल आजीविक उपासक उन स्थविरों की पास गया और उन को वंदना नमस्कार कर नम्र आसन से यावत् पर्युपासना करने लगा.

अ० अयंपुल आ० आजीविक थे० स्थविर अ० अयंपुल को ए० ऐसे व० बोले से० अथ भे० अहो अ० अयंपुल पु० पूर्व रात्रि में जा० यावत् कि० किस सं० संस्थानवाले ह० हल त० तव त० तुझे दो० दूसरी वक्त अ० यह ए० ऐसा तं० वैसे स० सब भा० कहना जा० यावत् सा० श्रावस्ती ण० नगरी की म० मध्य बीच में जे० जहां हा० हालाहला कुं० कुंभकारी की कुं० कुंभकार शाला में जे० जहां इ० यहां ते० वहां ह० शीघ्र आ० आया से० अथ भे० अहो अ० अयंपुल अ० अर्थ स० योग्य हं० हां अ० है

अयंपुलाइ! आजीवियथेरा अयंपुलं आजीविय उवासगं एवं वयासी सेणूणं भे अयंपुला! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि जाव किं संठिया हल्ला प०? तएणं तव अयंपुला! दोच्चंपि अयमेया तंचेव सव्वं भाणियव्वं जाव सावत्थिं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए, सेणूणं भे अयंपुला! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि ॥ १२२ ॥ जंपिय अयंपुला! तव धम्मायरिए धम्मोवएसए

॥ १२१ ॥ आजीविक स्थविर अयंपुल को ऐसे बोले कि अहो अयंपुल! पूर्व रात्रि में कुटुम्ब जागरणा जागते ऐसा अध्यवसाय हुवा कि हल्ला का कैसा आकार है? पुनः तुझे दूसरी वक्त भी ऐसा अध्यवसाय हुवा यावत् श्रावस्ती नगरी के बीच में हालाहला कुंभकारिणी की कुंभकारशाला में यहां पर आया. अहो अयंपुल! क्या बात सत्य है? हां यह बात सत्य है ॥ १२२ ॥ अहो अयंपुल! तेरा धर्माचार्य

॥ १२२ ॥ जं० यद्यपि अ० अयंपुल त० तेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र हा० हालाहला कुं० कुंभकारी की कुं० कुंभकार की आ० दुकान में अं० आम्रफल ह० हस्तगत जा० यावत् अं० अंजली क० करते वि० विचरते हैं त० उस में भी भ० भगवान् अ० आठ च० चरिम प० परूपते हैं तं० वैसे च० चरिम पा० पान जा० यावत् अं० अंत क० करेंगे ॥ १२३ ॥ जे० जो अ० अयंपुल त० तेरा ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र सी० शीतल म० मृत्तिका जा० यावत् वि० विचरते हैं त० उस में भी भ० भगवंत इ० ये च० चार पा० पान च० चार अ०

गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए जाव अंजलिं करेमाणे विहरइ, तत्थविणं भगवं इमाइं अट्ठ चरिमाइं पण्णवेइ तंजहा चरिमे पाणे जाव अंतं करेस्सइ ॥ १२३ ॥ जेविय अयंपुला ! तव धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलयाएणं मट्टिया जाव विहरंति, तत्थविणं भगवं इमाइं चत्तारि पाणगाइं चत्तारि अपाणगाइं पण्णवेइ. सेकिंतं पाणए ?

धर्मोपदेशक मंखलीपुत्र गोशाला हालाहला कुंभकारिणी की कुंभकारशाला में विचरते हैं. वहां पर भी वह भगवन्त इन आठ चरिम की प्ररूपणा करते हैं. जिन के नाम चरिम पानी यावत् अंत करेगा ॥१२३॥ और भी अहो अयंपुल ! यद्यपि तेरा धर्माचार्य धर्मोपदेशक मंखलीपुत्र गोशाला शीतल यावत् मृत्तिका मीश्रित

अपान प० प्ररूपते हैं ॥ १२४ ॥ तं० इस लिये ग० जा० तु० तुम अ० अयंपुल ए० ऐसे त० तेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र इ० यह ए० ऐसा वा० प्रश्न वा० करो ॥१२५॥ त० तब अ० अयंपुल आ० आजीविक उ० उपासक आ० आजीविक थे० स्थविरों से ए० ऐसा वु० कहाया ह० हृष्ट तु० तुष्ट उ० उठकर जे० जहां गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र ते० वहां प० नीकला ग० जाने को ॥ १२६ ॥ त० तब ते० वे आ० आजीविक थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र को

पाणए जाव तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करेंति ॥ १२४ ॥ तं गच्छहणं तुमं अयंपुला ! एवंचेव तव धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते इमं एयारूवं वागरणं वागरेहि ॥ १२५ ॥ तएणं से अयंपुले आजीवियउवासए आजीविएहिं थेरेहिं एवं वुत्तेसमाणे हट्ठ तुट्ठ उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेइत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ १२६ ॥ तएणं ते आजीवियथेरा गोसालस्स मंखलिपु-

पानी से विचरते हैं; तथापि चार पान और चार अपान की प्ररूपणा करते हैं. इस में क्या पान है? यावत् सीझे, बुझे व अंत करे ॥ १२४ ॥ इस से अहो अयंपुल ! तू तेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक की पास जा और इस प्रश्न की पृच्छा कर ॥ १२५ ॥ आजीविक स्थविर के ऐसे कहने पर अयंपुल आजीविक हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवा और मंखली पुत्र गोशाला की पास जाने को नीकला ॥ १२६ ॥ अब आजी-

अं० आम्र फल ए० डालने को ए० एकान्त में सं० संकेत कु० किया त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र आ० आजीविक थे० स्थविर से सं० संकेत प० इच्छकर अ० आम्र फल ए० एकान्त में ए० डालदिया ॥ १२७ ॥ त० तब से० वह अ० अयंपुल आ० आजीविक उ० उपासक ज० जहां गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र ते० वहां उ० जाकर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र को ति० तीन वार जा० यावत् प० पर्युपासना की ॥ १२८ ॥ अ० अयंपुल गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र आ० आजीविक उ०

त्तस्स अंबकूणगएडावणट्ठयाए एगंतमंते संगारं कुव्वंति तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते आजीवियाणं थेराणं संगारं पडिच्छइ, पडिच्छइत्ता अंबकूणगं एगंतमंते एडेइ ॥ १२७ ॥ तएणं से अयंपुले आजीवियउवासए जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासइ ॥ १२८ ॥ अयंपुलाति ! गोसाले मंखलिपुत्ते आजीवियउवासगं एवं वयासी

विक स्थविरोंने मंखलीपुत्र गोशाला को आम्र फल डाल देने के लिये संकेत किया. मंखली पुत्र गोशालाने आजीविक स्थविर का संकेत जानकर आम्र फल नीचे डाल दिया ॥ १२७ ॥ अब अयंपुल आजीविक उपासक मंखली पुत्र गोशाला की पास आया और उन को तीन वार आवर्त यावत् पर्युपासना करने लगा ॥ १२८ ॥ अब मंखली पुत्र गोशाला अयंपुल को ऐसा बोला कि अहो अयंपुल ! पूर्व रात्रि

उपासक को ए० ऐसा व० बोला अ०अयंपुल पु० पूर्वरात्रि में जा० यावत् ज०जहां म० मेरी अं०पास ते० वहां आ० आया से० अथ णू० शंकादर्शी अ० अयंपुल अ० अर्थ स० समर्थ हं० हां अ० है ॥ १२९ ॥ णो० नहीं ए० यह अ० आम्रफल अं० गुठलीसे ॥१३०॥ किं० कैसा सं०संस्थान वाले ह० हल तं० तथा व० वंशमुलं स० संस्थान वाले ह० हल प० मरूपे वी० वीणा वा० बजाइ ॥ १३१ ॥ त० तब से० वह

से णूणं अयंपुला ! पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि जाव जेणेव ममं अंतियं तेणेव हव्वमागए, सेणूणं अयंपुला ! अट्ठे समट्ठे ? हंता ! आत्थि॥ १२९॥तं णो खलु एस अंबकूणए अं- बचोयएणं एस॥ १३०॥किं संठिया हल्ला पण्णत्ता, तंजहा वंसीमूलसंठिया हल्ला पण्णत्ता। वीणं वाएहिरिवीरगा वी० २ ॥ १३१ ॥ तएणं से अयंपुले आजीवियउवासए

में कुटुम्ब जागरणा जागते हुए यावत् मेरी समीप आया है. तो क्या यह बात सत्य है ? हां सत्य है. ॥ १२९ ॥ यह आम्रफल गुठलि सहित नहीं है, प्रत्येक को ग्रहण करने योग्य है. यह आम्र नहीं है परंतु आम्र की छाल है. इस तीर्थंकर को निर्वाण अवसर में लेना कल्पता है ॥ १३० ॥ अब किस संस्थानवाला हल्ला कहा ? इस प्रश्न का उत्तर वांश के मूल के संस्थानवाले हल्ला कहे हैं. फीर उन्माद के वश से 'वीणा बजाइ, अरे भाइ वीणा बजाइ' यों दो वार कहा. और अयंपुलने सुना. परंतु उन के मन को कारण उत्पन्न हुवा नहीं, क्यों कि जो मोक्ष जावे वे वैसा करे ॥ १३१ ॥ अब इस आजीविक उपासक

आजीविक उ० उपासक गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र को इ० यह ए० ऐसा वा० प्रश्न वा० कहाया हुआ ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् हि० आनंदित मं० मंखली पुत्र को वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर प० प्रश्न पु० पुछकर अ० अर्थ प० ग्रहण किये प० ग्रहण कर उ० उठकर गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र को वं० वंदना ण० नमस्कार कर जा० यावत् प० पीछा गया ॥ १३२ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र अ० स्वतः का म० मरण आ० जानकर आ० आजीविक थे० स्थविरों को स० बोला

गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं इमं एयारूवं वागरणं वागारिएसमाणे हट्ठ तुट्ठ जाव हियए मंखलिपुत्तं वदइ णमंसइ २ पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छइत्ता, अट्ठाइं परियादियइ, परियादियइत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठइत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं वंदइणमंसइ वं० २ त्ता जाव पडिगए ॥ १३३ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते अप्पणो मरणं आभोएइ, आभोएइत्ता आजीवियथेरे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया !

को मंखली पुत्र गोशालाने ऐसा उत्तर दिया जिस से वह हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवा और वंदना नमस्कार कर उस ने प्रश्न पूछे. प्रश्न पूछकर अर्थ ग्रहण किये फीर अपने स्थान से उठकर मंखलीपुत्र गोशाला को वंदना नमस्कार कर यावत पीछा गया ॥ १३२ ॥ अब मंखलीपुत्र गोशालाने अपना मरण जानकर आजीविक स्थविर को बोलाये और ऐसे बोले कि अहो देवानुप्रिय ! जब मुझे मृत्यु प्राप्त हुवा जानो तब

कर ए० ऐसे व० बोले तु० तुम दे० देवानुप्रिय म० मुझे का० कालगत जा० जानकर सु० सुगंधित ग० गंधोदक से ण्हा० स्नान कराना प० पक्ष्म सु० सुकुमार गं० गंध का० काषाय से गा० गात्रों को लू० पूंछकर स० अच्छा गो० गोशीर्ष गा० गात्रों को अ० लींपना म० महर्घ्य हं० हंस लक्षणवाले प० पट सा० साडी नि० डालना स० सर्वालंकार से वि० विभूषित क० करना पु० पुरुषसहस्र से व० वहनकराती सी० पालखी में दु० बैठाना सा० श्रावस्ती ण० नगरीमें सिं० शृंगाटक जा० यावत् प० पथ में म० बडे स० शब्दसे उ० उद्घोषणा करते ए० ऐसा व० बोलना ए० ऐसा दे० देवानुप्रिय गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र जि० जिन जि० जिन

ममं कालगयं जाणित्ता सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाहेह सु० २ पम्हलसुकुमालए गंध कासाइए गायाइं लूहेह गा० २ सरसेणं गोसीसेणं गायाइं अणुलिंपह, स० २ महरिहं हंसलक्खणं पडसाडगं नियंसेह मह २, सव्वालंकार विभूसियं करेह, स० २ त्ता, पुरिससहस्सवाहिणीसीयं दुरूहेह पु० २ त्ता, सावत्थीए णयरीए सिंघाडग जाव पहेसु महयासद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वंदह एवं खलु देवाणुप्पिया

सुगंधित पानी से मुझे स्नान कराना, पक्ष्म समान सुकोमल कषाय रंगवाले वस्त्र से गात्रों को स्वच्छ करना, सरस गोशीर्ष चंदन से गात्रों को लेपन करना, बहुत मूल्यवाला व हंस समान श्वेत वस्त्र पहिनाना, सर्वालंकार से विभूषित करना, सहस्र पुरुष वाहिणी शिबिका पर बैठाना, और श्रावस्ती नगरी के शृंगाटक

प० प्रकाश मान वि० विचर कर इ० इस ओ० अवसर्पिणी में च० चौवीस ति० तीर्थंकरों में च० चरिम ति० तीर्थंकर सि० सिद्ध जा० यावत् स० सव दुःख प० रहित इ० ऋद्धि स० समुदाय से म० मेरा स० शरीर का णी० नीहारन क० करना ॥ १३३ ॥ त० तव ते० वे आ० आजीविक थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र का ए० यह अर्थ वि० विनय से प० सुना ॥ १३४ ॥ त० तव त० उस गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र को स० सात रात्रि प० परिणमते प० प्राप्त होते स० सम्यक्त्व अ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा णो० नहीं अ० मैं जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत्

गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमे तित्थगरे सिद्धे जाव सव्वदुक्ख-प्पहीणे ॥ इड्ढी सक्कारसमुदएणं ममं सरीरगस्स णीहरणं करेह ॥ १३३ ॥ तएणं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥१३४॥ तएणं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि पडिलद्ध सम्म

यावत् महापथ में वडे २ शब्दों से ऐसा बोलना कि अहो देवानुप्रिय! मंखली पुत्र गोशाला जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द का प्रकाश करते हुवे विचर कर इस अवसर्पिणी के चौवीस तीर्थंकरों में चरिम तीर्थंकर सिद्ध बुद्ध यावत् सब दुःख के अंतकर्त्ता हुए. और ऋद्धि सत्कार समुदाय से मेरा शरीर का निहारन करना ॥ १३३ ॥ आजीविक स्थविरोंने मंखलीपुत्र गोशाला की इस बात विनय पूर्वक अंगीकार की ॥ १३४ ॥ अव मंखलीपुत्र गोशाला को सात रात्रिपरिणमते हुए सम्यक्त्व की प्राप्ति हुइ

जि० जिन शब्द प० प्रकाश करता वि० विचरता हूं अ० मैं गो० गोशाला मंखली पुत्र स० श्रमण घातक स० श्रमण को मारने वाला स० श्रमण का प० प्रत्यनीक आ० आचार्य उ० उपाध्याय को अ० अपयश का० करने वाला अ० अवर्ण करने वाला अ० अकीर्ति करने वाला व० बहुत असद्भाव मि० मिथ्यात्व के अ० अभिनिवेश से अ० आत्मा को प० अन्य को त० दोनों को वु० व्युदग्राह्यमान वु० व्युत्पाद्यमान वि० विचरने को स० स्वतःके ते० तेज से अ० पराभव अं० अंदर स० सात रात्रि में पि०

त्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था णो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ, अहं गोसाले मंखलिपुत्ते समणघायए समण मारए समण पडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए, बहूहिं असब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहिय अप्पाणंवा परंवा तदुभयंवा वुग्गाहेमाणे वुप्पाएसमाणे विहरित्ता, सएणं तेएणं अणाइट्ठे समाणे अंतो सत्तरत्तस्स पित्तजरपरिगय-

और ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुवा कि मैं जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द का प्रलाप करके विचरनेवाला नहीं हूं. मैं मंखली पुत्र गोशाला श्रमण की घात करनेवाला, श्रमण को मारनेवाला, श्रमण का शत्रु, आचार्य उपाध्यायका अपयश करनेवाला, अवर्णवाद करनेवाला व अकीर्ति करनेवाला हूं, और बहुत असद्भाव मिथ्यात्वाभिनिवेश से स्वतः को, अन्य को, व उभय को व्युदग्राह्यमान व व्युत्पाद्यमान

पित्तज्वर प० परिगत स० शरीर वाला दा० दाह सहित छ० छद्मस्थ में का० काल क० करूंगा स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् जि० जिन शब्द प० प्रकाश करते वि० विचरते हैं ॥ १३४ ॥ ए० ऐसा से० विचार करके आ० आजीविक थे० स्थविर को बोलाये स० बोला कर उ० ऊंचनीच स० शपथ प० किया ए० ऐसा व० बोला णो० नहीं अ० मैं जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् प० प्रकाश करता वि० विचरता हूं अ० मैं गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र स० श्रमण घातक जा० यावत्

सरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थेचेव कालं करेस्सं ॥ समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ, ॥ १३४ ॥ एवं संपेहेइ, संपेहेइत्ता आजीवियथेरे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता उच्चावयं सवहस्सावि पकरेइ, पकरेइत्ता एवं वयासी णो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी जाव पगासमाणे विहरइ, अहं गोसाले मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालं करेस्सं ॥ समणे भगव महावीरे

करता हुवा विचर कर अपने तेज से पराभव पाया हुवा पित्तज्वर सहित शरीरवाला दाहसहित छद्मस्थपना में सात रात्रि में काल करूंगा और श्रमण भगवंत महावीर जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द प्रकाशमान करते हुवे विचरते हैं ॥ १३४ ॥ ऐसा विचार कर आजीविक स्थविरों को बोलाये और ऊंच नीच देवगुरु संबंधी शपथ कराकर ऐसा बोला मैं जिन जिन प्रलापी नहीं हूं यावत् जिन शब्द का प्रकाश करता

छद्मस्थ में का० काल क० करूँगा स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् जि० जिन शब्द प० प्रकाश करते वि० बिचरते हैं ते० इसलिये तु० तुम दे० देवानुप्रिय म० मुझे का० काल गया हुवा जा० जानकर वा० बांये पा० पांव सुं० रस्सी बं० बांधना ति० तीन वार मु० मुख में उ० थूंकना सा० श्रावस्ती ण० नगरी में सिं० शृंगाटक जा० यावत् प० पथ में आ० इधर उधर क० करते म० बडे २

जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ, तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! ममं कालगयं जाणित्ता वामपाएसुंवेण बंधह, वा २ त्ता तिक्खुत्तो मुहे उड्डुभहति २ त्ता, सावत्थीए णयरीए सिंघाडग जाव पहेसु आकड्ढविकड्ढिं करेमाणे महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वदह णो खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्प-

हुवा नहीं विचरता हूं. मैं मंखलीपुत्र गोशाला श्रमण की घात करनेवाला यावत् छद्मस्थ में ही काल करूंगा. श्रमण भगवंत महावीर स्वामी जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द प्रकाश करते हुवे विचरते हैं इस से अहो देवानुप्रिय ! मेरे काल हुवे पीछे मेरा बांया पांव रस्सी से बांधकर तीन वक्त मुंह में थूंकना. फीर श्रावस्ती नगरी में शृंगाटक यावत् महापथ में घसीट कर ले जाते हुवे बडे २ शब्द से ऐसी उद्घोषणा करना कि अहो देवानुप्रिय ! मंखली पुत्र गोशाला जिन व जिन प्रलापी नहीं है यावत् जिन शब्द प्रकाश करता हुवा नहीं विचरता है. परंतु वह मंखली पुत्र गोशाला श्रमण की घात करनेवाला

स० शब्द से उ० उद्घोषणा करते ए० ऐसा व० बोलना णो० नहीं दे० देवानुप्रिय गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् वि० विचरता ए० यह गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र स० श्रमण घा० घातक जा० यावत् छ० छद्मस्थ में का० काल प्राप्त हुवा ॥ १३८ ॥ त० तब ते० वे आ० आजीविक थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र को का० काल प्राप्त जा० जानकर हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी के कुं० कुंभकार शाला के दु० द्वार पि० ढके हा० हालाहला कुं० कुंभकारी

लावी जाव विहरइ ॥ एसणं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए ॥ समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ आणिड्ढी असक्कार समुदएणं ममं सरीरंगस्स नीहरणं करेज्जह, एवं वदित्ता कालगए ॥ १३५ ॥ तएणं ते आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं कालगयं जाणित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवाराइं पिहेंति २ त्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभका-

यावत् छद्मस्थपना में काल धर्म को प्राप्त हुवा है. श्रमण भगवंत महावीर जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द प्रकाश करते हुवे विचरते हैं. और विना ऋद्धि, सत्कार व सन्मान से मेरे शरीर का निहारन करना. ऐसा बोलकर काल कर गया ॥ १३५ ॥ अब आजीविक स्थविरोंने मंखली पुत्र गोशाला को मृत्यु प्राप्त हुवा जानकर हालाहला कुंभकारिणी की कुंभकारशाला के द्वार बंध किये. और कुंभकारशाला

की कुं० कुंभकार शाला के व० बहुत म० मध्यभाग में सा० श्रावस्ती ण० नगरी की आ० आलेखना की गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र का वा० बांया पा० पांव सु० सूत्र से बं० बंधा ति० तीन वार मु० मुख में उ० थूंका सा० श्रावस्ती ण० नगरी में सिं० शृंगाटक जा० यावत् प० पथ में आ० इधर उधर क० करते णी० नीच स० शब्द से उ० उद्घोषणा क० करते ए० ऐसा व० बोला णो० नहीं दे० देवानु-

रावणस्स बहुमज्झदेसभाए सवात्थं णयरिं आलिहंति २ त्ता, गोसालस्स मंखलिपु-त्तस्स सरीरगं वामे पादे सुंबेणं बंधंति तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभहंतिं २ त्ता सावत्थीए णयरीए सिंघाडग जाव पहेसु आकड्ढविकड्ढिं करेमाणे णीयं सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी णो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव

की मध्य बीच में श्रावस्ती नगरी का चित्र नीकाला. पश्चात् मंखली पुत्र गोशाला का बांया पांव रस्सी से बांधा और तीन वार उस के मुख में थुंके. पाछे श्रावस्ती नगरी के शृंगाटक यावत् महापथ में इधर उधर घसीट कर नीचे शब्दों से उद्घोषणा करते हुवे ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! मंखली पुत्र गोशाला जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द प्रकाश करता हुवा नहीं विचरता था. यह मंखली पुत्र गोशाला श्रमण की घात करनेवाला यावत् छद्मस्थपना में ही काल कर गया है. श्रमण भगवंत महावीर जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द प्रकाश करते हुवे विचरते हैं. इस तरह शपथ मुक्त होकर दूसरी वक्त

प्रिय गो० गोशाला मं० मंखलीः पुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् वि० विचरने को ए० यह गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र स० साधु का घातक जा० यावत् छ० छद्मस्थ में का० कालगत स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् वि० विचरते हैं स० शपथ से प० छूटने का क० करके दो० दूसरी वक्त पू० पूजा स० सत्कार थि० स्थिर क० करने को गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र को वा० वाये पांव से मु० छोडकर हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी की कुं० कुंभकार शाला में दु० द्वारकपाट अ० खोलकर गो० गोशाला मं० मंखलपुत्र के स० शरीर को सु० सुगंधित गं० गंधोदक से ण्हा० स्नान कराया तं० वैसे ही म० बडी इ० ऋद्धि स० सत्कार स० समुदय

विहरिए ।। एसणं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए ।। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, सवहपडिमोक्खणगं करेंति, करेंतित्ता, दोचंपि पूयासक्कारथिरीकरणट्ठयाए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुंबेयंति २ त्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवारवयणाइं अवगुणंति २ त्ता, गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेंति तंचेव

पूजा सत्कार व सन्मान के लिये मंखलीपुत्र गोशाला के वांये पांव से रस्सी छोडकर हालाहला कुंभकारिणी के कुंभकारशाला के द्वार खोल दिये. मंखली पुत्र गोशाला के शरीर को सुगंधित पानी से

से गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र के स० शरीर का णी० निहारन क० किया ॥ १३७ ॥ तं० तब स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर अ० अन्यदा कदापि सा० श्रावस्ती ण० नगरी से को० कोष्टक चे० उद्यान में से पं० नीकलकर व० बाहिर ज० जनपद में विं० विचरने लगे ॥ १३८ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में मिं० मिंढिक ग्राम ण० नगर हो० था व० वर्णन योग्य त० उस मिं० मिंढिक ग्राम ण० नगर की ब० बाहिर उ० ईशान कौन में ए० यहां सा० शाल को० कोष्टक चे० उद्यान

जाव महया महया इड्ढीसक्कार समुदएणं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स णीहरणं करेंति ॥ १३७ ॥ तएणं समणे भगवं महावीर अण्णयाकयाइं सावत्थीओ णयरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता बाहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ १३८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं मिंढियगामे णामं णयरे होत्था, वण्णओ तस्सणं मिंढियगामस्स णयरस्स बाहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थणं

स्नान कराया यावत् बहुत २ ऋद्धि सत्कार समुदाय से मंखली पुत्र गोशाला के शरीर का निहारन किया ॥ १३७ ॥ उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी अन्यदा कदापि श्रावस्ती नगरी के कोष्टक उद्यान में से नीकलकर बाहिर जनपद विहार विचरने लगे ॥ १३८ ॥ उस काल उस समय में मिंढिक ग्राम नामक नगर था. उस का वर्णन चंपा नगरी जैसे जानना. उस मिंढिक ग्राम नगर की बाहिर ईशान

हो० था व० वर्णन योग्य पु० पृथ्वी शिलापट्ट त० उस सा० शाल कोष्टक चे० उद्यान की अ० पास ए० यहां म० बडा मा० मालुय कच्छ हो० था कि० कृष्ण कि० कृष्णानभास जा० यावत् नि० निकुरुंबभूत प० पत्रवाले पु० पुष्पवाले फ० फलवाले ह० हरे रि० शोभायमान सि० लक्ष्मी से अ० अतीव उ० शोभते हुवे चि० था ॥ १३८ ॥ त० उस में० मिंढिक ग्राम ण० नगर में रे० रेवती गा० गाथापति की स्त्री प० रहनीथी अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूता ॥ १३९ ॥ त० तब

सालकोट्टए चेइए होत्था, वण्णओ. पुढवीसिलापट्टओ तस्सणं सालकोट्टगस्स चेइयस्स अदूरसामंते एत्थणं महेगे मालुयाकच्छएयावि होत्था किण्हे किण्होभासे जाव निकुरुंबभूए पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव २ उवसो-भेमाणे २ चिट्ठइ ॥ १३८ ॥ तत्थणं मेंढियगामे णयरे रेवतीणामं गाहावइणी परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया ॥ १३९ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया

कौन में शाल कोष्टक नाम का उद्यान था. वह वर्णन युक्त था. वहां पर पृथ्वी शिलापट्ट था. उस शाल-कोष्टक उद्यान की पास मालुका नामक कच्छ (वृक्षों का समुह) था. वह कृष्ण, कृष्णावभास यावत् निकुरुंबभूत पत्र, पुष्प, फल और हरित से अतीव शोभता हुवा था ॥ १३८ ॥ उस मिंढिक ग्राम नगर में रेवती नामक गाथापतिनी रहती थी. वह ऋद्धिवंत यावत् अपरिभूता थी ॥ १३९ ॥ अब एकदा श्री

स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर अ० अन्यदा कदापि पु० पुर्वानुपूर्वी च० चलते जा० यावत् जे० जहां में० मेंढिक ग्राम ण० नगर जे० जहां सा० शालकोष्टक चे० उद्यान जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगइ ॥ १४० ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर के स० शरीर में वि० विपुल रो० रोगांतक पा० उत्पन्न हुवा उ० उज्वल जा० यावत् दु० दुःसह पि० पित्तज्वर से प० परिगत स० शरीर वाला द० दाह से व० व्युत्क्रान्त वि० विचरतेथे अ० अपिच लो० रुधिर प० मल प० करके च० चारों व० वर्ण वा० बोले स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र के त०

कयाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव मिंढियगामे णयरे जेणेव सालकोट्ठए चेइए चेव जाव परिसा पडिगया ॥ १४० ॥ तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायंके पाउब्भूए उज्जले जाव दुरहियासे पित्तज्जरपरिगये सरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ, अवियाइं लोहियवच्चाइंपि पकरेइ, चाउवण्णं वागरेइ, एवं खलु समणे भगवं महावीरे गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं अणाइट्ठे

श्रमण भगवंत महावीर पूर्वानुपूर्वि चलते यावत् ग्रामानुग्राम विचरते मिंढिय ग्राम नगर के शाल कोष्टक उद्यान में पधारे यावत् परिषदा पीछी गइ ॥ १४० ॥ अब महावीर स्वामी के शरीर में विपुल रोगांतक उत्पन्न हुवा वह उज्वल यावत् सहन नहीं होसके वैसा हुवा. शरीर में पित्तज्वर परिणमगया, दाह होने लगा और रुधिर का

तपतेज से अ० पराभव पाया हुवा अं० अंदर छ० छमास में पि० पित्तज्वर प० परिगत शरीरवाला दा० दाह व्युत्क्रान्त छ० छद्मस्थ में का० काल क० करेंगे ॥ १४१ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर के अं० शिष्य सी० सिंह अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत मा० मालुया कच्छ की अ० पास छ० छट्ठछट्ठ के अ० निरंतर उ० ऊर्ध्व बा० बाहा से जा० यावत् वि० विचरताथा त० तब त० उस सी० सिंह अ० अनगार को झा० ध्यान में व० रहते अ०

समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगय सरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थेचेव कालं करेस्संति ॥ १४१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सीहे णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूर सामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं २ उड्ढं बाहाओ जाव विहरइ ॥ १४२ ॥ तएणं तस्स सीहस्स अणगारस्स ज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था

मन्न भी करने लगे. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र ये चारों वर्ण ऐसा बोलने लगे कि मंखलीपुत्र गोशाला के तप तेजसे पराभव पाये हुवे महावीर स्वामी पित्तज्वर व दाहसे छ मासमें काल करेंगे॥१४१॥उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर के अंतेवासी प्रकृति भद्रिक यावत् प्रकृति विनित सीहा नामक अनगार मालुयाकच्छ की पास निरंतर छठ२की तपस्या करते हुवे ऊर्ध्व बाहा यावत् विचरते थे ॥१४२॥

यह ए० ऐसा जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे म० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर के स० शरीर में वि० विपुल रो० रोगांतक पा० हुवा उ० उज्वल जा० यावत् छ० छद्मस्थ में का० काल क० करेंगे व० बोलेंगे अ० अन्य तीर्थिक छ० छद्मस्थ में का० काल किया इ० इस ए० ऐसा म० बडा म० मन का मा० मानसिक दु० दुःख से अ० पराभूत आ० आतापना भू० भूमि से प० आकर जे० जहां मा० मालुया कच्छ ते० वहां उ० आकर मा० मालुयाकच्छ में अं० अंदर

एवं खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायंके पाउब्भूए उज्जले जाव छउमत्थेचेव कालं करेस्सइ ॥ वदिस्संति यणं अण्णउत्थिया छउमत्थचेव कालगए। इमेणं एयारूवेणं महया मणो माणसिएणं दुक्खेणं अभिभूएसमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ पच्चोरुभइत्ता जेणेव मालुयाकच्छए, तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मालुयाकच्छयं अंतो २ अणुप्पविसइ, अणुप्प-

उस सीहा अनगार को ध्यान करते २ ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुवा कि मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक के शरीर में विपुल रोग उत्पन्न हुवा है यावत् छद्मस्थपना में ही काल करेंगे, और अन्यतीर्थिक कहेंगे कि छद्मस्थ में काल कर गये, इस तरह मन में मानसिक दुःख से पराभव पाये हुवे आतापना भूमि में से

अ० पैठे अ० पैठकर म० बडे २ स० शब्द से कु० कुहु प० रुदन किया ॥ १४३ ॥ आ० आर्य स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ को आ० आमंत्रण कर ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसा अ० आर्य म० मेरा अं० शिष्य सी० सिंह अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक त० तैसे स० सब भा० कहना जा० यावत् प० रुदन किया तं० इसलिये ग० जाओ अ० आर्य तु० तुम सी० सिंह अ० अनगार को अ० बोलावो ॥ १४४ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ स० श्रमण भ० भगवंत म०

विसइत्ता, महया महया सद्देणं कुहुकुहुस्स परुण्णे ॥ १४३ ॥ अज्जोत्ति, समणे भगवं महावीरे समणे णिग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी एवं खलु अज्जो ! ममं अंतेवासी सीहे णामं अणगारे पगइभद्दए तंचेव सव्वं भाणियव्वं जाव परुण्णे तं गच्छहणं अज्जो ! तुब्भे सीहं अणगारं सद्दह ॥१४४॥ तएणं ते समणा णिग्गंथा

नीकलकर मालुका कच्छ में आये. वहां प्रवेश किया और बडे २ शब्द से रुदन करने लगे ॥ १४३ ॥ श्रमण भगवंत महावीरने श्रमण निर्ग्रंथों को बोलाकर ऐसा कहा कि अहो आर्यों ! मेरा अंतेवासी प्रकृति भद्रिक यावत् प्रकृति विनीत सीहा अनगार मालुया कच्छ में यावत् रुदन कर रहा है इसलिये अहो आर्यो ! तुम जाओ और सीहा अनगार को बोलावो ॥ १४४ ॥ महावीर स्वामी के ऐसा कहने पर

महावीर से ए० ऐसा वु० कहाये हुवे स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को व० वंदनाकर ण० नमस्कार कर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० पास के सा० शालकोष्टक चे० उद्यान में से प० नीकलकर जे० जहां मा० मालुया कच्छ जे० जहां सी० सिंह अ० अनगार त० वहां उ० आकर सी० सिंह अ० अनगार को ए० ऐसा व० बोले सी० सिंह त० तुझे ध० धर्माचार्य स० बोलाते हैं ॥ १४५ ॥ त० तब सी० सिंह अ० अनगार स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थों की स० साथ मा० मालुका क० कच्छ में

समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तासमाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वं० २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ सालकोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमंतित्ता जेणेव मालुया कच्छए जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता सीह अणगार एवं वयासी सीहा ! तव धम्मायरिया सद्दावेइ ॥ १४५ ॥ तएणं सीहे अणगारे समणेहिं णिग्गंथेहिं सद्धिं मालुया कच्छयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे

श्रमण निर्ग्रंथ महावीर स्वामी की पास कोष्टक उद्यान में से नीकलकर मालुया कच्छ में सीहा अनगारकी पास गये. और उन को बोले अहो सीहा ! तुझे धर्माचार्य धर्मोपदेशक बोलाते हैं ॥ १४५ ॥ उस समय में सीहा अनगार श्रमण निर्ग्रंथों की साथ मालुया कच्छ में से नीकलकर श्रमण भगवंत महावीर

से प० नीकलकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० तहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को ति० तीनवार आ० आवर्त जा० यावत् प० पर्युपासना की ॥ १४६ ॥ सी० सिंह स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर सी० सिंह अ० अनगार को ए० ऐसे व० बोले से० अथ णू० शंकादर्शी सी० सिंह झा० ध्यान में व० रहते अ० यह ए० ऐसा जा० यावत् प० रुदन किया से० अथ ते० तुझे सी० सिंह अ० अर्थ स० योग्य हं० हां अ० है ॥ १४७ ॥ तं० इसलिये णो० नहीं सी० सिंह

तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं २ जाव पज्जुवासइ ॥ १४६ ॥ सीहादि ! समणे भगवं महावीरे सीहं अणगारं एवं वयासी-स णूणं सीहा ! ज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे जाव परुण्णे, से णूणं तें सीहा ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥ १४७ ॥ तं णो खलु सीहा !

स्वामी की पास आये और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को तीन वार हस्त जोडकर प्रदक्षिणा देकर वंदना नमस्कार किया यावत् पर्युपासना की ॥ १४६ ॥ श्रमण भगवंत महावीरने सीहा अनगार को कहा कि अहो सीहा ! तुझे ध्यान करते ऐसा अध्यवसाय हुवा यावत् रोने लगा तो क्या यह बात सत्य है ? हां भगवन् ! यह बात सत्य है ॥ १४७ ॥ अहो सीहा ! मंखली पुत्र गोशाला के तपतेज से पराभव

गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र के त० तपतेज से अ० पराभव पाया अं० अंदर छ० छमास के जा० यावत् का० काल क० करूंगा अ० मैं अ० अन्य सो० सोलह वा० वर्ष जि० जिन सु० सुखार्थी वि० विचरूंगा ॥ १५८ ॥ तं० इसलिये ग० जा तु० तुम सी० सिंह मिं० मिंढक ग्राम ण० नगर में रे० रेवती गा० गाथापति की पत्नि के गि० गृह त० वहां रे० रेवती गा० गाथापतिनी ने म० मेरेलिये दु० दो क० कपोत (वनस्पति विशेष) उ० बनाया ते० उस से णो० नहीं अ० प्रयोजन अ० है अ० अन्य पा० भूतकाल का म० मार्जार (वनस्पति विशेष अथवा वात विशेष) कु० कुर्कुटमांस (वनस्पति विशेष) त० उसे

गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं अणाइट्ठे समाणे अंतो छण्हमासाणं जाव कालं करेस्सं अहंण अण्णाइं सोलसवासाइं जिणसुहत्थी विहरिस्सामि ॥ १४८ ॥ तं गच्छहणं तुमं सीहा! मिंढिय गामं णयरं रेवतीए गाहावइणीए गिहे, तत्थणं रेवतीए गाहावईए मम अट्ठाए दुवे कवोयसरीरा उवक्खडिया तेहिं णो अट्ठो अत्थि ॥ से अण्णे पारियासि मज्जार

पाया हुवा मैं छ मास में यावत् काल नहीं करूंगा परंतु सोलह वर्ष पर्यंत जिन बनकर विचरूंगा ॥१५८॥ अहो सीहा! तू मिंढिय ग्राम नगर में रेवती गाथापतिनी के गृह जा, वहां पर रेवती गाथापतिनीने दो कपोत शरीर मेरे लिये बनाये हैं; इस का यहां मतलब नहीं है अर्थात् वह मत लाना. परंतु जो अन्य के

ओ० लाव ते० उसमे अ० प्रयोजन ॥ १४९॥ त० तब सी० सिंह अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर से ए० ऐसा वु० कहाया हुवा ह० हृष्टतुष्ट जा० यावत् हि० आनंदित म० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर अ० त्वरारहित अ० चपलता रहित अ० संभ्रांत

कडए कुक्कुडमंसए तमाहराहि, तेणं अट्ठो ॥ १४९ ॥ तएणं सीहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठे जाव हियए समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, व० २ अतुरिय मचवल मसंभंतं मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेइत्ता जाव गोयम सामी जाव जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवाग-च्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता समण-

लिये मार्जार (वायु विशेष) को उपशमाने के लिये कुक्कुड मांस बनाया है उसे लाना + ॥ १४९ ॥ जब महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब सीहा अनगार हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुए. और श्रमण

+ यहां पर कपोत का अर्थ कपोत जैसे आकारवाले बिजोरे का फल जानना. क्यो कि वर्ण स्वधर्मपना से इसे ग्रहण किया है. और कुक्कुड मास का अर्थ कोले का गिर जानना. मार्जारका कितनेक वायुविशेष अर्थ करते हैं उस का उपशम के लिये बनाया हुवा; और कितनेक मार्जार एक वनस्पति विशेष मानते हैं इसलिये इस वनस्पति विशेष से बनाया हुवा.

रहित मु० मुख वस्त्रि का प० प्रतिलेख कर ज० जैसे गो० गौतम स्वामी जा० यावत् जे० जहां स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर तं० वहां उ० आकर रे० रेवती गा० गाथापतिजी के गि०गृह में अ० प्रवेश किया शेष सरल ॥ १५० ॥ त० तब से० वह र०रेवती गा० गाथापतिनी सी० सिंह अ०अनगार को ए० आताहुवा पा० देखकर ह० हृष्टतुष्ट खि० शीघ्र आ० आसन से अ० खडीहुइ सी० सिंह अ० अनगार की स० सात आठ प० पांव अ० सन्मुखगइ ति० तीनवार आ० आवर्त प० प्रदक्षिणा वं० वंदनाकर ण०

स्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ सालकोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता अतुरिय जाव जेणेव मिंढियगामे णयरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता रेवई गाहावइणीए गिहे अणुप्पविट्ठे ॥ १५० ॥ तएणं सा रेवई गाहावइणी सीहं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासइत्ता हट्ठतुट्ठ खिप्पामेव आस-

भगवंत को वंदना नमस्कार कर शीघ्रता व चपलता रहित मुखपति की प्रतिलेखना कर गौतम स्वामी जैसे श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आये और वंदना नमस्कार कर शालकोष्टक उद्यान में से नीकलकर शीघ्रता व चपलता रहित मिंढिक ग्राम नगर में रेवती गाथापतिनी के गृह आये और उस में प्रवेश किया ॥ १५० ॥ रेवती गाथापतिनी सीहा अनगार को आते हुए देखकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुइ और सीहा अनगार की सन्मुख सात आठ पांव गइ. तीन वार हस्त जोडकर वंदना नमस्कार कर

नमस्कार कर ए० ऐसे व० बोली सं० कहो दे० देवानुप्रिय कि० क्या आ० आने का प० प्रयोजन त० तब से० वह सी० सिंह अ० अनगार रे० रेवती गा० गाथापतिनी को ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे तु० तुमने दे० देवानुप्रिये स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर के लिये दु० दो क० कपोत स० शरीर उ० तैयार किये ते० उस से णो० नहीं अ० मतलब अं० है ते० उन अ० अन्य प० भूतकाल में म० मार्जार कृत कु० कुर्कुटमांस तं० उसे आ० लावो ते० उस से अ० प्रयोजन ॥ १५० ॥ त० तब सा० वह रे०

णाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता सीहं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छइत्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदइ णमंसइ वं० २ त्ता, एवं वयासी संदिसंतुणं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोयणं ? तएणं से सीहे अणगारे रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी-एवं खलु तुम्हे देवाणुप्पिए ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठाए दुवे कवोयसरीरा उवक्खडिया तेहिं णो अट्ठो, अत्थि ते अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए तमाहराहि तेणं अट्ठो ॥ १५१॥ तएणं सा रेवती गाहावइणी सीहं

ऐसा बोली कि अहो देवानुप्रिय ! आपका आने का क्या प्रयोजन है ? तब सीहा अनगार रेवती गाथा-पति की पत्नि को ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! तुमने श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के लिये दो कपोत शरीर (बीजोरे) बनाये हैं. उस से मुझे मतलब नहीं है, परंतु वायु का उपशमके लिये अन्य के

रेवती गा० गाथापतिनी सी० सिंह अ० अनगार को ए० ऐसा व० बोली के० कौन सी० सिंह से० वह णा० ज्ञानी त० तपस्वी जे० जिस से त० तेरा ए० यह अं० अर्थ म० मेरे र० रहस्यकृत अ० कहा ज० जिस से तु० तुम जा० जानतेहो ए० ऐसे ज० जैसे खं० स्कंदक जा० यावत् ज० जिस से अ० मैं जा० जानताहूं ॥ १५२ ॥ त० तब सा० वह रे० रेवती गा० गाथापतिनी सी० सिंह अ० अनगार की अं० पास से ए० यह आ० बात सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट जे० जहां भ० भोजन गृह

अणगारं एवं वयासी-केसणं सीहा से णाणीवा तवस्सीवा जेणं तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकए हव्व मक्खाए ? जओणं तुमं जाणासि ? एवं जहा खंदए जाव जओणं अहं जाणामि ॥ १५२ ॥ तएणं सा रेवती गाहावइणी सीहस्स अणगारस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठा, जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छि-

निमित्त जो कोळापाक बनाया है उसे लेने को मैं आया हूं ॥ १५१ ॥ उस समय गाथापति की पत्नि रेवती बोली कि अहो सीहा ! ऐसा कौन ज्ञानी व तपस्वी है कि जिनोंने तुम को मेरा ऐसा गुप्त कार्य कहा कि जिस से तुम जानते हो ? वगैरह स्कंधक जैसे सब कहना यावत् मैं जानता हूं ॥ १५२ ॥ सीहा अनगार की पास से ऐसा सुनकर गाथापति की स्त्री रेवती हृष्ट तुष्ट हुइ और भोजन गृह की पास

ते० वहां उ० आइ प० पात्र मो० खोला जे० जहां सी० सिंह अ० अनगार ते० वहां उ० आकर सी० सिंह अ० अनगार के प० पात्र में तं० वह स० सब णि० डाला ॥ १५४ ॥ त० तत्र रे० रेवती गा० गाथापतिनी ते० उस द० द्रव्य शुद्ध से जा० यावत् दा० दान से सी० सिंह अ० अनगार प० प्रतिलाभित दे० देवता का आ० आयुष्य नि० बंधा ज० जैसे वि० विजय का जा० यावत् ज० जन्म जीवितफल रे० रेवती गा० गाथापतिनी का ॥१५५॥ त० तब सी० सिंह अ० अनगार रे० रेवती गा० गाथापतिनी

इत्ता पत्तगं मोएइ, जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता सीहस्स अणगारस्स पडिग्गहगंसि तं सव्वं सम्मं णिसिरइ ॥ १५४ ॥ तएणं रेवतीए गाहा-वइणीए तेणं दव्व सुद्धेणं जाव दाणेणं सीहे अणगारे पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे जहा विजयस्स जाव जम्मजीवियफले रेवईए गाहावइणीए रेवईए गाहावइ-णीए ॥ १५५ ॥ तएणं सीहे अणगारे रेवतीए गाहावइणीए गिहाओ पडिणिक्ख-

आकर पात्र खोला. फीर सीहा अनगार की पास आकर सीहा अनगार के पात्र में सम्यक् प्रकार से सब डाल दिया ॥ १५४ ॥ अब गाथापति की स्त्री रेवतीने द्रव्य शुद्ध यावत् दान दिया और सीहा अनगारने प्रतिलाभा तब विजय गाथापति की समान पांच द्रव्य प्रगट हुए यावत् धन्य है रेवती को कि जिसने जन्म जीवित सफल किया इस तरह लोगों कहने लगे ॥ १५५ ॥ पश्चात् सीहा अनगार

के गि० गृह से प० नीकलकर मिं० मिंढिक ग्राम ण० नगर की म० बीच में से णि० नीकलकर ज० जैसे गो० गौतम स्वामी जा० यावत् भ० भक्तपान प० बतलाकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर के पा० हस्त में तं० वह स० सब णि० रखा ॥ १५६ ॥ त० तव स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर अ० अमूछित जा० यावत् अ० तन्मय रहित वि० बिल जैसे प० सर्पभून अ० स्वतःने त० उस आ० आहार को स० शरीर में प० डाला ॥ १५७ ॥ त० तव स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को त० उत्त आ०

मइ२त्ता मिंढियागामं णयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता जहा गोयमसामी जाव भत्तपाणं पडिदंसेइ२त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स पाणिंसि तं सव्वं सम्मं णिसिरइ ॥ १५६ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अमुच्छिए जाव अणुज्झोववण्णे बिलमिवपण्णगभूएणं अप्पाणेणं तमाहारं सरीरकोट्ठंसि पक्खिवइ ॥ १५७ ॥

गाथापति की पत्नि रेवंती के गृह से नीकलकर मिंढिया नगर की बीच में होते हुवे गौतम स्वामी की तरह भगवंत को भक्तपान बतलाया और श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के हस्त में सब सम्यक् प्रकार से रखा. ॥ १५६ ॥ जैसे बिल में सर्प प्रवेश करता है वैसे ही श्रमण भगवंत महावीरने मूर्च्छा व लुब्धता रहित उस आहार को शरीर रूप कोठे में डाला अर्थात् आहार किया ॥ १५७ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी

आहार आ० करते वि० विपुल रो० रोगातंक खि० शीघ्र उ० उपशांत हुवा ह० हृष्ट जा० हुवे आ० आरोग्य ब० बलिष्ठ शरीर वाले तु० संतुष्ट हुवे स० साधु तु० संतुष्ट हुई स० साध्वियों सा० श्राविकाओं दे० देवता दे० देवियों स० देवसहित म० मनुष्य अ० असुर लोक ह० हृष्ट हुवा स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ह० हृष्ट ॥ १५८ ॥ भं० भगवन् ! भ० भगवंत गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदनाकर ण० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय के अं० शिष्य पु० पूर्वदिशा के

तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स तमाहारं आहारियस्स समाणस्स विपुले रोगा-यंके खिप्पामेव उवसंते, हट्टे जाए आरोग्गे बलियसरीरे, तुट्ठासमणा तुट्ठीओ समणीओ, तुट्ठा सावया तुट्ठीओ सावियाओ, तुट्ठा देवा, तुट्ठीओ देवीओ सदेवमणुयासुरेलोए हट्ठे जाए समणे भगवं महावीरे हट्ठे २ ॥१५८॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी

को ऐसा आहार करते शीघ्र ही उस रोग का उपशम होगया और वे हृष्ट यावत् आरोग्य व बलवंत बने. साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, देव व देवियों तुष्ट हुइ, देव, मनुष्य व असुर लोक के सब जीव आनंदित हुए कि श्रमण भगवंत हृष्ट हुए ॥ १५८ ॥ भगवान् गौतम श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! पूर्व देश के रहनेवाले आपके अंतेवासी सर्वानुभूति भद्रिक यावत् विनीत सर्वानुभूति अन-

जा० दे० एका स० सर्वानुभूति अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह भं० भगवन् त० उस समय गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र के त० तपतेज से भा० भस्म कराया क० कहां ग० गया क० कहां उ० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे गो० गौतम म० मेरा अं० शिष्य पा० पूर्वदिशा का स० सर्वानुभूति अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह त० तब गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र से भा० भस्मकराया उ० ऊर्ध्व चं० चंद्र सू० सूर्य जा० यावत् बं० ब्रह्म लं० लंतक म० महाशुक्र क० कल्प वी० छोडकर स० सहस्रार क० देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुवा त० वहां

पाईण जाणवए सव्वाणुभूईणामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए सेणं भंते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं भासरासीकिए समाणे कहिंगए कहिं उववण्णे ? एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूईणामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए सेणं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं भासरासीकरेमाणे उड्ढं चंदिमसूरिय जाव बंभलंतगमहासुक्के कप्पे वीईवइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उव-

गार मंखली पुत्र गोशाला से भस्म कराये हुवे काल के अवसर में काल करके कहां गये कहां उत्पन्न हुए? अहो गौतम ! मंखली पुत्र गोशाला से भस्म कराया हुवा मेरा अंतेवासी सर्वानुभूति अनगार चंद्र सूर्य यावत् ब्रह्म व लांतक देवलोक की ऊपर महा शुक्र देवलोक को उल्लंघ कर सहस्रार देवलोक में देवतापने

अ० कितनेक दे० देवों की अ० अठारह सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० कही त० उस में स० सर्वानुभूति दे० देव की अ० अठारह मा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी से० अत्र स० सर्वानुभूति देव ता० उस दे० देवलोक में आ० आयुष्यक्षय से जा० यावत् म० महाविदेह वा० क्षेत्र में सि० सीझेंगे जा० यावत् अं० अंत करेंगे ॥ १५९ ॥ ए० एसे दे० देवानुप्रिय के अं० शिष्य को० कोशल जा० देशका सु० सुनक्षत्र अ० अनगार प० प्रकृति भ० भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह भं०

वण्णे ॥ तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिईं पण्णत्ता, तत्थणं सव्वाणुभूईस्सावि देवस्स अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता,सेणं सव्वाणुभूई देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति ॥ १९ ॥ एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कोसल जाणवए सुणक्खत्ते-णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए सेणं भंते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं

उत्पन्न हुआ. उस में कितनेक देवताओं की अठारह सागरोपम की स्थिति कही. वहां पर सर्वानुभूति अनगार की अठारह सागरोपम की स्थिति कही. वह सर्वानुभूति देव वहां से आयुष्य, स्थिति व भव क्षय से चवकरके यावत् महाविदेह क्षेत्र में सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ १५९ ॥ अहो भगवन् ! आपके अंतेवासी प्रकृति भद्रिक यावत् विनित कोशल देश के सुनक्षत्र अनगार मंखली पुत्र

भगवन् त० तब गोशाला मं० मंखलीपुत्र के त० तपतेज से प० पीडित का० काल के अवसर में का० काल कर के क० कहां ग० गये क० कहां उ० उत्पन्न हुए ए० ऐसे गो० गौतम म० मेरा अं० शिष्य सु० सुनक्षत्र णा० नामक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० यह त० उस समय गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र के त० तपतेज से प० पिडित जे० जहां म० मेरी अं० पास ते० वहां उ० आकर वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर स० स्वयमेव पं० पांच म० महाव्रत आ० आचरकर स० साधु स० साध्वी को खा० खमाकर आ० आलोचना प० प्रतिक्रमणवाला स० समाधि सहित का०

तवेणं तेएणं परितात्रिए समाणे कालमासे कालंकिच्चा कहिंगए कहिंउववण्णे? एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी सुणक्खत्ते णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए सेणं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परितात्रिए समाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता वंदइ णमंसइ, वंदइत्ता णमंसइत्ता सयमेव पंचमह- व्वयाइं आरुहइ आरुहइत्ता समणाओ समणीओय खामेइ, आलोइय पडिक्कंते

गोशाला से दुःखित कराये हुवे काल के अवसर में काल करके कहां गये कहां उत्पन्न हुए ? अहो गौतम ! मेरा अंतेवासी सुनक्षत्र अनगार मंखली पुत्र गोशाला से परितापित हुवा मेरी पास आया और मुझे वंदना नमस्कार कर स्वयमेव पांच महाव्रत की आराधना कर साधु साध्वी को खमाकर आलोचना प्रतिक्रमण सहित काल के अवसर में काल करके चंद्र सूर्य की ऊंचे यावत् आणत प्राणत व आरण देवलोक को

काल के मा० अवसर में का० कालकर उ० ऊर्ध्व चं० चंद्र सू० सूर्य जा० यावत् आ० आणत पा० प्राणत क० देवलोक वी० उल्लंघ कर अ० अच्युत क० देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुवा त० वहां अ० कितनेक दे० देवता की वा० बावीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी त० वहां सु० सुनक्षत्र दे० देव की वा० बावीस सा० सागरोपम की से० शेष ज० जैसे स० सर्वानुभूति जा० यावत् अं० अंतकरेंगे ॥ १६० ॥ ए० ऐसे दे० देवानुप्रियका अं० अंतेवासी कु० कुशिष्य गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र से० वह भं० भगवन् का० काल के अवसर में का० काल करके क० कहां ग० गया क० कहां उ०

समाहिपत्ते कालमासे कालंकिच्चा उड्ढ चंदिम सूरिय जाव आणयपाणयारणकप्पे वीई वइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सुणक्खत्तस्सावि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं, सेसं जहा सव्वाणुभूइस्स जाव अंतं काहिति ॥ १६० ॥ एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्सं गोसाले णामं मखलिपुत्ते सेणं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे कालंकिच्चा कहिंगए कहिं उववण्णे ? एवं खलु

उल्लंघकर अच्युत देवलोक में देवतापने उत्पन्न हुए. वहां पर कितनेक देवताओं की बावीस सागरोपमकी स्थिति कही जिस में सुनक्षत्र देवकी भी बावीस सागरोपम की स्थिति कही, शेष सब सर्वानुभूति अनगार जैसे यावत् अंत करेंगे ॥ १६० ॥ अहो भगवन् ! आप का अंतेवासी कुशिष्य मंखली पुत्र गोशाला

उत्पन्न हुवा ए० ऐसे गो० गौतम म० मेरा अं० अंतेवासी कु० कुशिष्य गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र स० साधु की घातकरनेवाला जा० यावत् छ० छद्मस्थ में का० काल कि० करके ऊ० उर्ध्व चं० चंद्र सू० सूर्य जा० यावत् अ० अच्युत कल्प में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुवा त० उस में अ० कितनेक दे० देवों की बा० बावीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी त० उस में गो० गोशाला दे० देव की बा० बावीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ॥ १६१ ॥ से० अथ गो० गोशाला देव

गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले णामं मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थेचेव कालंकिच्चा उड्ढं चंदिम सूरिय जाव अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे ॥ तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं बावीस सगारोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं गोसालस्सवि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, ॥ १६१ ॥ सेणं भंते ! गोसाले

अर्थ

काल के अवसर में काल कर कहां गया कहां उत्पन्न हुवा ? अहो गौतम ! मेरा अंतेवासी कुशिष्य श्रमण की घात करनेवाला मंखली पुत्र गोशाला छद्मस्थपना में ही काल करके चंद्र सूर्य की ऊंचे यावत् अच्युत देव-लोक में देवतापने उत्पन्न हुवा. वहां कितनेक देवों की बावीस सागरोपम की स्थिति कही. इस में गोशा-ला देव की बावीस सागरोपम की स्थिति कही ॥ १६१ ॥ अहो भगवन् ! वह गोशाला देव आयुष्य क्षय

ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्यक्षय से जा० यावत् क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम इ० यहां जं० जम्बूद्वीप में भा० भरतक्षेत्र में वि० विंध्यगिरि पा० पादमूल में पुं० पुंड् ज० देश में स० शत-द्वार ण० नगर में सु० सुमति र० राजा की भ० भद्रा भ० भार्या की कु० कुक्षि में पु० पुत्रपने प० उत्पन्न हुवा से० वह त० वहां ण० नवमास ब० बहुत प० पतिपूर्ण जा० यावत् वी० व्यतीत होवे जा० यावत् सु० सुरूप दा० पुत्र प० उत्पन्न हुवा ॥१६२॥ जं० जिस र० रात्रि में से० वह दा० पुत्र प० उत्पन्न होगा तं० उस र० रात्रि में स० शतद्वार ण० नगर में स० आभ्यंतर बा० बाहिर भा० भारप्रमाण कुं०

देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे २ भारहेवास विंझगिरिपायमूले पुंडेसु जणावएसु सतदुवारे णयरे सुमइस्स-रण्णो भद्दाए भारियाए कुच्छिस पुत्तत्ताए पच्चायाहिति, सेणं तत्थ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव वीइक्कंताणं जाव सुरूवे दारए पच्चयाहिति ॥१६२॥ जं रयणिं चण से दारए पयाहिति तं रयणिंचणं सयदुवारे णयरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसोय

से यावत् कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! इस जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में विंध्यगिरी के पादमूल (तलेटी) में पुंड्र देश में शतद्वार नगर में सुमति राजा की भद्रा की कुक्षि में पुत्रपने उत्पन्न होगा. वहां सवानव मास व्यतीत हुए पीछे सुरूप बालक का जन्म होगा ॥ १६२ ॥ जिस रात्रि में पुत्र का जन्म होगा

कुंभ प्रमाण प० पद्म की वर्षा र० रत्नों की वर्षा भ० होगा ॥१६३॥ त० तब त० उस दा० पुत्र के अ० मातपिता ए० अग्यारहवा दि० दिन वी० व्यतीत होते जा० यावत् सं० प्राप्त बा० बारहवा दि० दिन अ० यह ए० ऐसा गो० गौण गु० गुणनिष्पन्न णा० नाम का० करेंगे ज० जिस से अ० हमारे इ० इस दा० पुत्र के जा० जन्म होते स० शतद्वार ण० नगर में स० अभ्यंतर बा० बाहिर जा० यावत् र० रत्न वर्षा हु० हुइ तं० इसलिये हो० होवे अ० हमारे इ० इस दा० पुत्र का णा० नाम म० महापद्म ॥ १६४ ॥

कुंभग्गसोय पउमवासेय रयणवासेय, वासिहिति ॥ १६३ ॥ तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते जाव संपत्ते बारसाहदिवसे अयमेयारूवं गोणं-गुणनिप्पणं णामधेज्जं काहिति जम्हाणं अम्हं इमांसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सतदुवारे णयरे सब्भिंतर बाहिरए जाव रयणवासेय वासे वुट्ठे, तं होऊणं अम्हं

उस रात्रि में भार[1]प्रमाण कुंभ[2]प्रमाण पद्म वृष्टि व रत्न वृष्टि होगा ॥ १६३ ॥ अग्यारहवा दिन पूर्ण होकर बारहवा दिन बैठेगा तब उनके मात पिता ऐसा गुण निष्पन्न नाम रखेंगे कि जब हमारा पुत्र का जन्म हुवा तब शतद्वार नगर की आभ्यंतर व बाहिर भार प्रमाण व कुंभप्रमाण पद्म व रत्नों की वृष्टि हुइ इस से

१ बीस पल अथवा शत पल का भार. २ जघन्य सात आढक मध्यम अस्सी आढक और उत्कृष्ट सो आढक का एक कुंभ.

त० तत्र त० उस के दा० पुत्र के अ० मातपिता णा० नाम क० करेंगे म० महापद्म ॥ १६५ ॥ त० तब म० महापद्म दा० पुत्रके अ० मातपिता सा० साधिक अ० आठवर्ष जा० जानकर सो० अच्छी तिथि क० करण दि० दिन ण० नक्षत्र मु० मुहूर्त म० बडे रा० राज्याभिषेक से अ० अभिषेक किया से० वह त० वहां रा० राजा भ० होगा म० वडा हिमवंत जा० यावत् वि० विचरेगा ॥ १६६ ॥ त० तब त० उस

इमस्स दारगस्स णामधेज्जं महापउमे महापउमे॥ १६४॥ तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेहिंति महापउमे महापउमे ॥ १६५ ॥ तएण महापउमं दारगं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि महया महया रायाभिसेगेणं अभिसिंचेहिंति । सेणं तत्थ राया भविस्सइ महयाहिंमवंत वण्णओ जाव विहरिस्सइ ॥ १६६ ॥ तएणं तस्स महापउमस्स

इस पुत्र का नाम महापद्म होवो ॥ १६४ ॥ उस दिन से उस के मात पिता उस बच्चे का नाम महापद्म कहेंगे ॥ १६५ ॥ महापद्म कुमार को साधिक आठ वर्ष का जानकर उस के मात पिता शुभ तिथि, करण, दिन, नक्षत्र, व मुहूर्त में बडा राज्याभिषेक करेंगे और उस दिन से वह महा हिमवन्त समान यावत् राजा बना हुवा विचरेगा ॥ १६६ ॥ फीर एकदा महापद्मकुमार को पूर्णभद्र व माणभद्र ऐसे दो देव

म० महापद्म को अ० अन्यदा क० कदापि दो० दो देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महासुखवाले से० सेनाकर्म का० करेंगे तं० वह ज० जैसे पु० पूर्णभद्र मा० माणिभद्र ॥ १६७ ॥ त० तब स० शतद्वार न० नगर में ब० बहुत रा० राजेश्वर त० तलवर जा० यावत् स० सार्थवाह प० प्रभृति अ० परस्पर स० बोलावेंगे स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोलेंगे ज० जिस से दे० देवानुप्रिय अ० अपने म० महापद्म र० राजा को दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् से० सेनाकर्म क० करते हैं त० तद्यथा पु० पूर्णभद्र मा० माणभद्र तं० इसलिये हो० होओ दे० देवानुप्रिय अ० हमारे म० महापद्मराजाका दो० दूसरा णा० नाम

रण्णो अण्णयाकयाइं दो देवा महिड्डिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति तंजहा पुण्णभद्देय माणिभद्देय ॥ १६७ ॥ तएणं सतदुवारे णयरे बहवे राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभितीओ अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, सद्दावेहिंतित्ता एवं वदेहिंति जम्हाणं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्डिया जाव सेणाकम्मं करेंति तंजहा पुण्णभद्देय, माणिभद्देय, तं होऊणं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रण्णो

सेना कर्म करेंगे ॥ १६७ ॥ फीर शतद्वार नगर में बहुत राजेश्वर, तलवर यावत् सार्थवाह परस्पर बोलावेंगे और बोलाकर ऐसा बोलेंगे कि अहो देवानुप्रिय ! जब अपने महापद्म राजा को पूर्णभद्र व माणभद्र ऐसे

दे० देवसेन ॥ १६८ ॥ त० तव त० उस म० महापद्म र० राजाका दो० दूसरा णा० नाम भ० होगा दे० देवसेन ॥ १६९ ॥ त० तव त० उस दे० देवसेन को अ० अन्यदा से० श्वेत सं० शंखतल स० समान च० चारदांतवाला ह० हस्तीरत्न स० होगा ॥ १७० ॥ त० तव से० वह दे० देवसेन रा० राजा से० श्वेत सं० शंखतल वि० विमल स० समान च० चारदांतवाला ह० हस्तीरत्नपे दु० आरूढहोता स० शतद्वार ण० नगर की म० मध्य में अ० वारंवार अ० आवेंगे णि० नीकलेंगे ॥ १७१ ॥ त० तव स०

दोच्चेवि णामधेज्जे देवसेणेति ॥१६८॥ तएणं तस्स महापउमस्स रण्णो दोच्चेवि णामधेज्जे भविस्सइ देवसेणेति॥१६९॥तएणं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णयाकयाइं सेते संखतलविमलसण्णिगासे चउद्दंतेहात्थिरयणे समुप्पाज्जिस्सइ ॥१७०॥ तएणं से देवसेणे राया सेयं संखतलविमलसण्णिगासं चउद्दंतहत्थिरयणं दुरूढेसमाणे सतदुवारं णयरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं २ अभिजाहितिय णिज्जाहिंतिय॥१७१॥तएणं सतदुवारे णयरे बहवे राईसर जाव

दो देव सेना कर्म करते हैं तव अपना महापद्म राजा का दूसरा नाम देवसेन होवो ॥ १६८ ॥ उस से महापद्म का दूसरा नाम देवसेन होगा ॥ १६९ ॥ अव एकदा उस महापद्म राजा को शंखतल समान श्वेत चार दांतवाला हस्ती रत्न प्राप्त होगा ॥ १७० ॥ वह महापद्म राजा शंखतल समान श्वेत चार दांतवाला हस्ति रत्न पर आरूढ होकर शतद्वार नगर की वीच में होकर वारंवार गमनागमन करेंगे ॥ १७१ ॥ तव

शतद्वार ण० नगर में व० बहुत रा० राजेश्वर जा० यावत् प० प्रभृति अ० अन्योन्य स० बोलावेंगे ज० जिस से दे० देवानुप्रिय अ० हमारा दे० देवसेन र० राजा को से० श्वेत सं० शंखतल वि० विमल स० समान च० चारदांतवाला ह० हस्तिरत्न स० हुवा तं० इसलिये हो० होओ दे० देवानुप्रिय अ० हमारे दे० देवसेन र० राजा का त० तीसरा णा० नाम वि० विमलवाहन ॥ १७२ ॥ त० तब त० उस दे० देवसेन र० राजा का त० तीसरा णा०नाम वि०विमलवाहन ॥ १७३ ॥ त० तब से वह वि०विमलवाहन रा० राजा

पभितीओ अण्णमण्णे सद्दावेहिंति जम्हाणं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेते संखतलसण्णिगासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पण्णे, तं होऊणं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रण्णो तच्चेवि णामधेज्जे विमलवाहणे, विमलवाहणे ॥ १७२ ॥ तएणं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चेवि णामधेज्जे विमलवाहणेति ॥ १७३ ॥ तएणं से

बहुत राजेश्वर यावत् सार्थवाह प्रभृति परस्पर बोलावेंगे और ऐसा कहेंगे कि अहो देवानुप्रिय ! अपने राजा को शंखतल समान चार दांतवाला श्वेत हस्ती रत्न उत्पन्न हुवा. इसलिये अपना देवसेन राजा का तीसरा नाम विमलवाहन होवो ॥ १७२ ॥ उस दिन से देवसेन राजा का तीसरा नाम विमलवाहन होगा ॥ १७३ ॥ अब विमलवाहन राजा अन्यदा कदापि श्रमण निर्ग्रंथों से मिथ्यात्व अंगीकार करेगा,

अ० अन्यदा क० कदापि स० साधु णि० निर्ग्रन्थों से मि० मिथ्यात्व वि० अंगीकार करेंगे अ० कितनेक को आ० आक्रोशकरेंगे उ० उपहास करेंगे णि० पृथक् करेंगे णि० निर्भर्त्सना करेंगे बं० बांधेंगे णि० रुंधन करेंगे अ० कितनेक का छ० चर्मछेद क० करेंगे अ० कितनेक को प० मारेंगे अ० कितनेक को उ० पीडा करेंगे अ० कितनेक के व० वस्त्र प० पात्र कं० कंवल पा० रजोहरण अ० छेदेंगे वि० विशेष छेदेंगे भि० भेदेंगे अ० कितनेक के भ० भक्तपान वो० नष्ट करेंगे अ० कितनेक का णि० नगर रहित क० करेंगे

विमलवाहणे राया अण्णयाकयायि समणेहिं णिग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवज्जोहिंति, अत्थेगइए आउसिहिंति, अत्थेगइए उवहसिहिंति, अत्थेगइए णिच्छोडेहिंति, अत्थेगइए णिब्भच्छोहिंति, अत्थेगइए बंधेहिंति, अत्थेगइए णिरुंभेहिंति, अत्थेगइयाणं छविच्छेदं करेहिंति अत्थेगइए पम्मारेहिंति अत्थेगइयाणं उद्दवेहिंति अत्थेगइयाणं वत्थपडिग्गहकंवलपायपुंच्छणं आच्छिंदिहिंति, विच्छिंदिहिंति, भिंदिहिंति, अत्थेगइयाणं भत्तपाणं वोच्छिंदिहिंति, अत्थेगइयाणं णिण्णारं करेहिंति, अत्थेगइए णिव्वि-

कितनेक साधुओं को आक्रोश करेगा, कितनेक साधुओं का हास्य करेगा, कितनेक साधुओं की शिष्य शाखा का नाश करेगा, कितनेक साधुओं को दुर्वचन से निर्भर्त्सना करेगा, कितनेक साधुओं को बंधन से बांधेगा, कितनेक साधुओं का रुंधन करेगा, कितनेक को चर्म छेद करेगा, कितनेक को मार मारेगा, कितनेक को उपद्रव करेगा, कितनेक के वस्त्र, पात्र, कंवल, रजोहरण फाडेगा तोडेगा, कितनेक साधुओं को

अ० कितनेक को नि० देशरहित क० करेंगे ॥ १७८ ॥ त० तब स० शतद्वार ण० नगर में ब० बहुत रा० राजेश्वर जा० यावत् व० बोलेंगे ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय वि० विमलवाहन रा० राजाने स० साधु णि० निर्ग्रन्थों से मि० मिथ्यात्व वि० अंगीकृत किया अ० कितनेक को आ० आक्रोश करते हैं जा० यावत् णि० देश रहित क० करते हैं तं० इसलिये णो० नहीं ए० यह अ० अपन को से० श्रेय णो० नहीं ए० यह बि० विमल वाहन को से० श्रेय णो० नहीं ए० यह र० राज्य को र० राष्ट्र ब० सैन्य वा० वाहन को पु० नगर को अं० अंतः पुर को ज० जनपद को से० श्रेय जे० क्यों की वि० विमल वाहन

सए करेहिंति ॥ १७४ ॥ तएणं सतदुवारे णयरे बहवे राईसर जाव वदिहिंति एवं खलु देवाणुप्पिया ! विमलवाहणे राया समणेहिं णिग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवण्णे अत्थेगइए आउसति जाव णिव्विसए करेति, तं णो खलु देवाणुप्पिया ! एयं अम्हं सेयं, णो खलु एयं विमलवाहणस्स रण्णो सेयं, णो खलु एयं रज्जस्सवा रट्ठस्सवा बलस्सवा वाहणस्सवा पुरस्सवा अंतेउरस्सवा जणवयस्सवा सेयं, जेणं विमल

आहार पानी का निषेध करेगा, कितनेक को नगर बाहिर करेगा और कितनेक को देश बाहिर भी करेगा ॥ १७४ ॥ फीर शतद्वार नगर में राजेश्वर यावत् सार्थवाह प्रमुख मीलकर ऐसा बोलेंगे कि अहो देवानुप्रिय ! विमलवाहन राजाने श्रमण निर्ग्रंथों से मिथ्यात्व अंगीकार किया है इस से कितनेक को आक्रोश करता

राº राजाने सº श्रमण णिº निर्ग्रन्थों से मिº मिथ्यात्व विº अंगीकृत किया तंº इसलिये सेº श्रेय देº देवानुप्रिय अº हम को विº विमल वाहन राº राजा को एº इस बात की विº विज्ञप्ति करने को तेº ऐसा कºकरके अºपरस्पर की अंº पास एºइस अºबात पºसुनकर जेºजहां विºविमल वाहन राº राजा तेº वहां उº आकर कº करतल पº परिग्रहीत विº विमल वाहन राº राजा को जº जय विº विजय से वº वधाये वº वधाकर एº ऐसा वº बोलेंगे एº ऐसे देº देवानुप्रिय सº श्रमण णिंº निर्ग्रन्थ से

वाहणे राया समणेहिं णिग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवण्णे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं विमलवाहणं रायं एयमट्ठं विण्णवेत्तिए त्तिकट्टु, अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणेंतित्ता जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छ-इत्ता करयलपरिग्गाहियं विमलवाहणं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेंतित्ता एवं वदिस्साहिति एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणेहिं णिग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवण्णा,

है यावत् कितनेक को देश बाहिर करता है. अहो देवानुप्रिय ! यह अपन को श्रेय नहीं है, वैसे ही विमल वाहन राजा, देश, सेना, वाहन, पुर व अंतःपुर को कल्याणकारी नहीं है. इसलिये अहो देवा-नुप्रिय ! विमलवाहन राजा के पास जाना और उन को विज्ञप्ति करना अपन को श्रेष्ट है ऐसा कहकर परस्पर ऐसी बात सुनी. और विमल वाहन राजा की पास सब गये. वहां दोनों हाथ

मि० मिथ्यात्व वि० अंगीकार किया अ० कितनेक को आ० आक्रोश करतेहो जा० यावत् अ० कितनेक को नि० देश रहित क० करतेहो तं० इसलिये णो० नहीं ए० यह दे० देवानुप्रिय को से० श्रेय अ० हमको र० राज्य को र० राष्ट्रको जा० यावत् ज० देश को से० श्रेय जं० जो दे० देवानुप्रिय स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ मि० मिथ्यात्व वि० अंगीकार किया तं० इसलिये वि० अटको दे० देवानुप्रिय ए० ऐसी बात अ० नहीं करने को ॥ १७५ ॥ त० तब से० वह वि० विमल वाहन रा० राजा ते० उन ब० बहुत रा०

अत्थेगइए आउसइ जाव अत्थेगइए निव्विसए करेंति, तं णो खलु एयं जंणं देवाणुप्पियाणं सेयं, णो खलु एयं अम्हं सेयं, णो खलु एयं रज्जस्सवा जाव जणवयस्सवा सेयं, जंणं देवाणुप्पिया ! समणेहिं णिग्गथेहिं मिच्छं विप्पडिवण्णा, तं विरमंतुणं देवाणुप्पिया ! एय मट्ठस्स अकरणयाए ॥ १७५ ॥ तएणं से विमलवाहणे राया

जोडकर जय विजय शब्द से विमल वाहन राजा को वधावेंगे और ऐसा बोलेंगे कि अहो देवानुप्रिय ! आपने श्रमण निर्ग्रंथों से मिथ्यात्व अंगीकार किया है यावत् आप कितनेक श्रमण निर्ग्रंथों को देश से बाहिर नीकालते हो, परंतु यह आप को, हम को, राज्य को, व देश को कल्याणकारी नहीं है. इस से अहो देवानुप्रिय ! ऐसा कार्य आपको नहीं करना चाहिये ॥ १७५ ॥ जब विमलवाहन राजा को बहुत राजे-

रानश्वर जा० यावत् स० सार्थवाह प० प्रभृति से ए० यह अ० वात की वि० विज्ञप्ति की हुई णो० नहीं ध० धर्म णो० नहीं त० तप मि० मिथ्या विनय से ए० इस अ० वात प० सुनी ॥ १७६ ॥ त० उस स० शतद्वार ण० नगर की व० वाहिर उ० उत्तरपूर्व दि० दिशा में ए० यहां सु० सुभूमि भाग उ० उद्यान भ० होगा स० सर्वऋतु में व० वर्णन योग्य ॥ १७७ ॥ ते० उस का० काल तं० उस स० समय में वि० विमल नाथ अ० अरिहंत के प० प्रतिशिष्य सु० सुमंगल अ० अनगार जा० जाति संपन्न ज० जैसे

तेहिं बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईहिं एयमट्ठं विण्णत्तेसमाणे णो धम्मोत्ति णोतवोत्ति मिच्छाविणएणं एयमट्ठं पडिसुणेहिं ॥ १७६ ॥ तस्सणं सयदुवारस्स णयरस्स बाहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थणं सुभूमिभागे उज्जाणे भविस्सइ, सव्वोत्तुय वण्णओ ॥ १७७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पउ-प्पए सुमंगले णामं अणगारे जाइसंपण्णे जहा धम्मघोसस्स वण्णओ जाव

श्वर यावत् सार्थवाह प्रमुखने ऐसा कहा तब उसने इस में धर्म नहीं है. इस में तप नहीं है ऐसी बुद्धि सहित मिथ्याविनय (असत्य देखाव) से इस वात को सुनी ॥ १७६ ॥ उस शतद्वार नगर की वाहिर सुभूमि-भाग नाम का एक उद्यान होगा, वह सब ऋतु को वर्णन योग्य होगा ॥१७७॥ उस काल उस समय में श्री विमलनाथ अरिहंत के प्रतिशिष्य सुमंगल अनगार जाति संपन्न वगैरह धर्मघोष अनगार जैसे वर्णनवाले

ध० धर्मघोष का० वर्णन जा० यावत् सं० संक्षिप्त वि० विपुल ते० तेजो लेश्या वाले ति० तीन ज्ञान सहित सु० सुभूमि भाग उ० उद्यान की अ० पास छ० छठ२ के अ०निरंतर जा० यावत् आ० आतापना लेते वि० विचरेंगे ॥ १७८ ॥ त० तब से०वह वि० विमल वाहन रा० राजा अ० अन्यदा कदापि र० रथ फिराने का० करके णि० नीकला ॥ १७९ ॥ त० तब से० वह वि० विमल वाहन रा० राजा सु० सुभूमिभाग उ० उद्यान की अ० पास र० रथफिराने का क० करता सु० सुमंगल अ० अनगार को छ० छठ २ से जा०यावत् आ० आतापना लेते पा० देखेगा पा० देखकर आ० क्रोधित जा० यावत् मि०

सखित्तविउल तेयलेस्से, तिण्णाणोवगए सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छटुं छट्टेणं अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणे विहरिस्सइ ॥ १७८ ॥ तएणं से विमल वाहणे राया अण्णयाकयायि रहचरिउं काउं णिज्जाहिति ॥ १७९ ॥ तएणं से विमल वाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते रहचरियं करेमाणे सुमंगलं अणगारं छटुं छट्ठेणं जाव आयावेमाणे पासिहिति, पासहितित्ता आसुरुत्ते जाव मिसि-

यावत् संक्षिप्त विपुल तेजोलेश्या सहित तीन ज्ञान युक्त सुभूमि भाग उद्यान की पास छठ२ के पारणे से निरंतर तप से यावत् आतापना भूमि में आतापना लेते हुवे विचरेंगे ॥१७८॥ अब एकदा विमलवाहन राजा रथ फीराने के लिये बाहिर नीकलेगा ॥१७९॥ वह विमलवाहन राजा सुभूमिभाग उद्यान की पास रथ फीराते हुवे निरंतर छठ२ यावत् आतापना लेतेहुवे सुमंगल अनगारको देखेगा. देखकर वह आसुरक्त यावत् क्रोधित

देदीप्यमान स० सुमंगल अ० अनगार के र० रथ सि० मस्तकपे णो० चलावेगा ॥ १८० ॥ त० तब से० वह सु० सुमंगल अ० अनगार वि० विमल वाहन र० राजा से णो० चलाया स० शनैः उ० उठकर दो० दूसरी वक्त उ०ऊर्ध्व बाहा प० रखकर जा० यावत् आ०आतापना लेते वि० विचरेगा ॥ १८१ ॥ त० तब से० वह वि० विमल वाहन रा० राजा सु० सुमंगल अ०अनगार को दो०दूसरी वक्त भी र० रथ सि० मस्तक से णो० चलावेगा ॥१८२॥ त०तब से० वह सु०सुमंगल अ०अनगार वि०विमल वाहन र०राजा से दो०दूसरी

मिसेमाणे सुमंगलं अणगारं रहसिरेणं णोल्लावेहिंति ॥ १८० ॥ तएणं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा रहासिरेणं णोल्लाविए समाणे सणियं २ उट्ठेहिंति उट्ठेहिंतित्ता दोच्चंपि उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय२ जाव आयावेमाणे विहरिस्सइ॥१८१॥ तएणं से विमलवाहणे राया सुमंगलं अणगारं दोच्चंपि रहसिरेणं णोल्लावेहिंति ॥ १८२ ॥ तएणं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा दोच्चंपि रहसिरेणं

होगा और सुमंगल अनगार पर रथ फीरावेगा ॥ १८० ॥ विमलवाहन राजा से इस तरह रथ फीराने पर वह सुमंगल अनगार पुनः खडे होंगे और ऊर्ध्व भूजारख कर आतापना लेते हुवे विचरेंगे ॥ १८१ ॥ फीर विमल वाहन राजा दुसरी वक्त भी रथ फीरावेगा ॥ १८२ ॥ सुमंगल अनगार दुसरी वक्त भी

वक्त भी र० रथ शिर से णो० चलाया हुवा स० शनैः उ० उठेगा उ० उठकर ओ० अवधि प० प्रयुंजेगा वि० विमल वाहन र० राजा का ती० अतीत काल आ० जानेगा वि० विमल वाहन रा० राजा को ए० ऐसा व० बोलेगा णो० नहीं तु० तुम वि० विमलवाहन रा० राजा णो० नहीं तु० तुम दे० देवसेन राजा णो० नहीं तु० तुम म० महापद्म राजा तु० तुम इ० इस से त० तीसरे भ० भव में गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र हो० था स० श्रमण घातक जा० यावत् छ० छद्मस्थ में का० काल किया ज० यदि ते० तेरी त० उस समय स० सर्वानुभूति अ० अनगार प० समर्थ हो० होकर स० सम्यक् प्रकार से

णोल्लाविए समाणे सणियं २ उट्ठेहिंति, उट्ठेहिंतित्ता ओहिं पउंजेहिंति ओहिं पउंजेहिंतित्ता विमलवाहणस्स रण्णो तयिद्धा आभोएहिंति २ विमलवाहणं रायं एवं वदिहिति णो खलु तुमं विमलवाहणे राया, णो खलु तुमं देवसेणे राया, णो खलु तुमं महा-पउमेराया तुमं ण इओ तच्चे भवग्गहणे गोसाले णामं मंखलिपुत्ते होत्था, समण घायए जाव छउमत्थे चेव कालगए तं जति ते तदा सव्वाणुभूइणा अणगारेणं

शनैः २ उपस्थित होगा, अपना अवधिज्ञान प्रयुंजेगा विमलवाहन राजा का अतीत काल देखेगा और विमल वाहन राजा को ऐसा कहेगा कि तू विमलवाहन राजा नहीं है. तू देवसेन राजा नहीं है वैसे ही तू महापद्म राजा नहीं है. [illegible] से तीसरे भव में श्रमण की घात करनेवाला मंखली पुत्र गोशाला था

स० सहन किया ख० खमा जा० यावत् अ० अहियासा ज० यदि ते० तुझे त० उस समय सु० सुनक्षत्र अ० अनगारने प० समर्थ हो० होकर स० सम्यक् प्रकारसे स० सहन किया जा० यावत् आ० अहियासा ज० यदि ते० तुझे त० उस समय स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर प० समर्थ हो० होकर जा० यावत् अ० सहन किया तं० इस से णो० नहीं अ० मैं त० तैसा स० सम्यक् प्रकार से स० सहन करूंगा जा० यावत् अ० आहियासूंगा अ० मैं ते० तुझे स० अश्वसहित स० रथसहित स० सारथी सहित त० तप तेज से ए० एक अ० प्रहार कू० कूट प्रहार भ० भस्म क० करूंगा ॥ १८३ ॥ त० तब से० वह वि०

पभूणावि होऊणं सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं अहियासियं, जइ ते तदा सुणक्खत्तेणं अणगारेणं पभूणावि होऊणं सम्मं सहियं खमियं जाव अहियासियं, जइ ते तदा समणेणं भगवया महावीरेणं पभूणावि जाव अहियासियं ॥ तं णो खलु अहं तहा सम्मं सहिस्सं जाव अहियासिस्सं, अहं ते णवरं सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेज्जामि ॥ १८३ ॥ तएणं से विमलवाहणे

यावत् वहां छद्मस्थपना में तू काल कर गया. उस समय सर्वानुभूति अनगार तेरे पर तेजोलेश्या डालने में समर्थ होने पर भी उन्होंने सम्यक् प्रकार से सहन किया, खमा यावत् अहियासा, सुनक्षत्र अनगारने भी समर्थ होने पर सहन किया और महावीर स्वामीने भी समर्थ होने पर सहन किया ; परंतु मैं सम्यक् प्रकार से सहन करूंगा नहीं और तुझें अश्व, रथ, सारथि सहित भस्म करूंगा ॥ १८३ ॥ सुमंगल अन-

विमल वाहन रा० राजा सु० सुमंगल अ० अनगार से ए० ऐसा वु० कहाया हुवा आ० क्रोधित जा० यावत् मि० देदीप्यमान सु० सुमंगल अ० अनगार को त० तीसरी वक्त र० रथशिर पे णो० चलाया ॥ १८४ ॥ त० तब से० वह सु० सुमंगल अ० अनगार वि० विमल वाहन रा० राजा से त० तीसरी वक्त णो० चलाया आ० आसुरक्त जा० यावत् मि० देदीप्यमान आ० आतापना भूमि से प० उतरकर ते० तेजस स० समुद्धात से स० समुद्घातकर स० सात आठ प० पीछा जाकर वि० विमलवाहन रा० राजा

राया सुमंगलेणं अणगारेणं एवं वुत्तेसमाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं तच्चंपि रहसिरेणं णोल्लावेहिंति ॥ १८४ ॥ तएणं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा तच्चंपि रहसिरेणं णोल्लाविएसमाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभइत्ता तेयासमुग्घाएणं समोहणहिति समोहण-हितित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्किहिति, पच्चोसक्किहितित्ता विमलबाहणं रायं सहयं सरहं

गार से इस तरह कहाया हुवा विमलवाहन राजा आसुरक्त यावत् क्रोधित होगा और सुमंगल अनगारपे तीसरी वार रथ फिरावेगा ॥ १८४ ॥ इस तरह विमलवाहन राजा जब तीसरी वार रथ फिरावेगा तब यह अनगार बहुत आसुरक्त यावत् क्रोधित होते हुवे आतापना भूमि में से नीकलकर तेजस समुद्घात करेगा,

को० स० अश्वसहित जा० यावत् भा० भस्म क० करेंगे ॥ १८५ ॥ सु० सुमंगल अ० अनगार भा० भस्म क० कर के क० कहां ग० जावेगा क० कहां उ० उत्पन्न होगा० गो० गौतम सु० सुमंगल अ० अनगार वि० विमलवाहन रा० राजा को स० अश्वसहित जा० यावत् भा० भस्म क० करके ब० बहुत छ० छठ अ० अठम द० दश दु० बारह जा० यावत् वि० विचित्र त० तपकर्म से अ० स्वतः को भा० भावते ब० बहुत वा० वर्ष सा० साधु की प० पर्याय पा० पालेंगे मा० माम की सं० संलेखना से स० साठभक्त अ० अनशन जा० यावत् छे० छेदकर आ० आलोचित प० प्रतिक्रमण वाला स० समाधि प्राप्त उ० ऊर्ध्व चं०

ससाराहियं तवेणं तेएणं जाव भासरासिं करेहिति ॥ १८५ ॥ सुमंगलेणं भंते ! अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव भासरासिं करेत्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! सुमंगलेणं अणगारेणं विमलवाहणं रायं सहयं जाव भासरासिं करेत्ता बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालस जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणिहिति, बहू२ त्ता मासियाए संलेहणाए सर्ट्ठि भत्ताइं

सात आठ पांव पीछा जाकर अश्व, रथ व सारथि सहित विमलवाहन राजा को भस्म करेगा ॥ १८५ ॥ अहो भगवन् ! विमलवाहन राजा को भस्म करके सुमंगल अनगार काल के अवसर में काल करके कहां उत्पन्न होंगे ? अहो गौतम ! विमलवाहन राजा को भस्म किये पीछे बहुत छठ, अठम, दश, द्वादश

चंद्र सू० सूर्य जा० यावत् गे० ग्रैवेयक विमान स० सशत वी० उल्लंघकर स० सर्वार्थ सिद्ध म० महाविमान में दे० देवतापने उ० उत्पन्न होगा त० वहां दे० देवोंकी अ० अजघन्य अनुत्कर्ष ते० तत्तीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी त० वहां सु० सुमंगल दे० देवकी अ० अजघन्य अ० अनुत्कर्ष ते० तेत्तीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ॥ १८६ ॥ से० वह भं० भगवन् सु० सुमंगलदेव ता० उस दे० देवलोक से जा० यावत् म० महाविदेह वा० क्षेत्र में सि० सीझेंगे जा० यावत् अं० अंत का०

अणसणाइं जाव छेदेत्ता आलोइय पडिक्कते समाहिपत्ते उड्ढं चंदिम सूरिय जाव गेवेज्जगविमाणे ससयं वीईवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति ॥ तत्थणं देवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सुमंगलस्सवि देवस्स अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता॥ १८६॥ सेणं भंते ! सुमगले देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव

भक्त यावत् विचित्र प्रकार के तप कर्म से आत्मा को भावते हुवे बहुत वर्ष साधु की पर्याय पालते हुवे एक मास की संलेखना सहित साठ भक्त अनशन छेदकर आलोचना प्रतिक्रमण कर काल के अवसर में काल करके चंद्र सूर्य यावत् ग्रैवेयक विमान को उल्लंघ कर सर्वार्थसिद्ध महाविमान में देवतापने उत्पन्न होगा. वहां देवों की तेत्तीस सागरोपम की स्थिति है, इस में सुमंगल देव की तेत्तीस सागरोपम की स्थिति होगा ॥ १८६ ॥ वह सुमंगल देव वहां से आयुष्य, स्थिति व भवक्षय से चवकर महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा

करेंगे ॥ १८७ ॥ वि० विमलवाहन भं० भगवन् रा० राजा सु० सुमंगल अ० अनगार से स० अश्वसहित जा० यावत् भा० भस्म कराया क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम वि० विमलवाहन रा० राजा सु० सुमंगल अ० अनगार से स० अश्वसहित जा० यावत् भा० भस्म कराये अ० नीचे सा० सातवी पु०पृथ्वी में उ० उत्कृष्ट का० काल स्थिति में णे० नारकीपने उ० उत्पन्न होगा से० वह त० वहां से अ० निरंतर

अंतं काहिति ॥ १८७ ॥ विमलवाहणेणं भंते ! राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहयं जाव भासरासीकएसमाणे कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! विमलवाहणे राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहयं जाव भासरासीकए समाणे अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसं कालट्ठितियंसि णरयंसि णेरइयत्ताए उववज्जिहिति ॥ सेणं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववज्जिहिति, तत्थविणं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे

बुझेगा यावत् अंत करेगा ॥ १८७ ॥ अहो भगवन् ! सुमंगल अनगार से भस्म कराया हुवा विमल वाहन राजा कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! सुमंगल अनगार से भस्म कराया हुवा विमल वाहन राजा सातवी पृथ्वी में उत्कृष्ट स्थिति से नारकीपने उत्पन्न होगा. वहां से अंतर रहित नीकलकर मत्स्य में उत्पन्न होगा. वहां शस्त्र से हणाया हुवा दाह उत्पन्न हुए काल के अवसर में काल करके दूसरी वार सातवी नरक में उत्कृष्ट काल की स्थिति [तेत्तीस सागरोपम की] में उत्पन्न होगा. वहां से वह नीकल-

उ० नीकलकर म० मत्स्य में उ० उत्पन्न होगा त० वहां स० शस्त्र से हणाया दा० दाहव्युत्क्रान्त का० काल के अ० अवसर में का० काल करके दु० दूसरी वक्त अ० नीचे की स० सातवी उ० उत्कृष्ट काल ठि० स्थिति णे० नारकी में उ० उत्पन्न होगा से० वह त० वहां से अं० अंतर रहित उ० नीकलकर दो० दूसरी वक्त म० मत्स्य में उ० उत्पन्न होगा त० वहां पर भी स० शस्त्र से व० हणाया हुवा जा० यावत् कि०

कालं किच्चा दोच्चंपि अहे सत्तसाए उक्कोसकालट्ठितियंसि णरयंसि णेरइयत्ताए उववज्जिहिति ॥ सेणं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चंपि मच्छेसु उववज्जिहिति तत्थविणं सत्थवज्झे जाव किच्चा, छट्ठीए तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि णरयंसि णेरइयत्ताए उववज्जिहिति, सेणं तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता इत्थियासु उववज्जिहिति, तत्थविणं सत्थवज्झे दाह जाव दोच्चंपि छट्ठीए तमाए पुढवीए उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता,

कर दूसरी वक्त मत्स्य में उत्पन्न होगा. वहां पर भी शस्त्र से हणाया हुवा यावत् दाह उत्पन्न होने पर काल के अवसर में काल करके छठी तमा में उत्कृष्ट स्थिति से उत्पन्न होगा. इस में उत्कृष्ट स्थिति बावीस सागरोपम की कही है. वहां से अंतर रहित नीकलकर यावत् स्त्री में उत्पन्न होगा. वहां पर दाह उत्पन्न होने पर शस्त्र से हणाइ हुइ काल के अवसर में काल करके छठी नरक में उत्कृष्ट बावीस सागरोपम की स्थिति से उत्पन्न होगा. और वहां से अंतर रहित नीकलकर यावत् दूसरी वक्त स्त्री में उत्पन्न होगा. वहां

करके छ० छठी त० तमा पु० पृथ्वी में उ० उत्कृष्ट काल वाली ठि० स्थिति णे० नारकी में णे० नारकी पने उ० उत्पन्न होगा त० वहां से उ० नीकलकर इ० स्त्री में दो० दुसरी वक्त छ० छठी त० तमा में उ० उत्कृष्ट काल जा० यावत् उ० उद्वर्तकर दो० दूसरी वक्त इ० स्त्री में पं० पांचवी धू० धूम्रप्रभा में उ० सर्प में उ० उत्पन्न होगा च० चौथी पं० पंकप्रभा सी० सिंह में त० तीसरी वा० वालुप्रभा प० पक्षी में दो० दूसरी

दोच्चंपि इत्थियासु उववज्जिहिति २, तत्थविणं सत्थवज्झे जाव किच्चा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइंसि जाव उव्वट्टित्ता उरएसु उववज्जिहिति तत्थविण सत्थवज्झे दोच्चंपि पंचमाए जाव उव्वट्टित्ता दोच्चंपि उरएसु उववज्जिहिति जाव किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए उक्कोस कालट्ठिइयंसि जाव उव्वट्टित्ता, सीहेसु, उववज्जिहिति तत्थविणं सत्थवज्झे तहेव कालं किच्चा दोच्चंपि चउत्थीए पकप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता, दोच्चंपि सीहेसु उववज्जिहिति, जाव किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल जाव उवट्टित्ता, पक्खीसु उववज्जिहिति,तत्थविणं सत्थवज्झे जाव किच्चा दोच्चपि वालुय जाव उव-

शस्त्र से हणाइ हुइ यावत् पांचवी धूम्र प्रभा में उत्कृष्ट स्थिति से उत्पन्न होगा. वहां से नीकलकर उरग (सर्प) में उत्पन्न होगा. पुनः वहां से काल करके पांचवी नरक में उत्पन्न होगा पांचवी नरक में से नीकलकर सर्पपने उत्पन्न होगा. वहां से चौथी पंक प्रभा नरक में उत्कृष्ट स्थिति से उत्पन्न होगा. वहां से अंतर रहित नीकलकर सिंहपने उत्पन्न होगा. वहां शस्त्र से हणाया हुआ पुनः चौथी पंक प्रभा में उत्कृष्ट

स० शर्करप्रभा में स० सरीसप (भुजपर विशेष) इ० इस र० रत्नप्रभामें सं० संज्ञी में अ० असंज्ञी प० पल्योपम के अ० असंख्यातभाग ठि० स्थितिवाली ण० नरक में णे० नारकीपने उ० उत्पन्नहोगा त० वहां से जा० यावत् उ० नीकलकर इ० ये ख० खेचर की वि० जात भ० होते हैं च० चर्मपक्षी लो० रोमपक्षी स० समुद्र पक्षी वि० विततपक्षी तं० उस में अ० अनेक स० लक्षवार उ० मरकर भु० वारंवार प० उत्पन्न

ट्टित्ता, दोच्चंपि पक्खीसु उववज्जिहिति, जाव किच्चा दोच्चाए सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता, सरीसवेसु उववज्जिहिति, तत्थविणं सत्थवज्झे जाव किच्चा, दोच्चंपि दोच्चाए सक्कर जाव उव्वट्टित्ता दोच्चंपि सिरीसवेसु उववज्जिहिति, जाव किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि णरयंसि णेरइयत्ताए उववज्जिहिति जाव उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिति तत्थविणं सत्थवज्झे जाव किच्चा असण्णीसु उववज्जिहिति, तत्थविणं सत्थवज्झे जाव किच्चा दोच्चंपि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागट्ठितियंसि णरयंसि णेरइयत्ताए उववज्जिहेति,. सेणं तओ जाव उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहचरविहाणाइं भवंति

स्थिति से उत्पन्न होगा. वहां से नीकलकर पुनः सिंहपने उत्पन्न होगा. वहां से काल के अवसर में काल कर तीसरी वालुप्रभा में उत्कृष्ट स्थिति से उत्पन्न होगा. वहां से अंतर रहित नीकलकर पक्षिपने उत्पन्न होगा. वहां शस्त्र से हणाया हुवा काल के अवसर में काल करके पुनः तीसरी नारकी में उत्पन्न होगा. वहां से निरंतर चवकर पुनः पक्षि में उत्पन्न होगा. वहां से काल करके दूसरी शर्कर प्रभा में उत्कृष्ट

होगा स० सर्वत्र स० शस्त्र से ह० हणाया दा० दाहव्युत्क्रांत का० काल के मा० अवसर में का० काल
कि० कर के जा० जो ये भु० भुजपरिसर्प की वि० जाति भ० होती हैं गो० गोह ण० नकुल ज०
जैसे प० पन्नवणापद में जा० यावत् जा० जाहक च० चतुष्पद ते० उन में अ० अनेकवक्त स० लक्ष से०
शेष ज० जैसे ख० खेचर जा० यावत् कि० कर के जा० जो इ० ये उ० उरपरिसर्प वि० विधान भ० होते

तंजहा चम्मपक्खीण, लोमपक्खीणं, समुग्गपक्खीणं, वियतपक्खीणं, तेसु अणेगसय सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता, उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाति; सव्वत्थविणं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालकिच्चा जाइं इमाइं भुयपरिसप्पाविहाणाइं भवंति, तंजहा गोहाणं, णउलाणं, जहा पण्णवणापदे जाव जाहगाणं चउप्पाइयाणं तेसु अणेगसयसहस्सक्खुत्तो सेसं जहा खहचराणं जाव किच्चा, जाइं इमाइं उरपरि

स्थितिपने उत्पन्न होगा. वहां से नीकलकर भुजपरिसर्पपने उत्पन्न होगा. वहां शस्त्र से हणाया हुवा यावत् काल करके दूसरी शर्कर प्रभा में उत्कृष्ट स्थिति से उत्पन्न होगा. वहां से नीकलकर भुजपरिसर्प में उत्पन्न होगा. वहां से नीकलकर पहिली रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्कृष्ट स्थिति से उत्पन्न होगा वहां से नीकल-कर संज्ञी में उत्पन्न होगा. वहां से काल करके असंज्ञी में उत्पन्न होगा. वहां से काल करके पुनः रत्न प्रभा पृथ्वी में पल्योपम के असंख्यातवे भाग की स्थिति से नारकीपने उत्पन्न होगा. वहां से नीकलकर

है स० सर्प अ० अजगर अ० असालिया म० महोरग जा० यावत् इ० ये च० चतुष्पद विधान भ० होते हैं ए० एकखुरवाले दु० दोखुरवाले गं० गंडीपद सं० सनीपद इ० ये ज० जलचर की वि० जाति भ० होती हैं म० मत्स्य क० कच्छ जा० यावत् स० सुसुंमार ते० उन में अ० अनेक लक्षवार जा० यावत् कि० कर. के जा० जो इ० ये च० चतुरेंद्रिय भ० होते हैं अं० अंधिक पो० पौत्रिक ज० जैसे प० पन्नवणापद में जा० यावत् गो० गोबर

सप्पविहाणाइं भवंति, तंजहा अहीणं अयगराणं आसालियाणं महोरगाणं तेसु अनेग सयसहस्सखुत्तो जाव किच्चा इमाइं चउप्पद विहाणाइं भवंति तंजहा एगखुराणं दुखुराणं गंडीपदाणं सणहपदाणं तेसु अणेगसयसहस्स जाव किच्चा, जाइं इमाइं जलचर विहाणाइं भवंति, तंजहा मच्छाणं कच्छपाणं जाव सुंसमाराणं, तेसु अणेगसय-सहस्स जाव किच्चा जाइं इमाइं चउरिंदिय विहाणाइं भवंति, तंजहा अंधियाणं

चर्मपक्षी, रोमपक्षी, समुद्रपक्षी और विततपक्षी में अनेक लक्षवार दुःखित होकर उन में ही वारंवार उत्पन्न होगा. वहां भव भव में शस्त्र से हणाया हुवा काल के अवसर में काल करके गोह, नकुल वगैरह पन्नवणा पद में कहे हुवे जैसे यावत् जाहक जीव विशेष चतुष्पद में अनेक लक्षवार उत्पन्न होगा. शेष सब अधिकार खेचर जैसे जानना. यावत् मृत्यु पाकर उरपरिसर्प में होंगे. जिन के नाम अही, अजगर, अशालिया, बडा सर्प उस में अनेक लाख जन्म मरण करके चतुष्पद में उत्पन्न होंगे. जिन के

के कीडे जा० यावत् ते० तेइन्द्रिय भ० होते हैं ओ० औपचिक जा० यावत् ह० हस्ति सोंड बे० द्वीन्द्रिय पु० पुल कि० कीडे जा० यावत् स० समुद्र की लिख व० वनस्पति की जात भ० होते हैं रु० वृक्ष गु० गच्छ जा० यावत् कु० कुहुण ते० उस में अ० अनेकवार जा० यावत् प० उत्पन्न होगा उ० प्रायः क० कडुक वृक्षों में क० कटुक वल्ली में स० सवत्र स० शस्त्र मे हणाया जा० यावत् कि० करके जा० जो इ० ये वा० वायुकाय की वि० जाति भ० होते हैं प० पूर्वदिशि का वात जा० यावत् सु० शुद्धवात ते० उन में

पोत्तियाणं जहा पण्णवणापदे जाव गोयमकीडाणं तेसु अणेगसय जाव किच्चा ॥ जाइं इमाइं तेइंदिय विहाणाइं, भवंति तंजहा ओवाचियाणं जाव हात्थिसोंडाणं तेसु अणेग जाव किच्चा जाइं इमाइं बेइंदियविहाणाइं भवंति तंजहा पुलाकिमियाणं जाव समुद्दलिक्खाणं तेसु अणेगसय जाव किच्चा ॥ जाइं इमाइं वणस्सइ विहाणाइं भवंति तंजहा रुक्खाणं गुच्छाणं जाव कुहुणाणं तेसु अणेग जाव पच्चायाइस्सइ; उस्सण्णं

नाम एक खुरवाले अश्वादि, दो खुरवाले गवादि, गंडीपद हस्ती आदि सन्निपद सिंहादि. उन में अनेक लक्षवार जन्म मरण करके जलचर में उत्पन्न होवे जिन के नाम. मत्स्य, कच्छ यावत् सुसुमार. इन में अनेक लक्षवार जन्म मरण करके चतुरेन्द्रिय में उत्पन्न होगा जिन के नाम अंधिक, पौत्रिक यावत् गोवर के कीडे. इन में अनेक लक्ष वार उत्पन्न होकर तेइन्द्रिय में उत्पन्न होगा जिन के नाम औपचित यावत्

अ० अनेकलक्ष जा० यावत् कि० करके जा० जो इ० ये ते० तेउकाय वि० जाति भ० होती हैं इं० अग्नि में जा० यावत् सू० सूर्य कांत मणि णि० णिश्रित ते० उस में अ० अनेक स० लक्षवार जा० यावत् कि० करके जा० जो इ० ये आ० अप्काय वि० जात भ० होती हैं उ० ओस खा० सारोदक ख० खातोदक में स० सर्वत्र स० शस्त्र से व० हणाया जा० यावत् कि० करके इ० ये पु० पृथ्वीकाय वि० विधान भ० हैं तं० जैसे पु० पृथ्वी स० कंकर जा० यावत् सू० सूर्यकांतमणि तं० उस में अ० अनेक स०

चणं कडुयरुक्खेसु कडुयवल्लीसु सव्वत्थविणं सत्थवज्झे जाव किच्चा॥ जाइं इमाइं वाउकाइय विहाणाइं भवंति तंजहा पाईणवाताणं जाव सुद्धवाताणं तेसु अणेगसयसहस्स जाव किच्चा॥ जाइं इमाइं तेउकाइय विहाणाइ भवंति, तंजहा इंगालाणं जाव सूरियकंतमणिणिस्सियाणं तेसु अणेगसय सहस्स जाव किच्चा॥ जाइं इमाइं आउकाइय विहाणाइं भवंति तंजहा उस्साणं जाव खातोदगाणं तेसु अणेग जाव पच्चाया॥ तिस्सइ; उस्सणणं चणं

हस्ति मुंड. उन में अनेक लक्षवार उत्पन्न होकर बेइन्द्रिय में उत्पन्न होगा जिन के नाम पुलकृमि यावत् समुद्रलीख. उन में अनेक लक्षवार उत्पन्न होकर वनस्पति में उत्पन्न होगा जिन के नाम. वृक्ष गुच्छा यावत् कुहाण. इन में अनेक वक्त मरकर बहुत कंटक वृक्ष व कडवे वृक्ष में उत्पन्न होगा वहां अग्नि आदि शस्त्र से हणाकर काल के अवसर में काल कर वायुकाय के भेदों में उत्पन्न होगा, जिन के नाम

लक्षवार प० उत्पन्न होगा. उ० प्रायः ख० खर बा० बादर पु० पृथ्वी में स० सर्वत्र स० शस्त्र से हणाया हुवा जा० यावत् कि० करके दो० दुसरी वक्त रा० राजगृह ण० नगर की बा० बाहिर ख० वेश्यापने उ० उत्पन्न होगा त० वहांपर स० शस्त्र मे व० हणाया हुवा जा० यावत् कि० करके दो० दूसरी वक्त रा० राजगृह ण० नगर की अं० अंदर ख० वेश्यापने उ० उत्पन्न होगा त० वहांपर स० शस्त्र से व० हणाया जा०

खारोदएसु खातोदएसु सव्वत्थविणं सत्थवज्झे जाव किच्चा ॥ इमाइं पुढविकाइय विहाणाइं भवंति. तंजहा पुढवीणं सक्कराणं जाव सूरिकंताणं, तेसु अणेगसय जाव पच्चायाहिति ।उस्सण्णं चण खरबादर पुढविकाइएसुसव्वत्थाविणं सत्थवज्झे जाव किच्चा राय-गिहे णयरे बाहिं खरियत्ताए उववाजिहिति; तत्थविणं सत्थवज्झे जाव किच्चा, दोच्चंपि राय-गिहे णयरे अंतो खरियत्ताए उववज्जिहिति, तत्थविणं सत्थवज्झे जाव किच्चा इहेव

पूर्व का वायु यावत् शुद्ध वायु. इस मे अनेक वक्त मरकर तेउकाया मे उत्पन्न होगा जिन के नाम अंगार यावत् सूर्यकांतमणि निश्रित. वहां अनेक लक्षवार मरकर अप्काया में उत्पन्न होगा जिन के नाम ओस यावत् खारा पानी. वहां अनेक वक्त उत्पन्न होकर औस यावत् खारा पानी में सर्वत्र शस्त्र से वध कराया हुवा पृथ्वीकाया के भेद में उत्पन्न होगा जिन के नाम-कंकर यावत् सूर्यकान्तमणि यावत् बादर पृथ्वीकाया में सर्वत्र शस्त्र से हणाया हुवा राजगृह नगर की बाहिर वेश्यापने उत्पन्न होगा: वहां

यावत् कि० कर के इ० इस जं० जम्बूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में वि० विंध्यगिरि के पा० पर्वत के मूल में वि० विभेल स० सन्निवेश में मा० ब्राह्मण कुल में दा० पुत्रीपने उ० उत्पन्न होगा ॥ १८८ ॥ त० तब त० उस दा० पुत्री को उ० मुक्त बा० बालभाव से जो० यौवन अ० अप्राप्त प० प्रतिरूप सु० दान से प० प्रतिरूप वि० विनय से प० प्रतिरूप भ० भर्तार को भा० भार्यापने द० देगा ॥ १८९ ॥ सा० वह त० उसकी भ० भार्या भ० होगा इ० इष्ट कं० कांत जा० यावत् अ० मनोज्ञ भं० पात्र क० करंडिय स० समान तं० तेलकेल

जंबूदीवे दीवे भारहेवासे विंज्झगिरिपायमूले विभेले सण्णिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिति ॥ १८८ ॥ तएणं तं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूवएणं सुक्केणं पडिरूवएणं विणएणं पडिरूवियस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलइस्सइ ॥ १८९ ॥ साणं तस्स भारिया भविस्सइ, इट्ठा कंता जाव अणुमया भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेलाइवसुसंगोविया

शस्त्र से हणाया हुवा राजगृह नगर की अंदर वेश्यापने उत्पन्न होगा. वहां से हणाया हुवा इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में विंध्यगिरी के मूल में विभेल सन्निवेश में ब्राह्मण कुल में पुत्रीपने उत्पन्न होगा ॥ १८८ ॥ जब वह बालिका यौवनस्था को प्राप्त होगी तब योग्यदान व योग्य विनय से योग्य भर्तार को भार्या के लिये देंगे ॥ १८९ ॥ वह बालिका उस को इष्ट, कांत, प्रिय, यावत् प्यारी, आभरण के करंडीये समान,

(तेल कचोला) सु० अच्छी तरह गोपित चे० वस्त्रविशेष समान सं० अच्छी तरह ग्रहण किया र० रत्न करंड समान सु० रक्षण करने योग्य मा० मत सी० शीत उ० ऊष्ण आ० यावत् प० परिषह उ० उपसर्ग फु० स्पर्शे ॥ १९० ॥ त० तब सा० वह दा० पुत्री अ० अन्यदा कं० कदापि गु० गुर्विणी स० श्वशुर गृह से कु० पितृ गृह णि० लेजाते ऊं० बीच में द० अग्नि की जा० ज्वाला से अ० हणाइ का० काल के मा० अवसर में का० काल कि० कर के दा० दक्षिण अ० अग्निकुमार दे० देव में दे० देवतापने उ० उत्पन्न होगा

चेलपेलइवसुसंपरिग्गहिया, रयणकरंडगउंविवसुसारक्खिया, सुसंगोविया, माणं-सीयं, माणंउण्हं, जाव परिस्सहोवसग्गं फुसंतु, ॥ १९० ॥ तएणं सा दरिया अण्णया कयायि गुव्वणी सुसुरकुलाओ कुलघरं णिज्जमाणी अंतरा दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु अग्गिकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति,

तेल के कलश जैसी रखने योग्य, रत्न के करंड समान यत्ना करने योग्य, अच्छी तरह गोपने योग्य और शीत, उष्णादि परिषह व उपसर्ग से रक्षण करने योग्य ऐसी भार्या होगा. ॥ १९० ॥ अब वह बाला गर्भिणी हुवे पीछे एकदा श्वशुरकुल से पितृकुल जाते मार्ग में अग्नि से जलेगी और काल के अवसर में काल कर के दक्षिण दिशि के अग्निकुमार देवलोक में देवतापने उत्पन्न होगी, वहां से अंतर रहित चवकर मनुष्य भव प्राप्त

से० वह त० वहां अ० अंतर रहित उ० नीकलकर मा० मनुष्य का वि० शरीर ल० प्राप्त करेगा के० केवल बो० सम्यत्क्व प्राप्ति कर के के० केवल मुं० मुंड भ० होकर अ० गृहवास से अ० साधुपना प० अंगीकार करेगा ॥ १९१ ॥ त० वहां वि० विराधित सा० साधु पनावाला का० काल के अवसर में का० कालकर के द० दक्षिण के अ० असुर कुमार दे० देवता में उ० उत्पन्न होगा से० वह त० वहां से उ० नीकलकर म० मनुष्य का वि० शरीर तं० वैसे जा० यावत् वि० विराधित का० काल कि० कर के दा० दाक्षिण के णा० नागकुमार

सेणं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, लभिहितित्ता केवलं बोहिं वुज्झिहिति २ त्ता, केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति, ॥ १९१ ॥ तत्थवियणं विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु असुरकुमारेसु देवत्ताए उववज्जिहिति ॥ सेणं तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं तंचेव जाव विराहिय सामण्णे काल जाव किच्चा दाहिणिल्लेसु

करेगा और सम्यक्त्व रूप बोधि प्राप्त कर के मुंडित होकर अगार से अनगारपना अंगीकार करेगा अर्थात् दीक्षित होगा ॥ १९१ ॥ वहांपर भी विराधित श्रामण्यवाला काल के अवसर में काल कर के दक्षिण दिशा के असुरकुमार में देवतापने उत्पन्न होगा. वहां से नीकलकर मनुष्य का शरीर प्राप्त करेगा और पुनः विराधित साधुपना से काल कर के दक्षिण दिशा के नागकुमार में उत्पन्न होगा

में दे० देवतापने उ० उत्पन्न होगा से० वह त० वहां से णि० अंतर रहित उ० नीकलकर ए० ऐसे ए० इस अ० अभिलाप से दा० दक्षिण के वि० विद्युत्कुमार ए० ऐसे अ० अग्निकुमार व० छोडकर जा० यावत् दा० दक्षिण के थ० स्थनित कुमार से० वह त० वहां से उ० नीकलकर मा० मनुष्य का वि० शरीर जा० यावत् वि० विराधित जो० ज्योतिषी दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होगा से० वह त० वहां से अ० निरंतर च० चवकर मा० मनुष्य का वि० शरीर ल० प्राप्त करेगा. जा० यावत् अ० अविराधित सा० साधुपना का० काल के मा० अवसर में का० काल करके सो० सौधर्म क० देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न

णागकुमारेसु देवत्ताए उववज्जिहिति; सेणं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता एवं एएणं अभिलावेणं दाहिणिल्लेसु विज्जुकुमारेसु एवं अग्गिकुमारे वज्जं जाव दाहिणिल्लेसु थणियकुमारेसु सेणं तओ जाव उव्वट्टित्ता, माणुस्सं विग्गहं लभिहिति जाव विराहिय सामण्णे जोइसिएसु देवेसु उववज्जिहिति, सेणं तओ अणंतर चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति । जाव अविराहिय सामण्णे कालमासे कालंकिच्चा, सोहम्मे कप्पे

इस तरह अनुक्रम से दक्षिण दिशि में विद्युत्कुमार यावत् अग्निकुमार छोडकर स्थनित कुमार तक में उत्पन्न होगा. वहां से चवकर मनुष्य का शरीर प्राप्त करेगा. वहां विराधित बनकर ज्योतिषि में देवतापने उत्पन्न होगा. वहां से अंतर रहित चवकर ज्योतिषि में उत्पन्न होगा, वहां से नीकलकर मनुष्य का

होगा से० वह त० वहां से अ० निरंतर च० चवकर मा० मनुष्य का वि० शरीर ल० प्राप्त करेगा के० केवल बो० सम्यक्त्व प्राप्ति बु० करेगा त० वहां भी अ० अविराधित साधुपनावाला का० काल के अवसर में का० काल कर के स० सनत्कुमार में दे० देवतापने उ० उत्पन्न होगा से० वह त० वहां से ए० ऐसे ज० जैसे स० सनत्कुमार त० तैसे बं० ब्रह्मलोक म० महाशुक्र आ० आणत आ० आरण त० वहां से जा० यावत् अ० अविराधित का० काल के अवसर में का० काल कर के स० सर्वार्थ सिद्ध म० महाविमान में दे० देवतापने उ० उत्पन्न होगा से० वह त० वहां से अ० अंतर रहित च० चवकर

देवत्ताए उववज्जिहिति, सेणं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लाभिहिति, केवलं बोहिं बुज्झिहिति, तत्थविणं अविराहिय सामण्णे कालमासे कालंकिच्चा सणंकुमारेणं कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति, सेणं तओहिंतो एवं जहा सणंकुमारे तहा बंभलोए महासुक्के आणए आरणे सेणं तओ जाव अविराहियसामण्णे कालमासे कालंकिच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति ॥ सेणं तओहिंतो अणंतरं

शरीर प्राप्त करेगा. वहां अविराधित साधुपनावाला बनकर काल के अवसर में काल करके सौधर्म देवलोक में देवतापने उत्पन्न होगा. वहां से अंतर रहित चवकर मनुष्य का शरीर प्राप्त करेगा और सम्यक्त्व की प्राप्ति करके काल के अवसर में काल करके सनत्कुमार देवलोक में देवतापने उत्पन्न होगा. ऐसे ही

म० महाविदेह वा० क्षेत्र में जा० जो इ० ये कु० कुल भ० हैं अ० ऋद्धिवंत जा०यावत् अ० अपरिभूत त० वैसे कु० कुल में पु० पुत्रपने प० उत्पन्न होगा ए० ऐसे ज० जैसे उ० उववाइ में द० दृढप्रतिज्ञी व० वक्तव्यता सा० वही व० वक्तव्यता णि० निरवशेष भा० कहना जा० यावत् के० केवल व०श्रेष्ठ णा० ज्ञान द० दर्शन स० उत्पन्न होगा ॥ १९२ ॥ त० तब द० दृढप्रतिज्ञी के० केवली अ० अपना अ० भूतकाल आ० जानकर णि० निर्गन्थों को स० बोलावेंगे ए० ऐसा व० बोलेंगे ए० ऐसा ख० निश्चयार्थ

चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं जाव अपरिभूयाइं, तह-प्पगारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए पच्चायाहिति, एवं जहा उववाइए दड्डपइण्णवत्तव्वया साचेव वत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा ॥ जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पाजिहिति ॥ १९२ ॥ तएणं दड्डपइण्णे केवली अप्पणो तीतद्धं आभोएइ, आभोएइत्ता समणे णिग्गंथे सद्दाविहिति २ त्ता एवं वदिहिति एवं खलु अहं अज्जो ! इओ चिरातीयाए

अनुक्रम से एक मनुष्य का भव व एक देवलोक का भव सो ब्रह्म, महा शुक्र, आणत, प्राणत, आरण में उत्पन्न होगा. और वहां से मनुष्य का भव करके सर्वार्थ सिद्ध महाविमान में देवतापने उत्पन्न होगा. वहां से अंतर रहित चवकर महाविदेह क्षेत्र में जो ऋद्धिवंत यावत् अपरिभूत कुल होगा उन में पुत्रपने उत्पन्न होगा. वगैरह आगे की सब वक्तव्यता दृढ प्रतिज्ञी कुमार की वक्तव्यता जानना यावत् केवल ज्ञान केवल दर्शन उत्पन्न होगा ॥१९२॥ उस समय में वह दृढ प्रतिज्ञी केवली अतीत काल के भव जानेंगे और श्रमण

अ० मैं अ० आर्य इ० आज से चि० लम्बाकाल से गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र हो० था स० श्रमणघातक जा० यावत् छ० छद्मस्थ में का० कालकिया तं० उस मू० मूल से अ० मैं अ० आर्य अ० अनादि अ० अनंत दी० दीर्घ चा० चतुर्गतिक सं० संसार में अ० पर्यटन किया ॥ १९३ ॥ तं० इसलिये मा० मत अ० आर्य तु० तुमभी के० कोई भ० होवे आ० आचार्य प्रत्यनीक उ० उपाध्याय प्रयनीक अ० अपयशकारक अ० अवर्णकारक अ० अकीर्तिकारक मा० मत अ० अनादि अ० अनंत सं० संसार कंतार अ० पर्यटन करेगा

अहृाए गोसाले मंखलिपुत्ते होत्था समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए तं मूलगंचणं अहं अज्जो ! अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसारकतारं अणु-परियट्टइ, ॥ १९३ ॥ तं माणं अज्जो ! तुब्भंपि केइ भवतु आयरियपडिणीए उवज्झाय पडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए माणं सेवि एवंचेव अणादीयं अणवदग्गं जाव संसारकंतारं अणुपरियट्टिहिति,

निर्ग्रंथों को बोलाकर ऐसा बोलेंगे कि अहो आर्यो ! बहुत काल पहिले मैं श्रमण का घातक मंखली पुत्र गोशाला था. यावत् छद्मस्थ में काल कर गया. वहां से मैंने अनादि अनंत दीर्घ चतुर्गतिक संसार में परिभ्रमण किया ॥ १९३ ॥ इस लिये अहो आर्यो ! तुम आचार्य उपाध्याय का प्रत्यनीक मत होवो, उन का अपयशकारक, अकीर्तिकारक, अवर्णकारक मत होवो. और इस से जैसे मैंने अनादि अनंत चतु-

ज० जैसे अ० मैंने ॥ १९४ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ द० दृढ प्रतिज्ञी के० केवली की अं० पास से ए० यह अ० बात सो० सुनकर णि० अवधारकर भी० डरे त० त्रासपाये त० त्रासित हुवे सं० संसारभय से उ० उद्विग्न द० दृढ प्रतिज्ञी के० केवली को वं० वंदना करेंगे ण० नमस्कार करेंगे त० उस ठा० स्थान की आ० आलोचना करेंगे निं० निंदा करेंगे जा० यावत् प० अंगीकार करेंगे ॥ १९५ ॥ त० तब द० दृढ प्रतिज्ञी के० केवली ब० बहुत वा० वर्ष के० केवली प० पर्याय पा० पालकर अ० अपना आ० आयुष्य शेष जा० जानकर भ० भक्त प्रत्याख्यान करेंगे ए० ऐसे ज० जैसे उ०

जहाणं अहं ॥ १९४ ॥ तएणं ते समणा णिग्गंथा दढपइण्णस्स केवलिस्स अंतिय एयमट्ठं सोच्चाणिसम्म भीया तत्था तासिया संसारभय उव्विग्गा दढ पइण्ण केवलिं वंदिहिति णमंसिहिति तस्स ठाणस्स आलोइएहिति निंदिहिति जाव पडिवज्जेहिति ॥ १९५ ॥ तएणं दढपइण्णे केवली बहूइ वासाइं केवलपरियागं पाउणिहिति २ त्ता अप्पाणं आउसेसं जाणित्ता भत्तपच्चक्खाहिति, एवं जहा उववाइए जाव सव्वदुक्खाणमंतं

गैतिक संसार में परिभ्रमण किया वैसा परिभ्रमण मत करो ॥ १९४ ॥ उस समय मे दृढ प्रतिज्ञी केवली की पास से ऐसा सुनकर अवधार कर श्रमण निर्ग्रंथ डरे, त्रास पाये, संसार से उद्विग्न बने और दृढ प्रतिज्ञी केवली को वंदना नमस्कार कर उस की आलोचना, निंदा यावत् प्रतिक्रमण करने लगे ॥ १९५ ॥ फीर दृढप्रतिज्ञी कुमार बहुत वर्ष पर्यंत केवली पर्याय पाल कर और अपना आयुष्य शेप जानकर भक्त

उववाइ में जा० यावत् स० सब दु० दुःखों का अं० अंत का० करेंगे से० वैसे ही भं० भगवन् जा०यावत् वि० विचरता है ते० तेज णि० णिसर्ग स० समाप्त हुवा अ० अध्ययन स० समाप्त प० पन्नरहवा स० शतक ए० एक स्वर वाला स० समाप्त प० पन्नरवा स० शतक ॥ १५ ॥ *

काहिति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ तेयणिसग्गो सम्मत्तो अट्ठणं ॥ सम्मत्तं पण्णरसमंसयं, एक सरय ॥ सम्मत्तंच पण्णरसमंसयं ॥ १५ ॥

प्रत्याख्यान करेंगे वगैरह सब वर्णन उववाइ में से जानना यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यों कहकर गौतम स्वामी विचरने लगे. तेज नीकलने रूप अध्ययन समाप्त हुवा. उद्देशा रहित पन्नरहवा शतक समाप्त हुवा ॥ १५ ॥

॥ षोडश शतकम् ॥

अ० अधिकरणि ज० जरा क० कर्म जा० यावतिय गं० गंगदत्त सु० स्वप्न उ० उपयोग लो० लोक व० वलि ओ० अवधि दी० द्वीप उ० उदधि दि० दिशा थ० स्तनित च० चउदह सो० सोलहवे में ते० उस काल ते० उस समय में रा० राजगृह जा० यावत् प० पर्युपासना करते ए० ऐसा व० बोले अ० है भं० भगवन् अ० एरण में वा० वायु व० उत्पन्न होवे हं० हां अ० है से वह भं० भगवन् पु० स्पर्शा हुवा

अहिगरणि जराकम्मे जावतियं गंगदत्त समिणेय ॥ उवओग ॥ लोग बलि ओहि दीव उदही दिसा थणिया ॥ १ ॥ चउद्दस सोलसमे ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी अत्थिणं भंते ! अधिकरणंमि वाउयाए

पन्नरहवे शतक में गोशाला का एकेंद्रियादिक में जन्म मरण करने का कहा. अब सोलहवे शतक में भी जीव के जन्म मरण कहते हैं. १ अधिकरणि सो लोहार की लोह कुटने की एरण २ जरा ३ कर्म ४ जाव तिय ५ गंगदत्त देव की वक्तव्यता ६ स्वप्न ७ उपयोग ८ लोक ९ वलि १० अवधि ११ द्विप कुमार १२ उदधि कुमार १३ दिशाकुमार और १४ स्तनित कुमार. ये चउदह उद्देशे सोलहवे शतक में कहे हैं. उस काल उस समय में राजगृह नगर में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदने को आइ यावत् धर्मोपदेश सुनकर पीछी गइ. उस समय भगवान् गौतम स्वामी यावत् पर्युपासना करते ऐसा

उ० मरे अ० विना स्पर्शा हुवा गो० गौतम पु० स्पर्शा हुवा उ० मरे णो० नहीं अ० नहीं स्पर्शा उ० मरे से० वह किं० क्या स० शरीर सहित णि० नीकलता है ए० ऐसे ज० जैसे खं० स्कंदक जा० यावत् ते० इसलिये जा० यावत् णि० नीकलता है ॥ १ ॥ इं० खीरे करने वाली भं० भगवन् अ० अग्निकाय के० कितना का० काल सं० रहती है गो० गौतम ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट ति० तीन रा० रात्रि

वक्कमइ ? हंता अत्थि से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाइ अपुट्ठे उद्दाइ गोयमा ! पुट्ठे उद्दाइ, णो अपुट्ठे उद्दाइ ॥ से भंते ! किं ससरीरी णिक्खमइ असरीरी णिक्खमइ एवं जहा खंदए जाव से तेणट्ठेणं जाव णो असरीरी णिक्खमइ ॥ १ ॥ इंगालकारियाएणं भंते ! अगणिकाए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जहण्णेणं

बोले अहो भगवन् ! लोहे के घण मारने से क्या एरण में वायु उत्पन्न होता है ? हां गौतम ! एरण में वायु उत्पन्न होता है क्यों की वायु विना अग्नि नहीं होती है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या वह वायु स्पर्शी हुई मरे या विना स्पर्शी हुई मरे ? अहो गौतम ! स्पर्शी हुइ वायु मरे परंतु विना स्पर्शी हुइ वायु मरे नहीं. अहो भगवन् ! क्या वह शरीर सहित नीकलता है वगैरह जैसे स्कंदक का अधिकार कहा वैसे ही यावत् इस लिये यावत् अशरीरी नहीं नीकलता है वहां तक जानना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अंगार करने की अग्नि काय कितना काल पर्यंत रहती है ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट

१ यहां आक्रान्त के संभव से पहिला वायु सचेतनपने उत्पन्न होवे. सचेतन होजावे ऐसा संभव होता है..

दिन अ० अन्य भी इ० यहां वा० वायु व० उत्पन्न होता है ण० नविन वा० वायुकाय से अ० अग्निकाय उ० उज्वल होती है. ॥ २ ॥ पु० पुरुष भं० भगवन् अ० लोहा अ० एरण में अ० लोह की सं० संडासी से उ० नीकालते प० डालते क० कितनी कि० क्रियाओं गो० गौतम जा० जहांलग से० वह पु० पुरुष अ० लोहे को अ० एरण में अ० लोहमय सं० संडास से उ० नीकालता है प० डालता है ता० वहां लग से० वह पु० पुरुष का० कायिकादि जा० यावत् पा० प्राणातिपात कि० क्रिया पं० पांच कि० क्रिया से पु० स्पर्शाया जे० जिन जी० जीवों के स० शरीर से अ० लोहा णि० बना हुवा है अ० एरण सं०

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं अण्णवेत्थ वाउयाए वक्कमइ णविणा वाउयाएणं अगणिकाए उज्जलइ ॥२॥ पुरिसेणं भंते ! अयं अयकोट्ठंसि अयोमएणं संडासएणं उव्विहमाणेवा पव्विहमाणेवा कइकिरिए ? गोयमा ! जावंचणं से पुरिसे अयं अयकोट्ठंसि अयोमएणं संडासएणं उव्विहिंतिवा पव्विहिंतिवा तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाय किरिया पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपिणं जीवाणं सरीरेहिंतो

तीन अहो रात्रि. यहां अन्य वायुकाय भी उत्पन्न होवे क्योंकि वायुकाय विना अग्निकाय प्रदीप्त नहीं होती है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! लोहे की कोठि में रहे हुवे लोहे को लोहमय संडास से बाहिर नीकालते या अंदर प्रक्षेप करते कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! जबलग वह पुरुष लोहे के कोठे में रहा

संडासी णि० बनीहुइ इं० अग्नि इं० अंगार नींकालने की लकडी भं० धमण णि० बनी हुइ है ते० वे भी जी० जीव का० कायिकादि जा० यावत् पं० पांच कि० क्रियाओं से पु० स्पर्शा हुवा ॥ ३ ॥ पु० पुरुष भं० भगवत् अ० लोहाको अ० एरण में से अ० लोहमय सं० संडास से ग० लेकर अ० अधिकरणि में उ० नीकालते णि० डालते क० कितनी कि० क्रियाओं गो० गौतम जा० जहांलग से० वह पु० पुरुष अ० लोहे को अ० लोहे के कोठे में से जा० यावत् णि० नीकालते ता० वहां लग से० उस पु० पुरुष

अयणिव्वत्तिए अयकोट्ठे णिव्वत्तिए, संडासए णिव्वत्तिए, इंगाला णिव्वत्तिया, इंगालकड्ढणी णिव्वत्तिया भंच्छाणिव्वत्तिया तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥ ३ ॥ पुरिसेणं भंते ! अयं अयकोट्ठाओ अओमएणं संडासएणं गहाय अहिगरिणी उक्खिवमाणेवा णिक्खिवमाणेवा कइकिरिए ? गोयमा ! जावं-

हुवा लोहे को लोहमय संडास से बाहिर नीकाले या अंदर प्रक्षेप करे वहां लग उस पुरुष को कायिकी यावत् प्राणातिपातिकी ऐसी पांच क्रियाओं लगती हैं. और जिन जीवों के शरीर से लोहा बना, लोहे की कोठी बनी, संडास बना, अग्नि बनी, अग्नि नीकालने का शला बना, और धमण बनी, उन जीवों को भी कायिकी आदि पांच क्रियाओं स्पर्शी ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! लोहे का कोठे में रहा हुवा लोहे को लोहमय संडास से ग्रहण कर कोई पुरुष एरण में डाले अथवा नीकाले तो उस को कितनी क्रियाओं

को का० कायिकादि जा० यावत् पा० प्राणातिपातकि क्रिया पं० पांच से पु० स्पर्शाया जे० जिन जी० जीवों के स० शरीर से अ० लोहा बना सं० संडासबनी च० इथोडीबनी मु० लघुघन अ० अधिकरणि अ० अधिकरणी रखने का बना उ० पानी की दोनी अ० लोहकार शाला बनी ते० वे जी० जीव पं० पांच कि० क्रिया से पु० स्पर्शे ॥ ४ ॥ जी० जीव भं० भगवन् अ० अधिकरणी अ० अधिकरण गो०

चणं से पुरिसे अयं अयकोट्ठाओ जाव णिक्खिवइत्ता तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाय किरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपियणं जीवाणं सरीरेहिंतो अयणिव्वत्तिए संडासए णिव्वत्तिए, चम्मेट्ठए णिव्वत्तिए, मुट्ठिए णिव्वत्तिए अधिगरिणी णिव्वत्तिए अधिगरणिखोडी णिव्वत्तिए, उदगदोणी अधिगरणसाली णिव्वत्तिया तेवियणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥ ४ ॥ जीवेणं भंते ! अधि-

लगे ? अहो गौतम! जहां लग वह पुरुष लोह के कोठे में से लोहेको लोहे की संडासी से नीकाल कर एरण में डाले अथवा नीकले वहांलग उस पुरुष को कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं और जिन जीवों के शरीर से लोहा बना है, लोहमय संडास बनी है, चिमटा बना है, घण बना है, एरण बनी है, एरण रखने लकडी (खोडी) बनी है, प्रज्वलित लोहे को बुझाने के लिये रखी हुई पानी की कुंडी; और लोह-कार की शाला बनी हुई है उन जीवों को कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् !

गौतम जी० जीव अ० अधिकरणी भी से० अथ के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहागया जी० जीव अ० अधिकरणी भी अ० अधिकरण भी गो० गौतम अ० अविरति प० आश्री से० अथ ते० इसलिये जा० यावत् अ० अधिकरण भी शेष सरल शब्दार्थ

गरणी अहिगरणं? गोयमा! जीवे अधिगरणीवि अधिगरणंपि ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जीवे अधिगरणीवि अधिगरणंपि? गोयमा! अविरतिं पडुच्च से तेणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि ॥ णेरइएणं भंते! किं अधिगरणी अधिगरणं? गोयमा! अधिगरणीवि अधिगरणंपि ॥ एवं जहेव जीवे तहेव णेरइएवि ॥ एवं णिरंतरं जाव

जीव अधिकरणी[1] है या अधिकरण[2] है? अहो गौतम! जीव अधिकरणी भी है और अधिकरण भी है. अहो भगवन्! किस कारन से जीव अधिकरणी भी है और अधिकरण भी है? अहो गौतम! अविरति होने से बाह्य शस्त्र का मालिक सो अधिकरणी और शरीरादि शस्त्र रूप परिणपने से अधिकरण है. इस लिये जीव अधिकरणी भी है और अधिकरण भी है. अहो भगवन्! नारकी क्या अधिकरणी है या अधिकरण है? अहो गौतम! जैसे समुच्चय जीव का कहा ऐसे ही नारकी पर्यंत सब

१ अधिकरण को धारक. २ शस्त्र.

वेमाणिए ॥ ५ ॥ जीवेणं भंते ! किं साहिगरणी णिरहिगरणी ? गोयमा ! साहिगरणी णो णिरहिगरणी ॥ से केणट्ठेणं पुच्छा ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव णो णिरधिगरणी ॥ एवं जाव वेमाणिए ॥ ६ ॥ जीवेणं भंते ! किं आयाहिगरणी पराहिगरणी, तदुभयाहिगरणी ? गोयमा आयाहिगरणीवि, पराहिगरणीवि, तदुभयाहिगरणीवि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव तदुभयाहिगरणीवि ?

जीवों का यावत् वैमानिक पर्यंत जानना ॥५॥ अहो भगवन् ! जीव क्या अधिकरण सहित है या अधिकरण रहित है ? अहो गौतम ! जीव अधिकरण सहित है परंतु अधिकरण रहित नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव अधिकरण सहित है परंतु अधिकरण रहित नहीं है ? अहो गौतम ! अविरति आश्री वगैरह कारन से जीव अधिकरण सहित है. जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे ही वैमानिक पर्यंत चौवीस ही दंडक का जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव स्वतः के अधिकरणवाला है. पर के अधिकरणवाला या उभय के अधिकरणवाला है ? अहो गौतम ! जीव स्वतः के अधिकरणवाला; अन्य के अधिकरणवाला व उभय के अधिकरणवाला है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् उभय के अधिकरणवाला जीव है ? अहो गौतम ! अविरति आश्री इसलिये ऐसा कहा गया है.

गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव तदुभयाहिगरणीवि ॥ एवं जाव वेमाणिए ॥ ७ ॥ जीवाणं भंते ! अधिगरणं किं आयप्पओग णिव्वत्तिए, परप्पओग णिव्वत्तिए तदुभयप्पओग णिव्वत्तिए? गोयमा ! आयप्पओगणिव्वत्तिएवि, परप्पओगणिव्वत्तिं- एवि, तदुभयप्पओगणिव्वत्तिएवि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव तदुभयप्पयोग णिव्वत्तिएवि॥एवं जाव वेमाणियाणं॥ ८ ॥कइणं भंते! सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा! पंचसरीरगा पण्णत्ता, तंजहा-ओरालिय जाव कम्मए ॥ ९॥

यावत् उभय के अधिकरणवाला जीव है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जीव अधिकरण को अपने शरीर प्रयोग से बनाता है, अन्य के शरीर प्रयोग से बनाता है अथवा उभय के शरीर प्रयोग से बनाता है ? अहो गौतम ! अपने शरीर प्रयोग से बनाता है, पर के शरीर प्रयोग से बनाता है व उभय के शरीर प्रयोग से बनाता है, अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जीव आत्मप्रयोग से अधिकरण बनाता है यावत् उभयप्रयोगसे अधिकरण बनाता है ?अहो गौतम! अविराति आश्री इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् उभय के शरीर प्रयोग मे अधिकरण बनाता है ऐसे ही वैमानिक पर्यंत चौवीस दंडक का जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! शरीर कितने कहे ? अहो गौतम ! शरीर पांच कहे. जिन के नाम. १ उदारिक, २ वैक्रेय ३ आहारक ४ तेजस और ५ कार्माण ॥ ९ ॥ अहो भगवन् !

कइणं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचइंदिया पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदिए जाव फासिंदिए ॥ १० ॥ कइणं भंते ! जोए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तंजहा-मणजोए, वयजोए, कायजोए ॥ ११ ॥ जीवेणं भंते ओरालिय सरीरं णिव्वत्तिएमाणे किं अधिकरणी अधिगरणं ? गोयमा ! अधिगरणी अधिगरणंपि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अधिगरणीवि अधिगरणंपि ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि ॥ पुढवीकाइएणं भंते ! ओरालिय सरीरं णिव्वत्तिए

अर्थ

इन्द्रियों कितनी कहीं ? अहो गौतम ! इन्द्रियों पांच कहीं. श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! योग कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! योग तीन कहे हैं. मन योग; वचन योग और काया योग ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीरवाला जीव को क्या अधिकरणी है. या अधिकरण है ? अहो गौतम ! अधिकरणी भी है और अधिकरण भी है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीरवाला जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है ? अहो गौतम ! अविरति आश्री. इसलिये ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीरवाला जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है. ऐसे ही पृथ्वीकायादि पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय,

माणे किं अहिगरणी अधिकरणं, एवं चेव॥एवं जाव मणुस्से ॥एवं वेउव्विय सरीरंपि, णवरं जस्स अत्थि ॥ जीवेणं भंते ! आहारग सरीरं णिव्वत्तिएमाणे किं अधिगरणी पुच्छा ? गोयमा ! अधिगरणीवि, अधिगरणंपि ॥ से केणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि ? गोयमा ! पमादं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि, एवं मणुस्सेवि ॥ तेयासरीरं जहा ओरालियं णवरं सव्व जीवाणं भाणियव्वं ॥ एवं कम्मग सरीरंपि ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! सोइंदियं णिव्वत्तिएमाणे किं अधिगरणी अधिगरणं ? एवं जहेव

तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य का जानना, ऐसे ही जिस को वैक्रय शरीर हैं उन को भी कहना अहो भगवन् ! आहारक शरीर वाला जीव क्या अधिकरणी है या अधिकरण है ? अहो गौतम ! अधिकरणी है और अधिकरण भी है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि आहारक शरीर वाला जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है. अहो गौतम ! प्रमाद आश्री इसलिये ऐसा कहागया है यावत् अधिकरण भी है ऐसे ही मनुष्य का जानना (आहारक शरीर मात्र मनुष्य को होता है) तेजस और कार्माण का उदारिक शरीर जैसे जानना. परंतु इस में सब जीव कहना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय वाला जीव क्या अधिकरणी है या अधिकरण है ? अहो गौतम ! श्रोत्रेन्द्रिय वाला जीव अधि

ओरालिय सरीरं तहेव सोइंदियंपि भाणियव्वं, णवरं जस्स अत्थि सोइंदियं एवं चक्खिंदियं घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियाणिवि जाणियव्वं, जस्स जं अत्थि ॥ १३ ॥ जीवेणं भंते ! मणजोगेणिव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी अधिकरणं एवं जहेव सोइंदियं तहेव णिरवसेसं ॥ वइजोगं एवंचेव, णवरं एगेंदियवज्जाणं, एवं कायजोगेवि, णवरं सव्व जीवाणं जाव वेमाणिए ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सोलसमसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ १ ॥ ० ० ०

करणी है और अधिकरण भी है. वगैरह उदारिक शरीर जैसे जानना. ऐसे ही जीन जिवों को श्रोत्रेन्द्रिय हैं उन सब जीवों का पृथक् दंडक से जानना. और जैसे श्रोत्रेन्द्रिय का कहा वैसे ही चक्षुइन्द्रिय. घ्राणेन्द्रिय रसनेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रिय का जानना. ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! मनयोगी जीव क्या अधिकरणी है या अधिकरण है ? अहो गौतम ! मनयोगी जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है. जैसे श्रोत्रेन्द्रिय का कहा वैसे ही मनयोगी का जानना. एकेन्द्रिय वर्जकर सब वचन योगीवाले जीवों व सब काया योगीवाले जीवों का भी वैसे ही जानना. (एकेन्द्रिय में वचन योग नहीं है) अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह सोलहवा शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ १ ॥ ०

रा० राजगृह जा० यावत् व० ऐसा व० बोले जी० जीवों को भं० भगवन् ज० जरा सो० शोक गो० गौतम जी० जीवों को ज० जरा सो० शाक से० अथ के० कैसे भं० भगवन् जा० यावत् सो० शोक भी गो० गौतम जे० जिस से जी० जीव सा० शरीरिक वे० वेदना वे० वेदते हैं ते० उन जी०

रायगिहे जाव एवं वयासी जीवाणं भंते ! किं जरा सोगे ? गोयमा ! जीवाणं जरावि, सोगेवि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जाव सोगेवि ? गोयमा ! जेणं जीवा सारीर वेदणं वेदेंति तेसिणं जीवाणं जरा, जेणं जीवा माणसं वेदणं वेदेंति तेसिणं जीवाणं सोगे से तेणट्ठेण जाव सोगेवि ॥ एवं णेरइयाणवि ॥ एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ पुढवीकाइयाणं भंते ! जरा सोगे ? गोयमा ! पुढवीकाइयाणं जरा णो सोगे ॥

प्रथम उद्देशे में जीवों का कथन किया. जीवों जरा युक्त होने से दूसरे उद्देशे में जरा का कथन करते हैं. राजगृह नगर में यावत् ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! क्या जीव को जरा है या शोग है ? अहो गौतम ! जीवों को जरा भी है और शोग भी है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जीवों जरा व शोग दोनों युक्त हैं ? अहो गोतम ! जो जीव शारीरिक वदना वेदते हैं उन जीवों को जरा होती है और जो जीवों मानसिक वेदना वेदते हैं उन जीवों को शोग है. इस लिये ऐसा कहा गया है यावत् शोग है. ऐसे ही नारकी, असुरकुमार यावत् स्थनित कुमार का जानना. अहो भगवन् !

जीवों को ज० जरा जे० जो जी० जीव मा० मानसिक वे० वेदना वे० वेदते हैं ते० उन जी० जीवों को सो० शोक ऐ० ऐसे णे० नारकी को ए० एसे थ० स्तनितकुमार कुमार को ॥ १ ॥ ते० उस समय में स० शक्र दे० देवराजा व० वज्र पा० हस्त में पु० पुरंदर जा० यावत् भुं० भोगता हुआ वि० विचरता

से केणट्ठेणं जाव णो सोगे ? गोयमा ! पुढवीकाइयाणं सारीरं वेदणं वेदेंति णो माणसं वेदणं वेदेंति ॥ से तेणट्ठेणं जाव णो सोगे ॥ एवं जाव चउरिंदियाण ॥ सेसं जहा जीवाणं जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव पज्जुवासइ ॥ १ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे जाव भुंजमाणे

पृथ्वीकायिक जीवों को क्या जरा व शोग है ? अहो गौतम ! जरा है परंतु शोग नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है ? अहो गौतम ! पृथ्वीकायिक जीवों को मन नहीं होने से वे मानसिक वेदना नहीं वेदते हैं परंतु मात्र शारीरिक वेदना वेदते हैं; इसलिये जरा है परंतु शोक नहीं है. ऐसे ही अप्काय, तेउकाय, वायुकाय वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना. शेष तिर्यंच यावत् वैमानिक तक का समुच्चय जीव जैसे कहना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर यावत् पर्युपासना करने लगे ॥ १ ॥ उस काल उस समय में शक्र देवेन्द्र देवराजा हस्त में वज्र का आयुध सहित यावत् दीव्य भोगोपभोग भोगता हुवा विचरता था. उस समय में विपुल

था इ० इस के० संपूर्ण ज० जम्बूद्वीप को वि० विपुल ओ० अवधिज्ञान में आ० उपयोगलगाते पा० देखा स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ज० जम्बूद्वीप में ज० जैसे ई० ईशान त० तीसरे शतक में त० तैसे स० शक्र से ण० विशेष में आ० कार्य करने वाले को स० बोलाकर पा० पादात्यानिकाधिपति ह० हरि सु० सुघोष पा० पालक वि० विमान करने वाले पा० पालक विमान उ० उत्तर के निर्याणमार्ग दा० अग्नि कौन के र० रतिकर प० पर्वत से० शेप तं० वैसे जा० यावत् णा० नाम सा० सुनाकर प० पर्युपासना

विहरइ ॥ इमं चणं केवल कप्पं जंबूदीवं २ विउले ओहिणाणे आभोएमाणे २ पासइ, समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे जहा ईसाणे तइयसए तहेव सक्केणवि, णवरं आभिओगेणं सद्दावेइ पायत्ताणीयाहिवई हरी सुघोसघंटा, पालओ विमाणकारी, पालगंविमाणं, उत्तरिल्ले णिज्जाणमग्गे, दाहिण पुरच्छिमिल्ले रतिकर पव्वए सेसं तंचेव

अवधिज्ञान से इस जम्बूद्वीप को देखते २ इस जम्बूद्वीप में श्रमण भगवन्त महावीर को देखे. और जैसे ईशानेन्द्र का आने का तीसरे शतक के पहिले उद्देशे में वर्णन है वैसे ही शक्रेन्द्र भी आये विशेपता इतनी कि ईशानेन्द्रने आभियोगिक देवो को बोलाये, शक्रेन्द्रने बोलाये नहीं, ईशानेन्द्रने लघुपराक्रमवाला पादात्यनिक का अधिपति व नंदिघोप घण्टा ताडन करनेका आदेश किया. ईशानेन्द्र पुष्प विमान कारीथा और शक्रेन्द्र को पालक विमान कारी कहना, ईशान को पुष्पक विमान था और शक्रेन्द्र को

करने लगे ॥२॥ ध० धर्मकथा जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगइ ॥३॥ त० तब से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० पास से ध० धर्म सो० सुनकर णि० अवधार कर ह० हृष्ट तु० तुष्ट स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोला क० कितने भं० भगवन् उ० अवग्रह प० कहे स० शक्र पं० पांच प्रकार के उ० अवग्रह प० प्ररूपे तं० तद्यथा

जाव णामगं सावेत्ता पज्जुवासइ ॥ २ ॥ धम्मकहा जाव पडिगया ॥ ३ ॥ तएणं से सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी-कइणं भंते ! उग्गहे पण्णत्ते ? सक्का ! पंचविहे उग्गहे पण्णत्ते, तंजहा-देविंदोग्गहे, रायो-

पालक विमान था. व शक्रेन्द्र को उत्तर दिशि में आनेका द्वार है. ईशानेन्द्र नंदीश्वर द्वीप की ईशान कौन में रतिकर पर्वत पर उतरे थे. और शक्रेन्द्र अग्निकौन के रतिकर पर्वत पर उतरे वगैरह शेष सब अधिकार ईशानेन्द्र जैसे कहना यावत् अपना नाम कहकर सेवाभक्ति करने लगा ॥ २ ॥ भगवंतने धर्मकथा सुनाइ यावत् परिषदा पीछी गई ॥ ३ ॥ अब वह शक्र देवेन्द्र देवराजा श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास धर्म सुनकर हृष्ट, तुष्ट यावत् आनंदित हुवा और श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोला कि

दे० देवेन्द्र का अवग्रह रा० राजा का अवग्रह ग० गृहपति का उ० अवग्रह सा० आगार वाले का अवग्रह सा० स्वधर्मी का उ० अवग्रह ॥४॥ जे० जो इ० ये अ० आर्यपने म० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ वि० विचरते हैं ए० उन को० अ० मैं अ० अनुज्ञा देता हूं त्ति० ऐसा क० करके स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर त० उसी दि० दीव्य जा० यान विमानपे दु० आरूढ होकर जा० जिस दि० दिशि में से पा० आया ता० उस दि० दिशि में प० पीछा गया ॥ ५ ॥ भं० भगवन् भ० भगवान गो० गौतम स०

ग्गहे, गहवइउग्गहे, सागारियउग्गहे, साहम्मिय उग्गहे ॥ ४ ॥ जे इमे अज्जत्ताए समणा णिग्गंथा विहरंति, एएसिणं अहं उग्गहं अणुजाणामी तिकट्टु ॥ समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता तमेवदिव्वं जाणविमाणं दुरूहइ, दुरूहइत्ता जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ ५ ॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं

अहो भगवन् ! अवग्रह कितने कहे हैं ? अहो शक्र ! अवग्रह के पांच भेद कहे हैं. जिन के नाम. १ देवेन्द्र का अवग्रह २ राजा का अवग्रह ३ गृहपति का अवग्रह ४ आगारी का अवग्रह और ५ स्वधर्मी का अवग्रह ॥ ४ ॥ भगवंत महावीर स्वामी से ऐसा सुनकर इन्द्र बोला कि अहो भगवन् ! जो श्रमण निर्ग्रंथ यहां पर आर्यपने विचरते हैं उन सब को मैं अवग्रह देता हूं यावत् अच्छा जानता हूं. ऐसा कहकर श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर उस ही पालक विमान में बैठकर जिस दिशि में से आए थे

श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० णमस्कार कर ए० ऐसा व० बोला जं० जो भ० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा तु० आप को ए० ऐसा व० बोला स० सत्य ए० यह अ० अर्थ हं० हां स० सत्य ए० यह अ० अर्थ ॥ ६ ॥ स० शक्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा किं० क्या स० सम्यग्वादी मि० मिथ्यावादी गो० गौतम स० सम्यगवादी णो० नहीं मि० मिथ्यावादी ॥ ७ ॥ स० शक्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा किं० क्या स० सत्य भा० भाषा भा० बोलते है मो० मृषा

भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी-जंणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया तुब्भे एवं वदाति सच्चेणं एसमट्ठे ? हंता सच्चेणं ॥ ६ ॥ सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया किं सम्मावादी मिच्छावादी? गोयमा ! सम्मावादी णो मिच्छावादी ॥७॥ सक्केणं भंते! देविंदे देवराया किं सच्चं भासं भासइ, मोसं भासं भासइ, सच्चा मोसं

उसी दिशि में चले गये ॥ ५ ॥ भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र देवराजाने आपको जो बात कही. वह क्या सत्य है ? हां गौतम ! वह बात सत्य है ॥६॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र क्या सम्यक्वादी है या मिथ्यावादी है ? अहो गौतम ! वह सम्यक्वादी है परंतु मिथ्यावादी नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र देवराजा क्या सत्य भाषा बोलता है, मिथ्या भाषा बोलता है, सत्यमृषा भाषा बोलता है या असत्य मृषा भाषा बोलता है ? अहो

र्थ

भा० भाषा भा० बोलते हैं. स० सत्य मृषा भा० भाषा भा० बोलते हैं अ० असत्य मृषा भा० भाषा भा० बोलते हैं गो० गौतम स० सत्य भा० भाषा भा० बोलते हैं जा० यावत् अ० असत्यमृषा भा० भाषा भा० बोलते हैं ॥ ८ ॥ स० शक्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा किं० क्या सा० सावद्य भा० भाषा भा० बोलते हैं अ० अनवद्य गो० गौतम सा० सावद्य भा० भाषा भा० बोले अ० अनवद्य भा० भाषा भा० बोले से० अथ के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है सा० सावद्य अ० अनवद्य जा० जब स० शक्र दे० देवेंद्र दे० देवराजा सु० सूक्ष्मकाय णि० ढककर भा० भाषा भा० बोले ता० तब

भासं भासइ, असच्चामोसं भासं भासइ ? गोयमा ! सच्चंपि भासं भासइ जाव असच्चा मोसंपि भासं भासइ, ॥ ८ ॥ सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया किं सावज्जं भासं भासइ अणवज्जं भासं भासइ ? गोयमा सावज्जंपि भासं भासइ, अणवज्जंपि भासं भासइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सावज्जंपि जाव अणवज्जंपि भासं भासइ ? जाहेणं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं अणिजूहित्ताणं भासं भासइ ताहेणं सक्के देविंदे देवराया सावज्जं भासं भासइ, जाहेणं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं णिजूहित्ताणं भासं भा-

गौतम ! सत्य भाषा बोलता है यावत् असत्य मृषा भाषा भी बोलता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र क्या सावद्य भाषा बोले या अनवद्य बोले अहो गौतम ! सावद्य भाषा भी बोले अनवद्य भाषा भी बोले? अहो भगवन् ! किस कारन से दोनों प्रकार की भाषा बोले ? अहो

स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा अ० अनवद्य भा० भाषा भा० बोले से० अथ ते० इसलिये जा० यावत् भा० बोले ॥ ९ ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा किं० क्या भ० भवसिद्धिक अ० अभवसिद्धिक स० समदृष्टि मिं० मिथ्यादृष्टि ए० ऐसे ज० जैसे मो० मोक उ० उद्देशा स० सनत्कुमार जा० यावत् णो० नहीं अ० अचरिम ॥ १० ॥ जी० जीवों भं० भगवन् किं० क्या चे० चैतन्यकृत क० कर्म क० करते हैं अ० अचैतन्यकृत गो० गौतम जी० जीव चे० चैतन्यकृत क० कर्म क० करते हैं णो० नहीं अ० अचैतन्य

सइ ताहेणं सक्के देविंदे देवराया अणवज्जं भासं भासइ ॥ से तेणट्ठेणं जाव भासइ ॥ ९ ॥ सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए अभवसिद्धिए, सम्मदिट्ठीए, मिच्छादिट्ठीए एवं जहा मोओद्देसए सणंकुमारे जाव णो अचरिमे ॥ १० ॥ जीवाणं भंते ! किं चेयकडाकम्मा कज्जंति अचेयकडाकम्मा कज्जंति ? गोयमा ! जीवाणं

गौतम ! जब शक्र देवेन्द्र देवराजा मुखपे हस्त या वस्त्रादि लगाये विना बोले तब जीव रक्षण के अभाव से सावद्य भाषा बोले और जब मुखपे हस्त वस्त्रादि लगाकर बोले तब निरवद्य भाषा बोले. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् अनवद्य भाषा बोले ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र क्या भव-सिद्धिक, अभवसिद्धिक समदृष्टि मिथ्यादृष्टि वगैरह जैसे मोक उद्देशे में कहा वैसे ही सनत्कुमार यावत् अचरिम तक कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! जीव को क्या चैतन्य कृतकर्म है या अचैतन्य कृत कर्म है ?

कृत आ० आहारोपचित पो० पुद्गल बों० शरीरोपचित पो० पुद्गल क० कलेवरोपचित पो० पुद्गल त० त० तैसे ते० वे पो० पुद्गल प० परिणमते हैं ण० नहीं हैं अ० अचैतन्यकृत क० कर्म स० श्रमण आ० आयुष्मन् दु० दुःस्थान दु० दुःशैय्या दु० खराब स्वाध्याय त० तैसे ते० वे पो० पुद्गल प० परिणमते हैं

चेयकडाकम्मा कज्जंति णो अचेयकडाकम्मा कज्जंति ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव कज्जंति ? गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोंदिचिया पोग्गला, कडे वरचिया पोग्गला, तहा २ णं ते पोग्गला परिणमंति, णत्थि अचेयकडा कम्मा ॥ समणाउसो ! दुट्ठाणेसु, दुस्सेज्जासु, दुण्णिसीहियासु तहा २ णं ते पोग्गला परिणमंति

अहो गौतम ! जीव चैतन्य कृत कर्म करते हैं परंतु अचैतन्य कृत कर्म नहीं करते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् अचैतन्य कृत कर्म नहीं करते हैं ? अहो गौतम ! जीवों को आहाररूपपने संचित पुद्गल, शरीर रूप पुद्गल व कलेवर रूप पुद्गल उन आहारादिक के लिये परिणमे इसलिये अचैतन्य कृत कर्म नहीं है. अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! दुष्ट स्थान, दुष्ट शैय्यासन, शीत आतापादि युक्त कायोत्सर्ग में दुःखोत्पत्तिरूप हो असातारूप परिणमे इसलिये भी अचैतन्य कृत कर्म नहीं है. अहो आयुष्यवन्त श्रमणो ! ज्वरादि रोगांतक कष्ट व मरणांतिक कारण रूप होवे, संकल्प विकल्प भी

ण० नहीं है अ० अचैतन्यकृत क० कर्म आ० कष्टकारी व० वध के लिये हो० होते हैं सं० संकल्प व० वध के लिये हों० होते हैं म० मरणांत से० अंत व० वध के लिये हों० होते हैं त० तैसे ते० वे पो० पुद्गल प० परिणमते हैं ण० नहीं है अ० अचैतन्यकृत क० कर्म ते० इसलिये जा० यावत् क० कर्म क० करते हैं ए० ऐसे णे० नारकी को ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक को ॥ १६ ॥ २ ॥ *

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितनी भं० भगवन् क० कर्म प्रकृतियों प० प्ररूपी

णत्थि अचेयकडा कम्मा ॥ समणाउसो ! आयंके से वहाए होंति, संकप्पे सेवहाए होंति, मरणंते से वहाए होंति, तहा तहाणं ते पोग्गला परिणमंति, णत्थि अचेयकडा कम्मा ॥ से तेणट्ठेणं जाव कम्मा कज्जंति ॥ एवं णेरइयाणवि, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ सोलसमस्स वितिओ उद्देसो सम्मत्तो॥ १६॥२॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-कइणं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ

अर्थ

जीव को मरणांतिकादि कारण होवे उस प्रकार पुद्गल परिणमे इसलिये अचैतन्य कृत कर्म नहीं. परंतु चैतन्य कृत कर्म करता है. इसलिये यावत् कर्म करे. यह कथन नरक से लगाकर वैमानिक पर्यंत चौविस दंडक का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह सोलहवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ २ ॥ ० ० ०

दूसरे उद्देशे में कर्म का कथन किया. आगे भी उस का ही विशेष वर्णन करते हैं. राजगृह नगर के

गो० गौतम अ० आठ क० कर्म प्रकृतियों प० प्ररूपी तं० तद्यथा णा० ज्ञानावरणीय जा० यावत् अं० अंतराय ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक सरल ॥ १ ॥ सरल ॥ २ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवंत

कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ तंजहा-णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं एवं जाव वेमाणियाणं ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदमाणे कइ कम्मपगडीओ वेदेइ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ एवं जहा पण्णवणाए वेयावेउद्देसओ सोचेव णिरवसेसो भाणियव्वो ॥ वेदाबंधोवि तहेव ॥ बंधावेदोवि तहेव बंधाबंधेवि तहेव भाणियव्वो, जाव वेमाणियाणत्ति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ! जाव विहरइ ॥ २ ॥ तएणं समणे

गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! कर्मप्रकृतियों कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! आठ कर्म प्रकृतियों कही. १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय यावत् अंतराय. ऐसे ही वैमानिक तक कहना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म वेदता हुवा कितनी कर्म प्रकृतियों वेदे ? अहो गौतम ! आठ कर्म प्रकृतियों वेदे. ऐसे ही जैसे पन्नवणा में वेदका उद्देशा कहा वैसे ही यहां निरवशेष सब कहना. वेद बंध, बंधवेद व बंध बंध यह सब वैसे ही जानना. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर भगवान्

म० महावीर अ० अन्यदा क० कदापि रा० राजगृह ण० नगर के गु० गुणशील चे० उद्यान से प० नीकलकर ब० बाहिर ज० जनपद वि० विहार वि० विचरने लगे ॥ ३ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में उ० उल्लुकातीर ण० नगर हो० था त० उस उ० उल्लुकातीर ण० नगर की ब० बाहिर उ० ईशान कौन में ए० यहां ए० एक जम्बू चे० उद्यान ॥ ४ ॥ अ० अनगार भा० भावितात्मा छ० छठ के

भगवं महावीरे अण्णयाकयायि रायगिहाओ णयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमइत्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ ३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयातीरे णामं णयरे होत्था, वण्णओ ॥ तस्सणं उल्लुयातीरस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थणं एगजंबुए णामं चेइए होत्था, वण्णओ ॥४॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव एगजंबुए समोसढे जाव परिसा पडिगया ॥४॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं

गौतम स्वामी विचरनेलगे. ॥ २ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर राजगृह नगरके गुणशील उद्यान में से नीकलकर बाहिर विचरने लगे ॥३॥ उस काल उस समय में उल्लुया तीर नाम का नगर था वह वर्णनयोग्य था. उस उल्लुका तीर नगर की बाहिर ईशान कौन में एकजंबुक नाम का उद्यान था ॥ ॥ ४ ॥ उस समय में श्रमण भगवंत महावीर एकदा पूर्वानुपूर्वि चलते ग्रामानुग्राम विचरते यावत्

अ० निरंतर जा० यावत् आ० आतापनालेते त० उस को पु० पूर्व के अ० आधा दि० दिन में णो० नहीं क० कल्पता है ह० हस्त पा० पांव जा० यावत् उ० जंघा आ० संकुचित करने को प० प्रसारने को प० पश्चिम के अ० अर्ध दि० दिवस में क० कल्पता है ह० हस्त पा० पांव जा० यावत् उ० जंघा आ० संकुचित करने को प० प्रसारने को त० उस को अ० मसा लं० अवलंबता है तं० उसे वि० वैद्य

वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-अणगारस्सणं भंते ! भावियप्पणो छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणस्स तस्सणं पुरच्छिमेणं अवड्ढं दिवसं णो कप्पइ हत्थंवा पायंवा जाव उरुंवा आउंट्टावेत्ताएवा पसारेत्तएवा, पच्चच्छिमेणं अवड्ढदिवसं कप्पइ हत्थंवा पादंवा जाव उरुंवा आउंट्टावेत्ताएवा पसारेत्ताएवा, ॥

एकजम्बू उद्यान में यथाप्रतिरूप अवग्रह याचकर पधारे. परिषदा वंदन करने को आइ यावत् धर्मोपदेश सुनकर पीछीगइ. ॥४॥ श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर भगवान् गौतम स्वामी पुछने लगे अहो भगवन् ! निरंतर छठ२ की तपस्याकरनेवाले यावत् आतापना लेनेवाले अनगार को दिन के पूर्वार्ध भाग में कायोत्सर्ग होने से हस्त पांव, यावत् उस को संकुचित करने व पसारने का नहीं कल्पता है और दिन के पश्चिमार्ध भाग में हस्त, पांव, यावत् उस को पसारने का व संकुचित करने का कल्पता है. अब कर्मोदय से उन को मसा (हरस) का रोग हुवा होवे और वह वैद्य की दृष्टि में आवे, वैद्य

अ० देखा इ० ऋषिको पा० गिराकर अं० ममा छिं० छेदे मे० अथ णू० शंकादर्शी जे०जो छिं० छेदे त० उसको क० कितनी कि० क्रियाओं ज० जिसे छि० छेदा णो० नहीं त० उसे कि० क्रिया ण० नहीं है अ० सिवाय ध० धर्मांतराय हं० हां गो० गौतम जे० जो छिं० छेदात्र जा० यावत् ध० धर्मांतराय से० वैसे ही भं० भगवन् सो० सोलहवा स० शतक का त० तीसरा उ० उद्देशा स० समाप्त ॥ १६ ॥ ३ ॥

तस्सय अंसियाओ लंबइ, तंचेव विज्जे अदक्खु इसिं पाडेइ पाडेइत्ता अंसियाओ छिंदेज्जा ॥ सेणूणं भंते ! जे छिंदेज्जा तस्स कइ किरिया कज्जइ ? जस्स छिज्जइ णो तस्स किरिया कज्जइ ॥ णण्णत्थेगेणं धम्मंतराइएणं ? हंता गोयमा ! जे छिंदइ जाव धम्मंतराइएणं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सोलसमस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो॥ १६॥३॥

उसे देखकर ध्यानरत मुनि को जमीनपर गिरादेवे और उस मस्सा के अंश का छेदन करे. अब अहो भगवन्! उस छेदन करने वाला वैद्य को कितनी क्रियाओं लगे? अहो गौतम ! जो छेदता है उस को क्रिया लगती है, और जो मुनि ध्यानस्थ थे उन को धर्म करने में जो व्याघात हुइ वह अंतराय क्या लगती है ? हां गौतम ! हरस छेदते धर्मध्यान में जो व्याघात हुइ वह अंतराय अवश्य लगती है. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं. यह सोलहवा शतक का तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ ३ ॥

नहीं लगती है, क्योंकी व्यापार रहित मात्र साधु के लिये कर्तव्य करता था.

जा० जितने भं० भगवन् अ० अन्न में गि० ग्लान स० श्रमण णि० निग्रन्थ क० कर्म णि० निर्जरते हैं ए० इतने क० कर्म ण० नरक में णे० नारकी को वा० वर्ष से० वा० बहुत वर्षों से वा० वर्ष शत से ख० क्षयकरे णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ ॥ १ ॥ सरल ॥ २ से ५ ॥ से० अथ के० कैसे भं०

रायगिहे जाव एवं वयासी जावइयं णं भंते ! अण्णगिलायए समणे णिग्गंथे कम्मं णिज्जरेति, एवइयं कम्मं णरएसु णेरइयाणं वासेणं वासेहिंवा वाससएणवा खवेंति? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ १ ॥ जावइयं णं भंते ! चउत्थभत्तिए समणे णिग्गंथे कम्मं णिज्जरेति एवइयं कम्मं णरएसु णेरइया वाससएणवा, वाससतेहिंवा, वाससहस्सेणवा खवयंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ २ ॥ जावइयंणं भंते ! छट्ठ भत्तिए समणे णिग्गंथे

तीसरे उद्देशे में अनगार की वक्तव्यता कही. आगे भी उसको ही कहते हैं. राजगृह नगर में गुणशील उद्यान में यावत् गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! अन्नविना ग्लानि पानेवाले श्रमण निर्ग्रंथ [कुरगडुवत्] जितने कर्म की निर्जरा करे उतने कर्मों को क्या नारकी नरक में एक वर्ष में, बहुत वर्षों में या सो वर्ष में क्षय करे? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है॥१॥ अहो भगवन्! चौथ भक्त (एक उपवास) का तप करता हुवा श्रमण निर्ग्रंथ जितने कर्म का क्षय करे उतने कर्म नरक में रहा हुवा नारकी सो वर्ष में प्रत्येक सो वर्ष में या सहस्र वर्ष में क्या खपावे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ २ ॥ अहो

कम्मं णिज्जरेंति एवइयं कम्मं णरएसु णेरइया वाससहस्सेणवा वाससहस्सेहिंवा वास सयसहस्सेणवा खवयंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ३ ॥ जावतियं णं भंते ! अट्ठम-भत्तिए समणे णिग्गंथे कम्मं णिज्जरेइ एवइयं कम्मं णरएसु णेरइया वाससयसहस्सेणवा वाससयसहस्सेहिंवा वासकोडीएवा खवयंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ४ ॥ जावइयंणं भंते ! दसमभत्तिए समणे णिग्गंथे कम्मं णिज्जरेइ एवइयकम्मं णरएसु णेरइया वासकोडीएवा वासकोडीहिंवा वासकोडाकोडीएवा खवयंति? णो इणट्ठे समट्ठे ॥५॥से

भगवन् ! छठ भक्त (बेला) की तपश्चर्या करता हुवा श्रमण निर्ग्रंथ जितने कर्म खपावे उतने कर्मों क्या नरक में रहा हुवा नारकी सहस्र वर्ष में, प्रत्येक सहस्र वर्ष में, या लक्ष वर्ष में खपावे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अर्थात् नहीं खपावे ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! अठम भक्त [तेले] की तपश्चर्या करता हुवा श्रमण निर्ग्रंथ जितने कर्म खपावे उतने कर्म नरक में नारकी लक्ष वर्ष में प्रत्येक लक्ष वर्ष में, या क्रोड वर्ष में क्या खपावे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! दशम भक्त (चोला) करता हुवा श्रमण निर्ग्रंथ जितने कर्म निर्जरे उतने कर्म नरक में रहे हुवे नारकी क्या क्रोड वर्ष में, प्रत्येक क्रोड वर्ष में अथवा क्रोडाक्रोड वर्ष में क्या खपावे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य

भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है जा० जितने यावत् णो० नहीं ख० खपाते हैं गो० गौतम से० अथ ज० जैसे के० कोई पु० पुरुष जु० जीर्ण ज० वृद्धावस्था से ज० जर्जिरतदे हवाला सि० शिथिल व० वाले त० तरंग सं० छिद्रवाले गा० गात्र प० विखरी हुई प० पडी हुई दं० दांतश्रेणी उ० उष्णाभिहत त० तृषा से अ० पराभूत आ० आतुर झुं० खेदित पि० तृषा पि० तृषातुर दु० दुर्बल कि० का हुवा ए० एक म० बडा को० कसुंवे वृक्ष (खाखरा) गं० खण्ड सु० शुष्क ज० जटावाला गं० गांगे वाला चि० चीकना

केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जावइयं अण्णगिलायए समणे णिग्गंथे कम्मं णिज्जरेइ एवइयं कम्मं णरएसु णेरइया वासेणवा वासेहिंवा, वाससएणवा णो खवयंति, जावइयं चउत्थभत्तिए एवं तंचेव पुव्वभणियं उच्चारेयव्वं जाव वासकोडाकोडीए वा णो खवयंति? गोयमा ! से जहा णामए केइ पुरिसे जुण्णे जराजज्जरिय देहे सिढिलतया वलितरंगसंपिणद्धगत्ते पविरलपरिसडिय दंतसेढी उण्हाभिहए तण्हाभिहए आतुरे

नहीं है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि अन्नविना ग्लानी उत्पन्न होवे वैसे श्रमण निर्ग्रंथ जितने कर्मों को क्षय करे उतने कर्मों नरक में रहे हुवे नारकी एक वर्ष में, प्रत्येक वर्ष में अथवा सो वर्ष में नहीं क्षय करते हैं वैसे ही एक उपवास करते हुवे श्रमण निर्ग्रंथ जितने कर्मों की निर्जरा करे उतने कर्मों की निर्जरा नरक में रहे हुवे नारकी सो वर्ष में, प्रत्येक सो वर्ष अथवा सहस्र वर्ष में नहीं कर

वा० विशिष्ट द्रव्य से नीपना अ० धारा रहित मुं० मुंड प० कुहाडा से अ० छेदे त० तव से० वह पु० पुरुष म० बडे स० शब्द क० करे णो० नहीं म० बडे द० टुकडे अ० करे ए० ऐसे गो० गौतम् णे० नारकी को पा० पापकर्म गा० गाढकिये हुवे चि० चीकने किये हुवे ए० ऐसे ज० जेसे छ० छठे शतक

झुंझिते पिवासिए दुव्वले किलंते एगं महं कोसंबगंडियं सुक्कं जडिलं गंठिल्लं चिक्कणं वाइद्धं अपत्तियं मुंडेणं परसुणा अक्कमेज्जा; तएणं से पुरिसे महंताइं सद्दाइं करेइ, णो महंताइं २ दलाइं अवदालेइ, एवामेव गोयमा ! णेरइयाणं पावाइं कम्माइं

सकते हैं यावत् चौला करते हुवे श्रमण निर्ग्रंथ जितने कर्मों की निर्जरा करे उतने कर्मों की निर्जरा नरक में रहे हुवे नारकी क्रोड वर्ष में, प्रत्येक क्रोड वर्ष में अथवा क्रोडाक्रोड वर्ष में भी नहीं कर सकते हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष जीर्ण, वृद्धावस्था से जर्जरित देहवाला व शिथिल त्वचावाला होवे, जिस के गात्रों में करचलियों पडगइ होवे, जिस के दांत की श्रेणीखकर विखर होगइ होवे, अथवा दांत पडे गये होवे वैसा, ऊष्णता व तृषा से पराभव पाया हुवा, दरिद्रि, क्षुधावंत, पिपासु, दुर्बल, व थका हुवा होवे. वह सूका जटावाला, गांठोंवाला चिक्कना व विशिष्ट द्रव्य से बना हुवा एक कसूवे (खांखरे) पलास वृक्ष को धारा रहित कुहाडे से काटने में प्रवर्ते. तव वह पुरुष बहुत बडे२ शब्दों करे परंतु उस काष्ट का विशेष भाग छेदन कर सके नहीं. ऐसे ही अहो गौतम ! नारकी के पाप कर्मों गाढे व चीकने वगैरह जैसा छठे

में जा० यावत् णो० नहीं म० महापर्यवसान वाले भ० होते हैं ॥ ६ ॥ से० अथ ज० जैसे के० कोई पु० पुरुष अ० एरण आ० तोडते म० बडे जा० यावत् णो० नहीं प० पर्यवसानवाले भ० हैं ॥ ७ ॥ त० तरुण ब० बलवंत जा० यावत् मे० बुद्धिमान णि० णिपुण सि० शिल्प में ए० एक म० बडा स० शाल्मली का गं० जड उ० भीना अ० जटा रहित अ० गांठों रहित अ० चिक्कास रहित अ० खराब द्रव्य से बना स० धारवाला अ० तीक्ष्ण प० कुहाडा से अ० छेदे त० तब से० वह म० बडे २ स० शब्द क०

गाढीकयाइं, चिक्कणी कयाइं एवं जहा छट्ठसए जाव णो महापज्जवसाणा भवंति ॥ ६ ॥ से जहा णामए केइ पुरिसे अहिगरणे आउडेमाणे महता जाव णो पज्जवसाणा भवंति ॥ ७ ॥ से जहा णामए केइ पुरिसे तरुणे बलवं जाव मेहावी णिपुणसिप्पोवगए एगं महं समालिगंडियं उल्लं अजडिलं अगंठिल्लं अचिक्कणं अवाइद्धं सपत्तियं अतितिक्खेण परसुणा अक्कम्मेज्जा, तएणं से पुरिसे णो महंताइं २ सद्दाइं

शतक में कहा वैसा यावत् महापर्यवसानवाले नहीं हैं ॥ ६ ॥ और भी जैसे कोई पुरुष लोहकारादिक की एरण कूटते उस का विनाश बहुत कठिनता से कर सकते हैं वैसे ही नरक में रहे हुवे नारकी कर्मों का अंत भी नहीं कर सकते हैं ॥ ७ ॥ और भी जैसे तरुण, बलवंत, यावत् बुद्धिमान सब कारिगरि में निपुण ऐसा कोई पुरुष एक बडा हरा, जडा, व गांठों रहित चिक्कास विना का एक बडा एरंडादि वृक्ष

करे म० बडे २ द० टुकडे अ० करे ए० ऐसे गो० गौतम स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ को अ० यथा बादर क० कर्म सि० सिथिल क० किये हुवे णि० सत्ता रहित जा० यावत् खि० शीघ्र प० नष्ट भ० होते हैं जा० जब ता० तब जा० यावत् प० पर्यवसान भ० होते हैं ॥ ८ ॥ से अथ ज० जैसे के० कोई पु० पुरुष सु० शुष्क त० तृणहस्त जा० यावत् ते० अग्नि प० डाले ए० ऐसे ज० जैसे छ० छठे स० शतक में त०

करेइ, महंताइं २ दलाइं अवदालेइ, एवामेव गोयमा! समणाणं णिग्गंथाणं अहाबादराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं णिट्ठु जाव खिप्पामेव परिविद्धत्थाइं भवंति, जावइयं तावइयं जाव पज्जवसाणा भवंति ॥८॥ से जहा वा केइ पुरिसे सुक्के तणहत्थगं जाव तेयंसि पक्खिवेज्जा, एवं जहा छट्ठसए तहा अयोकवल्लेवि जाव पज्जवसाणा भवंति

को धारवाले परशु से काटे उस समय वह बडे २ शब्दों करे, वैसे ही उस को विदारते बहुत परिश्रम नहीं होता है. ऐसे ही अहो गौतम ! श्रमण निर्ग्रंथ के यथाबादर कर्मों शिथिलीभूत. यावत् शीघ्र नष्ट होवे वैसे होते हैं. और पर्यवसानवाले भी होते हैं ॥ ८ ॥ और जैसे कोई पुरुष सुका हुवा घास आग्नि में डाले वगैरह जैसे छठे शतक में कहा वैसे ही यहां कहना यावत् सब कर्मों का पर्यवसान होवे. और भी जैसे तपे हुवे लोहे पर पानी का बिन्दु कोई पुरुष डाले तो वह शीघ्र नष्ट होता है वैसे ही श्रमण निर्ग्रंथ के कर्मों पर्यवसानवाले होते हैं. अहो गौतम ! इस कारन से ऐसा कहा गया है कि अन्न में ग्लानि पाने-

तैसे अ० लोहमय जा० यावत् प० पर्यवसान भ० होते हैं ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु०कहा गया जा० जितने में अ० अन्न में ग्लान स० श्रमण णि० निर्ग्रंथ क० कर्म णि० निर्जरते हैं ते० वैसे को० कोडाकोडी में णो० नहीं ख० क्षय करते हैं ॥ १६ ॥ ४ ॥ ० ०

तें० उस का० काल तें० उस स० समय में उ० उल्लुका तीर ण० नगर हो० था व० वर्णन युक्त

से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जावइयं अण्णगिलायए समणे णिग्गंथे कम्मं णिज्जरेइ तंचेव जाव कोडाकोडीएवा णो खवयंति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ! जाव विहरइ ॥ सोलसमस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ ४ ॥ ० ०

तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयातीरे णामं णयरे होत्था वण्णओ ॥ एगजंबुए

वाले श्रमण निर्ग्रंथ जितने कर्मों की निर्जरा करे उतने कर्मों की निर्जरा नरक में रहे हुवे नारकी वर्ष में, प्रत्येक वर्ष में या सो वर्ष में नहीं कर सकते हैं यावत् चोले करनेवाले श्रमण निर्ग्रंथ जितने कर्मों की निर्जरा करते हैं उतने कर्मों की निर्जरा नरक में रहे हुवे नारकी क्रोड वर्ष में, प्रत्येक क्रोड वर्ष में व कोडाक्रोड वर्ष में भी नहीं कर सकते हैं. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सोलहवा शतक का चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ ४ ॥ ० ०

चतुर्थ उद्देशे में निर्जरा का कथन किया. अब आगे देवता की आगमनादि शक्ति स्वरूप कहते हैं.

ए० एक जम्बू चे० उद्यान ते० उस काल ते० उस समय में सा० स्वामी स० पधार जा० यावत् प० पर्युपासना करने लगी ॥ १ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० शक्र दे०देवेन्द्र दे० देवराजा व० हस्त में वज्रवाले ए० ऐसे ज० जैसे वि० द्वीतीय उ० उद्देशे में त० तैसे दि० दीव्य जा० यान वि० विमान से आ० आया जा० यावत् जे० जहां स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० वहां उ० आकर जा० यावत् ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले दे० देव भं० भगवन म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

चेइए वण्णओ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएण सामी समोसढे जाव पज्जुवासइ ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी एवं जहेव बितिए उद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणाविमाणेणं आगओ, जाव जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता जाव णमंसित्ता एवं वयासी—देवेणं भंते ! महिड्ढिए

उस काल उस समय में उल्लुका तीर नामक नगर वर्णन योग्य था. उस की ईशान कौन में एक जम्बूक उद्यान था. उस काल उस समय में स्वामी पधारे परिषदा वंदन करने को आइ यावत् पर्युपासना करने लगी ॥ १ ॥ उस काल उस समय में हस्त में वज्र धारन करनेवाला वगैरह जैसे दूसरे उद्देशे में कहा वैसे गुणों सहित शक्र देवेन्द्र यान विमान से आया. यावत् जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी थे वहां गया और श्री श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार कर बोला कि अहो भगवन्! महर्द्धिक यावत् महा सुख

महा सुखवाले बा० बाहिर के पो० पुद्गल अ० ग्रहण किये विना प० समर्थ आ० आने को णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक ए० ऐसा ए० इस अ० अभिलाप से ग० जाने को ए० ऐसे भा० बोलने को वि० प्रश्न पूछने को उ० उन्मेप करने को नि० निमेप करने को आ० संकुचित करने को प० प्रसारने को ठा० स्थान से० शैय्या नि० निषिद्या वे० जानने को वि० वैक्रेय करने को प० परिचारणा करने को जा० यावत् हं० हां प० समर्थ इ० ये अ० आठ उ० संक्षिप्त प०

जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू आगमित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे देवेणं भंते! महिड्ढिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू आगमित्तए ! हंता पभू देवेणं भंते ! महिड्ढिए एवं एएणं अभिलावेणं गामित्तए २, एवं भासित्तएवा, वियागरित्तएवा ३, उंमिसावेत्तएवा निम्मिसावेत्तएवा ४, आउंट्टावेत्तएवा पसारेत्तएवा ५, ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा, वेत्तित्तएवा ६, एवं विउव्वित्तएवा ७, एवं परि-

वाला देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना क्या आने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना यहां आने को समर्थ नहीं है. अहो भगवन् ! महर्द्धिक व महासुखवाला देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर क्या यहां आ सकते हैं ? हां गौतम ! बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर यहां आ सकते हैं. जैसे आने का आलापक कहा वैसे ही जाने का, बोलने का उत्तर देने का, आंखों ढकने का, आंखों खोलने का, संकुचन व प्रसारन करने का, शैय्या, ध्यान व कायोत्सर्ग

प्रश्न वा० व्याकरण पु० पुछकर सं० संभ्रांत वं० वंदन से वं० वंदना कर ता० उसी दि० दीव्य जा० यान विमानपे दु० आरूढ होकर जा० जिस दिशी से पा० प्रगट हुवा ता० उसी दिशि में प० पीछा गया ॥ २ ॥ भं० भगवन् भ० भगवान गो० गौतमने स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले अ० अन्यदा भं०भगवन् स०शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा दे० आपको वं० वंदना करता है ण० नमस्कार करता है जा० यावत् प० पर्युपासना करना है किं० क्या भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा दे० देवानुप्रिय को अ० आठ सं० संक्षिप्त प० प्रश्नोत्तर

याएत्तएवा। ८, जाव हंता पभू इमाइं अट्ठ उक्खित्त पासिणवागरणाइं पुच्छइ संभतिय वंदणएणं वंदेइ वंदेइत्ता तमेव दिव्वं जाण विमाणं दुरूहइ दुरूहइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ २ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी अण्णदाणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं वंदइ णमंसइ जाव पज्जुवासइ ॥ किण्णं भंते ! सक्के देविंदे

करने का, वैक्रेय करने का और परिचारणा करने का यों आठ आलापक कहना. ऐसे आठ आलापक वाले प्रश्नों पुछकर संभ्रांत वंदना नमस्कार कर उस ही यान विमान में बैठकर जिस दिशा से आया था वहां पीछा गया ॥ २ ॥ उस समय भगवंत गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोला कि अहो भगवन् ! जब शक्र देवेन्द्र देवराजा आते हैं. तब आपको वंदना नमस्कार यावत्

पु० पुछकर सं० संभ्रांत वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर जा० यावत् प० पीछा गया गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर भ० भगवान गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे गो० गौतम ते० उस काल ते० उस समय में म० महा शुक्र क० देवलोक में म० महा सामानिक वि० विमान में दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महा सुखवाले ए० एक वि० विमान में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुवे तं० तद्यथा मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्नक अ० अमायी स० सम्यक्दृष्टि उ० उत्पन्नक त० तब से० वह मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्नक दे० देवने मा० मायी समदृष्टि उत्पन्न

देवराया देवाणुप्पियं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, पुच्छइत्ता संभंतियं वंदइ, वंदइत्ता जाव पडिगए. गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्के कप्पे महासामाणियविमाणे दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा एगविमाणंसि देवत्ताए उववण्णा, तंजहा मायीमिच्छादिट्ठीउववण्णएय, अमायीसम्मादिट्ठीउववण्णएय ॥ तएणं से

पर्युपासना करते हैं परंतु आज किस कारन से शक्र देवेन्द्र देवराजा आपको संक्षेप में आठ प्रश्नों पुछकर संभ्रांत चित्त से वंदना नमस्कार कर पीछे चले गये ? श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने कहा कि अहो गौतम ! उस काल उस समय में सातवा महाशुक्र देवलोक में महा सामानिक विमान में महर्द्धिक यावत् महासुखवाले दो देव एक ही विमान में देवतापने उत्पन्न हुए. जिन में एक मायी मिथ्यादृष्टि और

दे० देव को ए० ऐसा व० कहा प० परिणमते हुवे पो० पुद्गल णो० नहीं प० परिणत अ० अपरिणत प० परिणमते हैं ति० ऐसा पो० पुद्गल णो० नहीं प० परिणत अ० अपरिणत त० तब से० उस मा० मायी स० सम्यग्दृष्टि उ० उत्पन्नक दे० देवने तं० उस मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उत्पन्नक देव को ए० ऐसा व० कहा प० परिणमते हुवे पो० पुद्गल प० परिणत णो० नहीं अ० अपरिणत प० परिणमते हैं ति० ऐसा

मायीमिच्छदिट्ठीउववण्णए देवे तं अमायीसम्मदिट्ठीउववण्णयं देवं एवं वयासी परिणममाणा पोग्गला णो परिणया, अपरिणया परिणमंतीति पोग्गला णो परिणया अपरिणया ॥ तएणं से अमायीसमद्दिट्ठीउववण्णए देवे तं मायीमिच्छद्दिट्ठीउववण्णगं देवं एवं वयासी परिणममाणापोग्गला परिणया णो अपरिणया परिणमंतीति पोग्गला

दूसरा अमायी सम्यग्दृष्टि है. जो मायी मिथ्यादृष्टि देव है उसने अमायी सम्यग्दृष्टिवाले देव को ऐसा कहा कि परिणमते हुए पुद्गलों परिणत नहीं है क्यों कि अतीतकाल व वर्तमान काल का विरोध है. और जो पुद्गल परिणमते हैं वे पुद्गल परिणत नहीं है परंतु अपरिणत है. तब अमायीसम्यग्दृष्टि उत्पन्नदेवने ऐसा कहा कि परिणमते हुवे पुद्गल परिणत हैं परंतु अपरिणत नहीं हैं और जो पुद्गल परिणमते हैं वे परिणत हैं परंतु अपरिणत नहीं हैं. यदि परिणाम से परिणत पुनः न होवे तो सदैव-

पो० पुद्गल प० परिणत णो० नहीं अ० अपरिणत ॥ ३ ॥ तं० उस मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि दे० देव को ए० ऐसा प० पराभव करके ओ० अवधि प० प्रयुंजा मं० मुझे आ० देखकर अ० ऐसा जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसा स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ज० जम्बुद्वीप के भा० भरतवर्ष में जे० जहां उ० उल्लुकातीर ण० नगर में जे० जहां ए० एक जम्बूक चे० उद्यान अ० यथाप्रतिरूप जा० यावत् वि० विचरता है

परिणया णो अपरिणया ॥ ३ ॥ तं मायीमिच्छादिट्ठी उववण्णगं देवं एवं पडिहणइ एवं पडिहणइत्ता ओहिं पउंजइ २ त्ता ममं ओहिणा आभोएइ २ त्ता अयमेया रूवे जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे जेणेव उल्लुयातीरे णयरे जेणेव एगजंबुए चेइए अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं सेयं खलु समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्ता इमं एयारूवं वागरणं

उस का अभाव प्रसंग होता है. ॥ ३ ॥ इस तरह उस मायीमिथ्यादृष्टि देव को प्रत्युत्तर रहित करके उस सम्यग्दृष्टि देवताने अवधिज्ञान प्रयुंजा अवधिज्ञान प्रयुंज कर मुझे अवधिज्ञान से देखा और ऐसा विचार हुवा कि जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में उल्लुकातीर नगर में एकजम्बू उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी यथाप्रतिरूप अवग्रह याचकर विचरते हैं इस से श्रमण भगवंत महावीर को वंदना

तं० इस से में० श्रेय स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना करना जा०यावत् प०पर्युपासना करना इ० यह ए० ऐसा वा० उत्तर पु० पुछकर ति०ऐसा करके ए०ऐसे सं०विचारकर च०चार सा०सामानिक सा० सहस्र पा० परिवार ज० जैसे सू० सूर्याभ णि० निर्घोषणावाला र०शब्द से प० नीकला ग० जाने को ॥ ४ ॥ त० तब से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा त० उस दे० देव को तं० उस दि० दीव्य दे० देवर्द्धि दि० दीव्य दे० देवद्युति दे० देवानुभाव दि० दीव्य ते० तेजो लेश्या अ० नहीं

पुच्छित्तएत्ति कट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं परियारो जहा सुरियाभस्स जाव णिग्घोसणादितरवेणं जेणेव जबुद्दीवे दीवे भारहेवासे जेणेव उल्लुया तीरे णयरे जेणेव एगजंबुए चेइए जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थगमणाए ॥ ४ ॥ तएणं से सक्के देविंदे देवराया तस्स देवस्स तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्तिं दिव्वं देवाणुभावं दिव्व तेयलेस्सं असहमाणे अट्ठ उक्खित्तपसिण

करना यावत् पर्युपासना कर के ऐसे प्रश्नों पुछना मुझे श्रेय है. ऐसा विचार कर चार हजार सामानिक देव के परिवार सहित सूर्याभदेव समान यावत् निर्घोषणादि शब्द कर के जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में उल्लुका तीर नगर में एकजम्बू उद्यान में मेरी पास आने के लिये नीकला है. ॥ ४ ॥ अब वह शक्र देवेन्द्र देवराजा उस देवता की दीव्य देवर्द्धि, दीव्य देवद्युति, दीव्य देवानुभाव व दीव्य तेजोलेश्या

महते अ० आठ उ० संक्षिप्त प० प्रश्न वा० उत्तर पु० पूछकर सं० संभ्रांत प० पीछा गया ॥ ५ ॥ जा० जितने में स० श्रमण भ० भगवंत ए० यह अ० बात प० कहते हैं ता० उतने में से० वह दे० देव तं० उस दे० विभाग में ह० शीघ्र आ० आया ॥ ६ ॥ शेष सरल ॥

वागरणाइं पुच्छइ, पुच्छइत्ता संभंतिय जाव पडिगए ॥५॥ जावं चणं समणे भगवं महावीरे, भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ, तावंचणं से देवे तं देसं हव्वमागए ॥ ६ ॥ तएणं से देवे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी-एवं खलु भंते! महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे एगे मायी उववण्णए देवे ममं एवं वयासी-परिणममाणा पोग्गला णोपरिणया अपरिणया, परिणमंती

नहीं सहन करने से सम्भ्रान्तचित्त से संक्षिप्त में आठ प्रश्नों पुछकर अपने स्थान पीछा चला गया. ॥ ५ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ऐसा कहते थे उतने में ही वह देवभी वहां ही आगया. ॥ ६ ॥ अब उस देवने श्री श्रमण भगवंत महावीर को तीन बार वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! सातवे महा शुक्र देवलोक के महासामानिक विमान में एक मायीमिथ्या दृष्टि देवने मुझे ऐसा कहा कि परिणमते हुवे पुद्गल परिणत नहीं हैं परंतु अपरिणत हैं और जो पुद्गल परिणमते हैं वे

तिपोग्गला णो परिणया अपरिणया ॥७॥ तएणं अहं तं मायीमिच्छद्दिट्ठीउववण्णगं देवं एवं वयासी-परिणममाणा पोग्गला परिणया णो अपरिणया, परिणमंतीति पोग्गला परिणया णो अपरिणया ॥से कहमेयं भंते ! एवं ?गंगदत्तादि! समणे भगवं महावीरे गंगदत्तं देवं एवं वयासी-अहंपि णं गंगदत्ता ! एव माइक्खामि ४ परिणममाणा पोग्गला जाव णो अपरिणया सच्चे मेसे अट्ठे ॥८॥ तएणं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ २ त्ता णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ॥ ९ ॥ तएणं से गंगदत्ते देवे

भी परिणत नहीं हैं. ॥ ७ ॥ तब मैंने उस मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न देव को ऐसा कहा कि परिणमते हुवे पुद्गलों परिणत हैं परंतु अपरिणत नहीं हैं और जो पुद्गल परिणमते हैं वे परिणत हैं परंतु अपरिणत नहीं है. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उस गंगदत्त देव को ऐसा कहा कि अहो गंगदत्त ! मैं भी वैसे ही कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि परिणमते हुवे पुद्गल परिणत हैं और जो पुद्गल परिणमते हैं वे भी परिणत हैं परंतु अपारिणत नहीं है. यह बात सत्य है ॥ ८ ॥ अब वह गंगदत्त देव श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास से यह अर्थ सुनकर अवधारकर हृष्ट तुष्ट बनकर

समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठे उट्ठाए, उट्ठेइ, उट्ठेइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी-अहंणं भंते ! गंगदत्ते देवे किं भवसिद्धिए, अभवसिद्धिए, एवं जहा सूरियाभो जाव बत्ती-साविहं उवदंसेइ २ त्ता जाव तामेव दिसिं पडिगए ॥ १० ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं जाव एवं वयासी-गंगदत्तस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुत्ती जाव अणुप्पविट्ठा ? गोयमा ! सरीरं गया सरीरं अणुप्पविट्ठा कूडागारसाला दिट्ठंतो जाव सरीरं अणुप्पविट्ठा। अहोणं भंते ! गंगदत्ते देवे महिड्ढिए जाव महेसक्खे

श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर नम्र आसन से यावत् पर्युपासना करने लगा ॥९॥ फीर गंगदत्त देव श्रमण भगवंत की पास से धर्म सुनकर हृष्ट तुष्ट हुवा और अपने स्थान से उठकर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करके उसने प्रश्न पूछा कि अहो भगवन् ! क्या मैं गंगदत्त देव भवसिद्धिक हूं या अभवसिद्धिक हूं ? ऐसे ही जैसे सूर्याभका यावत् बत्तीसप्रकार के नाटक बतलाकर जहां से आया था वहां पीछा गया ॥ १० ॥ श्री गौतम स्वामीने श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! गंगदत्त देव की वह दीव्य देव ऋद्धि देव द्युति वगैरह कहां गइ कहां प्रविष्ट हुइ ? अहो गौतम! कूटाकार जैसे शरीर में गइ शरीर में ही प्रविष्ट हुइ. अहो भगवन्! गंगदत्त देव महाऋद्धि

॥ ११ ॥ गंगदत्तेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुत्ती किंणा लद्धा जाव अभिसमण्णागया ? गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणापुरे णामं णयरे होत्था वण्णओ, सहसंबवण्णे उज्जाणे वण्णओ, ॥ १२ ॥ तत्थणं हत्थिणापुरे णयरे गंगदत्ते णामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए ॥ १३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जाव सव्वण्णु सव्वदरिसी आगासगएण चक्केणं जाव पकड्ढिज्जमाणेणं, पक-

जेणं गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया ?

वंत यावत् महा ऐश्वर्यवंत है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! उस गंगदत्त देव को ऐसी ऋद्धि कैसे मीली कैसे प्राप्त हुई ? श्रमण भगवंत महावीर स्वामी भगवान् गौतम को ऐसा बोले कि अहो गौतम ! उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में हस्तिनापुर नगर था. वह वर्णन योग्य था. उस की ईशान कौन में सहस्र वन उद्यान था ॥ १२ ॥ उस हस्तिनापुर नगर में गंगदत्त गाथापति रहता था. वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभूत था ॥ १३ ॥ उस काल उस समय में मुनि सुव्रत आरिहंत आदि के करनेवाले यावत् सर्वज्ञ सर्वदर्शी आकाशगतचक्र से यावत् धर्म को प्रगट करते २ शिष्य समुदाय से परवरे हुवे

ट्टिज्जमाणेणं सीसगणसंपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं जाव जेणेव सहसंवणे उज्जाणे जाव विहरइ ॥ १४ ॥ परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ ॥ १५ ॥ तएणं से गंगदत्ते गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ तुट्ठ जाव कयबलि सरीरे साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता पादविहारचारेणं हत्थिणाउरं णयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता जेणेव सहसंववणे उज्जाणे जेणेव मुणिसुव्वए अरहा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता, मुणिसुव्वयं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥ १६ ॥ तएणं मुणिसुव्वए

पूर्वानुपूर्वी चलते ग्रामानुग्राम विचरते सहस्रवन उद्यान में यावत् विचरने लगे ॥ १४ ॥ परिषदा वंदने को नीकली यावत् पर्युपासना करने लगी ॥ १५ ॥ जब गंगदत्त गाथापतिने यह कथा सुनी तब वह हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुआ, स्नान किया, कौतुक किये, तीलमसादिक किये यावत् अपने गृह से नीकलकर पाँवसे चलते हुवे हस्तिनापुर नगर की बीच में से नीकलते हुवे सहस्र वन उद्यान में मुनि सुव्रत अरिहंत की पास गया. मुनि सुव्रत अरिहंत को हस्त जोडकर तीनवार वंदना नमस्कार कर यावत् तीन योगों की शुद्धि से पर्युपासना करने लगा ॥ १६ ॥ मुनि सुव्रत स्वामीने गंगदत्त गाथापति को उस महती परिषदा में धर्मो-

अरहा गंगदत्तस्स गाहावइस्स तीसेय महति जाव परिसा पडिगया ॥१७॥ तएणं से गंगदत्ते गाहावई मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ उट्ठाए उट्टेइ, उट्ठेइत्ता मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ णमंसइ २ त्ता एवं वयासी-सद्दहामिणं भंते! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवरं देवाणुप्पिया! जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेमि ॥ तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे जाव पव्वयामि ॥ अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं॥ १७ ॥ तएणं से गंगदत्ते गाहावई मुणिसुव्वएणं अरहा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठ मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता मुणि

पदेश सुनाया. यावत् परिषदा पीछी गई ॥ १७ ॥ गंगदत्त गाथापति श्री मुनिसुव्रत आरिहंत के वचन सुनकर हृष्ट तुष्ट हुवा. और अपने स्थान से उठकर मुनि सुव्रत आरिहंत को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोला अहो भगवन्! मैं निर्ग्रंथ के प्रवचन श्रद्धता हुं. यावत् जैसे आप कहते हैं वैसे ही हैं. विशेष में ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापकर मैं आप की पास मुंडित होवूंगा यावत् दीक्षा अंगीकार करूंगा. अहो देवानुप्रिय! तुमको जैसे सुख होवे वैसा करो विलंब मत करो ऐसा मुनिसुव्रत स्वामीने कहा॥१७॥ जब मुनिसुव्रत अरिहंतने ऐसा कहातब वह गंगदत्त गाथापति हृष्ट तुष्ट हुवा और मुनिसुव्रत अरिहंत को वंदना नमस्कारकर

सुव्वयस्स अरहओ अंतियाओ सहसंववणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख मइत्ता जेणेव हत्थिणापुरे णयरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता विपुलं असणं पाणं जाव उवक्खडावेइ २ त्ता, मित्तणाइणियग जाव आमंतेइ २ त्ता तओ पच्छा ण्हाए जहा पूरणे जाव जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेइ, तं मित्तणाइ जाव जेट्ठ पुत्तं च आपुच्छइ, आपुच्छइत्ता पुरिससहस्सबाहिणीसीयं दुरूहइ २ त्ता मित्तणाइ णियग जाव परिजणेणं जेट्ठपुत्तेणय समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्डीए जाव णादितरवेणं हत्थिणापुरं णयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव

मुनि सुव्रत अरिहंत की पास से सहस्त्र वन उद्यान में से नीकलकर हस्तिनापुर में अपने गृह आया. वहां विपुल अशनादि बनाकर मित्र ज्ञाति स्वजनादिक को आमंत्रणा कर फीर स्नान कर वगैरह अधिकार जैसे पूरण तापस का कहा वैसे ही यहां जानना यावत् ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापकर ज्येष्ठ पुत्र व मित्र ज्ञाति को पुछकर सहस्त्र पुरुष वाहिनी पालखी में बैठकर मित्र ज्ञाति, स्वजन व ज्येष्ठ पुत्र की साथ जाते सब ऋद्धि सहित यावत् वादित्र सहित हस्तिनापुर नगर की बीच में से नीकलकर सहस्त्र वन उद्यानमें गया. वहां छत्रादि अतिशय देखकर उदायन राजा जैसे यावत् स्वयमेव आभरण नीकाल कर स्वयमेव

उवागच्छइ २ त्ता छत्ताइच्छत्ते तित्थगरादि पासइ, एवं जहा उदायणे जाव सयमेव आभरणं उमुयइ, उमुयइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेइत्ता जेणेव मुणिसुव्वए अरहा एवं जहा उदायणे तहेव पव्वइए ॥ १८ ॥ तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, जाव मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए जाव छेदेइ, छेदेइत्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालकिच्चा महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे उववाय सभाए देवसयणिज्जसि जाव गंगदत्तदेवत्ताए उववण्णे ॥ १९ ॥ तएणं से गंगदत्ते देवे अहुणोववण्णमेत्तए समाणं पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तंजहा आहारपज्जत्तीए जाव भासामणपज्जत्तीए एवं खलु गोयमा ! गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा

पंच मुष्टि लोच किया. मुनि सुव्रत अरिहंत की पास आया. और उदायन राजा जैसे मुंडित यावत् प्रव्रजित हुवा ॥ १८ ॥ फीर अग्यारह अंगो का अध्ययन कर एक मास की संलेखना से साठ भक्त अनशन का छेदन कर आलोचना प्रतिक्रमण व समाधि सहित काल के अवसर में काल कर महा शुक्र देवलोक में महासामानिक विमान में उपपात सभा में देवशैय्या में यावत् गंगदत्त देवतापने उत्पन्न हुवा ॥ १९ ॥ वह गंगदत्त देव आहार पर्याप्ति यावत् भाषा मन पर्याप्ति ऐसी पांच पर्याप्ति से अभी ही पर्याप्त भाव को प्राप्त

क० कितने प्रकार सु० स्वप्न दर्शन प० कहे गौ० गौतम पं० पांच प्रकार के सु० स्वप्न दर्शन प०

देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया ॥ २० ॥ गंगदत्तस्सणं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! सत्तसागरोवमाइं ठिइ पण्णत्ता। गंगदत्तेण भंते! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव महाविदहवासे सिज्झिहिइ, जाव अंतं काहिति सेवं भंत भंतेत्ति सोलसमस्स पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ ५ ॥

कइविहेणं भते! सुविणदंसणे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे सुविणदंसणे पण्णत्ते,

हुवा है. अहो गौतम! इस तरह गंगदत्त देवने ऐसी दीव्य देव ऋद्धि यावत् प्राप्त की है ॥ २० ॥ अहो भगवन्! गंगदत्त देव की कितनी स्थिति कही है? अहो गौतम! गंगदत्त देव की सात सागरोपम की स्थिति कही है. और वह वहां से आयुष्य क्षय यावत् महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा बुझेगा व सब दुःखों का अंत करेगा. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं. यह सोलहवा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ ५ ॥

० ०

पांचवे उद्देशे में गंगदत्त को सिद्धि कही. किसी भव्य को स्वप्न से सिद्धि की प्राप्ति होती है इसलिये आगे स्वप्न का कथन करते हैं. अहो भगवन्! स्वप्न दर्शन के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! स्वप्न दर्शन के पांच भेद कहे हैं. जिन के नाम. १ जिस तरह सत्य है वेसा स्वप्न आवे सो यथातथ्य

कहे तं० तद्यथा अ० यथातथ्य प० प्रमाण चि० चिंता स्वप्न त० तद्विपरित अ० अव्यक्त दर्शन ॥ १ ॥ सु० सोया हुवा सु० स्वप्न पा० देखे जा० जागृत सु० स्वप्न पा० देखे सु० सुप्त जाग्रत सु० स्वप्न पा० देखे गो० गौतम णो० नहीं सु० सुप्त णो० नहीं जा० जागृत सु० सुप्त जाग्रत ॥२॥ जी० जीव भं० भगवन्

तंजहा-अहातच्चे, पयाणे, चिंतासुमिणे, तव्विवरीए, अव्वत्तदंसणे ॥ १ ॥ सुत्तेणं भंते ! सुविणं पासइ जागरे सुविणं पासइ सुत्तजागरे सुविणं पासइ ? गोयमा ! णो सुत्ते सुविणं पासइ णो जागरे सुविणं पासइ, सुत्तजागरे सुविणं पासइ ॥ २ ॥

२ विस्ताररूप स्वप्न सो प्रमान यह यथातथ्य से विपरीत है. ३ जाग्रत अवस्था में जो चिंतवन किया होवे वही स्वप्न अवस्था में आवे सो चिन्ता स्वप्न ४ स्वप्न में जो वस्तु देखी होवे उस से विपरीत वस्तु की प्राप्ति होना सो तद्विपरीत स्वप्न ५ और स्वप्न का अर्थ समझ में आवे नहीं सो अव्यक्त स्वप्न ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! सोते हुवे [निद्रस्थ] स्वप्न आता है, जगते हुवे स्वप्न आता है या सोतेजगते हुवे स्वप्न आता है ? अहो गौतम ! सोते हुवे स्वप्न नहीं आता है, जगते हुवे स्वप्न नहीं आता है परंतु अर्ध सोते अर्ध जगते हुवे स्वप्न आता है. * ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जीव

* यहां सोने जगने के दो भेद समझना. द्रव्य से व भाव से द्रव्य से. सोता हुवा निद्रा आश्री कहा जाता है और भाव से सोता हुवा मोहनिद्रा आश्री गिना जाता है. इस में से यहांपर द्रव्य निद्रा लेना।

सु० सुप्त जा० जाग्रत सु० सुप्त जाग्रत गो० गौतम जी० जीव सु० सुप्त जा० जाग्रत सु० सुप्त जाग्रत ॥ ३ ॥ सं० संवृत सु० स्वप्न पा० देखे अ० असंवृत सं० संवृता संवृत गो० गौतम सं० संवृत सु०

जीवाणं भंते ! सुत्ता जागरा सुत्त जागरा ? गोयमा ! जीवा सुत्तावि जागरावि सुत्तजागरावि। णेरइयाणं भंते ! किं सुत्ता पुच्छा गोयमा! णेरइया सुत्ता णो जागरा णो सुत्तजागरा एवं जाव चउरिंदिया पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं सुत्ता पुच्छा, गोयमा ! सुत्ता णो जागरा सुत्तजागरावि ॥ मणुस्सा जहा जीवा, वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा णेरइया ॥ ३ ॥ संवुडेणं भंते ! सुविणं पासइ

सोते हुवे हैं, जगते हुवे हैं या सोते जगते हुवे हैं ? अहो गौतम ! जीव सोते हुवे हैं, जगते हुवे हैं और सोते हुवे जगते हुवे ऐसे दोनों हैं. जो अविरति हैं वे मोहनिद्रा में सोते हैं, विरति जगते हैं और विरताविरति सोते जागते दोनों हैं. अहो भगवन्! क्या नारकी सोते हुवे हैं जगते हुवे हैं या सोते जगत हुवे हैं ? अहो गौतम! नारकी सोते हुवे हैं परंतु जगते हुवे व सोते जगते हुवे नहीं हैं ऐसे ही चतुरेन्द्रिय तक कहना. अहो भगवन्! तिर्यंच पंचेन्द्रिय क्या सोते हुवे जगते हुवे या सोते जगते हुवे हैं ? अहो गौतम ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय सोते हुवे हैं और सोते जगते दोनों हैं परंतु जगते हुवे नहीं हैं. मनुष्य का समुच्चय जीव जैसे तीनों भेद कहना वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! पांच आश्रव का निरोध

स्वप्न पा० देखे अ० यथातथ्य पा० देखे अ० असंवृत सु० स्वप्न पा० देखे त० तैसा अ० अन्यथा हो०
होवे सं० संवृता संवृत सु० स्वप्न पा० देखे ए० ऐसे ॥ ४ ॥ सरल ॥ ५ ॥ क० कितने भं० भगवन् सु०
स्वप्न प० कहे गो० गौतम बा० बीयालीस मु० स्वप्न प० कहे ॥ ६ ॥ क० कितने भं० भगवन म०

असंवुडे सुविणं पासइ, संवुडासंवुडे सुविणं पासइ ? गोयमा ! संवुडे सुविणं पासइ, असंवुडेवि सुविणं पासइ, संवुडासंवुडेवि सुविणं पासइ ॥ संवुडे सुविणं पासइ अहातच्चं पासइ, असंवुडे सुविणं पासइ तहावा तं होज्जा अण्णहावा तं होज्जा, संवुडा संवुडे सुविणं पासइ एवंचेव ॥ ४ ॥ जीवाणं भंते ! किं संवुडा असंवुडा संवुडासंवुडा ? गोयमा ! जीवा संवुडावि असंवुडावि संवुडासंवुडावि ॥ एवं जहेव सुत्ताणं दंडओ तहेव भाणियव्वो ॥ ५ ॥ कइणं भंते ! सुविणा पण्णत्ता ? गोयमा बायालीसं सुविणा पण्णत्ता ॥ ६ ॥ कइणं भंते ! महासुविणा पण्णत्ता ?

करने वाले संवृति को क्या स्वप्न आता है असंवृति को भी स्वप्न आता है, और संवृतासंवृति को भी स्वप्न आता है परंतु संवृति को यथातथ्य स्वप्न आता है और शेष दोनों को सब तरह के स्वप्न आते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या संवृति है असंवृति है या संवृतासंवृति है ? अहो गौतम ! जीवों तीनों प्रकार के हैं. ऐसे ही जैसे पहिले सुप्त जीवों के दंडक कहे थे वैसे ही यहां जानना. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! कितने स्वप्न कहे हैं ? अहो गौतम ! बीयालिस स्वप्न कहे हैं.

महा स्वप्न गो० गौतम ती० तीस म० महा स्वप्न ॥ ७ ॥ क० कितने भं० भगवन स० सब सु० स्वप्न ॥ ८ ॥ ति० तीर्थंकर की माता भं० भगवन् ति० तीर्थ कर ग० गर्भ में व० उत्पन्न ए० इन में से क० कितन म० महा स्वप्न पा० देख कर प० जाग्रत. होती हैं गौ० गौतम ति० तीर्थंकर की माता मा० ति० तीर्थंकर ग० गर्भ में व० आते ए० इन ती० तीस म० महा स्वप्न में से इ० ये च० चउदह म०

गोयमा ! तीसं महासुविणा पण्णत्ता ॥ ७ ॥ कइणं भंते ! सव्वसुविणा पण्णत्ता ? गोयमा ! बावत्तरिं सव्वसुविणा पण्णत्ता ॥ ८ ॥ तित्थगरमायरोणं भंते ! तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि कइ महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ? गोयमा ! तित्थगरमायरोणं तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे

॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! कितने महास्वप्न कहे हैं ? अहो गौतम ! तीस महास्वप्न कहे हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! सब कितने स्वप्न कहे हैं ? अहो गौतम ! सब बहत्तर स्वप्न कहे हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! जब तीर्थंकर अपनी माता के गर्भ में आते हैं, तब उन की माता इन स्वप्नों में से कितने स्वप्न देखकर जाग्रत होती हैं ? अहो गौतम ! जब तीर्थंकर अपनी माता के गर्भ में आते हैं तब उन की माता तीस महा स्वप्न में से चउदह स्वप्न देखकर जाग्रत होती हैं. जिन के नाम. १ गज २ ऋषभ ३ सिंह ४ लक्ष्मी ५ पुष्पमाला ६ चंद्र ७ सूर्य ८ ध्वजा ९ कुंभ १० पद्मसरोवर ११ सागर १२ विमान या

महा स्वप्न पा० देखकर प० जाग्रत होती है तं० तद्यथा ग० गज उ० ऋषभ सी० सिंह जा० यावत् सि० शिखा ॥ ९ ॥ च० चक्रवर्ती की माता भं० भगवन् च० चक्रवर्ती ग० गर्भ में व० आते क० कितने म० महा स्वप्न पा० देख कर प० जाग्रत होती है गो० गौतम च० चक्रवर्ती की मा० माता च० चक्रवर्ती जा० यावत् ए० इन ती० तीस म० महास्वप्न ए० ऐसे ति० तीर्थंकरकी माता जा० यावत् सि० शिखा ॥ १० ॥ वा० वासुदेव माता जा० यावत् व० उत्पन्न होते ए० इन च० चउदह म० महा स्वप्न में से

चउदस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति, तंजहा गय, उसभ, सीह जाव सिहिंच ॥ ९ ॥ चक्कवट्टिमायरोणं भंते ! चक्कवट्टिंसि गब्भे वक्कममाणंसि कइमहासुविणे पासित्ताण पडिबुज्झंति ? गोयमा ! चक्कवट्टिमायरो चक्कवट्टिंसि जाव वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं एवं तित्थगर मायरो जाव सिहिंच ॥ १० ॥ वासुदेव मायरो जाव वक्कममाणंसि एएसिं चउदसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे

भवन १३ रत्नराशि और १४ अग्निशिखा ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! चक्रवर्ती गर्भ में आते चक्रवर्ती की माता कितने स्वप्न देखती है ? अहो गौतम ! उक्त चौदह स्वप्न देखती है परंतु चक्रवर्ती की माता कुच्छ मंद स्वप्न देखती है ॥ १० ॥ वासुदेव की माता वासुदेव गर्भ में आते उक्त चउदह महा स्वप्न में

अ० अन्य तर स० सात म० महास्वप्न पा० देखकर प० जाग्रत होती है ॥ ११ ॥ ब० बलदेव की माता पु० पृच्छा गो० गौतम ब० बलदेव की माता जा० यावत् च० चउदह म० महा स्वप्न में से अ० अन्यतर च० चार म० महा स्वप्न पा० देखकर प० जाग्रत होती है ॥ १२ ॥ मं० मंडलिक की माता भं० भगवन् पु० पृच्छा गो० गौतम मं० मंडलिक की मा० माता जा० यावत् ए० इन च० चउदह म० महास्वप्न अ० अन्यतर ए० एक म० महास्वप्न जा० यावत् प० जाग्रत होती हैं ॥ १३ ॥ स०

पासित्ताणं पडिबुज्झंति ॥ ११ ॥ बलदेवमायरो पुच्छा ? गोयमा ! बलदेवमायरो जाव एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ॥ १२ ॥ मंडलियमायरोणं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! मंडलियमायरो जाव एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं जाव पडिबुज्झंति ॥ १३ ॥ समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंति-

से किसी सात स्वप्न देखती है ॥ ११ ॥ बलदेव की माता बलदेव गर्भ में आते उक्त चौदह स्वप्न में से किसी चार स्वप्न देखकर जागृत होती है ॥१२॥ मंडलिक गर्भ में आते उसकी माता उक्त चौदह स्वप्न में से किसी एक स्वप्न देखकर जागृत होती है ॥१३॥ स्वप्नाधिकार से श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने देखे

श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ने छ० छद्मस्थ का० काल में अं० अंतिम रात्रि में इ० ये द० दश म० महा स्वप्न पा० देखकर प० जाग्रत हुए तं० तद्यथा ए० एक म० महा घो० घोर रूप दि० दिप्ति धारन करने वाला ता० ताल पिशाच को सु० स्वप्न में प० पराजित पा० देखकर प० जाग्रत हुए ए० एक म० वडा सु० शुक्ल प० पांखवाला पुं० पुस्कोकिल ए० एक म० वडा चि० चित्र विचित्र प० पांखो वाला पुं० पुंस्कोकिल सु० स्वप्न में पा० देख कर प० जाग्रत हुवे ए० एक म० वडी दा० मालाका युगल स०

मराइयंसि इमे दस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, तंजहा-एगं चणं महं घोररूवं दित्तधरतालप्पिसायं सुविणे पराजियं पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं सुक्किल पक्खगं पुंसकोइलं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं चित्तविचित्त पक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ताणं

हुए स्वप्नों का कथन करते हैं. श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी छद्मस्थ अवस्था की अंतिम रात्रि में दश स्वप्नों देखकर जागृत हुवे १. एक वडा घोररूपवाला दीप्त तालपिशाच को स्वप्न मे पराजित करके जागृत हुए. २ एक वडा शुक्ल पांखोंवाला पुंस्कोकिल को स्वप्न में देखकर जागृत हुवे ३ एक वडा चित्र विचित्र पांखोंवाला पुंस्कोकिल को स्वप्न में देखकर जागृत हुवे ४ एक वडी रत्नों का माला युगल को स्वप्न में देखकर जागृत हुए. ५ एक वडा श्वेत गायों का वर्ग स्वप्न में देखकर जागृत हुए ६ सुगंधित

सर्व र० रत्नमय सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जाग्रत हुवे ए० एक म० बडा से० श्वेत गो० गोवर्ग ए० एक म० बडा प० पद्मसरोवर स० चारों तरफ कु० पुष्पों सहित ए० एक म० बडा सा० समुद्र उ० तरंगों स० सहस्रों से क० कलित भु० भुजा से ति० तीरा हुवा ए० एक म० बडा दि० सूर्य ते० तेज से ज० जाज्वल्यमान ए० एक म० बडा ह० हरा वे० वैडूर्य के व० वर्ण समान णि० अपने अं० आंतरडे से से मा० मानुषोत्तर प० पर्वत को स० चारों तरफ आ० लपेटा हुवा प० विशेष लपेटा हुवा ए० एक म० बडा मं०

पडिबुद्धे, एगं च णं महं सेयं गोवग्गं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं चणं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुविणं पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं चणं महं सागरं उम्मीवीयी सहस्सकलियं भुयाहिं तिण्णं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुविणे पा०, एगंचणं महं हरिवेरूलिय वण्णाभेणं णियगेणं अंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढिय परिवेढिय सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं चणं

पुष्पोंवाला एक बडा पद्म सरोवर स्वप्न में देखकर जाग्रत हुवे ७ छोटी बडी सहस्रों तरंगोंवाला एक बडा सागर को भुजा से तीरा हुवा स्वप्न में देखकर जाग्रत हुवे ८ एक बडा तेजस्वी जाज्वल्यमान सूर्य को स्वप्न में देखकर जागृत हुवे ९ नीले वर्णवाले वैडूर्य रत्न जैसे अपने शरीर में रहे हुवे आंतरडे मनुष्य क्षेत्र की मर्यादा करनेवाला मानुषोत्तर पर्वत को दोनों तरफ वेष्टित व विशेष वेष्टित किया

मेरु पर्वत की मं० मेरु की चू० चूलिका उ० पर सा० सिंहासनपे अ० स्वतः को सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जाग्रत हुवे ॥ १४ ॥ जं० जो स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ए० एक म० बडा घो० घोररूप दि० दिप्ति धारन करने वाला पि० पिशाच सु० स्वप्न में प० पराजित किया पा० देखकर प० जाग्रत हुवे तं० इस से स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ने मो० मोहनीय क० कर्म मू० मूल से घा० क्षय किया जं० जो स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ए० एक म० बडा सु० शुक्ल प० पांखवाला पु० पुंस्कोकिल सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जाग्रत हुवे तं० इस से स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर सु०

महं मंदरे पव्वएणं मंदर चूलियाए उवरि सीहासणवरगयं अप्पाणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ॥ २४ ॥ जंणं समणे भगवं महावीरे एगं महं घोररूवं दित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ताणं पडिबुद्धे तंणं समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मूलओ घातिओ जंणं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किलं जाव पडिबुद्धे, तंणं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ जंण समणे

हुवा देखकर जाग्रत हुए और १० एक बडा लक्ष योजन का ऊंचा मेरु पर्वत की चालीस योजन की ऊंची चूलिकापे सिंहासन पर आप स्वयं विराजमान हुए ऐसा देखकर जाग्रत हुवे ॥ २४ ॥ अब उक्त दश स्वप्नों का क्या फल हुआ सो कहते हैं. जो श्रमण भगवंत महावीर

शुक्ल ध्या० ध्यानोपगत वि० विचरे जं० जो चि० चित्र वि० विचित्र जा० यावत् ज० जाग्रत हुए तं० इस से स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीरने चि० चित्र विचित्र स० स्वसमय प० परसमय बा० दु० बारह ग० गणिपिंड आ० कहे प० प्ररूपे दं० बतलाये नि० निर्देशे उ० उपदेशे तं० तद्यथा आ० आचार सू० सूत्रकृत जा० यावत् दि० दृष्टिवाद जं० जो ए० एक म० बडा दा० माला दु० युगल जा० यावत् प० जाग्रत हुवे तं० इस से स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीरने दु० दो प्रकार के ध० धर्म प० प्ररूपे तं० तद्यथा आ० आगार धर्म अ० अनगार धर्म जं० जो ए० एक म० बडा गो० गायों का व०

भगवं महावीरे एगं महं चित्तविचित्त जाव पडिबुद्धे, तंणं समणे भगवं महावीरे विचित्तं ससमयपरसमय दुवालसगं गणिपिडगं आघवेति पण्णवेति परूवेइ दंसेइ निदंसेइ उवदंसेइ, तंजहा आयारं सूयगडं जाव दिट्ठिवायं जंणं समणे भगवं महावीरे एगं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे तंणं समणे भगवं महावीरे दुविहे धम्मे पण्णवेइ,तंजहा-आगार धम्मं वा अणगार धम्मंवा जंणं समणे भगवं महावीरे एगं महं

स्वामी एक बडा विकराल रूपवाला तालपिशाच को स्वप्न में देखकर जाग्रत हुवे थे उस का फल यह हुवा कि श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ताल पिशाचरूप मोहनीय कर्म का मूल से क्षय किया, श्रमण भगवंत महावीर स्वामी स्वप्न में जो श्वेत पांखोंवाला पुरुष कोकिल को देखकर जाग्रत हुवे थे इस से श्रमण भगवंत

समुदाय जा० यावत् प० जाग्रत हुवे तं० इस मे चा० चार प्रकार के स० श्रमण संघ प० प्ररूपा स० साधु स० साध्वी सा० श्रावक सा० श्राविकाओं ए० एक म० बडा प० पद्म सरोवर जा० यावत् प० जाग्रत हुवे त० तव स० श्रमण जा० यावत् म० महावीरने च० चार प्रकार के दे० देव प० कहे भ० भवनवासी वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक जं० जो स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ए० एक म० वडा सा० सागर जा० यावत् प० जाग्रत हुवे तं० इन मे स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर अ० अनादि

पडिबुद्धे तंणं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउवण्णाइं समणसंघे पण्णत्ते तंजहा समणाओ समणीओ सावयाओ सावियाओ जंणं समणे भगवं महावीरे एगंमहं पउमसरं जाव पडिबुद्धे, तंणं समणे जाव महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेइ तंजहा भवणवासी वाणमंतर जोइसिए वेमाणिए जंणं समणे भगवं महावीरे एगं महं सागरं जाव

महावीर स्वामी शुक्ल ध्यान में विचरने लगे, जो स्वप्न में एक चित्र विचित्र पांख वाला वडा पुरुषकोकिल को देखकर जाग्रत हुवे थे जिस से श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने विचित्र प्रकार के स्वसमय, पर समयरूप द्वादश गणिपिडग कहा, प्ररूपा, बतलाया, निर्देश किया, व उपदेश दिया. जिन के नाम आचाराङ्ग सूत्रकृताङ्ग यावत् दृष्टिवाद, स्वप्न में महावीर स्वामीने रत्नमय एक माला का युगल देखाथा जिस से श्रमण भगवंतने दो प्रकारका धर्म कहा आगार धर्म व अनगार धर्म. श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने जो श्वेत गोवर्ग

अ० अनंत जा० यावत् संसार कंतार ति० तीरे जं० जिस से स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ए०
एक म० बडा दि० सूर्य जा० यावत् प० जाग्रत हुवे तं० इस मे स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को
अ० अनंत अ० अनुत्तर जा० यावत् के० केवल व० श्रेष्ट णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न हुवा जं०
जो स० श्रमण से जा० जावत् वी० महावीर से ए० एक म० बडा ह० हरे वे० वैडूर्य जा० यावत् प० जाग्रत
हुवे तं० इस से म० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को ओ० उदार कि० कीर्ति व० वर्ण स० शब्द सि०

पडिबुद्धे, तंणं समणेणं भगवया महावीरेणं अणादीए अणवदग्गे जाव संसार
कंतारे तिण्णे जंणं समणे भगवं महावीरे एगं महं दिणयरं जाव पडिबुद्धे, तंणं
समणस्स भगवओ महावीरस्स अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे
जंणं समणेणं जाव वीरेणं एगं महं हरिय वेरुलिय जाव पडिबुद्धे, तंणं समणस्स

स्वप्न में देखा था जिस से श्रमण भगवन्त महावीरने साधु, साध्वी श्रावक व श्राविका रूप चतुर्विध संघ की स्थापना
की. श्रमण भगवंत महावीरने जो सुगंधित पुष्पोंवाला बडा सरोवर स्वप्न में देखा था जिससे श्रमण भगवंत महावीर
स्वामीने भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक. ये चार देवों प्ररूपे स्वप्न में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी
हजारो तरंगो वाला समुद्र तीरे जिस से महावीर स्वामी अनादि अनंत संसार कंतार को उत्तीर्ण हुवे. स्वप्न में श्रमण
भगवंत महावीर स्वामीने एक बडा तेजस्वी देदीप्यमान सूर्य देखा था जिस से श्रमण भगवंत महावीर, को अनंत

श्लोक स० देव सहित म० मनुष्य अ० असुर लो० लोक में प० होवे इ० ऐसा स० श्रमण भं० भगवंत म० महावीर जं० जो स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर मं० मेरु पर्वत मं० मेरुकी चूलिका जा० यावत् प० जाग्रत हुवे तं० इस से स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर स० देव साहित म० मनुष्य अ० असुर की प० परिषदा की म० मध्य में के० केवलि धर्म आ० कहा जा० यावत् उ० उपदेशा ॥ १८ ॥

भगवओ महावीरस्स ओराला कित्तिवण्णसद्द सिलोया सदेव मणुयासुरेलोगे परिभवंति इति खलु समणे भगवं महावीरं इतिखलु समणे भगवं महावीरे जंणं समणे भगवं महावीरे मंदरपव्वय मंदरचूलियाए जाव पडिबुद्धे, तंणं समणे भगवं महावीरे सदेव मणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवलीधम्मं आघवेइ जाव उवदंसेइ ॥ १५ ॥

अनुत्तर केवल ज्ञान केवल दर्शन उत्पन्न हुवा. हरे रंग के वैडूर्य रत्न समान अपने शरीर के आंतरडे से मानुष्योत्तर पर्वत को लपेटा हुवा देखा जिस से श्रमण भगवंत महावीर की उदार कीर्ति, वर्ण व श्लोक देवें, मनुष्य व असुरलोक में कहा कि श्रमण भगवंत महावीर, श्रमण भगवंत महावीर, जो श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने स्वतः को मेरुपर्वत की चूलिकापे सिंहासन पर बैठे हुवे देखा जिस से श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने देव, मनुष्य व असुर की परिषदा में केवलिधर्म की प्ररूपणा की यावत् उपदेश दिया

इ० स्त्री पु० पुरुष सु० स्वप्नांत में ए० एक म० बडा ह० अश्वपाति ग० गजपाति जा० यावत् उ० वृषभ-पति पा० देखते हुवे पा० देखे दु० चढते हुवे दु० चढे इ० ऐसा अ० स्वतःको म० माने त० उस क्षण बु० जाग्रत होवे ते० उस भ० भव में सि० सीझे जा० यावत् अं० अंत करे ॥ १६ ॥ ए० एक म० वडी दा० माला पा० पूर्व पश्चिम दु० दोनोंतरफ स० समुद्रको पु० स्पर्शी हुई पा० देखता हुवा पा० देखे सं० लपेटता हुवा सं० लपेटे सं० लपेटी हुइ अ० स्वतः को म० माने त० उसी क्षण बु० जाग्रत होवे

इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं हयपंतिंवा, गयपंतिंवा, जाव उसभपतिंवा पासमाणे पासइ, दुरूहमाणे दुरूहइ, दुरूढमिति अप्पाणं मण्णइ, तक्खणमेव बुज्झइ, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ॥ १६ ॥ इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं दामिणं पाईणपडीणायतं दुहओ समुद्दपुट्टं पासमाणे पासइ, संवेल्लेमाणे संवेल्लेइ,

॥ १५ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष घोडे कि पंक्ति, हाथि की पंक्ति, यावत् वृषभ की पंक्ति को स्वप्न में देखकर उस पर चढता हुवा अपन को माने और तत्क्षण जाग्रत हो जावेतो वह उसी भव में सीझे यावत् अंत करे ॥ १६ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष समुद्र के पूर्व पश्चिम दोनों किनारेतक लम्बी एक वडी माला को लपेटता हुवा अपन को माने और उसी क्षण जाग्रत होवेतो उसी भव में वह स्त्री या पुरुष सीझे, बुझे

ते० उसी भ० भव में सि० सीझे जा० यावत् अं० अंत का० करे. ॥ १७ ॥ ए० एक म० बडा र० रसी प० पूर्व पश्चिम दु० दोनों तरफ लो० लोकान्त पु० स्पर्शी हुई पा० देखे छि० छेदता हुवा छि० छेदे छि० छेदाइ हुइ अ० स्वतः को म० माने तं० उसी क्षण जा० यावत् अं० अंत करे ॥ १८ ॥ ए० एक म० बडा कि० कृष्ण सु० सूत्रक जा० यावत् सु० शुक्ल सु० सूत्रक पा० देखे उ० उखेलता हुवा उ०

संवेल्लियमिति अप्पाणं मण्णइ, तक्खणमेव बुज्झइ, तेणेव भवग्गहणेणं जाव अंतं करेइ ॥ १७ ॥ इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं रज्जुं पाईणपईणायतं दुहओ लोगंते पुटुं पासमाणे पासइ, छिंदमाणे छिंदइ, छिण्णामिति अप्पाणं मण्णइ, तक्खण मेव जाव अंतं करेइ ॥ १८ ॥ इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं किण्हसुत्तगं जाव सुक्किलसुत्तगं पासमाणे पासइ, उग्गोवेमाणे उग्गोवेइ, उग्गोवेतियमिति अप्पाणं

यावत् सब दुःखों का अंत करे ॥ १७ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष पूर्व पश्चिम लम्बी, लोक की दोनों बाजु स्पर्शी हुइ एक बडी रस्सी को तोडता हुवा तोडे और स्वतः तोडता है ऐसा माने और तत्क्षण जागृत होजावे तो उसी भव में सीझे बुझे यावत् अंत करे ॥ १८ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष कृष्ण यावत् शुक्ल सूत्र स्वप्न में देखता हुवा देखे यावत् उखेलता हुवा स्वतः को माने और तत्क्षण जागृत होजावे तो उसी भव में

उखेले उ० उखेला हुवा म० माने त० उसी क्षण जा० यावत् अं० अंत करे ॥१९॥ ए० एक म० बडा अ० लोहे का समुह तं० तांबे का समुह त० तरूये का समुह सी० सीसे का समुह पा० देखते हुवे दु० आरूढ होते हुवे आ० आरूढ होवे दु० आरूढ हुवा म० माने त० उस क्षण प० जाग्रत होवे दों० दूसरे भ० भव में सिं० सीझे जा० यावत् अं० अंत करे ॥ २० ॥ ए० एक म० बडा हिं० चांदिका समुह सु० सुवर्ण का समुह र० रत्नों का समुह व० वज्र रत्नों का समुह पा० देखते हुवे पा० देखे दु० आरूढ

मण्णइ, तक्खणमेव जाव अंतंकरेइ ॥ १९ ॥ इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं अयरासिंवा तंबरासिंवा तउयरासिंवा, सीसगरासिंवा, पासमाणे पासइ, दुरूहमाणे दुरूहइ, दुरूहमिति अप्पाणं मण्णइ तक्खणमेव बुज्झइ दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ॥ २० ॥ इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं हिरण्णरासिंवा सुवण्ण रासिंवा रयणरासिंवा वइररासिंवा पासमाणे पासइ, दुरूहमाणे दुरूहइ, दुरूढमिति

सीझे बुझे यावत् अंत करे ॥ १९ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष लोहे का ढग, ताम्बे का ढग, तरूए का ढग, व सीसे का ढग देखकर उस पर चढा हुवा स्वतः को माने और तत्क्षण जाग्रत होजावे तो दूसरे भव में सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ॥ २० ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष स्वप्न के अंत में चांदी का ढग, सुवर्ण का ढग, रत्न का ढग व वज्र रत्न का ढग देखकर उस पर स्वतः को चढा हुवा माने और

होते हु० आरूढ होवे दु० आरूढ हुवा अ० स्वतः को म० माने त० उसी क्षण बु० जाग्रत होवे ते० उसी भव में सि० सीझे जा० यावत् अं० अंत करे ॥ २१ ॥ ए० एक म० बडा त० तृण का समुह ज० जैसे ते० तेज णि० निसर्ग जा० यावत् अ० कचरे का समुह पा० देखकर पा० देखे वि० विखेरता हुवा वि० विखेरे वि० विखेरा हुवा म० माने ता० उसी क्षण बु० जाग्रत होवे ते० उस जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ २२ ॥ ए० एक म० बडा स० बाणों का थं० स्तंभ वी० वीरण का स्तंभ वं० बाँश के मूल का स्तंभ व० वल्ली

अप्पाणं मण्णइ तक्खणमेव बुज्झइ, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ॥ २१ ॥ इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं तणरासिंवा जहा तेयणिसग्गो जाव अवकररासिंवा पासमाणे पासइ, विक्खरमाणे विक्खरइ विक्खण्णमिति अप्पाणं मण्णइ, तक्खणमेव बुज्झइ तेणेव जाव अंतं करेइ ॥ २२ ॥ इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं सरथंभंवा वीरणथंभंवा वंसीमूलथंभंवा, वल्लीमूलथंभंवा, पासमाणे

शीघ्र जागृत होजावे तो उसी भव में सीझे बुझे यावत् अंत करे ॥ २१ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष तृणराशि यावत् अवकर राशि को देखकर उसे विखेरता हुवा माने और शीघ्र जागृत होजावे तो उसी भव में मोक्ष जावे ॥ २२ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष एक बडा बाणों का स्तंभ, वीरण (कडवे) का स्तंभ, वंशी मूल का

मूल का स्तंभ पा० देखे उ० निर्मूल करते उ० निर्मूल करे उ० निर्मूल किया अ० स्वतः को म० माने त० उसी क्षण बु० जाग्रत होवे ते० उसी भव में जा० यावत् अं० अंतकरे ॥२३॥ ए० एक म० बडा खी० क्षीर कुंभ द० दधिकुंभ घ० घृतकुंभ म० मधुकुंभ पा० देखे उ० उठाता हुवा उ० उठावे उ० उठाया अ० स्वतः म० माने त० उसी क्षण प० जाग्रत होवे जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ २४ ॥ ए० एक म० बडा सु० मदिरा वि० अचित्त कुं० कुंभ सो० सोवीर वि० अचित्त कुं० कुंभ ते० तेल का कुंभ वा० वासकुंभ पा०

पासइ. उम्मूलेमाणे उम्मूलेइ, उम्मूलमिति अप्पाणं मण्णइ, तक्खणमेव बुज्झइ, तेणेव जाव अंतंकरेइ ॥ २३ ॥ इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं खीरकुंभंवा दधिकुंभंवा घयकुंभंवा महुकुंभंवा पासमाणे पासइ उप्पाडेमाणे उप्पाडेइ. उप्पाडितमिति अप्पाणं मण्णइ, तक्खणमेव बुज्झइ, तेणेव जाव अंतंकरेइ ॥ २४ ॥ इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं सुरावियडकुंभंवा, सोवीरवियडकुंभंवा, तल्लकुंभंवा, वसाकुंभंवा

स्तंभ, वल्लीमूल का स्तंभ देखे, देखकर उसे मूल में से उखेडता हुवा माने और शीघ्र जागृत होजावे तो उसी भव में सीझे बुझे यावत् अंत करे ॥ २३ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष स्वप्न के अंत में एक बडा क्षीरका घडा, दधि का घडा, घृत का घडा व मधु का घडा, देखकर उसे उठाता हुवा स्वतः को माने और शीघ्र जागृत होवे तो उसी भव में अंत करे ॥ २४ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष स्वप्न के अंत में एक बडा अचित्त

देखे भिं० फोडा अ० स्वतः को म० माने त० उसी क्षण बु० जाग्रत होवे दो० दूसरे भ० भव में जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ २५ ॥ ए० एक म० वडा प० पद्म सरोवर कु० पुष्पोंवाला पा० देखे ओ० अवगाहा हुवा अ० स्वतः को म० माने तं० उसी क्षण जा० यावत् अं० अंत करे ॥ २६ ॥ ए० एक म० वडा सा० सागर उ० तरंगो जा० यावत् क० कलित पा० देखे ति० तीरा हुवा म० माने ते० उसी

पासमाणे पासइ, भिंदमाणे भिंदइ, भिंदमिति अप्पाणं मण्णइ, तक्खणमेव बुज्झइ दोच्चेणं भवग्गहणेणं जाव अंतंकरेइ॥ २५॥इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं पउमसरं कुसुमितं पासमाणे पासइ, उग्गाहेमाणे उग्गाहेइ, ओगाढमिति अप्पाणं मण्णइ, तक्खणमेव तेणेव जाव अंतं करेइ ॥ २६ ॥ इत्थीवा जाव सुविणंते एगं महं सागरं उम्मीवीयी जाव कलियं पासमाणे पासइ, तरमाणे तरइ, तिण्णमिति अप्पाणं

मदिरा का घडा, अचित्त सोवीर का घडा, व तेल का घडा देखकर उठाता हुवा स्वतः को माने और तत्क्षण जाग्रत होवे तो दूसरे भव में मोक्ष जावे ॥ २५ ॥ कोई पुरुष अथवा स्त्री स्वप्न के अंत में एक वडा पुष्पोंवाला पद्म सरोवर देखकर उस में स्वतःको अवगाहता हुवा माने और तत्क्षण जागृत होजावे तो उसी भव में मोक्ष जावे ॥ २६ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष सहस्र तरंगोंवाला एक वडा समुद्र देखकर उसे

जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ २७ ॥ एक म० बडा भ० भवन स० सब र० रत्नमय पा० देखे दु० आरूढ हुवा अ० प्रवेश किया अ० स्वतः को म० माने ते०उसी भव में जा० यावत् अं० अंतकरे ॥२८॥ ए० एक बडा वि० विमान स० सब रत्नमय पा० देखकर दु० आरूढ हुवा अ० स्वतः को म० माने त० तत्क्षण प०

मण्णइ, तक्खण मेव तेणेव जाव अंतंकरेइ ॥ २७ ॥ इत्थीवा जाव सुविणंते एगं महं भवणं सव्वरयणामयं पासमाणे पासइ, दुरूहमाणे दुरूहइ, दुरूढमिति अप्पाणं अणुप्पविसमाणे अणुप्पविट्ठामिति अप्पाणं मण्णइ, तेणेव जाव अंतं करेइ ॥ २८ ॥ इत्थीवा पुरिसेवा सुविणंते एगं महं विमाणं सव्वरयणामयं पासमाणे पासइ, दुरूहमाणे दुरूहइ, दुरूढमिति अप्पाणं मण्णइ, तक्खणमेव बुज्झइ, तेणेव जाव अंतं करेइ ॥ २८ ॥ अह भंते ! कोट्ठपुडाणवा जाव केतईपुडाणवा अणुवायंसि उब्भिज

तीरा हुवा स्वतः को माने और तत्क्षण जाग्रत होजावे तो उसी भव में मोक्ष जावे ॥ २७ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष चारों तरफ रत्नमय भवन देखकर उस पर चढा हुवा माने व प्रवेश किया हुवा स्वतः को माने और उसी क्षण जाग्रत होवे तो उसी भव में अंत करे ॥ २८ ॥ कोई स्त्री अथवा पुरुष रत्नमय महा विमान स्वप्न के अंत में देखकर उस पर आरूढ हुवा स्वतः को माने और उसी क्षण जागृत होवे तो उसी भव में सीझे यावत् अंत करे ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! काष्ट नामक सुगंधित पदार्थ का पुडा, यावत्

जाग्रत होते ते० उसभव में जा० यावत् अं० अंत करे ॥२९॥ अ० अथ भं० भगवन् को० कोष्टपुट (कोठे में पकाया हुवा वास का समुदाय) जा० यावत् के० केतकी पुट अ० अनुकूल वात वाला होते उ० उछलते ठा० स्थान से ठा० स्थान सं० जाते किं० क्या को० कोठे का वायु जा० यावत् के० केतकी का वायु गो० गौतम णो० नहीं को० कोठे का वायु जा० यावत् णो० नहीं के० केतकी का वायु घा० घ्राणसहगत पो० पुद्गल वा० वाते हैं से० वैसे ही भं० भगवन् सो० सोलहवा शतकका छ० छठा उ० उद्देशा स० समाप्त ॥१६॥६॥

माणं वा जाव ठाणाओ ठाणं संकामिज्जमाणाणं किं कोट्ठेवाइ जाव केतईवाति? गोयमा ! णो कोट्ठेवाति जाव णो केतईवाइ घाणसहगता पोग्गला वाइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सोलसमस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ ६ ॥ * *

केतकी नामक सुगंधिक पदार्थ का पुडा अनुकूल वायु के संयोग की प्रबलता से वे सुगंधि द्रव्य उपर नीचे उछले यावत् एक स्थान से अन्य स्थान जावे तो क्या वह कोष्ट वायु समुदाय आता है यावत् केतकी वायु समुदाय आता है ? अहो गौतम ! यह कोष्ट वायु समुदाय नहीं आता है वैसे ही केतकी वायु समुदाय नहीं आता है परंतु घ्राणसहगत अर्थात् गंध गुण के सहगत पुद्गलों कहाते हैं. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सोलहवा शतक का छठा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ ६ ॥ *

क० कितने भं० भगवन् उ० उपयोग प० कहे गो० गौतम दु० दो प्रकार के उ० उपयोग प० कहे हुवे ज० जैसे उ० उपयोगपद प० पन्नवणा में त० तैसे णि० सब भा० कहना पा० सम्यक्त्व व० कहना ॥१६॥७॥

कइविहेणं भंते! उवओगे पण्णत्ते? गोयमा! दुविहे उवओगे पण्णत्ते एवं जहा उवओग-पदे पण्णवणाए तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं ॥ पासवणापदं वण्णेत्तव्वं, सेवं भंते२त्ति सोलसमस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ ७ ॥ * *

छठे उद्देशे के अंत में सुगंधि द्रव्यों का कथन किया. वह उपयोग से जाना जाता है इसलिये सातवे शतक में उपयोग का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! उपयोग के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! उपयोग के दो भेद कहे हैं. इस का विशेष खुलासा पन्नवणा पद के २१ वे पद में है. उपयोग में आठ ज्ञान व चार दर्शन हैं. और तीसवे पासवणा पद में पासवणा के दो भेद कहे हैं. सागार पासवणा और अनगार पासवणा. जिस में सागारपासवणा के ६ भेद किये हैं. १ श्रुत ज्ञान, २ अवधि ज्ञान, ३ मनः पर्यवज्ञान, ४ केवल ज्ञान, ५ श्रुत अज्ञान व ६ विभंग ज्ञान और अनगार पासवणा के तीन भेद कहे हैं. १ चक्षुदर्शन २ अवधि दर्शन व ३ केवल दर्शन. पासवणा बोधपरिणाम विशेष सम्यक्त्व को कहते हैं. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सोलहवा शतक का सातवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ ७ ॥

के महालएणं भंते ! लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! महति महालए जहा बारसम सए तहेव जाव असंखेज्जाओ जोअण कोडाकोडीओ परिक्खेवेणं ॥ १ लोगस्सणं भंते ! पुरच्छिमिल्ले चरमंते किं जीवा जीवदेसा जीवप्पदेसा, अजीवा अजीवदेसा अजीवप्प देसा ? गोयमा ! णो जीवा जीवदेसा, जीवप्पदेसावि, अजीवावि अजीवदेसावि, अजीवप्पदेसावि ॥ जे जीवदेसा ते णियम एगिंदियदेसा अहवा एगिंदिय देसाय, बेइंदियस्स देसे एवं जहा दसमसए, अग्गेयीदिसा तहेव, णवरं देसेसु अणिंदियाणं

आठवे उद्देशे में उपयोग का कहा. वह लोक में होवे इस से लोक का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! लोक कितना बडा कहा ? अहो गौतम ! लोक बहुत बडा कहा है. इस का विवेचन बारहवे शतक में किया है. वैसा यहां पर भी कहना यावत् असंख्यात क्रोडाक्रोड योजन की परिधि है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! लोक के पूर्व के चरमान्त में क्या जीव, जीव देश, जीव प्रदेश, अजीव, अजीव देश. व अजीव प्रदेश है ? अहो गौतम ! जीव नहीं है परंतु जीव देश व जीव प्रदेश है. अजीव, अजीव देश अजीव प्रदेश है. जो जीव देश हैं वे निश्चय ही एकेन्द्रिय जीव देश अथवा एकेन्द्रिय का एक जीव देश बेइन्द्रिय का बहुत जीव देश यों जैसे दशवे शतक में कहा वैसे ही यहां कहना. अग्नेयी दिशा का भी वैसे ही

आदिल्लविरहिओ, जे अरूवी अजीवा ते छव्विहा अद्धासमओ णत्थि सेसं तंचेव णिरवसेसं ॥ २ ॥ लोगस्सणं भंते ! दाहिणिल्ले चरमंते किं जीवा एवं चेव, एवं पच्चच्छिमिल्लेवि, एवं उत्तारिल्लेवि ॥ ३ ॥ लोगस्सणं भंते ! उवरिल्ले चरिमंते किं जीवा पुच्छा ? गोयमा ! णो जीवा जीवदेसावि जीवप्पदेसावि जाव अजीवप्पदेसावि ॥ जे जीवदेसा ते णियमं एगिंदियदेसाय अणिंदियदेसाय, अहवा एगिंदिय देसाय अणिंदिय देसाय, वेइंदियस्स यदेसे, अहवा एगिंदिय देसाय अणिंदिय देसाय, वेइंदि-याणय देसा एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव पंचिंदियाणं ॥ जे जीवप्पदेसा ते णियमं

जानना. परंतु विशेषता इतनी कि अनेन्द्रिय का पहिला भांगा का विरह जानना. जो अरूपि अजीव हैं उन के छ भेद. इस में काल नहीं हैं शेष सब वैसे ही कहना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! लोक के दक्षिण चरिमान्त में क्या जीव है ? वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे कहना. ऐसे ही पश्चिम व उत्तर का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! लोक के उपर के चरिमांत में क्या जीव है ? जीव देश है ? वगैरह पृच्छा अहो गौतम ! जीव नहीं है परंतु जीव देश है जीव प्रदेश है यावत् अजीव प्रदेश है. अब जो जीव हैं वे निश्चय ही एकेन्द्रिय के बहुत देश व अनेन्द्रिय के बहुत देश, अथवा एके-

एगिंदियप्पदेसाय, अणिंदियप्पदेसाय, अहवा एगिंदियप्पदेसाय अणिंदियप्पदेसाय बेइंदियस्सदेसा, अहवा एगिंदियप्पदेसाय अणिंदियप्पदेसाय वेइंदियाणयप्पदेसा. एवं आदिल्लविरहिओ जाव पंचिंदियाणं ॥ अजीवा जहा दसमसए तमाए तहेव णिरव सेसं भाणियव्वं ॥ ४ ॥लोगस्सणं भंते ! हेट्ठिल्ले चरमंते किं जीवा पुच्छा? गोयमा ! णो जीवा, जीवदेसावि जीवप्पदेसावि जाव अजीवप्पदेसावि, जे जीवदेसा ते णियमं एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदिय देसाय वेइंदियस्सदेसे, अहवा एगिंदिय देसा

न्द्रिय के बहुत देश, अनेन्द्रिय के बहुत देश और बेइन्द्रिय का एक देश, अथवा एकेन्द्रिय के बहुत देश, व अनेन्द्रिय के बहुत देश व बेइन्द्रिय के बहुत देश यों मध्य के भांगे का विरह कहना ऐसे ही पंचेन्द्रिय पर्यंत कहना. जो जीव प्रदेश है वे निश्चय ही एकेन्द्रिय के बहुत प्रदेश व अनेन्द्रिय के बहुत प्रदेश हैं अथवा एकेन्द्रिय के बहुत प्रदेश अनेन्द्रिय के बहुत प्रदेश व बेइन्द्रिय के एक प्रदेश अथवा एकेन्द्रिय के बहुत प्रदेश बेइन्द्रिय के बहुत प्रदेश व अनेन्द्रिय के प्रदेश यों पहिला छोड कर यावत् पंचेंद्रिय तक कहना. अजीव का दशवे शतक जैसे कहना. तमादिशा का भी वैसे ही निरवशेष कहना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! लोक का नीचे का चरमांत में क्या जीव हैं वगैरह पृच्छा अहो गौतम ! जीव नहीं है जीव देश यावत्

बेइंदियाणं देसा, एवं मज्झिल्ल विरहिओ जाव अणिंदियाणं पदेसा, आइल्लविरहिओ सव्वेसिं जहा पुरच्छिमिल्ले चरिमंते तहेव अजीवा, जहेव उवरिल्ले चरिमंते तहेव ॥५॥ इमी सेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरच्छिमिल्ले चरिमंते किं जीवा पुच्छा? गोयमा ! णो जीवा एवं जहेव लोगस्स तहेव चत्तारिवि चरिमंता जाव उवरिल्ले जहा दसमसए; विमलादिसा तहेव णिरवसेसं, हेट्ठिल्ले चरिमंते जहेव लोगस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते तहेव, णवरं देसे पंचिंदिएसु भंगो सेसं तंचेव, एवं जहा रयणप्पभाए चत्तारि चरिमंता भणिया, एवं सक्करप्पभाएवि

अजीव प्रदेश हैं. जो जीव देश हैं वह निश्चय एकेन्द्रिय के जीव देश हैं अथवा एकेन्द्रिय के बहुत देश बेइन्द्रिय का एक देश अथवा एकेन्द्रिय के बहुत देश बेइन्द्रिय के बहुत देश ऐसे ही मध्य रहित यावत् अनेन्द्रिय तक कहना. और आदि रहित सब का जैसे पूर्व का चरिमांत कहा वैसे कहना. और अजीव का जैसे उपर के चरिमांत का कहा वैसे ही कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के पूर्व के चरिमांत में क्या जीव है इत्यादि पृच्छा? अहो गौतम ! जीव नहीं है यों जैसे लोक के चारों चरिमांत में कहा वैसे ही यहांपर भी कहना यावत् उपर का चरिमांत जैसे दशवे शतक में विमला दिशा का कहा तैसे ही रत्नप्रभा पृथ्वी का उपर का चरमांत निरवशेष कहना विशेषता इतनी कि पंचेन्द्रिय में तीनों भांगे पाते हैं क्यों की वहां पंचेन्द्रिय

उवरिमहेट्ठिल्ला जहा रयणप्पभाए हेट्ठिल्ला. एवं जाव अहे सत्तमाए, एवं सोहम्मस्सावि जाव अच्चुयस्स, गेवेज्जगविमाणाणं एवं चेव, णवरं उवरिम हेट्ठिल्लेसु चरिमंतेसु देसेसु पंचिंदियाणवि, मज्झिल्लविरहिओ सेसं तहेव, एवं जहा गेवेज्जगाविमाणा तहा अणुत्तरविमाणावि, ईसिप्पभारावि ॥ ६ ॥ परमाणुपोग्गलेणं भंते ! लोगस्स पुरच्छि मिल्लाओ चरिमंताओ पच्चच्छिमिल्लं चरिमंतं एग समएणं गच्छइ,, पच्चच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ पुरच्छिमिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छइ, दाहिणिल्लाओ चरिमंताओ उत्त-

का आवागमन है शेष वैसे ही कहना. जैसे रत्नप्रभा के चारों चरिमांत का कहा वैसे ही शर्कर प्रभा का जानना. यों शेष सब नरक का कहना. सौधर्मादि बारह देवलोक व नवग्रैवेयक का भी वैसे ही कहना परंतु इतना विशेष कि उपर व नीचे के चरिमांत में पंचेन्द्रिय देवता के गमनागमन का अभाव से मध्य भांगा नहीं पाता है शेष दो भांगे पाते हैं. एसे ही अनुत्तर विमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी तक कहना. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल लोक के पूर्व के चरिमान्त से पश्चिम के चरिमांत तक और पश्चिम के चरिमान्त से पूर्व के चरिमान्त में क्या एक समय में जाता है ? अथवा उत्तर के चरिमान्त से दक्षिण के चरिमान्त, दक्षिण के चरिमांत से उत्तर के चरिमांत में क्या एक समय में जाता है ? अथवा ऊपर के

रिल्लं जाव गच्छइ, उत्तरिल्लाओ दाहिणिल्लं जाव गच्छइ, उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ हेट्ठिल्लं चरिमंतं एग समएणं जाव गच्छइ, हेट्ठिल्लाओ चरिमंताओ उवरिल्लं चरिमंतं एग समएणं गच्छइ ? हंता गोयमा ! परमाणुपोग्गलेणं लोगस्स पुरच्छिमिल्लं तंचेव जाव उवरिल्लं चरिमंतं गच्छइ ॥ ७ ॥ पुरिसेणं भंते ! वासं वासतीति वासं णो-वासति हत्थंवा पायंवा बाहुंवा ऊरुंवा आउंटावेमाणेवा पसारेमाणेवा कइकिरिए ? गोयमा ! जावचणं से पुरिसे वासं वासइ वासं णो वासतीति हत्थंवा जाव ऊरुंवा आउंटावितिवा पसारेत्तवा तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे

चरिमांत से नीचे के चरिमांत में व नीचे के चरिमांत से उपर के चरिमांत में क्या एक समय में जाता है ? हां गौतम ! परमाणु पुद्गल लोक के पूर्व के चरिमांत से पश्चिम के चरिमांत व पश्चिम के चरिमांत से पूर्व के चरिमांत यावत् उपर के चरिमांत से नीचे के चरिमांत व नीचे के चरिमांत से उपर के चरिमांत तक जाता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष वर्षा वर्षती है या नहीं ऐसा जानने के लिये अपने हाथ, पांव बाहु, जंघा को संकुचित करे अथवा पसारे तो उस को कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! जब लग वह पुरुष वर्षा वर्षती है ऐसा जानने के लिये हस्त, पांव, बाहु व जंघा का संकुचन पसारण करे

॥ ८ ॥ देवेणं भंते ! महिड्ढिए जाव महे सक्खे लोगंते ठिच्चा पभू अलोगंसि हत्थंवा जाव ऊरुंवा आउंट वेत्तएवा पसारेत्तएवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवेणं महिड्ढिए जाव महेसक्खे लोगते ठिच्चा णो पभू अलोगंसि हत्थंवा जाव पसारेत्तएवा ? गोयमा जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला बोंदिचिया, पोग्गला कडेवरचिया पोग्गला पोग्गला चेव पप्प जीवाणय अजीवाणय गइपरियाए अहिज्जइ, अलोएणं णेवत्थि जीवा णेवत्थि पोग्गला से तेणट्ठेणं जाव पसारेत्तएवा

वहां लग उन को कायिकादि पांचों क्रियाओं लगती है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महा सुख वाला देव लोकान्त में रहकर अलोक में अपने हस्त, पांव यावत् जंघा संकुचित करने को व विस्तृत करने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! ऐसा करने में देव समर्थ नहीं होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि महर्द्धिक यावत् महा सुखवाला देव ऐसा करने में समर्थ नहीं है ? अहो गौतम ! आहारोपचित पुद्गल, व शरीरोपचित पुद्गल, पुद्गल को प्राप्त कर जीव व अजीव को गति में परिणमाते हैं; परंतु अलोक में जीव नहीं है. वैसे ही पुद्गलों भी नहीं हैं जिस से महर्द्धिक यावत् महासुखवाला देव लोकान्त में रहने पर अलोक में हस्तादिकका संकुचन नहीं कर सकता है. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य

सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सोलसमस्स अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ ८ ॥

कहिणं भंते ! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं तिरियमसंखेज्जे जहेव चमरस्स जाव बायालीसं जोअणसहस्साइं उग्गहित्ता एत्थणं बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णस्स रुयगिंदे णामं उप्पायपव्वए पण्णत्ते. सत्तरस एकवीस जोयणसए एवं परिमाणं जहेव तिगिच्छ-

है. यह सोलहवा शतक का आठवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ ८ ॥

आठवे उद्देशे के अंत में समुच्चय देवता की वक्तव्यता कही. नववे उद्देशे में उस के भेदों का वर्णन करते हैं. अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के बलि नामक वैरोचन राजा की सुधर्मा सभा कहां है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत की उत्तर में तीर्च्छी असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जावे वहां जैसे दूसरे शतक के आठवे उद्देशे में चमर का कथन किया वैसे बलेन्द्र का जानना. यावत् बीयालीस हजार योजन जावे वहां बल नामक वैरोचनेन्द्र वैरोचन राजा का रुचकेन्द्रोत्पात पर्वत आता है. वह १७२१ योजन ऊंचा कहा है. जैसे चमर का तिगिच्छ कूट का वर्णन किया वैसे ही बलि का रुचकेन्द्र पर्वत का जानना. जो परिणाम तिगिच्छ कूट पर्वत का कहा वैसा यहां पर भी कहना. प्रासादावतंसक वैसे ही

कूडगस्स पासायवडिंसगस्सवि तंचेव पमाणं सीहासणं सपरिवारं बलिस्स परिवारेणं अट्ठो तहेव ॥ णवरं रुयगिंदप्पभाइं सेसं तंचेव जाव बलिचंचा रायहाणीए अण्णेसिंच जाव णिच्चे ॥ रुयगिंदस्सणं उप्पायपव्वयस्स उत्तरेणं छक्कोडिसए तहेव जाव चत्तालीसं जोअणसहस्साइं उग्गाहित्ता एत्थणं बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णस्स बलिचंचा णामं रायहाणी पण्णत्ता एगं जोयणसयसहस्सं पमाणं तहेव जाव बलिपेढिस्स उववाओ जाव आयरक्खा सव्वं तहेव णिरवसेसं, णवरं साइरेगं सागरोवमट्ठिई पण्णत्ता, सेसं

जानना. प्रासादावतंसक की मध्य में सिंहासन सब परिवार युक्त कहना. विशेष इतना कि चमरेन्द्र को ६४००० सामानिक देव के आसन हैं और इस से चौगुने आत्मरक्षक देव के आसन हैं, वैसे ही यहां बलीन्द्र के ६०००० सामानिक देव के आसन हैं और इस से चौगुने आत्म रक्षक देव के आसन हैं. तिगिच्छ के स्थान रुचकेन्द्र कहना. यहां बलराजा की राज्यधानी यावत् नित्य है यहां तक कहना. रुचकेन्द्र उत्पात पर्वत के उत्तर की तरफ छसोक्रोड यावत् जैसे चमरचंचा राज्यधानी का व्यातिकर कहा वैसे ही यहां मानना यावत् चालिस हजार योजन अवगाहे यहां बली वैरोचनेन्द्र वैरोचन राजा की बलि चंचा राज्यधानी कही. वह एक लाख योजन प्रमाण वैसे ही यावत् बलिपीठिका वर्णन यहां तक

तंचेव जाव बली वइरोयणिंदे बली ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ सोलसमस्स णवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ ९ ॥ × × ×

कइविहेणं भंते ! ओही पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा ओही पण्णत्ता तंजहा ओही पदं णिरवसेसं भाणियव्वं सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ सोलमस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ १० ॥ • • •

कहना. आत्मरक्षक, सामानिक अग्रमाहिषियों, परिषदा, अनिका सब का निरवशेष वर्णन् कहना. स्थिति एक सागरोपम से कुच्छ अधिक कहना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर तपसंयम से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे. यह सोलहवा शतक का नववा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १६ ॥ ९ ॥ *

नववे उद्देशे में देवता का कथन किया, देवता को अवधि ज्ञान होता है इस से अवधि ज्ञान का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! अवधि ज्ञान के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अवधि ज्ञान के दो भेद कहे हैं. १ भव प्रत्ययिक जो नारकी देवता व तीर्थंकरों को होता है सो और २ क्षायोपशमिक कर्मों का क्षय होने से होवे. इस का विस्तार पूर्वक कथन पन्नवणा के तेत्तीसवे पद में कहा है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह सोलहवा शतक का दशवा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १६. १० ॥

दीवकुमाराणं भंते ! सव्वे समाहारा सव्वे समुस्सासणिस्सासा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवं जहा पढमसए बितिय उद्देसए दीवकुमाराणं वत्तव्वया तहेव जाव समाउया समुस्सासणिस्सासा ॥ एवं णागावि ॥ १ ॥ दीवकुमाराणं भंते ! कइलेस्साओ पण्णत्ताओ? गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा॥ एएसिणं भंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा दीवकुमारा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असं-

दशवे उद्देशे में अवधिज्ञान का कथन किया. अग्यारहवे उद्देशे में अवधिज्ञानवंत का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! भवनपति जाति के द्वीप कुमार देव क्या सरिखे आहार करने वाले हैं. और सब सरिखे उश्वासनीश्वास वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् वैसा नहीं है. इस का विशेष खुलासा प्रथम शतक का दूसरा उद्देशा में जैसा कहा वैसे यहां जानना यावत् समान आयुष्य व समान उश्वास नीश्वास. ऐसे ही नाग कुमार का जानना. ॥ १ ॥ अहो भगवन्! द्वीप कुमार को कितनी लेश्याओं कहीं ? अहो गौतम ! द्वीप कुमार को चार लेश्याओं कहीं. कृष्णलेश्या यावत् तेजोलेश्या. अहो भगवन् इन कृष्णलेश्या वाले यावत् तेजोलेश्या वाले में से कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे तेजोलेश्या वाले द्वीप कुमार, उस से कापोतलेश्या वाले असंख्यात गुने

खेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया॥ २ ॥ एएसिणं भंते! दीवकुमाराणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साणय कयरे कयरेहिंतो अप्पढ्ढियावा महिड्ढियावा ? गोयमा ! कण्हलेस्साहिंतो णीलेलेस्सा महिड्ढिया जाव सव्वमहिड्ढिया वा तेउलेस्सा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ । सोलसमस्स एगारसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ ११ ॥ ० ० ०

उदहिकुमाराणं भंते ! सव्वे समाहारा एवंचेव सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सोलसमस्स बारसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ १२ ॥

नीललेश्या वाले विशेषाधिक, और कृष्णलेश्या वाले विशेषाधिक ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! इन कृष्ण लेश्या वाले यावत् तेजोलेश्या वाले में कौन किस से अल्प ऋद्धि वाले यावत् बहुत ऋद्धि वाले हैं ? कृष्ण लेश्या वाले से नील लेश्या वाले महर्द्धिक, नील लेश्या वाले से कापोत लेश्या वाले महर्द्धिक और कापोत लेश्या वाले से तेजो लेश्या वाले महर्द्धिक. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं, यों कहकर तप संयम से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे. यह सोलहवा शतक का अग्यारहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ ११ ॥

अहो भगवन् ! क्या उदधिकुमार सब समआहार करने वाले हैं ? वगैरह जैसे द्विप कुमार का कहा वैसे ही यहां कहना. यह सोलहवा शतक का बारहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ १२ ॥

एवं दिसाकुमारावि ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सोलसमस्सा तेरसमो उद्देसो॥ १६॥ १३ ॥
एवं थणियकुमारावि ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सोलसमस्स चउद्दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ १४ ॥ सम्मत्तं सोलसमं सयं ॥ १६ ॥

जैसे द्विपकुमार का कहा वैसे ही दिशा कुमार का कहना अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह सोलहवा शतक का तेरहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ १३ ॥

जैसे द्विपकुमार का कहा वैसे ही स्थनित कुमार का जानना. यह सोलहवा शतक का चउदहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ १४ ॥ यह सोलहवा शतक समाप्त हुवा ॥ १६ ॥

॥ सप्तदश शतकम् ॥

कुंजर संजय सेलेसि किरिय ईसाणि पुढवि दगवाऊ ॥ एगिंदिय णाग सुवण्ण विज्जु- वातग्गे सत्तरमे ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी उदायीण भंते ! हत्थिराया कओ- हिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायी हत्थिरायत्ताए उववण्णे ? गोयमा ! असुरकुमारेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायी हत्थिरायत्ताए उववण्णे ॥ १ ॥ उदायीणं भंते ! हत्थिराया

सोलहवे शतक के अंत में भुवनपति देवों का कथन किया. इस शतक की आदि में भवनपति देव से नीकले हुए का स्वरूप कहते हैं. इस शतक के १७ उद्देशे कहे हैं जिन के नाम १ हस्ती २ संयति ३ शैलेशी ४ क्रिया ५ ईशान ६-७ पृथ्वी के ८-९ पानी के १०-११ वायु के १२ एकेन्द्रिय १३ नाग कुमार १४ सुवर्णकुमार १५ विद्युत्कुमार १६ वायु कुमार और १७ अग्निकुमार. यों सत्तरहवे शतक के सत्तरह उद्देश कहे हैं. राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी प्रश्न पुछने लगे कि अहो भगवन् ! सब हस्तियों में प्रधान ऐसा कोणिक राजा का उदाइ नामक हस्तिराजा कहां से अंतर रहित उद्वर्तकर उदायी हस्ति राजा पने उत्पन्न हुवा ? अहो गौतम ! असुरकुमार में से नीकलकर उदाइ नामक हस्ती राजा पने उत्पन्न हुवा. ॥ १ ॥ अहो भगवन् !

कालमासे कालंकिच्चा, कहिं गच्छिहिति, कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवम द्विती यंसि, णिरयावासंसि णेरइयत्ताए उवव-ज्जिहिति ॥ २ ॥ सेणं भंते ! तओ हिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंत काहित्ति ॥ ३ ॥ भूयाणंदेणं भंते ! हत्थिराया कओ हिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता, भूयाणंदे एवं जहेव उदायी जाव अंत काहिति ॥ ४ ॥ पुरिसेणं भंते ! तलमारुहइ, तलमारूहइत्ता तलाओ तलफल पलावेमाणेवा पवाडेमाणेवा कइकिरिए ? गोयमा ! जाव चणं से पुरिसे तलमारूहइ,

यह उदायी हस्ती राजा यहां से काल कर के कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! इस रत्न प्रभा पृथ्वी में उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति वाले नरका वास में नारकी पने उत्पन्न होगा. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वह वहां से नीकलकर कहां जायगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा, बूझेगा, यावत अंत करेगा. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! कूणिक का भूतानेन्द्र हस्ती राजा कहां से अंतर रहित नीक-लकर भूतानेन्द्र हस्ति राजा पने उत्पन्न हुवा? अहो गौतम ! जैसे उदायी हस्ती का कहा वैसे ही इसका भी कहना यावत् अंत करेगा ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष ताल वृक्षपर चढे और वह ताल वृक्ष के

तलमारूभइत्ता तलाओ तलफलं पवालेइवा पवाडेइवा तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरिया पुट्ठे; जेसिं पियणं जीवाणं सरीरेहिंतो तले णिव्वत्तिए तलफले णिव्वत्तिए तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ५ ॥ अहेणं भंते ! से तल-फले अप्पणो गुरूयत्ताए जाव पच्चोवयमाणा, जाइं तत्थ पाणाई जाव जीवियाओ ववरोवेइ, तएणं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ? गोयमा ! जावचणं से पुरिसे तल-फले अप्पणो गुरूयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेइ, तावचणं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ जेसिं पियणं जीवाणं सरीर हिंतो तलेणिव्वत्तिए तेविणं

फल को चलाता हुवा नीचे डालता हुवा वह पुरुष कितनी क्रियाओं करे ? अहो गौतम ! जब लग वह ताल वृक्षपर चढता है और चढकर उस के फल चलाता है अथवा नीचे डालता है वहां लग उस को कायिकादि पांचों क्रियाओं लगती है. और जिन जीवों क शरीर से ताल बना हुवा है उन जीवों को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! वह ताल फल अपनी गुरुता से यावत् नीचे गिरे और प्राणों की घात होवे अहो भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं लगती है ? अहो गौतम ! जहां लग वह पुरुष ताल वृक्षपर आरूढ होकर रहा है और उस का फल अपनी गुरुता से नीचे आकर गिरता है और मार्ग में

जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ जेसिं पियणं जीवाणं सरीरेहिंतो तलफले णिव्वत्तिए तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ५ जेवियसे जीवा अहे वीससाए, पच्चोवयमाणस्स उग्गहे वट्टंति, तेवियणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहि पुट्ठा ६ ; ॥ ६ ॥ पुरिसेणं भंते ! रुक्खस्स मूलं पवालेमाणेवा पवाडेमाणेवा कइकिरिए ? गोयमा ! जावंचणं से पुरिसे रुक्खस्स मूलं पवालेइवा पवाडेइवा, तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ जेसिंपियणं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए जाव बीए णिव्वत्तिए तेविणं जीवा काइयाए

प्राणों की घात करता है वहांलग उस पुरुष को चार क्रियाओं कही हैं क्योंकी उस पुरुष के योग से उसकी घात नहीं हुई है. जिन जीवों के शरीर से ताल बना हुवा है उन जीवों को कायिकादि चार क्रियाओं लगती है. और जिन जीवों के शरीर से तालफल बना हुवा है उन जीवों को कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं. और जो जीवों स्वभाव से ही नीचे आते हैं उन जीवों को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष वृक्ष के मूल को चलाता व नीचे डालता कितनी क्रियाओं करे ? अहो गौतम ! जहां लग वह पुरुष वृक्ष के मूल को चलाता व नीचे गिराता है

जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥ ७ ॥ अहेणं भंते ! से मूले अप्पणो गुरुयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेइ तएणं से पुरिसे कइ किरिए ? गोयमा ! जावं चणं मूले अप्पणो जाव ववरोवेइ तावं चणं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपिणं सरीरेहिंतो कंदे णिव्वत्तिए जाव बीए णिव्वत्तिए तेविणं जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठा ; जेसिंपियणं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा, ॥ ८ ॥ जेवियणं से जीवा अहे वीस-

वहां लग वह पुरुष कायिकादि पांच क्रियाओं से स्पर्शाया हुवा है. जिन जीवों के शरीर से मूल यावत् बीज बना हुवा है उन को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! वृक्ष के मूल अपनी गुरुता से नीचे आवे यावत् प्राणों को जीवित से पृथक् करे तब उस पुरुष को कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! जहां लग अपनी गुरुता से यावत् जीवित से पृथक् करता है वहां लग वह पुरुष कायिकादि चार क्रियाओं से स्पर्शाया हुवा है. जिन जीवों के शरीर से कंद यावत् बीज बना हुवा है उन जीवों को भी कायिकादि चार क्रियाओं लगती हैं और जिन जीवों के शरीर से मूल बना हुवा है उन जीवों को कायिकादि पांच क्रियाओं स्पर्शी हुई हैं ॥ ८ ॥ स्वभाव से नीचे आते मार्ग में जो जीवों

सूत्र

साए पच्चोवयमाणस्स उग्गहे वट्टंति तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं पुट्ठा ॥ ९ ॥ पुरिसेणं भंते ! रुक्खस्स कंदं पचा० ? गोयमा ! जावं चणं से पुरिसे जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे जेसिंपियणं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए जाव बीए णिव्वत्तिए ते विणं जीवा पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥ १० ॥ अहगं भंते ! से कंदे जावं चणं से कंदे अप्पणो जाव चउहिं पुट्ठे, जेसिंपियणं जीवाणं सरीरहिंतो मूल निव्वत्तिए खंधे णिव्वत्तिए जाव चउहिं पुट्ठा, जेसिंपियणं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे णिव्वत्तिए, तेविणं जीवा जाव पंचहिं पुट्ठो ; जेविय से जीवा अहे वीससाए पच्चोवय जाव

भावार्थ

रहे हैं वे कायिकादि पांच क्रियाओं से स्पर्शे हुवे हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! वृक्ष के कंद चलाते व नीचे गिराते कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! जब लग वह पुरुष कंद चलाता है यावत् पांच क्रियाओं. जिन जीवों के शरीर से मूल यावत् बीज बना हुवा है उन जीवों को भी पांच क्रियाओं लगे. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! वह कंद अपनी गुरुता से नीचे आवे तो कितनी क्रियाओं लगे ? वगैरह पूर्वोक्त जैसे यावत् चार क्रियाओं लगे. जिन जीवों के शरीर से कंद बना हुवा है उन जीवों को भी पांच क्रियाओं लगी है. और स्वभाव से नीचे आते यावत् पांच क्रियाओं लगे. जैसे कंद का कहा वैसे ही बीज का

पंचहिं पुट्ठा जहा कंदए । एवं जाव बीर्य ॥ ११ ॥ कइणं भंते ! सरीरया पण्णत्ता? गोयमा ! पंच सरीरया पण्णत्ता, तंजहा-ओरालियं जाव कम्मए ॥ १२ ॥ कइणं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचइंदिया पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदियं जाव फासिं-दियं ॥ १३ ॥ कइविहेणं भंते ! जोए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तंजहा-मणजोए वयजोए कायजोए ॥ १४ ॥ जीवेणं भंते ! ओरालियसरीरेणं णिव्वत्तिएमाणे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंच किरिए, एवं पुढवीकाइएवि, एवं जाव मणुस्से ॥ १५ ॥ जीवाणं भंते ! ओरालिय

जानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! शरीर कितने कहे हैं ! अहो गौतम ! शरीर पांच कहे हैं. जिन के नाम उदारिक शरीर वैक्रेय शरीर, आहारक शरीर, तेजस शरीर व कार्माण शरीर ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रियों कितनी कही हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रियों पांच कही है. श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! योग कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! योग तीन कहे हैं १ मन योग २ वचन योग व ३ काया योग ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीर बनाते हुवे जीवों को कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! क्वचित् चार व क्वचित् पांच क्रियाओं लगे, ऐसे ही पृथ्वीकाया का यावत् मनुष्य तक कहना

सरीरणिव्वत्तिएमाणा कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पंच किरियावि, ॥ पुढवीकाइयावि ॥ एवं जाव मणुस्सा ॥ एवं वेउव्विय सरीरेणवि दोदंडगा, णवरं जस्स अत्थि वेउव्वियं एवं जाव कम्मग सरीरं ॥ एवं सोइंदियं जाव फासिंदियं ॥ एवं मणजोगं वइजोगं कायजोगं, जस्स जं अत्थि तं भाणियव्वं, एते एगत्तपुहत्तेणं छव्वीस दडगा ॥ १६ ॥ कइविहेण भंते ! भावे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे भावे पण्णत्ते, तंजहा-उदइए उवसमिए जाव सण्णिवाइए ॥ सेकिंतं उदइए भावे ? उदइए भावे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-ओदएय उदयणिप्पण्णेय । एवं एएणं

॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीर बनाने वाले जीवों को कितनी क्रियाओं लगे. ? अहो गौतम ! तीन चार पांच क्रियाओं लगे ऐसे ही पृथ्वी काय यावत् मनुष्य का जानना. ऐसे ही वैक्रेय शरीर के भी एक जीव व अनेक जीव आश्री दो दंडक कहे हैं. विशेषता इतनी कि जिन को जितने शरीर हैं उन को उतने कहना. ऐसे ही कार्माण शरीर तक कहना. ऐसे ही श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय का जानना. मनयोगी, वचन योगी व काया योगी का भी वैसे ही जानना. ॥१६॥ अहो भगवन् ! भाव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! भाव के छ भेद कहे हैं औदयिक भाव, औपशमिक भाव यावत् सान्निपातिक भाव.-अहो

अभिलावेणं जहा अणुओगदारे छणामं तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव सेतं सण्णि-वाइए भावे ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसस्स सयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १ ॥

से, णूणं भंते! संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे धम्मेट्ठिए असंजयअविरय अपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे अहम्मेट्ठिए, संजयासंजए धम्माधम्मेट्ठिए? हंता गोयमा! संजयविरय जाव धम्माधम्मेट्ठिए ॥ १ ॥ एएसिणं भंते! धम्मंसिवा

भगवन्! औदयिक भाव किसे कहते हैं? अहो गौतम! औदयिक भाव के दो भेद कहे हैं। औदायिक व उदयनिष्पन्न वगैरह जैसे अनुयोग द्वार में छ नाम कहे हैं. वैसा सब यहां पर विशेषता रहित कहना. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यह सतरहवा शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ १ ॥

पहिले उद्देशे के अंत में भाव का कथन किया. उन भाववाले संयति होते हैं. इसलिये आगे संयति का कथन करते हैं. अहो भगवन्! प्रत्याख्यान से पाप कर्म को नष्ट करनेवाले संयति विरति क्या धर्म में स्थित कहा जाता है? प्रत्याख्यान से पाप कर्म नहीं नष्ट करनेवाला अविरति असंयति क्या अधर्म में स्थित कहा जाता है? अथवा संयतासंयति धर्माधर्म में स्थित कहा जाता है? हां गौतम! संयति धर्म में स्थित यावत् संयतासंयति धर्माधर्म में स्थित कहे जाते हैं ॥१॥ अहो भगवन्! इन धर्म, अधर्म व धर्माधर्म में

अहम्मंसिवा धम्माधम्मंसिवा चक्किया केइ आसइत्तएवा जाव तुयट्टित्तएवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव धम्माधम्मेट्ठिए ? गोयमा ! संजय विरय जाव पावकम्मे धम्मेट्ठिए धम्मंचेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, असंजयपावकम्मे अहम्मेट्ठिए अहम्मंचेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, संजया संजए धम्माधम्मेट्ठिए धम्माधम्मं उवसंपज्जित्ताण विहरइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव ट्ठिए ॥ २ ॥ जीवाणं भंते ! किं धम्मेट्ठिया अहम्मेट्ठिया धम्माधम्मेट्ठिया ? गोयमा !

कोई बैठने को, उठने को यावत् सोने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. क्योंकि धर्म व धर्माधर्म अरूपी है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि संयाति धर्म में स्थित है यावत संयतासंयाति धर्माधर्म में स्थित है ? अहो गौतम ! प्रत्याख्यान से पाप कर्म का रूंधन करनेवाले विरति संयाति धर्म में स्थित हैं और धर्म का ही आश्रय ग्रहण कर विचरते हैं. असंयाति अधर्म में स्थित रहते हैं और अधर्म का ही आश्रय ग्रहण कर विचरते हैं वैसे ही संयतासंयाति धर्माधर्म में स्थित हैं और धर्माधर्म का आश्रय ग्रहण कर विचरते हैं. इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् धर्माधर्म में स्थित हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बहुत जीव क्या धर्म में स्थित हैं अधर्म में स्थित हैं या धर्माधर्म में स्थित हैं ?

जीवा धम्मेवि ट्ठिया अहम्मेविट्ठिया, धम्माधम्मेविट्ठिया ॥ णेरइयाणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! णेरइया णो धम्मेट्ठिया, अहम्मेट्ठिया, णो धम्माधम्मेट्ठिया, एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ पंचिंदियतिरिक्ख जोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्ख जोणिया णो धम्मेट्ठिया, अहम्मेट्ठिया, धम्माधम्मेविट्ठिया ॥ मणुस्सा जहा जीवा ॥ वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा णेरइया ॥ ३ ॥ अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति एवं खलु समणा पंडिया समणोवासगा बालपंडिया जस्सणं एगपाणाएवि दंडे अणिक्खित्ते सेणं एगंतेबालोत्ति वत्तव्वं सिया, से कहमेयं

अहो गौतम ! जीव धर्म में स्थित हैं, अधर्म में स्थित व धर्माधर्म में स्थित हैं. नारकी की पृच्छा ? नारकी धर्म में स्थित नहीं हैं अधर्म में स्थित हैं और धर्माधर्म में स्थित नहीं हैं. ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यंत कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय धर्म में स्थित नहीं है परंतु अधर्म व धर्माधर्म में स्थित हैं. मनुष्य धर्म अधर्म व धर्माधर्म में स्थित हैं. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि श्रमण पंडित हैं श्रमणोपासक बालपंडित हैं और जिसने एक प्राणी का घात का परिहार नहीं किया है वह एकान्त बाल है. तो अहो भगवन् ! यह किस

भंते ! एवं ? गोयमा ! जंणं ते अण्णउत्थिया एवं माइक्खंति जाव वत्तव्वंसिया जे ते एवं माहंसु मिच्छते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! जाव परूवेमि एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासगा बालपंडिया, जस्सणं एगपाणेवि दंडे णिक्खित्ते सेणं णो एगंतबालेत्ति वत्तव्वंसिया ॥ ४ ॥ जीवाणं भंते ! बाला पंडिया बालपंडिया ? गोयमा ! जीवा बालावि पंडियावि बालपंडियावि, णेरइयाणं पुच्छा, गोयमा ! णेरइया बाला, णो पंडिया णो बालपंडिया ॥ एवं चउरिंदियाणं, पंचिंदियातिरिक्ख पुच्छा, गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया बाला, णो पंडिया, बालपंडियावि

तरह है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थिक जो ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि श्रमण पंडित, श्रमणोपासक बाल पंडित व एक भी जीव की घात का जिसने परिहार नहीं किया वह एकांत बाल है वह मिथ्या है मैं इस कथन को ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि श्रमण पंडित, श्रमणो पासक बालपंडित, और जिसने एक प्राणिकी भी घात का भी परिहार किया है वह एकांत बाल नहीं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव बाल, पंडित व बालपंडित हैं? अहो गौतम! जीव बाल, पंडित व बाल पंडित हैं. नारकी की पृच्छा? नारकी बाल हैं परंतु पंडित व बाल पंडित नहीं हैं. ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यंत कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा !

मणुस्सा जहा जीवा, वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा णेरइया ॥ ५ ॥ अण्ण उत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति एवं खलु पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स अण्णे जीवे अण्णे जीवाया ॥ पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे कोहाववेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे वट्टमाणस्स अण्णे जीवे अण्णे जीवाया ॥ उप्पत्तियाए जाव पारिणामियाए वट्टमाणस्स अण्णे जीवे अण्णे जीवाया ॥ उग्गहे ईहा अवाए वट्टमाणस्स जाव जीवाया ॥ उट्ठाणे जाव परक्कमे वट्टमाणस्स जाव जीवाया ॥ णेरइयत्ते तिरिक्खमाणुस्सदेवत्ते वट्टमाणस्स जाव जीवाया

तिर्यंच पंचेन्द्रिय बाल व बाल पंडित हैं परंतु पंडित नहीं हैं. मनुष्य का समुच्चय जीव जैसे कहना. वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि प्राणातिपात, मृषावाद यावत् मिथ्यादर्शन शल्य में रहने वाले जीवों को जीव अन्य है व जीवात्मा अन्य है, प्राणातिपात से निवर्तना यावत् परिग्रह से निवर्तना, क्रोध का त्याग यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का त्याग में रहने वाले जीवों को जीव अन्य है व जीवात्मा अन्य है. उत्पातिया यावत् पारिणामिया में रहने वाले जीवों को जीव अन्य है व जीवात्मा अन्य है, अवग्रह ईहा व अपाय में रहने वाले

णाणावरणिज्जे जाव अंतराइये वट्टमाणस्स जाव जीवाया ॥ एवं कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए, सम्मद्दिट्ठीए ३, एवं चक्खुदंसणे ४, आभिणिबोहियणाणे ५, मइ-अण्णाणे ३; आहारसण्णाए ४, एवं ओरालिय सरीरे ४, एवं मणजोए ३, सागा-रोवओगे २ वट्टमाणस्स अण्णेजीवे अण्णे जीवाया ॥ सेकहमेयं भंते ! एवं? गोयमा ! जण्णं ते अण्ण उत्थिया एवमाइक्खंति जाव मिच्छंते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे सच्चेव जीवाया

जीवों को जीव अन्य है व जीवात्मा अन्य है उत्थान यावत् पराक्रम में रहने वाले जीवों को जीव अन्य है व जीवात्मा अन्य, नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देव में जीव अन्य व जीवात्मा अन्य, ज्ञानावरणीय यावत् अंतराय में जीव अन्य व जीवात्मा अन्य, ऐसे ही कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या, समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि व समामिथ्यादृष्टि, चक्षुदर्शनादि चार दर्शन, मतिज्ञानादि पांच ज्ञान, मति अज्ञानादि तीन अज्ञान आहारसंज्ञादि चार संज्ञा उदारिक शरीरादि पाच शरीर, मनयोगादि तीन योग और साकारोपयुक्त व अनाकारोप युक्त में रहने वाले जीवों को जीव अन्य है. व जीवात्मा अन्य है तो अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थिकों का उपर्युक्त कथन मिथ्या है. उसे मैं इस तरह कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि

जाव अणागारोवओगे वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे सच्चेव जीवाया ॥ ६ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता पभू अरूवी विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवेणं जाव णो पभू अरूवी विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए? गोयमा ! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि; मए एयं णायं, मए एयं दिट्ठं, मए एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं-जंणं तहागयस्स जीवस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स सवेदगस्स समोहस्स सलेसस्स ससरीरस्स ताओ सरीराओ अविप्पमुक्कस्स एवं पण्णायाति,

प्राणातिपात यावत् मिथ्या दर्शन शल्य में रहने वाले वह जीव व वही जीवात्मा है. ऐसे ही अनाकारोपयुक्त तक जानना. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महासुख वाला देव पहिले रूपी होकर फीर अरूपीका वैक्रेय करके रहने में क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् अरूपीका वैक्रेय करके रहनेते समर्थ नहीं है ? अहो गौतम ! मैं यह जानता हूं देखता हूं पर्याय से जानता हूं सब वस्तु के सन्मुख होकर जानता हूं मैंने यह जाना, मैंने यह देखा, मैंने यह पर्याय से जाना, मैं सब वस्तु की सन्मुख हुवा कि रूप, कर्म, राग, शरीर, मोह,

तंजहा-कालत्तेवा जाव सुक्किलत्तेवा, सुब्भिगंधत्तेवा, दुब्भिगंधत्तेवा, तित्तत्तेवा जाव महुरत्तेवा, कक्खडत्तेवा जाव लुक्खत्तेवा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव चिट्ठित्तए ॥७॥ सच्चेवणं भंते! से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूविं विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए ? गोयमा ! अहमेयं जाणामि जाव जंणं तहागयस्स जीवस्स, अरूविस्स, अकम्मस्स, अरागस्स, अवेदस्स, अमोहस्स, अलेसस्स, असरीरस्स ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स णो एवं पण्णायाति, तंजहा कालत्तेवा जाव लुक्खत्तेवा से तेणट्ठेणं जाव चिट्ठित्ताएवा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति !

लेश्या वाले, व शरीर से रहित जीव को कालापना यावत् शुक्लपना, सुरभिगंधपना व दुरभिगंधपना, तिक्त पना यावत् मधुरपना कर्कशपना यावत् रूक्षपना का ज्ञान होता है इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् रहता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! वही जीव पहिला अरूपी होकर फीर रूपीका वैक्रेय कर रहने को क्या समर्थ होता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि वही जीव पहिले अरूपी होकर रूपी का वैक्रेय कर रहने में समर्थ नहीं है? अहो गौतम! मैं ऐसा जानता हूं यावत् तैसे रूप, कर्म, राग, वेदना, मोह, लेश्या, शरीर व उस शरीर से रहित जीव को कालापना

सत्तरसमस्स वितिओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ २ ॥ * *

सेलेसि पडिवण्णएणं भंते ! अणगारे सयासमियं एयति वेयति जाव तंतं भावं परि-
णमइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ णण्णत्थेगेणं परप्पओगेणं ॥ १ ॥ कइविहाणं भंते !
एयणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा एयणा पण्णत्ता, तंजहा दव्वेयणा, खेत्तेयणा,
कालेयणा, भवेयणा, भावेयणा ॥ २ ॥ दव्वेयणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा णेरइयदव्वेयणा तिरिक्खमणुस्सदेव दव्वे-

यावत् रूक्षपना का ज्ञान नहीं होता है इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् रहने में समर्थ नहीं है. अहो
भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं, यह सतरहवा शतक का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १७ ॥ २ ॥
दूसरे उद्देशे के अंत में रूपी अरूपी का कथन किया, अब इस में कंपना लक्षण कहते हैं. अहो
भगवन् ! शैलेशी प्रतिपन्न अनगार सदैव क्या कंपते हैं, विशेष कंपते हैं यावत् उस भाव को क्या
परिणमते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है, मात्र परप्रयोग से कंपना होती है. ॥ १ ॥ अहो
भगवन् ! कंपना के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कंपना के पांच भेद कहे हैं जिनके नाम १ द्रव्य
कंपना, २ क्षेत्र कंपना ३ काल कंपना ४ भव कंपना और ५ भाव कंपना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् !
द्रव्य कंपना के कितने भेद कहे हैं ?-अहो गौतम ! द्रव्य कंपना के चार भेद कहे हैं १ नारकी द्रव्य

यणा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णेरइयदव्वेयणा ? णेरइय दव्वेयणा गोयमा! जंणं णेरइया णेरइयदव्वे वट्टिंसुवा वट्टंतिवा वट्टिस्संतिवा तेणं तत्थ णेरइया णेरइय दव्वे वट्टमाणा णेरइयदव्वेयणं एयंसुवा एयंतिवा एयस्संतिवा, से तेणट्ठेणं जाव दव्वे-यणा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तिरिक्खजोणिय एवंचेव, तिरिक्खजोणिय दव्वेयणं भाणियव्वं, सेसं तंचेव ॥ एवं जाव देवदव्वेयणा ॥ ३ ॥ खेत्तेयणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा णेरइय खेत्तेयणा जाव देवखेत्तेयणा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णेरइय खेत्तेयणा णे० २ ? एवंचेव

कंपना २ तिर्यंच द्रव्य कंपना ३ मनुष्य द्रव्य कंपना और और ४ देव द्रव्य कंपना. अहो भगवन् ! नारकी की द्रव्य कंपना क्यों कही ? अहो गौतम ! जो नारकी नरकपना में रहे, रहते हैं व रहेंगे उन नारकीयोंने वहां ही नरक द्रव्य में रहते हुवे नारकी द्रव्य कंपना की, करते हैं व करेंगे; इस से यावत् नारकी द्रव्य कंपना कही. ऐसे ही तिर्यंच द्रव्य कंपना, मनुष्य द्रव्य कंपना यावत् देव द्रव्य कंपना का जानना.॥३॥ अहो भगवन् ! क्षेत्र कंपना के कितने भेद कहे हैं. ? अहो गौतम ! क्षेत्र कंपना के चार भेद कहे हैं. नारकी क्षेत्र कंपना यावत् देव क्षेत्र कंपना. अहो भगवन् ! नारकी की क्षेत्र कंपना किसे कहते हैं ? अहो

णेरइयखेत्तेयणा भाणियव्वा एवं जाव देवखेत्तेयणा एवं कालेयणावि एवं भवेयणावि एवं जाव देवभावेयणावि ॥ ४ ॥ कइविहाणं भंते ! चलणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा चलणा पण्णत्ता, तंजहा सरीरचलणा, इंदियचलणा. जोगचलणा, ॥ ५ ॥ सरीरचलणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा ओरालिय सरीरचलणा जाव कम्मग सरीर चलणा ॥ ६ ॥ इंदियचलणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता तंजहा-सोइंदिय चलणा जाव फासिंदिय चलणा ॥ ७ ॥ जोगचलणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा

गौतम ! जैसे द्रव्य कंपना का कहा वैसे ही क्षेत्र कंपना का जानना. ऐसे ही काल भव व भाव कंपना का जानना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! चलना के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चलना के तीन भेद कहे हैं. १ शरीर चलना २ इन्द्रिय चलना व ३ योग चलना. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! शरीर चलना के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! शरीर चलना के पांच भेद कहे हैं. १ उदारिक शरीर चलना यावत् कार्माण शरीर चलना ॥ ६ ॥ इन्द्रिय चलना के कितने भेद कहे हैं. ? अहो गौतम ! इन्द्रिय चलना के पांच भेद कहे हैं. श्रोत्रेन्द्रिय चलना यावत् स्पर्शेन्द्रिय चलना. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! योग चलना के कितने भेद कहे

१ एजना का बाह्य प्रगट स्वभाव.
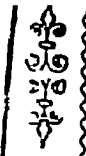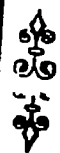
पण्णत्ता तंजहा मणजोगचलणा वइजोगचलणा कायजोग चलणा ॥१८॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ओरालियसरीर चलणा? ओरालिय सरीर चलणा गोयमा ! जंणं जीवा ओरालिय सरीरे वट्टमाणा ओरालिय सरीरप्पाओगाइं दव्वाइं ओरालिय सरीरत्ताए परिणामेमाणे ओरालिय सरीर चलणं, चलिंसुवा चलति चालिस्संतिवा से तेणट्ठेणं जाव ओरालियसरीरचलणा २ ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ वेउव्विय सरीर चलणा? वेउव्विय सरीर चलणा एवं चेव णवरं वेउव्विय सरीरे वट्टमाणे एवं जाव कम्मग सरीर चलणा से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सोइंदिय चलणा सोइंदिय चलणा जंणं जीवा सोइंदियवट्टमाणा सोइंदियप्पाओग्गाइं दव्वाइं सोइंदियत्ताए परिणामेमाणे सोइंदिय चलणं चालिंसुवा

है ? अहो गौतम ! योग चलना के तीन भेद कहे हैं १ मनयोग चलना २ वचन वचन योग चलना व काया योग चलना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीर की चलना क्यो कही ? अहो गौतम! उदारिक शरीर में रहने वाले जीवों उदारिक शरीर प्रायोग्य द्रव्य को उदारिक शरीरपने परिणमाते उदारिक शरीर की चलना की, करते हैं व करेंगे इसलिये ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीर की चलना. ऐसे ही वैक्रेय, आहारक, तेजस कार्माण शरीर का जानना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि श्रोत्रेन्द्रिय चलना ? अहो गौतम ! श्रोत्रेन्द्रिय में रहनेवाले जीवों श्रोत्रेन्द्रिय

चलंतिवा चालिस्संतिवा, से तेणट्ठेणं जाव सोइंदिय चलणा सोइंदिय चलणा॥ एवं जाव फासिंदिय चलणा ॥१०॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ मणजोग चलणा ? मणजोग चलणा गोयमा! जंणं जीवा मणजोए वट्टमाणा मणजोगप्पाओग्गाइं दव्वाइं मणजोगत्ताए परिणामेमाणे मणचलणं चालिंसुवा चलंतिवा चलिस्संतिवा, से तेणट्ठेणं जाव मणजोगचलणा मणजोगचलणा ॥ एवं वयजोग चलणा एवं कायजोगचलणावि ॥ ११ ॥ अह भंते ! संवेगे, णिव्वेगे, गुरुसाहम्मिय सुस्सूसणया, आलोयणया, णिंदणया, गरहणया, खमावणया, सुतसहायता, विउसमणया भावे, अप्पडिबद्धता,

प्रायोग्य द्रव्यों को श्रोत्रेन्द्रियपने परणमाते हुवे श्रोत्रेन्द्रिय की चलना चली, चलते हैं व चलेंगे इसलिये ऐसा कहा गया है कि श्रोत्रेन्द्रिय की चलना. ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय की चलना तक कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! मनयोग चलना किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! मनयोग में वर्तनेवाले जो जीवों हैं वे मन प्रायोग्य द्रव्य को मनयोगपने परिणमाते मन चलना चले, चलते हैं व चलेंगे इस लिये यावत् मनयोग चलना. ऐसे ही वचन योग व काया योग का जानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! १ मोक्षकी अभिलाषा रूप संवेग भाव से २ संसार त्याग रूप निर्वेग भाव से

विणिवट्टणया, विवित्तसयणासणसेवणया, सोइंदिय संवरे जाव फासिंदिय संवरे, जोगपच्चक्खाणे. सरीरपच्चक्खाणे, कसाय पच्चक्खाणे, संभोगपच्चक्खाणे, उवहि पच्चक्खाणे, भत्तपच्चक्खाणे, खिमा, विरागता, भावसच्चे, जोगसच्चे, करणसच्चे, मण समण्णाहरणया, वइसमण्णाहरणया, कायसमण्णाहरणया, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसण सल्लविवेगे, णाण संपण्णया, दंसण संपण्णया, चरित्त संपण्णया, वेदण

३ गुरू और स्वधर्मियों की सेवा भक्ति से ४ लगे पाप की आलोचना से ५ आत्मा की साक्षी में निंदा करने से ६ गुरु की साक्षिस गर्हा करने से ७ सब जीवों की साथ क्षमाभाव करने से ८ श्रुत ज्ञान की साहायता से ९ क्रोध का उपशम से १० अप्रतिबंधपना से ११ असंयम की निवृत्ति से १२ स्त्री पुरुष व पंडग रहित स्थान भोगने से १३-१७ पांचों इन्द्रियों का संवर करने से १८ मनादि योग को पाप मार्ग में प्रवर्ताने का प्रत्याख्यान करने से १९ शरीर की शुश्रूषा कराने का प्रत्याख्यान करने से २० क्रोधादि कषाय के प्रत्याख्यान से २१ एक मंडल पर अन्य साधु साथ आहार पानी भोगने से २२ वस्त्र पात्रादि उपधि का प्रत्याख्यान करने से २३ आहार के प्रत्याख्यान से २४ क्षमा भाव धारने से २५ वैराग्य भाव धारने से २६ भावों की सत्यता से २७ योगों की सत्यता से २८ प्रतिलेखनादि क्रिया की सत्यता से २९ मन को आगम मार्ग में प्रवर्ताने से ३० वचन को आगम मार्ग में प्रवर्ताने से ३१ काया को

अहियासणया, मारणांतियअहियासणया, एएणं किं पज्जवसाणफला पण्णत्ता? समणाउसो! गोयमा! संवेग णिव्वेगे जाव माणांतिय अहियासणया एएणं सिद्धपज्जव-साण फला पण्णत्ता समणाउसो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ सत्तरसमस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ३ ॥ * * *

तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी अत्थिणं भंते! जीवाणं पाणाइवाएणं

आगम मार्ग में प्रवर्ताने से ३२-४५ क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशून्य, परपरिवाद, रति, अरति, मायामृषा व मिथ्यादर्शन शल्य इन की निवृत्ति से ४६ ज्ञान युक्त, ४७ दर्शन युक्त ४८ चारित्र युक्त ४९ क्षुधा वेदनीय समभाव से सहन करने से और ५० मरणांतिक समभाव से सहन करने से; उक्त सब बोलों से क्या जीव को मोक्ष पर्यवसान रूप फल होता है? अहो आयुष्यवंत श्रमणो! अहो गौतम! संवेग यावत् मरणांतिक समभाव से मोक्ष रूप पर्यवसान फल होता है. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं. यों कहकर यावत् विचरने लगे. यह सतरहवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ३ ॥

तीसरे उद्देशे में एजनादि क्रिया कही. चौथे उद्देशे में भी उसकाही कथन करते हैं. उस काल उस समय में यावत् गौतम स्वामी ऐसा पूछने लगे कि अहो भगवन्! क्या जीवों को प्राणातिपात से क्रिया

किरिया कज्जइ ? हंता अत्थि ॥ सा भंते! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ ? गोयमा पुट्ठाकज्जइ णो अपुट्ठाकज्जइ, एवं जहा पढमसए छट्ठुद्देसए जाव णो अणाणुपुव्विकड- त्ति वत्तव्वंसिया, एवं जाव वेमाणियाणं णवरं जीवाणं एगिंदियाणय णिव्वाघाएणं छद्दिसि वाघायं पडुच्च सियतिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पंचदिसिं सेसाणं णियमं छद्दिसिं ॥ १ ॥ अत्थिणं भंते! जीवा मुसावाएणं किरिया कज्जइ ? हंता अत्थि ॥ साभंते! किं पुट्ठाकज्जइ अपुट्ठा कज्जइ जहा पाणाइवाएणं दंडओ एवं मुसावाएणवि ॥

होती है ? हां गौतम ! जीवों को प्राणातिपात से क्रिया होती है. अहो भगवन् ! वह स्पर्शी हुइ होती है या विना स्पर्शी हुई होती है ? अहो गौतम ! स्पर्शी हुई होती है परंतु बिना स्पर्शी हुई नहीं है. वगैरह जैसे प्रथम शतक के छठे उद्देशे में कहा वैसे ही कहना यावत् अनुपूर्विकृत ऐसा कहना, ऐसेही वैमानिक पर्यंत सब दंडक का जानना. परंतु समुच्चय जीव एकेन्द्रिय में निर्व्याघात आश्री छदिशि व्याघात आश्री क्वचित् तीन दिशि, चारदिशि कदाचित् पांचदिशि कहना. और शेष सब को छ दिशि कहना. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीवों को मृषावाद से क्रिया होती है ? हां गौतम ! जीवों को मृषावाद से क्रिया होती है, अहो भगवन् ! क्या वह स्पर्शी हुई होवे या विना स्पर्शी हुइ होवे ? अहो गौतम ! जैसे प्राणातिपात का

अदिण्णादाणेणवि ॥ मेहुणेणवि ॥ परिग्गहेणवि ॥ एवं एए पंचदंडगा ॥ जं समएणं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठाकज्जइ, एवं तहेव जाव वत्तव्वं सिया, जाव वेमाणियाणं ॥ एवं जाव परिग्गहेणं ॥ एवं एएवि पंच-दंडगा जं देसेणं भंते ! जीवाणं पाणाइवाइएणं किरिया कज्जति जाव परिग्गहेणं, जं पदेसेणं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जति सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ एवं तहेव दंडओ ॥ एवं जाव परिग्गहेणं ॥ एवं एए वीसदंडगा ॥ ३ ॥ जीवाणं भंते ! किं अत्तकडे दुक्खे, परकडे दुक्खे, तदुभयकडे दुक्खे ? गोयमा ! अत्तकडे

कहा वैसे ही मृषावाद का जानना. ऐसे ही अदत्तादान, मैथुन व परिग्रह का जानना. ॥२॥ अहो भगवन् ! एक समय में जीवों को प्राणातिपात से जो क्रिया होती है वह क्रिया स्पर्शी हुई होती है या विना स्पर्शी हुई होती है ? अहो गौतम ! पूर्वोक्त वक्तव्यता जैसे वैमानिक तक कहना. ऐसे ही मृषावाद यावत् परिग्रह का जानना. अहो भगवन् ! एक देश में जीवों को प्राणातिपात से जो क्रिया होती है वह क्रिया यावत् परिग्रह पर्यंत जानना. एक प्रदेश में प्राणातिपात से जो क्रिया होती है. वह क्रिया क्या स्पर्शी हुई होवे या विना स्पर्शी हुई होवे ? इस का भी पूर्वोक्त जैसे जानना. ऐसे ही परिग्रह पर्यंत कहना. ऐसे बीस दंडक का

दुक्खे, णो परकडे दुक्खे, णो तदुभयकडे दुक्खे, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥ जीवाणं भंते ! किं अत्तकडं दुक्खं वेदेंति परकडं दुक्खं वेदेंति तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति ? गोयमा! अत्तकडं दुक्खं वेदेंति, णो परकडं दुक्खं वेदेंति, णो तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ५ ॥ जीवाणं भंते ! किं अत्तकडा वेदणा, परकडा वेदणा, तदुभयकडा वेदणा ? गोयमा ! अत्त-कडा वेदणा णो परकडा वेदणा, णो तदुभयकडा वेदणा ॥ एवं जाव वेमाणियाणं

जानना. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीवों को क्या स्वतः का किया हुवा दुःख है परका किया हुवा दुःख है या उभय का किया हुवा दुःख है ? अहो गौतम ! जीवों को स्वतः का किया हुवा दुःख है परंतु अन्य का किया व उभय का किया हुवा दुःख नहीं है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जीव आत्मकृत दुःख वेदते हैं परकृत दुःख वेदते हैं या उभयकृत दुःख वेदते हैं ? अहो गौतम ! जीव आत्मकृत दुःख वेदते हैं परकृत व उभय कृत दुःख नहीं वेदते हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जीवों को क्या आत्मकृत वेदना, परकृत वेदना व उभयकृत वेदना है ? अहो भगवन् ! जीवों को आत्म-कृत वेदना है परंतु परकृत व उभय कृत वेदना नहीं है ऐसे ही वैमानिक पर्यंत चौवीस

॥ ६ ॥ जीवाणं भंते ! किं अत्तकडं वेदणं वेदेंति, परकडं वेदणं वेदेंति तदुभयकडं वेदणं वेदेंति ? गोयमा जीवा अत्तकडं वेदणं वेदेंति, णो परकडं वेदणं वेदेंति, णो तदुभयकडं वेदणं वेदेंति, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्सय चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ४ ॥ ० ० ०

कहिणं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं, इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम जहा ठाणपदे जाव मज्झे ईसाणवडिसए सेणं

ही दंडक का जानना ॥६॥ अहो भगवन् ! जीव क्या आत्म कृत वेदना वेदते हैं यावत् उभय कृत वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! जीव आत्म कृत वेदना वेदते हैं. परकृत व उभयकृत वेदना नहीं वेदते हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ४ ॥ ० ०

चौथे उद्देशे में वेदना का अधिकार कहा. साता वेदनीय कर्मवाले देवता होते हैं इसलिये साता वेदनीय का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! ईशान नामक देवेन्द्र देवराजा की सुधर्मा सभा कहां हैं ?

ईसाणवडिंसएमहाविमाणे अद्धतेरसजोअणसयसहस्साआयाम विक्खंभेणं उणयालीसं च सयसहस्साए बावन्नं सहस्साए अट्ठयअट्ठयाले जोयणसए परिक्खेवेणं एवं जहा दसमसए सक्कविमाणवत्तव्वया सा इहवि ईसाणस्सवि वत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा जाव आयरक्खत्ति, ठिई साइरेगाइं दो सागरोवमाइं, सेसं तंचेव जाव ईसाणे देविंदे देवराया ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ५ ॥ पुढवीकाइयाणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए समोहित्ता जे भविए

अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की उत्तर दिशि में इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत सम भूमि भाग से वगैरह जैसे स्थानपद में कहा वैसा यावत् मध्य में ईशानावतंसक है. वह साढे बारह लाख योजन का लम्बा व चौडा है, उसकी एक क्रोड गुनचालिस लाख बावन हजार आठ से अडतालीस योजन की परिधि है. वगैरह जैसा दशवे शतक में कहा वैसे ही यहां जानना. यावत् आत्मरक्षक देव. स्थिति दो सागरोपम की यावत् ईशान देवेन्द्र राजा. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ५ ॥

पांचवे उद्देशे में ईशान देवेन्द्र का कथन किया. छठे उद्देशे में पृथ्वीकाया का देवलोक में उत्पन्न

सोहम्मे कप्पे पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्ताए से भंते ! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा, पुव्विंवा संपाउणेत्ता पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुव्विंवा उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा पुव्विं वा संपाउणेत्ता पच्छा उववज्जेज्जा ॥ से केणट्ठेणं जाव ! पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुढवीकाइयाणं तओ समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणांतिय समुग्घाए, मारणांतिय समुग्घाएणं समोहणमाणे देसेणंवा समोहणइ सव्वेणवा समोहणइ, देसेण समोहणमाणे पुव्विं संपाउ-

होने का कहते हैं. अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में से पृथ्वी काया मारणांतिक समुद्घात कर के सौधर्म देवलोक में पृथ्वी कायापने उत्पन्न होवे तो क्या वह वहां उत्पन्न होकर पीछे आहार ग्रहण करे अथवा पहिले आहार ग्रहण कर पीछे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! पहिले उत्पन्न होकर पीछे आहार ग्रहण करे अथवा पहिले आहार ग्रहण कर पीछे उत्पन्न होवे अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् पीछे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया को तीन समुद्घात कही हैं. वेदना समुद्घात, कषायसमुद्घात मारणान्तिक समुद्घात. मारणांतिक समुद्घात करते देशसे समुद्घात करे सर्व से समुद्घात करे. देशसे समुद्घात करते पहिले आहार लेकर पीछे

णित्ता पच्छा उववज्जिज्जा, सव्वेण समोहणमाणे पुव्विं उववज्जिज्जा पच्छा संपाउणेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा ॥ १ ॥ पुढवीकाइयाणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव समोहए समोहएत्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढवी एवं चेव ईसाणेवि ॥ एवं अच्चुयगेवेज्ज विमाणे अणुत्तर विमाणे ईसिप्पभाराएय एवं चेव ॥ २ ॥ पुढवी काइयाणं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए समोहए समोहएत्ता जे भविए सोहम्मकप्पे पुढवी एवं जहा रयणप्पभाए पुढवीकाइओ उववाइओ; एवं सक्करप्पभाए पुढवी काइओ उववाएयव्वो, जाव ईसिप्पभाराए, एवं जहा रयणप्पभाए वत्तव्वया भणिया

उत्पन्न होवे और सर्व से समुद्घात करते पहिले उत्पन्न होवे पीछे आहार करे इसलिये ऐसा कहा गया है. यावत् उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में पृथ्वी काया मारणांतिक समुद्घात करके ईशान देवलोक में पृथ्वी कायापने उत्पन्न होवे तो क्या पहिले उत्पन्न होकर पीछे आहार करे अथवा पहिले आहार करके पीछे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे सौधर्म देवलोकका कहा वैसे ही यहां जानना. ऐसे ही सनत्कुमार यावत् अच्युत, ग्रैवेयक, अनुत्तर विमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी तक का जानना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शर्करप्रभा में से पृथ्वीकाया मारणांन्तिक समुद्घात करके सौधर्म देवलोक में पृथ्वी काया

एवं जाव अहे सत्तमाए समोहए ईसिप्पभाराए उववाएयव्वो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥

सत्तरसमस्स छट्ठो ॥ १७ ॥ ६ ॥

पुढवी काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्प
भाए पुढवीए पुढवी काइयत्ताए उववज्जित्तए सेणं भंते ! किं सेसं तं चेव जहा रयणप्पभाए
पुढवीकाइओ सव्व कप्पेसु जाव ईसिप्पभाराए ताव उववाइओ एवं सोहम्म पुढवी
काइओवि सत्तसु पुढवीसु उववाएयव्वो जहा जाव अहे सत्तमाए एवं जहा सोहम्म

पने उत्पन्न होवे वगैरह जैसे रत्नप्रभा का कहा वैसे ही यहां जानना. ऐसे ही ईषत्प्राग्भार पृथ्वी तक
उत्पन्न होने का जानना. जैसे रत्नप्रभा की वक्तव्यता कही वैसे ही सातवीं तमतम पृथ्वी की वक्तव्यता
कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का छठा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥१७॥६॥

गत उद्देशे में पृथ्वी काया का कथन किया. आगे उद्देशे में भी उस का ही कथन करते हैं. अहो
भगवन् ! सौधर्म देवलोक में पृथ्वी काया मारणांतिक समुद्घात करके इस रत्न प्रभा पृथ्वी में
पृथ्वी कायापने उत्पन्न होवे वगैरह सब पूर्वोक्त उद्देशे में कहा वैसे ही यहां कहना. जैसे रत्न प्रभा पृथ्वी
कायिक सब देवलोक में यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी में उत्पन्न होवे वैसा कहा ऐसे ही सातों पृथ्वी में

पुढवीकाइओ सव्वपुढवीसु उववाइओ, एवं जाव ईसिप्पभारा पुढवीकाइओ सव्वपुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहे सत्तमाए ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ७ ॥

आउकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए समोहइत्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए एवं जहा पुढवीकाइओ तहा आउकाइओवि, सव्वकप्पेसु जाव ईसिप्पभाराए तहेव उववाएयव्वो, एवं जहा रयणप्पभा

पृथ्वीकाया का उत्पन्न होना कहना. ऐसे ही जैसे सौधर्म पृथ्वीकायिक सब पृथ्वी में उत्पन्न होने का कहा वैसे ही यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वीकायिक सब पृथ्वी में जानना. यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का सातवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ७ ॥

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वीकाय में अप्काय मारणांतिक समुद्धात करके सौधर्म देवलोक में उत्पन्न होने योग्य होवे वह क्या पहिले उत्पन्न होकर पीछे आहार करे अथवा पहिले आहार कर पीछे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे पृथ्वीकाया का कहा वैसे ही अप्काया का सब देवलोक यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी तक कहना. और जैसे रत्नप्रभा की अप्काया कही वैसे ही शर्कर प्रभा यावत्

आउकाइओ तहा अहे सत्तमा पुढवी आउकाइओ उववाएयव्वो जाव ईसिप्पभाराए. सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ८ ॥

आउकाइएणं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए समोहएत्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलएसु आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए सेणं भंते ! सेसं तंचेव एवं जाव अहे सत्तमाए जहा सोहम्मआउकाइओ एवं जाव ईसिप्पभारा आउकाइओ जाव अहे सत्तमाए उववातेयव्वो सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमसयस्सय णवमो

सातवी तमतमा पृथ्वी यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का आठवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ८ ॥

अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में अप्कायिक मरणांतिक समुद्घात करके इस रत्न प्रभा पृथ्वी के घनोदधि के वलय में उत्पन्न होने योग्य होवे तो वह वहां क्या उत्पन्न होकर आहार करे या आहार करके उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे पहिले कहा वैसे ही यहां जानना. यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी का. जैसे सौधर्म देवलोक का कहा वैसे ही ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का नीचे की सातवी पृथ्वी में उत्पन्न होने तक कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का नववा

उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ९ ॥ * * *

वाउकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव जो भविए सोहम्मे कप्पे वाउकाइत्ताए उववज्जित्तए सेणं जहा पुढवीकाइओ तहा वाउकाइओवि णवरं वाउकाइयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा वेदणासमुग्घाए, जाव वेउव्वियसमुग्घाए, मारणांतिय समुग्घाएणं समोहणमाणे देसेणवा समोहए सेसं तंचेव जाव अहे सत्तमा समोहयाओ ईसिप्पभाराए उववाएयव्वो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्सय दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १० ॥ ० ०

उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ९ ॥ ० ०

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में वायुकाया मारणांतिक समुद्धात करके यावत् सौधर्म देवलोक में वायुकायापने उत्पन्न होने को योग्य है वगैरह सब पृथ्वीकाया जैसे कहना. विशेष में वायुकाया को चार समुद्धात कही. जिन के नाम. वेदना समुद्धात यावत् वैक्रेय समुद्धात. मारणांतिक समुद्धात करते देश से समुद्घात करे शेष वैसे ही जानना यावत् सातवी पृथ्वीतक. ईषत्प्राग्भार में से उत्पन्न होने का. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह सत्तरहवा शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुआ. ॥ १७ ॥ १० ॥

वाउकाइएणं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए समोहएत्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए तणुवाए घणवाय बलएसु तणुवायवलएसु वाउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, सेणं भंते ! सेसं तचेव एवं जहा सोहम्मकप्पवाउकाइओ सत्तसुवि पुढवीसु उववाइओ एवं जाव ईसिप्पभारा वाउकाइओ अहे सत्तमाए जाव उववाएयव्वो, सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स एक्कारसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ११ ॥

एगिंदियाणं भंते ! सव्वे समाहारा समुस्सास णीसासा, एवं जहा पढमसए बितिय उद्देसए पुढवीकाइयाणं वत्तव्वया भणिया सव्वेवि एगिंदियाणं इहं भाणियव्वा जाव

अहो भगवन् ! वायुकाय सौधर्म देवलोक में से मारणांतिक समुद्घात कर के इस रत्नप्रभा पृथ्वी में घनवात व तनुवात में घनवात वलय व तनुवातवलय में उत्पन्न होने योग्य होवे शेष वैसे ही जानना. ऐसे ही सौधर्म देवलोक में से वायुकाय सातों पृथ्वी में उत्पन्न होवे वैसे कहना ऐसे ही ईषत्प्राग्भार पृथ्वी में से वायुकाय नीचे की सातवी पृथ्वी में उत्पन्न होवे वहांतक कहना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह सत्तरहवा शतक का अग्यारवा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १७ ॥ ११ ॥

अहो भगवन् ! क्या एकेन्द्रिय सब सरिखे आहारवाले, सरिखे उश्वास नीश्वासवाले, वगैरह जैसे प्रथम

समाउया समोववण्णगा ॥१॥ एगिंदियाणं भंते ! कइलेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चउलेस्साओ पण्णत्ताओ, तंजहा कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा । एएसिणं भंते ! एगिंदियाणं कण्हलेस्साणं जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदियाणं तेउलेस्सा काउलेस्सा अनंतगुणा णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया । एएसिणं भंते ! एगिंदियाणं कण्हलेस्सा इड्डी जहेव दीवकुमारा सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स दुवालसमो उद्देसो ॥ १७ ॥ १२ ॥ × × ×

शतक के दूसरे उद्देशे में पृथ्वीकाया की वक्तव्यता कही वैसे ही यहां जानना यावत् सरिखे आयुष्यवाले व समान उत्पन्न होनेवाले. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय को कितनी लेश्याओं कहीं ? अहो गौतम ! एकेन्द्रिय को चार लेश्याओं कही. जिनके नाम कृष्णलेश्या यावत् तेजोलेश्या. अहो भगवन् ! इन कृष्ण यावत् तेजो लेश्यावाले में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे तेजो लेश्यावाले एकेन्द्रिय, इस से नीललेश्यावाले अनंतगुने, इस से कापोत लेश्यावाले विशेषाधिक इस से कृष्ण लेश्यावाले विशेषाधिक. अहो भगवन् ! कृष्णलेशी एकेन्द्रिय की ऋद्धि वगैरह? अहो गौतम ! जैसे द्वीप कुमार की कही वैसे ही जानना. यह सत्तरहवा शतक का बारहवा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १८ ॥ १२ ॥ ×

णागकुमाराणं भंते! सव्वे समाहारा जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसए तहेवाणिरवसेसं भाणियव्वं जाव इड्ढी ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ सत्तरसमस्स तेरसमो॥ १७॥ १३॥॥ सुवण्णकुमाराणं भंते ! सव्वे समाहारा एवं चेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमसस्स चउद्दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १४ ॥० ० ० विज्जुकुमाराणं भंते ! सव्वे समाहारा, एवं चेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स पण्णरसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १५ ॥ ० ०

अहो भगवन् क्या नाग कुमार देव सरिखे आहार करने वाले हैं ? अहो गौतम ! जैसे सोलहवे शतक में द्वीप कुमार का उद्देशा कहा वह सब यहां पर निरवशेष कहना यावत् ऋद्धि. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह सत्तरहवा शतक का तेरहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १७ ॥ १३ ॥ ०

अहो भगवन् ! क्या सुवर्णकुमार सारिखे आहार करने वाले हैं ? इन का भी अधिकार वैसे ही जानना. यह सतरहवा शतक का चौदहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ १४ ॥ ० ०

विद्युत्कुमार का भी वैसे ही जानना. अहो भगवन् आप के वचन सत्य हैं यह सतरहवा शतक का पन्नरहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ १५ ॥ ० ०

वायुकुमाराणं भंते ! सव्वे समाहारा, एवं चेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सोलसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १६ ॥ ० ०

अग्गिकुमाराणं भंते ! सव्वेसमाहारा एवं चेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सत्तरसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १७ ॥ सम्मत्तं सत्तरसमं सयं ॥ १७ ॥ ०

वायु कुमार का भी वैसे ही कहना. अहो भगवन् आपके वचन सत्य हैं यह सत्तरहवा शतक का सोलहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ १६ ॥

अहो भगवन् ! क्या अग्निकुमार सरिखे आहार करने वाले वगैरह पहिले जैसे कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सत्तरहवा शतक का सत्तरहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १७ ॥ १७ ॥

अष्टादश शतकम्-

पढमा विसाहमायं, दिएय पाणाय असुरेय ॥ गुल केवलि अणगारे, भविए तह सोमिलट्ठारसमे ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी जीवेणं भंते ! जीवभावेणं किं पढमे अपढमे ? गोयमा ! णो पढमे अपढमे ॥ एवं णेरइए

सतरहवे शतक के अंत में अग्नि कुमार देवता का सम आहार कहा. अब अठारहवे शतक के प्रारंभ में जीवों की उत्पत्ति का कथन करते हैं. इस शतक में दश उद्देशे कहे हैं. जीवादिक अर्थ में प्रथमत्वादि विचारणारूप पहिला उद्देशा. २ विशाखा नगरी ३ माकंदीय पुत्र का ४ प्राणातिपातादि विषयका ५ असुरवक्तव्यता ६ गुलादि अर्थ विशेष ७ केवल्यादि विषयका ८ अनगार विषय ९ भव्य द्रव्य नारकादि प्ररूपणार्थ और १० सोमिल ब्राह्मण का ये दश उद्देशे अठारहवे शतक में कहे. उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पुछने लगे कि अहो भगवन् ! क्या जीव जीवभाव से प्रथम है या अप्रथम है ? अर्थात् क्या जीव प्रथमता धर्म सहित है ? पहिले जीवपना नहीं था पीछे हुवा है अथवा अनादि से है ? अहो गौतम ! जीव जीवभाव से प्रथम नहीं है अर्थात् जीवपना नया प्राप्त नहीं होता है परंतु अनादि से है. जैसे जीवपना अप्रथम है वैसे ही नरक से लेकर वैमानिक पर्यंत

जाव वेमाणिए ॥१॥ सिद्धेणं भंते ! सिद्ध भावेणं किं पढमे अपढमे? गोयमा ! पढमे णो अपढमे ॥ २ ॥ जीवाणं भंते ! जीवभावेणं किं पढमा अपढमा ? गोयमा ! णो पढमा अपढमा ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ३ ॥ सिद्धाणं पुच्छा ? गोयमा ! पढमा णो अपढमा ॥ ४ ॥ आहारएणं भंते ! जीवे आहारभावेणं किं पढमे अपढमे? गोयमा ! णो पढमे अपढमे ॥ एवं जाव वेमाणिए ॥५॥ पोहत्तिएवि एवं चेव ॥६॥ अणाहारएणं भंते ! जीवे अणाहारभावेणं पुच्छा ? गोयमा ! सिय पढमे सिय अपढमे

चौवीस दंडक का जानना. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! सिद्ध सिद्धभाव से क्या प्रथम है या अप्रथम है ? अहो गौतम ! सिद्ध सिद्धभाव से अप्रथम है परंतु प्रथय नहीं है. यह एक आश्री कहा अब अनेक आश्री कहते हैं. अहो भगवन् ! बहुत जीव जीवभाव से क्या प्रथम हैं या अप्रथम हैं ? अहो गौतम ! प्रथम नहीं हैं परंतु अप्रथम हैं, ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ३ ॥ सिद्ध प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! आहारक जीव आहारभाव से क्या प्रथम है या अप्रथम है ? अहो गौतम ! प्रथम नहीं है परंतु अप्रथम है, ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ५ ॥ बहुत जीवों का भी वैसे ही जानना. ॥६॥ अहो भगवन्! अनाहारक जीव क्या अनाहार भाव से प्रथम है या अप्रथम है? अहो गौतम ! स्यात प्रथम वैं स्यात् अप्रथम है अर्थात् कितनेक जीवों की अनाहारक होने की आदि है सिद्धवत् और

णेरइए जाव वेमाणिए णो पढमे अपढमे ॥ ७ ॥ सिद्धे पढमे णो अपढमे ॥ ८ ॥ अणाहारगाणं भंते ! जावा अणाहारगा पुच्छा, गोयमा ! पढुमावि अपढमावि, णेरइया जाव वेमाणिया णो पढमा अपढमा सिद्धा पढमा णो अपढमा ॥ ९ ॥ एक्केके पुच्छा भाणियव्वा, भवसिद्धिए एगत्तपुहत्तेणं जहा आहारए, एवं अभवसिद्धिएवि ॥ १० ॥ णो भवसिद्धिय णो अभवासिद्धियएणं भंते ! जीवे णो भव० पुच्छा ? गोयमा ! पढमे णो अपढमे ॥ ११ ॥ णो भवसिद्धिणोअभवसिद्धिएणं भंते ! सिद्धे णो भव एवं पुहत्तेणवि दोण्हवि ॥ १२ ॥ सण्णीणं भंते ! जीवे सण्णि-

कितनेक जीवों अनादि से ही अनाहारक होते आये हैं, नारकी यावत् वैमानिक के प्रथम नहीं हैं परंतु अप्रथम हैं, सिद्ध प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं ॥ ७-८ ॥ अब बहुत जीव आश्री कहते हैं. अहो भगवन् ! अनाहारक जीवों अनाहारकभाव से क्या प्रथम हैं या अप्रथम हैं? अहो गौतम! प्रथम भी हैं और अप्रथम भी है नारकी यावत् वैमानिक प्रथम नहीं है परंतु अप्रथम हैं, सिद्ध प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं ॥ ९ ॥ भव सिद्धिक व अभवसिद्धिक का एकत्व अनेकत्व का आहारक जैसे कहना ॥ १० ॥ नोभवसिद्धिक नो अभवसिद्धिक प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं. ॥ ११ ॥ ऐसे ही णो भवसिद्धिक नो अभवासिद्धिक सिद्धका

भावेणं किं पढमे पुच्छा ? गोयमा ! णो पढमे अपढमे ॥ एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिए ॥ एवं पुहत्तेणवि ॥ असण्णी एवंचेव एगत्तपुहत्तेणं णवरं जाव वाणमंतरा णो सण्णी णो असण्णी ॥ जीवे मणुस्से सिद्धे पढमे णो अपढमे ॥ एवं पुहत्तेणवि ॥ १३ ॥ सलेस्सेणं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! जहा आहारए एयं पुहत्तेणवि ॥ कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से एवं चेव णवरं जस्स जा लेस्सा अत्थि ॥ अलेस्से णं जीवा मणुस्सा सिद्धा णो सण्णी णो असण्णी ॥ १४ ॥ सम्मद्दिट्ठीएणं भंते ! सम्मद्दिट्ठी-भावेणं किं पढमे पुच्छा ? गोयमा ! सिय पढमे सिय अपढमे. एवं एगिंदियवज्जं

एक आश्री व अनेक आश्री जानना॥१२॥अहो भगवन्! संज्ञी क्या संज्ञीभावसे प्रथम है या अप्रथम है?अहो गौतम! प्रथम नहीं है परंतु अप्रथम है. ऐसेही विकलेन्द्रिय छोडकर वैमानिक तक कहना. जैसे एक आश्री कहा वैसे अनेक आश्री जानना. असंज्ञी का भी एक आश्री अनेक आश्री ऐसे ही जानना. विशेष वाणव्यंतर तक कहना. नो संज्ञी नो असंज्ञी जीव मनुष्य व सिद्ध आश्री प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है॥१३॥ सलेशी एक व अनेक आश्री आहारक जैसे कहना. कृष्णलेशी यावत् शुक्ल लेशीका भी वैसे ही जानना. परंतु जिनमें जितनी लेश्या होवे उन में उतनी कहना. अलेशी का जीव मनुष्य व सिद्ध आश्री नो संज्ञी नो असंज्ञी जैसे कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् !

जाव वैमाणिए ॥ सिद्धे पढमे णो अपढमे पुहत्तिणा जीवा पढमावि अपढमावि एवं जाव वेमाणिया ॥ सिद्धा पढमा णो अपढमा ॥ मिच्छदिट्ठीए एगत्त पुहत्तेणं जहा आहारगा, सम्मामिच्छदिट्ठीए एगत्तपुहत्तेणं जहा सम्मादिट्ठी, णवरं जस्स अत्थि सम्मामिच्छत्ते ॥ १५ ॥ संजतेजीवे मणुस्सेय, एगत्त पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी ॥ असंजए जहा आहारए ॥ संजया संजए जीवे पंचिंदियातिरिक्खजोणियमणुस्से एगत्तपुहत्तेणं जहा सम्मादिट्ठी, णोसंजए णोअसंजए, णोसंजयासंजए जीवे सिद्धेय एगत्त

समदृष्टि समदृष्टि भाव से क्या प्रथम है या अप्रथम है ? अहो गौतम ! स्यात् प्रथम है स्यात् अप्रथम है ऐसे ही एकेन्द्रिय छोडकर यावत् वैमानिक पर्यंत जानना. सिद्ध में प्रथम व अप्रथम है. अनेक जीव आश्री प्रथम भी है और अप्रथम भी है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. सिद्ध प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है. मिथ्यादृष्टिका एक अनेक आश्री आहारक जैसे कहना. सममिथ्यादृष्टिका समदृष्टि जैसे कहना विशेष में जिन को सममिथ्यादृष्टि होवे उन को ही कहना ॥ १५ ॥ संयातिजीव मनुष्य में एक अनेक आश्री समदृष्टि जेसे कहना. असंयाति का आहारक जैसे कहना संयतासंयाति तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य का एक अनेक आश्री समदृष्टि जेसे कहना. नोसंयाति नो असंयाति नोसंयतासंयाति जीव व सिद्ध में एक अनेक

पुहत्तेणं पढमे णो अपढमे ॥ १६ ॥ सकसायी कोहकसायी जाव लोभकसायी एगत्तेणं पुहत्तेणं जहा आहारए, अकसायी जीवे सिय पढमे सिय अपढमे, एवं मणुस्सेवि, सिद्धे पढमे णो अपढमे ॥ पुहत्तेणं जीवा मणुस्सा पढमावि अपढमावि, सिद्धा पढमा णो अपढमा ॥ १७ ॥ णाणी-एगत्त पुहत्तेणं जहा सम्मादिट्ठी, आभिणिबोहियणाणी जाव मणपज्जवणाणी एगत्तपुहत्तेणं एवंचेव, णवरं जस्सजं अत्थि, केवलणाणी जीवे मणुस्से सिद्धेय एगत्तपुहत्तेणं पढमा णो अपढमा ॥ अण्णाणी मइ अण्णाणी सुयअण्णाणी विभंगणाणी एगत्तपुहत्तेणं जहा आहारए

आश्री प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है ॥ १६ ॥ सकषायी क्रोधकषायी यावत् लोभ कषायी एक अनेक आश्री आहारक जैसे जानना. अकषायी जीव व मनुष्य एक आश्री स्यात् प्रथम स्यात् अप्रथम है सिद्ध आश्री प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है. अनेक आश्री जीव मनुष्य प्रथम भी हैं और अप्रथम भी हैं सिद्ध प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं ॥ १७ ॥ ज्ञानी का एक आश्री समदृष्टि जैसे कहना. आभिनिबोधिक ज्ञानी यावत् मनःपर्यव ज्ञानी का एक व अनेक आश्री भी ऐसे ही कहना. केवल ज्ञानी जीव मनुष्य व सिद्ध में एक अनेक आश्री प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं. मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी विभंग ज्ञानी का

॥ १८ ॥ सजोगी मणजोगी वइजोगी कायजोगी एगत्तपुहत्तेणं जहा आहारए, णवरं जस्स जो जोगो अत्थि ॥ अजोगी जीव मणुस्सा सिद्धा एगत्तपुहत्तेणं पढमा णो अपढमा ॥ १९ ॥ सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता एगत्तपुहत्तेणं जहा अणाहारए ॥ २० ॥ सवेदगो जाव णपुंसगवेदगो एगत्तपुहत्तेणं जहा आहारए एवं जस्स जो वेदो अत्थि; अवेदओ एगत्त पुहत्तेणं तिसुवि पदेसु जहा अकसाई ॥ २२ ॥ ससरीरी जहा आहारए, एवं कम्मग सरीरी जस्स जं अत्थि सरीरं, णवरं आहारगसरीरी एगत्तपुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी, असरीरी जीवो सिद्धो एगत्त

भावार्थ

एक अनेक आश्री आहारक जैसे कहना ॥ १८ ॥ सयोगी, मन योगी, वचन योगी व काया योगी का एक व अनेक आश्री आहारक जैसे कहना. अयोगी जीव, मनुष्य व सिद्ध एक अनेक आश्री प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है॥१९॥साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त का एक अनेक आश्री आहारक जैसे कहना ॥२०॥ सवेदी यावत् नपुंसकवेदी का एक अनेक आश्री आहारक जैसे कहना. विशेषता यह कि जिन में जो वेद होवे उन में वही वेद कहना.अवेदीका एक अनेक आश्री तीनों पद में अकषायी जैसे कहना॥२२॥ सशरीरीका आहारक जैसे कहना ऐसे ही कार्माण शरीर तक जिन को जो शरीर होवे सो कहना.विशेष में

सूत्र
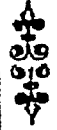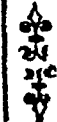
पुहत्तेणं पढमो णो अपढमो ॥ २३ ॥ पंचहिं पज्जत्तीहिं पंचहिं अपज्जत्तीहिं एगत्त पुहत्तेणं जहा आहारए णवरं जस्स जा अत्थि, जाव वेमाणिया णो पढमा अपढमा ॥ २४ ॥ इमा लक्खण गाहा जो जेण पत्तपुव्वो भावो सो तेण अपढमोहोई ॥ सेसेसु होइ पढमो अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥ १ ॥ २५ ॥ जीवेणं भंते ! जीव भावेणं किं चरिमे ? अचरिमे ? गोयमा ! णो चरिमे अचरिमे ॥२६॥ णेरइएणं भंते ! णेरइयभावेणं पुच्छा ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे एवं जाव

अर्थ

आहारकशरीरी का एक अनेक आश्री समदृष्टि जैसे कहना. अशरीरी जीव सिद्ध में एक अनेक आश्री प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है ॥ २३ ॥ पांच पर्याप्ति तथा पांच अपर्याप्ति से एक अनेक आश्री आहारक शरीर जैसे जिस को जितनी पर्यायों होवे उस को उतनी कहना. यावत् वैमानिक में प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं हैं ॥२४॥ अब यहांपर प्रथम अप्रथम के लक्षणवाली गाथा कहते हैं. जो जीवादि भाव जिस जीवत्वादि भाव मे पूर्वभाव पर्याय को पाया वह जीवादि उस जीवत्वादिभाव से अप्रथम है और इस से अन्य प्रथम है ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! जीव जीवभाव मे क्या चरिम या अचरिम है ? अहो गौतम ! जीव जीवभाव से चरिम नहीं है परंतु अचरिम है. क्योंकि जीव का अन्य स्वरूप नहीं होता है ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! नारकी नरकभाव से क्या चरिम है या अचरिम है ? अहो गौतम ! नारकी स्यात्
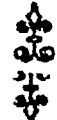
वेमाणिए, सिद्धे जहा जीवे ॥ जीवाणं पुच्छा, गोयमा! जीवा णो चरिमा अचरिमा ॥ णेरइया चरिमावि अचरिमावि एवं जाव वेमाणिया सिद्धा जहा जीवा ॥ २७ ॥ आहारए सव्वत्थ एगत्तेणं सिय चरिमे सिय अचरिमे, पुहत्तेणं चरिमावि अचरिमावि ॥ अणाहारओ जीवो सिद्धो एगत्तेणवि पोहत्तेणवि णो चरिमो, अचरिमो, सेसट्ठाणेसु एगत्तपुहत्तेणं आहारओ ॥ २८ ॥ भवसिद्धीओ जीवपदे एगत्तपोहत्तेणं चरिमे

चरिम है स्यात् अचरिम हैं क्यों कि जो नारकी नरकगति में उत्पन्न होकर पुनः वहां मे नीकले पीछे नरक में उत्पन्न होते हैं वे अचरिम हैं. और नरक में से नीकले पीछे सिद्ध होजाते हैं. वे चरिम हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना. सिद्ध का समुच्चय जीव जैसे कहना. यह एक जीव आश्री पृच्छा हुई, अब बहुत जीव आश्री पृच्छा करते हैं. अहो भगवन् ! बहुत जीव क्या चरिम हैं या अचरिम हैं ? अहो गौतम ! बहुत जीव चरिम नहीं हैं परंतु अचरिम हैं. नारकी चरिम अचरिम दोनों हैं ऐसे ही वैमानिक तक सब दंडक का जानना. सिद्ध का समुच्चय जीव जैसे कहना ॥ २७ ॥ आहारक सबस्थान एक जीव आश्री स्यात् चरिम व स्यात् अचरिम है. मोक्ष में जाने वाले चरिम और संसार में परिभ्रमण करने वाले अचरिम. अनेक आश्री चरिम अचरिम दोनों हैं अनाहारक जीव व सिद्ध एक अनेक आश्री चरिम नहीं है परंतु अचरिम है. शेष स्थान में एक अनेक आश्री आहारक जैसे कहना ॥ २८ ॥ भवसिद्धिक एक अनेक आश्री जीवपद में

णो अचरिमे, सेस ट्ठाणेसु जहा आहारओ । अभवसिद्धीओ सव्वत्थ एगत्त पुहत्तेणं णो चरिमे अचरिमे. णो भवसिद्धीय णो अभवसिद्धीय, जीवा सिद्धाय एगत्तपुहत्तेणं जहा अभवसिद्धीओ ॥ २८ ॥ सण्णी जहा आहारओ, एवं असण्णीवि, णो सण्णी णो असण्णी जीवपदे सिद्धपदेय अचरिमो, मणुस्सपदे चरिमो, एगत्त पुहत्तेण ॥ ३० ॥ सलेस्सो जाव सुक्कलेस्सा जहा आहारओ णवरं जस्स जा अत्थि, अलेस्सा जहा णो सण्णी, णो असण्णी ॥ ३१ ॥ सम्मदिट्ठी जहा अणाहारओ, मिच्छदिट्ठी आहारओ, सम्मामिच्छादिट्ठी एगिंदिय विगलिंदियवज्जं सिय

चरिम है परंतु अचरिम नहीं है क्यों की भव्यसिद्धिक अवश्य मेव मोक्ष जावेगे. शेष सब स्थान आहारक जैसे कहना. अभवसिद्धिक सब स्थान एक अनेक आश्री चरिम नहीं है परंतु अचरिम है. नो भव्यसिद्धिक नोअभव्यसिद्धिक जीव व सिद्ध में एक अनेक आश्री अभव्य सिद्धिक जैसे कहना. ॥ २९ ॥ संज्ञी असंज्ञी का आहारक जैसे कहना. नो संज्ञी नो असंज्ञी जीवपद में व सिद्धपद में एक अनेक आश्री अचारिम व मनुष्य पद में चरिम कहना. ॥ ३० ॥ सलेशी यावत् शुक्ल लेशी का अपनी २ लेश्या सहित आहारक जैसे कहना. अलेश्या का नोसंज्ञी नोअसंज्ञी जैसे कहना. ॥३१॥ समदृष्टि का अनाहारक मिथ्यादृष्टि का आहारक और सममिथ्यादृष्टि का एकेन्द्रिय

चरिमे ॥ सिय अचरिमे पुहत्तेणं चरिमोवि अचरिमोवि ॥ ३२ ॥ संजओ जीवो मणुस्सो जहा आहारओ, असंजओवि तहेव ॥ संजयासंजओवि तहेव, णवरं जस्स जं अत्थि ॥ णोसंजया णोअसंजया णोसंजया संजया, जहा णोभवसिद्धीय णो अभवसिद्धीय ॥ ३३ ॥ सकसाई जाव लोभकसायी सव्वट्ठाणेसु जहा आहारओ। अकसायी जीवपदे सिद्धपदेय णो चरिमो, अचरिमो, मणुस्सपदे सिय चरिमो सिय अचरिमो, ॥ ३४ ॥ णाणी जहा सम्मदिट्ठी सव्वत्थ आभिणिबोहियणाणी जाव मणपज्जवणाणी जहा आहारओ णवरं जस्स जं अत्थि, केवलणाणी जहा णो

व विकलेन्द्रिय छोडकर स्यात् चरिम स्यात् अचरिम, अनेक आश्री चरिम व अचरिम दोनों हैं ॥ ३२ ॥ संयति मनुष्य का आहारक जैसे कहना. असंयति का भी आहारक जैसे कहना, संयतासंयति का भी वैसे ही कहना. विशेष में जिस को जो होवे उस को वही कहना. नो संयति नो असंयति नो संयता संयति का नो भवसिद्धिक नो अभवसिद्धिक जैसे कहना ॥ ३३ ॥ सकषायी यावत् लोभ कषायी का सब स्थान आहारक जैसे कहना. अकषायी का जीवपद व सिद्धपद में चरिम नहीं परंतु अचरिम कहना. मनुष्य पद में स्यात् चरिम स्यात् अचरिम कहना ॥ ३४ ॥ ज्ञानी का समदृष्टि जैसे कहना आभिनिबोधिक ज्ञानी यावत् मनःपर्यव ज्ञानी का आहारक जैसे कहना विशेष में जिस को जो होवे सो कहना. केवल

सणी णो असण्णी, अण्णाणी जाव विभंगणाणी जहा आहारओ ॥ ३५ ॥ सजोगी जाव कायजोगी जहा आहारओ जस्स जो जोगो अत्थि, अजोगी जहा णोसण्णी णो असण्णी ॥ ३६ ॥ सगारोवउत्तो अणागारोवउत्तेय जहा अणाहारओ ॥ ३७ ॥ सवेदो जाव णपुंसगवेदओ जहा आहारओ अवेदओ जहा अकसायी ॥ ३८ ॥ ससरीरी जाव कम्मगसरीरी जहा आहारओ णवरं जस्स जं अत्थि, असरीरी जहा णो भवसिद्धीय णो अभवसिद्धीय, ॥ ३९ ॥ पंचहिं पज्जत्तीहिं पंचहिं अपज्जत्तीहिं जहा आहारओ सव्वत्थ एगत्तपुहत्तेणं दंडगा भाणियव्वा ॥ ४० ॥ इमा लक्खणं गाहा

ज्ञानी का नो संज्ञी नो असंज्ञी जैसे कहना अज्ञानी यावत् विभंगज्ञानी का आहारक जैसे कहना ॥ ३५ ॥ सयोगी यावत् काया योगी का आहारक जैसे कहना. अयोगी का नोसंज्ञी नो असंज्ञी जैसे कहना. ॥ ३६ ॥ साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त का अनाहारक जैसे कहना ॥ ३७ ॥ सवेदी यावत् नपुंसक वेदी का आहारक जैसे कहना. अवेदी का अकषायी जैसे कहना. ॥ ३८ ॥ सशरीरी यावत् कार्माण शरीरी का आहारक जैसे कहना. परंतु जिन को जितने शरीर होवे उन को उतने शरीर कहना. अशरीरी का नो भवसिद्धिक नो अभवसिद्धिक जैसे कहना. ॥ ३९ ॥ पांच पर्याप्ति व पांच अपर्याप्ति से जैसा आहारक कहा

जो जं पाविहिति पुणो भावं सो तेणं अचरिमो होइ; अच्चतविजोगो जस्स,तेण भावेण सो चारिमो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति, जाव विहरइ ॥ अट्ठारसमस्स पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ १ ॥

* * *

तेणं कालेणं तेणं समएणं विसाहा णामं णयरी होत्था, वण्णओ. सामी समोसढे जाव पज्जुवासइ ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी

वैसे ही सब स्थान एक आश्री अनेक आश्री जानना. ॥ ४० ॥ इस चरिम व अचरिम का लक्षण कहते हैं. जो जिस भावको पुनः प्राप्त करेगा वह उस भाव से अचरिम है और जिस का जिस भाव का अत्यंत वियोग है अर्थात् जिस भाव को पुनः प्राप्त नहीं करने का है वह उस भाव से चरिम है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कह कर यावत् विचरने लगे. यह अठारहवा शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १८ ॥ १ ॥

० ० ० ०

प्रथम उद्देशे में चरम अचरम का कहा, दूसरे उद्देशे में चरमशरीरी शक्रेन्द्र का कथन करते हैं. उस काल उस समय में विशाखा नामकी नगरी थी वह वर्णन योग्य थी. भगवंत श्रीमहावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदन करने को आई यावत् पर्युपासना करने लगी. ॥ १ ॥ उस काल उस समय में हस्त में वज्र

पुरंदरे एवं जहा जहा सोलसमसए विइय उद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेण आगओ णवरं एत्थं आभिओगावि अत्थि जाव बत्तीसइविहं नट्टविहं उवदंसेइ. उवदंसेइत्ता जाव पडिगए॥२॥भंतेत्ति भगवं गोयमे! समणं भगवं महावीरं जाव एवं वयासी जहा तइय सए ईसाणस्स तहेव कूडागारसाला दिट्ठंतो तहेव, पुव्वभव पुच्छा जाव अभिसमण्णागया, गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे णामं णयरे होत्था वण्णओ, सहसंवणे उज्जाणे वण्णओ॥३॥तत्थणं हत्थिणाउरे

धारन करनेवाला शक्र देवेन्द्र देवराजा जैसे सोलहवे शतक के दूसरे उद्देशे में वर्णन किया वैसे यान विमान से आया. विशेष में यहां पर आभियोगिक देवों भी थे यावत् बत्तीसप्रकार के नाटक बतलाकर यावत् पीछा गया ॥२॥ भगवान गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को यावत् ऐसा बोले अहो भगवन् ! वगैरह जैसे तीसरे शतक में ईशान का कथन वैसे ही कूटाकारशाला के दृष्टांत से पूर्वभाव की पृच्छा यावत् प्राप्त हुवा. श्रमण भगवंत महावीरने गौतमादि श्रमण निग्रंथों को कहा कि अहो गौतम ! उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में हस्तिनापुर नगर था. वह वर्णन योग्य था. उस की ईशान कौन में सहस्रवन उद्यानथा

णयरे कत्तिया णामं सेट्ठी परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए णेगम पढमासणिए णेगमट्ठ सहस्सं बहुसु कज्जेसुय कारणेसुय कुटुंबेसुय एवं जहा रायप्पसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए णेगमट्ठसहस्सस्स सीयस्सय कुटुंबस्सय आहेवच्चं जाव कारेमाणे पालेमाणे, समणोवासए अभिगय जीवाजीवे जाव विहरइ ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जहा सोलसमसए तहेव समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ, ॥ ५ ॥ तएणं से कत्तिएसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठेसमाणे हट्ठतुट्ठ एवं

॥ ३ ॥ उस हस्तिनापुर नगर में कार्तिक श्रेष्ठि रहता था वह ऋद्धिवंत यावत् अपरिभूत था. सब वणिकों में उस का आसन प्रथम था उन को एक हजार गुमास्ते थे. बहुत कार्यों में, कारणों में और कुटुम्बों में वगैरह जैसे राय प्रसेणीय सूत्र में कहा वैसे यावत् सब मनुष्यों को चक्षूभूत था. वह एक हजार आठ गुमास्ते का व अपन कुटुम्ब का आधिपत्यपना करता हुवा जीवाजीव का स्वरूप जानता हुवा श्रमणोपासक बनकर विचरता था ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में आदिके करनेवाले, वगैरह सोलहवे शतक में कहा वैसे मुनिसुव्रत स्वामी पधारे यावत् परिषदा पर्युपासना करने लगी. ॥ ५ ॥ जब कार्तिक श्रेष्ठिने ऐसी बात सुनी तब वह हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवा और अग्यारहवा शतक में जैसे सुदर्शन का

जहा एक्कारसमसए सुदंसणे तहेव णिग्गओ जाव पज्जुवासइ ॥ ६ ॥ तएणं मुणि सुव्वए अरहा कत्तियस्स सेट्टिस्स धम्मकहा जाव परिसा पडिगया ॥ ७ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी मुणिसुव्वयस्स जाव णिसम्म हट्ठ तुट्ठ उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेइत्ता मुणिसुव्वय जाव एवं वयासी-एवमेयं भंते! जाव से जहेयं तुज्झे वदह, जं णवरं देवाणुप्पिया! णेगमट्ठ सहस्सं आपुच्छामि, जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेमि तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं पव्वयामि ॥८॥ अहासुहं जाव मापडिबंधं ॥ ९ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी जाव पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता जेणेव हत्थिणापुरे णयरे जेणेव सए गिहे तेणेव

अधिकार कहा वैसे ही अपने गृह से नीकला यावत् पर्युपासना करने लगा ॥६॥ तब मुनिसुव्रत अरिहंतने कार्तिक श्रेष्ठि को धर्म कथा कही यावत् परिषदा पीछी गइ ॥ ७ ॥ उस समय में मुनि सुव्रत अरिहंत की पास से धर्मकथा सुनकर कार्तिक शेठ बहुत हृष्ट तुष्ट हुवे, अपने स्थान से उठे, और उठकर मुनि सुव्रत अरिहंत को ऐसा बोले कि अहो भगवन्! जैसे आप कहते हैं वैसे ही है. विशेष में अहो देवानुप्रिय! मेरे एक हजार आठ गुमास्ते को पुछकर व ज्येष्ट पुत्र को कुटुम्ब में स्थापकर फीर आप की पास दीक्षा अंगीकार करूंगा ॥ ८ ॥ अहो देवानुप्रिय! आप को सुख होवे वैसे करो विलम्ब मत करो ॥ ९ ॥ फीर

उवागच्छइ उवागच्छइत्ता णेगमट्ठसहस्सं सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं धम्मं णिसंते सेविय धम्मं इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥ तएणं अहं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गे जाव पव्वयामि ॥ तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! किं करेह किं वसह किंभे हिय इच्छिय, किं भे सामत्थे, ॥ ९ ॥ तएणं णेगमट्ठसहस्सं तं कत्तियं सेट्ठिं एवं वयासी जइणं देवाणुप्पिया ! संसार भयउव्विग्गा, भीया जाव पव्वायाहिसि अम्हं देवाणुप्पिया ! किं अण्णे आलंबेवा आहारेवा पडिबंधेवा अम्हेविणं देवाणुप्पिया ! संसार

र्थ कार्तिक श्रेष्ठी यावत् नीकलकर हस्तिनापुर नगर में स्वगृह गये और एक हजार आठ गुमास्ते को बोलाकर ऐसा बोले अहो देवानुप्रिय ! मैंने मुनिसुव्रत की पास से धर्म सुना है वही धर्म मैंने इच्छा है यावत् सच्चा है. इस से अहो देवानुप्रिय ! संसार भय से उद्विग्न बना हुवा यावत् दीक्षा अंगीकार करूंगा. अहो देवानुप्रिय ! तुम क्या करोगे क्या व्यवसाय करोगे अथवा तुमारा क्या सामर्थ्यपना है ? ॥ ९ ॥ तब उक्त एक हजार आठ गुमास्ते उस कार्तिक श्रेष्ठि को ऐसे बोले कि अहो देवानुप्रिय ! जब आप संसार भय से उद्विग्न व भयभीत बने हुवे हैं यावत् प्रव्रज्या लेंगे तब अहो देवानुप्रिय ! हम को

भयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पिएहिं सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं मुंडे भवित्ता आगाराओ जाव पव्वयामो ॥ १० ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्टसहस्सं एवं वयासी जइणं देवाणुप्पिया ! संसार भयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं मए सद्धिं मुणिसुव्वय जाव पव्वयह तं गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु २ गेहेसु विपुलं असणं जाव उवक्खडावेह मित्तणाइ जाव जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेह, जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता तं मित्तणाइ जाव जेट्ठपुत्तं आपुच्छेह २ त्ता पुरिस सहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहह पु० २ मित्त जाव परिजणेणं जेट्ठपुत्तेहिय

किस का अवलम्बन, आधार व प्रतिबंध है. इस से हम भी संसार भय से उद्विग्न व जन्म जरामरण से त्रासित हुवे हैं. और हम भी आप की साथ श्री मुनिसुव्रत अरिहंत की पास मुंड होकर अगारपना से अनगारपना अंगीकार करेंगे ॥ १० ॥ फीर कार्तिक श्रेष्ठि उन एक हजार आठ गुमास्ते को ऐसा बोले कि जब तुम संसार भय से उद्विग्न बने हुवे हो यावत् मेरी साथ मुनि सुव्रत अरिहंत की पास दीक्षा अंगीकार करना चाहते हो तो तुम अपने २ गृह जाओ, विपुल अशनादि तैयार करो, ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापो और मित्र ज्ञाति यावत् ज्येष्ठ

समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव रवेणं अकालपरिहीणं चेव ममं अंतियं पाउब्भ-वह॥ ११॥ तएणं ते णेगमट्ठसहस्संपि कत्तियस्स सेट्ठिस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता विपुलं असणं जाव उवक्खडावेंति २ त्ता मित्त णाइ जाव तस्सेव, मित्तणाइ जाव पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेंति ठावेइत्ता तं मित्तणाइ जाव जेट्ठपुत्तेय आपुच्छंति, आपुच्छंतित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहंति २ त्ता मित्तणातिणियग परिजणेणं जेट्ठपुत्तेहिय समणुगम्ममाणेमग्गा सव्विड्ढिए जाव रवेणं अकालपरिहीणं चेव कत्तियस्स सेट्ठियस्स अंतियं पाउब्भवंति ॥ १२ ॥ तएणं से कत्तिएसेट्ठी विपुलं

पुत्र को पुछकर सहस्र पुरुष वाहिनी शिविकापर बैठकर और मित्र ज्ञाति यावत् ज्येष्ठ पुत्र की साथ सब ऋद्धि यावत् वादिंत्र सहित अकाल रहित मेरी पास आओ ॥११॥ फीर उन एक हजार आठ गुमास्ताओंने कार्तिक श्रेष्ठीकी इस बातको विनय पूर्वक सुनी वे अपने गृह गये, विपुल अशनादि बनाये और मित्र ज्ञाति यावत् उनकी सन्मुख ज्येष्ट पुत्रको कुटुंबमें स्थापकर मित्र ज्ञाति यावत् ज्येष्ट पुत्र को पुछकर सहस्र पुरुष वाहिनी शिविकापर बैठकर मित्र ज्ञाति व ज्येष्ट पुत्र सहित सब ऋद्धि व वादिंत्र सहित मर्यादित काल में कार्तिक श्रेष्ठी की पास आये ॥ १२ ॥ फीर कार्तिक श्रेष्ठीने विपुल अशन पान खादिम व स्वादिम बनाकर गंगदत्त जैसे यावत्

असणं पाणं खाइमं साइमं जहा गंगदत्तो जाव मित्तणाइ जाव परिजणेणं जेट्ठ पुत्तं णेगमट्ठसहस्सेणय समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव रवेणं हात्थिणापुरं णयरं मज्झंमज्झेणं जहा गंगदत्तो जाव आलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए आलित्तपलित्तेणं भंते ! लोए जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥ इच्छामिणं भंते ! णेगमट्ठसहस्सेणं सार्द्धिं सयमेव पव्वावियं, मुंडावियं जाव माइक्खयं तएणं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं णेगमट्ठ सहस्सेणं सार्द्धिं सयमेव पव्वावेइ जाव धम्ममातिक्खति एवं देवाणुप्पिया गंतव्वं एवं चिट्ठियव्वं जाव संजमियव्वं ॥१३॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठसहस्सेण सार्द्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं संपडिवज्जइ-तमाणाए तहा गच्छइ जाव संजमइ ॥ १४ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठ

मित्र ज्ञाति यावत् परिजन सहित ज्येष्ठ पुत्र व एक हजार आठ गुमास्ते मार्ग में चलते हुवे सब ऋद्धि व वादत्रों सहित हस्तिनापुर नगर की बीच में गंगदत्त जैसे यावत् अहो भगवन् ! यह लोक आलिप्त, प्रलिप्त, आलिप्त प्रलिप्त है यावत् अनुगामी होगा. अहो भगवन् ! एक हजार आठ गुमास्ते सहित मैं स्वमेव प्रव्राजित होने, मुंडित होने. यावत् कहने को इच्छाता हूं तब मुनि सुव्रत अरिहंतने एक हजार आठ गुमास्ते सहित कार्तिक श्रेष्ठी को प्रव्राजित किया यावत् उपदेश दिया कि ऐसे बैठना ऐसे संयम पालना ॥ १३ ॥ फीर एक हजार आठ गुमास्ते सहित कार्तिक श्रेष्ठिने मुनिसुव्रत अरिहंत का ऐसा धार्मिक उपदेश सम्यक्

सहस्सेणं सद्धिं अणगारे जाए, इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी ॥ १५ ॥ तएणं से कत्तिए अणगारे मुणिसुव्वयस्स अरहओ तहारूवाणं थेराणं अंतियं सामाइयमाइयाइं चउद्दस पुव्वाइ अहिज्जइ २ त्ता बहूइं चउत्थ छट्टट्ठम जाव अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ २ त्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणंझोसेइ २ त्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं छेदेइ, छेदेइत्ता आलोइय पडिक्कते जाव किच्चा, सोहम्म कप्पे सोहम्मे वडिंसए विमाणे उववाय सभाए देवसयणिज्जास जाव सक्के देविंदत्ताए उववण्णे ॥ १६ ॥ तएणं सक्के देविंदे देवराया आहुणोववण्णे सेसं जहा गंगदत्तस्स जाव अंतं काहिति णवरं ठिई

प्रकार से अंगीकार किया और उनकी आज्ञा में वैसे जाने यावत् संयम पालने लगे ॥ १४ ॥ फीर वह कार्तिक श्रेष्ठी एक हजार आठ गुमास्ते सहित ईर्यासमिति वाले यावत् गुप्त ब्रह्मचारी अनगार हुवे ॥ १५ ॥ कार्तिक अनगार श्री मुनिसुव्रत अरिहंत के तथारूप स्थविरों की पास से सामायिकादि चउदह पूर्वका अध्ययन कर बहुत चतुर्थ भक्त छठ अठम यावत् स्वतः को भावते बहुत प्रतिपूर्ण बारहवर्ष की साधु की पर्याय पालकर एक मास की संलेखना से आत्मा को झोंस कर साठ भक्त अनशन का छेदनकर आलोचना प्रतिक्रमण सहित काल के अवसर में कालकर सौधर्म देवलोक में सौधर्मावतंसक विमान में उपपात सभा में देवशैय्या में शक्र देवेन्द्रपने उत्पन्न हुए ॥ १६ ॥ तब अधुनोपपन्न शक्रदेवेन्द्र देवराजा गंगदत्त जैसे अंत करेंगे. उनकी स्थिति दो सागरोपम की कही. अहो

दो सागरोवमाइं पण्णत्ता ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्सबिइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ २ ॥ ० ० ० ०

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था वण्णओ, गुणसिलए चेइए, जाव परिसा पडिगया ॥ १ ॥ तेण कालेणं तेणं समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव अंतेवासी माकंदियपुत्ते अणगारे पगइभद्दए जहा मंडियपुत्ते जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-सेणूण भते ! काउलेस्से पुढवीकाइए काउलेस्से हिंतो,

भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह अठारहवा शतक का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १८ ॥ २ ॥ ०

द्वितीय उद्देशे में कार्तिक शेठकी अंतक्रिया कही और तृतीय उद्देशे में भी अंतक्रियाका ही कथन करते हैं उस काल उस समय में राजगृह नगर था. वह वर्णन योग्य था. गुणशील उद्यान में भगवंत पधारे परिषदा. वंदन करने को आइ, धर्मकथा सुनकर पीछी गइ ॥ १ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के अंतेवासी प्रकृति भद्रिक यावत् प्रकृति विनीत वगैरह जैसे मंडित पुत्र यावत् पर्युपासना करते हुवे ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! कापुत लेश्यावाला पृथ्वीकायिक जीव कापुत लेश्यावाली पृथ्वी काय में से अंतर रहित नीकल कर मनुष्य का शरीर प्राप्त करे, वहां सम्यक्त्व की प्राप्ति करे

पुढवीकाइएहिंतो अणंतरं उव्वाट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभइ, लभइत्ता केवलं बोहिं बुज्झइ, बुज्झइत्ता तओ पच्छा सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ? हंता माकंदियपुत्ता काउलेस्से पुढवीकाइए जाव अंतं करेइ ॥ २ ॥ से णूणं भंते! काउल्लेस्से आउकाइए काउलेस्सेहिंतो आउकाइएहिंतो अणंतरं उवट्टित्ता माणुसं विग्गह लभइ, लभइत्ता केवलं बोहिं बुज्झइ जाव अतं करेइ ? हंता माकंदिय पुत्ता ! जाव अंतं करेइ ॥ ३ ॥ से णूणं भंते! काउलेस्से वणस्सइ काइए एवंचेव जाव अतं करेइ सेवं भंते! भंतेत्ति ॥

फीर क्या सीझे बुझे यावत् अंत करे ? हां माकंदिय पुत्र ! कापुत लेश्यावाला पृथ्वी कायिक जीव पृथ्वीकाया में से अंतर रहित नीकलकर मनुष्य का शरीर प्राप्त करे वहां सम्यक्त्व की प्राप्ति हुवे पीछे सीझे बुझे यावत् अंत करे ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! कापुत लेश्या वाला अप्कायिक जीव कापुत लेश्यावाली अप्कायपा में से अंतर रहित नीकलकर मनुष्य का शरीर प्राप्त करे और सम्यक्त्व की प्राप्ति करके क्या सीझे बुझे यावत् अंत करे ? हां माकंदिय पुत्र ! सीझे बुझे यावत् अंतकरे. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! कापुतलेश्या वाला वनस्पति कायिक जीव अंतर रहित मनुष्य का शरीर प्राप्तकर वहां सम्यक्त्व की प्राप्ति कर पीछे क्या सीझे बुझे यावत् अंत करे ? हां माकंदिय पुत्र !

मार्कंदिय पुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं जाव णमंसित्ता जेणेव समणे णिग्गंथे तेणेव उवागच्छइ२त्ता समणे णिग्गंथे एवं वयासी एवं खलु अज्जो! काउलेस्से पुढवीकाइए तहेव जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए जाव अंतकरेइ ॥ एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए जाव अंतंकरेइ ॥ ४ ॥ तएणं समणा णिग्गंथा मार्कंदियपुत्तस्स अणगारस्स एव माइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं णोसद्दहंति ३, एयमट्ठं असद्दहमाणा ३, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसति२त्ता

सीझे बुझे यावत् अंत करे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर मार्कंदियपुत्र अनगार श्रमण भगवंत महावीर को यावत् नमस्कार कर श्रमण निर्ग्रन्थों की पास आये और श्रमण निर्ग्रन्थों को ऐसा बोले कि कापुत लेश्या वाला पृथ्वी कायिक जीव यावत् अंतकरे ऐसे ही कापुत लेश्या वाला अप्कायिक जीव यावत् अंतकरे ऐसे कापुत लेश्या वाला वनस्पतिकायिक जीव यावत् अंतकरे ॥४॥ मार्कंदियपुत्र अनगार के ऐसे कथन को श्रमण निर्ग्रन्थ नहीं श्रद्धते यावत् नहीं रुचि करते श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास गये. श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! मार्कंदिय

एवं वयासी एवं खलु भंते ! मागंदियपुत्ते अणगारे अम्हं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढवीकाइए जाव अंतंकरेइ, एवं खलु अज्जो ! आउकाइए जाव अंतकरेइ एवं खलु वणस्सइ काइएवि जाव अंतं करेइ सेकहमेयं भंते ! एवं ? ॥ ५ ॥ अज्जोत्ति ! समणे भगवं महावीरे समणे णिग्गंथे आमतेत्ता एवं वयासी जंणं अज्जो ! मागंदिय पुत्ते अणगारे तुज्झे एव माइक्खइ जाव परूवेइ एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढवीकाइए जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए जाव अंतंकरेइ एवं खलु अज्जो वणस्सइकाइएति जाव अंतं करेइ, सच्चेवणं एसमट्ठे ॥ अहं पुण अज्जो ! एव माइक्खामि ४ एवं खलु अज्जो! कण्हलेस्से

पुत्र अनगार हम को ऐसा कहते हैं यावत् परूते हैं कि अहो आर्यो ! कापुत लेश्या वाला पृथ्वीकायिक जीव यावत् अंत करे, आप्कायिक जीव यावत् अंत करे वनस्पति कायिक यावत् अंत करे तो अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? ॥ ५ ॥ श्रमण भगवन्त महावीर श्रमण निर्ग्रन्थों को आमंत्रणा कर ऐसे बोले कि अहो आर्यों ! माकंदिय पुत्र अनगार तुम को ऐसा कहते हैं यावत् परूपते हैं कि अहो आर्यों ! कापुतलेश्या वाला पृथ्वीकायिक जीव यावत् अंतकरे वैसे ही कापुत लेश्यावाला अप्कायिक व वनस्पति कायिक यावत् अंतकरे यह अर्थ सत्य है. अहो आर्यों ! मैं भी ऐसे ही कहता हूं यावत् परूपता हूं कि
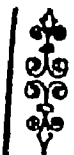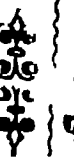
पुढवीकाइए कण्हलेस्सेहिंतो पुढवीकाइएहिंतो जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो ! णीललेस्से पुढवीकाइए जाव अंतंकरेइ, एवं काउलेस्सेवि जहा पुढवीकाइए जाव अंतंकरेइ, एवं आउकाइएवि, वणस्सइकाइएवि, सच्चेवणं एसमट्ठे, सेवं भंते ! भंतेत्ति, समणा णिग्गंथा समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वंदइत्ता णमंसइत्ता जेणेव मागंदियपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता मागंदियपुत्तं अणगारं वंदंति णमंसंति एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति ॥ ६ ॥ तएणं से मागंदियपुत्ते अणगारे उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महा-

कृष्णलेश्यावाला पृथ्वीकायिक जीव कृष्णलेश्यावाली पृथ्वी काया में से यावत् अंत करे ऐसे ही अहो आर्यो ! नील लेश्यावाला पृथ्वीकायिक जीव यावत् अंत करे. ऐसे कापोत लेश्यावाला पृथ्वी कायिक यावत अंत करे. ऐसे ही अप्काया का व वनस्पतिकाया का जानना. यह अर्थ सत्य है. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं. श्रमण निर्ग्रंथों श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर माकंदिय पुत्र अनगार की पास गये और उन को वंदना नमस्कार कर वारंवार विनय से खमाये ॥ ६ ॥ फीर माकंदिय पुत्र अनगार वहां से ऊठ कर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास गये और श्रमण
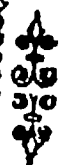
वीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-अणगारस्सणं भंते ! भावियप्पणो सव्वं कम्मं वेदमाणस्स सव्वं कम्मं णिज्जरमाणस्स सव्वं मारं मरमाणस्स सव्वं सरीरं विप्पजहमाणस्स, चरिमं कम्मं वेदमाणस्स चरिमं कम्मं णिज्जरमाणस्स चरिमं मारं मरमाणस्स चरिमं सरीरं विप्पजहमाणस्स मारणंतियकम्मं वेदमाणस्स मारणंतिय कम्मं णिज्जरमाणस्स मारणंतियमारं मरमाणस्स मारणंतिय सरीरं विप्पजहमाणस्स जे चरिमाणिज्जरा पोग्गला सुहुमाणं ते पोग्गला पण्णत्ता, समणाउसो ! सव्वं लोगंपिणं ते उग्गाहित्ताणं चिट्ठंति ? हंता मागंदियपुत्ता ! अणगारस्सणं भावियप्पणो जाव उग्गाहित्ताणं चिट्ठंति ॥ ७ ॥ छउमत्थेणं भंते ! मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं

अर्थ

भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि सब कर्म वेदते हुवे, सब कर्म निर्जरते हुवे, सब मार (आयुष्य कर्म के पुद्गलों) दूर करते हुवे और सब शरीर छोडते हुवे, चरिम कर्म वेदते हुवे, चरिम कर्म निर्जरते हुवे, चरिम आयुष्य कर्म का क्षय करते हुवे, चरिम शरीर छोडते हुवे, मारणांतिक कर्म वेदते हुवे, मारणांतिक कर्म निर्जरते हुवे, मारणांतिक आयुष्य कर्म का क्षय करते हुवे व मारणांतिक शरीर छोडते हुवे भावितात्मा अनगार को जो चरिम सूक्ष्म पुद्गल प्ररूपे हुवे हैं वे सब लोक को अवगाह कर क्या

किंचि आणत्तंवा णाणत्तंवा एवं जहा इंदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया जाव तत्थणं जे ते उवउत्ता ते जाणंति पासंति आहारेंति, से तेणट्ठेणं णिक्खेवो भाणियव्वो ॥ ८ ॥ कइविहेणं भंते ! बंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे बंधे पण्णत्ते तंजहा-दव्वबंधेय भावबंधेय ॥ ९ ॥ दव्वबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-पओगबंधेय वीससाबंधेय ॥ १० ॥ वीससाबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते, मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सादीयवीससाबंधेय अणा-

रहे हुवे हैं ? हां माकंदिय पुत्र ! भावितात्मा अनगार को यावत् अवगाह कर रहे हुवे हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरित किये हुवे पुद्गलों तथा उन के भेद वर्णादि विशेष पुद्गलों वगैरह जैसे पन्नवणा पद में पहिले उद्देशे में कहा वैसे ही यहां वैमानिक पर्यंत जानना. यावत् वहां जो उपयोग युक्त है वह जाने देखे व आहार करे वहां तक कहना. अहो माकंदिय पुत्र ! इसलिये ऐसा कहा है ॥८॥ अहो भगवन् ! बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! बंध के दो भेद कहे हैं. १ द्रव्य बंध और २ भाव बंध ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य बंध के दो भेद, कहे हैं. १ प्रयोग बंध और २ वीससा बंध ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! वीससा बंध के

दीय वीससाबंधेय ॥ ११ ॥ पओग वीससाबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते, मागंदिय पुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-सिढिलबंधण बंधेय, घणियबंधण बधेय ॥ १२ ॥ भावबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-मूलपगाडि बंधेय उत्तरंपगाडिबंधेय ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते ! कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, मूलपगाडिबंधेय, उत्तरपगाडिबंधेय ; एवं जाव वेमाणियाणं ॥ १४ ॥ णाणावरणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ?

कितने भेद कहे हैं ? सादी वीस्रसा बंध व अनादि वीस्रसा बंध ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! प्रयोग वीस्रसा बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! प्रयोग वीस्रसा बंध के दो भेद कहे हैं ? शिथिल बंधन बंध और घनित बंधन बंध ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! भाव बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! भाव बंध के दो भेद कहे हैं. मूल प्रकृति बंध व उत्तर प्रकृति बंध ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने भाव बंध कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! नारकी को दो प्रकार के भाव बंध कहे हैं. मूल प्रकृति बंध और उत्तर प्रकृति बंध. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म के कितने भाव बंध कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! ज्ञानावरणीय कर्म के दो भाव बंध कहे हैं.

मागंदियपुत्ता ! दुविहे भाववंधे पण्णत्ते, तंजहा-मूलपगडिबंधेय, उत्तरपगडिबंधेय ॥ १५ ॥ णेरइयाणं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कइविहे भाववंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता दुविहे भाववंधे पण्णत्ते तंजहा-मूलपगडिबंधेय, उत्तर पगडिबंधेय ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ णाणावरणिज्जेणं जहा दंडओ भणिओ एवं जाव अंतराइयं भाणियव्वो ॥ १६ ॥ जीवाणं भंते ! पावे कम्मे जेय कडे जाव जेय कज्जिस्सइ अत्थिया तस्स केइ णाणत्ते ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवाणं पावे कम्मे जेय कडे जाव जेय कज्जिस्सइ अत्थिया केइ णाणत्ते ? मागंदियपुत्ता ! से जहा णामए केइपुरिसे धणुं परामुसइ, परामुसइत्ता उसुं परामुसइ २ त्ता ठाणं

मूल प्रकृतिबंध व उत्तर प्रकृतिबंध. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को ज्ञानावरणीय कर्म के कितने भाव बंध कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! दो भाव बंध कहे हैं ! मूलप्रकृतिबंधव उत्तर प्रकृति बंध. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. जैसे ज्ञानावरणीय का दंडक कहा वैसे ही अंतराय तक का दंडक कहना. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! जिन जीवोंने पापकर्म किये हैं और जो जीवों पापकर्म करेंगे उस में क्या भिन्नता है ? हां माकंदियपुत्र ! उस में भिन्नता है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जिन जीवोंने पापकर्मों

ठाति २ त्ता आयतकण्णायतं उसुं करेइ, करेइत्ता उड्ढं वेहासं उव्विहति २ त्ता सेणूणं मागं-दियपुत्ता ! तस्स उसुस्स उड्ढं वेहासं उव्वीढस्स समाणस्स एयातिवि णाणत्तं, जाव तं तं भाव परिणमंतिवि णाणत्तं? हंता भगवं ? एयतिवि णाणत्तं जाव परिणमंति विणाणत्तं से तेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता ! एवं वुच्चइ-जाव तं तं भावं परिणमंति विणाणत्तं ॥ १७॥ नेरइयाणं भंते ! पावे कम्मे जेय कडे एवं चेव एवं जाव वेमाणियाणं ॥ १८॥ णेरइयाणं भंते ! जे पोग्गले आहार-त्ताए गेण्हंति तेसिणं भंते ! पोग्गलाणं सेयकालंसि कइभागं आहारेंति कइभागं णिज्जरेंति?

किये हैं और जो जीवों पापकर्मों करेंगे उस में भिन्नता है ? अहो माकंदिय पुत्र ! जैसे कोइ पुरुष धनुष्य उठाता है, धनुष्य उठाकर एक स्थान करता है और कर्ण पर्यंत प्रत्यंचा खींच कर बाण को आकाश में छोडता है. इस तरह आकाश में-बाण जाते क्या वह बाण चलता है वही भेद है ? हां भगवन् ! वही भेद है इसलिये अहो माकंदिय पुत्र ! ऐसा कहा गया है कि उस २ भावको परिणमते हैं वही भिन्नता है ॥ १७ ॥ जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे ही वैमानिक पर्यंत कहना. ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! नरकी जो पुद्गल आहार पने ग्रहण करते हैं उन में से आगामिक काल में कितने पुद्गलों का आहार करते हैं और कितने पुद्गलों की निर्जरा करते हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! असंख्यात भागका आहार करते हैं

मागंदियपुत्ता ! असंखेज्जइ भागं आहारेंति अणंतभागं णिज्जरेंति ॥ १९ ॥ चक्किया णं भंते ! केइ तेसु णिज्जरापोग्गलेसु आसइत्तएवा जाव तुयट्टित्तएवा ? णो इणट्ठे समट्ठे अणाहारमेयं वुइयं समणाउसो ! एवं जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥१८॥३॥ ० ०

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव भगवं गोयमे एवं वयासी- अह भंते ! पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवाए विरमणे जाव मिच्छादंसण

व अनंत भागकी निर्जरा करते हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! उन निर्जरित पुद्गलों में कोई बैठने को यावत् सोने को क्या समर्थ है ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो श्रमण ! यह अनाधार कहा गया है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह आठारहवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १८ ॥ ३ ॥ :०: :०: :०:

तीसरे उद्देशे में निर्जरा की व्याख्या कही. चौथे उद्देशे में पाप की व्याख्या करते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पुछने लगे कि अहो भगवन् ! प्राणातिपात मृषावाद यावत् मिथ्या दर्शन शल्य, प्राणा-

सल्लेवेरमणे पुढवीकाइए जाव वणस्सइ काइए, धम्मात्थिकाए अधम्मात्थिकाए आगा-सात्थिकाए जीवे असरीरपडिवद्धे परमाणुपोग्गले सेलेसिपडिवण्णए अणगारे सव्वेय बादरबोंदिधरा कडेवरा एएणं दुविहा जीवदव्वाय अजीवदव्वाय जीवदव्वाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवाए जाव एएणं दुविहा जीवदव्वाय अजीवदव्वाय, अत्थेगइया जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, अत्थेगइया जीवाणं जाव णो हव्वमागच्छंति ॥ से केणट्ठेणं पाणाइवाय जाव णो हव्वमागच्छंति ?

र्थ

ातिपात से निवर्तना यावत् मिथ्यादर्शनशल्य से निवर्तना, पृथ्वी कायिक यावत् वनस्पति कायिक धर्मास्ति काया, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाया, शरीर रहित जीव, परमाणु पुद्गल शैलेशी प्रतिपन्न अनगार, बादर शरीर धारन करनेवाले बेइन्द्रियादि ये सब जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य ऐसे दो भेदों से क्या जीव द्रव्य को परिभोग के लिये आते हैं ? अहो गौतम ! प्राणातिपातादिक के जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य ऐसे दो भेद किये हैं. उन में से कितनेक जीवों के परिभोग के लिये आते हैं और कितनेक जीवों के परिभोग के लिये नहीं आते हैं. अहो भगवन् ! ऐसा किस कारन से कहा गया है यावत् कितनेक नहीं आते हैं ? अहो गौतम ! प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक और सब

गोयमा ! पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले पुढवीकाइए जाव वणस्सइकाइए सव्वेय बादरबोंदिधरा कडेवरा एएणं दुविहा जीवदव्वाय अजीवदव्वाय जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छा दंसणसल्ल विवेगे धम्मत्थिकाए अधम्म त्थिकाए जाव परमाणुपोग्गले सेलेसिपडिवण्णए अणगारे एएणं दुविहा जीवदव्वाय अजीवदव्वाय जीवाणं परिभोगत्ताए णो हव्वमागच्छंति; से तेणट्ठेणं जाव णो हव्वमा गच्छंति ॥ १ ॥ कइणं भंते ! कसाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता तंजहा कसायपदं णिरवसेसं भाणियव्वं जाव णिज्जरेंति लोभेणं ॥ २ ॥ कइणं भंते!

बादर शरीर धारन करनेवाले द्विइन्द्रियादिक ये सब जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य ऐसे दो भेदवाले होते हैं. वे जीवों के परिभोग के लिये आते हैं. प्राणातिपात विरमण यावत् मिथ्या दर्शन शल्य का त्याग धर्मास्तिकाया अधर्मास्तिकाया यावत् परमाणु पुद्गल, शैलेशी प्रतिपन्न अनगार इन के जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य ऐसे दो भेद जीव परिभोग के लिये नहीं आते हैं इस से ऐसा कहा गया है यावत् कितनेक परिभोग के लिये नहीं आते हैं ॥ १ ॥ परिभोग कषायवंत को होता है इसलिये कषाय का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! कषाय के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चार कषाय कहो वगैरह कषाय पद कहना यावत्

जुम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता तंजहा-कडजुम्मे, तेयोगे, दावर-जुम्मे, कलिओगे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जाव कलिओगे ? गोयमा ! जंणं रासी चउक्केणं अवहारेणं अवहीरमाणे २ चउपज्जवसिए सेतं कडजुम्मे १, जेणं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे २ तिपज्जवसिए सेतं तेयोगे २, जेणं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे २ दुपज्जवसिए सेतं दावरजुम्मे, जेणं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे २ एगपज्जवसिए सेतं कलिओगे ४, से तेणट्ठेणं गोयमा!

लोभसे निर्जरे ॥ २ ॥ चार कषाय से चार का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! युग्म कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! युग्म के चार भेद कहे हैं ? कृत युग्म २ त्रेता ३ द्वापर युग्म और ४ कलियुग्म ※ अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् कलियुग्म ? अहो गौतम ! जिन राशि को चार का भाग देते शेष चार रहे उसे कृत युग्म कहते हैं, जिस राशि को चार का भाग देते शेष तीन रहे उसे त्रेता युग्म कहते हैं, जिस राशि को चार का भाग देते शेष दो रहे उसे द्वापर कहते हैं, और जिस को

※ यहां गणित परिभाषा में समराशिको युग्म कहा है और विषम राशिको ओज कहा है. इस में यद्यपि दो राशि युग्म वाच्य है और दोराशि ओजवाच्य है तद्यपि राशिकी विवक्षासे चारों ही युग्म कहाये गये हैं.

एवं वुच्चइ-जाव कलिओगे ४, ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं कडजुम्मा तेयोगा दावरजुम्मा कलिओगा ? गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्मा उक्कोसपदे तेओगा, अजहण्णमणुक्कोसपदे, सियकडजुम्मा जाव सिय कलिओगा जाव थणियकुमारा ॥ ४ ॥ वणस्सइकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णपदे उक्कोसपदे अपदा अजहण्णमणुक्कोस पदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा ॥ बेइंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे दावरजुम्मा, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय

चार का भाग देते शेष एक रहे उसे कलियुग्म कहते हैं. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् कलियुग्म है॥३॥अहो भगवन्! नारकी को क्या कृत युग्म है, त्रेता युग्म, द्वापर युग्म या कलि युग्म है ? अहो गौतम ! नारकी को जघन्य पद में कृत युग्म है उत्कृष्ट पद में त्रेता युग्म है और अजघन्य अनुत्कर्ष पद में क्वचित् कृत युग्म यावत् क्वचित् कलियुग्म है. ऐसे ही अग्निकुमार तक कहना ॥ ४ ॥ वनस्पति काया की पृच्छा ? अहो गौतम ! वनस्पति में जघन्य व उत्कृष्ट पद में चारों में से कोई भी युग्म नहीं पाते हैं क्यों कि जघन्य उत्कृष्ट पद नियत रूप में पाये जाते हैं. नरकादिक को कालांतर है परंतु वनस्पति को कालांतर नहीं है, उस को परंपरा सिद्ध गमन से उस राशि के अनंतपना से

कलिओगा एवं जाव चउरिंदिया, सेसा एगिंदिया जहा बेइंदिया पंचिदिय तिरिक्ख जोणिया जाव वेमाणिया जहा णेरइया, सिद्धा जहा वणस्सइकाइया ॥ ४ ॥ इत्थीओणं भंते ! किं कडजुम्माओ पुच्छा, गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्माओ, उक्कोसपदे कडजुम्माओ, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्माओ जाव सियकलिओगाओ, एवं असुरकुमारइत्थीओवि जाव थणियकुमार इत्थीओवि । एवं तिरिक्ख जोणियइत्थीओवि । एवं मणुस्सइत्थीओवि । एवं वाणमंतर जोइसिय वेमाणिय

उस का परित्याग किये विना अनियत रूप होने से जघन्य व उत्कृष्ट पद में किसी का संभव नहीं है. मध्यम पद में स्यात् कृत युग्म यावत् स्यात् कलि युग्म. बेइन्द्रिय से चतुरेन्द्रिय के जघन्य पद में कृत युग्म, उत्कृष्ट पद में द्वापर युग्म, अजघन्य अनुत्कर्ष पद में क्वचित् कृत युग्म यावत् क्वचित् कलियुग्म शेष सब एकेन्द्रिय का बेइन्द्रिय जैसे कहना. पंचेन्द्रिय तिर्यंच यावत् वैमानिक का नारकी जैसे कहना. सिद्ध का वनस्पति काया जैसे ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! स्त्रियों में क्या कृत युग्म है ? अहो गौतम ! जघन्य पद में कृत युग्म. मध्यम पद में स्यात् कृत युग्म यावत् स्यात् कलि युग्म. ऐसे ही असुरकुमार की स्त्रियों यावत् स्तनित कुमार की स्त्रियों, ऐसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, वाणव्यंतर,

देव इत्थीओत्ति ॥ ५ ॥ जावइयाणं भंते ! चरा अंधगवण्हिणो जीवा तावइया परा अंधगवण्हिणो जीवा ? हंता गोयमा ! जावइया चरा अंधगवण्हिणो, जीवा तावइया परा अधंगवण्हिणो जीवा ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ ४ ॥ ० ० ०

दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववण्णा, तत्थणं एगे असुरकुमारे देवे पासादीए दरसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एगे असुरकुमारे

ज्योतिषी व वैमानिक की स्त्रियों का जानना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जितने अल्प आयुष्यवाले बादर अग्निकाय के जीवों हैं उतने उत्कृष्ट आयुष्यवाले अग्निकायिक क्या जीवों हैं ? हां गौतम ! जितने अल्प आयुष्यवाले अग्निकायिक जीवों हैं उतने उत्कृष्ट आयुष्यवाले अग्निकायिक जीवों हैं. × अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह अठारहवा शतक का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १८ ॥ ४ ॥ ०

चतुर्थ उद्देशे के अंत में अग्नि का कथन किया, आगे देवता का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! असुर

× कितनेक अंधगवण्हिणो का अर्थ ऐसा करते है कि सूक्ष्म नाम कर्म के उदय से सूक्ष्म अग्नि जीवों और कितनेक आचार्य सूक्ष्मजीवों भी अर्थ करते है.

देवे सेणं णो पासादीए णो दरसणिज्जे, णो अभिरूवे णो पडिरूवे, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-वेउव्विय सरीराय अवे-उव्विय सरीराय, तत्थणं जे से वेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे सेणं पासादीए जाव पडिरूवे, तत्थणं जे से अवेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे सेणं णो पासादीए जाव णो पडिरूवे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-तत्थणं जे से वेउव्वियसरीरे तंचेव जाव णो पडिरूवे ? गोयमा ! से जहा णामए-इहमणुस्सलोगंसि दुवे पुरिसा भवंति, एगे पुरिसे अलंकिय विभूसिए, एगे पुरिसे अणलंकिय विभूसिए, एएसिणं

कुमारवास में दो असुरकुमार असुरकुमारपने उत्पन्न हुवे, जिन में एक असुरकुमार देव प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप होवे और दूसरा प्रासादिक दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप होवे नहीं, तो यह किस तरह है? अहो गौतम! असुरकुमार देव के दो भेद कहे हैं. एक वैक्रेय शरीर किया हुवा और दुसरा वैक्रेय शरीर नहीं किया हुवा. जो वैक्रेय शरीर वाला होता है वह प्रासादिक यावत् प्रतिरूप होता है. और जो वैक्रेय शरीर रहित होता है वह प्रासादिक यावत् प्रतिरूप नहीं होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा कि वैक्रेय शरीरवाला प्रासादिक यावत् प्रतिरूप है और वैक्रेय शरीर रहित प्रासादिक यावत्

गोयमा ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे, कयरे पुरिसे णो पासादीए जाव णो पडिरूवे, जेवा से पुरिसे अलंकिय विभूसिए जेवासे पुरिसे अण- लंकियविभूसिए ? भगवं ! तत्थ जे से पुरिसे अलंकियविभूसिए सेणं पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे,जेवासे पुरिसे अणलंकियविभूसिए सेणं पुरिसे णो पासादीए जाव णो पडिरूवे । से तेणट्ठेणं जाव णो पडिरूवे ॥ १ ॥ दो भंते ! णागकुमारा देवा एगंसि णागकुमारावासंसि एवंचेव, एवं जाव थणियकुमारा, ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया एवंचेव ॥ २ ॥ दो भंते ! णेरइया एगंसि णेरइयावासंसि

प्रतिरूप नहीं है ? अहो गौतम ! जैसे इस मनुष्य लोक में दो पुरुषों हैं जिन में एक पुरुष वस्त्रालंकार से अलंकृत व आभूषणों से विभूषित है और दूसरा पुरुष अलंकृत व विभूषित नहीं है. अब उन में कौनसा पुरुष प्रासादिक यावत् प्रतिरूप है और कौनसा पुरुष प्रासादिक यावत् प्रतिरूप नहीं है ? अहो भगवन् ! जो पुरुष वस्त्र अलंकार से अलंकृत व आभरणों से विभूषित है वह पुरुष प्रासादिक है, और जो पुरुष अलंकृत व विभूषित नहीं है वह प्रासादिक यावत् प्रतिरूप नहीं है; इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् प्रतिरूप नहीं है ॥१॥ ऐसे ही नागकुमार यावत् स्तनितकुमार वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का जानना ॥ २ ॥ अहो

णेरइयत्ताए उववण्णा तत्थणं एगे णेरइए महाकम्मतराएचेव महावेयणतरा चेव, एगे णेरइए अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! णेरइया ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा मायीमिच्छदिट्ठी उववण्णगाय, अमायी सम्मद्दिट्ठीउववण्णगाय, तत्थणं जे से मायीमिच्छादिट्ठी उववण्णए णेरइए सेणं महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव, तत्थणं जे से अमायीसम्मदि उववण्णए णेरइए सेणं अप्पकम्मतराए चेव अप्पवेयणतराए चेव ॥ ३ ॥ दो भंते ! असुरकुमारा एवं चेव ॥ एवं एगेंदिय विगलिंदयवज्जं जाव वेमाणिया ॥४॥ णेरइयाणं

अर्थ

भगवन् ! एक ही नरकावास में दो नेरइये नारकीपने उत्पन्न हुवे, जिन में एक नारकी महाकर्मवाला यावत् महावेदनावाला, दूसरा नारकी अल्पकर्मवाला यावत् अल्पवेदनावाला है तो यह किस तरह है ? अहो गौतम ! नारकी के दो भेद कहे हैं. १ मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्नक और २ अमायीसमदृष्टि उत्पन्नक. उन में जो मायीमिथ्यादृष्टि उत्पन्नक नारकी है वह महाकर्मवाला यावत् महावेदनावाला है और जो अमायी सम्यग् दृष्टि उत्पन्नक नारकी है वह अल्प कर्मवाला यावत् अल्प वेदनावाला है ॥ ३ ॥ ऐसे ही असुरकुमार यावत् एकेन्द्रिय व विकलेन्द्रिय छोडकर सब दंडक का जानना ॥ ४ ॥ अहो

भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, सेणं भंते ! कयरं आउयं पडिसंवेदेइ ? गोयमा ! णेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाउएसे पुरओ कडे चिट्ठइ ॥ एवं मणुस्सेवि णवरं मणुस्साउए से पुरओ कडे चिट्ठइ ॥ ४ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पुढवीकाइएसु उववज्जित्तए पुच्छा, गोयमा! असुरकुमाराउयं पडिसंवेदेइ, पुढवीकाइयाउए से पुरओ कडे चिट्ठइ ॥ एवं जो जहिं भवओ उववाज्जित्तए तस्स तं पुरओ कडं चिट्ठंति तत्थविओ तं पडिसंवेदेइ जाव वेमाणिया णवरं पुढवीकाइयो पुढवी काइएसु उववज्जाति पुढवीकाइयाउयं पडिसंवेदेइ अण्णेय से पुढवीकाइयाउए पुरओ कडे चिट्ठइ एवं जाव मणुस्सो सट्ठाणे उववातेयव्वो परट्ठाणे तहेव ॥ ५ ॥

भगवन् ! जो नारकी नरक में अंतर रहित नीकलकर तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होने योग्य होता है, वह कौनसा आयुष्य वेदता है ? अहो गौतम ! नारकी का आयुष्य वेदता है और तिर्यंच पंचेन्द्रिय का आयुष्य आगे करके रहता है. ऐसे ही मनुष्य का जानना. वह आगे करके रहता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार अंतर रहित नीकलकर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होने योग्य होता है वह कौनसा आयुष्य वेदता है ? अहो गौतम ! असुरकुमार का आयुष्य वेदता है और पृथ्वी काया का आयुष्य आगे करके रहता है. ऐसे ही जो जहां उत्पन्न होने योग्य होता है वह वहां का आयुष्य आगे कर के

दो भंते ! असुकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववण्णा, तत्थणं एगे असुरकुमारदेवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ, वंकं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्वइ, जं जहा इच्छइ तं तहा विउव्वइ । एगे असुरकुमारे देवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्विइ वंकं विउव्विस्सामीति, उज्जयं विउव्वइ जं जहा इच्छइ णो तं तहा विउव्वइ ॥ से कहमेयं भंते! एवं ?गोयमा! असुर कुमारा दुविहा पण्णत्ता तंजहा-मायीमिच्छदिट्ठी उववण्णगाय,अमायीसम्मदिट्ठी उववण्णगाय, तत्थणं जे से मायीमिच्छदिट्ठी उववण्णए असुरकुमारदेवे सेणं उज्जुयं विउव्विस्सामीति

रहता है और जिस स्थान रहता है वहां का आयुष्य वेदता है. ऐसा वैमानिक पर्यंत जानना. परंतु पृथ्वीकाया पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते पृथ्वीकाया का आयुष्य वेदते हैं और अन्य पृथ्वीकाया का आयुष्य आगे करके रहता है ऐसे ही मनुष्य पर्यंत स्वस्थान में उत्पन्न होने का व परस्थान आश्री पूर्वोक्त जैसे कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! एक असुरकुमारावास में दो असुर है. कुमार देवतापने उत्पन्न हुए उन में एक असुरकुमार अच्छे रूप का वैक्रेय करूंगा ऐसा करके अच्छेरूप का वैक्रेय करता है, वक्र रूप का वैक्रेय करूंगा. ऐसा करके वक्र रूप का वैक्रेय करता है, इस तरह जैसा इच्छता है वैसा करता है. और दूसरा असुरकुमार अच्छे रूप का वैक्रेय करूंगा ऐसा करके वक्र रूप का वैक्रेय करता और वक्र रूप का वैक्रेय करूंगा एसा करके ऋजुरूप का वैक्रेय करे इस तरह जैसा इच्छे वैसा रूप कर सके नहीं तो यह किस तरह है ? अहो गौतम ! असुरकुमार के दो भेद कहे हैं मायी मिथ्यादृष्टि

वंकं विउव्वइ जाव णो तं तहा विउव्वइ, तत्थणं जे से अमायी सम्मदिट्ठी उववण्णए असुरकुमारदेवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ जाव तं तहा विउव्वइ ॥ दो भंते! नागकुमारा एवचेव, एवं जाव थणियकुमारा ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया एवं चेव ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥५॥ फाणियगुलेणं भंते ! कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे, पण्णत्ते ? गोयमा एत्थणं दोणया भवंति तंजहा निच्छइएणएय, वावहारियणएय, ॥ वावहारियणयस्स गोड्डे फाणियगुले. णिच्छइयणयस्स पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे अट्ठफासे ॥ १ ॥ भमरेणं भंते ! कइवण्णे पुच्छा ? गोयमा ! एत्थणं दो णया भवंति, तंजहा णिच्छइयणएय

॥र्थ

उत्पन्नक और २ अमायी समदृष्टि उत्पन्नक. उन में मायीमिथ्यादृष्टि उत्पन्नक असुरकुमार ऋजु का वैक्रेय करक यावत् वैसा वैक्रेय नहीं कर सकते हैं. और जो अमायी सम्यग्दृष्टि असुरकुमार ऋजु वैक्रेय करूंगा ऐसा करके यावत् वैक्रेय करता है. ऐसे ही नागकुमार यावत् स्तनितकुमार वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह अठारहवा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १८ ॥ ५ ॥

पांचवे उद्देशे में सचेतन वस्तु की विचित्र वक्तव्यता कही, छठे उद्देशे में अचेतन वस्तु का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! ढीले गुड में कितने वर्ण, गंधरस व स्पर्श कहे हैं. ? अहो गौतम ! इस में

वावहारियणएय, वावहारियणयस्स कालए भमरे, णिच्छिइयणयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासे ॥२॥ सुयापिच्छेणं भंते ! कइवण्णे पण्णत्ते ? एवंचेव णवरं वावहारियणयस्स णीलए सुयपिच्छे, णेच्छइयस्स णयस्स सेसं तंचेव ॥ एवं एएणं अभिलावेणं लोहितिया मंजिट्ठिया, पीतिया हालिद्दा, सुक्किल्लए संखे, सुब्भिगंधे कोट्ठे, दुब्भिगंधे-मियगसरीरे, तित्तेणं णिंबे, कडुया सुंठी, कसाए तुंयरए कविट्ठे, अंबा अंबालिया, महुरे खंडे; कक्खडे वइरे, मउए णवणीए, गुरुए अए, लहुए उलुयपत्ते, सीए हिमे, उसिणे

निश्चय और व्यवहार ऐसे दो नय ग्रहण किये गये हैं. व्यवहारनय से मधुररसवाला गुड है और निश्चयनयसे गुड में पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श पाते हैं. अहो भगवन् ! भ्रमर में कितने वर्णादि पाते हैं ? अहो गौतम ! यहां पर भी दो नय ग्रहण किये हैं, जिन मे व्यवहार नयसे भ्रमर में काला वर्ण पाता है और निश्चयनय से पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श पाते हैं. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शुक की पांख में कितने वर्ण पाते हैं ? अहो गौतम ! यहां भी दो नय ग्रहण किये हैं. व्यवहारनय से शुक की पांख में हरा वर्ण पाता है और निश्चय नय से पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श पाते हैं. और भी इस आलापक

१ लोकोत्तर सज्ञा २ लोक सज्ञा.

अगणिकाए, णिद्धे-तेल्ले ॥ छारियाणं भंते पुच्छा ? गोयमा । एत्थणं दोणया भवंति तंजहा णिच्छइयणएय, वावहारियणएय, वावहारियणयस्स लुक्खाछारिया, णेच्छइ-यणयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासा पणत्ता ॥ ३ ॥ परमाणुपोग्गलेणं भंते ! कइवण्णे जाव कइफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगवण्णे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते ॥ दुपदेसिएण भंते ! खधे कइवण्णे पुच्छा ? गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय दुफासे सिय तिफासे

मे लाल मजीठ, पीली हलदी, श्वेत शंख, सुगंधी कोष्टक, दुर्गन्धी मृत्युक शरीर, निक्करस, निंब, कटुक सूंठ, कषायला तूरा कवीठ, अम्बट इमली, मधुर सक्कर. कर्कश स्पर्श वज्र, कोमल मक्खन, भारी लोहा, हलका चोरपत्र, शीत हिम, ऊष्ण अग्नि, चिक्कना तेल, रूक्ष राख यों सब में व्यवहार नय से एकर ही वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पाता है और निश्चय नय से पांच वर्ण यावत् आठोंही स्पर्श पाते हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल में कितने वर्ण यावत् स्पर्श पाते हैं ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल में एक वर्ण एक रस दो स्पर्श कहे हैं. अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श कहे हैं ? अहो गौतम ! क्वचित् एक वर्ण क्वचित् दो वर्ण, यदि दोनों एक वर्ण के होवे तो एक ही वर्ण, इस के पांच विकल्प

सिय चउफासे ॥ एवं तिपदेसिएवि णवरं एगवण्णे सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, एवं रसेसुवि, सेसं जहा दुपदेसियस्स, एवं चउप्पदेसिएवि णवरं सिय एगवण्णे जाव सिय चउवण्णे; एवं रसेसुवि, सेसं तंचेव ॥ एवं पंचपएसिएवि णवरं सिय एगवण्णे जाव पंच-वण्णे एवं रसेसुवि; गंध फासा तहेव जहा पंचपदेसिओ ॥ एवं जाव असंखेज्जपदेसिओ ॥ सुहुम परिणएणं भंते ! अणंतपदेसिए खंधे कइवण्णे ? जहा पचपदेसिए तहेव

दोनों दो वर्ण के होवे तो दो वर्ण इस के दश विकल्प. ऐसे ही स्यात् एक गंध, स्यात् दो गंध, इस के तीन विकल्प, ऐसे ही स्यात् एक रस, स्यात् दो रस दोनों के १५ विकल्प, ऐसे ही स्यात् दो स्पर्श, स्यात् तीन स्पर्श, स्यात् चार स्पर्श, इस के ४२ विकल्प होते हैं. ऐसे ही तीन प्रदेशिक स्कंध का कहना. विशेष में स्यात् तीनों का एक वर्ण जिस के पांच विकल्प यावत् तीन वर्ण सब ४५ विकल्प, गंध के द्विसंयोगी दो, तीन संयोगी तीन, ऐसे पांच रस के ४५ विकल्प वर्ण जैसे कहना, और शेष सब द्विप्रदेशिक स्कंध जैसे कहना. स्पर्श के २५ भांगे सब मीलकर १२० भांगे हुवे यावत् ऐसे ही चार प्रदेशिक का. विशेष में स्यात् एक वर्ण स्यात् चार वर्ण सब भांगे ९० पाते हैं. गंध के ६, रस के ९०, स्पर्श के ३६, सब २२२ भांगे वर्ण के. ऐसे ही पांच प्रदेशिक का कहना विशेष में स्यात् एक वर्ण स्यात् पांच वर्ण ऐसे ही रस गंध व स्पर्श का पूर्वोक्त प्रकार से कहना, सब भांगे ४७४ हुवे. जैसे

णिरवसेसं ॥ ४ ॥ बादरपरिणएणं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कइवण्णे पुच्छा ? गोयमा ! सिय एगवण्णे जाव सिय पंचवण्णे, सियएगगंधे, सिय दुगंधे; सिय एगरसे जाव सिय पंचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्ठफासे, ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ ६ ॥ ० ०

रायगिहे जाव एवं वयासी अण्णउत्थियाणं भंते ! एवं माइक्खंति जाव परूवेंति

अर्थ

पांच प्रदेशिक स्कंध का कहा ऐसे ही यावत् असंख्यात प्रदेशिक स्कंध का जानना. परमाणु से लगाकर असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध सूक्ष्म परिणाम रूप होता है और अनंत प्रदेशिक स्कंध सूक्ष्म तथा बादर दोनों परिणामरूप होता है इसलिये अनंतप्रदेशात्मक स्कंध की पृथक् व्याख्या करते हैं. अहो भगवन् ! सूक्ष्म परिणत असंख्यात प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्णादि कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे पंच प्रदेशिक स्कंध का कहा वैसे ही इस का भी कहना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! बादर परिणत अनंतप्रदेशात्मक स्कंध में कितने वर्णादि हैं ? अहो गौतम ! स्यात् एक वर्ण स्यात् पांच वर्ण स्यात् एक गंध स्यात् दो गंध, स्यात् एक रस स्यात् पांच रस स्यात् चार स्पर्श स्यात् आठ स्पर्श भी होता है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह अठारहवा शतक का छठा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १८ ॥ ६ ॥

छठे उद्देशे में नयवादिमत आश्रित वस्तु विचारणा कही. अब सातवे उद्देशे में अन्ययूथिक मत आश्री

एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्संति, एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा मोसंवा, सच्चामोसंवा, से कहमेयं भंते! एव ? गोयमा ! जंणं ते अण्णउत्थिया जाव जंणं एवमाहसु मिच्छंते एव माहंसु, अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि ४ णो खलु केवली जक्खाएसेणं आदिस्सइ, णो खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा मोसंवा सच्चामोसंवा ॥ केवलीणं असावज्जाओ अपरोवघाइयाओ आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा सच्चंवा असच्चामोसंवा ॥ १ ॥ कइविहेणं भंते ! उवही पण्णत्ता ?

अर्थ

प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर में यावत् पर्युपासना करते हुवे श्री गौतम स्वामी ऐसा बोले कि अहो भगवन्! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि केवलि के शरीर में यक्ष प्रवेश करते हैं जिससे केवली भी क्वचित मृषा व सत्यमृषा ऐसी दो भाषा बोले. अहो भगवन् ! यह कथन किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं उन का कथन मिथ्या है. अहो गौतम ! इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि केवली यक्षाधिष्ठित नहीं होते हैं. वैसे ही यक्षाधिष्ठित से मृषा व सत्यमृषा ऐसी भाषा केवली नहीं बोलते हैं; परंतु केवली सत्य व असत्यमृषा ऐसी दो

गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ता, तंजहा कम्मोवही, सरीरोवही, बाहिरभंड मत्तोवगरणोवही, ॥ णेरइयाणं भंते ! पुच्छा ? दुविहे उवही पण्णत्ता तंजहा कम्मोवहीय, सरीरोवहीय, सेसाणं तिविहे उवही। एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं ॥ एगिंदियाणं दुविहे उवही पण्णत्ता, तंजहा - कम्मोवहीय, सरीरोवहीय ॥ २ ॥ कइविहेणं भंते ! उवही पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ता, तंजहा-सचित्ते, अचित्ते, मीसए, एवं णेरइयाणवि, एवं णिरवसेसा जाव वेमाणियाणं ॥ ३ ॥

भाषाओं बोलते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! उपधि के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! उपधि के तीन भेद कहे हैं १ कर्मोपधि, २ शरीरोपधि व ३ बाह्य भंड पात्र व उपकरण की उपधि. अहो भगवन् ! नारकी को कितने प्रकार की उपधि कही ? अहो गौतम ! नारकी को कर्म व शरीर ऐसी दो उपधि कही. एकेन्द्रिय छोडकर शेष सब को तीनों प्रकार की उपधि कही. एकेन्द्रिय को दो प्रकार की उपधि १ कर्मोपधि व २ शरीरोपधि. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! उपधिके कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! उपधि के तीन भेद हैं-१ सचित्त, २ अचित्त, ३ मीश्र. नारकी आदि चौविस दंडक में तीनों प्रकार की उपधि कही ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परिग्रह के और कितने भेद कहे हैं. ? अहो

कइविहेणं भंते! परिग्गहे? गोयमा! तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तंजहा-कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे, बाहिरभंडमत्तोवगरण परिग्गहे ॥ णेरइयाणं भंते! एवं जहा उवहिणा दो दंडगा भणिया तहेव परिग्गहेणवि दो दंडगा भाणियव्वा ॥ ४ ॥ कइविहाणं भंते! पणिहाणे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तंजहा-मणपणिहाणे वइपणिहाणे, कायपणिहाणे ॥ णेरइयाणं भंते! कइविहे पणिहाणे? पण्णत्ते एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवीकाइयाणं पुच्छा? गोयमा! एगे कायपणिहाणे पण्णत्ते, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं ॥ वेइंदियाणं पुच्छा? गोयमा! दुविहे

गौतम! परिग्रह के तीन भेद कहे हैं. तद्यथा-१ कर्म परिग्रह २ शरीर परिग्रह और ३ बाह्य भंड पात्र व उपकरण का परिग्रह. अहो भगवन्! नारकी को कितने परिग्रह हैं? अहो गौतम! जैसे उपधि के दो दंडक कहे वैसे ही परिग्रह के दो दंडक कहना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन्! प्रणिधान के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! प्रणिधान के तीन भेद कहे हैं तद्यथा-१ मन प्रणिधान, २ वचन प्रणिधान, व ३ काया प्रणिधान. नारकी यावत् स्तनितकुमार को तीनों प्रणिधान कहे हैं; पृथ्वीकाय यावत् वनस्पति काया को एक काया प्रणिधान कहा है; बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय को वचन व काया ऐसे दो प्रणिधान हैं. और शेष सब वैमानिक

पणिहाणे पण्णत्ते, तंजहा-वइपणिहाणेय कायपणिहाणेय, एवं जाव चउरिंदियाणं, सेसाणं तिविहे जाव वेमाणियाणं ॥५॥ कइविहेणं भंते! दुप्पणिहाणे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा-मणदुप्पणिहाणे वइदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, जहेव पणिहाणेणं दंडओ भणिओ तहेव दुप्पणिहाणेणवि भाणियव्वो॥ ६ ॥ कइविहेणं भंते! सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणसुप्पणिहाणे, वइ सुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ॥ मणुस्साणं भंते कइविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ? एवंचेव ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥७॥ तएणं समणे भगवं महावीरे जाव बहिया

तक को तीनों प्रणिधान हैं ॥५॥ अहो भगवन् ! कितने दुष्प्रणिधान कहे हैं ? अहो ! गौतम ! तीन दुष्प्रणिधान कहे हैं. तद्यथा-१ मनदुष्प्रणिधान २ वचन दुष्प्रणिधान व ३ काया दुष्प्रणिधान. वगैरह जैसे प्रणिधान का दंडक कहा वैसे ही दुष्प्रणिधान का दंडक कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! कितने सुप्रणिधान कहे हैं ? अहो गौतम ! तीन सुप्रणिधान कहे हैं. तद्यथा१ मन सुप्रणिधान २ वचन सुप्रणिधान और ३ काया सुप्रणिधान. अहो भगवन् ! मनुष्य को कितने सुप्रणिधान कहे हैं ? अहो गौतम ! मनुष्यों को तीनों सुप्रणिधान कहे हैं. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं ऐसा कहकर श्री गौतम स्वामी विचरने लगे ॥ ७ ॥

जणवयविहारं विहरइ ॥ ८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे गुणसिलए चेइए, वण्णओ जाव पुढवीसिलापट्टओ ॥ ९ ॥ तस्सणं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति, तंजहा—कालोदाई, सेलोदाई, एवं जहा सत्तमसए अण्णउत्थिउद्देसए जाव से कहमेयं मण्णे एवं ? ॥ १० ॥ तत्थणं रायगिहे णयरे मद्दुएणामं समणोवासए परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए अभिगय जाव विहरइ ॥ ११ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव समोसढे, परिसा जाव पज्जुवासइ ॥ १२ ॥ तएणं मद्दुए

श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी बाहिर जनपद देश में विहार करने लगे ॥ ८ ॥ उस काल उस समय में राजगृह नाम का नगर था, उस की ईशान कौन में गुणशील नामक उद्यान था यावत् पृथ्वीशीला पट्ट था ॥९॥ उस गुणशील उद्यान की पास बहुत अन्यतीर्थिक रहते थे. जिन के नाम. कालोदायी, शैलोदायी वगैरह जैसे सातवे शतक में अन्यतीर्थिक उद्देशा कहा है तैसेही यहां कहना. तो अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? ॥ १० ॥ उस राजगृह नगर में मंडुक नामक श्रमणोपासक ऋद्धिवंत यावत् अपराभूत रहता था ॥ ११ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पूर्वानुपूर्व चलते, ग्रामानु-

समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे जाव हियए ण्हाए जाव सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता. पातविहारचारेणं रायगिहं णयरं जाव णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता, तेसिं अण्णउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीईवयति ॥ १३ ॥ तएणं से अण्णउत्थिया मंडुयं समणोवासयं अदूरसामंते वीईवयमाणं पासइ, पासइत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमा कहा अविउप्पकडा इमंचणं मड्डुए समणोवासए अम्हं अदूरसामंतेणं

ग्राम विचरते यावत् पधारे परिषदा यावत् पर्युपासना करने लगी ॥१२॥ मंडुक श्रमणोपासकने जब यह वात सुनी तव वह हर्षित हुवा, तुष्ट हुवा यावत् स्नान किया यावत् अलंकृत शरीरवाला हुवा और अपने गृह से नीकलकर पांव से चलता हुवा राजगृह से यावत् नीकलकर उन अन्य तीर्थिकों की पास से जाता था ॥१३॥ तब वे अन्यतीर्थिक मंडुक श्रमणोपासक को पास में जाता हुवा देखकर परस्पर ऐसा वोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय! अपन को यह वात समझ में नहीं आती है और यह मंडुक श्रमणोपासक नजीक में जा रहा है इस से अहो देवानुप्रिय! मंडुक श्रमणोपासक को यह वात पूछना अपन को श्रेय है. ऐसा करके परस्पर यह वात सुनकर मंडुक श्रमणोपासक की पास गये और उन से ऐसा वोले-अहो मंडुक! तेरे धर्माचार्य धर्मोपद-

वीईवयति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया। अम्हं मडुयं समणोवासगं एयमट्ठं पुच्छित्त-एत्ति कट्टु, अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता, जेणेव मडुए समणो-वासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छतित्ता मंडुयं समणोवासगं एवं वयासी-एवं खलु मंडुया! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए णायपुत्ते पंचत्थिकाए पण्णवेइ जहा सत्तमसए अण्णउत्थिय उद्देसए जाव से कहमेयं मडुया! एवं?॥ तएणं से मंडुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-जइकज्जं कज्जइ जाणामो पासामो, अहकज्जं णकज्जइ णजाणामो णपासामो॥ तएणं अण्णउत्थिया मंडुयं समणोवासयं एवं वयासी-केसणं तुमं मडुया!

शक ज्ञात पुत्र पांच आस्तिकाया प्ररूपते हैं वगैरह जैसे सातवे शतक में अन्यतीर्थिक उद्देशे में कहा वैसे ही यावत् यह किस तरह है? तब मंडुक श्रमणोपासक अन्यतीर्थिकों को ऐसा बोले की जैसे धूम्रादिक के न्याय से अग्नि जानी जाती है वैसे ही धर्मास्तिकायादिक से जो कार्य किये जाते हैं उन कार्यों से धर्मास्ति कायादिक जानते हैं. और कार्य न करे तो नहीं जानते हैं व नहीं देखते हैं. क्यों कि छद्मस्थ चक्षु अगोचर पदार्थ को कार्य बिना नहीं जान सकते हैं. तब अन्यतीर्थिक उस मंडुक श्रमणोपासक को ऐसा बोले-अहो मंडुक! तू कैसा श्रमणोपासक है कि यह बात को नहीं जान सकता व नहीं देख सकता है? तब

समणोवासगाणं भवसि, जेणं तुमं एयमट्ठं णजाणइ णपासइ? तएणं मंडुए समणो-वासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-अत्थिणं आउसो! वाउयाए वाति? हंता मंडुया! वाति ॥ तुब्भेणं आउसो वाउयस्स वायमाणस्स रूवं पासह? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो! घाणसहगया पोग्गला? हंता अत्थि, तुब्भेणं आउसो! घाणसहगयाणं पोग्गलाणं रूवं पासह? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो! अरणिसहगए अगणिकाए? हंता अत्थि। तुब्भेणं आउसो! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो समुद्दस्स

मंडुक श्रमणोपासक उन अन्यतीर्थिकों को ऐसा बोले कि अहो आयुष्मन्! क्या वायु चलता है? हां मंडुक वायु चलता है, अहो आयुष्मन्! तुम चलते हुवे वायु का रूप क्या देखते हो? अहो मंडुक! हम चलते हुवे वायु का रूप नहीं देखते हैं. घ्राणसहगत पुद्गलों हैं क्या? हां मंडुक! घ्राणसहगत पुद्गलों हैं. अहो आयुष्मन्! क्या तुम घ्राणसहगत पुद्गलों का रूप देखते हो? यह अर्थ योग्य नहीं हैं अर्थात् घ्राणसहगत पुद्गलों का रूप हम नहीं देखते हैं. अहो आयुष्मन्! क्या अरणि सहगत अग्नि है? हां मंडुक! अरणिसहगत अग्निकाय है. अहो आयुष्मन्! तुम क्या अरणि सहगत अग्नि-

पारगयाइं रूवाइं ? हंता अत्थि, तुब्भेणं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासह ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं ? हंता अत्थि। तुब्भेणं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं पासह ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवामेव आउसो ! अहंवा तुब्भेवा अण्णोवा छउमत्थो णजाणइ णपासइ, तं सव्वं ण भवासि. एवं भे सुबहुंलोए णभविस्सतीति कट्टु, ते अण्णउत्थिए एवं पडिहणति, एवं पडिहणातित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभि-

काय का रूप देखते हो ? यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो आयुष्मन् ! समुद्र के पारगत रूप हैं ? हां मंडुक ! हैं, तब क्या तुम उन को देखते हो ? यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो आयुष्मन् ! क्या देवलोक गत रूप हैं ? हां मंडुक ! देवलोक गत रूप हैं. तब क्या उन देवलोक गत रूप को तुम देखते हो ? यह अर्थ योग्य नहीं है. ऐसे ही अहो आयुष्मन् ! मैं, तुम अथवा अन्य छद्मस्थ जो जो वस्तु दिखने में नहीं आती है वह नहीं है ऐसा मानेंगे तो तुम्हारे मत में सुबहुलोक नहीं होगा. इस तरह अन्यतीर्थिकों को निरुत्तर कर गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की
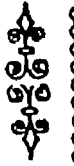
गमेणं अभि जाव पज्जुवासइ ॥ १४ ॥ मंडुयादि ! समणे भगवं महावीरे मंडुयं समणोवासयं एवं वयासी सुट्ठुणं मंडुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं मंडुया ! तुम्हं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी जेणं मंडुया ! अट्ठंवा हेउंवा पासिणंवा, वागरणंवा अण्णायं अदिट्ठं असुयं अमतं अविण्णातं बहुजणमज्झे आघवेइ पण्णवेइ जाव उवदंसेइ, सेणं अरिहंताणं आसादणयाए वट्टइ, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणयाए वट्टइ, केवलिणं आसादणयाए वट्टइ, केवलीपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणयाए वट्टइ, तं सुट्ठुणं तुमं मंडुया ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं तुम

की पास आकर भगवंत महावीर की पांच प्रकार के अभिगम से सन्मुख जाकर यावत् पर्युपासना करने लगा. ॥ १४ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी मंडुक श्रमणोपासक को ऐसा बोले कि अहो मंडुक ! तुमने अन्यतीर्थिकों को जो ऐसा कहा वह अच्छा किया. अहो मंडुक ! जो बहुत मनुष्यों में नहीं देखा हुवा, नहीं जाना हुवा व नहीं सुना हुवा अर्थ, हेतु,प्रश्न व व्याकरण को इस तरह कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं वे तीर्थंकर की आसातना करते हैं, अरिहंत प्ररूपित धर्म की आसातना करते हैं, केवली की आसातना करते हैं केवली प्रभाषित धर्म की आसातना करते हैं. इस से अहो मंडुक ! तैने उन अन्य तीर्थिकोंको ऐसा कहा सो

मंडुया! जाव एवं वयासी॥ १५॥ तएणं मंडुए समणोवासए समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठे समणे भगवं महावीरे मंडुयस्स समणोवासगस्स तीसेय जाव परिसा पडिगया ॥ १६ ॥ तएणं मंडुए समणोवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव णिसम्म हट्ठ तुट्ठे पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छइत्ता अट्ठाइं परियाति २ त्ता, समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता जाव पडिगए ॥ १७ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं

अच्छा किया. ॥ १५ ॥ जब श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने मंडुक श्रमणोपासक को ऐसा कहा तब मंडुक हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवा और मंडुक श्रमणोपासक को उस महती परिषदा में महावीर स्वामीने उपदेश दिया यावत् परिषदा पीछी गइ. ॥ १६ ॥ फीर मंडुक श्रमणोपासकने श्रमण भगवंत महावीर को यावत् अवधार कर हृष्ट तुष्ट हुवा और प्रश्नों पुछकर उसे ग्रहण कर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर यावत् पीछा गया. ॥ १७ ॥ भगवान गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन्! मंडुक श्रमणोपासक आपकी पास यावत् मुंडित होने को क्या समर्थ है? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है. यहां जैसे शंख का कहाथा वैसे ही

वयासी-पभूणं भंते ! मंडुए समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं जाव पव्वइत्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवं जहेव संखे तहेव अरुणाभे जाव अंतंकरेहिति ॥ १८ ॥ देवेणं भंते ! माहिड्ढीए जाव महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू अण्णमण्णेणं सार्द्धं संगामं संगामेत्तए ? हंता पभू ॥ ताओणं भंते ! बोंदीओ किं एग जीव फुडाओ अणेग जीव फुडाओ ?गोयमा ! एग जीव फुडाओ णो अणेग जीव फुडाओ तेसिंणं भंते ! बोंदीणं अंतरा किं एग जीव फुडा अणेग जीव फुडा ? गोयमा ! एग जीव फुडा णो अणेग जीव फुडा ॥ १९ ॥ पुरिसेणं भंते ! अंतरे हत्थेणवा

यहां पर कहना यावत् अरुणाभ विमान में उत्पन्न होकर वहां से महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा बुझेगा यावत् अंत करेगा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महासुख वाला देवता सहस्त्ररूपों का वैक्रेय करके परस्पर संग्राम करने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! देवसहस्त्ररूपों का वैक्रेय करके परस्पर संग्राम करने में समर्थ हैं. अहो भगवंत ! उन शरीरों को क्या एक जीव स्पर्शा हुवा है या अनेक जीव स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक जीव स्पर्शा हुवा है. अहो भगवन् ! उन शरीरों की बीच में क्या एक जीव स्पर्शा हुवा है या अनेक जीव स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक जीव स्पर्शा हुवा है परंतु अनेक जीव स्पर्शे हुवे नहीं हैं.

एवं जहा अट्ठमसए तइय उद्देसए जाव णो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥ २० ॥ अत्थिणं भंते ! देवा असुरा संगामा देवा असुरा ? हंता अत्थि ॥ देवासुरेणं भंते ! संगामेसु वट्टमाणेसु किंणं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमंति ? गोयमा ! जंणं ते देवा तणंवा, कट्ठंवा, पत्तंवा, सक्करंवा, परामुसंति तंणं तेसिणं देवाणं पहरणरय-णत्ताए परिणमंति ॥ जहेव देवाणं तहेव असुरकुमाराणं ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ असुर कुमाराणं देवाणं णिच्चं विउव्विया पहरणरयणा पण्णत्ता ॥ २१ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डीए जाव महेसक्खे पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छित्तए ? हंता

॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! पुरुष बीच में हस्त पांव वगैरह जैसे आठवें शतक के तीसरे उद्देशे में कहा वैसे ही यहां जानना. ॥२०॥ अहो भगवन् ! देव व असुर में क्या संग्राम होता है? हां गौतम! देव व असुर में संग्राम होता है. अहो भगवन् ! देव व असुर के होते हुवे संग्राम में प्रहाररत्न (शस्त्रपने) क्या परिणमता है? अहो गौतम ! देव जो तृण, काष्ट, पत्र व कंकर डालते हैं, वे उन देवोंको प्रहाररत्नपनें परि-णमते हैं. जैसे देवों का कहा वैसे ही असुरकुमार का क्या जानना. ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. क्यों की असुरकुमार को सदैव वैक्रेयवाला प्रहार रत्न होता है. ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक

पभू देवेणं भंते! महिड्ढीए एवं धायइखंडदीवं जाव हंता पभू॥ एवं जाव रुयगवरं दीवं जाव हंता पभू ॥ तेणं परं वीईवएज्जा णो चेवणं अणुपरियट्टिज्जा ॥ २२ ॥ अत्थिणं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति ? हंता अत्थि । अत्थिणं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ? हंता अत्थि॥ अत्थिणं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ? हंता अत्थि ॥ २३ ॥ कयरे भंते !

व महासुख वाला देव क्या लवण समुद्र को अनुपर्यटन करके आनेको समर्थ है ? हां गौतम ! समर्थ है. ऐसे ही धातकी खंड द्वीप यावत् रुचकद्वीप का जानना. उस के आगे के द्वीप को उल्लंघने में समर्थ है परंतु उनकी पर्यटना करने में समर्थ नहीं है. ॥२२॥ अहो भगवन् ! ऐसे क्या देवों हैं कि जो अनंत पापकर्मांश जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांचसो वर्ष में खपावे ? हां गौतम ! ऐसे देवों हैं. अहो भगवन् ! ऐसे देवों क्या हैं कि जो अनंत पापकर्मांश एक दो तीन उत्कृष्ट पांच हजार वर्ष में खपावे? हां गौतम ! हैं. अहो भगवन् ! क्या ऐसे देव हैं कि जो अनंत पापकर्मांश जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच लाख वर्ष में खपावे ?

देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा जाव पंचहिं वाससएहिं खवयंति, कयरेणं भंते ! देवा जाव पंचहिंवाससहस्सेहिं खवयंति; कयरेणं भंते ! देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ? गोयमा ! वाणमंतरा अणंते कम्मंसे एगेण वाससएणं खवयंति, असुरिंदवज्जियाणं भवणवासी देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वास सएहिं खवयंति, असुरकुमारा देवा अणंते कम्मंसे तिहिं वाससएहिं खवयंति, गहगण णक्खत्ततारारूवा जोइसिया देवा अणंते कम्मंसे चउवास जाव खवयंति, चंदिमसूरिया जोइसिंदा जोइसरायाणो अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससएहिं खवयंति, सोहम्मी-साणगा देवा अणंत कम्मसे एगेणं वाससहस्सेणं जाव खवयंति, सणंकुमार माहिंदगा

हां गौतम ! वैसे हैं. ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! कौन देव अनंत पापकर्मांश जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांचसो वर्ष में खपावे यावत् उत्कृष्ट पांच लाख वर्ष में खपावे ? अहो गौतम ? वाणव्यंतर देव अनंत पाप कर्मांश एकसो वर्ष में खपावे, असुरेन्द्र छोडकर अन्य भवनवासी देवों दोसो वर्ष में खपावे, असुरकुमार देव अनंत कर्मांश तीन सो वर्ष में खपावे, ग्रहगण नक्षत्र व तारारूप ज्योतिषी देव अनंत पापकर्मांश चारसो वर्ष में खपावे, ज्योतिषी के राजा ज्योतिषी के इन्द्र अनंत पापकर्मांश पांच सो वर्ष में खपावे, सौधर्म देवलोक

देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, एवं एएणं अभिलावेणं बंभलोगं-
तगा देवा अणंत कम्मंसे तिहिं वाससहस्सेहिं, महासुक्कसहस्सारगा देवा अणंते चउहिं
वाससहस्सेहिं खवयंति, आणयपाणयआरणअच्चुयगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं
वाससहस्सेहिं खवयंति, हेट्ठिमगेवेज्जगादेवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्सेणं
खवयंति, मज्झिमगवेज्जगा देवा दोहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, उवरिमगेवेज्जगा
देवा अणंते कम्मंसे तिहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, विजयवेजयंतजयंतअपरा-
जियगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, सव्वट्ठसिद्धगा

व ईशान देवलोक के देवता अनंत पापकर्मांश एक हजार वर्ष में में खपावे, सनत्कुमार व माहेन्द्र देवलोक के देवता दो हजार वर्ष में खपावे, ब्रह्मलोक व लांतक देवलोक के देवता अनंत पापकर्मांश तीन हजार वर्ष में महाशुक्र व सहस्रार देवलोक के देवना चार हजार वर्ष में, आनत प्राणत आण व अच्युत देवलोक के देवता अनंत पापकर्मांश पांच हजार वर्ष में, नीचे की ग्रैवेयक के-देवों दो लाखवर्ष में खपावे, उपर की ग्रैवेयक के देवता तीन लाख वर्ष में खपावे, विजय वैजयंत जयंत व अपराजित के देवता चार हजार वर्ष में और सर्वार्थ

देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ; एएणं गोयमा ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति. एएणं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ॥ एएणं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ ७ ॥ ० ०

रायगिहे जाव एवं वयासी-अणगारस्सणं भंते ! भावियप्पाणो पुरओ दुहओ मायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स अहे कुक्कड पोतेवा, वट्टापोतेवा, कुलिंगच्छा-

सिद्ध विमान के देव पांच हजार वर्ष में अनंत कर्मांश खपावे. अहो गौतम ! इसीसे देवों अनंत कर्मांश जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच सो वर्ष में खपाते हैं. इस से अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच हजार वर्ष में कर्म खपावे और इस से ही अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच लाख वर्ष में कर्म खपावे. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह अठारहवा शतकका सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥१८।७॥

सातवे उद्देशे में कर्मक्षय करने का कहा. इस उद्देशे में कर्मबंध का कहते हैं. राजगृही नगरी के गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार श्री गौतम स्वामी ऐसा बोले

एवा परियावज्जेजा, तस्सणं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! अणगारस्सणं भावियप्पणो जाव तस्सणं इरियावहिया किरिया कज्जइ, णो संपराइया किरिया कज्जइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो णिक्खित्तो ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ १ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ ॥ २ ॥ तेणं कालेणं तेणं

अहो भगवन् ! युग प्रमाण [चार हाथ] भूमि देखकर चलते हुवे भावितात्मा अनगार के पांव नीचे कोई मुर्गी के बच्चे, बटेर के बच्चे, व कीडियों के बच्चे परितापना पावे तो उस अनगार को क्या ईर्यापथिक क्रिया होवे या संपरायिक क्रिया होवे ? अहो गौतम ! युगप्रमाण भूमि आगे देखते हुवे भावितात्मा अनगार के पांव की नीचे कोई मुर्गी के बच्चे, बटेर के बच्चे, व कीडियों के बच्चे परितापना पावे तो उन अनगार को ईर्यापथिक क्रिया होवे परंतु संपरायिक क्रिया होवे नहीं. अहो भगवन् ! ऐसा किस कारन से कहा गया है ? अहो गौतम ! जैसे सातवे शतक में संवृत उद्देशे में कहा वैसे ही यहां जानना. यावत् कषाय विच्छेद होने से ईर्या पथिक क्रिया लगे. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यावत् विचरने लगे ॥ १ ॥ फीर श्रमण भगवंत भी विचरने लगे ॥ २ ॥ उस काल उस समय में

समएणं रायगिहे जाव पुढवीसिलापट्टए ॥ ३ ॥ तस्सणं गुणासिलस्स चेइयस्स अ-दूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति ॥ ४ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव परिसा पडिगया ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे जाव उड्ढं जाणू जाव विहरइ ॥ ६ ॥ तएणं ते अण्णउत्थिया जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता भगवं गोयमं एवं वयासी तुब्भेणं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंत-बालायावि भवह ॥ ६ ॥ तएणं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी से

राजगृह नगर यावत् पृथ्वी शीलापट्ट था ॥ ३ ॥ उस गुणशील उद्यान की पास बहुत अन्यतीर्थिकों रहते थे ॥ ४ ॥ वहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे यावत् परिषदा पीछी गई ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अंतेवासी यावत् ऊर्ध्व जानु से यावत् विचरने लगे ॥६॥ तब वे अन्यतीर्थिक जहां गौतम स्वामी थे वहां आये और भगवान् गौतम को ऐसा बोले कि अहो आर्यो ! तुम तीन करन तीन योग से असंयति यावत् एकांत बालहो ॥६॥ तब भगवान् गौतम उन अन्यतीर्थिकों को बोले कि अहो आर्यो ! किस कारन से हम तीन करन तीन योग से अविराति असंयति

केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंत वालायावि भवामो ? ॥ तएणं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी-तुब्भेणं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणं पेच्चेह अभिहणह जाव उद्दवेह, तएणं तुब्भे पाणे पेच्चमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं जाव एगंतबालायावि भवह ॥ ७ ॥ तएणं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी णो खलु अज्जो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पाणा पेच्चेमो, जाव उद्दवेमो, अम्हेणं अज्जो ! रीयं रीयमाणा कायं च जोयं च रीयं च पडुच्च दिस्सा पदेस्सा वयामो, तएणं अम्हे दिस्सा २ वयमाणा पदेस्सा वयमाणा २ णो पाणे पेच्चेमो

यावत् एकांत बाल हैं ? तब अन्य तीर्थिकोंने ऐसा उत्तर दिया कि अहो आर्यो ! तुम चलते हुवे प्राणोंको आक्रमते हो, हणते हो यावत् मारते हो. इस तरह प्राणियोंको आक्रमते, हणते यावत् मारते हुवे तुम तीन करन तीन योग से एकांत बाल हो ॥ ७ ॥ तब भगवान् गौतम उन अन्यतीर्थिकों को ऐसा बोले अहो आर्यो ! गमन करते हुवे हम प्राणियों अतिक्रमते नहीं है यावत् उपद्रव नहीं करते हैं परंतु चलते हुवे काया योग, व परिभ्रमण आश्री देख २ कर चलते हैं. इस तरह देख २ कर चलते हम प्राणियों को अतिक्रमते नहीं है यावत् उपद्रव नहीं करते हैं. प्राणियों को नहीं अतिक्रमते यावत् उपद्रव नहीं करते

जाव णो उद्दवेमो, तएणं अम्हे पाणे अपेच्चमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंत पंडियावि जाव भवामो ॥ तुब्भेणं अज्जो ! अप्पणो चेव तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबालायावि भवह, ॥ ८ ॥ तएणं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं जाव विभवामो ? ॥ तएणं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-तुब्भेणं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह जाव उद्दवेह, तएणं तुब्भे पाणे पेच्चमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं जाव एगंत बालायावि भवह ॥ ९ ॥ तएणं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं पडिटणइ पडिहणइत्ता

तीन करन तीन योग से हम एकांत पंडित हैं. परंतु अहो आर्यो ! तुम स्वतः ही तीन करन तीन योगसे एकांत बाल हो ॥ ८ ॥ तब अन्यतीर्थिक भगवंत गौतम को ऐसा बोले अहो आर्य ! किस कारन से हम तीन करन तीन योग से यावत् एकांत बाल हैं ? तब भगवान् गौतमने उन अन्य तीर्थिकों को ऐसा कहा अहो आर्यो ! तुम चलते हुए प्राणियों को अतिक्रमते हो यावत् उपद्रव करते हो. इस तरह प्राणियोंको आतिक्रमते यावत् उपद्रव करते तीन करन तीन योग से यावत् एकांत बाल हो ॥ ९ ॥ इस तरह अन्यतिर्थिकों का प्रतिघात करके भगवान गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पासे आये

जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ॥ १० ॥ गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी सुट्ठुणं तुम्हं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, अत्थिणं गोयमा ! ममं बहवे अंतेवासी समणा णिग्गंथा छउमत्था जेणं णो पभू एयं वागरणं वागरेत्तए जहाणं तुमं, तं सुट्ठुणं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी ॥ ११ ॥ तएणं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तसमाणे हट्ठ तुट्ठ समणं भगवं

और वंदना नमस्कार कर नम्नासन से यावत् पर्युपासना करने लगे. ॥ १० ॥ श्रमण भगवंत महावीरने गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थों को ऐसा कहा अहो गौतम ! तुमने अन्यतिर्थिकों को जो ऐसा उत्तरदिया सो अच्छा किया श्रेष्ठ किया. अहो गौतम ! मेरे बहुत छद्मस्थ श्रमण निर्ग्रन्थ हैं कि जो तेरे जैसे उत्तर देने में समर्थ नहीं हैं. इस से तुमने अन्यतीर्थिको जो उत्तरदिया सो अच्छा किया ॥ ११ ॥ जब श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ऐसा बोले तब भगवान गौतम हृष्ट तुष्ट हुवे और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना

महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी-छउमत्थेणं भंते ! मणूसे परमाणुपोग्गलं किं जाणइ पासइ उदाहु नजाणइ नपासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए जाणइ पासइ, अत्थेगइए णजाणइ णपासइ ॥ १२ ॥ छउमत्थेणं भंते ! दुपदेसियं खंधं किं जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ एवं जाव असंखेज पएसियं ॥ छउमत्थेणं भंते ! मणुस्से अणतपएसियं खंधं किं पुच्छा ? गोयमा ! अत्थेगइए जाणइ पासइ, अत्थेगइए जाणइ णपासइ, अत्थेगइए णजाणइ पासइ, अत्थेगइए णजाणइ णपासइ ॥ १३ ॥ आहोहिएणं मणुस्से परमाणु जहा छउमत्थे, एवं आहोहिएवि जाव अणंत

नमस्कार कर ऐसा बोले अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या परमाणु पुद्गल जानते देखते हैं ? अथवा जानते नहीं देखते नहीं हैं ? अहो गौतम ! कितनेक जानते हैं देखते हैं और कितनेक नहीं जानते हैं नहीं देखते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! क्या छद्मस्थ द्विप्रदेशिक स्कंध जाने देखे ? अहो गौतम ! वैसे ही जानना. ऐसे ही असंख्यात प्रदेशी स्कंध का कहना. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या अनंत प्रदेशी स्कंध जाने देखे ? अहो गौतम ! कितनेक जाने देखे और कितनेक जाने परंतु देखे नहीं, कितनेक जाने नहीं परंतु देखे, कितनेक जाने नहीं व देखे नहीं ऐसे चार भांगे होवे. ॥ १३ ॥ अल्प अवधि ज्ञानी, मनुष्य क्या
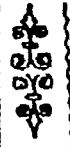
पदेसियं ॥ १४ ॥ परमाहोहिएणं भंते ! मणूसे परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणइ तं समयं पासइ, जं समयं पासइ तं समयं जाणइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ परमाहोहिएणं मणूसे परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणइ णो तं समयं पासइ, जं समयं पासइ णो तं समयं जाणइ ? गोयमा ! सागारेसे णाणे भवइ, अणागारेसे दंसणे भवइ से तेणट्ठेणं जाव णो तं समयं जाणइ, एवं जाव अणंत पएसियं ॥ १५ ॥ केवलीणं भंते ! मणूसे जहा परमाहोहिए तहा केवलीवि, जाव अणंतपएसियं ॥ सेवं भते भंतेत्ति ॥ अट्ठारसम्मस्स अट्ठमो उद्देसो ॥ १८ ॥ ८ ॥

परमाणु पुद्गल जाने देखे? अहो गौतम! जैसे छद्मस्थका कहा वैसे ही अनंत प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना ॥१४॥ अहो भगवन् ! परम अवधिज्ञान वाला मनुष्य परमाणु पुद्गल को जिस समय जानते हैं उस ही समय क्या देखते हैं, जिस समय देखते हैं उस ही समय क्या जानते हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन्! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है? अहो गौतम! ज्ञान साकार है और दर्शन अनाकार है इस से जिस समय में जाने उस समय में देखे नहीं और जिस समय में देखे उस समय में जाने नहीं ऐसे ही अनंत प्रदेशिक स्कंध तक कहना ॥१५॥ अहो भगवन्! केवली मनुष्य वगैरह जैसे परम अवधिज्ञानीका कहा वैसे ही केवली का कहना यावत् अनंत प्रदेशिक. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं यह अठारहवा शतकका आठवा उद्देशा संपूर्ण ॥१८॥८॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-अत्थिणं भंते ! भवियदव्व णेरइया ? भविय दव्वणेरइया-
हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ भविय दव्वणेरइया ? भविय दव्व-
णेरइया गोयमा ! जे भविए पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएवा मणुस्सेवा णेरइएसु
उववजित्तए से तेणट्ठेणं ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ अत्थिणं भंते ! भविय दव्व
पुढवीकाइया ? भवियदव्व पुढवी काइया ! हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ?
गोयमा ! जे भविए तिरिक्ख जोणिएवा मणुस्सेवा देवेवा पुढवीकाइएसु उववजि-
त्तए सेतेणट्ठेणं ॥ आउकायवणस्सइकाइयाणं एवंचेव, तेऊवाऊबेइंदियतेइंदिय

थे

आठवे उद्देशे के अंत में केवली का कथन किया वे द्रव्यसिद्ध होने से आगे भविद्रव्य का अधिकार कहते हैं. राजगृह नगर के गुण शील उद्यान में यावत् ऐसा बोले कि अहो भगवान्! क्या भविद्रव्य नारकी हैं? हां गौतम! भविद्रव्य नारकी हैं. अहो भगवन्! किस कारन से भविद्रव्य नारकी हैं? अहो गौतम! जो पंचेन्द्रिय तिर्यंच व मनुष्य में नरक आयुष्य बांधकर बैठे हैं. और नरक में उत्पन्न होने योग्य हैं वे भविद्रव्य नारकी कहाते हैं. ऐसे ही स्थनित कुमारतक कहना. अहो भगवन्! भविद्रव्य पृथ्वी काया क्या है? हां गौतम! भविद्रव्य पृथ्वी काया है. अहो भगवन्! किस कारन से भविद्रव्य पृथ्वी काया हैं? अहो

चउरिंदियाणय जे भविए तिरिक्खजोणिएवा मणुस्सेवा पंचिंदियतिरिक्खजोणि-याणं जे भविए णेरइएवा तिरिक्खजोणिएवा मणुस्सेवा देवेवा पचिंदियतिरिक्ख जोणिएसु उववज्जित्तए एवं मणुस्सावि । वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ १ ॥ भवियदव्वणेरइयस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुतं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ २ ॥ भवियदव्व असुरकुमारस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

गौतम ! जो तिर्यंच, मनुष्य व देव में पृथ्वीकाया का आयुष्य बांधकर रहे हैं और पृथ्वीकाया में उत्पन्न होने योग्य हैं वे भविद्रव्य पृथ्वी काया हैं. ऐसे ही भविद्रव्य अप्काया व वनस्पति काया का जानना. तेउकाय, वायुकाय, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय में उत्पन्न होने वाले तिर्यंच व मनुष्य में से आते हैं. तिर्यंच पंचेन्द्रिय भविद्रव्य नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देव में से होते हैं. ऐसे ही मनुष्य का जानना. वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भविद्रव्य नारकी की स्थिति कितनी कही? अहो गौतम ! भविद्रव्य नारकी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड की ॥२॥ अहो भगवन् ! भविद्रव्य असुर कुमार की स्थिति कितने काल की कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंत-

तिण्णिपलिओवमाइं, एवं जाव थणियकुमारस्स ॥ ३ ॥ भवियदव्वपुढवी काइयस्सणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ॥ एवं आउकाइयस्सवि तेऊवाऊ जहा णेरइयस्स ॥ वणस्सइ काइयस्स जहा पुढवीकाइयस्स ॥ बेइंदियतेइंदियचउरिंदियस्स जहा णेरइयस्स ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं ॥ एवं मणुस्सावि ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियस्स जहा असुरकुमारस्स ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स सयस्सय नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ ९ ॥

मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की. ऐसे ही स्तनित कुमार का जानना. ॥ ३ ॥ भविद्रव्य पृथ्वी काया की जघन्य अंत मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक दो सागरोपम की, ऐसे ही अप्काया व वनस्पतिकाय के भविद्रव्य की जानना. तेउवायु की नारकी जैसे कहना. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का नारकी जैसे कहना. पंचेंद्रिय तिर्यंचकी जघन्य अंत मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम. ऐसे ही मनुष्य की. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक की असुरकुमार जैसे कहना. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं. यह अठारहवा शतक का नववा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १८ ॥ ९ ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी अणगारेणं भंते ! भावियप्पा असिधारंवा खुरधारंवा ओगाहेज्जा ? हंता ओगाहेज्जा ॥ सेणं तत्थ छिज्जेज्जवा भिज्जेज्जवा ? णो इणट्ठे समट्ठे णो खलु तत्थ सत्थं कमइ, एवं जहा पंचमसए परमाणु पोग्गले वत्तव्वया जाव अणगारेणं भंते ! भावियप्पा उदावत्तंवा जाव णो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥ १ ॥ परमाणुपोग्गलेणं भंते! वाउयाएणं फुडे वाउयाएवा परमाणुपोग्गलेणं फुडे? गोयमा! परमाणुपोग्गले वाउयाएणं फुडे णो वाउयाए पोग्गलेणं फुडे । दुपदेसिएणं भंते !

नववे उद्देशे में भवि द्रव्य का कथन किया. अब भविद्रव्य अनगार का कथन करते हैं. राजगृह नगर में यावत् गौतम स्वामी ऐसा बोले अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार असिधारा अथवा क्षुरधारा को क्या अवगाहे अर्थात् उस पर क्या चल सके ? हां गौतम ! खड्गधारा या क्षुरधारा पर चल सके. वे क्या वहां छेदावे भेदावे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. उन को शस्त्र नहीं अतिक्रमता है क्यों कि वैक्रेयलब्धि से चलते हैं. ऐसे ही सब पांचवे शतक में परमाणु पुद्गल की वक्तव्यता कही वैसे ही यहां कहना यावत् भावितात्मा अनगार पानी से आवर्ते यावत् वहां भी शस्त्र अतिक्रमे नहीं. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल क्या वायुकाया से स्पर्शे अथवा वायुकाया परमाणु पुद्गल से स्पर्शे ? अहो

खंधे वाउयाएणं एवं चेव एवं जाव असंखेज्ज पएसिए ॥ अणंत पएसिएणं भंते ! खंधे वाउयाए पुच्छा ? गोयमा ! अणंत पएसिएखंधे वाउयाएणं फुडे वाउयाए अणंत पएसिएणं खंधेणं सिय फुडे सिय णो फुडे ॥ २ ॥ वत्थीणं भंते ! वाउयाएणं फुडे वाउयाए वत्थिणा फुडे ? गोयमा ! वत्थी वाउयाएणं फुडे णो वाउयाए वत्थिणा फुडे ॥ १३ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे दव्वाइं वण्णओ काल णीललोहिय हालिद्द सुक्किलाइं गधओ सुब्भिगंधाइ दुब्भिगंधाइं, रसओ तित्त कडुय

गौतम ! परमाणु पुद्गल वायुकाया को स्पर्शे अर्थात् वायुकाया में परमाणु पुद्गल का समावेश होवे परंतु वायुकाया परमाणु को स्पर्शे नहीं अर्थात् वायुकाया परमाणु में समावेश होवे नहीं. ऐसे ही द्विप्रदेशिक स्कंध यावत् असंख्यात प्रदेशिक स्कंध का जानना. अनंत प्रदेशिक स्कंध की पृच्छा-? अनंत प्रदेशिक स्कंध वायुकाया से स्पर्शाया हुवा है और वायुकाया अनंत प्रदेशिक स्कंध से क्वचित् स्पर्शी हुई है क्वचित् नहीं स्पर्शी हुई है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! मशक को वायुकाया स्पर्शी हुई है अथवा वायुकायको मशक स्पर्शी हुई है ? अहो गौतम ! वायुकाय से मशक स्पर्शी हुई है परंतु वायुकाय मशक से नहीं स्पर्शा हुवा है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की नीचे वर्ण से काले, हरे, पीले, लाल,

कसायअंबिलमहुराइं, फासओ कक्खड मउय गुरुय लहुय सीय उसिण णिद्ध लुक्खाइं, अण्णमण्ण बद्धाइं अण्णमण्ण पुट्ठाइं जाव अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ अत्थिणं भंते ! सोहम्मस्स कप्पस्स अहे, एवं चेव ॥ एवं जाव ईसिप्पभाराए पुढवीए ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥४॥ तएणं समणे भगवं महावीरे बाहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ * ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे णयरे होत्था, वण्णओ, तत्थणं वाणियगामे णयरे सोमिले- णामं माहणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए, रिउव्वेय जाव सुपरिणिट्ठिए पचण्हं

श्वेत, गंध से सुरभिगंधवाले व दुरभिगंधवाले रस से तिक्त कटुक, कषायले, अम्बट व मधुर रसवाले; स्पर्श से कर्कश, मृदु, गुरु लघु, शीत, ऊष्ण, स्निग्ध व रूक्ष स्पर्शवाले द्रव्य परस्पर बंधे हुवे, परस्पर स्पर्शे हुवे यावत् परस्पर मीले हुवे क्या रहते हैं ? हां गोतम! रहते हैं. ऐसे ही नीचे की सातवी पृथ्वी तक कहना. सौधर्म देवलोक यावत् ईषत्पाग्भार पृथ्वी का भी ऐसे ही जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यों कहकर विचरने लगे ॥ ४ ॥ फीर श्रमण भगवंत महावीर बाहिर विचरने लगे. उस काल उस समय में वाणिज्य ग्राम नाम का नगर था. उस वाणिज्य ग्राम नगर में सोमिल ब्राह्मण रहता था. वह ऋद्धिवंत यावत्

खंडियसयाणं सयस्स कुटुंबस्स आहेवच्चं जाव विहरइ ॥ ५ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ ६ ॥ तएणं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था, एवं खलु समणे णायपुत्ते पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं जाव इह मागए जाव दूइपलासए चेइए अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं गच्छामिणं समणस्स णायपुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामि, इमाइं चणं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरेत्ताइं पुच्छिस्सामि, तं जइमे से इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेहिंति तोणं वंदिहामि

अपराभूत ऋगूवेद, यजुर्वेद यावत् ब्राह्मण शास्त्रों में सुपरिनिष्ठित था. वह पांच सो शिष्यों व अपने कुटुम्ब का आधिपतिपना करता हुवा विचरता था ॥ ५ ॥ तब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी यावत् पधारे यावत् परिषदा पर्युपासना करने लगी ॥ ६ ॥ जब सोमिल ब्राह्मणने यह कथा सुनी तब उस को ऐसा अध्यवसाय हुवा कि श्री श्रमण ज्ञात पुत्र ग्रामानुग्राम चलते सुख पूर्वक विचरते यावत् यहां आये हैं यावत् दूतिपलास उद्यान में यथाप्रतिरूप अवग्रह याचकर विचरते हैं, इस से मैं उन की पास जाऊं और इन अर्थों यावत् प्रश्नोंको पूछूं, यदि मेरे प्रश्नोंके उत्तर देंगे तो मैं उन को वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करूंगा यदि

णमंसिहामि जाव पज्जुवासामि; अहमे से इमाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं णोवागरिहिति तोणं एएहिं चेव अट्ठेहिय जाव वागरणेहिय णिप्पट्ठपसिणवागरणं करेस्सामि त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ, संपेहेइत्ता ण्हाए जाव सरीरे साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता पायविहारचारेणं एगेणं खंडियसएणं सद्धिं संपरिवुडे, वाणियगामं णयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता जेणेव दूइपलासए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-जत्ता ते भंते!

मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं देंगे तो मैं उन को प्रश्न के उत्तर में अशक्त करूंगा ऐसा विचार करके स्नान किया यावत् अलंकृत शरीरवाला हुवा और अपने गृह से नीकलकर पांव से चलते हुए एक सो शिष्यों के परिवार से वाणिज्य ग्राम नगर की मध्य बीच में होते हुवे दूतिपलाश उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आया. और पास खडा रहकर ऐसा बोला कि अहो भगवन्! क्या तुम को १ यात्रा है २ यज्ञ है ३ अव्याबाध है और फासुक विहार है? भगवन्तने उत्तर दिया कि अहो सोमिल! हम को यात्रा है, यज्ञ भी है, अव्याबाध भी है और फासुक विहार भी है ॥७॥ तब सोमिलने पुनः प्रश्न किया

जवणिज्जं अव्वाबाहं फासुयविहारं? सोमिला! जत्ताविमे. जवणिज्जंपि मे, अव्वाबाहंपि मे, फासुयविहारंपि मे ॥ ७ ॥ किं ते भंते! जत्ता? सोमिला! जं मे तव णियम-संजय-सज्झाय-ज्झाण-आवस्सगमादिएसु जोगेसु जयणा सेतं जत्ता ॥ किं ते भंते! जवणिज्जं? सोमिला! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-इंदिय जवणिज्जेय णोइंदिय जवणिज्जेय ॥ से किंतं इंदियजवणिज्जे? इंदिय जवणिज्जे-जेइमे सोइंदिय चक्खि-दिय घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं-णिरूवहयाइं वासेवट्टंति, सेतं इंदियजवणिज्जं॥ सेकिंतं णोइंदिय जवणिज्जे? णोइंदिय जवणिज्जे जं मे कोह-माण-माया-लोभा-वोच्छिण्णा

कि अहो भगवन्! तुम को यात्रा कौनसी है? अहो सोमिल! बारह भेद से तप, तद्विषय अभिग्रह सो नियम, सतरह भेद से संयम, स्वाध्याय, वैय्यावृत्यादि, छ आवश्यक, सामायिकादिक योग में प्रवृत्ति करना सो यात्रा है. अहो भगवन्! तुमारे मत में यापनीय (यज्ञ) किसे कहते हैं? अहो सोमिल! यापनीय के दो भेद कहे हैं इन्द्रिय यापनीय व नोइन्द्रिय [मन] यापनीय. इन्द्रिय यापनीय किसे कहते हैं? श्रोत्रे-न्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रिय में उपघात रहित अपने वश में रखे उसे इन्द्रिय यापनीय कहते हैं. नोइन्द्रिय यापनीय उसे कहते हैं कि जो क्रोध, मान, माया व लोभ इन का मूल

णो उदीरेंति सेतं णो इंदिय जवणिज्जे। सेतं जवणिज्जे॥ से किं ते भंते! अव्वाबाहं? सोमिला! जं मे वातिय पितिय संभिय सण्णिवाइय विविहरोगायंका सरीरगया दोसा उवसंता णो उदीरेंति, सेतं अव्वाबाहं॥ किंते भंते! फासुयविहारं? सोमिला! जं णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सभासु इत्थीपसुपंडगवज्जियासु वसहीसु फासुएसणिज्जं पीढ फलग सेज्जा संथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, सेतं फासुयविहारं ॥ ८ ॥ सरिसवा ते भंते! किं भक्खेया अभक्खेया? सोमिला! सरिसवा भक्खेयावि अभक्खेयावि॥

सहित नाश करना. पुनः उदय भाव को प्राप्त न होना वह नोइन्द्रिय यापनीय कहा है. अहो भगवन्! अव्याबाध किसे कहते हैं? अहो सोमिल! वात, पीत, कफ, सन्निपात वगैरह शरीर में विविध रोगों रहे हुवे है उन का उपशांत होना और उदीरणा नहीं होना सो अव्याबाध. अहो भगवन्! फ्रासुकविहार किसे कहते हैं? अहो सोमिल! जो आराम उद्यान देवालय, सभा, पर्वत, वगैरह में स्त्री पशू पंडग रहित वसति में फ्रासुक एषणिक पीठ, बाजोट, पटिया, शैय्या व संथारा प्राप्त कर के विचरते हैं वह फ्रासुक विहार है. ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! आप के मत में सरिसव भक्ष्य है या अभक्ष्य है? अहो सोमिल! हमारे मत में सरिसव भक्ष्य भी है और अभक्ष्य

सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सरिसवा भक्खेयावि अभक्खेयावि ? से णूणं ते सोमिला ! बंभण्णएसु दुविहा सरिसवा पण्णत्ता, तंजहा मित्तसरिसवाय, धण्णसारिसवाय, तत्थणं जेते मित्त सरिसवा ते तिविहा पण्णत्ता तंजहा—सहजायया सहवड्डिया, सहपंसुकीलिया, तेणं समणाणं णिग्गथाणं अभक्खेया ॥ तत्थणं जे ते धण्णसरिसवा ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-सत्थपरिणयाय, असत्थपरिणयाय; तत्थणं जेते असत्थपरिणया तेणं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थणं जे ते सत्थपरि· णया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-एसाणिज्जाय अणेसाणिज्जाय ॥ तत्थणं जे ते अणे

भी है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि सारिसव भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी है ? अहो सोमिल ! ब्राह्मणों के शास्त्रों में सारिसव के दो भेद कहे हैं. १ मित्र सारिसव और २ धान्य सारिसव. उन में मित्र सरिसव के तीन भेद किये हैं१ साथमें जन्मे हुवे, २साथ ही वृद्धि पाये हुवे, और ३बाल्यावस्था में साथ ही क्रीडा किये हुए. यह मित्र सारिसव श्रमण निर्ग्रन्थोंको अभक्ष्य है. अब जो धान्य सारिसव है उस के दो भेद कहे हैं. शस्त्र परिणत व शस्त्र परिणत नहीं. उस में जो शस्त्र परिणत नहीं है वह श्रमण निर्ग्रंथों को अभक्ष्य है, और जो शस्त्र परिणत है उस के दो भेद एषाणिक व अनेषणिक. उस में से अनेषणिक श्रमण

साणिज्जा तेणं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया ॥ तत्थणं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-जातियाय अजातियाय ॥ तत्थणं जे ते अजाइया तेणं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया ॥ तत्थणं जे ते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-लद्धाय. अलद्धाय. तत्थणं जे ते अलद्धा तेणं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थणं जे. ते लद्धा तेणं समणाणं णिग्गंथाणं भक्खेया, से तेणट्ठेणं सोमिला ! एवं वुच्चइ जाव अभक्खेयावि ॥ ९ ॥ मासा ते भंते ! किं भक्खेया अभक्खेया ? सोमिला ! मासा मे भक्खेयावि अभक्खेयावि, से केणट्ठेणं भंते ! जाव अभक्खेयावि ? से

निर्ग्रन्थों को अभक्ष्य है और एपणिक के दो भेद याचकरलेना व विना याचेलेना. उस में विना याचा हुवा श्रमण निर्गन्थों को अभक्ष्य है और याचकर लेना जिस के दो भेद प्राप्त और अप्राप्त. उस में जो प्राप्त नहीं हुआ है वह श्रमण निर्ग्रन्थों को अभक्ष्य है और जो प्राप्त हुआ है वह श्रमण निर्ग्रन्थों को भक्ष्य है. अहो सोमिल ! इस कारन से ऐसा कहा गया है कि सारिसव भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी है. ॥ ९ ॥ पुनः सोमिलने प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! आप के मत में क्या मास भक्ष्य है या अभक्ष्य है ? अहो सोमिल ! हमारे मत में मास भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी है. अहो भगवन् !

णणं तें सोमिला ! बंभण्णएसु दुविहा मासा पण्णत्ता, तंजहा-दव्वमासाय काल-मासाय ॥ तत्थणं जे ते कालमासा तेणं सावणादीया आसाढ पज्जवसाणा दुवालस पण्णत्ता तंजहा-सावणे, भद्दवए, आसोए, कत्तिए, मग्गसिरे, पोसे, माहे, फागुणे, चेते, वइसाहे, जेट्ठामूले, आसाढे, तेणं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थणं जे ते दव्वमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा- अत्थमासाय धण्णमासाय ॥ तत्थणं जे ते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-सुवण्णमासाय, रुप्पमासाय, तेणं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया; तत्थणं जे ते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता; तंजहा सत्थ-

किस कारन से भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी है ? अहो सोमिल ! ब्राह्मण शास्त्र से मास के दो भेद किये हैं ! १ द्रव्य मास और २ काल मास. उन में जो काल मास है वे श्रावण से आषाढ पर्यंत बारह हैं. जिन के नाम. १ श्रावण २ भाद्रपद ३ आसोज ४ कार्तिक ५ मृगशर ६ पोष ७ माघ ८ फाल्गुन ९ चैत्र १० वैशाख ११ ज्येष्ट मूल और १२ आषाढ. उक्त बारह मास श्रमण निर्ग्रंथों को अभक्ष्य हैं अब जो द्रव्य मास हैं उस के दो भेद कहे हैं. १ अर्थ (धन) मास और २ धान्य मास. अर्थ मास के दो भेद सोने का मासा और रुपे का मासा- ये भी श्रमण निर्ग्रन्थों को अभक्ष्य हैं. अब धान्य मास जो है उन

परिणयाय असत्थपरिणयाय, एवं जहा धण्णसरिसवा जाव से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेयावि ॥ १० ॥ कुलत्था ते भंते ! भक्खेया अभक्खेया ? सोमिला ! कुलत्था मे भक्खेयावि अभक्खेयावि ॥ सेकेणट्ठेणं जाव अभक्खेयावि? सेणूणं ते सोमिला ! बंभण्णएसु दुविहे कुलत्था पण्णत्ता, तंजहा-इत्थिकुलत्थाय, धण्णकुलत्थाय ॥ तत्थणं जे ते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता तंजहा कुलकण्णियाइवा, कुलमाउयाइवा, कुलधूयाइवा ॥ ते समणाणं णिग्गथाणं अभक्खेया ॥ तत्थणं जे ते धण्णकुलत्था एवं जहा धण्ण सरिसवा । से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेयावि ॥ १० ॥ एगं भवं, दुवेभवं अक्खए भवं,

के दो भेद शस्त्र परिणत व शस्त्र परिणत रहित वगैरे जैसे सरिसव का कहा वैसे ही जानना. यावत् इसी से यावत् अभक्ष्य है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कुलत्थ क्या भक्ष्य है या अभक्ष्य है ? अहो सोमिल ! कुलत्थ भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी है. अहो भगवन् ! किस कारन से कुलत्थ भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी है ? अहो सोमिल ! ब्राह्मण शास्त्र से कुलत्थ के दो भेद किये हैं. १ स्त्री कुलत्थ व २ धान्य कुलत्थ; उन में स्त्री कुलत्थ के तीन भेद कहे हैं १ कुल की कन्या २ कुल की माता ३ कुल की वधू. ये श्रमण निर्ग्रन्थों को अभक्ष्य हैं. और जो धान्य कुलत्थ है उस का धान्य सरिसव जैसे कहना, इसलिये ऐसा कहा गया

अव्वएभवं, अवट्ठिएभवं, अणेगभूये भाव भविए भवं ? सोमिला ! एगेवि अहं जाव अणेग भूय भाव भविएवि अहं ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव भविएवि अहं ? सोमिला ! दव्वट्ठयाए एगे अहं, णाणट्ठयाए दंसणट्ठयाए दुवेवि अहं, पदेसट्ठयाए अक्खएवि अहं, अवट्ठिएवि अहं, उवयोगट्ठयाए अणेग भूय भाव भविएवि अहं, से तेणट्ठेणं जाव भविएवि अहं ॥ ११ ॥ एत्थणं से सोमिले माहणे

है यावत् अभक्ष्य है. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या तुम एक हो, दोहो, अक्षयहो, अव्ययहो, अवस्थितहो या अनेक भूत भाव से भावितहो ? अहो सोमिल ! मैं एक भी हूं यावत् अनेक भूत भाव से भावित हूं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि तुम एक हो यावत् अनेक भाव से भावित हो ? अहो सोमिल ! द्रव्य से मैं एक हूं. ज्ञान व दर्शन से दो हूं, प्रदेश से मैं अक्षय हूं अवस्थित हूं और उपयोग से अनेक भूत भावित हूं. अहो सोमिल ! इस लिये ऐसा कहा गया है यावत् अनेक भावों से भावित हूं ॥११॥ यहां सोमिल ब्राह्मण को सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति हुई-प्रतिबोध पाया ॥१२॥ फीर स्कंधक सन्यासी जैसे श्रमण भगवंत महावीर को कहा जैसे तुम कहते हो वैसे ही है ऐसा कहकर आपकी पास बहुत ईश्वर वगैरह जैसा रायप्रश्नीय में चित्रने कहा यावत् बारह प्रकार के श्रावक व्रत अंगीकार कर श्रमण भगवंत

संबुद्धे ॥ १२ ॥ तएणं से समणे भगवं महावीरे जहा खंदओ जाव से जहेयं तुब्भे वदह जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतियं बहवे ईसर एवं जहा रायप्पसेणइज्जे चित्तो जाव दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता जाव पडिगए ॥ १३ ॥ तएणं से सोमिले माहणे समणोवासए जाए अभिगय जाव विहरइ ॥ १४ ॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी-पभूणं भंते ! सोमिले माहणे देवाणुप्पियाणं अंते मुंडे भवित्ता जहेव संखे तहेव णिरवसेसं जाव अंतं काहिति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति, जाव विहरइ ॥ अट्ठारसमस्स सयस्सय दसमो उद्देसो ॥ १८ ॥ १० ॥ सम्मत्तं अट्ठारसमं सयं ॥ १८ ॥ ० ०

महावीर को वंदना नमस्कार कर यावत् पीछा गया ॥ १२ ॥ फीर वह सोमिल ब्राह्मण जीवाजीव का स्वरूप जानता हुवा श्रमणोपासक बनकर यावत् विचरने लगा ॥ १३ ॥ अब भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! क्या सोमिल ब्राह्मण आप की पास मुंडित होकर यावत् शंख जैसे सब निरवशेष कहना यावत् अंत करेंगे. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यों कहकर गौतम स्वामी विचरने लगे. यह अठारहवा शतक का दशवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १८ ॥ १० ॥ यह अठारहवा शतक समाप्त हुवा ॥ १८ ॥ ० ०

॥ एकोनविंश शतकम् ॥

लेस्साय गब्भ पुढवी, महासवा चरम दीव भवणाय ॥ णिव्वत्ति करण वनचर सुराय एगूणवीसइमे ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-कइणं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ गोयमा ! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ, तंजहा एवं जहा पण्णवणाए चउत्थो लेस्सुद्देसओ भाणियव्वो णिरवसेसो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगूणवीसइमस्सय पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १९ ॥ १ ॥ (०) (०) (०)

अठारहवे शतक के अंत में प्रश्नोत्तर कहे, वे लेश्या की विशुद्धि से होते हैं; इसलिये उन्नीसवे शतक में प्रथम लेश्या का स्वरूप कहते हैं. इस शतक में दश उद्देशे कहे हैं जिन के नाम. १. लेश्या का, २ गर्भ का ३ पृथ्वी का ४ महा आश्रव व महा क्रिया का ५ चरम का ६ द्विप का ७ भवन का ८ निर्वृत्ति का ९ करण का और १० वनचरसुर का ॥ * ॥ राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले अहो भगवन् ! लेश्याओं कितनी कही ? अहो गौतम ! छ लेश्याओं कही. वगैरह जैसे पन्नवणा का चतुर्थ लेश्या उद्देशा कहना. तैसे यहां भी कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह उन्नीसवे शतक का प्रथम उद्देशा समाप्त हुवा ॥ १९ ॥ १ ॥ * *

कइणं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ? एवं जहा पण्णवणाए गब्भ मुद्देस्सो चेव णिरव-
सेसो भाणियव्वो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगूणवीस इमस्सय वितिओ उद्देसो ॥ १९॥२॥
रायगिहे जाव एवं वयासी-सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पुढवीकाइया एगयओ
साधारणसरीरं बंधंति, एग २ तओ पच्छा आहारेंतिवा परिणामेंतिवा. सरीरंवा
बंधंतिवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ पुढवीकाइयाणं पत्तेयाहारा पत्तेय परिणामा पत्तेयं

प्रथम उद्देशे में लेश्या का कथन किया. सलेशी गर्भ में उत्पन्न होते हैं. इसलिये गर्भ का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! लेश्याओं कितनी कही ? अहो गौतम ! लेश्याओं छ कही वगैरह जैसे पन्नवणा शतक में गर्भ उद्देशा कहा वह यहां निरवशेष कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह उन्नीसवा शतक का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ २ ॥

दूसरे उद्देशेमें गर्भकी लेश्या का कथन किया है. तीसरे उद्देशेमें उत्पन्न होनेका कथन करते हैं. इस उद्देशे की संग्रह गाथा से द्वार के नाम कहते हैं. १ सिय २ लेस्सा ३ दृष्टि ४ ज्ञान ५ जोग ६ उपयोग ७ आहार ८ प्राणातिपात ९ उत्पात १० स्थिति ११ समुद्घात १२ उव्वाति. इन बारह द्वार का आगे विस्तार से वर्णन करते हैं ॥ राजगृह नगर में यावत् ऐसे बोले अहो भगवन् ! चार अथवा पांच पृथ्वीकायिक एकत्रित होकर बहुत जीवों का साधारण शरीर बांधे फीर क्या वे अहार करे, परिणमावे अथवा शरीर बांधे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है, क्यों कि पृथ्वी

सरीरं बंधंति २ त्ता, तओ पच्छा आहारेंतिवा परिणामेंतिवा सरीरंवा बंधंति ॥ १ ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कइलेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तंजहा-कण्ह णील काउ तेउ॥२॥तेणं भंते! जीवा किं सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी ? गोयमा! मिच्छादिट्ठी णो सम्मदिट्ठी णो सम्मामिच्छदिट्ठी ॥ ३ ॥ तेणं भंते ! जीवा किं णाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णो णाणी अण्णाणी, णियमा दुअण्णाणी तंजहा-मइअण्णाणी सुअण्णाणीय ॥ ४ ॥ तेणं भंते ! जीवा किं मण-

कायिक प्रत्येक अहारवाले व प्रत्येक परिणामवाले हैं इस से प्रत्येक शरीर बांधते हैं. प्रत्येक शरीर बांध-कर आहार करते हैं परिणमाते हैं और शरीर बांधते हैं ॥ १ ॥ अब दूसरा लेश्या द्वार कहते हैं:-अहो भगवन् ! उन जीवोंको कितनी लेश्याओं कही ? अहो गौतम! चार लेश्याओं कहीं. तद्यथा १ कृष्ण २ नील ३ कापोत और ४ तेजो ॥ २ ॥ तीसरा दृष्टिद्वार कहते हैं:-अहो भगवन् ! वे जीवों क्या समदृष्टिवाले हैं, मिथ्यादृष्टिवाले हैं अथवा सममिथ्यादृष्टिवाले हैं ? अहो गौतम ! मिथ्यादृष्टिवाले हैं परंतु समदृष्टि व सममिथ्यादृष्टिवाले नहीं हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं. अहो गौतम ! ज्ञानी नहीं हैं परंतु अज्ञानी हैं. और मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान ऐसे दो अज्ञान पाते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् !

जोगी, वइजोगी, कायजोगी ? गोयमा ! णो मणजोगी, णो वइजोगी, कायजोगी ॥ ५ ॥ तेणं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा सागारोव- उत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ ६ ॥ तेणं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओणं अणंत पदेसियाइं दव्वाइं एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहा- रुद्देसए जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति ॥ तेणं भंते ! जीवा जमाहारेंति तंचिज्जं-

क्या वे जीवों मनयोगी. वचन योगी व काया योगी हैं ? अहो गौतम ! मनयोगी नहीं है वचन योगी नहीं है परंतु काया योगी हैं ॥५॥ अहो भगवन् ! क्या वे साकारोपयोगयुक्त हैं या अनाकारोपयोगयुक्त हैं? अहो गौतम ! साकारोपयोगयुक्त व अनाकारोपयोगयुक्त हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वे जीव किस का आहार करते हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य से अनंत प्रदेशिक द्रव्य के स्कन्ध का ऐसे ही जैसे पन्नवणा के पहिले आहार उद्देशे में कहा वैसे ही यहां जानना. यावत् सब प्रकार से आहार करे. अहो भगवन् ! वे जीवों जिस का आहार करते हैं वह इन्द्रिय शरीरपने परिणमता है और जिस का आहार नहीं करते हैं वह इन्द्रिय शरीरपने नहीं परिणमता है और जो परिणमे हुवे पुद्गलों हैं वे क्या मल की तरह विनाश पाते हैं ? हां गौतम ! वे जीवों जिस का आहार करते हैं. वह इन्द्रिय शरीरपने परिणमता है, जिस का आहार नहीं

ति, जं णो आहारेंति तं णो चिज्जंति चिण्णेवासे उद्दाइ वलिसप्पतिवा? हंता गोयमा! तेणं जीवा जमाहारेंति जं नो जाव बलिसप्पंतिवा॥ तेसिणं भंते जीवाणं एवं सण्णा-तिवा पण्णातिवा मणोइवा, वईतिवा, अम्हेणं आहारमाहारेंति? णो इणट्ठे समट्ठे, आहारेंति पुणते॥ तेसिणं भंते! जीवाणं एवं सण्णातिवा जाव वईतिवा अम्हेणं इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो? णो इणट्ठे समट्ठे, पडिसंवेदेंति पुण ते ॥ ७ ॥ तेणं भंते! जीवा किं पाणातिवाए उवक्खाइज्जंति, मुसावाए, अदिण्णादाणे जाव मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति? गोयमा! पणाइवाएवि उवक्खाइज्जंति जाव मिच्छा

करते हैं वह शरीर इन्द्रियादिपने नहीं परिणमता है और परिणमा हुवा मल की तरह विनाशको प्राप्त होता है. अहो भगवन्! उन जीवों को ऐसी संज्ञा, प्रज्ञा, मन व वचन क्या है कि जिससे हम आहार करते हैं. ऐसा जाने? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है. मात्र वे आहार करते हैं. अहो भगवन्! उन जीवों को क्या ऐसी संज्ञा, प्रज्ञा, मन व वचन हैं कि जिस से वे जान सके कि हम इष्ट अनिष्ट स्पर्श वेदते हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है. वे मात्र वेदते हैं ॥ ७ ॥ अब आठवा प्राणातिपातद्वार कहते हैं:—अहो भगवन्! उन जीवों को प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान यावत् मिथ्या दर्शन शल्य

दंसणसल्लेत्ति उवक्खाइज्जंति, जेसिं पियणं जीवाणं ते जीवा एवं माहिज्जंति तेसिं पियणं जीवाणं णो विण्णाएणाणत्ते ॥ ८ ॥ तेणं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? किं णेरइएहिंतो उववज्जंति एवं जहा वक्कंतीए पुढवी काइयाणं उववाओ तहा भाणियव्वो ॥ ९ ॥ तेसिं पियणं भंते! जीवाणं केवइयं कालं, ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वास सहस्साइं ॥ १० ॥ तेसिंणं भंते ! जीवाणं कइ समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ

का क्या पाप लगता है ? अहो गौतम ! वे प्राणातिपात करे, मृषावाद बोले, अदत्तादान ग्रहण करे यावत् मिथ्या दर्शन भी करे. जो जीवों पृथ्वी कायिक संबंधी घात करे वे जीवो भी वैसे ही कहाये जाते हैं. मात्र उन को ऐसा ज्ञान नहीं है कि इसने हम को मारा. यह हमारा घातक है॥८॥अब उत्पत्तिद्वार कहते हैं:—अहो भगवन् ! वे जीवों कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या नरक से मरकर उत्पन्न होते हैं. तिर्यंच से, मनुष्य से या देव से ? अहो गौतम ! जैसे पन्नवणा के छठे पद में पृथ्वी काया की उत्पत्ति की वक्तव्यता कही. वैसे ही यहां जानना ॥९॥ अब दशवा स्थितिद्वार. अहो भगवन् ! उन जीवों की कितनी स्थिति कही? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की ॥१०॥ अग्यारहवा समुद्घात द्वार—अहो भगवन्! उन जीवों को कितनी समुद्घात कही ? अहो गौतम ! वेदनीय, कषाय व मारणांतिक ऐसी तीन समुद्घात कही

समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेदणा समुग्घाए, कसाय समुग्घाए, मारणंतिय समुग्घाए ॥ तेणं भंते ! जीवा मारणंतिय समुग्घाएणं किं समोहया मरंति असमोहया मरंति ? गोयमा ! समोहयावि मरंति, असमोहयावि मरंति॥ ११॥तेणं भंते! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं उववज्जंति, एवं जहा उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए ॥ १२ ॥ सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच आउकाइया एगयओ साहारणं सरीरं बंधंति तओ पच्छा आहारए एवं जो पुढवी काइयाणं गमो सोचेव भाणियव्वो जाव उव्वट्टंति, णवरं ठिई सत्त-वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सेसं तंचेव॥ १३॥सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच तेउकाइया

अहो भगवन् ! वे जीवों मरणांतिक समुद्घात से मरते हुए क्या समोहया मृत्यु से मरते हैं कि असमोहया मृत्यु से मरते हैं? अहो गौतम ! समोहया मृत्यु मरते हैं और असमोहया मृत्यु भी मरते हैं ॥ ११॥अहो भगवन् ! वे जीवों वहांसे चवकर कहां उत्पन्न होते हैं ? ऐसे ही जैसे उद्वर्तनाद्वार कहा वैसे ही यहां भी कहना ॥ १२॥ यह पृथ्वीकाया का कहा. अब अप्कायाका कहते हैं. अहो भगवन् ! क्वाचित यावत् चार पांच अप्कायिक जीवों एकत्रित होकर साधारण शरीरका क्या बंध करते हैं? पीछे क्या आहार करे? ऐसे ही जो पृथ्वीकाया की वक्तव्यता कही वह सब यहां जानना. मात्र स्थितिमें उत्कृष्ट स्थिति सात हजार वर्षकी कहना ॥ १३॥ अहो भगवन् !

एवंचेव णवरं उववाओ ठिई उव्वट्टणाय जहा पण्णवणाए सेसं तंचेव॥ १ ५॥ वाउकाइयाणं एवं चेव, णाणत्तं णवरं चत्तारि समुग्घाया॥ १ ५॥ सिय भंते! जाव चत्तारि पंच वणस्सइ काइया पुच्छा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥ अणंता वणस्सइकाइया एगयओ साहारण सरीरं बंधंति २ त्ता तओ पच्छा आहारेंतिवा परि २ सेसं जहा तेऊकाइयाणं जाव उव्वट्टंति, णवरं आहारो णियमं छद्दिसिं, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, सेसं तंचेव ॥ १६ ॥ एएसिणं भंते! पुढवीकाइयाणं आऊतेऊ वाऊ वणस्सइ काइयाणं

क्वचित यावत् चार पांच तेउकायिक ऐसे ही विशेष में उपपात, स्थिति व उद्वर्तन पन्नवणा सूत्र में से जानना. शेष पृथ्वी काया जैसे कहना,॥ १४ ॥ वायुकाया का भी तेउकाया जैसे विशेष में चार समुद्धात ॥ १५ ॥ अहो भगवन्! क्वचित् यावत् चार पांच वनस्पति कायिक जीव एक शरीर के जीव में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है. क्यों कि अनंत वनस्पति कायिक जीवों एकत्रित होकर बादर निगोद के साधारण शरीर का बंध करते हैं. सब जीव साधारण शरीरपने एकत्रित परिणमाते हैं. शेष सब अधिकार उपजने पर्यंत तेउकाया जैसे कहना. विशेषता इतनी की इन में छ दिशाओं का आहार करे. क्यों कि बादर होने से लोकान्त पर्यंत नहीं होती है. स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की जानना ॥१६॥ अब इन पृथ्वीकायिकादिक के अवगाहनादिक की अल्पाबहुत्व कहते हैं. अहो भगवन्! इन पृथ्वी

सुहुमाणं बादराणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणं जहण्णुक्कोसिया ओगाहणाए कयरे २ जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमणिगोयस्स अपजत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा, १ सुहुमवाऊकायिगस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज-गुणा २ सुहुम तेऊअपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ३, सुहुम आऊअपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४, सुहुमपुढवी अपजत्त-गस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ५, वादरवाऊकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ६, वादरतेऊ अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगा--

काया, अप्काया, तेउकाया, वायुकाया व वनस्पति काया के सूक्ष्म बादर पर्याप्त व अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना में से कौन किस से यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से छोटी अपर्याप्ता सूक्ष्म निगोदकी जघन्य अवगाहना १, इस से सूक्ष्म वायुकाय के अपर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी, २ इस से सूक्ष्म तेउकाया के अपर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी, ४ इस से सूक्ष्म अप्काय के अपर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी, ५ इस से सूक्ष्म पृथ्वी काया के अपर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी, ६ इस से बादर वायुकाय के अपर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात

हणा असंखेज्जगुणा ७, बादर आउ अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्ज गुणा ८, बादर पुढवी अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ९, पत्तेय सरीर बादर वणस्सइ काइयस्स बादर निओयस्स एएसिणं अपज्जत्तगाणं जहण्णिया ओगाहणा दोण्हवि तुल्ला असंखेज्जगुणा, १०, ११; सुहुम निओयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १२, तस्सचेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १३, तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १४, सुहुमवाउकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १५,

गुनी, ७ इससे बादर तेउकाया के अपर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी, ८ इससे बादर अप्काया के अपर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी, ९ इस से बादर पृथ्वी काया के पर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी, १०-११ इस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय व बादर निगोद इन दोनों के अपर्याप्ता की जघन्य अवगाहना परस्पर तुल्य व असंख्यात गुनी, १२ इस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी, १३ इस से उसही सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्ता की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक १४ इस से उसही सूक्ष्म निगोद के पर्याप्ता की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक १५ इस से सूक्ष्म वायु काया के पर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी, १६ इस से सूक्ष्म वायु

तस्सचेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया विसेसाहिया १६, तस्सचेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १७, एवं सुहुमतेऊकाइयस्स विसे० १८, १९, २०, एवं सुहुम आउकाइयस्सवि २१, २२, २३, एवं सुहुम पुढवी काइयस्सवि० २४, २५, २६, एवं बादर वाउकाइयस्सवि २७, २८, २९, एवं बादर तेऊकाइयस्सवि, ३०, ३१, ३२, एवं बादर आउकाइयस्सवि, ३३, ३४, ३५, एवं बादर पुढवीकाइयस्सवि, ३६, ३७, ३८, सव्वेसिं तिविहेणं गमेणं भाणियव्वं ॥ बादर

काया के अपर्याप्ता की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक, १७ इस से सूक्ष्म वायुकाया के पर्याप्ताकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक, १८ ऐसे ही सूक्ष्म तेउकाया के पर्याप्ताकी जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी, १९ सूक्ष्म तेउकाया के अपर्याप्ता की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक और २० सूक्ष्म तेउकाय के पर्याप्ता की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक २१ इस से सूक्ष्म अप्काया के पर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी २२ इस से सूक्ष्म अप्काया के अपर्याप्ता की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक, २३ इस से सूक्ष्म अप्काया के पर्याप्ता की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक, ऐसे ही २४ इस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया के पर्याप्ता की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुनी, २५ इस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया के अपर्याप्ता की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक, २६ इस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया के पर्याप्ताकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक. ऐसे ही

निओयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ३९ तस्सचेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४०, तस्सचेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया, ४१. पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४२, तस्सचेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४३, तस्सचेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया असंखेज्जगुणा ४४, ॥ १७ ॥ एयस्सणं भंते ! पुढवीकाइयस्स आउकाइयस्स तेऊ-वाऊ-वाणस्सइ काइयस्स कयरे काए सव्वसुहुमे,

२७-२९ तीन बोल बादर वायुकायाका, ३०-३२ तीन बोल बादर तेउकाया. ३३-३५ तीन बोल बादर अप्कायाका और ३६-३८ तीन बोल बादर पृथ्वीकायाका जानना. ३९ इससे बादर निगोद के पर्याप्ताकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुनी, ४० इससे बादर निगोद के अपर्याप्ताकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक, ४१ इस से बादर निगोद के पर्याप्ताकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक. ४२ इससे प्त्यकेप्र शरीरी बादर वनस्पति काय के पर्याप्ताकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुनी, ४३ इस से अपर्याप्ताकी उत्कृष्ट अवगाहना असंख्यातगुनी, ४४ इस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के पर्याप्ताकी उत्कृष्ट अवगाहना असंख्यातगुनी ॥१७॥ अहो भगवन् ! इन पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय. व वनस्पति काया में कौन सर्व सूक्ष्म है और कौन सर्व सूक्ष्मतर है ?

कयरे काएसव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! वणस्सइकाइए सव्वसुहुमे, वणस्सइकाइए सव्वसुहुमतराए ॥ एयस्सणं भंते ! पुढवीकाइयस्स आउकाइयस्स तेऊ-वाऊ-काइयस्स कयरे काए सव्वसुहुमे, कयरे काए सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! वाउकाइए सव्वसुहुमे, वाउकाइए सव्वसुहुमतराए २ ॥ एयस्सणं भंते! पुढवीकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स कयरे काए सव्वसुहुमे कयरे काए सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! तेऊकाए सव्वसुहुमे, तेऊकाए सव्वसुहुमतराए ३, ॥ एयस्सणं भंते ! पुढवी काइयस्स आऊकाइयस्स कयरं काए सव्वसुहुमे कयरे काए सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! आउकाए सव्वसुहुमे आउकाए सव्वसुहुमतराए ४, ॥ एयस्सणं भंते !

अहो गौतम ! वनस्पतिकाय सर्व से सूक्ष्म है और वनस्पतिकाय सर्व सूक्ष्मतर है. अहो भगवन् ! इन पृथ्वी, अप्, तेउ और वायुकाया में कौन सर्व सूक्ष्म व सर्व सूक्ष्मतर है ? अहो गौतम ! वायुकाय सर्व से सूक्ष्म व वायुकाय सर्वसे सूक्ष्मतर है. अहो भगवन् ! इन पृथ्वी, अप्, तेउ काया में कौन सर्व से सूक्ष्म व सर्व से सूक्ष्मतर है ? अहो गौतम ! तेउकाया सर्वसे सूक्ष्म व सर्वसे सूक्ष्मतर है. अहो भगवन् ! इन पृथ्वी काया व अपूकाया में कौनसी काया सर्व सूक्ष्म व सर्व सूक्ष्मतर है ? अहो गौतम ! अपूकाया सर्व से सूक्ष्म

पुढवीकाइयस्स आउकाइयस्स तेऊ-वाऊ-वणस्सइ काइयस्स कयरे काए सव्व बादरे, कयरे काए सव्वबादरतराए ? गोयमा ! वणस्सइकाइए सव्वबादरे. वणस्सइकाइए सव्वबादरतराए १, ॥ एयस्सणं भंते ! पुढवीकाइयस्स आऊ-तेऊ-वाउकाइयस्स कयरे काए सव्वबादरे, कयरे काए सव्व बादरतराए ? गोयमा ! पुढवीकाए सव्व-बादरे, पुढवीकाए सव्वबादरतराए २, ॥ एयस्सणं भंते ! आउकाइयस्स तेऊकाइयस्स वाउकाइयस्स कयरेकाए सव्वबादरे, कयरे काए सव्वबादरतराए ? गोयमा ! आउकाए सव्वबादरे आउकाए सव्वबादरतराए ३, ॥ एयस्सणं भंते ! तेऊकाइ-यस्स वाउकाइयस्स कयरे काए सव्वबादरे कयरेकाय सव्वबादरतराए ? गोयमा !

व सर्व सूक्ष्मतर है. ॥१॥ अहो भगवन्! इन पृथ्वी, अप्, तेउ, वायु, व वनस्पति कायामें कौन सबसे बादर है व कौन बादरतर है ? अहो गौतम ! वनस्पतिकाया बादर व वनस्पतिकाया बादरतर है. अहो भगवन् ! इन पृथ्वी, अप्, तेउ, व वायुकायामें कौन सर्वसे बादर व सर्वसे बादरतर है ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया सर्वसे बादर व सर्वसे बादरतर है. अहो भगवन्! इन अप्, तेउ व वायुकाया में कौन सबसे बादर व कौन बादर तर है ? अहो गौतम ! अप्काय सर्वसे बादर व सर्व बादर तर है. अहो भगवन् ! इन तेउकाया

तेऊकइए सव्वबादरे तेउकाए सव्वबादरतराए ४, ॥ १८ ॥ के महालएणं भंते ! पुढवी सरीरे पण्णत्ते ? गोयमा ! अणंताणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमवाउ सरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमवाउसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुम तेऊ सरीरे, असंखेजाणं सुहुम तेऊकाइय सरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुम आउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुम आउकाइय सरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुम पुढवी सरीरे, असंखेज्जाणं सुहुम पुढवकाइय सरीराणं जावइया सरीरा से एगे बादर वाउसरीरे, असंखेज्जाणं बादर वाउकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादर

व वायुकाया में कौन सर्व बादर व सर्व बादर तर है ? अहो गौतम ! तेउकाया सर्व बादर व सर्व बादरतर है ॥१८॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकायका शरीर कितना बडा कहा ? अहो गौतम ! अनंत सूक्ष्म वनस्पति कायिक जीवोंका जितना शरीर होताहै उतना सूक्ष्म वायुकायाका शरीर होता है, असंख्यात सूक्ष्म वायुकायके शरीर जितना सूक्ष्म तेउकायाका शरीर, असंख्यात सूक्ष्म तेउकायके शरीर जितना सूक्ष्म अप्कायाका शरीर, असंख्यात सूक्ष्म अप्काया के शरीर जितना सूक्ष्म पृथ्वी काया का शरीर, असंख्यात सूक्ष्म पृथ्वी काया के शरीर का एक बादर वायुकाया का शरीर, असंख्यात बादर वायुकाया के शरीरका एक बादर

तेउसरीरे, असंखेज्जाणं बादर तेऊकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादर आउसरीरे असंखेज्जाणं बादर आउकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादर पुढवी सरीरे, एमहालएणं गोयमा! पुढवी सरीरे पण्णत्ते ॥ १९ ॥ पुढवी काइयस्सणं भंते! के महालया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा! से जहा णामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया तरुणी बलवं जुगवं जुवा अप्पायंका वण्णओ, जाव निपुणसिप्पोवगया णवरं चम्मेट्ठदुहणमुट्ठियसमाहयणिच्चियगत्तकाया न भण्णइ, सेसं तचेव जाव निपुणसिप्पोवगया, तिक्खाए वइरामईए सण्हकरणीए तिक्खेणं वइरामएणं वट्टावर-

तेउकाया का शरीर, असंख्यात बादर तेउकाया के शरीर जितना बादर अप्काया का शरीर, असंख्यात बादर अप्कायाके शरीर जितना एक बादर पृथ्वीकायिकका शरीर होता है. अहो गौतम! बादर पृथ्वी काया का इतना बडा शरीर कहा है ॥ १९ ॥ अहो भगवन्! पृथ्वी काया की कितनी अवगाहना कही? अहो गौतम! चारों दिशिके अंत तक संपूर्ण भरत क्षेत्र में राज्य करनेवाला चक्रवर्ती राजा की बलवान युवावस्थावाली जरा व रोगरहित चंदन पीसनेवालीका कहा तैसे यावत् चमेठगादि व्यायाम क्रियाके उपकरण रहित सब कहना ऐसी शिक्षामें निपुण तरुणी लाखके गोले समान पृथ्वीकाया लेकर तीक्ष्ण वज्रमय लोहेके पत्थरसे

एणं एगं महं पुढवीकाइयं जतुगोलासमाणं गहाय पडिसाहरिय पडिसाहरियत्ता, पडि-संखिय पडिसंखियत्ता जाव इणामेवत्ति कट्टु तिसत्तखुत्तो उ पीसेज्जा, तत्थणं गोयमा ! अत्थेगइया पुढवीकइया आलद्धा, अत्थेगइया णो आलद्धा, अत्थेगइया संघट्टिया, अत्थेगइया णो संघट्टिया, अत्थेगइया परियाविया, अत्थेगइया णो परियाविया, अत्थे गइया उद्दविया, अत्थेगइया णो उद्दविया, अत्थेगइया पिट्ठा अत्थेगइया णो पिट्ठा, पुढवीकाइयस्सणं गोयमा ! ए महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ॥ २० ॥ पुढवी काइस्सणं भंते ! अक्कंते समाणे केरिसयं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? गोयमा !

पीसकर एकत्रितकरे, पिण्डबनाकर पीसेयों इक्कीस वख्तपीसे. वहां तक अहो गौतम ! उस लाखके गोले जितने पृथ्वी कायिक में से कितनेक जीवोंने उस शिलाका व पीसनेके पत्थरका स्पर्शकिया और कितनेक जीवोंने नहीं भी किया कितनेक जीवोंको संघट्टन हुवा, कितनेक जीवों को संघट्टन नहीं हुवा, कितनेक जीव परितापना पाये, कितनेक नहीं पाये, कितनेक जीवों को उपद्रव हुवा, कितनेक को नहीं हुवा, कितनेक जीव पीसाये और कितनेक नहीं पीसाये. अहो गौतम ! पृथ्वी कायिक जीव के शरीर की इतनी अवगाहना कही है, अर्थात् वह बहुत ही सूक्ष्म है॥२०॥अहो भगवन्! पृथ्वीकाया को अपक्रमण करनेसे उनके जीवों कैसी वेदना वेदतेहैं ?

से जहाणामए केइ पुरिसे तरुणं बलवं जाव णिपुणसिप्पोवगए, एगं पुरिसं जुण्णं जज्जरियदेहं दुब्बलं किलंतं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहणिज्जा, सेणं गोयमा ! पुरिसे तेणं पुरिसेणं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहणए समाणे केरिसयं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? अणिट्ठं समणाउसो ! तस्सणं गोयमा ! पुरिसस्स वेदणाहिंतो पुढवीकाइए अक्कंते समाणे एत्तो अणिट्ठतरियंचेव अक्कंततरियंचेव जाव अमणामतरियंचेव वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरति ॥ २१ ॥ आउयाएणं भंते ! संघट्टिए समाणे केरिसयं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरति ? गोयमा ! जहा पुढवी काइए एवं आउकाएवि, एवं तेउकाएवि, एवं वाउकाएवि, जाव विहरइ ॥ सेवं भंते

हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई तरुण, बलवंत यावत् सब शिल्पोंमें निपुण ऐसा पुरुष किसी एक जरावरोग से जर्जरित देहवाला, बल रहित पुरुष के मस्तक में प्रहार करे. अहो गौतम ! उसे कैसी वेदना होवे ? अहो भगवन् ! उसे अनिष्ट वेदना होवे. वैसेही अहो गौतम! आक्रांत की हुई पृथ्वी काया उक्त पुरुषकी वेदनासे अनिष्टतर व अक्रांततर यावत् अमनामतर वेदना वेदते हुवे विचरते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! अप्काया को संघर्षण होते वे कैसी वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! जैसे पृथ्वी काया वेदना वेदते हैं वैसे ही अप्-

भंतेत्ति ॥ एगूणवीसइमस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १९ ॥ ३ ॥

सिय भंते ! णेरइया महासवा, महाकिरिया, महावेयणा, महाणिज्जरा णो इणट्ठे समट्ठे ॥ १ ॥ सिय भंते ! णेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पणिज्जरा ? हंता सिया ॥ २ ॥ सिय भंते ! णेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महाणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ३ ॥ सिय भंते ! णेरइया महासवा

काया, तेउकाया, व वायुकाया वेदना वेदते हैं. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह उन्नीसवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ ३ ॥

तीसरे उद्देशे में पृथिव्यादि की महा वेदना कही. यहां नारकी की महा वेदना कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या नारकी महा आश्रव वाले, महा क्रिया वाले, महा वेदना वाले व महा निर्जरा वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी महा आश्रव वाले, महा क्रिया वाले, महा वेदना वाले, व अल्प निर्जरा वाले हैं. ? हां गौतम ! हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी महा आश्रव वाले महा क्रिया वाले, अल्प वेदना वाले व महा निर्जरा वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी महा आश्रव, महा क्रिया. अल्प वेदना व अल्प निर्जरा वाले

महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ४ ॥ सिय भंते ! णेरइया महासवा अप्पकिरिया, महावेयणा महाणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ५ ॥ सिय भंते ! णेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ६ ॥ सिय भंते ! णेरइया महासवा, अप्पाकिरिया, अप्पवेयणा, महाणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥७॥ सिय भंते! णेरइया महासवा, अप्पाकिरिया, अप्पवेयणा,अप्प-णिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ८ ॥ सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा, महा किरिया, महावेयणा, महाणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ९ ॥ सिय भंते! ते णेरइया ! अप्पा-

हैं ? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥४॥ अहो भगवन्! क्या नारकी महा आश्रव, अल्प क्रिया, महा वेदना व महानिर्जरा वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् !क्या नारकी महा आश्रव, अल्प क्रिया, अल्प वेदना व महा निर्जरा वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! नारकी महा आश्रव, अल्प क्रिया, अल्प वेदना, व महा निर्जरावाले क्या हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! नारकी महा आश्रव, अल्प क्रिया, महा वेदना, व महा निर्जरावाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अल्प आश्रव, महा क्रिया, महा वेदना व महा निर्जरावाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ

सवा, महाकिरिया, महावेयणा, अप्पणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ १० ॥ सिय भंते ! णेरइया-अप्पासवा, महाकिरिया, अप्पवेयणा महाणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ११ ॥ सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा महाकिरिया, अप्पवेयणा, अप्पणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ १२ ॥ सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा. अप्पकिरिया महावेयणा महाणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ १३ ॥ सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा अप्प-किरिया, महावेयणा अप्पणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ १४ ॥ सिय भंते ! णेरइ-

योग्य नहीं है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अल्प आश्रव, महा क्रिया, महा वेदना व अल्प निर्जरावाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अल्प आश्रव, महा क्रिया, अल्प वेदना व महा निर्जरावाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अल्पआश्रव, महा क्रिया, अल्प वेदना व अल्प निर्जरा-वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अल्प आश्रव, अल्प क्रिया, महा वेदना व महा निर्जरावाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अल्प आश्रव, अल्प क्रिया, महा वेदना व अल्प निर्जरावाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अल्प आश्रव, अल्प क्रिया, अल्प वेदना

या अप्पासवा, अप्पकिरिया, अप्पवेयणा, महाणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ १५ ॥ सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा, अप्पकिरिया, अप्पवेयणा, अप्पणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ १६ ॥ एएसोलस भंगा ॥ सिय भंते ! असुरकुमारा महासवा महाकिरिया, महावेयणा, महाणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवं चउत्थो भंगो भाणियव्वो ॥ सेसा पन्नरस भंगा खोडेयव्वा, एवं जाव थणियकुमारा ॥ १७ ॥ सिय भंते ! पुढवी काइया महासवा, महाकिरिया, महावेयणा, महाणिज्जरा ? हंता सिया ॥ एवं जाव

व महा निर्जरावाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अल्प आश्रव, अल्प क्रिया, अल्प वेदना व अल्प निर्जरावाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. ये सोलह भांगे हुए ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! क्या असुर कुमार महा आश्रव, महा क्रिया, महा वेदना व महा निर्जरावाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. असुर कुमार में चौथा भांगा कहना. जिस का नाम महाआश्रव, महाक्रिया, अल्प वेदना व अल्प निर्जरावाले असुर कुमार देव हैं. शेष पन्नरह भांगे नहीं पाते हैं. ऐसे ही स्तानित कुमार पर्यंत कहना ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! क्या पृथ्वी कायिक महा आश्रव, महा क्रिया, महा वेदना व महा निर्जरावाले है ? हां गौतम ! हैं,

सिय भंते ! पुढवीकाइया अप्पासवा अप्पकिरिया, अप्पवेयणा अप्पणिज्जरा ? हंता सिया॥ एवं जाव मणुस्सा ॥ १८ ॥ वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगूणवीसइमस्स चउत्थो उद्देसो ॥ १९ ॥ ४ ॥

अत्थिणं भंते! चरिमावि णेरइया परमावि णेरइया ? हंता! अत्थि ॥ १ ॥ से णूणं चरिमेहिंतो णेरइएहिंतो परमा णेरइया महाकम्मतराए चेव, महाकिरिय तराए चेव महासवतराए चेव महावेयण तराए चेव, परमेहिंतो वा णेरइएहिंतो चरमा णेरइया अप्पकम्मतरा

ऐसे ही यावत् पृथ्वीकायिक क्या अल्प आश्रव, अल्प क्रिया, अल्प वेदना व अल्प निर्जरावाले हैं ? हां गौतम ! पृथ्वी कायिक अल्प आश्रव, अल्प क्रिया, अल्प वेदना व अल्प निर्जरावाले हैं. ऐसे ही मनुष्य पर्यंत जानना ॥ १८ ॥ वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह उन्नीसवा शतक का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ ४ ॥

चौथे उद्देशे में नरक का कथन किया पांचवे उद्देशे में भी उस का ही कथन करते हैं. अहो भगवन् ! क्या नारकी चरिम (अल्प स्थितिवाले) हैं. और परम (महा स्थितिवाले) भी हैं ? हां गौतम ! नारकी अल्प स्थितिवाले भी हैं और महास्थितिवाले भी हैं ॥ १ ॥ क्या अल्प स्थितिवाले नारकी से महा स्थितिवाले नारकी महा कर्मवाले, महा क्रियावाले, महा आश्रववाले व महा वेदनावाले हैं ?

चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेयणतरा चेव, ? गोयमा ! चरमेहिंतो णेरइएहिंतो परमा जाव महावेयणतरा चेव, परमेहिंतो णेरइएहिंतो चरमा णेरइया जाव अप्पवेयणतरा चेव ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयण-तरा चेव ? गोयमा! ठितिपडुच्च से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव अप्पवेयणतरा चेव ॥ १ ॥ अत्थिणं भंते ! चरमावि असुरकुमारा परमावि असुरकुमारा ? एवं चेव णवरं विवरीयं भाणियव्वं, परमा अप्पकम्मा, चरमा महाकम्मा, सेसं तंचेव जाव

अथवा महा स्थितिवाले नारकी से अल्प स्थितिवाले नारकी क्या अल्प कर्म, अल्प क्रिया, अल्प आश्रव व अल्प वेदनावाले हैं ? अहो गौतम ! अल्प स्थितिवाले नारकी से महा स्थितिवाले नारकी महा कर्म यावत् महा वेदनावाले हैं और महा स्थितिवाले नारकी से अल्प स्थितिवाले नारकी अल्प कर्म यावत् अल्प वेदनावाले हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् अल्प वेदनावाले हैं ? अहो गौतम ! स्थिति आपेक्षाकर इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् अल्प वेदनावाले हैं॥१॥ अहो भगवन् ! क्या अल्प स्थितिवाले असुरकुमार भी है और बडी स्थितिवाले असुर कुमार भी हैं ? अहो गौतम! ऐसेही कहना. परंतु नारकी से यह विपरीत जानना. परम अल्प कर्मवाले और चरम महा कर्मवाले. ऐसे ही स्तनित

थणियकुमारा, ताव एवमेव ॥ २ ॥ पुढवीकाइया जाव मणुस्सा एए जहा णेरइया, वाणमंतर जोइसिय वेमाणियो जहा असुरकुमारा ॥ ३ ॥ कइविहाणं भंते ! वेयणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा वेयणा पण्णत्ता तंजहा-णिदाय अणिदाय ॥ णेरइयाणं भंते ! किंणिदाय वेदणं वेदेंति, अणिदाय वेदण वेदेंति, जहा पण्णवणाए जाव वेमाणियत्ति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगुणवीसइमस्स पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १९ ॥ ५ ॥

कहण्ण भंते ! दीव समुद्दा, केवइयाणं भंते ! दीव समुद्दा, किंसंठियाणं भंते ! दीव

कुमार पर्यंत कहना ॥ २ ॥ पृथ्वी काया से मनुष्य पर्यंत नारकी जैसे कहना, और वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! वेदना के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! वेदना के दो भेद कहे हैं. १ निदाय और आनिदाय. जिस वेदना को वेदते हुवे जीव जाने सो निदाय वेदना और जिस वेदना वेदते हुए जीव जाने नहीं सो आनिदाय वेदना. अहो भगवन्! क्या नारकी निदाय वेदना वेदते हैं या आनिदाय वेदना वेदते हैं ?वगैरह जैसे पन्नरणा पद में कहा वैसेही वैमानिक पर्यंत जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह उन्नीसवा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ ५ ॥

पांचवे उद्देशे के अंत में वेदना कही. वेदना भोगनेवाले द्वीप समुद्र में रहते हैं इस लिये द्वीप समुद्र का

समुद्दा ? एवं जहा जीवाभिगमे दीव समुद्देसो सोचेव इहवि, जोइसमंडि उद्देसगवज्जो भाणियव्वो जाव परिणामो जीव उववाओ जाव अणंतखुत्तो ॥ सेवं भंते २ ति ॥ एगूणवीसइमस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १९ ॥ ६ ॥ ० ०

केवइयाणं भंते ! असुरकुमारभवणावास सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउसट्ठि असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता॥ १ ॥तेणं भंते! किंमया पण्णत्ता ? गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ २ ॥ तत्थणं बहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमंति

प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! द्वीप समुद्र कहां हैं? द्वीप समुद्र कितने हैं ? उन का कैसा संस्थान है ? इन सब प्रश्नों का उत्तर जीवाभिगम सूत्र में द्वीप समुद्र उद्देशे में जैसे कहा वैसे ही यहां जानना. मात्र ज्योतिषीकी वक्तव्यता नहीं कहना. सब कथन परिणाम पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं, यह उन्नीसवा शतक का छठा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ ६ ॥ (०) (०)

छठे उद्देशे मे द्वीप समुद्र का कथन कहा. द्वीप समुद्र में देवता के आवास हैं इस से देवता के आवास का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! असुर कुमार को रहने के लिये कितने लाख भवन कहे हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार को रहने के लिये चौसठ लाख भवन कहे हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! वे भवन किस से बने हुए हैं ? अहो गौतम ! वे सब रत्नों के बने हुवे सुंदर यावत् प्रतिरूप हैं ॥ २ ॥ वहां बहुत

विउक्कमंति, चयंति, उववज्जंति, सासयाणं ते भवणा दव्वट्ठयाए वण्णपज्जवेहिं जाव फास पज्जवेहिं असासया ॥ एवं जाव थणियकुमारावासा ॥ ३ ॥ केवइयाणं भंते ! वाणमंतर भोमेज्जणयरावास सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरा भोमेज्जणयरावास सयसहस्सा पण्णत्ता ॥ तेणं भंते ! किं संठिया पण्णत्ता ? सेसं तंचेव ॥ ४ ॥ केवइयाणं भंते ! जोइसिय विमाणावास सयसहस्सा पुच्छा ? गोयमा ! असंखेज्जा जोइसिया ॥ तेणं भंते ! किंमया पण्णत्ता? गोयमा ! सव्वफलिहमया, अच्छा सेसं तंचेव ॥ ५ ॥ सोहम्मेणं भंते ! कप्पे केवइया विमाणावास सयसहस्सा पण्णत्ता

जीवों पुद्गलों उत्पन्न होते हैं, विशेष उत्पन्न होते हैं, चवते हैं व उत्पन्न होते हैं. वे भवन द्रव्य से शाश्वत हैं और वर्ण पर्याय यावत् स्पर्श पर्याय से अशाश्वत हैं. ऐसे ही स्तनित कुमार तक कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! भूमि में रहे हुवे वाणव्यंतर के कितने नगर कहे हैं? अहो गौतम ! वाणव्यंतर के असंख्यात भूमि के मध्य नगर कहे हैं. अहो भगवन् ! उन का संस्थान कैसा कहा ? अहो गौतम ! शेष सब भवनपति के भवन जैसे कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषियों के कितने लाख विमान कहे हैं ? अहो गौतम ! ज्योतिषियों के असंख्यात विमान वास कहे हैं. अहो भगवन् ! वे किस के बने हुवे हैं ? अहो गौतम ! वे स्फटिक रत्नों के बने हुवे हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में कितने लाख विमान कहे हैं ?

गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥ तेणं भंते ! किंमया पण्णत्ता? गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा, सेसं तंचेव, एवं जाव अणुत्तरविमाणा णवरं जाणियव्वा जत्थ जत्तिया भवणा विमाणावास सेवं भंतेत्ति ॥ एगूणवीसइमस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १९ ॥ ७ ॥ ० ०

कइविहाणं भंते ! जीवणिव्वत्ती पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा जीवणिव्वत्ती पण्णत्ता तंजहा-एगिंदिय जीव णिव्वत्ती जाव पंचिंदिय जीव णिव्वत्ती ॥ १ ॥ एगिंदिय जीव णिव्वत्तीणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा-पुढवी

अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख विमान कहे हैं. वे सब रत्नों के बने हुवे हैं. एसे ही अनुत्तर विमान तक कहना परंतु जिन को जितने विमान होवे उन को उतने जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह उन्नीसवा शतक का सातवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ ७ ॥ ० ०

सातवे उद्देशे में देवता का कथन किया. निर्वृत्तिवंत देवता होते हैं इसलिये आगे निर्वृत्ति का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! जीव निर्वृत्ति (उत्पन्न होना) के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जीव निर्वृत्ति के पांच भेद कहे हैं. एकेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति यावत् पंचेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! एकेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति के पांच

-काइयए एगिंदिय जीवणिव्वत्ती, जाव वणस्सइकाइयए एगिंदिय जीवणिव्वत्ती ॥२॥ पुढवी काइय एगिंदिय जीवणिव्वित्तीणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-सुहुमपुढवीकाइयएगिंदिय जीव णिव्वत्तीय, बादर पुढवी काइय एगिंदियजीवणिव्वत्तीय ॥ एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा वड्डगबंधे तेयग सरीरस्स जाव सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय कप्पातीत वेमाणिय देव पंचिंदिय जीवणिव्वत्तीणं भंते! कइविहा पण्णत्ता, गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तजहा पज्जत्तग सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदिय जीवणिव्वत्तीय, अपज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदिय जीव

भेद कहे हैं पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति यावत् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति ॥ २ ॥ पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं.? अहो गौतम ! पृथ्वी कायिक एकेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति के दो भेद कहे हैं सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति यों इस अभिलाप से जैसे बडे बंधका कथन आठवे शतक के नववे उद्देशे में कहा वैसे ही तेजस सरीर का यावत् सर्वार्थ सिद्ध अनुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! दो भेद कहे हैं ? पर्याप्त सर्वार्थ सिद्ध अनुत्तरोपपातिक यावत् पंचेन्द्रिय देव निर्वृत्ति और २ अपर्याप्त सर्वार्थ सिद्ध अनुत्तरोपपातिक यावत् देव पंचेन्द्रिय जीव निर्वृत्ति

णिव्वत्तीय॥ ३ ॥कइविहाणं भंते!कम्मणिव्वत्ती पण्णत्ते!गोयमा ! अट्ठविहा कम्मणिव्वत्ती पण्णत्ते तंजहा—णाणावरणिज्ज कम्मणिव्वत्ती जाव अंतराइय कम्मणिव्वत्ती ॥ णेरइयाणं भंते ! कइविहा कम्मणिव्वत्तीप० ? गोयमा ! अट्ठविहा कम्मणिव्वत्ती पं० तजहा णाणावरणिज्ज कम्मणिव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मणिव्वत्ती ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥ कइविहाणं भंते ! सरीरणिव्वत्ती पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा सरीरणिव्वत्ती प० तंजहा-ओरालियसरीरणिव्वत्ती जाव कम्मगसरीरणिव्वत्ती ॥ णेरइयाणं भंते ! एवंचेव, एवं जाव वेमाणियाण णवरं णायव्व जस्स जइ सरीराणि

॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! कर्म निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कर्म निर्वृत्ति के आठ भेद कहे हैं. ज्ञानावरणीय कर्म निर्वृत्ति यावत् अंतराइय कर्म निर्वृत्ति. अहो भगवन्! नारकीको कितनी कर्म निर्वृत्ति कही ? अहो गौतम ! नारकी को आठ कर्म निर्वृत्ति कही. ज्ञानावरणीय यावत् अंतराय ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! शरीर निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! शरीर निर्वृत्ति के पांच भेद कहे हैं. उदारिक शरीर निर्वृत्ति यावत् कार्माण शरीर निर्वृत्ति नारकी को यावत् वैमानिक को एसे ही कहना. परंतु जिन को जितने शरीर होवे उन को उतनी शरीर निर्वृत्ति कहना. ॥ ५ ॥ अहो

॥ ५ ॥ कइविहाणं भंते ! सव्विंदियणिव्वत्ती प० ? गोयमा ! पंचविहा सव्विंदिय णिव्वत्ती प० तंजहा सोइंदियणिव्वत्ती जाव फासिंदियणिव्वत्ती ॥ एवं णेरइयां जाव थणियकुमारा । पुढवीकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! एगा फासिंदियणिव्वत्ती प० एवं जस्स जइ इंदियाणि जाव वेमाणियाणं ॥ ६ ॥ कइविहाणं भंते ! भासाणि-व्वत्ती प० ? गोयमा ! चउव्विहा भासाणिव्वत्ती पं० तंजहा-सच्चभासाणिव्वत्ती मोसभासाणिव्वत्ती, सच्चामोसभासाणिव्वत्ती, अच्चामोसभासाणिव्वत्ती ॥ एवं एगिं-

भगवन् ! कितनी सर्वेन्द्रिय निर्वृत्ति कही ? अहो गौतम ! पांच सर्वेन्द्रिय निर्वृत्ति कही, श्रोत्रेन्द्रिय निर्वृत्ति यावत् स्पर्शेन्द्रिय निर्वृत्ति. नारकी यावत् स्तनित कुमार को पांचो इन्द्रिय निर्वृत्ति, पृथ्वीकाया यावत् वनस्पति काया को एक स्पर्शेन्द्रिय निर्वृत्ति ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जिस को जितनी इन्द्रियों होवे उस को उतनी इन्द्रिय निर्वृत्ति कहना. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! भाषा निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! भाषा निर्वृत्तिके चार भेद कहे हैं, सत्य भाषा निर्वृत्ति, मृषा भाषा निर्वृत्ति, सत्य मृषा भाषा निर्वृत्ति और असत्य मृषा भाषा निर्वृत्ति. ऐसे ही एकेन्द्रिय छोडकर जिन को जितनी भाषाओं होवे उन को उतनी की भाषा निर्वृत्ति वैमानिक पर्यंत कहना.

दियवज्जं जस्स जा भासा जाव वेमाणियाणं ॥ ७ ॥ कइविहाणं भंते ! मणणिव्वत्ती प० ? गोयमा ! चउव्विहा मणणिव्वत्ती प० सच्चमणणिव्वत्ती जाव असच्चामोस मणणिव्वत्ती ॥ एवं एगिंदियवज्जं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ ७ ॥ कइविहाणं भंते ! कसायणिव्वत्ती पं० ? गोयमा ! चउव्विहा कसायणिव्वत्ती पं० तंजहा-कोहकसायणिव्वत्ती जाव लोभकसाय णिव्वत्ती ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ८ ॥ कइविहाणं भंते ! वण्णणिव्वत्ती पं० ? गोयमा ! पंचविहा वण्णणिव्वत्ती पं० तंजहा-काल वण्णणिव्वत्ती जाव सुक्किल्ल वण्णणिव्वत्ती, एवं णिरवसेसं जाव वेमाणियाणं ॥

एकेन्द्रिय में भाषा नहीं है, ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! मननिर्वृति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! मननिर्वृति के चार भेद कहे हैं. सत्य मननिर्वृत्ति यावत् असत्यमृपा मननिर्वृत्ति. ऐसे ही एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय छोडकर वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कितनी कषाय निर्वृत्ति कही ? अहो गौतम ! चार कषाय निर्वृत्ति कही. क्रोध कषाय निर्वृत्ति यावत् लोभ कषाय निर्वृत्ति ऐसे ही वैमानिक तक कहना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कितनी वर्णनिर्वृत्ति कहीं ? अहो गौतम ! पांच वर्ण निर्वृत्ति कही. काला वर्ण यावत् शुक्ल वर्ण निवृत्ति. ऐसे वैमानिक पर्यंत सब को पांच निवृत्ति जानना. ऐसे ही सुरभिगंध व दुर-

एवं गंधणिव्वत्ती दुविहा जाव वेमाणियाणं रसणिव्वत्ती पंचविहा जाव वेमाणियाणं फासणिव्वत्ती अट्ठविहा जाव वेमाणियाणं ॥ ९ ॥ कइविहाणं भंते ! संठाण णिव्वत्ती प०? गोयमा ! छव्विहा संठाणणिव्वत्ती पं० तंजहा-समचउरंस संठाणणिव्वत्ती जाव हुंड संठाणणिव्वत्ती ॥ णेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! एगा हुडसंठाणणिव्वत्ती पं० ॥ असुरकुमाराणं पुच्छा ? गोयमा ! एगा समचउरंस संठाणणिव्वत्ती, एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवीकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा एगा मसूरचंदसंठाणणिव्वत्ती पं० एवं जस्स जं संठाणं जाव वेमाणिया ॥ १० ॥ कइविहाणं भंते ! सण्णाणिव्वत्ती

अर्थ

भिगंध ऐसी दो प्रकार की गंध निर्वृत्ति वैमानिक पर्यंत कहना. पांच प्रकार की रस निर्वृत्ति व आठ स्पर्श निर्वृत्ति भी वैमानिक पर्यंत जानना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! मंठाण निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! संठान निर्वृत्ति के छ भेद कहे हैं १ समचतुस्रसंठान यावत् हुंडक संस्थान निर्वृत्ति. नारकी की पृच्छा, एक हुंडक संस्थान निर्वृत्ति असुरकुपार यावत् स्तनितकुमार को एक समचतुस्र संस्थान निर्वृत्ति. पृथ्वी काया का संस्थान चंद्रमसुर का. ऐसे ही जिस को जितने संस्थान होवे उस को उतनी संस्थान निर्वृत्ति कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! संज्ञा निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं ?

पं० ? गोयमा ! चउव्विहा सण्णाणिव्वत्ती प० तंजहा-आहारसण्णाणिव्वत्ती जाव परिग्गह सण्णाणिव्वत्ती ॥ एवं जाव वेमाणिया ॥ ११ ॥ कइविहाणं भंते ! लेस्साणिव्वत्ती पं० ? गोयमा ! छव्विहा लेस्साणिव्वत्ती पं० तंजहा-कण्हलेस्साणिव्वत्ती जाव सुक्कलेस्साणिव्वत्ती ॥ एवं जाव वेमाणिया, जस्स जइ लेस्साओ तस्स तत्तिया भाणियव्वा ॥ १२ ॥ कइविहाणं भंते ! दिट्ठिणिव्वत्ती प०? गोयमा ! तिविहा दिट्ठिणिव्वत्ती प० तंजहा- सम्मादिट्ठिणिव्वत्ती मिच्छादिट्ठिणिव्वत्ती, सम्ममिच्छादिट्ठिणिव्वत्ती, एवं जाव वेमाणिया जस्स जइविहा दिट्ठी

अहो गौतम ! संज्ञा निर्वृत्ति के चार भेद कहे हैं आहार संज्ञा निर्वृत्ति यावत् परिग्रह संज्ञा निर्वृत्ति. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! कितनी लेश्या निर्वृत्ति कही ? अहो गौतम ! छ लेश्या निर्वृत्ति कही ? कृष्ण लेश्या निर्वृत्ति यावत् शुक्ल लेश्या, निर्वृत्ति. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जिन को जितनी लेश्याओं होवे उन को उतनी लेश्या निर्वृत्ति कहना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! दृष्टि निर्वृत्ति कितनी कही ? अहो गौतम ! दृष्टि निर्वृत्ति तीन कही समदृष्टि निर्वृत्ति मिथ्यादृष्टि निर्वृत्ति व सम मिथ्यादृष्टि निर्वृत्ति ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जिन को जितनी दृष्टि होवे उन को उतनी दृष्टि निर्वृत्ति कहना ॥ १३ ॥ अहो

॥ १३ ॥ कइविहाणं भंते ! णाणणिव्वत्ती प० ? गोयमा ! पंचविहा णाणणिव्वत्ती प० तंजहा-अभिणिबोहिय णाणणिव्वत्ती जाव केवलणाणणिव्वत्ती, एवं एगिंदिय वज्जं जाव वेमाणिया जस्स जइ णाणाइं ॥ १४ ॥ कइविहाणं भंते ! अण्णाणणिव्वत्ती प० ? गोयमा ! तिविहा अण्णाणणिव्वत्ती प० तंजहा-मइअण्णाणणिव्वत्ती सुअ अण्णाणणिव्वत्ती, विभंगणाणणिव्वत्ती, एवं जस्स जइ जाव वेमाणिया ॥ १५ ॥ कइविहाणं भंते ! जोगणिव्वत्ती प० ? गोयमा ! तिविहा प० तंजहा-मणजोग णिव्वत्ती, वइजोगणिव्वत्ती, कायजोग णिव्वत्ती ॥ एवं जाव वेमाणियाणं जस्स

भगवन् ! ज्ञान निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! ज्ञान निर्वृत्ति के पांच भेद कहे हैं. आभिनि बोधिक ज्ञान निर्वृत्ति यावत् केवल ज्ञान निर्वृत्ति ऐसे ही एकेन्द्रिय छोडकर वैमानिक पर्यंत जिनको जितने ज्ञान होवे उन को उतनी ज्ञान निर्वृत्ति कहना. ॥१४॥ अहो भगवन् ! अज्ञान निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम ! अज्ञान निर्वृत्ति के तीन भेद कहे हैं. मति अज्ञान निर्वृत्ति श्रुतअज्ञान निर्वृत्ति व विभंग ज्ञान निर्वृत्ति. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जिन को जितने अज्ञान होवे उन को उतनी अज्ञान निर्वृत्ति कहना ॥१५॥ अहो भगवन्! योग निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! योग निर्वृत्ति के तीन भेद कहे हैं. १ मनयोग निर्वृत्ति, २ वचन योग निर्वृत्ति व ३ काया योग निर्वृत्ति. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जिन को जितने योग होवे उन को

जइविहो जोगो ॥ १६ ॥ कइविहाणं भंते ! उवओगणिव्वत्ती प० ? गोयमा ! दुविहा उवओग णिव्वत्ती प० तंजहा-सागारोवओगणिव्वत्ती, अणागारोवओग णिव्वत्ती, एवं जाव वेमाणिया ॥ १८ ॥ संगह गाथा-जीवाणं णिव्वत्ती कम्मप्पगडि णिव्वत्ती, सरीरणिव्वत्ती, सव्विंदिय णिव्वत्ती, भासायमणेकसायाया ॥ १ ॥ वण्णे गंधे रसे फासे संठाण विहीय होय बोधव्वे ॥ लेस्सादिट्ठीणाणे, उवओगो होय जोगेय ॥२॥ सेवं भंते! भंतेत्ति ॥ एगूणवीसइमस्स अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो॥१९॥८॥ कइविहाणं भंते ! करणे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते तंजहा-दव्व

उननी कहना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! उपयोग निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! उपयोग निर्वृत्ति के दो भेद कहे हैं साकारोपयोग निर्वृत्ति व अनाकारोपयोग निर्वृत्ति. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना ॥ १७ ॥ अब इन की संग्रह गाथा का अर्थ करते हैं. १ जीव निर्वृत्ति २ कर्म निर्वृत्ति ३ शरीर ४ इन्द्रिय ५ भाषा ६ मन ७ कषाय ८ वर्ण ९ गंध १० रस ११ स्पर्श १२ संस्थान १३ लेश्या १४ दृष्टि १५ ज्ञान १६ अज्ञान १७ योग और १८ उपयोग. इन की निर्वृत्ति. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह उन्नीसवा शतक का आठवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ ८ ॥

आठवे उद्देशे में निर्वृत्ति का कथन किया. नववे उद्देशे में करण का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् !

करणे खेत्तकरणे, काल करणे, भवकरणे, भाव करणे ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते ! कइविहे करणे प० ? गोयमा ! पंचविहे करणे पं० तंजहा-दव्व करणे जाव भाव करणे ॥ एवं जाव वेमाणिया ॥ २ ॥ कइविहाणं भंते ! सरीरकरणे प० ? गोयमा! पंचविहे सरीरकरणे प० तंजहा-ओरालिय सरीरकरणे जाव कम्मासरीर करणे, एवं जाव वेमाणिया जस्सजइ सरीराणि ॥३॥ कइविहेणं भंते ! इंदिय करणे प० ? गोयमा ! पंचविहे इंदिय करणे प० तं० सोइंदिय करणे जाव फासिंदिय करणे, एवं जाव वेमाणिया जस्स जइ इंदियाइं ॥ एवं एएणं कमेणं भासा करणे चउविहे मणकरणे

करण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! करण के पांच भेद कहे हैं. जिन के नाम. १ द्रव्य करण २ क्षेत्र करण ३ काल करण ४ भव करण और ५ भाव करण ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने करण कहे हैं? अहो गौतम ! नारकी को पांचों करण कहे हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना ॥२॥ अहो भगवन् ! शरीर करण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! शरीर करण के पांच भेद कहे हैं ! १ उदारिक शरीर करण यावत् कार्माण शरीर करण. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रिय करण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रिय करण के पांच भेद कहे हैं.

चउव्विहे, कसाय करणे चउव्विहे, समुग्घाय करणे सत्तविहे, सण्णा करणे चउव्विहे, लेस्सा करणे छव्विहे, दिट्ठिकरणे तिविहे, वेदकरणे तिविहे, पं० तं० इत्थिवेदकरणे, पुरिसवेद करणे, णपुंसगवेदकरणे ॥ एए सव्वे णेरइयादि दंडगा जाव वेमाणिया जस्स जं अत्थि तं तस्स सव्वं भाणियव्वं ॥४॥ कइविहेणं भंते ! पाणातिवाय करणे प० ? गोयमा ! पंचविहे प० तं० एगिंदिय पणाइवायकरणे, जाव पंचिंदिय पाणाइ-वाय करणे ॥ एवं णिरवसेसं जाव वेमाणिया ॥ ५ ॥ कइविहेणं भंते ! पोग्गले करणे प० ? गोयमा ! पंचविहे पोग्गले करणे प० तं० वण्ण करणे गंध करणे,

श्रोत्रेन्द्रिय करण यावत् स्पर्शेन्द्रिय करण. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जिन को जितनी इन्द्रियों होवे उन को उतने इन्द्रिय करण कहना. इस तरह सत्य भाषा यावत् असत्य मृषा यों चार भाषा करण. चार मन करण चार कषाय करण, सात समुद्धात करण, चार संज्ञा करण, छ लेश्या करण, तीन दृष्टि करण तीन वेद करण. ये सब नारकी आदि चौवीस दंडक में जिस को जितने होवे उस को उतने कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! प्राणातिपात करण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! प्राणातिपात करण के पांच भेद कहे हैं. एकेन्द्रिय प्राणातिपात करण यावत् पंचेन्द्रिय प्राणातिपात करण. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! पुद्गल करण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! पुद्गल करण के पांच भेद

सूत्र

रसकरणे, फासकरणे, संठाण करणे ॥ वण्णकरणेणं भंते ! कइविहे प० तं० काल वण्णकरणे जाव सुक्किल वण्ण करणे एवं भेदो ॥ गंध करणे दुविहे ॥ रसकरणे पंचविहे ॥ फासकरणे अट्ठविहे संठाण करणेणं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प० तं० परिमंडलसंठाण करणे जाव आयत संठाण करणे सेवं भंते ! भंतेत्ति जाव विहरइ॥गाथा दव्वे खेत्ते काले भवेय भावेय शरीर करणेय इंदिय करणे भासा मणेकसाए समुग्घाए ॥ १ ॥ सण्णा लेस्सादिट्ठी, वेए पाणाइवाय करणेय ॥ पोग्गल करणे वण्णे गंध रस फास संठाणे ॥ २ ॥ एगूणवीसइमस्स णवमो

अर्थ

कहे हैं. वर्ण करण, गंध करण, रस करण, स्पर्श करण व संस्थान करण. अहो भगवन् ! वर्ण करण से पुद्गल के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! वर्ण करण से पुद्गल के पांच भेद कहे हैं. १ कृष्ण यावत् शुक्ल. ऐसे ही गंध करण के सुरभिगंध व दुरभिगंध ऐसे दो भेद, रस करण के पांच भेद, स्पर्श करण के आठ भेद. और संस्थान करण के पांच भेद, परिमंडल संस्थान यावत् आयतन संस्थान. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर विचरने लगे. अब करण की गाथा का अर्थ कहते हैं. १ द्रव्य करण २ क्षेत्र करण ३ काल करण ४ भव करण ५ भाव करण ६ शरीर ७ इन्द्रिय, ८ भाषा ९ मन १० कषाय ११ समुद्घात १२ संज्ञा १३ लेश्या १४ दृष्टि १५ वेद १६ प्राणातिपात १७ पुद्गल. वर्ण गंध, रस, स्पर्श

उद्देसो सम्मत्तो ॥ १९ ॥ ९ ॥

वाणमंतराणं भंते ! सव्वे समाहारा एवं जहा सोलसमसए दीव कुमारुद्देसए जाव अप्पिड्ढियत्ति ॥ सेवं भंते! भंतेत्ति ॥ एगूणवीसइमस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १९ ॥ १० ॥ एगूणवीसइमं सयं सम्मत्तं ॥ १९ ॥

व संस्थान. यह उन्नीसवा शतक का नववा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ ९ ॥ (०)

नववे उद्देशे में करण का कथन किया. आहार भी करने से ही होता है, इसलिये इस उद्देशे में आहार का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! क्या सब वाणव्यंतर समान आहार करनेवाले हैं ऐसे ही जैसे सोलहवे शतक में द्वीप कुमार उद्देशे में कहा वैसे ही यावत् अल्प ऋद्धिवाले कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह उन्नीसवा शतक का दशवा उद्देशा संपूर्ण हुवा॥१९॥१०॥यह उन्नीसवा शतक समाप्त हुवा॥१९॥

॥ विंशतितम शतकम् ॥

वेइंदेय मागासे, पाणवहे उवचएय परमाणू । अंतरबंधे भूमी, चारण सोवक्कमा जीवा ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-सिय भंते ! जाव चत्तारि पंचबेइंदिया एगयओ साहरण सरीरं बंधंति २ त्ता तओ पच्छा आहारेंतिवा परिणामेंतिवा सरीरंवा बंधंति ? णो इणट्ठे समट्ठे, वेइंदियाणं पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेय सरीरं

उन्नीसवे शतक के अंत में वाणव्यंतर के आहार की वक्तव्यता कही. आहार से शरीर का बंध होता है इसलिये उन्नीसवे शतक में इस का कथन करते हैं. इस शतक में दश उद्देशे कहे हैं जिन के नाम-१ वेइन्द्रियादिक २ आकाश ३ प्राणातिपात ४ उपचर्या ५ परमाणुका ६ रत्नप्रभादिक के अंतर ७ जीवप्रयोगबंध ८ कर्म अकर्मभूमिका ९ जंघाचारण विद्याचारण विचार और १० सोपक्रमनोपक्रम विचार. इन दश में से प्रथम उद्देशा का कथन करते हैं. ॥ १ ॥ राजगृह नगर में यावत् ऐसा बोले अहो भगवन् ! चार पांच वेइन्द्रिय एकत्रित मीलकर क्या साधारण शरीर बांधे और पीछे क्या आहार करे, परिणमावे या शरीर बांधे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. क्यो की प्रत्येक वेइन्द्रिय अलग २ आहारवाले हैं, अलग २ परिणमाने वाले हैं, और अलग २ शरीर बांधने

बंधंति २ त्ता तओ पच्छा आहारेंतिवा परिणामेंतिवा सरीरंवा बंधंति ॥ २ ॥ तेसिणं भंते! जीवाणं कइलेस्साओ पण्णत्ताओ? गोयमा! तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तंजहा-कण्ह लेस्सा णीललेस्सा काउलेस्सा एवं जहा एगूणवीसइमेसए तेऊकाइयाणं जाव उव्वट्टंति णवरं सम्मादिट्ठीवि, मिच्छद्दिट्ठीवि, णो सम्मामिच्छादिट्ठी, दोणाणा दो अण्णाणा णियमं, णो मणजोगी, वइजोगीवि, कायजोगीवि, आहारो णियम छद्दिसिं॥ ३ ॥तेसिणं भंते! जीवाणं एव सण्णाइवा पण्णाइवा मणेइवा वईतिवा, अम्हेणं इट्ठाणिट्ठे रसे इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो?

वाले हैं इसलिये वे अलग आहार करते हैं, अलग परिणमाते हैं और अलग शरीर बांधते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! उन को कितनी लेश्याओं कही? अहो गौतम! उनको तीन लेश्याओं कहीं १. कृष्ण लेश्या २ नील लेश्या ३ कापुत लेश्या. ऐसे ही तैसे उन्निसवे शतक मे तेउकाया का कहा वैसे ही यावत् उद्वर्तते हैं वहां तक कहना. विशेष में यहां पर समदृष्टि व मिथ्यादृष्टि ऐसी दो दृष्टि पाती हैं. परंतु मिश्रदृष्टि नहीं पाती है. दो ज्ञान अथवा दो अज्ञान निश्चयही होते हैं मनयोग नहीं होता है परंतु वचन योग व काया योग होता है. निश्चय ही छदिशि का आहार करते हैं. ॥ ४ ॥ अहो भगवन्! उन को ऐसी प्रज्ञा होवे, वे मन से ऐसा जाने, अथवा वचन मे ऐसा कहे कि हम इष्ट अनिष्ट रस यावत् स्पर्श अनुभवते हैं? अहो गौतम! अह अर्थ योग्य नहीं है, अर्थात् उन को ऐसी प्रज्ञा, मन व वचन नहीं है जिस से ये जानसके

णो इणट्ठे समट्ठे ॥ पडिसंवेदेंति पुणते ॥ ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारससंवच्छराइं, सेसं तंचेव ॥ एवं तेइंदियाणएवि, एवं चउरिंदियाणएवि, णाणत्तं, इंदिएसु, ठितीएय, सेसं तंचेव, ठिती जहा पण्णवणाए ॥ ४ ॥ सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पंचिंदिया एगयओ साहारणसरीरं, एवं जहा बेइंदियाणं, णवरं छल्लेस्सा दिट्ठी तिविहा, चत्तारिणाणा, तिण्णि अण्णाणा भयणाए, तिविहा जोगा ॥ तेसिणं भंते! जीवाणं एवं सण्णाइवा पण्णाइवा जाव वईइवा, अम्हेणं आहार माहारेमो ?

यावत् कह सके कि हम इष्ट अनिष्ट रस यावत् स्पर्श अनुभवते हैं. मात्र वे वेदते हैं. उन की स्थिति जघन्य अंतर्मूहूर्त उत्कृष्ट १२ वर्ष शेष पूर्वोक्त जैसे कहना. तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का भी वैसे ही कहना परंतु स्थिति व इन्द्रिय में विशेषता है. तेइन्द्रिय में तीन व चतुरेन्द्रिय में चक्षु, घ्राण, रसना व स्पर्श ऐसी चार इन्द्रियों हैं. स्थिति तेइन्द्रिय की ४९ दिन की व चतुरेन्द्रिय की छमास की. वगैरह जैसे पन्नवणा में कहा वैसे ही जानना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! चार पांच पंचेन्द्रिय मीलकर क्या साधारण शरीर बांधे फीर आहार करे, परिणमावे व शरीर बांधे ? अहो गौतम ! जैसे बेइन्द्रिय का कहा वैसे ही यहां जानना. विशेष में छ लेश्या, तीन दृष्टि, चार ज्ञान, तीन अज्ञान की भजना व तीन योग है. अहो भगवन् ! उन जीवों को क्या संज्ञा, मन यावत् वचन हैं कि हम आहार करते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक को ऐसी

गोयमा ! अत्थेगइयाणं एवं सण्णाइवा, पण्णाइवा मणेइवा, वईइवा, अम्हेणं आहार माहारेमो ॥ अत्थेगइयाणं णो एवं सण्णाइवा जाव वईइवा अम्हेणं आहार माहारेमो आहारेंति पुण ते ॥ तेसिणं भंते! जीवाणं एवं सण्णाइवा जाव वईइवा अम्हेणं इट्ठाणिट्ठे सद्दे इट्ठाणिट्ठे रूवे, इट्ठाणिट्ठे गंधे इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो? गोयमा ! अत्थेगइयाणं एवं सण्णाइवा जाव वाईइवा अम्हेणं इट्ठाणिट्ठसद्दे जाव इट्ठाणिट्ठेफासे पडिसंवेदेमो अत्थेगइयाणं णो एवं सण्णातिवा पण्णातिवा जाव वईतिवा अम्हेणं इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो, पडिसंवेदेंति पुणते॥तेणं भंते जीवाकिं

संज्ञा, मन व वचन होता है कि हम आहार करते हैं और कितनेक को ऐसी सज्ञा, मन व वचन नहीं है. परंतु वे आहार करते हैं. अहो भगवन् ! उन जीवों को क्या ऐसी संज्ञा, मन व वचन है कि हम इष्ट अनिष्ट शब्द इष्ट अनिष्ट रूप, इष्ट आनिष्ट गंध, इष्ट आनिष्ट रस व इष्ट आनिष्ट स्पर्श वेदते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक को ऐसी संज्ञा, सज्ञा यावत् वचन है कि हम इष्ट आनिष्ट रस यावत् स्पर्श वेदते हैं. और कितनेक को नहीं है यावत् वेदते हैं. अहो भगवन् ! वे जीवों क्या प्राणातिपात का सेवन करते हैं ? अहो गौतम ! कितने अविरति जीव प्राणातिपात का सेवन करते हैं यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का सेवन करते हैं. और

पाणाइवाए उववक्खाइज्जंति पुच्छा ? गोयमा ! अत्थेगइया पाणाइवाए उववक्खाइज्जंति जाव मिच्छादंसणसल्लेवि उववक्खाइज्जंति, अत्थेगइया णो पाणाइवाए उववक्खाइज्जंति णो मुसावाए उववक्खाइज्जंति जाव णो मिच्छादंसणसल्ले उववक्खाइज्जंति ॥ जेसिं पियणं जीवाणं ते जीवा एवमाहिज्जंति तेसिंपिणं जीवाणं अत्थेगइयाणं विण्णाते णाणत्ते, अत्थेगइयाणं णो विण्णाए णाणत्ते, उववाओ सव्वओ जाव सव्वट्ठसिद्धा-ओ ॥ ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, छसमुग्घाया, केवलवज्जा, उव्वट्टणा सव्वत्थ गच्छंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति ॥सेसं जहा बेइंदियाणं ॥ ५ ॥ एएसिणं भंते ! बेइंदियाणं जाव पंचिंदियाणय कयरे कयरे जाव विसे-

कितनेक प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का सेवन नहीं करते हैं. जिन जीवों की विराधना करते हैं. उन जीवों में कितनेक को ज्ञान है और कितनेक को ज्ञान नहीं है. उपपात सर्व स्थान यावत् सर्वार्थ सिद्ध. स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की, केवलसमुद्घात छोडकर छ समुद्घात कही है. उद्वर्तना से सर्वत्र जाते हैं यावत् सर्वार्थ सिद्ध, शेष बेइन्द्रिय जैसे कहना. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! उन बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय में कौन किस से यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे पंचेन्द्रिय इस

साहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया. चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसे साहिया, बेइंदिया विसेसाहिया ॥ सेवं भंते भंतेत्ति, जाव विहरइ ॥ वीसइमस्स सयस्सय पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥ १ ॥

कइणं भंते ! आगासे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तंजहा-लोआ गासेय अलोयागासेय ॥ १ ॥ लोआगासेणं भंते ! किं जीवा जीवदेसा एवं जहा वितियसए अत्थिउद्देसए तहचेव इहवि भाणियव्वं, णवरं अभिलावो जाव धम्मत्थि- काएणं भंते ! के महालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोएलोयमेत्ते, लोयप्पमाणे लोयफुडे

से चतुरेन्द्रिय विशेषाधिक इस से तेइन्द्रिय विशेषाधिक इस से बेइन्द्रिय विशेषाधिक. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यावत् विचरने लगे. यह बीसवा शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥२०॥१॥

पहिले उद्देशे में द्विइन्द्रियादिक कहे. वे आकाश के आधार से होते हैं. इसलिये आकाश का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन ! आकाश के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! आकाश के दो भेद कहे हैं. १ लोकाकाश और २ अलोकाकाश ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! लोकाकाश में क्या जीव जीव देश या जीव प्रदेश हैं वगैरह जैसे द्वितीय शतक के अस्तिकाया उद्देशे में कहा वैसे ही यहां कहना. विशेष में अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाया कितनी बडी कही है ? अहो गौतम ! लोक में लोक मात्र, लोक प्रमाण, लोक

लोयंचेव उग्गाहित्ताणं चिट्ठति. एवं जाव पोग्गलत्थिकाए ॥ २ ॥ अहे लोएणं भंते! धम्मत्थिकायस्स केवइयं ओगाढे ? गोयमा ! साइरेगं अर्द्धं ओगाढे, एवं एएणं अभिलावेणं जहा बिइयसए जाव ईसिप्पब्भाराणं भंते ! पुढवी, लोयागासस्स किं संखेज्जइ भागं ओगाढा पुच्छा, गोयमा ! णो संखेज्जइ भागं ओगाढा, असंखेज्जइ भागं ओगाढा, णो संखेज्जइ भागे ओगाढा, णो असंखेज्जइ भागे ओगाढा, णो सव्वं लोयं ओगाढा, सेसं तंचेव॥ ३॥ धम्मत्थिकायस्सणं भंते ! केवइया अभिवयणा प० ? गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता तंजहा-धम्मेतिवा धम्मत्थिकाएइवा,

को स्पर्श कर रही हुई और लोक को अवगाह कर रही हुई है. ऐसे ही पुद्गलास्तिकाया तक जानना ॥२॥ अहो भगवन् ! नीचा लोक को धर्मास्तिकाया कितनी अवगाह कर रही है ? अहो गौतम ! साधिक आधी धर्मास्तिकाया अवगाह कर रही है. इस अभिलाप से जैसे दूसरे शतक में यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी लोकाकाश को क्या संख्यातवे भाग से स्पर्शी हुई है वगैरह पृच्छा, अहो गौतम ! संख्यातवे भाग को स्पर्श कर नहीं रही है परंतु असंख्यातवे भाग को स्पर्श कर रही है. संख्यात भाग व असंख्यात भाग लोक को अवगाह कर नहीं रही है, शेष पूर्वोक्त जैसे कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाया को कितने नाम से बोलाई जाती है ? अर्थात् धर्मास्तिकाया के कितने नाम कहे हैं ! अहो

पणाइवायवेरमणेतिवा, मुसावायवेरमणेतिवा, एवं जाव परिग्गह वेरमणे, कोहविवेगेतिवा जाव मिच्छादंसण सल्लविवेगेतिवा, इरियासमिएतिवा भासासमिएतिवा एसणासमिएतिवा, आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिएतिवा, उच्चारपासवण खेल जल्लसिंघाणपरिट्ठावणियासमिईतीतिवा, मणगुत्तीवा, वइगुत्ती तिवा, कायगुत्ती तिवा; जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वेते धम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥ ३ ॥ अहम्मत्थि कायस्सणं भंते ! केवइया अभिवयणा प० ? गोयमा ! अणेगा अभिवयणा प० तंजहा-अधम्मेतिवा अधम्मत्थिकाएतिवा, पाणातिवाय जाव मिच्छादंसण सल्लेतिवा,

गौतम ! धर्मास्तिकाया के अनेक नाम कहे हैं. जैसे—धर्म, धर्मास्तिकाय, प्राणातिपात विरमण, मृषावाद विरमण यावत् परिग्रह विरमण, क्रोध विवेक यावत् मिथ्यादर्शनशल्य विवेक, ईर्यासमिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदान भंड पात्र निक्षेपन समिति, उच्चार प्रस्रवणखेल जल परिस्थापनीय समिति, मन गुप्ति, वचन गुप्ति, काया गुप्ति और ऐसे जो कोई अन्य हैं वे सब धर्मास्तिकाया के नाम से कहाये जाते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! अधर्मास्तिकाया के कितने नाम कहे हैं ? अहो गौतम ! अधर्मास्तिकाया के अनेक नाम कहे हैं. जिन के नाम अधर्म, अधर्मास्तिकाया, प्राणातिपात यावत् मिथ्या दर्शन शल्य, ईर्या असमिति,

इरिया असमितीतिवा जाव उच्चारपासवण जाव परिट्ठावणिया असमितीतिवा, मण अगुत्तीतिवा, वइअगुत्तीतिवा, काय अगुत्तीतिवा, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अहम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥ ५ ॥ आगासत्थिकायस्सणं पुच्छा, गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पं० तंजहा-आगासेइवा आगासत्थिकाएतिवा, गगणेतिवा, नभेइवा, समेतिवा, विसमेतिवा; खहेतिवा, विहेतिवा, वीची तिवा, विवरेतिवा, अंबरे तिवा, अंबरसेतिवा, छिड्डेतिवा, झूसिरेतिवा मग्गेतिवा, विमुहेतिवा, अद्देतिवा, वियद्देतिवा, आधारेतिवा, वोमेतिवा, भायणेतिवा, अंतरिक्खेतिवा, सामेतिवा, उवासंतरेतिवा, आगमे तिवा, फलिहेतिवा अणंततिवा, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते आगासत्थिकायस्स अभि-

भाषा असमिति, यावत् उच्चार प्रस्रवण खेल जल सिंघान परिस्थापनीय असमिति, मन अगुप्ति, वचन अगुप्ति काया अगुप्ति और ऐसे जो अन्य हैं वे सब अधर्मास्तिकाया है ॥ ५ ॥ आकाशास्तिकाया की पृच्छा, अहो गौतम ! आकाशास्तिकाया के अनेक नाम कहे हैं आकाश, आकाशास्तिकाया, गगन, नभ, सम, विषम. खह, विहा, वीचिर, विवर, अंबर, अम्बरस, छिद्र, झूसिर, मार्ग, विमुख, अट्ट, वियट्ट, आधार, व्योम, भाजन, अंतरीक्ष, श्याम, उवामंतर, अगम, स्फटिक, अनंत और वैसे ही ऐसे जो अन्य

वयणा प० ॥ ६ ॥ जीवत्थिकायस्सणं भंते ! केवइया अभिवयणा प० ? गोयमा ! अणेगा अभिवयणा प० तंजहा-जीवेतिवा, जीवत्थिकाएतिवा, पाणेतिवा, भूएतिवा, सत्तेतिवा, विण्णूतिवा, चेयातिवा, जेयातिवा, आयातिवा, रंगणेतिवा, हिंडएतिवा, पोग्गलेतिवा, माणवेतिवा, कत्तातिवा, विकत्तातिवा, जएतिवा, जंतूतिवा, जोणिएतिवा सयंभूतिवा, ससरीरीतिवा, नायातिवा, अंतरप्पातिवा, जेयावण्णे तहप्पगारा, सव्वे ते जीवअभिवयणा प० ॥ ६ ॥ पोग्गलत्थिकायस्सणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! अणेगा अभिवयणा प० तंजहा-पोग्गलेतिवा, पोग्गलत्थिकाएतिवा, परमाणुपोग्गलेतिवा

हैं वे आकाश के नाम हैं. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जीवास्तिकाया के कितने नाम हैं ? अहो गौतम ! जीवास्तिकाया के अनेक नाम हैं जैसे जीव, जीवास्तिकाया, प्राण, भूत, सत्व, विज्ञ, चेत, जेता, आत्मा, रंगन, हिंडक, पुद्गली, मानव, कर्त्ता, विकर्त्ता, जया, जंतु, योनिक, स्वयंभू, सशरीरी, ज्ञाता, अंतरात्मा और ऐसे ही अन्य प्रकार के नाम जीव के हैं. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! पुद्गलास्तिकाया के कितने नाम कहे हैं ? अहो गौतम ! पुद्गलास्तिकाया के अनेक नाम कहे हैं. पुद्गल, पुद्गलास्तिकाय, परमाणु पुद्गल, द्विप्रदेशिक, तीन प्रदेशिक यावत् असंख्यातप्रदेशिक अनंत प्रदेशिक स्कंध और ऐसे ही जो अन्य हैं वे

दुपदेसिएतिवा, तिपदेसिएतिवा, जाव असंखेज्जपएसिएतिवा अणंतपएसिएतिवा खंधे जेयावण्णे तहप्पगारा जाव सव्वे ते पोग्गलत्थिकायस्स अभिवयणा, प० ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ वीसइमस्स वितिओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ २० ॥ २ ॥

अह भंते ! पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छादंसण सल्लविवेगे, उप्पत्तिया जाव पारिणामिया, उग्गहे जाव धारणा, उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे, णेरइयत्ते, असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते, णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, सम्मद्दिट्ठीए ३, चक्खु-

यावत् सब पुद्गलास्तिकाया के नाम कहे हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह वीसवा शतक का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २० ॥ २ ॥

दूसरे उद्देशे में प्राणातिपातादिक अधर्मास्तिकाय के पर्यायवाले कहे, अब वही कथन आत्मा को अन्य-पना से कहते हैं. अहो भगवन्! प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शनशल्य, प्राणातिपात यावत् मिथ्या दर्शनशल्य का त्याग, उत्पातिया यावत् पारिणामिक, अवग्रह यावत् धारणा, उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम, नारकीपना, असुरकुमारपना यावत् वैमानिक पना, ज्ञानावरणीय यावत् अंतराय,

दंसणे ४, आभिणिबोहियणाणे जाव विभंगणाणे, आहारसण्णाए ४, ओरालिय सरीरे ५ , मणजोगे ३ सागारोवओगे, अणागारोवओगे, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते णण्णत्थ आताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! पाणाइवाए जाव सव्वे ते णण्णत्थ आताए परिणमंति ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे कइवण्णे कइगंधे एवं जहा बारसमसए पंचमुद्देसए जाव कम्मओणं जए णो अकम्मतो विभत्तिभावं परिणए सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ वीसइमस्स तत्तिओ ॥ २० ॥ ३ ॥

कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या, समदृष्टि ३ चक्षु दर्शन ४ आभिनिबोधिक ज्ञानी यावत् विभंग ज्ञानी, आहार, भय, मैथुन व परिग्रह ऐसी चार संज्ञा, उदारिक, वैक्रेय, आहारक तेजस व कार्माण ऐसे पांच शरीर, मन, वचन व काया ऐसे तीन योग, और ऐसे अन्य भी क्या आत्मा विना अन्य को नहीं परिणमते हैं ? हां गौतम ! आत्मा विना अन्य को नहीं परिणमते हैं. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव को कितने वर्ण, गंध, रस, वगैरह जैसा बारहवे शतक में पांचवे उद्देशे में कहा यावत् पांच वर्ण, दो गंध पांच रस व आठ स्पर्श परिणमते हैं. कार्माण शरीर की अपेक्षा से जीव अनेक भाव से परिणमता है, परंतु कर्म रहित होने से विभक्ति भाव पने नहीं परिणमता है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं, यह वीसवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ २० ॥ ३ ॥

कइविहेणं भंते ! इंदियउवचए पं० ? गोयमा ! पंचविहे इंदिय उवचए प० तंजहा सोइंदियउवचए एवं बितिओ इंदियउद्देसओ णिरवसेसो भाणियव्वो जहा पण्णवणाए ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ भगवं गोयमे जाव विहरइ ॥ वीसइमस्स चउत्थो ॥ २० ॥ ४ ॥

:o: . :o:

परमाणुपोग्गलेणं भंते ! कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे ? गोयमा ! एगवण्णे एगगंधे, एगरसे, दुफासे ॥ जइ एग वण्णे-सिय कालए सिय णीलए, सियलोहिए,

अहो भगवन् ! इन्द्रिय उपचय के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रिय उपचय के पांच भेद कहे हैं. श्रोत्रेन्द्रिय उपचय ऐसे ही पन्नवणा का दूसरा उद्देशा जो कहा है वह यहां पर निरवशेष कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यों कहकर भगवान् गौतम विचरने लगे. यह बीसवा शतक का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २० ॥ ४ ॥

चौथे उद्देशे में इन्द्रिय का उपचय कहा वह परमाणु से होता है इसलिये आगे परमाणु का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल में एक वर्ण, एक गंध, एक रस व दो स्पर्श कहे हैं. यदि एक वर्ण होवे तो क्वचित् काला, क्वचित् नीला,

सिय हालिदए, सिय सुक्किल्लए॥ जइ एग गंधे-सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगंधे॥ जइ एगरसे सिय तित्ते सिय कडुए, सिय कसाए, सिय अंबिले. सिय महुरे ॥ जइ दुफासे-सिय सीएय णिद्धेय सिय सीएय लुक्खेय, सिय उसिणेय णिद्धेय, सिय उसिणेय लुक्खेय, ॥ १ ॥ दुपदेसिएणं भंते ! खंधे कइवण्णे ? एवं जहा अट्ठारसममए छट्ठुद्देसए जाव सिय चउप्फासे पं० ॥ जइ एगवण्णे- सिय कालए जाव सिय सुक्किल्लए, जइ दुवण्णे-सिय कालएय, णीलएय, सिय कालएय लोहिएय, सिय कालएय हालिद्दएय, सिय कालएय सुक्किल्लएय, सिय णीलएय लोहियएय, सिय णीलएय हालिद्दएय,

क्वचित् लाल, क्वचित् पीला व क्वचित् शुक्ल होवे यदि एक गंध होवे तो क्वचित् सुरभिगंध व क्वचित् दुरभिगंध होवे. यदि एक रस होवे तो क्वचित् तिक्त, क्वचित् कटुक, क्वचित् कषाय. क्वचित् अम्बट व क्वचित् मधुर. यदि दो स्पर्श होवे तो क्वचित् शीत व स्निग्ध, क्वचित् शीत व रूक्ष, क्वचित् ऊष्ण व स्निग्ध और क्वचित् ऊष्ण व रूक्ष ऐसे स्पर्श होवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण ? ऐसेही जैसे अठारवे शतक में छठा उद्देशा कहा यावत् क्वचित् चार स्पर्श. यदि एक वर्ण है तो क्वचित् काला यावत् क्वचित् शुक्ल, यदि दो वर्ण होवे तो क्वचित् काला, नीला, क्वचित् काला लाल,

सिय णीलएय सुक्किलएय, सिय लोहियएय हालिद्दएय, सिय लोहियएय, सुक्किल्लएय, सिय हालिद्दएय सुक्किलएय, एवं एए दुया संजोगे दस भंगा ॥ जइ एग गंधे–सिय सुब्भिगंधेय सिय दुब्भिगंधेय, जइ दुगंधे सुब्भिगंधेय दुब्भिगंधेय रसेसु जहा वण्णेसु ॥ जइ दुफासे सिय सीएय णिद्धेय एवं जहेव परमाणुपोग्गले ॥ जइ तिफासे सव्वे सीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे १ सव्वे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे २ सव्वे णिद्धे देसे सीए देसे उसिणे ३ सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे ४, ॥ जइ चउफासे देसे सीए, देसे उसिणे, देसे णिद्धे, देसे लुक्खे; एए णव भंगा फासेसु ॥ २ ॥ तिपएसिएणं भंते ! खंधे कइवण्णे जहा अट्ठारसमसए जाव

क्वचित् काला पीला, क्वचित् काला शुक्ल, क्वचित् नीला लाल, क्वचित् नीला पीला, क्वचित् नीला शुक्ल क्वचित् लाल पीला क्वचित् लाल शुक्ल और क्वचित् पीला शुक्ल ऐसे द्विसंयोगी दश भांगे कहना. यदि एक गंध होवे तो क्वचित् सुरभिगंध क्वचित् दुरभिगंध होवे. यदि दो गंध होवे तो सुरभिगंध व दुरभिगंध ऐसी दोनों गंध जानना. रस का वर्ण जैसे कहना. जैसे परमाणु पुद्गल का कहा वैसे ही दो स्पर्श का जानना. यदि तीन स्पर्श होवे तो १ सर्व शीत देश स्निग्ध देश रूक्ष, २ सर्व ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष ३ सर्व स्निग्ध देश शीत देश ऊष्ण ४ सर्व रूक्ष देश शीत व देश ऊष्ण होवे यदि चार स्पर्श होवे तो देश शीत देश ऊष्ण, देश स्निग्ध व देश रूक्ष ऐसे स्पर्श के नव भांगे जानना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् !

फासे ॥ जइ एगवण्णे सिय कालए जाव सुक्किल्लए । जइ दुवण्णे सिय कालएय सिय णीलएय १, सिय कालएय णीलगाय २, सिय कालगाय णीलएय ३, सिय कालएय लोहियएय ४, सिय कालएय लोहियगाय, सिय कालगाय लोहियएय ६ । एवं हालिद्देणवि समं ३, एवं सुक्किल्लएणवि समं ३, सिय णीलएय लोहियएय एत्थवि भंगा ३, ॥ एवं हालिद्दएणवि समं ३, एवं सुक्किल्लएणवि समं ३, भंगा सिय लोहियएय हालिद्दएय ३, एवं सुक्किल्लएणवि समं भंगा ३, सिय हालिद्दएय सुक्किल्लएय भंगा ३, एवं सव्वेते दस दुया संजोगा भंगा तीसं भवंति ॥ जइ तिवण्णे-सिय कालएय णीलएय

तीन प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण वगैरह जैसे अठारहवे शतक में कहा वैसे ही यावत् चार स्पर्श. यदि एक वर्ण तो क्वचित् काला यावत् शुक्ल यों पांचों भांगे पावे, यदि दो वर्ण पावे तो १ स्यात् एक काला दो हरा (दोनों पुद्गल एक प्रदेश अवगाहकर रहे हुवे होवे इस लिये एक वचन) २ स्यात् एक काला दो हरा ३ स्यात् दो काले एक हरा ४ स्यात् एक काला दो लाल ५ स्यात् एक काला दो लाल अनेक वचन ६ स्यात् दो काले एक लाल यों काला पीला के तीन भांगे और ऐसे ही काला व शुक्ल के तीन भांगे सब १२ भांगे हुवे क्वचित् १ एक नीला दो लाल एक वचन २ क्वचित् एक

लोहियएय १, सिय कालएय, णलिएय हालिद्दएय २, सिय कालएय, णीलएय, सुक्किल्लएय ३, सिय कालएय लोहियएय हालिद्दएय ४, सिय कालएय. लोहियएय सुक्किल्लएय ५, सिय कालएय, हालिद्दएय सुक्किल्लएय ६, सिय णीलएय, लोहियएय, हालिद्दएय ७, सिय णीलएय, लोहियएथ सुक्किल्लएय ८, सिय णीलएय, हालिद्दएय, सुक्किल्लएय ९, सिय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय १०, एवं एते दस तिया संजोगा ॥ जइ एगगंधे सिय सुब्भिगंधे सिय दुब्भिगंधे ॥ जइ दुगंधे सुब्भिगंधेय दुब्भिगंधेय

नीला दो लाल दो प्रदेशावगाही इस से अनेकवचन और ३ दो नीले एक लाल यों नीले पीले व नीले शुक्ल के तीन भांगे मीलाकर ९ भांगे हुवे. ऐसे ही लाल पीला व लाल शुक्ल व पीला शुक्ल के भी तीन २ भांगे जानना ऐसे वर्ण के ३० भांगे होते हैं. यदि तीन वर्ण पावे तो स्यात् काला, नीला व लाल, २ स्यात काला, नीला व पीला ३ स्यात काला नीला व शुक्ल ४ स्यात काला लाल व पीला, ५ स्यात् काला लाल व शुक्ल ६ स्यात् कालापीला व शुक्ल ७ स्यात् नीला लाल व पीला ८ स्यात् नीला लाल व शुक्ल ९ स्यात् नीला पीला व शुक्ल और स्यात् १० लालपीला व शुक्ल यों तीन संयोगी दश भांगे कहे. यदि एक गंध होवे तो सुरभिगंध अथवा दुरभिगंध अथवा सुरभिगंध व दुरभिगंध दोनों. रस का वर्ण

भंगा ३, ॥ रसा जहा वण्णा ॥ जइ दुफासे सिय सीएय णिद्धेय, एवं जहेव दुपदे सियरस तहेव चत्तारि भंगा ॥ जइ तिफासे सव्वे सीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे १ सव्वे सीए देसे णिद्धे देसा लुक्खा २ सव्वे सीए देसा णिद्धा देसे लुक्खे ३, सव्वे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे एत्थवि भंगा तिण्णि ६ ॥ सव्वे णिद्धे देसे सीए, देसे उसिणे भंगा तिण्णि ९ । सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि १२ ॥ जइ चउफासे देसे सीए देसे उसिणे, देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे उसिणे, देसे णिद्धे, देसा लुक्खा २, देसे सीए देसे उसिणे देसा णिद्धा, देसे लुक्खे ३,

जैसे कहना. अब स्पर्श के भांगे कहते हैं, यदि दो स्पर्श पावे तो स्यात् शीत व स्निग्ध यों जैसे द्विप्रदेशिक स्कंध का कहा वैसे ही यहां चार भांगे करना. यदि तीन स्पर्श होवे तो सर्व शीत देश स्निग्ध देश रूक्ष २ सर्व शीत एक स्निग्ध दो रूक्ष अनेक वचन ३ सर्व शीत जिस में दो स्निग्ध एक रूक्ष ४ सर्व ऊष्ण जिस में एक स्निग्ध एक रूक्ष, एक आकाशप्रदेश अवगाहना आश्री वगैरह छ भांगे होवे. सर्व स्निग्ध एक शीत एक ऊष्ण एसे तीन और सर्व रूक्ष एक शीत एक ऊष्ण यों तीन सब मीलकर बारह भांगे होते हैं. यदि चार स्पर्श होवे तो एक शीत, एक ऊष्ण जिस में एक स्निग्ध एक रूक्ष एक आकाश प्रदेश अवगाहित होने से एक वचन ही ग्रहण किया है. २ एक शीत एक ऊष्ण जिस में एक स्निग्ध अनेक रूक्ष, ३

देसे सीए देसा उसिणा, देसे णिद्धे, देसे लुक्खे ४ देसे सीए. देसा उसिणा देसे णिद्धे देसा लुक्खा ५, देसे सीए देसा उसिणा, देसा णिद्धा, देसे लुक्खे ६. देसा सीया देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे ७, देसा सीया देसे उसिणे देसे णिद्धे देसा लुक्खा ८ देसा सीया देसे उसिणे देसा णिद्धा देसे लुक्खे ९, एवं एए तिपदेसिएफासेसु पणवीसं भंगा ॥ ३ ॥ चउप्पदेसिएणं भंते ! खंधे कइवण्णे जहा अट्ठारसमसए जाव सिय चउप्फासे १० ॥ जइ एगवण्णे सिय कालएय जाव सुक्किल्लएय ॥ जइ

एक शीत एक ऊष्ण जिस में अनेक स्निग्ध एक रूक्ष ४ एक शीत अनेक ऊष्ण जिस में एक स्निग्ध एक रूक्ष ५ एक शीत अनेक ऊष्ण जिस में एक स्निग्ध अनेक रूक्ष ६ एक शीत अनेक ऊष्ण जिस में अनेक स्निग्ध एक रूक्ष ७ अनेक शीत एक ऊष्ण जिस में एक स्निग्ध एक रूक्ष ८ अनेक शीत एक ऊष्ण जिस में एक स्निग्ध अनेक रूक्ष ९ अनेक शीत एक ऊष्ण जिस में अनेक स्निग्ध एक रूक्ष यों तीन प्रदेशिक स्कंध में स्पर्श के २५ भांगे हुवे और वर्ण के ४५ गंध के पांचव, रस के ४५, मीलकर १२० भांगे हुवे ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! चार प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण गंध, रस व स्पर्श पाते हैं. ? अहो गौतम ! चार प्रदेशिक स्कंध में जैसे अठारवे शतक में कहा वैसे ही यहां कहना यावत् स्पर्श पाते हैं. यदि एक

दुवण्णे सिय कालएय णीलएय १ सिय कालएय णीलगाय २, सिय कालगाय णीलएय ३, सिय कालगाय णीलगाय ४, सिय कालएय लोहियएय एत्थवि चत्तारि भंगा ४, सिय कालएय हालिद्दएय ४, सिय कालएय सुक्किल्लएय ४, सिय णीलएय लोहियएय ४, सिय णीलएय हालिद्दएय ४, सिय णीलएय सुक्किल्लएय ४, सिय लोहियएय हालिद्दएय ४, सिय लोहियएय सुक्किलएय ४ सिय हालिद्दएय सुक्किलएय ४, एवं एए दस दुयासंजोगा भंगा पुण चत्तालीसं ४०, ॥ जइ तिवण्णे सिय कालएय णीलएय लोहियएय १, सिय कालएय णीलएय

वर्ण होवे-तो चारों ही क्वचित् काले यावत् क्वचित् शुक्ल यों पांच भांगे. यदि दो वर्ण होवे तो १ स्यात् काले के दो, हरे के दो २ स्यात् काला का एक हरे के तीन ३ काले के तीन हरे का एक और ४ काले के दो हरे के दो, यहां दो प्रदेश अवगाहना आश्री है. ये काले व हरे के चार भांगे हुवे वैसे ही काले व लाल के चार भांगे, काले पीले के चार भांगे, काले शुक्ल के चार भांगे, हरे व लाल के चार भांगे, नीले व पीले के चार भांगे, नीले व शुक्ल के चार भांगे, लाल पीले के चार, लाल शुक्ल के चार और पीले व शुक्ल के चार भांगे करना. यों दो वर्ण के द्विसंयोगी. ४० भांगे होवे. यदि तीन वर्ण होवे तो १ स्यात् एक काला

लोहितगाय २, सिय कालएय णीलगाय लोहितएय ३, सिय कालगाय णीलएय लोहियएय, एएणं चत्तारि भंगा ॥ एवं कालणील-हालिद्दएहिं भंगा ४ ॥ काल-णील-सुक्किल ४ ॥ काल-लोहिय-हालिद्द ४ ॥ काललोहिय-सुक्किल ४ । काल-हालिद्द-सुक्किल ४ । णील-लोहिय-हालिद्दगाणं भंगा ४ । णीललोहिय-सुक्किल ४ । णील-हालिद्द-सुक्किल ४ । लोहिय हालिद्द-सुक्किलगाणं भंगा ४ । एवं एए दसतिया संजोगा एक्केक्के संजोए चत्तारि भंगा, सव्वे ते चत्तालीसं भंगा । जदि चउवण्णे-सिय

स्यात एक हरा व स्यात् एक प्रदेशावगाही दो पुद्गल लाल २ स्यात एक पुद्गल काला, एक हरा और दो लाल दो प्रदेशावगाही ३ स्यात् एक काला दो हरे व एक लाल ४ स्यात् दो काले एक हरा, एक लाल यों चार भांगे ऐसे ही काला, हरा व पीले के चार भांगे, काला नीला व शुक्ल के चार भांगे, काला लाल व पीले के चार भांगे, काला लाल व शुक्ल के चार भांगे, काला पीला व शुक्ल के चार भांगे, हरा लाल पीला के चार भांगे, हरा, लाल शुक्ल के चार भांगे, हरा, पीला शुक्ल के चार भांगे और लाल पीला व शुक्ल के चार भांगे यों दश तीन संयोग हुवे एक २ संयोग में चार२ भांगे हुवे, सब मील कर ४० भांगे तीन संयोगी हुवे. यदि चार वर्ण होवे तो स्यात् काला, हरा,

कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय १, सिय कालएय णीलएय लोहियएय सुक्किल्लएय २, सिय कालएय णीलएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय ३, सिय कालएय लोहियएय, हालिद्दएय, सुक्किल्लएय ४, सिय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्ल-एय ५, एवमेते चउक्क संजोए पंचभंगा ॥ एए सव्वेणउइ भंगा । जइ एग गंधे-सिय सुब्भिगंधेय सिय दुब्भिगंधेय । जइ दुगंधे-सिय सुब्भिगंधेय दुब्भिगंधेय ४ ॥ रसा जहा वण्णा । जइ दुफासे-जहेव परमाणुपोग्गले ॥ जइ तिफासे-सव्वेसीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे सीए देसे णिद्धे देसा लुक्खा २, सव्वेसीए देसा णिद्धा देसे

लाल व पीला २ काला, हरा, लाल व शुक्ल ३ काला, हरा, पीला व शुक्ल ४ काला, लाल, पीला व शुक्ल और ५ हरा, लाल, पीला व शुक्ल या चार संयोगी पांच भांगे जानना यों सब मील कर वर्ण के ९० भांगे जानना. यदि एक गंध होवे स्यात् सुरभिगंध स्यात् दुरभिगंध. यदि दो गंध अलग २ होवे तो सुरभिगंध दुरभिगंध के चार भांग पूर्वोक्त जैसे कहना. यों गंध के ६ भांगे हुवे. पांच रस के ९० भांगे पांच वर्ण जैसे कहना. स्पर्श में यदि दो स्पर्श होवे तो जैसे परमाणु पुद्गल का कहा वैसे ही कहना. यदि तीन स्पर्श होवे तो १ सर्व शीत [illegible] तीन स्पर्श

लुक्खे ३, सव्वे सीए देसा णिद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे उसिणे देसेणिद्धे। देसे लुक्खे एवं भंगा ४। सव्वे णिद्धे देसे सीए देसे उसिणे ४। सव्वे लुक्खे देसेसीए देसेउसिणे ४। एए तिफासे सोलसं भंगा॥ जइ चउप्फासे देसेसीए, देसे उसिणे देसेणिद्धे, देसेलुक्खे १, देसे सीए देसे उसिणे, देसेणिद्धे देसा लुक्खा २। देसेसीए देसे उसिणे देसाणिद्धा देसे लुक्खे ३, देसेसीए, देसेउसिणे, देसाणिद्धा देसालुक्खा४। देसेसीए देसा उसिणा, देसेणिद्धे, देसेलुक्खे ५, देसेसीए देसा उसिणा, देसेणिद्धे, देसा लुक्खा ६। देसे सीए देसा उसिणा, देसा णिद्धा देसे लुक्खे ७। देसेसीए देसा

३ सर्व शीतवाले तीन स्निग्ध एक रूक्ष ४ सर्व शीतवाले दो स्निग्ध दो रूक्ष यों चार भांगे. जैसे शीत के चार भांगे कहे वैसे ही ऊष्ण के चार भांगे कहना और ऐसे ही सर्व स्निग्ध व सर्व रूक्ष के चार २ भांगे कहना. इस तरह तीन स्पर्श के सोलह भांगे हुवे. यदि चार स्पर्श होवे तो देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध व देश रूक्ष. २ देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध व बहुत देश रूक्ष ३ देश शीत देश ऊष्ण बहुत देश स्निग्ध व देश रूक्ष ४ देश शीत देश ऊष्ण बहुत देश स्निग्ध व बहुत देश रूक्ष ५ देश शीत बहुत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष ६ देश शीत बहुत देश ऊष्ण देश स्निग्ध व बहुत देश रूक्ष ७ देश शीत बहुत

उसिणा देसाणिद्धा देसालुक्खा ८ । देसा सीया देसा उसिणे देसाणिद्धे देसेलुक्खे ९ । एवं एए चउफासे सोलस भंगा भाणियव्वा जाव देसा सीया, देसाउसिणा देसा णिद्धा देसा लुक्खा, सव्वे एते फासेसु छत्तीसं भंगा ३६, २२२ ॥ ४ ॥ पंच पएसिएणं भंते ! खंधे कइवण्णे जहा अट्ठारसमसए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते ॥ जइ एगवण्णे एगवण्ण दुवण्णा जहेव चउप्पसिए ॥ जइ तिवण्णे सिय कालएय णीलएय लोहिय-एय १, सिय कालएय णीलएय लोहियगाय २, सिय कालएय णीलगाय लोहि-

देश ऊष्ण बहुत देश स्निग्ध व देश रूक्ष ८ देश शीत बहुत देश ऊष्ण बहुत देश स्निग्ध व बहुत देश रूक्ष ९ बहुत देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष १० ऐसे ही चार स्पर्श के सोलह भांगे कहना यावत् बहुत देश शीत बहुत देश ऊष्ण बहुत देश स्निग्ध व बहुत देश रूक्ष यों सब मीलकर स्पर्श के ३६ भांगे हुवे. यों चार प्रदेशिक स्कंध में वर्ण के ९०, गंध के ६, रस के ९०, और स्पर्श के ३६ कुल २२२ भांगे हुए ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! पांच प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण, गंध, रस, व स्पर्श पाते हैं ? अहो गौतम ! जैसे अठारवे शतक में कहा वैसे ही यहां जानना. यावत् चार स्पर्श कहे हैं. यहां एक वर्ण के ५०और दो वर्ण के ४० भांगे जैसे चार प्रदेशिक स्कंध के कहे वैसे ही यहां कहना. यदि तीन

यएय ३, सिय कालस्य णीलगाय लोहितगाय ४, सिय कालगाय णीलस्य लोहि-
यएय ५, सिय कालगाय णीलस्य लोहियगाय ६, सिय कालगाय णीलगाय लोहि-
यएय ७, सिय कालस्य णीलस्य हालिद्दएय एतथविसत्त भंगा ७ ॥ एवं कालय
णीलय सुक्किलएसु सत्त भंगा ७, कालगलोहिय हालिद्देसु ७, कालगलोहिय
सुक्किल्लेसु ७ कालगहालिद्दसुक्किल्लेसु ७ णीलग लोहिय हालिद्देसु ७ णीलगलोहिय
सुक्किल्लेसु ७, सत्त भंगा णीलहालिद्दसुक्किल्लेसु ७, लोहियहालिद्दसुक्किल्लेसुवि
सत्त भंगा ७, एवमेव तियसंजोएण सत्तारि भंगा ॥ जइ चउवण्णे सिय कालएय
णीलएय लोहियस्य हालिद्दगाय १, सिय कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दगाय २

वर्ण पावे तो १ स्यात् काला, हरा व लाल २ स्यात् काला हरा एक वचन लाल अनेक वचन ३ स्यात् काला एक हरा अनेक व लाल एक ४ स्यात् काला एक हरा व लाल अनेक ५ स्यात् काला अनेक हरा व लाल एक ६ स्यात् काला अनेक हरा एक व लाल अनेक ७ स्यात् काला नीला अनेक लाल एक ये सात भांगे हुवे. स्यात् काला, हरा व पीला इस में भी सात भांग, काला, हरा, व शुक्ल में सात भांग, काला, लाल व पीले में सात भांग, काला लाल व शुक्ल में सात भांग, काला पीला व शुक्ल में सात भांग, हरा लाल व पीला में सात भांगे, हरा लाल व शुक्ल में सात भांगे, हरा पीला व शुक्ल में सात भांगे और

सिय कालएय णीलएय लोहियगाय हालिद्दगेय ३, सिय कालएय णीलगाय लोहियगेय हालिद्दगेय ४, सिय कालगाय णीलएय लोहियगेय हालिद्दगेय ५ ॥ एएपंच भंगा ॥ सिय कालएय णीलएय लोहिमएय सुक्किल्लएय, एत्थवि पंच भंगा ॥ एवं कालगणीलगहालिद्दसुक्किल्लएसुवि पंच भंगा ॥ कालगलोहियहालिद्द सुक्किल्लएसुवि पंच भंगा ॥ णीललोहियहालिद्दसुक्किल्लएसुवि पंच भंगा ॥ एवं मेते चउक्कसंजोएणं पणवीसं भंगा ॥ जइ पंचवण्णे कालएय णीलएय लोहियगाय

लाल पीला व शुक्ल में सात भांगे यों तीन संयोगी ७० भांगे होते हैं. यदि चार वर्ण होवे तो स्यात् काला, हरा, लाल व पीला २ स्यात् काला, हरा, लाल एक वचन और पीला अनेक वचन ३ स्यात् काला, हरा एक वचन लाल अनेकवचन पीला एकवचन ४ स्यात् काला एक वचन हरा अनेक लाल व पीला एक वचन ५ स्यात् काला अनेक हरा लाल व पीला एक यों पांच भांगे वैसे ही स्यात् काला हरा लाल व शुक्ल इन में भी पांच, ऐसे ही काला, हरा, पीला व शुक्ल इन में पांच भांगे, काला, लाल, पीला व शुक्ल में पांच भांगे. हरा, लाल, पीला व शुक्ल में पांच भांगे. यों चार संयोगी पचीस भांगे हुवे. यदि पांच वर्ण होवे तो काला, हरा, लाल, पीला व शुक्ल यों एक ही

हालिद्द सुक्किल्लएय सव्व भंते एक्कग दुयग तियग चउक्क पंचग संजोगेणं इयालं भंगसयं भवंति ॥ गंधा जहा चउप्पदेसियस्स ॥ रसा जहा वण्णा ॥ फासा जहा चउप्पदेसियस्स ॥ ५ ॥ छप्पदेसिएण भंते ! कइवण्णे ? एवं जहा पंचपएसिए जाव सिय चउप्फासे पण्णत्ते ॥ जइ एगवण्णे एगवण्णदुवण्णा जहा पंचपएसियस्स ॥ जइ तिवण्णे सिय कालएय णीलएय लोहियएय एवं जहेव पंचपएसियस्स सत्त भंगा जाव सिय कालगाय णीलगाय लोहितएय ७ । सिय कालगाय

भांगा होता है. इस तरह एक दो, तीन, चार व पांच संयोगी के १४१ भांगे वर्णके होते हैं. गंध का चार प्रदेशिक स्कंध जैसे कहना, रस का वर्ण जैसे कहना और स्पर्श का चारप्रदेशिक स्कंध जैसे ३६ भांगे कहना. यों वर्ण के १४१, गंध के ६, रस के १४१, और स्पर्श के ३६, सब मीलकर ३२४, भांगे पांच प्रदेशिक स्कंध के हुए ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! छ प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण गंध रस स्पर्श कहे ? अहो गौतम ! पांच प्रदेशिक स्कंध का कहा वैसे ही यहां कहना यावत् पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व चार स्पर्श कहे हैं. यदि एक वर्ण होवे तो स्यात् काला, हरा व लाल यों जैसे पांच प्रदेशी में सात भांगे कहे तैसे यहां भी करना उस का सातवा भांगा इस तरह स्यात् काले अनेक हरे अनेक और लाल एक और

णीलगाय लोहितगाय ८ ॥ एए अट्ठ भंगा ॥ एव मेते दस तियां संजोगा एक्केक्कसंजोगे अट्ठ भंगा ॥ एवं सव्वेवि तिय संजोगे असीति भंगा ॥ जइ चउवण्णे-सिय कालएय णीलएय लोहितएय हालिद्दएय १, सिय कालएय णीलएय लोहिएय हालिद्दगाय २, सिय कालएय णीलएय लोहियगाय, हालिद्दएय ३, सिय कालएय, णीलएय, लोहियगाय, हालिद्दगाय ४, सिय कालएय णीलगाय, लोहियएय हालिद्दएय ५, सिय कालएय णीलगाय लोहियएय हालिद्दगाय ६, सिय कालएय णीलगाय लोहियगाय, हालिद्दएय ७, सिय कालगाय णीलएय लोहियएय,

आठवा भांगा इस तरह अधिक करना स्यात काला, हरा व लाल अनेक ये आठ भांगे जानना. ऐसे दश तीन संयोगी हुवे और एक २ संयोग में आठ २ भांगे पावे सब मीलकर अस्सी भांगे हुवे. यदि चार वर्ण होवे तो १ स्यात काला, हरा, लाल, व पीला २ स्यात् काला हरा, लाल एक व पीला अनेक ३ स्यात् काला, हरा एक लाल अनेक व पीला एक ४ स्यात् काला, हरा एक लाल व पीला अनेक ५ स्यात् काला एक हरा अनेक लाल व पीला एक ६ स्यात् काला एक हरा अनेक लाल एक व पीला अनेक ७ स्यात् काला एक हरा लाल अनेक पीला एक ८ स्यात् काला

हालिद्दएय ८, सिय कालगाय णीलएय लोहियएय हालिद्दयाय ९, सिय कालगाय णीलएय लोहियगाय हालिद्दएय १०, सिय कालगाय णीलगाय, लोहियएय हालिद्दएय ११, एएक्कारस भंगा ॥ एवमेए पंच चउक्क संजोगा कायव्वा । एक्केक्क संजोए एक्कारस भंगा । सव्वते चउक्कसंजोगेण पणपण्णभंगा ॥ जइ पंचवण्णे-सिय कालएय णीलएय, लोहियएय, हालिद्दएय, सुक्किल्लएय १, सिय कालएय णीलएय लोहियएय, हालिद्दएय, सुक्किल्लगाय २, सिय कालएय, णीलएय लोहियगेय, हालिद्दगाय, सुक्किल्लगेय ३, सिय कालएय, णीलएय, लोहितगाय, हालिद्दगेय, सुक्किल्लएय ४, सिय कालएय

अनेक हरा, लाल व पीला एक ९ स्यात् काला अनेक हरा, लाल एक व पीला अनेक १० स्यात् काला अनेक हरा एक लाल अनेक व पीला एक ११ स्यात् काला, हरा अनेक लाल पीला एक यों अग्यारह भांगे हुवे ऐसे ही चार संयोगी पांच कहना. एक २ चतुष्क संयोगी के अग्यारह २ भांगे कहना सब मिलकर ५५ भांग चार संयोगी के जानना. यदि पांच वर्ण होवे तो १ स्यात् काला, हरा, लाल, पीला व शुक्ल २ स्यात् काला हरा, लाल व पीला एक और शुक्ल अनेक ३ स्यात् काला हरा लाल एक पीला अनेक व शुक्ल एक ४ स्यात् काला हरा एक लाल अनेक व पीला शुक्ल एक ५ स्यात् काला एक हरा अनेक व लाल पीला शुक्ल एक ६ स्यात् काला अनेक हरा, लाल, पीला व शुक्ल एक ऐसे छ भांगे

णीलगाय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किलएय ५, सिय कालगाय, णीलएय, लोहिय-
एय हालिद्दएय सुक्किलएय ६, एवं एए छ भंगा भाणियव्वा, एवमेते सव्वेवि एक्कग
दुयगातियगचउक्कगसंजोग पंचग संजोगेसु एवं छासीयं भंगसयं भवंति ॥ गंधा
जहा पंचपएसियस्स ॥ रसा जहा एयस्स चेव वण्णा ॥ फासा जहा चउप्पएसियस्स
॥ ६ ॥ सत्त पएसिएणं भंते ! खंधे कइवण्णे ? जहा पंचपएसिए जाव सिय
चउप्फासे पण्णत्ते जइ एगवण्णे-एवं एगवण्णदुवण्ण तिवण्णा जहा छप्पएसियस्स,
जइ चउवण्णे-सिय कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय १, सिय कालएय

कहना. यों एक संयोगी ५ द्विसंयोगी ४० तीन संयोगी ८० चार संयोगी ५५ और पांच संयोगी ६ सब १८६ भांगे जानना. गंध के छ पांच प्रदेशिक जैसे कहना, रस के १८६ वर्ण जैसे कहना और स्पर्श के ३६ भांगे चार प्रदेशी जैसे कहना. यों वर्ण के १८६ गंध के ६ रस के १८६ और स्पर्श के ३६ सब मीलकर ४१४ भांगे हुए ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सात प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श पाते हैं ? अहो गौतम ! सात प्रदेशिक स्कंध में पांच वर्ण, दो गंध पांच रस व चार स्पर्श वगैरह जैसे पंच प्रदेशिक स्कंध जैसे कहना. एक वर्ण दो वर्ण और तीन वर्ण का छ प्रदेशिक स्कंध जैसे पांच, चालीस

णीलएय लोहियएय हालिद्दगाय २, सिय कालएय णीलएय लोहियगाय हालिद्दएय ३, एवमेते चउक्क संजोगेणं पण्णरस भंगा भाणियव्वा जाव सियकालगाय णीलगाय लोहियगाय हालिद्दएय ॥ १५ ॥ एवमेते पंच चउक्कसंजोगा णेयव्वा एक्केक्कसंजोए पणरस भंगा, सव्वमेते पंचसत्तरिं भंगाभवंति ॥ जइ पंचवण्णे सिय कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय १, सिय कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लगाय २, सिय कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दगाय सुक्किल्लएय ३, सिय कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दगाय, सुक्किल्लगाय ४, सिय कालएय णीलएय लोहियगाय हालिद्दएय सुक्किल्लएय

व अस्सी भांगे पाते हैं. यदि चार वर्ण होवे तो १ स्यात् काला हरा, लाल व पीला एक २ काला हरा लाल एक पीला अनेक ३ काला हरा एक लाल अनेक पीला एक यों चार संयोगी १५ भांगे जानना. यावत् स्यात् काला, हरा एक लाल अनेक पीला एक ऐसे पांच चार संयोगी करना. एक २ चार संयोगी के पनरह भांगे करना सब मीलकर चार संयोगी के ७५ भांगे होते हैं. यदि पांच वर्ण होवे तो १ स्यात् काला, हरा, लाल, पीला व शुक्ल २ स्यात् काला हरा, लाल पीला एक व शुक्ल अनेक ३ स्यात् काला हरा लाल एक पीला अनेक व शुक्ल एक ४ स्यात् काला हरा लाल एक पीला शुक्ल अनेक ५

५, सिय कालएय, णीलएय, लोहियगाय हालिद्दएय सुक्किलगाय ६, सिय कालएय णीलएय लोहियगाय हालिद्दगाय सुक्किल्लएय ७, सिय कालएय णीलगाय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किलएय ८, सिय कालएय, णीलगाय, लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लगाय ९, सिय कालगेय णीलगाय लोहियएय हालिद्दगाय सुक्किलगेय १०, सिय कालएय णीलगाय लोहियगाय हालिद्दएय सुक्किल्लएय ११, सियकालगाय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किलएय १२, सिय कालगाय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किलगाय १२, सिय कालगाय णीलएय लोहियएय हालिद्दगाय सुक्किलएय १४,

स्यात् काला हरा एक लाल अनेक पीला शुक्ल एक ६ स्यात् काला हरा एक लाल अनेक पीला एक शुक्ल अनेक ७ स्यात् काला नीला एक लाल पीला अनेक व शुक्ल एक ८ स्यात् काला एक हरा अनेक लाल पीला शुक्ल एक ९ स्यात् काला एक हरा अनेक लाल पीला एक और शुक्ल अनेक १० स्यात् काला एक हरा अनेक लाल एक पीला अनेक शुक्ल एक ११ स्यात् काला एक हरा लाल अनेक पीला शुक्ल एक १२ स्यात् काला अनेक हरा, लाल, पीला व शुक्ल एक १३ स्यात काला अनेक हरा लाल पीला एक शुक्ल अनेक १४ स्यात काला अनेक हरा लाल एक पीला अनेक शुक्ल एक १५ स्यात काला अनेक हरा

सिय कालगाय णीलएय लोहियगाय हालिद्दएय सुक्किलएय १५, सिय कालगाय णीलगाय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किलएय १६, एए सोलस भंगा । एवं सव्वमेते एक्कग दुयग तियग चउक्कग पंचग संजोगेण दो सोलस भंगसया भवंति ॥ गंधा जहा चउप्पदेसियस्स ॥ रसा जहा एयस्स चेव वण्णा ॥ फासा जहा चउप्पदेसियस्स ॥ ७ ॥ अट्ठप्पदेसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा ? गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा सत्तपएसियस्स जाव सिय चउफासे पण्णत्ते ॥ जइ एगवण्णे-एगवण्ण दुवण्ण तिवण्णा जहा सत्तपएसिए ॥ जइ चउवण्णे-सिय कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय १, सिय कालएय णीलएय,

एक लाल अनेक पीला व शुक्ल एक १६ स्यात काला हरा अनेक लाल पीला व शुक्ल एक यों सोलह भांगे जानना. यों एक संयोगी ५ द्विसंयोगी ४० तीन संयोगी ८० चार संयोगी ७५ और पांच संयोगी १६ सब मीलकर २१६ पांच वर्ण के भांगे हुवे. गंध के ६ भांगे चार प्रदेशिक स्कंध जैसे जानना. रस के २१६ भांगे वर्ण जैसे करना और स्पर्श के ३६ भांगे करना. सब मीलकर सात प्रदेशिक स्कंध के ४७४ भांगे होते हैं. ॥ ७ ॥ अब आठ प्रदेशिक स्कंध की पृच्छा करते हैं. अहो भगवन् ! आठ प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श कहे हैं ? अहो गौतम ! एक वर्ण होवे यावत् जैसे सातप्रदेशिक स्कंध का

लोहियएय, हालिद्दगाय २, एवं जहेव सत्तपएसिए जाव सिय कालगाय णीलगाय लोहियगाय, हालिद्दगाय १६ ॥ एए सोलस भंगा ॥ एवमेते पंच चउक्क संजोगा एवमेते असीति भंगा ॥ जइ पंचवण्णे-सिय कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय, एवं एएणं कमेणं भंगा उच्चारेयव्वा जाव सिय कालएय णीलगाय लोहियगाय हालिद्दगाय सुक्किल्लएय १५; एसो पण्णरसमो भंगो, सिय कालगाय णीलगेय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय १६. सिय कालगाय णीलगेय लोहियएय

कहा वैसे ही कहना यावत् क्वचित् चार स्पर्श होवे यदि एक वर्ण होवे आठों प्रदेश काले वगैरह एक दो तीन वर्ण का सात प्रदेशिक स्कंध जैसे कहना. यदि चार वर्ण होवे तो १ स्यात् काला, हरा, लाल व पीला एक २ स्यात काला, हरा लाल एक पीला अनेक ऐसे ही जैसे सात प्रदेशों का कहा वैसे ही कहना यावत् स्यात् काला हरा लाल व पीला अनेक वचन यों सोलह भांगे करना ऐसे ही काला हरा, लाल व शुक्ल यों पांच चार संयोगी करना. प्रत्येक चार संयोगी में सोलह २ भांगे जानना. सब मीलकर ८० भांगे चार वर्ण के हुवे. यदि पांच वर्ण होवे तो काला हरा, लाल पीला व श्वेत एक वचन यों अनुक्रम से जैसे पहिले भांगे कहे वैसे ही १५ भांगे करना यावत् स्यात् काला एक हरा, लाल, पीला

हालिद्दएय सुक्किल्लगाय १७, सिय कालगाय णीलएय लोहियएय हालिद्दगाय सुक्किल्लगेय १८, सिय कालगाय णीलगेय लोहितगेय हालिद्दगाय सुक्किल्लगाय १९, सियकालगाय णीलगेय लोहितगाय हालिद्दएय सुक्किल्लएय २०, सिय कालगाय णीलगेय लोहियगाय हालिद्दएय सुक्किलगाय २१, सिय कालगाय णीलगेय लोहियगाय हालिद्दगाय सुक्किल्लगेय २२, सियकालगाय णीलगाय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय २३, सियकालगाय णीलगाय लोहियगेय हालिद्दएय सुक्किल्लगाय २४, सियकालगाय णीलगाय, लोहियगेय हालिद्दगाय सुक्किल्लएय २५,

अनेक व श्वेत एक यह पन्नरहवा भांगा हुवा १६ स्यात् काला अनेक हरा लाल पीला श्वेत एक १७ स्यात् काला अनेक हरा लाल पीला एक श्वेत अनेक १८ स्यात् काला अनेक हरा लाल एक पीला अनेक श्वेत एक १९ स्यात् काला अनेक हरा लाल एक पीला श्वेत अनेक २० स्यात् काला अनेक हरा एक लाल पीला श्वेत एक २१ स्यात् काला अनेक हरा एक लाल अनेक पीला एक श्वेत अनेक २२ स्यात् काला अनेक हरा एक लाल पीला अनेक शुक्ल एक २३ स्यात् काला हरा अनेक लाल पीला व शुक्ल एक २४ स्यात् काला हरा अनेक लाल पीला एक शुक्ल अनेक २५ स्यात् काला हरा अनेक लाल एक पीला अनेक व शुक्ल एक २६ स्यात् काला हरा

सियकालगाय णीलगाय लोहितगाय हालिद्दएय सुक्किल्लएय २६, एए पंचसंजोएणं छव्वीस भंगा भवंति, एवामेव सपुव्वावरेणं एक्कगदुयगतियग चउक्कग पंचग संजोगेहिं एक्कतीसं भंगसयं भवंति ॥ गंधा जहा सत्तपदेसियस्स ॥ रसा जहा एयस्स चेववण्णा ॥ फासा चउप्पदेसियस्स ॥ ८ ॥ णवपदेसियस्स पुच्छा ? गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा अट्ठपदेसिए जाव सिय चउफासा पण्णत्ता ॥ जइ एगवण्णे-एगवण्ण दुवण्ण तिवण्ण चउवण्णा जहेव अट्ठपदेसियस्स ॥ जइ पंचवण्णे- सिय

लाल अनेक पीला व शुक्ल एक यों पांच वर्ण के पांच संयोगी २६ भांगे हुवे. ऐसे ही अनुक्रम से पांच वर्ण के सब मिलकर २३१ भांग होते हैं. गंध का सात प्रदेशी स्कंध जैसे कहना, रस का इस के वर्ण जैसे कहना और स्पर्श का चार प्रदेशी स्कंध जैसे ३६ भांगे जानना. सब मिलकर आठ प्रदेशी स्कंध के ५०४ भांगे होते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! नव प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श पाते हैं ? अहो गौतम ! स्यात् एक वर्ण दो तीन यावत् पांच यों ही दो गंध, पांच रस व चार स्पर्श के आठ प्रदेशिक स्कंध जैसे जानना. यदि एक वर्ण होवे तो एक वर्ण के पांच भांगे, दो वर्ण के ४० भांगे, तीन वर्ण के ८० भांगे, चार वर्ण के ८० भांगे यों सब भांगे आठ प्रदेशिक स्कंध जैसे जानना. यदि पांच वर्ण पावे

कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय १ सियकालएय णीलएय लोहिय-
एय हालिद्दएय सुक्किल्लगाय २, एवं परिवाडीए एक्कतीसं भंगा भाणियव्वा जाव सिय
कालगाय णीलगाय लोहियगाय हालिद्दगाय सुक्किल्लएय एक्कतीसं भंगा ॥ एवं एक्कग दुयग
तियग चउक्कग पंचग संजोगेहिं दो छत्तीसं भंगसया भवंति ॥ गंधा जहा अट्ठपदेसि-
यस्स ॥ रसा जहा एयस्स चेव वण्णा ॥ फासा जहा चउप्पदेसियस्स ॥ ९ ॥ दस-
पदेसियस्सणं भंते ! खंध पुच्छा । गोयमा ! सिय एगवण्णे-जहा णवपदेसिए जाव
चउफासे पण्णत्ते ॥ जइ एगवण्णे-एगवण्ण दुवण्ण तिवण्ण चउवण्णा जहेव णव

तो स्यात् काला, हरा, लाल पीला व श्वेत एक २ स्यात् काला, हरा, लाल व पीला एक शुक्ल अनेक
इस परिपाटि से एकतीस भांगे कहना यावत् स्यात् काला, हरा, लाल पीला एक श्वेत अनेक यों एक
संयोगी ५ द्विसंयोगी ४० तीन संयोगी ८० चार संयोगी ८० और पांच संयोगी ३१ सब मिलकर वर्ण के
२३६ भांग हुवे. गंध के ६ भांगे, रस के वर्ण जैसे २३६ भांगे, और स्पर्श के चार प्रदेशी स्कंध जैसे
३६ भांगे सब मिलकर नव प्रदेशिक स्कंध के ५१४ भांगे हुवे ॥९॥ अहो भगवन् ! दश प्रदेशिक स्कंध में
कितने वर्णादि पाते हैं ? अहो गौतम ! स्यात् एक वर्ण वगैरह जैसे नव प्रदेशिक का कहा वैसे ही

पदेसियस्स ॥ पंचवण्णावि तहेव णवरं बत्तीसइमोवि भंगो भण्णइ, एवमेते एक्कग दुयगतियग चउक्कग पंचग संजोएसु दोण्णि सत्ततीसं भंगसयं भवंति ॥ गंधा जहा णवपदेसियस्स ॥ रसा जहा एयस्स चेव वण्णा फासा जहा चउप्पदेसियस्स ॥ जहा दसपदेसिओ, एवं संखेज्जपएसिओ एवं असंखेज्जपएसिओवि सुहुमपरिणओ अणंत पएसिओ एवं चेव, ॥१०॥ बादरपरिणएणं भंते! अणंतपदेसिए खंधे कइवण्णे? एवं जाव अट्ठारसमे सए जाव सिय अट्ठफासे पण्णत्ते वण्णगंधरसा जहा दसपदेसियस्स ॥ जइ चउफासे

कहना यावत् चार स्पर्श. यदि एक वर्ण होवे तो एक वर्ण के पांच भांगे दो वर्ण के द्विसंयोगी ४०, तीन संयोगी ८०, चार संयोगी ८० भांगे होवे. यदि पांच वर्ण होवे तो ३१ भांगे पूर्वोक्त जैसे जानना और ३२ वा स्यात् काला, हरा, लाल, पीला व श्वेत सब अनेक वचन क्यों कि दश प्रदेशिक स्कंध है. वर्ण के सब मिलकर २३७ भांगे होते हैं. गंध के ६ रस के २३७ वर्ण जैसे और स्पर्श के ३६ चतुष्क प्रदेशिक स्कंध जैसे कहना. यह दश प्रदेशी स्कंध के ५१६ भांगे हुवे. ऐसे ही संख्यात प्रदेशिक व असंख्यात प्रदेशिक का जानना. सूक्ष्म परिणत अनंत प्रदेशिक स्कंध का भी वैसे ही कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! बादर परिणत अनंत प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श कहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! जैसे

सव्वेकक्खडे सव्वे गुरुए सव्वे सीए सव्वे णिद्धे १, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे २, सव्वे कक्खडे, सव्वे गुरुए, सव्वे उसिणे, सव्वे णिद्धे ३, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए, सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे, सव्वेलहुए, सव्वे सीए सव्वेणिद्धे ५, सव्वेकक्खडे सव्वेलहुए, सव्वेसीए सव्वे लुक्खे ६, सव्वे कक्खडे, सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे णिद्धे ७, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे ८, सव्वेमउए सव्वे गुरुए सव्वेसीए सव्वे णिद्ध ९, सव्वेमउए, सव्वेगुरुए सव्वसीए सव्वे लुक्खे १०, सव्वेमउए सव्वे गुरुए सव्वे

अठारवे शतक में कहा जैसे यावत् स्यात् आठ स्पर्श कहे हैं. वर्ण, गंध, रस का दश प्रदेशिक स्कंध जैसे कहना. यदि चार स्पर्श होवे तो १ सब कर्कश सब गुरु सब शीत व सब स्निग्ध २ सब कर्कश सब गुरु सब शीत व सब रूक्ष ३ सब कर्कश सब गुरु सब ऊष्ण व सब स्निग्ध ४ सब कर्कश सब गुरु सब ऊष्ण व सब रूक्ष ५ सब कर्कश सब लघु सब शीत व सब स्निग्ध ६ सब कर्कश सब लघु सब शीत व सब रूक्ष ७ सब कर्कश सब लघु सब ऊष्ण व सब स्निग्ध ८ सब कर्कश सब लघु सब ऊष्ण व सब रूक्ष ९ सब मृदु सब गुरु सब शीत व सब स्निग्ध १० सब मृदु सब गुरु सब शीत व सब रूक्ष ११ सब मृदु सब गुरु
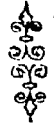
उसिणे सव्वेणिद्धे १ १, सव्वे मउए सव्वेगुरुए सव्वेउसिणे सव्वे लुक्खे १२, सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वेसीए सव्वेणिद्धे १३, सव्वेमउए, सव्वे लहुए सव्वेसीए सव्वे लुक्खे १४ सव्वेमउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे णिद्धे १५, सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे; १६ एएसोलस भंगा॥ जइ पंचफासे-सव्वे कक्खडे सव्वेगुरुए सव्वेसीए, देसे णिद्धे देसे लुक्खे १ सव्वे कक्खडे, सव्वे गुरुए, सव्वेसीए देसे णिद्धे देसा लुक्खा २, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए सव्वेसीए देसा णिद्धा देसालुक्खा ३, सव्वेकक्खडे, सव्वेगुरुए, सव्वेसीए, देसाणिद्धा देसालुक्खा ४,

सब ऊष्ण व सब स्निग्ध १२ सब मृदु सब गुरु सब ऊष्ण व सब रूक्ष १३ सब मृदु सब लघु सब शीत सब स्निग्ध १४ सब मृदु सब लघु सब शीत सब रूक्ष १५ सब मृदु सब लघु सब ऊष्ण व सब स्निग्ध १६ सब मृदु सब लघु सब ऊष्ण व सब रूक्ष यों सोलह भांगे होवें. यदि पांच स्पर्श होवे तो १ सब कर्कश सब गुरु सब शीत देश स्निग्ध देश रूक्ष २ सब कर्कश सब गुरु सब शीत देश स्निग्ध एक वचन देश रूक्ष अनेक वचन ३ सब कर्कश सब गुरु सब शीत देश स्निग्ध देश रूक्ष अनेक वचनांतपद ४ सर्व कर्कश सर्व गुरु सर्व शीत देश स्निग्ध देश रूक्ष यह एक चौभंगी कर्कश गुरु व शीत की स्निग्ध रूक्ष की
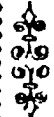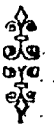
सव्वेकक्खडे सव्वेगुरुए सव्वेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे ४, सव्वेकक्खडे सव्वे लहुए सव्वेसीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे ४, एवं एए कक्खडेणं सोलस भंगा ॥ सव्वेमउए सव्वेगुरुए सव्वेसीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, एवं मउएणवि समं सोलस भंगा ॥ एए बत्तीसं भंगा ॥ सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए सव्वे णिद्धे देसे सीए देसे उसिणे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए सव्वे लुक्खे देसेसीए देसे उसिणे ३ एए बत्तीसं भंगा ॥ सव्वे कक्खडे सव्वे सीए सव्वे णिद्धे देसे गुरुए देसे लहुए ४, एत्थंवि बत्तीसं भंगा ॥

साथ हुई. ऐसे ही सर्व कर्कश सर्व गुरु सर्व ऊष्ण की स्निग्ध व रूक्ष की चौभंगी, सर्व कर्कश, लघु व शीत की देश स्निग्ध व रूक्षकी साथ चौभंगी, सर्व कर्कश लघु व ऊष्णकी स्निग्ध व रूक्ष साथ चौभंगी. इस तरह कर्कशकी साथ सोलह भांगे जानना. जैसे कर्कशके सोलह भांगे हुवे वैसेही मृदु के सोलह भांगे कहना. यों बत्तीस भांगे हुवे. सर्व कर्कश सर्व गुरु सर्वस्निग्ध देश शीत व देश ऊष्ण सर्व कर्कश सर्व गुरु, सर्व रूक्ष देश शीत व देश ऊष्ण यों कर्कश के दूसरे बत्तीस भांगे जानना, सर्व कर्कश सर्व शीत सर्व स्निग्ध देश गुरु व देश लघु इसमें भी बत्तीस भांगे कहना. सर्व गुरु सर्व शीत सर्व स्निग्ध देश कर्कश व देश मृदु इस में भी बत्तीस भांगे करना. ऐसे पांच

सव्वे गुरुए सव्वेसीए सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए ४, एत्थवि बत्तीसं भंगा एवं सव्वेते पंचफासे, अट्ठावीसं भगसयं भवंति ॥ जइ छप्फासे-सव्वेकक्खडे सव्वे गुरुए देसेसिए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुखे १, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसालुक्खा २, एवं जाव सव्वेकक्खडे सव्वेगुरुए देसासीया देसाउसिणा देसाणिद्धा देसालुक्खा ॥ एए सोलस भंगा ॥ सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे एत्थवि सोलस भंगा ॥ सव्वे मउए सव्वे गुरुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे एत्थवि सोलस भंगा ॥ सव्वे मउए

स्पर्श के सब मीलकर १२८ भांगे पांच स्पर्श के होवे यदि छ स्पर्श होवे तो सर्व कर्कश, सर्व गुरु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्धदेश रूक्ष २ सर्व कर्कश सर्व गुरु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध एक देश रूक्ष अनेक वचनांत ऐसेही यावत् सर्व कर्कश सर्व गुरु देश शीत, देश ऊष्ण, देश स्निग्ध व देश रूक्ष अनेक यों सो ह भांगे करना. सर्व कर्कश सर्व लघु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध व देश रूक्ष के भी सोलह भां जानना. सबमृदु सबगुरु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष के भी सोलह भांगे करना और सब मृदु सब [illegible] देश शीत देश ऊष्णदेश स्निग्ध व देशरूक्ष के भी सोलहभांगे करना. यों कर्कश मृदुके चौसठभांगे

सव्वे लहुए देसेसिए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे एत्थवि सोलस भंगा ॥ एए चउसट्ठि भंगा ॥ सव्वे कक्खडे सव्वेसीए देसेगुरुए देसेलहुए देसेणिद्धे देसेलुक्खे एवं जाव सव्वे मउए सव्वेउसिणे देसा गुरुया देसा लहुया देसा णिद्धा देसा लुक्खा एत्थवि चउसट्ठि भंगा ॥ सव्वे कक्खडे सव्वेणिद्धे देसेगुरुए देसेलहुए देसेसीए देसेउसिणे जाव सव्वे मउए सव्वेलुक्खे देसागुरुया देसालहुया देसासीया देसाउसिणा एए चउसट्ठि भंगा ॥ सव्वे गुरुए सव्वेसीए देसेकक्खडे देसेमउए देसेणिद्धे देसे लुक्खे एवं जाव सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसा कक्खडा देणा मउया देसा

हुवे. सब कर्कश सब शीत देश गुरु देश लघु देश स्निग्ध व देश रूक्ष ऐसे ही यावत् सर्व मृदु सर्व ऊष्ण देश गुरु देश लघु देश स्निग्ध देश रूक्ष यों चौसठ भांगे कहना. सर्व कर्कश सर्व स्निग्ध देश गुरु देश लघु देश शीत व देश ऊष्ण यावत् सर्व मृदु सर्व रूक्ष देश गुरु देश लघु देश शीत व देश ऊष्ण अनेक वचनांत यों चौसठ भांगे हुवे. सब गुरु सब शीत, देश कर्कश देश मृदु देश स्निग्ध व देश रूक्ष ऐसे ही यावत् सब लघु सब ऊष्ण देश कर्कश देश मृदु देश स्निग्ध देश रुक्ष के चौसठ भांगे जानना. सब गुरु सब स्निग्ध देश कर्कश देश मृदु देश शीत देश ऊष्ण यावत् सर्व लघु सब रूक्ष देश कर्कश देश मृदु देश शीत देश

णिद्धा देसा लुक्खा ॥ एए चउसट्ठि भंगा ॥ सव्वे गुरुए सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसेसीए देसे उसिणे जाव सव्वे लहुए सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा ॥ एए चउसट्ठि भंगा ॥ सव्वे सीए सव्वेणिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए जाव सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसागरुया देसा लहुया एवमेते चउसट्ठि भंगा॥ सव्वे ते छप्फासे तिण्णि चउरासिया भंगसया भवंति ३८४ ॥ जइ सत्तफासे सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे कक्खडे देसे गुरुए,

ऊष्ण यों चौसठ भांगे कहना. सब शीत सब स्निग्ध देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश लघु यावत् सब ऊष्ण सब रूक्ष देश कर्कश देश मृदु देश गुरु व देश लघु के चौसठ भांगे कहना. छ स्पर्श के सब मीलकर तीन सो चौरासी भांगे होते हैं. यदि सात स्पर्श होवे तो १ सब कर्कश, देश गुरु देश लघु देश शीत देश ऊष्ण, देश स्निग्ध देश रूक्ष २ सब कर्कश देश गुरु देश लघु देश शीत देश ऊष्ण एक वचन देश स्निग्ध देशरूक्ष अनेकवचनांत यों चार भांगे कहना. ४ सब कर्कश देशगुरु देश लघु देश शीत एक वचन देश ऊष्ण अनेक वचन देश स्निग्ध व देश रूक्ष एक ४सब कर्कशदेश गुरु देश लघु देश शीत अनेक वचन देश ऊष्ण

देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसा णिद्धा देसा लुक्खा ४ सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४ सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४ सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसि णा देसे णिद्धे देसे लुक्खे, सव्वेते सोलस भंगा भाणियव्वा ॥ सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे, एवं गुरुएणं एगत्तेणं लहुएणं पुहत्तेणं सोलस भंगा ॥ सव्वे कक्खडे देसा गुरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे एएवि सोलस भंगा भाणियव्वा ॥ सव्वे कक्खडे

एक वचन देश स्निग्ध व देश रूक्ष ४ सब कर्कश देश गुरु देश लघु एक वचन देश शीत देश ऊष्ण अनेक वचन देश स्निग्ध देश रूक्ष ४ यों सब सोलह भांगे हुवे. सब कर्कश देश गुरु एक देश लघु अनेक देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष ऐसे ही गुरु एक वचन व लघु अनेक वचन में सोलह भांगे कहना. सब कर्कश एक देश गुरु अनेक वचन देश लघु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध व देश रूक्ष इस के भी सोलह भांगे कहना. सब कर्कश देश गुरु देश लघु अनेक देश शीत देश (ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष ये सोलह भांगे जानना. यों चौसठ भांगे

देसा गुरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसेणिद्धे देसे लुक्खे एएवि सोलस भंगा भाणियव्वा ॥ एव मेते चउसट्ठि भंगा कक्खडेणसमं ॥ सव्वे मउए देसेगुरुए देसेलहुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे ॥ एवं मउएणवि चउसट्ठि भंगा भाणियव्वा ॥ सव्वे गुरुए देसेकक्खडे देसेमउए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसे लुक्खे, एवं गुरुएणवि चउसट्ठि भंगा कायव्वा ३ ॥ सव्वे लहुए देसे कक्खडे देसेमउए देसेसीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसेलुक्खे, एवं लहुएणविसमं चउसट्ठि भंगा कायव्वा ॥ सव्वेसीए देसेकक्खडे देसेमउए देसेगुरुए देसेलहुए देसेणिद्धे देसे

कर्कश की साथ कहना. सब मृदु देश गुरु देश लघु देश शीत देश ऊष्ण, देश स्निग्ध और देश रूक्ष ऐसे मृदु के भी ६४ भांगे. सब गुरु देश कर्कश देश मृदु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष ऐसे गुरु के ६४ भांगे, सब लघु देश कर्कश देश मृदु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष यों लघु की साथ ६४ भांगे, सब शीत, देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश लघु देश स्निग्ध देश रूक्ष यों शीत की साथ ६४ भांगे, सर्व ऊष्ण देश कर्कश, देश मृदु देश गुरु देश लघु देश स्निग्ध देश रूक्ष यों ऊष्ण की साथ ६४ भांगे, सब स्निग्ध देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश लघु देश शीत देश ऊष्ण यों
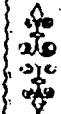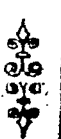
लुक्खे एवं सीतेणवि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा ॥ सव्वे उसिणे देसेकक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसेलहुए देसे णिद्धे देसे लुक्खे ॥ एवं उसिणेणवि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा ॥ सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे देसेमउए देसेगुरुए देसेलहुए देसे सीए देसेउसिणे ॥ एवं णिद्धेणवि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा ॥ सव्वे लुक्खे देसे कक्खडे देसेमउए देसेगुरुए देसे लहुए देसेसीए देसे उसिणे, एवं लुक्खेणवि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा ॥ जाव सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गुरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा एवं सत्तफासे पंचबारसुत्तरा भंगसया भवंति ॥ जइ अट्ठफासे-देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए

स्निग्ध के ६४ भांगे, सब रूक्ष देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देशलघु देश शीत व देशऊष्ण यों रूक्ष के ६४ भांगे यावत् सब रूक्ष देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश शीत देश ऊष्ण अनेक वचन यों सात स्पर्श के सब मीलकर ५१२ भांगे हुवे. यदि आठ स्पर्श होवे तो देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश लघु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध व देश रूक्ष ४ देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश लघु देश शीत एक देश ऊष्ण अनेक देश स्निग्ध देश रूक्ष एक ४ देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश लघु एक देश शीत देश ऊष्ण अनेक
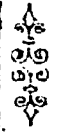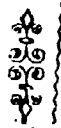
देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४ देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए, देसे गुरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, एए चत्तारि चउक्का सोलस भंगा ॥ देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे, देसे णिद्धे देसे लुक्खे ॥ एवं एते गुरुएणं एगत्तेणं पुहत्तेणं सोलस भंगा कायव्वा ॥ देसे कक्खडे देसे मउए देसा गुरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे एए सोलस भंगा कायव्वा ॥ देसे कक्खडे देसे मउए देसा गुरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे

देश स्निग्ध देश रूक्ष एक ४ देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश लघु एक देश शीत देश ऊष्ण अनेक देश स्निग्ध व देश रूक्ष ४ यों चार चौक के सोलह भांगे हुवे देश कर्कश देश मृदु देश गुरु एक देश लघु अनेक देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष ४ यों गुरु एक अनेक के सोलह भांगे जानना. देश कर्कश, देश मृदु देश गुरु अनेक देश लघु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष यों सोलह भांगे करना. देश कर्कश देश मृदु एक देश गुरु देश लघु अनेक देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध व देश रूक्ष यों

एए वि सोलस भंगा कायव्वा ॥ सव्वेवि ते चउसट्ठि भंगा ॥ कक्खड मउएहिं एगत्तएहिं ताहे कक्खडेणं एगत्तएणं, मउएणं पुहत्तेणं एते चेव चउसट्ठि भंगा कायव्वा॥ ताहे कक्खडेणं पुहत्तएणं, मउएणं एगत्तएणं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा ताहे एतेहिं चेव दोहिंवि पुहत्तेहिं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा ॥ जाव देसा कक्खडा देसा मउया, देसा गुरुया, देसा लहुया, देसासीया देसाउसिणा, देसाणिद्धा देसालुक्खा एसो अपच्छिमो भंगो सव्वेते अट्ठफासे दो छप्पण्णा भंगसया भवंति ॥ एवं एतेवादर-परिणए अणंतपएसिए खंधे सव्वेसु संजोएसु वार छण्णउया भंगसया भवंति ॥११॥ कइविहेणं भंते ! परमाणुपोग्गले पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे परमाणुपोग्गले

सोलह भांगे जानना. सब मीलकर कर्कश मृदु के एक के ६४ भांगे जानना. फीर कर्कश एकत्व व मृदु अनेक के ऐसे ही ६४ भांगे करना, वैसे कर्कश अनेक व मृदु एक के ६४ भांगे और कर्कश व मृदु दोनों अनेक के ६४ भांगे करना यावत् देश कर्कश देश मृदु देश लघु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध व देश रूक्ष अनेक. सब मीलकर आठ स्पर्श के २५६ भांगे होवे. बादर परिणत अनंत प्रदेशिक स्कंध के चार स्पर्श के १६ पांच के १२८ छ के ३८४ सात के ५१२ व आठ स्पर्श के २५६ सब मीलकर १२९६ भांगे हुवे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल के

पण्णत्ते तंजहा-दव्वपरमाणु, खेत्तपरमाणु कालपरमाणु भावपरमाणु ॥ दव्वपरमाणूणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-अच्छेज्जे अभेज्जे अडज्झे अगेज्झे॥ खेत्तपरमाणूणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते ? तंजहा-अणड्ढे, अमज्झे, अपएसे, अविभागे ॥ कालपरमाणु पुच्छा ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-अवण्णे अगंधे अरसे अफासे ॥ भावपरमाणूणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते ॥ सेवं भंते !

चार भेद कहे हैं. १ द्रव्य परमाणु २ क्षेत्र परमाणु, काल परमाणु, व भाव परमाणु. अहो भगवन् ! द्रव्य परमाणु के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य परमाणु के चार भेद कहे हैं. १ अछेद्य २ अभेद्य ३ अदाह्य और ४ अग्राह्य. अहो भगवन् ! क्षेत्र परमाणु के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! क्षेत्र परमाणु के चार भेद कहे हैं. १ अर्ध रहित २ मध्य रहित ३ प्रदेश रहित और ४ विभाग रहित. अहो भगवन् ! काल परमाणु के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! काल परमाणु के चार भेद कहे हैं. १ वर्ण रहित २ गंध रहित. ३ रस रहित व ४ स्पर्श रहित. अहो भगवन् ! भाव परमाणु के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चार भेद कहे हैं. १ वर्ण सहित २ गंध सहित ३ रस सहित व ४ स्पर्श सहित

भंतेत्ति ॥ वीसइमस्स सयस्सय पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २० ॥ ५ ॥

पुढवीकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय अंतरा समोहए समोहणित्ता जे भविए सोहम्मेकप्पे पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए, सेणं भंते ! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा, पुव्विं आहारित्ता पच्छा उववज्जेज्जा, ? गोयमा ! पुव्विंवा उववज्जित्ता एवं जहा सत्तरसमसए छठ्ठुद्देसए जाव से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ पुव्विंवा उववज्जेज्जा णवरं तेहिं संपाउणिण्णा, इमेहिं आहारो भण्णइ, सेसं तंचेव

अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह वीसवा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २० ॥ ५ ॥

पांचवे उद्देशे में पुद्गल परिणाम कहा, छठे उद्देशे में पृथ्वी आदि जीव परिणाम कहते हैं. अहो भगवन् ! जो पृथ्वीकायिक जीव इस रत्नप्रभा व शर्कर प्रभा की बीच में मारणांतिक समुद्घात करके सौधर्म देवलोक में पृथ्वीकायापने उत्पन्न होनेवाला होता है वह क्या पहिला उत्पन्न होकर पीछे आहार करता है अथवा पहिला आहार करके पीछे उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! पहिला उत्पन्न होकर पीछे आहार करता है ऐसा जो सतरहवे शतक के छठे उद्देशे में कहा यावत् अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि पाहिले उत्पन्न होवे और पीछे आहार करे, विशेष में वहां संपाउणण कहा, और यहां पर आहार करना

॥ १ ॥ पुढवीकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए पुढवीए अंतरा समोहए, जे भविए ईसाणेकप्पे पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए ॥ एवं चेव जाव ईसिप्पभाराए उववाएयव्वो ॥ २ ॥ पुढवीकाइएणं भंते ! सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पुढवीए अंतरा समोहए, समोहइत्ता जेभविए सोहम्मे जाव ईसिप्पभाराए ॥ एवं एएणं कमेणं जाव तमाए । अहे सत्तमाए पुढवीए अंतरा समोहए समोहइत्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे जाव ईसिप्पब्भाराए उववाएयव्वो ॥ ३ ॥ पुढवीकाइएणं भंते !

॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा व शर्कर प्रभा की वीच में पृथ्वीकाया मारणांतिक समुद्धात से काल करके ईशान देवलोक में पृथ्वी कायापने उत्पन्न होवे वगैरह पूर्वोक्त जैसे यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी-काया में उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा व वालु प्रभा की वीच में पृथ्वी काया मारणां-तिक समुद्धात करके सौधर्म देवलोक में पृथ्वीकायापने उत्पन्न होने योग्य होवे वगैरह इस क्रम से छठी तमा व सातवी तमतमा पृथ्वी की वीच में पृथ्वीकाया मारणांतिक समुद्धात करके सौधर्म देवलोक में पृथ्वीकायापने उत्पन्न होवे वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे कहना यावत् ईषत्प्रा-ग्भार पृथ्वी में उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥ सौधर्म ईशान व सनत्कुमार माहेन्द्र की वीच में

सोहम्मीसाणं सणंकुमार माहिंदाणय कप्पाणं अंतरा समोहए समोहइत्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए सेणं भंते! पुव्विं उववाजित्ता पच्छा आहारेज्जा सेसं तंचेव, जाव से तेणट्ठेणं जाव णिक्खेवओ ॥ पुढवीकाइयाणं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमारमाहिंदाणय कप्पाणं अंतरा समोहए समोहइत्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पुढवीकाइयत्ताए उववाजित्तए ॥ एवं चेव एवं जाव अहे सत्तमाए उववाएयव्वो ॥ एवं सणंकुमारमाहिंदाणं बंभलोगस्स कप्पस्स अंतरा समोहए समोहइत्ता पुणरवि जाव अहे सत्तमाए उववाएयव्वो । एवं बंभलोगस्स

पृथ्वीकाया मारणांतिक समुद्धात से कालकर के रत्नप्रभा पृथ्वी में पृथ्वीकाया पने उत्पन्न होने योग्य होता है वह क्या पहिले उत्पन्न होकर पीछे आहार करे वगैरह पूर्वोक्त जैसे कहना. अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान व सनत्कुमार माहेन्द्र की बीचमें से पृथ्वीकाया मारणांतिक समुद्धात कर के इस शर्करप्रभा पृथ्वी में पृथ्वीकाया पने उत्पन्न होवेतो वह क्या पहिले उत्पन्न होवे और पीछे आहार करे अथवा पहिले आहार करे और पीछे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे पूर्वोक्त कहा वैसे ही यहां जानना ऐसे ही नीचे की सातवी पृथ्वीतक कहना. इसी क्रम से सनत्कुमार माहेन्द्र व ब्रह्म देवलोक के बीच की पृथ्वीकाया का
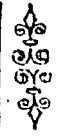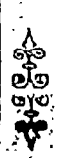
लंतगस्सय कप्पस्स अंतरा समोहए पुणरवि जाव अहे सत्तमाए, एवं लंतगस्स महासुक्कस्स कप्पस्स अंतरासमोहए पुणरवि जाव अहे सत्तमाए एवं महासुक्कस्स सहस्सारस्सय कप्पस्स अंतरा पुणरवि जाव अहे सत्तमाए एवं सहस्सारस्सय आणयपाणयकप्पाणं अंतरा पुणरवि जाव अहे सत्तमाए एवं आणयपाणय आरणअच्चुताणय कप्पाणं अंतरा, पुणरवि जाव अहे सत्तमाए एवं आरण अच्चु-ताणंगवेज्जगविमाणाणय अंतरा पुणरवि जाव अहे सत्तमाए एवं गेवेज्जगविमाणाणं अणुत्तरविमाणाणय अंतरा पुणरवि जाव अहे सत्तमाए, एवं अणुत्तरविमाणाणं ईसिप्पभाराएय पुणरवि जाव अहे सत्तमाए उववायव्वो ॥ ४ ॥ आउकाइएणं

जानना. ऐसे ही ब्रह्मलोक व लंतक के बीच का पृथ्वीकाया मारणांतिक समुद्घात यावत् नीचे सातवी पृथ्वी में पृथ्वीकायापने पहिले आहार कर के पीछे उत्पन्न होवे. ऐसे ही लंतक व महा शुक्र, महाशुक्र व सहस्रार, सहस्रार व आणतप्राणत, आणतप्राणत व आरणअच्युत, आरणअच्युत व ग्रैवेयकविमान, ग्रैवेयकविमान व अनुत्तर विमान और अनुत्तरविमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी की बीच में पृथ्वीकाया मारणांतिक समुद्घात कर के रत्नप्रभा में पृथ्वी कायापने उत्पन्न होने योग्य होवे वगैरह सब पूर्वोक्त यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी में पृथ्वीकायापने उत्पन्न होवे ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा व
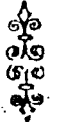
भंते ! इमीसे रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय पुढवीए अंतरा समोहए समोहइत्ता जे भविए सोहम्मेकप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए सेसं जहा पुढवीकाइयस्स जाव से तेणट्ठेणं; एवं पढमा दोच्चाणं अंतरा समोहओ जाव ईसिप्पभाराए उववाएयव्वो; एवं एएणं कमेणं जाव तमाए अहे सत्तमाए पुढवीए अंतरा समोहए स० जाव ईसिप्प-भाराए उववाएयव्वो आउकाइयत्ताए ॥ ५ ॥ आउकाइयाएणं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमारमाहिंदाणय कप्पाणं अंतरा समोहए समोहइत्ता जे भविए इमीसे रयण-

शर्कर प्रभा के बीच का अप्काय मारणांतिक समुद्घात से काल कर के सौधर्म देवलोक में अप्कायापने उत्पन्न होने योग्य होवे वह क्या पहिला उत्पन्न होवे और पीछे आहार करे अथवा पहिले आहार करके पीछे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे पृथ्वी काया की वक्तव्यता कही वैसे ही यहां कहना ऐसेही पहिली दूसरी नारकी के बीच का अप्काया की उत्पत्ति का कथन ईषत्प्राग्भार पृथ्वी पर्यंत कहना. और इसी क्रम से दूसरी तीसरी यावत् छठी सातवी के बीच का अप्काय का उत्पन्न होना ईषत्प्राग्भार पृथ्वी पर्यंत कहना. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्मईशान व सनत्कुमार माहेन्द्र देवलोक की बीच का अप्काया मारणांतिक समुद्घात से काल कर के इस रत्नप्रभा पृथ्वी में घनोदधि के वलय में उत्पन्न होने योग्य

प्पभाए पुढवीए घणोदधिघणोदधिवलएसु आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, सेसं तंचेव एवं एएहिं चेव अंतरे समोहत्ताओ जाव अहे सत्तमाए पुढवीए घणोदधिघणोदधि वलएसु आउकाइयत्ताए उववाएयव्वो, एवं जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसिप्पभाराए पुढवीए अंतरा समोहए जाव अहे सत्तमाए घणोदधि घणोदधिवलएसु उववाएयव्वो ॥ ६ ॥ वाउकाइयाएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए पुढवीए अंतरा समोहए समोहइत्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउकाइयत्ताए उववज्जित्तए एवं जहा सत्तरसमसए वाउकाइयउद्देसएसु तहा इहवि, णवरं अंतरेसु समोहणा वेयव्वो

शेष पूर्वोक्त जैसे यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी के घनोदधि के घनोदधि वलय में अप्कायापने उत्पन्न होवे तक कहना. और इसी तरह सनत्कुमार माहेन्द्र व ब्रह्मदेवलोक यावत् अनुत्तरविमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी के बीच का अप्काय का सातवी पृथ्वी के घनोदधि के घनोदधि वलय में अप्कायापने उत्पन्न होने का कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा व शर्करप्रभा के बीच का वायुकाया मारणांतिक समुद्घात से काल कर के सौधर्म देवलोक में वायुकाय पने उत्पन्न होने योग्य होवे वह क्या वहां उत्पन्न होकर आहार करे अथवा आहार करके उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! इस का जैसे सत्तरहवे शतक में

सेसं तंचेव जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसिप्पभाराएय पुढवीए अंतरा समोहए समो-इत्ता जेभविए घणवात तणुवात घणवातवलएसु तणुवातवलएसु वाउकाइयत्ताए उव-वज्जित्तए ॥ सेसं तंचेव जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेजा ॥ सेवं भंते! भंतेत्ति ॥ वीसइ-मस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २० ॥ ६ ॥ × ×

कइविहेणं भंते ! बंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते, तंजहा जीवप्पओग

वायुकाया का उद्देशा कहा वैसे ही यहां जानना. विशेष में बीच में समोहणा करने का कहना यावत् अनुत्तर विमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी के बीच का वायुकाय मारणांतिक समुद्धात कर के घनवात तनुवात के घनवात वलय व तनुवात वलय में वायु कायापने उत्पन्न होने योग्य होवे; शेष वैसे ही जानना. यावत् इसलिये उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह वीसवा शतका छठा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ६ ॥ ० ० ० ०

छठे उद्देशे में पृथिव्यादिक के आहार वक्तव्यता कही. आहार से बंध होवे इस से आगे बंध का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! बंध के तीन भेद कहे हैं. १ जीव प्रयोग बंध २ अनंतर बंध व ३ परंपरा बंध. मन प्रमुख व्यापार से जो बंध होवे सो कर्मों का बंध होवे, वह जीव प्रयोग २ प्रथम समय में कर्म पुद्गल का जो बंध वर्तता है वह अनंतर बंध और ३ द्वितीयादि

बंधे, अणंतरबंधे, परंपरबंधे ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते ! कइविहे बंधे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥ एवं जाव वेमाणिए ॥ २ ॥ णाणावरणिजस्सणं भंते ! कम्मस्स कइविहे बंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे बंधे प० तंजहा-जीवप्पओग बंधे, अणंतर बंधे परंपरबंधे ॥ णेरइयाणं भंते ! णाणावरणिजस्स कम्मस्स कइविहे बंधे प०? एवं चेव ॥ एवं जाव वेमाणियस्स ॥ एवं जाव अंतराइयस्स ॥ ३ ॥ णाणावरणिज्जोदयस्सणं भंते ! कम्मस्स कइविहे बंधे प० ? गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते एवं चेव ॥ एवं

समय में जो कर्मपुद्गलों का बंध वर्तता है वह परंपरा बंध ॥ १ ॥ नरक से लेकर वैमानिक पर्यंत चौवीस दंडक में तीनों प्रकार के बंध कहे हैं ॥२॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म के कितने बंध कहे हैं ? अहो गौतम ! तीन बंध कहे हैं. जीव प्रयोग बंध, अनंतर बंध, व परंपरा बंध. अहो भगवन् ! नारकीको ज्ञानावरणीय कर्म के कितने बंध कहे हैं ? अहो गौतम ! उक्त तीनों बंध कहे हैं. वैसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. जैसे ज्ञानावरणीय का कहा वैसे ही दर्शनावरणीय यावत् अंतराय का कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म के उदय के कितने बंध कहे हैं ? अहो गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म के उदयके तीन बंध कहे हैं. जीव प्रयोग बंध, अनंतरा बंध व परंपरा बंध. उक्त ज्ञानावरणीय कर्म के उदयके

णेरइयाणवि एवं जाव वेमाणिए ॥ एवं जाव अंतराइयउदयस्स ॥ ४ ॥ इत्थीवेदस्सणं भंते ! कइविहे बंधे पण्णत्ते ? ॥ एवं चेव ॥ असुरकुमाराणं भंते ! इत्थीवेदस्स कइविहे बंधे प० ॥ एवं चेव ॥ एवं जाव वेमाणिए, णवरंजस्स इत्थिवेदो अत्थि ॥ एवं पुरिसवेदस्सवि ॥ एवं चेव णपुंसग वेदस्सवि ॥ जाव वेमाणिए; णवरं जस्सजो अत्थि वेदो ॥ ५ ॥ दंसणमोहणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स कइविहे बंधे, एवं णिरंतरं जाव वेमाणिए ॥ एवं चरित्तमोहणिज्जस्सवि ॥ जाव वेमाणिए ॥ एवं एएणं कमेणं

तीनों बंध चौवीस दंडक आश्री जानना. ज्ञानावरणीय जैसे अंतराय तक कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! स्त्री वेद के कितने बंध कहे हैं ? अहो गौतम ! स्त्री वेद के उक्त तीनों बंध कहे हैं. अहो भगवन् ! असुरकुमार के स्त्री वेद के कितने बंध कहे हैं ? अहो गौतम ! उक्त तीनों बंध कहे हैं. ऐसे ही दश भवनपति, तिर्यंच, मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक तक कहना. पुरुष वेद का भी वैसेही कहना. नपुंसक वेद भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक छोडकर अन्य स्थान पाते हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! दर्शन मोहनीय कर्म के कितने बंध कहे हैं ? अहो गौतम ! ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ऐसे ही चारित्र मोहनीय कर्म का भी वैमानिक पर्यंत कहना. इसी तरह उदारिक शरीर यावत् कार्माण

ओरालिय सरीरस्स जाव कम्मग सरीरस्स आहारसण्णाए जाव परिग्गहसण्णाए ॥ कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ॥ सम्मदिट्ठीए मिच्छादिट्ठीए सम्मामिच्छादिट्ठीए ॥ आभिणिवोहिय णाणस्स जाव केवलणाणस्स, मइअण्णाणस्स सुअअण्णाणस्स विभंग णाणस्स, एवं ॥ आभिणिबोहियणाणविसयस्सणं भंते! कइविहे बंधे पण्णत्ते जाव केवल णाणविसयस्सवि, मति अण्णाणाविसयस्स, सुअअण्णाण विसयस्स, विभंगणाणविसयस्स एएसिं पदाणं तिविहे बंधे पण्णत्ते, सव्वेते चउवीसदंडगा भाणियव्वा, णवरं जाणि यव्वं जस्स जं अत्थि जाव वेमाणिए ॥ विभंगणाणविसयस्स कइविहे बंधे पण्णत्ते? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा-जीवप्पओग बंधे अणंतर बंधे परंपर बंधे ॥ सेवं

शरीर आहार संज्ञा यावत् परिग्रह संज्ञा का जानना. कृष्णलेश्या यावत् शुक्ल लेश्या, समदृष्टि मिथ्यादृष्टि व सम मिथ्यादृष्टि आभिनिवोधिकज्ञान यावत् केवल ज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुत अज्ञान व विभंग ज्ञान का कहना. ऐसे ही आभिनिवोधिक ज्ञान के विषय के कितने बंध कहे हैं यावत् केवल ज्ञान विषय के कितने बंध कहे हैं? तीन भेद कहे हैं. मतिअज्ञान विषय, श्रुत अज्ञान विषय और विभंग ज्ञान विषय के भी तीन भेद कहे हैं. वे सब चौवीस दंडक पर उतारना. यावत् अहो भगवन्! विभंगज्ञान विषय के कितने बंध कहे हैं?

भंते ! भंतेत्ति ॥ वीसइमस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २० ॥ ७ ॥ ०

कइविहेणं भंते ! कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ! गोयमा ! पण्णरसकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तंजहा- पंच भरहाइं, पंचएरवयाइं, पंचमहाविदेहाइं ॥ १ ॥ कइविहेणं भंते ! अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तीसं अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ तंजहा-पंचहेमवयाइं, पंचऐरण्णवयाइं, पंच हरिवासाइं. पंचरम्मगवासाइं, पंचदेवकुराइं, पंचउत्तरकुराइं ॥ २ ॥ एएसुणं भंते ! तीसासु अकम्मभूमीसु अत्थि उस्सप्पिणी-

अहो गौतम ! तीन बंध कहे हैं. जीव प्रयोग बंध अनंतरा व परंपरा बंध. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह बीसवा शतक का सातवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २० ॥ ७ ॥ ० ०

सातवे उद्देशे में बंध का कथन किया. बंध का अंत कर्मभूमि में होता है इसलिये आठवे उद्देशे में कर्मभूमिका कथन करते हैं. अहो भगवन् ! कर्म भूमियों कितनी कहीं ? अहो गौतम ! पन्नरह कर्मभूमियों कहीं-जिनके नाम पांच भरत पांच एरवत और पांच महाविदेह ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अकर्म भूमि के कितने भेद कहे हैं. ? अहो गौतम ! अकर्मभूमि के तीस भेद कहे हैं. पांच हेमवय, पांच एरणवय, पांच हरिवर्ष, पांच रम्यक् वर्ष, पांच देवकुरु व पांच उत्तरकुरु. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! इन तीस अकर्म

तिवा ओसप्पिणीतिवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ३ ॥ एएसुणं भंते पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु अत्थि उस्सप्पिणीतिवा ओसप्पिणीतिवा ? हंता अत्थि ॥ ४ ॥ एएसुणं पंचसु महाविदेहेसु णेवत्थि ओसप्पिणीतिवा उस्सप्पिणीतिवा, अवट्ठिएणं तत्थकाले पण्णत्ते? समणाउसो ! ॥५॥ एएसुणं भंते ! पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं सपाडिक्कमणं धम्मं पण्णवेंति? णो इणट्ठे समट्ठे ॥६॥ एएसुणं पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु पुरिम पच्छिमगा दुवे अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं सपाडिक्कमणं धम्मं पण्णवेंति, अवसेसाणं अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति एएसुणं पंचसु महाविदेहेसु अरहंता

भूमि में क्या उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वहां अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं है. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच भरत एरवत में क्या अवसर्पिणी उत्सर्पिणी है ? हां है. ॥ ४ ॥ अहा आयुष्यमन्त श्रमणों ! इन पांच महाविदेह क्षेत्रमें अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल नहीं है परंतु अवस्थित काल है. अहो भगवन् ! इन पांच महाविदेह क्षेत्र में जो अरिहंत भगवंत होते हैं वे क्या प्रतिक्रमण सहित पांच महाव्रत रूप धर्म प्ररूपते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् नहीं प्ररूपते हैं. ॥ ६ ॥ अहो गौतम ! इन पांच भरत एरवत में पहिले छेल्ले दो अरिहंत भगवंत प्रतिक्रम सहित पांच महाव्रत प्ररूपते हैं शेष सब चार याम रूप धर्म कहते हैं ? इन पांच महाविदेह क्षेत्र में अरिहंत भगवंत चार

भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति ॥ ७ ॥ जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे भारहेवासे इमीसे उस्सप्पिणीए कइतित्थगरा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्वीसं तित्थगरा प० तंजहा-उसभ, अजिय संभव, अभिणंदण, सुमइ, सुप्पभं, सुपासं, ससि, पुप्फदंत, सीयल, सेज्जंस, वासुपुज्जं, विमलं, अणंतं, धम्मं, संतिं, कुंथुं, अरं, मल्लि, मुणिसुव्वयं, नमिं, नेमिं; पासं वद्धमाणं ॥ ८ ॥ एएसिणं भंते ! चउव्वीसाय तित्थगराणं कइजिणंतरा पण्णत्ता ? गोयमा ! तेवीसं जिणंतरा पण्णत्ता ॥ ९ ॥ एएसुणं भंते ! तेवीसाए जिणंतरे कस्स कहिं कालियसुयस्स वोच्छेदे पण्णत्ते ? गोयमा ! एएसुणं तेवीसाए

याम रूप धर्म प्ररूपते हैं. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में कितने तीर्थंकर कहे ? अहो गौतम ! चौवीस तीर्थंकर कहे हैं. जिनके नाम १ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन ५ सुमति ६ सुप्रभ ७ सुपार्श्व ८ चंद्रप्रभ ९ पुष्पदंत १० शीतल ११ श्रेयांस १२ वासुपूज्य १३ विमल १४ अनंत १५ धर्म १६ शांति १७ कुंथु १८ अर १९ मल्ली २० मुनिसुव्रत २१ नमी २२ नेमी २३ पार्श्व और २४ वर्धमान ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! इन चौविस तीर्थंकर के कितने जिनांतर कहे हैं ? अहो गौतम ! चौविस तीर्थंकर के तेवीस जिनांतर कहे हैं. ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! इन तेवीस जिनांतर में से कौनसे जिनांतर में कौनसे कालिक सूत्रोंका व्यवच्छेद हुवा ? अहो गौतम ! पहिले के आठ व छेल्ले आठ यों

जिणंतरेसु पुरिमे पच्छिमएसु अट्ठसु २ जिणंतरेसु एत्थणं कालियसुयस्स अवोच्छेदे पण्णत्ते, मज्झिमएसु सत्तसु जिणंतरेसु एत्थणं कालियसुयस्स वोच्छेदे पण्णत्ते; सव्वत्थविणं वोच्छेदे दिट्ठिवाए ॥ ९ ॥ जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे भारहेवासे इमीसे उस्सप्पिणीए देवाणुप्पियाणं केवइयं कालं पुव्वगए अणुसिज्जिस्सइ ? गोयमा ! जंबुद्दीवेणं दीवे भारहेवासे इमीसे उस्सप्पिणीए ममं एगं वाससहस्सं पुव्वगए अणुसिज्जिस्सइ ॥ १० ॥ जहाणं भंते ! जम्बूदीवे दीवे भारहेवासे इमीसे उस्सप्पिणीए देवाणुप्पियाणं एगं वाससहस्सं पुव्वगए अणुसिज्जिस्सइ तहाणं भंते ! जंबुदीवे दीवे भारहेवासे इमीसे ओसप्पिणीए अवसेसाणं तित्थंगराणं केवइयं कालं पुव्वगए अणु-

सोलह जिनांतर में कालिक सूत्रों का विच्छेद नहीं कहा है. बीच के सात जिनांतर में कालिक सूत्रों का व्यवच्छेद कहा है, सब जिनांतर में दृष्टिवाद का विच्छेद कहा है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इसी अवसर्पिणी में आप के संबंध पूर्वगत कितना काल तक रहेगा ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में मेरा संबंधी पूर्वगत एक हजार वर्ष पर्यंत रहेगा. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में जैसे आप का पूर्वगत एक हजार वर्ष पर्यंत रहेगा वैसे ही इस अवसर्पिणी के शेष तिर्थंकरों का पूर्वगत कितना काल तक रहेगा ? अहो गौतम ! कितनेक तिर्थंकरों का संख्यात काल

सिज्जित्था ? गोयमा ! अत्थेगइयाणं संखेज्जं कालं अत्थेगइयाणं असंखेज्जं कालं ॥ ११ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमीसे उस्सप्पिणीए देवाणुप्पियाणं केवइयं कालं तित्थे अणुसिज्जिस्सइ ? गोयमा ! जंबूद्दीवेदीवे भारहेवासे इमीसे उस्सप्पिणीए ममं एगवीसं वाससहस्साइं तित्थे अणुसिज्जिस्सइ । जहाणं भंते ! जंबुद्दीवेदीवे भारहेवासे इमीसे उस्सप्पिणीए देवाणुप्पियाणं एक्कवीसं वाससहस्साइं तित्थे अणुसिज्जिस्सइ, तहाणं भंते ! जंबुद्दीवेदीवे भारहेवासे आगमेस्साणं चरमतित्थगरस्स केवइयं कालं तित्थे अणुसिज्जिस्सइ ? गोयमा ! जावइएणं उसभस्स अरहओ कोसलियस्स

काल और कितनेक तीर्थंकरों का असंख्यात काल तक पूर्वगत रहेगा. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में आप का तीर्थ कितना काल पर्यंत रहेगा ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में मेरा तीर्थ एकवीस हजार वर्ष पर्यंत रहेगा. अहो भगवन् ! जब जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में आप का तीर्थ एकवीस हजार वर्ष पर्यंत रहेगा. तब जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आगामी चरम तीर्थंकरका तीर्थ कितने काल पर्यंत रहेगा ? अहो गौतम ! कोशल देश के उत्पन्न ऋषभनाथ स्वामी

जिणपरियाए तावइयाए संखेज्जाइं आगमेस्साणं चरमतित्थगरस्स तित्थे अणुसिज्जिस्सइ ॥ १२ ॥ तित्थं भंते ! तित्थे तित्थंकरे तित्थे ? गोयमा ! अरहा ताव णियमं तित्थंगरेति; तित्थे पुण चाउवण्णाइण्णे समणसंघे, तंजहा-समणा समणीओ सावगा सावियाओ ॥ १३ ॥ पवयणं भंते ! पवयणं पावयणं पवयणं ? गोयमा ! अरहा ताव णियमं पावयणी पवयणं, पुण दुवालसंगे गणिपिडगे, तंजहा-आयारो जाव दिट्ठिवाओ ॥ १४ ॥ जे इमे भंते ! उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा णाया कोरवा एए अस्सिं धम्मे ओगाहइ, ओगाहइत्ता अट्ठविहं कम्मरयमलं पवाहिंति २ त्ता

की जितनी जिन पर्याय उतना संख्यात काल पर्यंत आगामिक चरम तीर्थंकर का तीर्थ रहेगा ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! तीर्थ को तीर्थ कहना या तीर्थंकर को तीर्थ कहना ? अहो गौतम ! अरिहंत तीर्थ करनेवाले हैं. और साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका इन चारों वर्णों से आकीर्ण श्रमणसंघ तीर्थ है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! शास्त्रों को प्रवचन कहना या शास्त्र कर्त्ता को प्रवचन कहना ? अहो गौतम ! अरिहंत प्रवचनी हैं, क्योंकि वे शास्त्र के उपदेष्टा हैं और द्वादशांग गणिपिडग ही प्रवचन हैं. जिन के नाम. आचारांग यावत् दृष्टिवाद ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! जो उग्रकुलवाले, भोगकुलवाले, राजा के कुलवाले, इक्ष्वाक के

तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? हंता गोयमा ! जे इमे उग्गा भोगा तंचेव जाव अंतं करेंति ॥ अत्थेगइया अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥ १५ ॥ कइविहाणं भंते ! देवलोया पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवलोया पण्णत्ता, तंजहा-भवणवासी, वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ वीसइमस्स अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २० ॥ ८ ॥ ० ०

कइविहाणं भंते चारणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा चारणा पण्णत्ता तंजहा-विज्जा

कुलवाले, ज्ञात और कौरव के कुलवाले इस धर्म में हैं वे आठप्रकार की कर्म रज को प्रक्षाल कर सिद्ध होवेंगे यावत् सब दुःखों का क्या अंत करेंगे ? हां गौतम ! जो उग्र, भोग यावत् अंत करेंगे; और कितनेक अन्यतर देवलोक में देवतापने उत्पन्न होंगे ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! देवलोक कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! चार देवलोक कहे हैं १ भवनवासी २ वाणव्यंतर ३ ज्योतिषी और ४ वैमानिक. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह वीसवा शतक का आठवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २० ॥ ८ ॥

आठवे उद्देशे के अंत में देवता का कथन किया. देवता आकाश में गमन करने वाले होते हैं ऐसे ही अनगार भी आकाशचारी होते हैं, इस से उन का कथन इस नववे उद्देशे में चलता है. अहो भगवन् ! चारण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चारण दो प्रकार के कहे हैं. १ पूर्वगत सूत्राभ्यासी आकाश

चारणाय जंघाचारणाय ॥ १ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-विज्जाचारणाय ? विज्जाचारणाय गोयमा ! तस्सणं छट्ठंछट्टेणं अणिक्खित्तेणं तओकम्मेणं विज्जाएसु उत्तरगुणलद्धिखममाणस्स विजाचारणलद्धी णामं लद्धी समुप्पज्जइ, से तेणट्ठेणं जाव विज्जाचारणा, विज्जाचारणा ॥ २ ॥ विज्जाचारणस्सणं भंते ! कहं सीहागई कहं सीहेगइविसए पण्णत्ते ? गोयमा अयण्णं जंबूदीवेदीवे जाव किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं देवेणं महिड्ढीए जाव महेसक्खे जाव इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुदीवं

में गमन करे सो विद्याचारण और २ जंघा शक्ति विशेष से जो आकाश में गमन करे सो जंघा चारण ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! विद्याचारण क्यों कहा गया है ? अहो गौतम ! अंतर रहित छठ २ का तप करने से, पूर्वगत श्रुत विशेष से उत्तरगुण पिंड विशुद्धादिक से विद्याचारण नामक लब्धि प्राप्त होवे इस से अहो गौतम ! विद्या चारण लब्धि कही ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! विद्याचारण की कैसी शीघ्रगति और कैसा शीघ्रगति विषय है ? अहो गौतम ! एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा इस जम्बूद्वीप को तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्ताइस योजन से कुच्छ अधिक परिधि है, उसे कोई महा ऋद्धिवंत यावत् महा ऐश्वर्यवंत देवता तीन चपटी बजाने जितनी देर में तीन सरवत प्रदक्षिणा देकर शीघ्र आजाता है.

दीवं तिहिं अच्छिराणिवाएहिं तिक्खुत्तो अणुपरियाट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा; विज्जाचारणस्सणं तहा सीहागई तहा सीहे गइविसए पण्णत्ते ॥३॥ विज्जाचारणस्सणं भंते ! तिरियं केवइयं गतिविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! सेणं एगेणं उप्पाएणं माणसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, वंदइत्ता वितिएणं उप्पाएणं णंदिस्सरवरदीवे समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, वंदइत्ता तओ पडिणियत्तइ,

जैसी देवता की शीघ्रगति कही वैसी शीघ्रगति विद्याचारण मुनि की होती है. और इतना ही उस की गति का विषय कहा है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! विद्याचारण का कितना तीर्च्छागति विषय कहा है ? अहो गौतम ! विद्याचारण एक ही उपपात में यहां से उडकर अढाइ द्वीप की मर्यादा करनेवाला मानुषोत्तर पर्वत पर समवसरण करे—विश्राम लेवे. वहां विश्राम लेकर चैत्यवंदन करे अर्थात् जिनेन्द्र के कथनानुसार सब अवलोकन करके जिनेन्द्र के ज्ञान का गुणानुवाद करे कि धन्य है आप का ज्ञान. आपने फरवाया वैसा ही है + इस तरह वहां चैत्य वंदन करके दूसरे उपपात में आठवा नंदीश्वर द्वीप पर

+ यहां (वंदइ) शब्द का अर्थ गुणानुवाद ही होता है, न कि नमस्कार करना. नमस्कार करने के लिये वंदइ णमंसइ ऐसे पाठ दीये जाते हैं.

पडिणियत्तइत्ता इहमागच्छइ; मागच्छइत्ता इहं चेइयाइं वंदइ विज्जाचारणस्सणं गोयमा ! तिरियं एवइए गतिविसए पण्णत्ते ॥ ४ ॥ विज्जाचारणस्सणं भंते ! उड्ढं केवइए गतिविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! सेणं इओ एगेणं उप्पाएणं णंदणवणे समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ,वंदइत्ता वितिएणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेइ २ त्ता, तहिं चेइयाइं वंदइ, वंदइत्ता तओ पडिणियत्तइ २ त्ता इहमागच्छइ २ त्ता इहं चेइयाइं वंदइ, विज्जाचारणस्सणं गोयमा ! उड्ढं एवइयं गइविसए प० ॥ ५ ॥ सेणं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ णत्थितस्स आरा-

विश्राम करे वहां पर भी उक्त रीति से चैत्यवंदन करके वहां से पीछा यहां पर अपने स्थान आवे, और यहां पर भी उक्त रीति से चैत्य वंदन करे. अहो गौतम ! विद्याचारण का तीर्च्छा इतना विषय कहा है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! विद्याचारणका ऊर्ध्व कितना विषय कहा है ? अहो गौतम ! विद्याचारण एक उपपात में यहां से उडकर मेरु पर्वत के नंदनवन में विश्राम लेवे वहां भी ज्ञानी के गुणका गुणानुवाद करे. वहां से दूसरे उपपात में पंडगवन में समवसरण करे, वहां पर भी ज्ञानी के गुणों का गुणानुवाद करे और वहां से पीछा अपने स्थान आवे. अहो गौतम ! विद्याचारण का ऊर्ध्व गमन का इतना विषय कहा है ॥ ५ ॥ वह उस स्थान की आलोचना प्रतिक्रमण किये बिना काल कर जावे तो

हणा ॥ सेणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥ ६ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जंघाचारणा ? जंघाचारणा गोयमा ! तस्सणं अट्ठमं अट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तओकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स जंघाचारणलद्धी णामं लद्धी समुप्पज्जइ, से तेणट्ठेणं जाव जंघाचारणा जंघाचारणा ॥ ७ ॥ जंघाचारणस्सणं भंते ! कहं सीहागई, कहं सीहे गइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवदीवे एवं जहेव विज्जाचारणस्स, णवरं तिसत्तखुत्तो अणुपरियाट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा, जंघाचारणस्सणं गोयमा ! तहा सीहागई तहा सीहेगतिविसए पण्णत्ते सेसं तंचेव ॥ ८ ॥ जंघाचारणस्सणं भंते ! तिरियं केवइए गतिविसए पण्णत्ते ? गोयमा !

उस को आराधना नहीं होती है और आलोचना प्रतिक्रमण कर काल कर जावे तो आराधना होती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जंघाचारण क्यों कहा ? अहो गौतम ! तेले २ का निरंतर तप करके आत्मा को भावने से जंघाचारण नामक लब्धि प्राप्त होती है, इस से जंघाचारण कहाये गये हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जंघाचारण की कैसी शीघ्रगति व कैसा शीघ्रगति विषय है ? अहो गौतम ! जैसे विद्याचारण का कहा वैसे ही कहना विशेष में इक्कीस वक्त फीर कर आजावे. अहो गौतम ! जंघाचारण की ऐसी शीघ्रगति और शीघ्रगति विषय है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! जंघा चारण का तीच्छी कितना विषय कहा है ? अहो गौतम ! वह एक उत्पात से तेरवा रुचकवर द्वीप में समवसरण करे वहां

सेणं इओ एगेणं उप्पाएणं रुयगवरेदीवे समोसरणं करेइ, करेइत्ता चेइयाइं वंदइ, वंदइत्ता तओ पडिणियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं णंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ २ त्ता, तहिं चेइयाइं वंदइ २ त्ता इहं हव्वमागच्छइ, इहं चेइयाइं वंदइ ॥ जंघाचारणस्सणं गोयमा ! तिरियं एवइए गइविसए पण्णत्ते ॥९॥ जंघाचारणस्सणं भंते ! उड्ढं केवइए गतिविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! सेणं इओ एगेणं पंडगवणे समोसरणं करेइ २ त्ता, तहिं चेइयाइं वंदइ २ त्ता तओ पडिणियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं णंदणवणे समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ २ त्ता इह मागच्छइ २ त्ता

ज्ञानी के ज्ञान का गुणानुवाद करे, वहां से पीछे आते दूसरे उत्पात में आठवा नंदीश्वर वर द्वीप में आवे वहां समवसरण कर के ज्ञानी के ज्ञान का गुणानुवाद करे और वहां से यहां आवे यहां आकर फीर ज्ञानी के ज्ञान का गुणानुवाद करे. अहो गौतम ! जंघाचारण का यह तीर्च्छा विषय कहा है. ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! जंघाचारण का ऊर्ध्व कितना गति विषय कहा ? अहो गौतम ! एक उत्पात से यहां से उडकर पंडगवन में विश्राम करे, वहां ज्ञानी के ज्ञान का गुणानुवाद करे, वहां से पीछा आते दूसरे उत्पात में नंदनवन में आवे वहां ज्ञानी के ज्ञान का गुणानुवाद कर के यहां आवे और यहां ज्ञानी के ज्ञान का

इह चेइयाइं वंदइ २ त्ता, जंघाचारणस्सणं गोयमा ! उड्ढं एवइए गतिविसए पण्णत्ते ॥ १० ॥ सेणं तस्स ठाणस्स अणालोइय पडिक्कंते कालं करेइ णत्थि तस्स आराहणा । सेणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा। सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ वीसइमस्स णवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २० ॥ ९ ॥

जीवाणं भंते ! किं सोवक्कमाउया णिरुवक्कमाउया ? गोयमा ! जीवा सोवक्कमाउयावि णिरुवक्कमाउयावि ॥ १ ॥ णेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! णेरइया णो सोवक्कमाउया,

गुणानुवाद करे. अहो गौतम ! जंघाचारण का ऊर्ध्व गति का इतना विषय कहा है. ॥ १० ॥ वह उस स्थान की आलोचना प्रतिक्रमण किये विना काल करे तो उस को उसकी आराधना नहीं है और आलोचना प्रतिक्रमण करके काल करे तो उस को उस स्थान की आराधना होती है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह वीसवा शतक का नववा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ २० ॥ ९ ॥ ०

नववे उद्देशे में चारण का कथन किया वे सोपक्रम आयुष्य वाले होते हैं. इस लिये आगे सोपक्रम निरूपक्रम का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! क्या जीव सोपक्रम आयुष्य वाले हैं. या निरुपक्रम आयुष्य वाले हैं ? अहो गौतम ! जीव सोपक्रम आयुष्य वाले हैं और निरुपक्रम आयुष्यवाले भी हैं. ॥ १ ॥

१ काल को अप्राप्त अग्नि विषादि से आयुष्य निर्जरे वह सोपक्रम इस से विपरीत निरुपक्रम.

णिरुवक्कमाउयावि ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवीकाइया जहा जीवा । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा णेरइया ॥ २ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं आउवक्कमेणं उववज्जंति, परोवक्कमेणं उववज्जंति, णिरुवक्कमेणं उववज्जंति ? गोयमा आतोवक्कमेणवि उववज्जंति, परोवक्कमेणवि उववज्जंति, णिरुवक्कमेणवि उववज्जंति, एवं

अहो भगवन् ! नारकी क्या सोपक्रमआयुष्य वाले हैं या निरुपक्रम आयुष्य वाले हैं. ? अहो गौतम ! नारकी सोपक्रम आयुष्यवाले नहीं है परंतु निरुपक्रम आयुष्य वाले हैं. क्योंकी जितना नारकी का आयुष्य है उतना ही आयुष्य वे भोगते हैं. ऐसे ही असुरकुमार यावत् स्तनित कुमार का जानना. वे सोपक्रम आयुष्यवाले नहीं हैं; परंतु निरुपक्रम आयुष्य वाले हैं. पृथ्वीकाया का समुच्चय जीव जैसे कहना. ऐसे ही अप्काया यावत् मनुष्य का जानना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी स्वयं ही आयुष्य के उपक्रम से मरकर नारकी में उत्पन्न होवे, परकृतमरण से मरकर नारकी में उत्पन्न होवे अथवा उपक्रम रहित मरकर नारकी में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! अपने हाथ से अपना आयुष्य का छेदनकर नारकी में उत्पन्न होवे जैसे श्रेणिक राजा विषखाकर मरा, अन्य से मराया हुवा मरे कूणिक राजा की तरह और उपक्रमबिना भी मरकर नरक में

जाव वेमाणिया ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं आतोवक्कमेणं उव्वट्टंति, परोवक्कमेणं उव्वट्टंति, णिरुवक्कमेण उव्वट्टंति? गोयमा! णो आतोवक्कमेणं उव्वट्टंति, णो परोवक्कमेणं उव्वट्टंति, णिरुवक्कमेणं उव्वट्टंति ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवीकाइया जाव मणुस्सा तिसु उव्वट्टंति । सेसा जहा णेरइया णवरं जोइसिया वेमाणिया चयंति॥४॥ णेरइयाणं भंते ! किं आयड्ढीए उववज्जंति, परिड्ढीए उववज्जंति ? गोयमा ! आयड्ढीए उववज्जंति णो परिड्ढीए उववज्जंति ॥ एवं जाव

उत्पन्न होवे कालकसुरिया की तरह, ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी क्या स्वतः के उपक्रम से उद्वर्तते हैं अन्य के उपक्रम से उद्वर्तते हैं अथवा उपक्रम विना उद्वर्तते हैं ? अहो गौतम ! स्वतः के उपक्रम से नारकी नहीं उद्वर्तते हैं परके उपक्रम से नारकी नहीं उद्वर्तते हैं; परंतु निरुप क्रम से नारकी उद्वर्तते हैं; ऐसे ही स्तनित कुमार पर्यंत कहना. पृथ्वीकाया यावत् मनुष्य स्वतः के उपक्रम से उद्वर्तते हैं. अन्य के उपक्रम से भी उद्वर्तते हैं और निरुपक्रम से भी उद्वर्तते हैं, शेष सब नारकी जैसे कहना. में ज्योतिषी व वैमानिक उद्वर्तन के स्थान चवना कहना ॥४॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी आत्मऋद्धि से उत्पन्न होते हैं, या अन्य की ऋद्धि से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! आत्म ऋद्धि से उत्पन्न होते हैं परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही

वेमाणिया ॥ ५ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं आइड्ढीए उव्वट्टंति, परिड्ढीए उव्वट्टंति ? गोयमा ! आइड्ढीए उव्वट्टंति, णो परिड्ढीए उव्वट्टंति, एवं जाव वेमाणिया, णवरं जोइसिया वेमाणिया चयंतीति अभिलावो ॥६॥ णेरइयाणं भंते ! किं आयकम्मणा उववज्जंति परकम्मणा उववज्जंति ? गोयमा ! आयकम्मणा उववज्जंति, णो परकम्मणा उववज्जंति; एवं जाव वेमाणिया ॥ एवं उव्वट्टणा दंडओ ॥ ७ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं आयप्पओगेणं उववज्जंति परप्पओगेणं उववज्जंति ? गोयमा ! आयप्पओगेणं

वैमानिक पर्यंत कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी क्या आत्मऋद्धि (आत्म बल) से उद्वर्तते हैं या परऋद्धि से उद्वर्तते हैं ? अहो गौतम ! नारकी आत्मऋद्धि से उद्वर्तते हैं परंतु अन्यकी ऋद्धि से नहीं उद्वर्तते हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत चौवीस दंडक का जानना. विशेष में ज्योतिषी वैमानिक को चवना कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी स्वतः के कर्म से उत्पन्न होते हैं अन्य के कर्म से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नारकी स्वतः के कर्म से उत्पन्न होते हैं परंतु अन्य के कर्म से नहीं उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ऐसे ही उद्वर्तने का भी दंडक कहना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी स्वतः के प्रयोग से उत्पन्न होवे यावत् परप्रयोग से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! नारकी स्वतः

उववज्जंति, णो परप्पओगेणं उववज्जंति ॥ एवं जाव वेमाणिया ॥ एवं दंडओवि ॥८॥ णेरइयाणं भंते ! किं कतिसंचिया अकतिसंचिया अवत्तव्वगसंचिया ? गोयमा ! णेरइया कतिसंचियावि, अकतिसंचियावि, अवत्तव्वग संचियावि ॥ से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वग संचियावि ? गोयमा ! जेणं णेरइया संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया कतिसंचिया, जेणं णेरइया संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया अकति संचिया, जेणं णेरइया एक्कएण पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया

के प्रयोग से उत्पन्न होवे परंतु पर प्रयोग से उत्पन्न होवे नहीं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना और वैसे ही उद्वर्तना दंडक भी कहना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी कतिपय संचित (गिनती के) हैं, अकतिपय संचित (विना गिनती के) हैं या अवक्तव्य (एक ही) है ? अहो गौतम ! नारकी तीनों प्रकार के हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया यावत् अवक्तव्य हैं ? अहो गौतम ! जो नारकी संख्यात प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे कति संचित हैं जो असंख्यात प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे अकति संचित और जो एक प्रवेश से प्रवेश करते हैं वे अवक्तव्य संचित. इस से अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है यावत् अवक्तव्य संचित हैं. ऐसेही स्तनितकुमार पर्यंत कहना. पृथ्वीकाया कति संचित व अवक्तव्य

अव्वत्तव्वग संचिया॥से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव अव्वत्तव्वग संचियावि॥ एवं जाव थणिय कुमारा ॥ पुढवीकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुढवीकाइया णो कतिसंचिया अकति संचिया णो अव्वत्तव्वग संचिया ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जाव णो अव्वत्त-व्वग संचिया ? गोयमा ! पुढवीकाइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति, से तेणट्ठेणं जाव णो अव्वत्तव्वग संचिया ॥ एवं जाव वणस्सइकाइया ॥ बेइंदिया जाव वेमा-णिया जहा णेरइया ॥ सिद्धाणं पुच्छा ? गोयमा ! सिद्धाकति संचिया णो अकति संचिया अव्वत्तव्वग संचियावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जाव अव्वत्तव्वग संचियावि ?

संचित नहीं हैं परंतु अकति संचित हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कति संचित नहीं हैं अकति संचित हैं और अवक्तव्य संचित नहीं है. अहो गौतम ! पृथ्वीकाया असंख्यात प्रवेश से प्रवेश करते हैं इस से अकति संचित हैं परंतु कतिसंचित व अवक्तव्य संचित नहीं है. ऐसे ही वनस्पति काया पर्यंत कहना. बेइन्द्रिय से यावत् वैमानिक पर्यन्त नारकी जैसे कहना. अहो भगवन्! क्या सिद्ध कति संचित हैं अकति संचित हैं कि अवक्तव्य संचित है ? अहो गौतम! सिद्ध कति संचित हैं परंतु अकति संचित नहीं हैं और अवक्तव्य संचित हैं. अहो भगवन्! किस कारनसे ऐसा कहागया यावत् सिद्ध अवक्तव्य संचित

गोयमा ! जेणं सिद्धा संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं सिद्धा कतिसंचिया, जेणं सिद्धा एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं सिद्धा अव्वत्तव्वग संचियावि ॥ से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अव्वत्तव्वग संचियावि ॥ ९ ॥ एएसिणं भंते ! णेरइयाणं कइसंचियाणं अकइसचियाणं अव्वत्तव्वग संचियाणय कयरे २ जाव विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा णेरइया अव्वत्तव्वग संचिया, कतिसंचिया संखेज्जगुणा, अकति संचिया असंखेज्जगुणा ॥ एवं एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं अप्पाबहुगं एगिंदियाणं णत्थि अप्पाबहुगं ॥ एएसिणं भंते ! सिद्धाणं कतिसंचियाणं अव्वत्तव्वग संचियाणय

हैं ? अहो गौतम ! जो सिद्ध संख्यात प्रवेश करते हैं वे कति संचित हैं, और जो एक प्रवेश करते हैं वे अवक्तव्य संचित हैं. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् अवक्तव्य संचित हैं. ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! कति संचित, अकति संचित व अवक्तव्य संचित नारकी में से कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे नारकी अवक्तव्य संचित हैं इस से कति संचित संख्यात गुने इस से अकति संचित असंख्यात गुने ऐसे ही एकेन्द्रिय छोडकर वैमानिक पर्यंत अल्पाबहुत्व जानना. एकेन्द्रिय की अल्पाबहुत्व नहीं है क्यों की उस में एक ही बोल पाता है. अहो भगवन् ! इस कति संचित

कयरे२ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा! सव्वत्थोवा सिद्धा कतिसंचिया, अव्वत्तव्वग संचिया संखेजगुणा ॥ १० ॥ णेरइयाणं भंते किं छक्कसमजिया णो छक्कसमजिया, छक्केणय णो छक्केणय समजिया, छक्केहिय समजिया, छक्केहिय णो छक्केणय समजिया? गोयमा! णेरइया छक्कसमजियावि १, णो छक्कसमजियावि २, छक्केणय णो छक्केणय समजिया ३, छक्केहिय समजियावि ४, छक्केहिय णो छक्केणय समजियावि ५ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-णेरइया छक्कसमजियावि जाव णो छक्केहिय णो छक्केणय समजियावि ? गोयमा ! जेणं णेरइया छक्कएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया

व अकति संचित सिद्ध में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सिद्ध कति संचित हैं इस से अवक्तव्य संचित संख्यात गुने ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी १ छक्क समार्जित हैं २नो छक्क समार्जित हैं ३छक्कसे नो छक्कन समार्जित हैं ४बहुत छक्कसे समार्जितहैं अथवा ५बहुत छक्क नो छक्क से समार्जित हैं ? अहो गौतम ! नारकी में पांचों भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया हैं कि नारकी छक्क समार्जित हैं यावत् बहुत छक्क नो छक्क समार्जित हैं ? अहो गौतम ! जो नारकी एकसाथ छ प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे छ के समार्जित हैं अर्थात छ जीव एकसाथ उत्पन्न होवें

छक्कसमज्जिया १, जेणं णेरइया जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया णो छक्कसमज्जिया २, जेणं णेरइया छक्कएणं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया छक्केणय णो छक्केणय समज्जिया ३, जेणं णेरइया अणेगेहिं छक्केहिं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया छक्केहिय समज्जिया ४; जेणं णेरइया अणेगेहिं छक्केहिं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया छक्केहिय णो छक्केणय समज्जिया ५, से तेणट्ठेणं तंचेव सम-

तब वे छ के समार्जित कहाये जाते हैं. २ जितने एक समय में जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच जीव प्रवेश किया वे नारकी नो छक्क समार्जित हैं अर्थात् एक समय में छ नहीं उत्पन्न हुए हैं. ३ जितने नेरियों एक छक्क कर और उपर जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे छक्क से नो छक्क से समार्जित हैं, ४ जितने नारकी ने अनेक छक्क थोक से प्रवेश किया वे बहुत छक्क से समार्जित हैं और ५ जितने नेरियोंने अनेक छक्क से और जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच से प्रवेश करते हैं वे अनेक छक्क व अनेक नो छक्के से समार्जित हैं. इसी से अहो गौतम ! नारकी में पांच भांगे पाते हैं. ऐसे ही स्तनित

जियावि ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवीकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुढवी काइया णो छक्क समज्जिया, णो णोछक्कसमज्जिया, णो छक्केणय णो छक्केणय समज्जिया २, छक्केहिय समज्जियावि, छक्केहिय णो छक्केणय समज्जियावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जाव समज्जियावि ? गोयमा ! जेणं पुढवीकाइया णेगेहिं छक्केहिं पवेसणगं पविसंति तेणं पुढवीकाइया छक्केहिं समज्जिया, जेणं पुढवीकाइया णेगेहिं छक्कएहिं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ॥ तेणं पुढवीकाइया छक्केहिय णो छक्केणय समज्जिया; से तेणट्ठेणं जाव समज्जियावि

कुमार पर्यंत कहना पृथ्वी काया की पृच्छा ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया छक्क समार्जित नहीं है, नो छक्क समार्जित भी नहीं है, छक्क नो छक्क से भी समार्जित भी नहीं है परंतु बहुत छक्क से और बहुत छक्क नो छक्क से समार्जित हैं. अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया यावत् समार्जित हैं? अहो गौतम! जो पृथ्वी काया अनेक छक्क से प्रवेश करते हैं वे बहुत छक्क से समार्जित हैं और जो पृथ्वी काया बहुत छक्क से प्रवेश करते हैं और उपर जघन्य एक दो तीन यावत् पांच से प्रवेश करते हैं वे बहुत छक्क व नो छक्क से समार्जित हैं. ऐसेही वनस्पति काया पर्यंत कहना. बेइन्द्रिय से वैमानिक पर्यंत और सिद्ध वगैरह सब नारकी

॥एवं जाव वणस्सइकाया, बेइंदिया जाव वेमाणिया॥ एएसिद्धा जहा णेरइया॥११॥ एएसिणं भंते ! णेरइयाणं छक्कसमज्जियाणं णो छक्क समज्जियाणं छक्केणय णो छक्के ! णय समज्जियाणं, छक्केहिय समज्जियाणं, छक्केहिय णो छक्केणय समज्जियाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा णेरइया छक्क समज्जिया, णो छक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केणय णो छक्केणय समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केहिय समज्जिया असंखेज्जगुणा छक्केहिय णो छक्केणय समज्जिया संखेज्जगुणा ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ एएसिणं भंते ! पुढवीकाइयाणं छक्केहिय समज्जियाणं छक्केहिय णो

जैसे कहना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! इन छक्क समार्जित नो छक्क समार्जित, छक्क नो छक्क समार्जित बहुत छक्क से समार्जित और बहुत छक्क नो छक्क समार्जित नारकी में से कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे नारकी छक्क समार्जित हैं. इस से नो छक्क समार्जित संख्यात गुने इस से छक्क नो छक्क समार्जित नारकी संख्यात गुना इस से बहुत छक्क समार्जित नारकी असंख्यात गुना इस से बहुत छक्क नो छक्क नारकी संख्यात गुना. ऐसे ही स्तनित कुमार पर्यंत कहना. अहो भगवन् इन बहुत छक्क समार्जित यावत् छक्क नो छक्क समार्जित पृथ्वी काया में कौन किस से अल्प बहुत यावत्

छक्केहिय समज्जियाणं कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढवीकाइया छक्केहिय समज्जिया, छक्केहिय णो छक्केणय समज्जिया संखेज्जगुणा ॥ एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । बेइंदियाणं जाव वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ एएसिणं भंते ! सिद्धाणं छक्कसमज्जियाणं णो छक्कसमज्जियाणं जाव छक्केहिय णो छक्केणय समज्जियाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोव सिद्धा छक्केहिय णो छक्केणय समज्जिया, छक्केहिय समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केणय णो छक्केणय समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा, णो छक्क समज्जिया संखेज्जगुणा ॥ ११ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं बारस समज्जिया णो बारस समज्जिया

विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे पृथ्वी काया बहुत छक्क समार्जित इस से बहुत छक्क नो छक्क समार्जित संख्यात गुना. ऐसे ही वनस्पतिकाया तक कहना. बेइन्द्रिय से वैमानिक पर्यंत नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! इन छक्क समार्जित, नो छक्क समार्जित यावत् बहुत छक्क समार्जित में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सिद्ध बहुत छक्क नो छक्क समार्जित इस से बहुत छक्क समार्जित संख्यात गुने इस से छक्क नो छक्क संख्यातगुने इस से छक्क सामर्जित संख्यातगुने इस से नो छक्क समार्जित संख्यातगुने ॥११॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी? बारह

बारसएणं णो बारसएणय समज्जिया, बार हय समज्जिया बारसएहिय णो बारस-एणय समज्जिया ? गोयमा ! णेरइया बारससमज्जियावि जाव बारसएहिय णो बारसएणय समज्जियावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं जाव समज्जियावि ? गोयमा ! जेणं णेरइया बारसएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया बारस समज्जियावि जेणं णेरइया जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया णो बारस समज्जिया ॥ जेणं णेरइया बारसएणं पवेसणएणं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा; उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति, तेणं

समार्जित हैं २ नो बारह समार्जित हैं ३ बारह नो बारह समार्जित हैं ४ बहुत बारह समार्जित हैं अथवा ५ बहुत बारह समार्जित नो बारह समार्जित हैं ? अहो गौतम ! नारकी में पांचों भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा है यावत् नो बारह समार्जित ? अहो गौतम ! जो नारकी बारह प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे बारह समार्जित हैं, जो नारकी जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट अग्यारह प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे नारकी नो बारह समार्जित हैं, जो नारकी बारह प्रवेशन से और जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट अग्यारह प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे नारकी बारह नो बारह से समार्जित हैं. जो नारकी अनेक

णेरइया वारसएणं णो वारसएणं समज्जिया ॥ जेणं णेरइया णेगेहिं वारसएहिं पवेस णएणं पविसंति तेणं णेरइया वारसएहिं समज्जिया ॥ जेणं णेरइया णेगेहिं वारसएहिं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा देहिंवा तिहिंवा उक्कोसेण एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया वारसएहिय णोवारसएणय समज्जिया ॥ से तेणट्टेणं जाव समज्जियात्ति ॥ एवं जाव थणियकुमारा॥ पुढवीकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुढवीकाइया णो वारससमज्जि- या णो नोवारसएणय समज्जिया, णो वारसएय णो वारसएणय समज्जिया, वारसएहिं समज्जिया वारसएहिय णो वारसएणय समज्जिया ॥ से केणट्टेणं भंते ! जाव सम-

बारह प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे बहुत बारह मे समार्जित हैं और जो नारकी बहुत बारह और अन्य जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट अग्यारह प्रवेशन से प्रवेश करते हैं व बहुत बारह व नोबारह समार्जित हैं. इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् समार्जित हैं. ऐसे ही स्तनित कुमारपर्यंत जानना. पृथ्वीकाया की पृच्छा ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया बारह समार्जित, नो बारह समार्जित और बारह समार्जित नो बारह समाजित नहीं है परंतु बहुत बारह समार्जित व बहुत बारह समार्जित व नो बारह समार्जित है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् नो बारह समार्जित है ? अहो गौतम जो पृथ्वी काया

जियावि ? गोयमा ! जेणं पुढवीकाइया णेगेहिं बारसएहिय पवेसणगं पविसंति तेणं पुढवीकाइया बारसएहिं समज्जिया ॥ जेणं पुढवीकाइया णेगेहिं बारसएहिं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं एक्कारसएणय पवेसणएणं पविसंति तेणं पुढवीकाइया बारसएहिय णो बारसएणय समज्जिया से तेणट्ठेणं जाव समज्जियावि ॥ एवं जाव वणस्सइकाइया॥बेइंदिया जाव सिद्धा जहा णेरइया॥ एएसिणं भंते! णेरइयाणं बारस्स समज्जियाणं सव्वेसिं अप्पाबहुगं जहा छक्कसमज्जियाणं णवरं बारसाभिलावो ॥ सेसं तंचेव ॥ १२ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं चुलसीति समज्जिया णो चुलसीति समज्जिया, चुलसीतिएय णो चुलसीतिएय समज्जिया चुलसीतिहिय समज्जिया

अनेक बारह से प्रवेशन करते हैं वे पृथ्वीकाया अनेक बारह समार्जित हैं और जो पृथ्वीकाया अनेक बारह से प्रवेश करते हैं और ऊपर जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट अग्यारह प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे अनेक बारह व नोबारह समार्जित हैं. इस से अहो गौतम ! यावत् समार्जित हैं. ऐसे ही वनस्पति काया का जानना. बेइन्द्रिय से सिद्ध पर्यंत नारकी जैसे कहना. इन बारह की अल्पाबहुत छक्क जैसे कहना. परंतु यहां छ के स्थान बारह कहना ॥ १२ ॥ यह बारह आश्री कहा अब चौरासी आश्री कहते हैं. अहो

चुलसीतिहिय णो चुलसीतिएय समज्जिया ? गोयमा ! णेरइया चुलसीतिसमज्जि-याचि जाव चुलसीतिहिय णो चुलसीतिहियसमज्जियाचि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव समज्जियाचि ? गोयमा ! जेणं णेरइया चुलसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिसमज्जिया, जेणं णेरइया जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीति पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया णो चुलसीति समज्जिया, जेणं णेरइया चुलसीतिएणं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिएणय णो चुलसीतिएय सम-

भगवन् ! क्या नारकी १ चौरासी से समार्जित हैं. २ नो चौरासी से समार्जित हैं, ३ चौरासी नो चौरासी से समार्जित हैं ४ बहुत चौरासी से समार्जित हैं या ५ बहुत चौरासी बहुत नो चौरासी से समार्जित हैं ? अहो गौतम ! नारकी में पांचों भांग पाते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया यावत् नो चौरासी सपार्जित हैं ? अहो गौतम ! जो नारकी चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं. वे नारकी चौरासी समार्जित हैं जो नारकी जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट त्रियासी तक प्रवेश करते हैं वे नारकी नो चौरासी समार्जित हैं, जो नारकी चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं और उपर जघन्य एक

जिया, जेणं णेरइया णेगेहिं चुलसीतिएहिय पवेसणगं पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिए-हिय समज्जिया जेणं णेरइया णेगेहिं चुलसीतिएहिय अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा जाव उक्कोसेणं तेसीतिएणं जाव पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिएहिय णो चुलसीतिएणय समज्जिया से तेणट्ठेणं जाव समज्जियावि ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवीकाइया तहेव पच्छिल्लाएहिं दोहिं णवरं अभिलावो चुलसीतिओ एवं जाव वणस्सइकाइया । वेइंदिया जाव वेमाणिया जहा णेरइया ॥ सिद्धाणं पुच्छा ? गोयमा ! सिद्धा चुल-सीति समज्जियावि णो चुलसीति समज्जियावि, चुलसीतिय णो चुलसीतिय समज्जिया वि, णो चुलसीतिहिय समज्जिया णो चुलसीतिहिय णो चुलसीति समज्जिया ॥ से

दो तीन उत्कृष्ट त्रियासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे चौरासी नो चौरासी समार्जित हैं, जो नारकी बहुत चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे बहुत चौरासी से समार्जित हैं, और जो नारकी बहुत चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं और उपर एक, दो, तीन उत्कृष्ट त्रियासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे बहुत चौरासी नो चौरासी समार्जित हैं. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है. ऐसे ही असुरकुमार यावत् स्तनित कुमार पर्यंत कहना. पृथ्वीकाया में पीछे के दो गमा कहना और ऐसे ही वनस्पति काया पर्यंत कहना बेइन्द्रिय यावत् वैमानिक पर्यंत नारकी जैसे कहना. सिद्ध की पृच्छा, अहो गौतम ! सिद्ध चौरासी

केणट्ठेणं भंते ! जाव समज्जिया ? गोयमा ! जेणं सिद्धा चुलसीइएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं सिद्धा चुलसीतिसमज्जिया, जेणं सिद्धा जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीतिएणय पवेसणएणं पविसंति तेणं सिद्धा णो चुलसीति समज्जिया, जेणं सिद्धा चुलसीइएणं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं सिद्धा चुलसीतिय णो चुलसीतिएय समज्जिया से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया ॥ एएसिणं भंते ! णेरइयाणं चुलसीतिसमज्जियाणं णो चुलसीतिसमज्जियाणं सव्वेसिं अप्पाबहुगं जहा छक्क समज्जियाणं जाव

समार्जित हैं, नो चौरासी समार्जित हैं, चौरासी नो चौरासी समार्जित हैं, परंतु बहुत चौरासी व बहुत चौरासी बहुत नो चौरासी समार्जित नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् समार्जित है ? अहो गौतम ! जो सिद्ध चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे सिद्ध चौरासी समार्जित हैं, जो सिद्ध जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट त्र्यासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे सिद्ध नोचौरासी समार्जित हैं, जो सिद्ध चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं और जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट त्र्यासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे सिद्ध चौरासी नो चौरासी समार्जित हैं अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् समा-

वेमाणिया । णवरं अभिलावो चुलसीतिओ ॥ एएसिणं भंते ! सिद्धाणं चुलसीति समज्जियाणं णो चुलसीति समज्जियाणं चुलसीतिएय णो चुलसीतिएय समज्जियाणं कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा चुलसीतिय णो चुलसीतिय समज्जिया, चुल सीतिय समज्जिया अणंतगुणा, णो चुलसीतिय समज्जिया अणंतगुणा ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ वीसइमस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २० ॥ १० ॥ वीसइमं सयं सम्मत्तं ॥ २० ॥

जित हैं. इन सब की अल्पाबहुत्व वैमानिक पर्यंत छक्क जैसे कहना. परंतु यहां पर चौरासी कहना. अहो भगवन् ! चौरासी समार्जित, नो चौरासी समार्जित और चौरासी नो चौरासी समार्जित सिद्ध इन में कौन किससे अल्पबहुत यावत् विशेषाधिक हैं? अहो गौतम! सब से थोडे सिद्ध चौरासी नो चौरासी समार्जित इन से चौरासी समार्जित अनंतगुना इन से नो चौरासी समार्जित अनंतगुना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह बीसवा शतक का दशवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥२०॥१०॥ यह बीसवा शतक समाप्त हुवा॥२०॥

॥ एकविंशतितम शतकम् ॥

सालिकल अयासिवंसे, इक्खु दब्भेय अब्भतुलसीय ॥ अट्ठ ते दसवग्गा असीति पुणहोंति उद्देसा ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी अह भंते ! साली वीही गोधूम जाव जवाणं एएसिणं भंते ! जीवा मूलत्ताए वक्कमंति तेणं भंते ! जीवा कओहिंतो

बीसवे शतक में संख्यात आश्री कथन किया. वनस्पति जीवों की संख्या नहीं होने से आगे इस का प्रश्न पूछते हैं. इस शतक के अस्सी उद्देशे कहे हैं. १ शाली धान्यका २ कल (चने) धान्यका ३ अतसीका ४ वंशादि पर्व ५ इक्ष्वादि ६ दर्भ ७ एक वृक्ष में दूसरा विजातीय वृक्ष विशेष उत्पन्न होवे सो अध्यारोहक ८ तूलसी प्रमुख वनस्पति. ये आठ उद्देशे कहे एक २ उद्देशे के १ मूल, २ कंद, ३ स्कंध, ४ त्वचा, ५ शाल, ६ प्रवाल, ७ पत्र ८ पुष्प ९ फल और १० बीज यों दश २ उद्देशे कहे सब मीलकर अस्सी उद्देशे हुवे ॥ १ ॥ अब पहिला उद्देशा का वर्णन करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में यावत् ऐसे बोले शाली, व्रीहि, गोधूम यावत् यव में जो जीवों मूलपने उत्पन्न होते हैं वे जीव कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नारकी में से उत्पन्न होते हैं तिर्यंच मनुष्य व देव वगैरह जैसे पन्नवणा के छठे पद में उत्पाद कहा वैसे ही यहां पर कहना. यहां पर नारकी में से उत्पन्न होवे नहीं परंतु तिर्यंच मनुष्यमेंसे उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! वे जीवों एक समय में कितने उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य एक

उववज्जंति, किं णेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिय मणु देव जहा वक्कंतीए तहा उववाओ णवरं देववज्जं, तेणं भंते ! जीवा एग समएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा उववज्जंति ॥ अवहारो जहा उप्पलुद्देसए ॥ २ ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं के महालया सरीरो गाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं धणुह पुहत्तं ॥ ३ ॥ तेणं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स बंधगा अबंधगा तहेव

दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात उत्पन्न होवे. ⁂ और अपहार जैसे अग्यारहवे शतक में उत्पल उद्देशा में कहा वैसे जानना ॥२॥ अहो भगवन् ! इन के शरीर की अवगाहना कितनी कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! वे क्या ज्ञानावरणीय कर्म के बंधक हैं या अबंधक हैं ? इस का सब कथन उत्पल उद्देशे जैसे कहना. अर्थात् वे अबंधक नहीं हैं

⁂ वनस्पति में एक समय में असंख्यात जीवों उत्पन्न होते हैं वैसा जो कथन आगे किया गया है वह साधारण शरीर आश्री किया गया है. यहां शालि आदि प्रत्येक शरीरी धान्य का कथन किया है इस से किसी प्रकार की भिन्नता समझना नहीं.

जहा उप्पलुद्देसए; एवं वेदेंति वेदगाएवि; उदएवि; उदीरणाएवि ॥ ४ ॥ तेणं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा णील काउ छव्वीसं भंगा ॥ ५ ॥ दिट्ठी जाव वेइंदिया जहा उप्पलुद्देसए ॥६॥ तेणं भंते ! साली वीही गोधून जाव जवजवग मूलगजीवे कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥ ७ ॥ तेणं भंते ! साली वीही गोधूम जाव जवजवग मूलग जीवे पुढवी जीवे पुणरवि साली वीही जाव जवजवगमूलग जीवेत्ति केवइयं कालं सेवेज्जा, केवइयं कालं गतिरागतिं करेज्जा, एवं जहा उप्पलुद्देसए, एएणं अभिलावेणं जाव

परंतु बंधक हैं. ऐसे ही ज्ञानावरणीयादि कर्म वेदते हैं, उदय में आते हैं और उदीरते भी हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे जीव कृष्ण लेश्यावाले हैं, नील लेश्यावाले हैं या कापोत लेश्यावाले वगैरह के छवीस भांगे जानना ॥ ५ ॥ दृष्टि वेइन्द्रिय जैसे उत्पल उद्देशा जैसे कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! शालीव्रीहि गेहूंम यावत् यव में मूल में वे जीवों कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! शाली व्रीहि, गेहूं यावत् जुआरी के जीव पृथ्वीकाया में उत्पन्न होकर पुनः शाली व्रीहि यावत् जुवार के मूल में जीवपने कितना काल तक सेवे अर्थात् बीच का कितना

मणुस्सजीवे ॥ आहारो जहा उप्पलुद्देसे ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वास पुहुत्तं समुग्घाया समोहयाय मरंति उव्वट्टणाय जहा उप्पलुद्देसे ॥ ८ ॥ अह भंते ! सव्व पाणा जाव सव्वसत्ता साली वीही जाव जवजवग मूलग जीवत्ताए उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ पढम वग्गस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १ ॥ अह भंते ! साली वीही जाव जवजवाणं एएसिणं जीवा कंदत्ताए वक्कमंति, तेणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति एवं कंदाहि गारेण सोचेव मूलुद्देसो अपरिसेसो भाणियव्वो जाव असतिं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

अंतर रहे और कितनी गति अगाति होवे ? इस का जैसे उत्पल उद्देशा कहा वैसे कहना यावत् इस अभिलाप से यावत् मनुष्य पर्यंत कहना. आहार का उत्पल उद्देशे जैसे कहना. स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक वर्ष समोहया मरण मरते हैं उद्वर्तना उत्पल उद्देशे जैसे कहना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सब प्राणभूत जीव व सत्व शाली व्रीहि यावत् जुवारी के मूल में जीवपने पहिले क्या उत्पन्न हुए ? हां गौतम ! पहिले उत्पन्न हुए. अनेक वार व अनंतवार. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. प्रथम वर्ग का पहिला उद्देशा समाप्त हुवा ॥ १ ॥ १ ॥ पहिले उद्देशे में शाली व्रीहि यावत् जुवारी के मूल का कथन किया वैसे ही शाली व्रीहि यावत् जुवारी तक के कंद में जो जीवों उत्पन्न हुए हैं वे मूल के जैसे ही आहार करते हैं इत्यादि सब प्रश्नोत्तर मूल जैसे विशेषता रहित कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं.

सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ पढमवग्गस्स बितिओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ २ ॥ एवं खंधेवि उद्देसो णेतव्वो ॥ पढम वग्गस्स तइओ ॥ १ ॥ ३ ॥ एवं तयाएवि उद्देसो णेयव्वो ॥ पढमवग्गस्स चउत्थो ॥ १ ॥४॥ सालेवि उद्देसो णेयव्वो ॥ पढम वग्गस्स पंचमो ॥ १ ॥ ५ ॥ पवालेवि उद्देसो भाणियव्वो ॥ पढम वग्गस्स छट्ठो ॥ १ ॥ ६ ॥ पत्तेवि उद्देसो भाणियव्वो पढम वग्गस्स सत्तमो ॥ १ ॥ ७ ॥ एए सत्तवि उद्देसा अपरिसेसं जहा मूले तहा णेयव्वो ॥ एवं पुप्फेवि उद्देसओ णवरं देवो उववज्जइ, जहा उप्पलुद्देसे, चत्तारिलेस्साओ, ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असं-

यह प्रथम वर्ग का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १ ॥ २ ॥ ऐसे स्कंध में भी कहना. यह प्रथम वर्ग का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ३ ॥ ऐसे ही शालि का उद्देशा विशेषता रहित कहना ॥ १ ॥ ४ ॥ ऐसे ही शाखा का भी उद्देशा विशेषता रहित कहना ॥ १ ॥ ५ ॥ ऐसे ही कुंपलों का विशेषता रहित कहना ॥ १ ॥ ६ ॥ ऐसे ही पत्र का भी कहना ॥ १ ॥ ७ ॥ ऐसे ही पुष्प का उद्देशा कहना परंतु विशेषता इतनी कि पुष्प में देवताओं आकर भी उत्पन्न होते हैं इसलिये लेश्या चार पाती हैं, जिस से एक वचन व बहुवचन ऐसे लेश्या के ८० भांगे होवे हैं. अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट

खेज्जइ भागं उक्कोसेणं अंगुल पुहुत्तं, सेसं तंचेव॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पढम वग्गस्स अट्ठमो उद्देसो ॥ १ ॥ ८ ॥ जहा पुप्फे एवं फलेवि उद्देसओ अपरिसेसो भाणियव्वो ॥ पढम वग्गस्स णवमो उद्देसो ॥ १ ॥ ९ ॥ एवं बीए उद्देसओ ॥ पढम वग्गस्स दसमो उद्देसो ॥ १ ॥ १० ॥ एए दस उद्देसगा ॥ पढमो वग्गो सम्मत्तो ॥ १ ॥ इक्कवीसयस्स पढमो वग्गो सम्मत्तो ॥ २१ ॥ १ ॥

अह भंते ! कल - मसूर -तिल - मुग्ग-मास-निप्फाव-कुलत्थ-आलिसिं-दगस-तिण पलिमंथगाणं ॥ एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति तेणं भंते ! जीवा कओ-

प्रत्येक अंगुल की. शेष वैसे ही, यह प्रथम वर्ग का आठवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ८ ॥ जैसे पुष्प का कहा वैसे ही फल का कहना. यह प्रथम वर्ग का नववा उद्देशा ॥ १ ॥ ९ ॥ ऐसे ही बीज का कहना. यह प्रथम वर्ग का दशवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १ ॥ १० ॥ इस तरह दश उद्देशों का प्रथम वर्ग संपूर्ण हुवा. यह एकवीसवा शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २१ ॥ १ ॥

अहो भगवन् ! चिने, मसूर, तील, मुंग, उडिद, वाल, कुलत्थ, आलनि और कावली चिने उन में जो जीव मूलपने उत्पन्न होते हैं वे जीवों कहां से उत्पन्न होते हैं ? ऐसे ही मूलादि दश उद्देशे शाली जैसे

हिंतो उववज्जंति ॥ एवं मूलादीया दस उद्देसगा भाणियव्वा जहेव सालीणं णिरव सेसं तहेव ॥ वितिओ वग्गो सम्मत्तो ॥ २ ॥ एक्कवीसय सयस्सय वितिओ वग्गो ॥ २१ ॥ २ ॥ ० ०

अह भंते ! अयसि-कुसुंभ-कोद्दव-कंगु-रालग-वराग-कोट्टु-सासण - सरिसव - मूलग वीयाणं एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, तेणं भंते ! जीवा कओहिंतो उवव-ज्जंति एवं एत्थवि मूलादीया दस उद्देसा जहेव सालीणं णिरवसेसं तहेव भाणि-यव्वं ॥ तइओ वग्गो सम्मत्तो ॥ २१ ॥ ३ ॥ ०

अह भंते ! वंस-वेणु-कणग-कक्कावंस-चारुवंस-दंडा-कंडा - वेलुया-कल्लाणीणं एए

निरवशेष कहना. यह दूसरा वर्ग समाप्त हुवा. यह इक्कीसवा शतक का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा॥२१।२॥

अहो भगवन्! अलसी, कसुंबे, कोद्रव, कांगणी, राल, वराग, कोठी, सासन, और सरिसव व मूलबीज इन में जो जीव मूलपने उत्पन्न होते हैं वे जीवों कहां से उत्पन्न होते हैं ? ऐसे ही यहां पर मूलादि दश उद्देशे जैसे शाली के कहे वैसे ही कहना. यह तीसरा वर्ग समाप्त हुवा. यह इक्कीसवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २१ ॥ ३ ॥ ० ०

अहो भगवन् ! बांस, वेणू, धतूरा, दण्ड, कण्ठ, वेलुक और कल्याणी इन में जो जीव मूलादि दश

सिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, एवं एत्थवि मूलदीया दस उद्देसगा जहेव सालीणं, णवरं देवो सव्वत्थवि ण उववज्जइ तिण्णि लेस्साओ ॥ सव्वत्थवि छव्वीसं भंगा ॥ सेसं तंचेव॥चउत्थो वग्गो ॥४॥ इक्कवीस सयस्स चउत्थो वग्गो॥२१॥४॥ अह भंते ! इक्खु-इक्खु-वाडिय-वीरण-इक्कडभ-माससुंव-सत्तवन्त-तिमिरसय-पोरं गनलाणं एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, एवं जहेव वंस वग्गो तहेव एत्थवि मूलादीया दस उद्देसगा, णवरं खंधुद्देसे देवो उववज्जंति; चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, सेसं तंचेव ॥ पंचमो वग्गो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ५ ॥

स्थान में उत्पन्न होवे वगैरह जैसे शाली का कहा वैसे ही कहना. विशेष में यहां देवता सब स्थान उत्पन्न नहीं होते हैं इसलिये चार लेश्या नहीं कहना. परंतु तीन लेश्या के २६ भांगे कहना. यह चौथा वर्ग समाप्त हुवा. यह इक्कीसवा शतक का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २१ ॥ ४ ॥

अहो भगवन् ! इक्षु, इक्षुवाडिया, इक्कड, भाषक, सप्त पर्ण, शत, पौरंग और नल इन में जो जीव मूलपने उत्पन्न होते हैं वगैरह वंश वर्ग जैसे दश उद्देशे कहना. विशेष में स्कंध में देव उत्पन्न होने से वहां चार लेश्याओं के ८० भांगे पाते हैं. यह पांचवा वर्ग समाप्त हुवा. यह इक्कीसवा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २१ ॥ ५ ॥

अह भंते! सेडिय-भंतिय-दब्भ कोंतिय दब्भकुस-पव्वग-पोइदत्तल अज्जुग-आसाढगरोहि यसमु अवक्खीरभुस-एरंड-कुरु-कुंदकरकर-सुंठ-विभंग-मुहुरण-घुघुरग-सिप्पिय सुकुलि तणाणं, एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, एवं एत्थवि उद्देसगा णिरवसेसं जहेव वंस वग्गो ॥ छट्ठो वग्गो ॥ ६ ॥ इक्कवीसस्सय छट्ठो ॥ २१ ॥ ६ ॥

अह भंते! अब्भोरुह वायण हरितग तंदुलेजय तणुवत्थुल पोरग मज्जारयाइ-विल्लियाल कदग-पिप्पलिय-दविसात्थिय कसाय मंडुक्कि मूलग सरिसव अंबल साग जियतंगाणं

अहो भगवन् ! सेडिय भंतिक, दर्भ, कुश, पर्वग, पोइद, इत्तल, अर्जुन आषाढक, रोहित, समु, अवक्षीर, भुस, एरंड, कुरुकुंद, करकर सुंठ, विभंग महुरण, घुघुरग, शिल्पिक, सुकुलि ओषधि विशेष वनस्पति इन में जो जीव मूलपने उत्पन्न होवे वगैरह जैसे वंशवर्ग कहा वैसे ही यहां पर भी सब उद्देशे कहना. यह छठा वर्ग संपूर्ण हुवा. यह इक्कीसवा शतक का छठा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २१ ॥ ६ ॥

अहो भगवन् ! अब्भोरुह, वायण, हारितक, तुंदुल, तनु, वथुली, पोरक, मार्जारिक, दक, पीपलकंद, सास्थिय, कषाय, मंडुक्कि, मूलग, सारिसव, अंबल साग और जियांतक इनमें जो जीवों मूलपने उत्पन्न होते हैं

एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, एवं एत्थवि दस उद्देसगा, जहेव वंसवग्गो ॥ सत्तमो वग्गो ॥ ७ ॥ इक्कवीसमस्स सयस्स सत्तमो उद्देसो ॥ २१ ॥ ७ ॥

अह भंते ! तुलसी - कण्हदराल - फण्णेज्जा - भूतणातिंचोराजीरादमणामरुयाइं दीवर सयपुप्फाणं, एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, एत्थवि दस उद्देसगा णिरवसेसं जहा वंसाणं ॥ अट्ठमो वग्गो सम्मत्तो ॥ ८ ॥ एएसु अट्ठवग्गेसु असीति उद्देसगा भवंति ॥ एक्कवीसइमं सयं सम्मत्तं ॥ २१ ॥ ०

ऐसे ही यहां पर भी दश उद्देशे जैसे वंश वर्ग के कहे वैसे ही कहना. यह सातवा वर्ग समाप्त हुवा. इक्कवीसवा शतक का सातवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २१ ॥ ७ ॥

अहो भगवन् ! तुलसी, कृष्ण, दराल, फणश, भूतनाति, चोरा, जीरा, दमना, मरुया और इन्दीवर शत पुष्प इन में जो जीव आकर मूलपने उत्पन्न होते हैं वगैरह यहां पर वंश वर्ग जैसे दश उद्देशे कहना. यह आठवा वर्ग समाप्त हुवा. यह इक्कीसवा शतक का आठवा उद्देशा संपूर्ण हुवा. यह इक्कीसवा शतक समाप्त हुवा ॥ २१ ॥ ० ० ०